दिगम्बर जैन

बन्धनसे जकड़ी हुई, रोती जैन समाज।
युवक दशा यह देख क्या, तुम्हें न आनी लाज॥

भव्य-भावना।

[रचयिता–श्रीयुत 'आनंद' उपाध्याय–जयपुर]

(१)

गौरवमय जीवन हो जगमें,

स्वार्थ–त्यागके उच्च विचार।

सदाचार नैतिक सत्साहस,

बन्धु–प्रेमसे बने उदार॥

(२)

उन्नत हो यह देश हमारा,

करें आज सब स्वात्म-विहार।

साम्यवाद इस जगमें फैले,

दीन-धनिकका उठे विचार॥

(३)

बन्धु वर्ग सब शिक्षित होवें,

धार्मिक–ज्ञान बढ़े जगमें।

भौतिकताका नाश शीघ्र हो,

देश-प्रेम हो रग रगमें॥

(४)

ईर्षा-द्वेष शब्द यह दोनों,

इस भारतसे करें प्रयाण।

धर्म अहिंसा प्रसरित होवे,

जिससे हो आत्मिक कल्याण॥

(५)

उन्मूलन हो सम्प्रदायका,

आत्म-धर्म दुनियांका हो।

यांत्रिक चरण छोड़कर भारत,

पतित जनोंका त्राता हो॥

(६)

परायत्तता नष्ट करें हम,

मातृभूमि हित हों बलिदान।

अचल बनें कर्त्तव्य मार्गमें,

सहनशीलताका हो ज्ञान॥

(७)

शांति सुधा घर २ में बरसे,

सामाजिक रूढ़ीका नाश।

आध्यात्मिक जीवन हो सबका,

स्वालंबनका सदा प्रकाश॥

(८)

विकसित हों सब आत्मशक्तियां,

दिव्यगुणोंसे हो संयुक्त।

जगबंधनसे सदा काल तक,

होजावें हम नाथ! विमुक्त॥

विषयानुक्रमणिका ।

चित्र–सूची ।

समाज अंककी सामग्री–इस अंकके लिये हमें इतने लेखादि मिले हैं कि इससे दूना अँक भी निकल सकता, परंतु स्थानाभावसे व वजन बढ़ जानेसे कुल ७५ लेखादिको स्थान दे सके हैं, जिनमें २८ हिंदी लेख, १५ हिंदी कवितायें, १६ गुजराती लेख, ७ गु. कवितायें, ३ संस्कृत लेख व कवितायें तथा ६ अंग्रेजी भाषाके लेख हैं। अतः हमारे सुज्ञ पाठक समय निकालकर सभी लेख शनैः २ पढ़कर व उनका मनन कर हमारा परिश्रम सफल करें। इधर उधर पन्ने फिराकर व चित्र देखकर ही इतिश्री न समझें। शेष अच्छे २ लेखोंको भी आगामी अँकोंमें स्थान दिया जायगा। —संपादक।
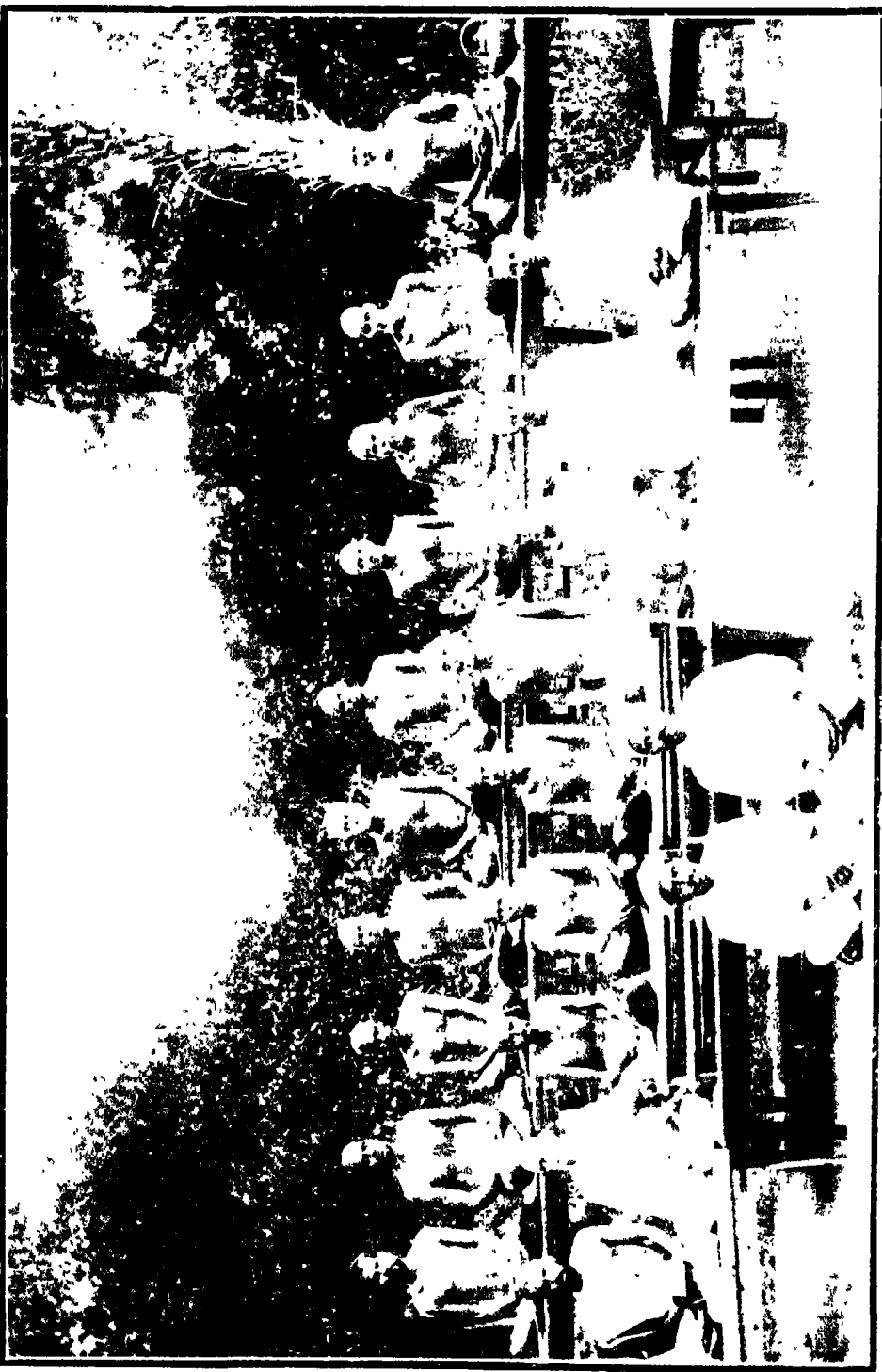
ब्यावरके चातुर्मासमें उभय मुनिसंघ-(१) आचार्य १०८ श्री शांतिसागरजी. (२) आ० श्री शांतिसागरजी (छानी), (३) मुनि वीरसागरजी, (४) मुनि नेमिसागरजी, (५) मुनि कुंथुसागरजी, (६) मुनि अजितसागरजी, (७) मुनि मल्लिसागरजी, (८) मुनि ज्ञानसागरजी, (९) ऐ० धर्मसागरजी (१०) क्षु० ज्ञानसागरजी (११) क्षु० यशोधरजी (१२) क्षु० पार्श्वसागरजी (१३) ब्रा० ठाकुरदासजी (१४) ब्र० फतेहसागरजी आदि।

Jain Vijaya Press, Surat.

समाज अंक ।

वर्ष २७ वां
अंक
१-२

वीरसं० २४६०
कार्तिक-मग०
सं० १९९०.

प्रासंगिकैः सामयिकैः सुवृत्तलेखैर्विनोदैः कविता-कलाभिः ।
सद्धर्मसाहित्यसमाजवृद्ध्यै "दिगम्बरो जैन" उदेत्यपूर्वः ॥

ऋषभनाथ भगवान !

[रचयिता:—पं० परमेष्ठीदास जैन न्यायतीर्थ-सूरत ।]

जयतु जय ऋषभनाथ भगवान ॥

कर्मभूमिके आदि प्रवर्तक, तुम ही हो मतिमान ।
कर समाजकी रचना तुमने, किया महा कल्याण ॥जयतु०॥१॥

ब्राह्मी और सुन्दरीको, देकरके तुमने ज्ञान ।
स्त्री शिक्षाका प्रचार, तुमने था किया महान ॥जयतु०॥२॥

असि मसि कृषि षट्कर्म प्रवर्तक, तुम ही हो भगवान ।
मनुजमात्रको समझा तुमने, यतिवर एक समान ॥जयतु०॥३॥

जब समाज थी तितर बितर, तब तुमने बनकर यान ।
पार लगाया मार्ग बताया, और कराया भान ॥जयतु०॥४॥

तुम समाजके ब्रह्मा हो, मैं कैसे करूँ बखान ।
पर इतना ही कहसकता हूं, तुम समाजके प्राण ॥जयतु०॥५॥

तुमने ही संसार बताया, तुमने ही निर्वान ।
इसीलिये सम्पूर्ण विश्वने लिया तुम्हें पहिचान ॥जयतु०॥६॥

आते थे सब समवशरणमें, बिल्ली, शूकर, श्वान ।
पतित शूद्र पापी जनको भी, मिलता था सन्मान ॥जयतु०॥७॥

विश्व प्रेमको भूल गये हम, वह आदर्श महान ।
एक बार हे नाथ! 'दास'को, पुनः कराओ ज्ञान ॥जयतु०॥८॥

सम्पादकीय वक्तव्य।

२७वें वर्षमें प्रवेश। हर्षका विषय है कि दिगम्बर जैन सत्तावीसवें वर्षमें प्रवेश कर रहा है। जो साहित्यप्रेमी या समाज-सुधारक सज्जन इसके प्रारम्भसे ग्राहक हैं उन्हें भलीभांति मालूम होगा कि दिगम्बर जैनका उदय किस स्थितिमें हुआ था, उसका बाल्यकाल कैसा था और उसकी यौवनावस्था कितने अच्छे संयत रूपसे चली जारही है। हम अपने पत्रकी अपनी ही कलमसे तो क्या तारीफ करें, मगर इतना तो प्रत्येक पाठक स्वीकार करेंगे कि दिगम्बर जैनके गत २६ वर्षोंकी फायल जैन समाजका २६ वर्षका बहुमूल्य इतिहास कहा जाय तो अत्युक्ति नहीं होगी। दिगम्बर जैनके प्रत्येक अङ्कमें सामाजिक सुधार, धार्मिक चर्चा, राष्ट्रीय उन्नतिके सम्बंधमें किसी न किसी रूपसे कविताओं और लेखोंका संग्रह रहता ही है। इसलिये दिगम्बर जैन एक उत्तम साहित्य निर्माता कहा जा सकता है।

जो लोग नये ही ग्राहक हैं वे यह जानकर प्रसन्न एवं सन्तुष्ट होंगे कि दिगम्बर जैनके साधारण अङ्क तो उपयोगी होते ही हैं मगर इसके विशेषांक कितने बेषकीमती होते हैं। कुछ वर्षोंसे तो हमने इसमें अमुक विषयोंकी मुख्यताको लेकर ही विशेषांक निकालना प्रारम्भ किये हैं। यह पद्धति पाठकोंको बहुत पसन्द आई है। इसलिये हमने यह क्रम चालू रखा है। अमुक नाममे विशेषांक निकालनेके कारण लेखकोंको तत्सम्बन्धी विचार प्रगट करनेमें सुविधा होती है और एक ही विषयका अच्छा साहित्य संग्रह होजाता है। गत साल जो विद्वानोंके चित्रों सहित लेखवाला विशेषांक प्रगट हुआ था और उसके पूर्व राष्ट्रीय अंक आदि प्रगट किये थे वह पाठकोंको बहुत पसन्द आये। इसी लिये हमने इस पद्धतिको और भी उत्तम रीत्या चालू रखना ठीक समझा है।

× × ×

समाज अंक। इस वर्ष जो यह समाज अंक प्रगट होरहा है वह गत वर्षोंके विशेषांकोंकी अपेक्षा अधिक उपयोगी, बहुमूल्य एवं लाभकारक होगा। इसमें अनेक विद्वानोंने समाज सम्बन्धी विविध विचार प्रगट किये हैं। समाजकी दयनीय दशाका खासा चित्र चित्रण किया है और उसकी रक्षाके उपाय भी बतलाये हैं। इसके कितने ही लेख तो इतने जोशीले, उग्र एवं हृदयको फड़कानेवाले हैं कि युवकोंके अन्तरंगको परिवर्तित कर देंगे, समाज सुधारकोंको कार्यमें तत्पर बना देंगे और सर्वसाधारणकी आंखें खोल देंगे।

अबकी वार इस अंकमें जो चित्र प्रगट किये गये हैं वे भी 'समाज अंक' की शोभारूप हैं। इनमेंसे कुछका परिचय तो हमने चित्रपरिचयमें दिया ही है। उसके अतिरिक्त जो ३ कार्टून दिये गये हैं वह कितने भावपूर्ण और समाजकी दयनीय दशाके दर्शक हैं यह सहृदय पाठक ही जान सकेंगे। कन्याविक्रयवाला कार्टून किसके हृदयको नहीं हिला देगा? उसमें बताया गया है कि कन्याका स्वार्थी बाप किसी नराधम श्रीमानको अपने हाथोंसे पाली पोसी हुई कन्या ९०००) में बेच देता है और उसके यहां पानी पीनेसे इंकार करता है! ऐसे ढोंगी नरपिशाचोंका अस्तित्व समाजमें अभी भी पाया जाता है। जबतक वृद्धविवाह नहीं रुकेंगे तबतक कन्याविक्रय रुकना भी असंभव जैसा है।

इसलिये समाजहितैषियोंका कर्तव्य है कि वृद्धविवाह निषेधक कानून बनवानेके लिये पूर्ण प्रयत्न करें। श्रीमान् स्व० सिं० गोकुलचंदजी वकील दमोहने एक बिल इस सम्बन्धमें पेश किया था, मगर दुर्भाग्यका विषय है कि वे इस शुभ कार्यको करानेके पहिले ही स्वर्गवासी होगये हैं। अब यह पुण्य कार्य किसी अन्य दयाप्रेमी सज्जनको अपने हाथमें लेना चाहिये, ताकि कन्याओंकी रक्षा हो और बढ़ते हुये अनाचार रुक जावें।

दूसरा कार्टून मरण भोजके सम्बन्धमें है। यह हमारी समाजका खासा चित्र है। अभी भी कितने ही कट्टरपन्थी लोग मरण भोजको आवश्यक समझते हैं, उसे धर्म-संगत बताते हैं और एक गरीब कुटुम्बको कर्जमें फसा कर उसका विनाश ही कर देते हैं। जब युवक वर्ग इस अनर्थका विरोध करता है तब स्थितिपालक लोग कई मन शक्कर नुक्तेके लिये गलानेका प्रस्ताव पास कर रहे हैं। यही हाल सारी समाजका है। इस आर्थिक संकटके जमानेमें नुक्ता प्रथाको बन्द करके समाजको नष्ट होनेसे बचाना चाहिये।

तीसरा कार्टून श्रीमानोंके धनमद और विद्यार्थियोंकी दीनदशाका है। यह चित्र बहुत ही दयनीय है। जब कि श्रीमान् लोग विवाह शादियों, नुक्ता और लानमें तथा आतिशबाजी आदि फिजूल खर्चोंमें एवं व्यर्थकी वाहवाहीमें हजारों रुपया बरबाद कर देते हैं तब वे अपनी जातिके साधर्मी गरीब विद्यार्थियोंको पुस्तकोंके लिये भी कुछ नहीं देसकते हैं, किन्तु दरवाजेपर आये हुये गरीब विद्यार्थियोंको यों ही धुतकार देते हैं। इन कार्टूनोंको देखकर समाजके सहृदयी सदस्य कुछ सुधार करेंगे ऐसी आशा है।

इसके अतिरिक्त एक चित्र आचार्य संघका और दूसरा आर्यिका संघका है। इनसे तो जैनसमाज परिचित ही है। आशा है कि यह अंक पाठकोंको पसंद होगा और इसके द्वारा समाजका कुछ सुधार होगा।

× × ×

दि० जैन परिषद्। हमारी भारतवर्षीय दिगम्बर जैन परिषदका जन्म जिस उत्साहके साथ और जिस आदर्शको लेकर हुआ था उसकी उत्तरोत्तर वृद्धि देखकर किस समाज–हितैषीको हर्ष नहीं होगा। इसने अभीतक कितने ही समाज-सुधारके कार्य किये हैं, धार्मिक सेवा की है और राष्ट्रीय सेवामें भी भाग लिया है। इसके द्वारा अनेक गरीब विद्यार्थियोंको सहायता दी जाती है, जैन धर्मकी पुस्तकोंका प्रकाशन होता है, परीक्षा लेकर ज्ञान प्रचार किया जाता है, इनाम देकर छात्रोंका उत्साह बढ़ाया जाता है, प्रचारक कमेटी द्वारा कुरीतियोंका निवारण किया जाता है। और वीर पत्र द्वारा समाजकी स्थाई सेवा की जाती है। तात्पर्य यह है कि एक जीती जागती संस्था जो कुछ भी कर सकती है वह सब कार्य परिषद द्वारा हो रहे हैं।

परिषदका १० वां अधिवेशन ता० २९–३० दिसंबरको इटारसीमें होगा। वहां जाकर इसकी जागृत दशाको देखिये। वहां इसके विवेकी उत्साही एवं उदार कार्यकर्ताओंसे मिलिये और वहां जाकर समाजसेवाके प्रोग्राममें अपना भाग दीजिये। विश्वास रखिये कि भविष्यमें यदि समाजकी सच्ची सेवा और वास्तविक हित होगा तो वह इसी परिषद द्वारा होगा। दि० जैन समाजकी पुरानी संस्था महासभाने जब उसके हठग्राही एवं संकुचित दृष्टिवाले कार्यकर्ताओंकी कृतियोंसे अपनी प्रतिष्ठा गुमा दी है, अपना नाम बड़ा और काम छोटा कर दिया है तथा मात्र दिखावटमें ही अपने कार्यकी इतिश्री

समझी है तब हमारी परिषद ऐसे उत्तम कार्य कर रही है कि जो आश्चर्यमें डाल देते हैं। यदि समाजने इसका सब तरहसे साथ दिया तो वह दिन दूर नहीं हैं कि जब भारतवर्षमें जैन जातिका सर्वोच्च स्थान और सन्मान होगा।

× × ×

उपहार ग्रन्थ। 'दिगम्बर जैन' का वार्षिक मूल्य जब २।) ही है तब इसके ग्राहकोंको १२ अंकोंके सिवाय अनेक उपहार ग्रन्थ २२ वर्षोंसे भेंट किये जाते हैं। उसी प्रकार गत वर्षमें संक्षिप्त जैन इतिहास दूसरा भाग प्र० अं० आदि २॥) के ९ ग्रन्थ भेंटमें दिये गये थे। तथा इसी प्रकार इस वर्षके ग्राहकोंको भी जैन इतिहास दूसरा भाग दूसरा खंड आदि २–३ ग्रन्थ भेंटमें दिये ही जायगे अतः नवीन ग्राहक बननेवाले शीघ्रता करें ताकि उनको यह विशेषांक भी मिल सके तथा उपहार ग्रंथोंका भी लाभ मिल सके। 'दिगम्बर जैन' के जो प्रारंभसे ग्राहक हैं, (व जो व्यवस्थित रखनेवाले हैं) उनके घर जाकर यदि कोई भी पाठक देखेंगे तो उनको 'दिगम्बर जैन' द्वारा भेंट की गई करीब १००-१२५ धार्मिक पुस्तकें देखनेमें आयेंगी। अतः सब ग्राहकोंको इसी प्रकार उपहार ग्रन्थ सम्हालकर रखने तथा वार२ निकालकर स्वाध्याय करने करानेकी सूचना उचित ही होगी।

× × ×

तिथिदर्पण। चालू वर्ष वीर सं० २४६० का 'जैन तिथिदर्पण' सब ग्राहकोंको गत आश्विन मासके अंकके साथ भेजा जाचुका है तथा नवीन ग्राहकोंको इसी अंकके साथ भेजा गया है वह हरएक नवीन ग्राहक सम्हाल लें। इस 'तिथिदर्पण' में हैदराबादमें उपसर्ग-जयी श्री १०८ मुनि श्री जयसागरजीका उपवास समयका फोटो (चित्र) दिया गया है, इससे सब वर्षोंकी अपेक्षा इस वर्षका तिथिदर्पण अतीव आकर्षक बन गया है। यह तिथिदर्पण जिस किसीको चाहिये हो –)॥ की टिकिट भेजकर अब भी मंगा सकते हैं।

× × ×

ગુજરાતમાં શિથિલતા. એક સમયે ગુજરાતમાં દિગંબર જૈનોની ગણના શ્વેતાંબર જૈનોની અપેક્ષાયે કંઈજ હિસાબમાં નહોતી તેવા સમયમાં સ્વર્ગીય દાનવીર જૈનકુળભૂષણ શેઠ માણેકચંદ હીરાચંદ જે. પી. એ પોતાના તન, મન ને ધનનો ભોગ આપી ગુજરાત અને હિંદુસ્તાનના દિગંબર જૈનોની ધાર્મિક, આર્થિક અને સામાજિક ઉન્નતિ કરવાને માટે બોર્ડીંગો, પાઠશાળાઓ સ્થાપવાને જે તનતોડ પરિશ્રમ કર્યો હતો, તે ઇતિહાસના પાનાંપર સુવર્ણ અક્ષરે લખાયલો છે. આ દિગંબર જૈન પણ ૨૬ વર્ષથી ગુજરાતના દિગંબર જૈનોમાં કંઈક જાગૃતિ લાવી શક્યું છે તે પણ આ સ્વર્ગીય શેઠનોજ અમોને મળેલો ધાર્મિક વારસો છે. વળી મુંબાઈ પ્રાંતના દિગંબર જૈનોની ઉન્નતિ કરવાને એજ શેઠે મુંબાઈ દિગંબર જૈન પ્રાંતિક સભા (કોન્ફરંસ) સ્થાપન કરાવી હતી. તે જ્યાંસુધી ઠીક ઠીક ચાલી ત્યાંસુધી તો ગુજરાતમાં જાગૃતિ હતી, પણ એ સભામાં આશરે દશ વર્ષપર વૈમનસ્ય થવા પછી એ સભાનું કોઈ અધિવેશન થઈ શક્યું નથી ને માત્ર "જૈન મિત્ર" ને પરીક્ષાલયના ચાલુ કામ સિવાય પ્રાંતિક સભાનાં બધાંજ કાર્ય બંધ પડેલા છે એટલે ગુજરાતના દિ. જૈનોમાં જાગૃતિ લાવવાનું એ ઉત્તમ સાધન બંધ થવાથી ગુજરાતમાં હવે ગુજરાત દિગંબર જૈન પરિષદ (કોન્ફરંસ) સ્થાપન કરવાની અગત્ય ઉભી થઈ છે અને તેથીજ બે માસ થયાં એ માટે ગુજરાતમાં પ્રચાર કાર્ય થઈ રહ્યું છે જે નીચેની વીગતોથી જણાશે:—

પ્રચાર કાર્ય. ગુજરાતના દિગંબર જૈનોની ધાર્મિક, આર્થિક, અને સામાજિક ઉન્નતિ કરવા માટે એક સ્થાયી સંસ્થા સ્થાપવાનો પ્રયાસ કરવા બે માસથી પ્રસિદ્ધ દેશભક્ત ને સમાજસેવક ભાઇશ્રી છોટાલાલ ઘેલાભાઇ ગાંધી, છગનલાલ ઉત્તમચંદ સરૈયા, મુળચંદ કશનદાસ કાપડિઆ, નાગરદાસ સંઘવી, નરોતમદાસ જગજીવનદાસ, મોતીચંદ સાકેરચંદ તાસવાલા, ઠાકોરલાલ હરજીવનદાસ વગેરે એ ગુજરાત પ્રાંતમાં ખાસ ખાસ સ્થળે ભ્રમણ કરી લોકમત કેળવ્યો છે ને જ્યાં ન જઇ શકાયું ત્યાં પત્રોદ્વારા સંદેશો મોકલાવી, એટલે કે સુરત, અંકલેશ્વર, આમોદ, અમદાવાદ, સોજીત્રા સંભા, કલોલ, ઝેહેર, નરસીપુર, દાહોદ, પ્રાંતિજ, ઇડર, ભિલોડા વગેરે સ્થળે જઇ પંચ મેળવી તેમજ સભા કરી લોકમત કેળવ્યો છે અને સર્વે સ્થળોથી ગુજરાતમાં આવી સંસ્થાની સ્થાપનાની જરૂરત બતાવાઇ છે. કેમકે ગુજરાતમાં મુંબાઇ, પાવાગઢ, તારંગા, પાલીતાણા વગેરેના મુંબઇ પ્રાંતિક સભાના અનેક અધિવેશનોથી તથા અનેક ઉપદેશકોથી જે જાગૃતિ ગુજરાતમાં હતી તે મંદ પડી જવાથી દરેક સ્થળેથી એજ અભિપ્રાય મળ્યો છે કે ગુજરાતના દિગંબર જૈનોનો એકત્ર અવાજ સંભળાય એવી એક સંસ્થાની ગુજરાતમાં અત્યંત તાકીદે જરૂર છે.

× × ×

ઉન્નતિની આવશ્યકતા. હવે ત્રણ પ્રકારની ઉન્નતિમાં પ્રથમ ધાર્મિક ઉન્નતિ તરફ જોઇશું તો ગુજરાતમાં ઘણી પાઠશાળાઓ સ્થાપન થઇ હતી તેમાંની ઘણી ખરી બંધ પડી ગઇ છે. દાખલા તરીકે અંકલેશ્વર આમોદ, કલોલ વગેરેમાં પાઠશાળાઓ જાગ્રતિના અભાવે બંધ પડી ગઇ છે. બોર્ડિંગોમાં અમદાવાદની પ્રે. મો. દિગંબર જૈન બોર્ડિંગ હતીજ, ને ઇડર તથા પ્રાંતિજમાં બોર્ડિંગ ને મુંબઇ શ્રાવિકાશ્રમ ઉપરાંત જાંબુડીમાં શ્રાવિકાશ્રમ સ્થપાયું છે પણ એટલેથી કંઇ આપણી જરૂરીયાતો પુરી પડતી નથી. મેવાડા અને નૃસિંહપુરા ભાઇયોની સ્થિતિ ઠીક છે પણ વીસા હુમડ, દશા હુમડ ને રાયકવાળ ભાઇયોની સ્થિતિ કેળવણીના સંબંધમાં એટલીબધી પછાત છે કે જે જોતાં નીચું જોવું પડે છે. આજે સુરત, વડોદરા અને દાહોદમાં અત્યંત તાકીદે બોર્ડિંગો ખોલવાની જરૂરીઆત હવે સ્પષ્ટ જણાય છે. આર્થિક ઉન્નતિમાં ગુજરાત ઘણુંજ પાછળ છે ને આર્થિક સ્થિતિ કફોડી થતી જાય છે, તે ઉપર લક્ષ આપવાની જરૂર છે. અને સામાજીક સ્થિતિ તો એટલી દયાજનક છે ને એ તરફ હવે ધ્યાન નહિ અપાય તો થોડાજ સમયમાં ગુજરાતના દિગંબર જૈનોની સ્થિતિ અત્યંત દયાજનક થઇ પડવા સંભવ છે. કેમકે ગુજરાતની દરેક પંચોમાં ઝઘડા અને એવા પક્ષો પડી ગયા છે કે જેનો નીવેડો એક કૉન્ફરંસ લવાદ પંચ મારફતજ લાવી શકાય એમ છે. કોઇપણ ધાર્મિક કાર્ય કે કેશરિયાજી વગેરે તીર્થોના ઝઘડા માટે ગુજરાતના દિગંબર જૈનોનો એકત્ર અવાજ રજુ કરવા માટે પણ ગુજરાતમાં સ્થાયી સભાની જરૂરત છે. વળી ગુજરાતમાં વસતા વીસા હુમડ, દશા હુમડ, નૃસિંહપુરા, વીસા મેવાડા અને રાયકવાળ ભાઇયોની સ્થિતિ તરફ નજર કરીશું. તો વીસા હુમડ ને રાયકવાળ ભાઇયોની સંખ્યા અને સામાજીક સ્થિતિ અત્યંત દયાજનક છે. મેવાડા, દશા હુમડ અને નૃસિંહપુરા ભાઇઓની સંખ્યા અવશ્ય સારી છે; પણ એમનામાં પણ જાતિના રીતરીવાજોના એવાં બંધનો છે કે જેમાં ઘણો સુધારો થવાની જરૂર છે. વળી એકજ ગામમાં તથા તેની આજુબાજુના ગામોમાં રહેતા હુમડ, નૃસિંહપુરા, મેવાડા અને રાયકવાળ એકસાથે બેસીને રોટી વ્યવહાર કરી શકે છે, તો પછી તેઓ પરસ્પર બેટી વ્યવહાર પણ કરે તો તેમાં ધાર્મિક રીતે પણ વાંધો આવતો નથી. કેમકે અંતરજાતીય વિવાહ શાસ્ત્ર-સિદ્ધ છે ને શાસ્ત્રોમાં એના અનેક દાખલાઓ મોજુદ છે,

પણ જ્યાં જોઇશું ત્યાં જણાશે કે સંકુચિત ક્ષેત્ર હોવાથી કન્યા આપવા લેવામાં અનેક વિટંબણાઓ પડે છે એટલે યોગ્ય વર ને યોગ્ય કન્યા મળી શકતી નથી. વળી ગુજરાતના મેવાડા ને દશા હુમડ ભાઇઓમાં નાની નાની વયમાં સગાઇ કરી દેવાના જે રિવાજો અને બંધનો છે તેનો અનુભવ આ પ્રચાર કાર્યમાં અમને મળ્યો છે તેથી સ્પષ્ટ જણાય છે કે એ ભાઇયોમાં નાની વયમાં વિવાહ (સગાઇ) કરી દેવાનો રિવાજ જડમૂળથી કાઢી નાંખવાની પણ અત્યંત જરૂર છે.

× × ×

સુરતમાં કાન્ફરંસ

ઉપલાં અનેક કારણોને લઇને ગુજરાતમાં દિગંબર જૈન પરિષદ (કાન્ફરંસ) સ્થાપન કરવાની જરૂરત ઉભી થઇ અને તે માટે સુરતના દિગંબર જૈન ભાઇઓએ પહેલ કરી બીડું ઝડાયું છે અને આ ડિસેંબર માસની આખરે સુરતમાં **"ગુજરાત દિગંબર જૈન કાન્ફરંસ"** (પરિષદ) મળનાર છે, તે માટે સ્વાગત કમેટી પણ સુરતમાં નીમાઇ છે, ને તેની આમંત્રણ પત્રિકા, નિવેદન ને પ્રતિનિધિ ફાર્મ આ અંક સાથે મોકલવામાં આવ્યા છે. તેપર દરેક ગામના ભાઈઓને લક્ષ આપવા તથા ગામેગામથી પંચ મારફતે પ્રતિનિધિઓ ચુંટીને મોકલવા આગ્રહ પૂર્વક ભલામણ કરીશું.

આ કાન્ફરંસ (પરિષદ) ના પ્રમુખપદ માટે અમારા ધ્યાન પ્રમાણે તો સ્વર્ગીય દાનવીર શેઠ માણેકચંદના સુયોગ્ય ભત્રીજા શેઠ તારાચંદ નવલચંદ ઝવેરી નીમાય અને આપ શેઠ તે સ્વીકાર કરે તો ઘણુંજ ઉત્તમ થાય. આશા છે કે સુરતની સ્વાગત કમેટી આ બાબત લક્ષ આપશેજ.

परिषदकी परीक्षा–१४–१६ जनवरीको न होकर ता० २१–२२–२३ जनवरीको होगी।

सिवनीमें–ता० ३१ व १ जनवरीको रजत रथोत्सव व स्थानीय अनेक सभाओंका अधिवेशन पं० अजितप्रसादजी वकीलके सभापतित्वमें होगा।

जैन समाचार संग्रह।

સોજીત્રા વીસા મેવાડા જૈન યુવક સંઘ-ની ચોથી કમેટી વસોમાં કાર્તક સુદ ૬ ને દિને મળી હતી જેમાં ૧૩ મેમ્બર હાજર હતા. ને અંકલેશ્વરના શ્રી છોટાલાલ ગાંધીએ પણ હાજરી આપી હતી. એમાં કુલ્લે ૯ ઠરાવ નીચેની મતલબના થયા છે. ૧–૨ શેઠ શંકરલાલ તાપીદાસ અને વીર વિઠ્ઠલભાઇ પટેલનો શોક, ૩–વકીલ હિંમતલાલ, શા. પ્રાણલાલ અને દામોદરદાસ શાહને પાઠશાળાની સેવા માટે ધન્યવાદ, ૪–જ્ઞાતિનું તૈયાર કરેલું વસ્તી પત્રક છપાવવાનો ખર્ચ જ્ઞાતિ–શેઠ મુલચંદ હરીલાલ ઠરાવ મુજબ આપતા નથી તે આપવાને તેમને ફરી વિનતિ, ૫–આવતા લગ્નગાળા પ્રસંગે પ્રથમની માફક વોલંટિયરોની વ્યવસ્થા કરવા ૫ ની કમીટીની નિમણુંક. ૬–લગ્ન ગાળા પ્રસંગે એક સ્નેહ સંમેલન કરી તેમાં બોધદાયક સંવાદો કરાવવા તથા જાણીતા સમાજ સેવકોને બોલાવી તેમનાં વ્યાખ્યાનો કરાવવાં, ૭–વસ્તી પત્રક હાલ તુર્ત છપાવી દેવું ને પછી ખરચની રકમ પંચ પાસે માંગવી. ૮–સુરતમાં ગુજરાત દિ૦ જૈન કાન્ફરંસ મળે તો તેમાં ૮–પ્રતિનિધિ મોકલવાની નિમણુંક. ૯–જ્ઞાતિ પંચનું નવીન બંધારણ લગ્નગાલા અગાઉ તયાર કરવા ૫ સભ્યોની નીમણુંક.

વકીલ હીરાલાલ અંબઇદાસ મંત્રી–પાદરા.

जांबुडी (गुजरात)ना श्राविकाश्रममां ता० ७ मी डिसेम्बरे श्रीमती चंचलब्हेननो स्वर्गवास थयो छे. आपे जांबुडी आश्रममां त्रण वर्ष ओनररी रीते कार्य कर्युं हतुं. अंतमां आप ४०१) दान करी गया छे. आप सोनासणना रहीस हता अने मोटी उमरे सोजीत्रा आश्रममां दाखल थई तैयार थयां हतां अने जांबुडी आश्रममां आपनी सेवा आपी रह्यां हतां. सोजीत्रामां आपना शोकमां ता० १३मीए सभा थई हती. समाजनी बीजी विधवा ब्हेनो चंचलब्हेननुं अनुकरण करशे के ?

પ્રલય કાળ.

(લેઃ-ચંદુલાલ પી. શાહ સુપ્રિ. ઇડર બોર્ડિંગ)

પાપો પ્રગટયાં દૈવ રૂઠયું, ઘોર અંધાર છાયો,
વરૂણ કોપ્યો, અનિલ પ્રગટયો, કાલ દૈત્ય આવ્યો ?
દૈત્ય શો કાળ આવ્યો,
મૃત્યુઘંટ ગજબ ગાજ્યો; (૧)
ધરણી ધ્રુજી, ફણીધર કંપ્યો, જ્વાળામુખી ભભૂક્યા,
દાવાનળ સળગ્યો, ખૂબ ધૂમ્યો, દશ દિશ અંગાર ઉડયા,
અંગાર દશ દિશ ઉડયા,
ને અનિલ દેવ તડૂકયા; (૨)
સાગર કૂદયો, પ્રલયપૂર ચઢયાં, શંખનાદો ફૂંકાયા,
વનરાજ ગાજ્યાં, પર્વત ડોલ્યા ખૂબ ગોલંદ તૂટયા,
ગોલંદ ખૂબ તૂટયા,
આગ્નેય ગોળા વછૂટયા; (૩)
પરછંદ ગાજે, કર્ણપટ તૂટે, કારમાં કંપનોથી,
મૃત્યુઘંટ નાદે, ગગન ગાજે, ઘોર સંહાર માંડયો,
સંહાર ઘોર માંડયો,
કારમો કોપ શાનો ?
પાપ કોનાં પ્રકારયાં ?
દૈવ કેનું રૂઠયું ? (૪)
વર્ષોના ઘોર સંહારકો રે, અભિમાની ફણીધરે,
ગરિબ લોહી પીને, અન્યાયો આદરીને,
હજારો બાલિકાને
રાંક વિધવા તણા,
શ્રાપ જેણે વ્હોર્યા
ને હાથ દૈવે ધરી (૫)
એવા ક્રૂર રક્ત તાબોલ, કુંભકર્ણશી નિંદરે સૂતા,
સમાજના સંહારાર્થે, કુદરત કિયા કાજે,
પ્રલય પ્રગટયો
ને દૈવ રૂઠયું; (૬)
સંહારશે, ભષ્મ કરશે બંધનો ફગાવી દેશે.
ને ત્યારે પ્રલય શમશે, કુદરત કોપ જંપી જશે,
જટ ચેત આંખ ખોલી,
દે બંધનો ફગાવી,
નહીં તો પ્રલય ધૂમા,
છે આખીર તુજ સમાધી.
ઓ સમાજ !
ઓ યુવાન ! (૭

આ તો ઉર્મી ગીત છે.

સાચેજ એમાં અનેક ખામીયો છે; છતાંય આજે આ હૃદય જે મંથનો અનુભવી રહ્યું છે તેને માર્ગ આપેજ છૂટકો. આજે આપણા સમાજમાં મારા જેવા અનેક યુવાનો હશે જેમનાં હૃદય સમાજની ઘોરતમ અધોગતિ દેખી દ્રવી જતાં જશે. આ કાવ્ય કહો કે ઘેલછા કહો, જે કહેવું હોય તે કહો, પણ એ દ્વારા મારે શું કહેવું છે એ સ્પષ્ટ કરવાની આ તક સાધું છું.

હજારો વર્ષોથી આપણા હિંદુ સમાજે જૂલ્મ ને અન્યાયની ઝડીયો વર્ષાવી છે; હજારો ને લાખોની સંખ્યામાં કુમળી બાળાઓનાં જીવનપરાગ લૂંટ્યાં છે, અનેકને વૈધવ્ય દુઃખ ફરજીયાત પળાવ્યાં છે; લગ્નોત્સવ પ્રસંગે, મૃત્યુ પછીની ખર્ચાળ ન્યાતોના વરા વખતે, સીમંત અવસરે, એવા અનેક રિવાજોને નિયમબદ્ધ પળાવવાની કારમી નીતિથી હજારો ગરિબ કુટુંબોનો સત્યાનાશ કર્યો છે; સમાજનો આ બધાં પાપોનો ઘડો હવે ભરાઇ ગયો છે. કાવ્યની ચોથી કડી સુધી ઘોરતમ પ્રલયનું વર્ણન કર્યું છે, પાંચમી કડીમાં પ્રશ્ન પૂછ્યો છે કે આ બધું કોના સંહારાર્થે આદર્યું છે, ને પછી છેલ્લી કડીયોમાં કાવ્યને પલટાવી દર્શાવ્યું છે કે આ બધાં કારમાં કંપનો સમાજના ઘોર અન્યાયો વગેરેને દફનાવવા માટે થઇ રહ્યાં છે. આટલી સમજાવટ પછી ગીતનો સ્પષ્ટ અર્થ સમજીએ.

"જૂલ્મી સમાજનાં અનેક વર્ષોનાં પાપો પ્રગટ થયાં; (એના જૂલ્મો અને જહાંગીરી શાસનો એટલાં અસહ્ય હતાં કે તેને ધરતી પણ સહી શકી નહિ.) નસિબ વિફર્યું, ને ચોમેર ઘોર અંધકાર છવાયો. (આજે આપણે નરી આંખે જોઇએ છીએ કે આપણાં જૈન સમાજમાં કેટલી બધી અનીતિને ગેરવ્યવસ્થારૂપી અંધાધુંધી પ્રસરી રહી છે. સમાજનાં નૈતિક બંધનોને કોઇ ગણતું નથી એટલે અનૈતિક અને કાળાં કર્મોનું સામ્રાજ્ય વિજય પામ્યું છે. આ બધી શિથિલતાને અંધકાર છાયો એમ કહ્યું છે.) ઘોરતમ અંધકારની સાથે અનેક

અસત્યાચરણો રૂપી પવન (વરૂણ) ફૂંકાવા લાગ્યો; ને પાપ રૂપી મેલના વાયરા પ્રસર્યા. એ વાયરાએ અનાચાર રૂપી અનિલ (અગ્ની) ને ચીનગારી ફૂંકી પ્રદીપ્ત કર્યો. અને જાણે કાળદૈત્ય-યમરાજ આવ્યો ન હોય એમ લાગવા માંડયું. એ દૈત્ય જેવા કાળનાં આગમન ગેબીગજબ નાક નાદે મૃત્યુઘંટે સૂચવ્યું. આવા ભયંકર ઉલ્કાપાત, અસહ્ય મહાભિનિષ્ક્રમણ ને વિપ્લવનાદે ધરણી-પૃથિવી કંપાયમાન થઇ, શેષનાગ થરથર ધ્રુજવા લાગ્યો ને એ ભયંકર ધરતિકંપથી જ્વાળામુખી (રાગદ્વેષ) ફાટ્યા અને એમાંથી ઝરતા લાવા જેવા બાળીને ભષ્મ કરે એવા પદાર્થો પૃથ્વીમાં દશ દિશાએ ઉડવા લાગ્યા, જેથી કરીને ભયંકર દાવાનળ સમાજની રસકુંજો ને ઉપવનોમાં સળગી ઉઠયો. આ વડવાનળની અગ્નિજ્વાળાઓ એવી તો વિકાળ સ્વરૂપે પ્રસરી કે એના જડબામાં આવતી પ્રત્યેક વસ્તુઓને યાહોમ કરવા લાગી. આમ ખરેખર જાણે અગ્નિદેવતા કોપાયમાન થયા ન હોય એમ લાગતું. અને પછી તો કુદરતનાં સઘળાં સંહારક તત્વો વિફર્યાં. સાગરનાં મોજાં ઉછળ્યાં, પ્રલયનાં દુનિયાના સામુદાયિક નાશનાં પૂર ચઢયાં; કુદરતે તાંડવ નૃત્ય આદર્યું. શંખના અવાજો થવા લાગ્યા, વને વને ભયંકર ત્રાડ ને ચીસ પાડતા સિંહો ગર્જના કરવા લાગ્યા, પર્વતો ડોલ્યા, ને તેની શીખરમાળો પરથી બૉમ્બનો મારો એરોપ્લેનમાંથી થતો હોય એવા પત્થરોના ગોળા ભૂપર તૂટી પડવા લાગ્યા. એના નાદો જાણે પડછંદ પડતા હોય એમ ગાજવા લાગ્યા, કાનના પડદા તૂટવા લાગ્યા, એવાં એવાં કારમાં કંપનો થવા માંડયાં. આ બધામાં જાણે કોઇ પાશવી બળનો મૃત્યુઘંટ ગાજતો હોય એમ ગગનમાં વાદળો ભયંકર અવાજ કરવા લાગ્યાં. આવો આવો ઘોરતમ સંહાર મંડાયો. આ બધો કારમો કોપ અને ઘોર સંહાર કોનો અને કોના માટે માંડયો છે? અને કોનાં પાપ પ્રગટ થયાં છે? કોની ભાગ્યદશા પલટાઇ ગઇ છે, એવા પ્રશ્નો પૂછી પછી એ બધાનો જવાબ આપતાં કાવ્ય પલટો લે છે. આ સંહાર એનો છે, આ પ્રલયપૂર એને ડુબાડવા માટે ચઢયાં છે, આ બધાં કંપનો એને માટે થાય છે. જે સમાજે વર્ષોથી ઘોર વિનાશક શાસનથી, મિથ્યા અભિમાન ને કુલિનતારૂપી ફણીધર શા ફાંકા વડે, અનેક કુરિવાજો અને રૂઢીયોના સત્યાનાશ વર્તાવતા યંત્રદ્વારા ગરિબનાં લોહી ચૂસ્યાં છે, ગણાવતાં પાર પણ ન આવે એવા અન્યાયો આદર્યા છે, હજારો નિર્દોષ બાલિકાને વિધવાનાં જીવન નષ્ટ યા કલંકિત કરી તેમને પજવી, પીલી, રક્તશોષણ કરી હાય વ્હોરી છે, એવા ઘાતકી, લોહીરંગ્યા, ને જે ચીલો પકડયો છે તે નહિ છોડવાની અવળી બુદ્ધિ હઠાગ્રહથી પકડી રાખી અનેક પડઘમ વાજાં વાગતાં છતાંય કુંભકર્ણશી ઉંઘમાં ઉંઘતા, આ સમાજનો સંહાર કરવા માટે, તેની અંતિમ દફનક્રિયા આદરવા માટે આ પ્રલય પ્રગટયો છે ને ભાગ્ય (સમાજનું) રૂઠયું છે. જ્યારે એ સમાજનો સંહાર કરશે, તેને ભષ્મ કરશે (અલબત્ત અનિષ્ટ તત્વોને) અને એનાં અયોગ્ય બંધનોને દૂર દૂર કો અગમ્યતાને આરે ફેંકી ફગાવી દેશે, ત્યારેજ એ પ્રલય પૂર શમશે અને કુદરતનો કોપ જંપી જશે.

વાસ્તે ઓ સમાજ ને તેના આધારસ્થંભ યુવાન! ઝટ ચેત, ચક્ષુ ખોલ, અનિષ્ટ બંધનોને તોડી ફોડી વિસર્જન કર, નહિંતર પ્રલયના પૂરમાં તારા એ સમાજની અને તારી આહુતિ સર્જાઇ છે."

બ્યારા-(સુરત)માં શેઠ શીવલાલ ઝવેરચંદે ૧૨૦૦૦) ખરચી પ્રાચીન મંદિરનો ઉદ્ધાર કરાવી શિખરબંધ મંદિર બનાવવા શરૂઆત કરેલી તે કામ ત્યાંની પંચે પ્રયાસ કરી જેમતેમ પુરૂ કરેલું તે વાતને પણ પાંચેક વર્ષ થયાં હશે તો પણ હજુ સુધી પ્રતિષ્ઠા થઇ હતી તે હવે તો તાકીદે થવાની જરૂર છે. જો શીવલાલ શેઠના પુત્ર ભાઇ રતીલાલ કરે તો ઘણું ઉત્તમ પણ આપથી ન બને તો બ્યારાની પંચે એ કાર્ય કરવાની જરૂર છે. રતીલાલ વકીલ વડોદરા.

जैपुर राज्यके पुराने (पिता-पुत्र) जैन दीवान।

श्री. दीवान शिवजीलालजी पाटनी-जयपुर। श्री महामना दीवान अमरचंदजी साहब-जयपुर।

धर्मधुरंधर सरलचित, धीरवीर नयवान; दान गुन धर्मी धनी, उपकारक गुणवान।
खड़े पिताके सामने, जग आदर्श महान; अमर अमर कृतिसे हुए, अमरचन्द दीवान॥

Jain Vijaya Press, Surat.

चित्र-परिचय।

(१) **समाज बंधन**—इस हृदयद्रावक चित्रको देखकर मालूम होगा कि जैन समाजका प्रत्येक अंग सामाजिक फूट, फिजूल खर्च, रूढियां, नुक्ता, बालविवाह और वृद्धविवाहसे कैसा जकड़ा हुआ है। इसी लिये जैन समाज दुखी होकर मरणासन्न हो रही है। अतः युवकगण इसे बंधनमुक्त करनेका पूर्ण प्रयत्न करें।

(२) **श्री० अमरचन्द दीवान**—स्व० दीवान शिवजीलालजीके गृहमें दीवान अमरचंदजीका जन्म संवत १८४० में हुआ था। शिवजीलालजी उस समय जयपुर नरेश श्री० प्रतापसिंहके दीवान थे। आपने मणिहारोंके रास्तेमें विशाल दि० जैनमंदिर बनवाया था, जो अभी भी शोभित है। श्रीमान् जयपुर नरेशने स्वयं इस मंदिरकी नीव अपने कर-कमलों द्वारा रखी थी। दीवान शिवजीरामजीकी मृत्यु सं० १८६७ में हुई थी, तब अमरचन्दजी जयपुर राज्यके दीवान पदपर आरूढ़ हुये थे। उस समय आपकी आयु मात्र २७ वर्षकी ही थी। इसीसे आपकी बुद्धि प्रतिभाका पता लग जाता है।

दीवान अमरचंदजी खण्डेलवाल दिगम्बर जैन जातिके भूषण एवं पाटनी गोत्रकी महाविभूति थे। आप शुद्धाम्नायी तेरहपंथी थे। आपके द्वारा ही निर्माण किया हुआ मंदिर 'छोटे दीवानजीका मंदिर' के नामसे प्रसिद्ध है। आप संस्कृत भाषाके भी प्रौढ़ विद्वान थे। स्व० पं० जयचन्दजी छावड़ा तथा पं० वृन्दावनजी आपके समकालीन थे। पं० वृन्द्रावनजीको लिखे गये आपके संस्कृतके श्लोकबद्ध पत्र प्राप्त हुये हैं। दीवान सा०की धर्म-प्रियता उल्लेखनीय है। जयपुर दरबारके प्रबंधकर्ता दारोगा मन्नालालजीने एकबार जब अपनी विशाल हवेली दीवान सा०को देखनेको कहा तब आप बोले कि "अपने रहनेका स्थान तो पशुपक्षी भी बनाया करते हैं, उसे मैं क्या देखूं ? यदि कोई जिन मंदिर बनाते तो उसे देखकर अपना जन्म सफल करता।"

यह सुनकर दारोगाजीने प्रतिज्ञा की कि जब जिन मंदिरकी नीव डलेगी तभी मैं अन्न जल ग्रहण करूँगा। तदनुसार दारोगाजीका विशाल मंदिर निर्माण हुआ जो आज भी अपनी शोभा बढ़ा रहा है।

आपकी उदारता और वात्सल्य आश्चर्यचकित करनेवाला है। विद्याभ्यासियोंको तो आप अपने हाथोंसे दूध पिलाते थे तथा अपने घरपर पुत्रवत् रखते थे। एक एक होनहार विद्वानके लिये हजारों रुपया खर्च कर देते थे। आपका गुप्त दान तो अद्भुत ही था। आप लड्डुओंमें सोनेकी मोहरें बांधकर दीन दुखी भाइयोंके घर भेजते थे। कितने ही गरीब और साधारण स्थितिके साधर्मी भाइयोंको विना कहे ही कपड़े सिलवा दिया करते थे। दीन दुखी लोगोंके घरपर अपना पता ठिकाना बताये विना ही अनाज भेज दिया करते थे।

राज्यके दीवान होनेपर भी आप निरभिमानी एवं विनयी थे। पिताके सामने हाथ जोड़कर खड़े हुये आपका चित्र वर्तमानके युवकोंको पितृभक्तिका एक उत्तम नमूना बताता है। दीवान सा० समाजसुधारक भी थे। आपने उस समय जातिकी अनेक वैवाहिक कुरूढ़ियों और कुरिवाजोंको बन्द किया था। जिससे गरीबोंका भार बहुत हलका होगया था।

दीवान सा०की दयामूर्ति इतनी प्रभावक थी कि एक बार सिंह आदि हिंसक पशुओंके पिंजड़ेमें जाकर आपने कहाकि यदि तुम्हें जलेबी खाना हो तो यह रखी हैं, और मांस ही खाना हो तो मैं सामने मौजूद हूं, मुझे खा लो। हिंसक पशुओंपर

इसका इतना प्रभाव पड़ा कि उनने चुपचाप जलेबी खाना शुरू करदीं !

दीवान सा० के प्रयत्नसे महाराणाने हिरणोंका शिकार खेलना बन्द कर दिया था जो कि आज-तक बन्द है। जब पं० टोडरमलजी सा० गोमट्ट-सारकी टीका लिख रहे थे उस समय उनका गृहभार दीवान सा०ने स्वयं लेलिया था, जिससे पण्डितजी निराकुल होकर टीका कर सकें। इन धीर, वीर, विद्याप्रेमी, समाजोपकारी, राज्यमान्य दीवान सा०का स्वर्गवास ९० वर्षकी आयुमें सं० १८९०में हुआ था। आपके पुत्र दीवान ज्ञानचंदजी थे। उनके पुत्र दीवान उदयलालजी थे जिनने अजमेरी दरवाजेके बाहर जयपुरमें एक नशियां बनवाई थी जो बहुत ही सुन्दर है। उनके पुत्र फतेहलालजीका स्वर्गवास ८ वर्ष पूर्व ही हुआ है। उनके पुत्र ईश्वरलालजो अभी विद्यमान हैं।

(३) श्री० बैरिष्टर जमनाप्रसादजी कलरैया सबजज आपका जन्म खुरई (सागर) में ता० १३–११–१९०१ ई०को हुआ था। आपके पिता श्री० परमानंदजी कलरैया श्रीमंत सेठ मोहनलालजीके यहां मुनीम थे। स्वर्गवास सन् ३० में हुआ था। कलरैयाजी सन् १७ में सागरसे मैट्रिक पास हुये और फिर स्व० हु० दि० जैन बोर्डिंग इन्दौरमें रहकर धार्मिक शिक्षा लेते हुये सन् २१में बी०ए० होगये थे। इसके बाद दि० जैन बोर्डिंग अलाहाबादमें रहकर सन् २३ में एम० ए० और एल० एल० बी० होगये। आपने एम० ए० पुरातत्व विभागमें किया था इसलिये खोज करनेके लिये १००) मासिक छात्रवृत्ति मिली, मगर आपने वकालत शुरू करदी। सन् २७ में इनकमटेक्समें एग्जामिनर रहे और बादमें सबजज होगये।

३० मार्च सन् ३२को आप विलायत गये और वहां ८ माहमें ही बैरिष्टरी पास की फिर स्काटलैंड, आयरलैंड, जर्मनी, आष्ट्रिया, इटली, फ्रांस और ईजिप्त आदि देशोंमें घूमे तथा पार्लामेंटकी कार्यवाहीका विशेष अध्ययन किया। बादमें जुलाई सन् ३३में भारत वापिस आगये। आपके पिताजीकी आर्थिक स्थिति साधारण थी, मगर कलरैयाजी सा०को पढ़ानेका बहुत उत्साह था तथा आपको भी पढ़नेकी तीव्र इच्छा थी तदनुसार कर्जा, छात्रवृत्तियां तथा अन्य सहायताओंसे आप पढ़कर आज परवार जैन समाजमें सर्वोच्च शिक्षित एवं प्रतिष्ठित होगये हैं।

कलरैयाजी सा०की सामाजिक सेवा कम नहीं है। आप परवार सभाके उपमंत्री रह चुके हैं। कई अधिवेशनोंमें आपने कार्यात्मक भाग लिया है। जून सन् १९३१ में पठारके एक वृद्ध परवार सेठकी शादी रोकनेमें आपने जिस धीर–वीरतासे काम लिया था वह किसे नहीं मालूम ? आपने स्टेशनपर अकेले ही जाकर बरात न जाने देनेका निश्चय किया था। तब कितने ही अहिंसाको लजानेवाले बरातियोंने आपको लात, जूता और घूसोंसे मारा था, फिर भी आप डटे रहे और तमाम उपसर्गोंको सहकर भी बरात रोकी। तथा एक बालिकाका होता हुआ बलिदान बचाया। बैमेतरामें आपने ४ माहके प्रयत्नसे ही एक अंगरेजी स्कूलकी स्थापना करादी है।

वर्तमानमें आप बैमेतरा (दुर्ग) में सबजजके पदपर नियुक्त हैं। इतनी छोटी आयुमें ऐसी उच्च शिक्षा लेनेवाले जैन समाजमें आप एक ही नवयुवक हैं। अभी आप भारतवर्षीय दि० जैन परिषदके सभापति चुने गये हैं। इसीसे आपकी समाजप्रियताका परिचय प्राप्त होसक्ता है। कलरैयाजी सा० दिनों दिन उन्नति करें और समाज-

सेवामें अपना अधिकाधिक भाग देवें यही हमारी भावना है।

(४) पं० अजितप्रसादजी जैन एम० ए० एडवोकेट—आपका जन्म सन् १८७४ में नसीराबाद छावनी (राजपूताना) में हुआ था। आपके पिता दिल्लीमें रहने लगे थे। अतः आपने दिल्लीमें ही प्राथमिक शिक्षा पाई थी। जैन पाठशाला धर्मपुरा देहलीके आप प्रथम और अन्तिम विद्यार्थी थे। लघुसिद्धान्त कौमुदीतक आपने वहां पढ़ी थी। १३ वर्षकी आयुमें आप पिताजीके पास लखनऊ आये और वहांपर कालिजकी शिक्षा प्राप्त की। निरन्तर छात्रवृत्ति और पारितोषिक आप पाते रहे और बी० ए० में तो स्वर्णपदक भी मिला था। आपका नाम स्वर्णाक्षरोंमें लखनऊ यूनि० हालमें १८९३ के बी० ए० के सर्वोच्च विद्यार्थी होनेके कारण लिखा हुआ है। सन् १८९५ में मात्र २१ वर्षकी आयुमें ही आपने एम० ए० एलएल० बी० होकर वकालत शुरू करदी थी।

सन् १९२३ से २९ तक आपने सम्मेदशिखरजी, राजगृही, पावापुरी तीर्थक्षेत्रोंके मुकदमोंमें हजारीबाग, रांची, कलकत्ता, पटना रहकर काम किया था। सन् १४ से २१ तक पं० अर्जुनलालजी सेठीको कारागृहसे छुडानेका प्रयत्न किया था। सन् १९ में महात्मा भगवानदीनजीके अभियोगकी पैरवी की। तीर्थक्षेत्र कमेटीमें आपने अपनी वकालतकी फीस ४६९२०) सहायतार्थ प्रदान की। २९–३० में आप बीकानेर हाईकोर्टके जज रहे।

वर्तमानमें आप लाहौर हाईकोर्टमें वकालात कर रहे हैं। कुछ माह पूर्व हैदराबादमें मुनि जयसागरजीके नग्न विहारके प्रतिबंधको दूर करनेके लिये जो सफल प्रयत्न किया था वह समाजको विदित ही है। सन् २६ से आपने अंगरेजी जैन ग्रन्थोंके प्रकाशनका कार्य अपने हाथमें लेकर जैन साहित्यका महान् उपकार किया है। अभीतक जीवकाण्ड, कर्मकाण्ड, समयसार, नियमसार आदि ग्रन्थराजोंका सटीक प्रकाशन कर चुके हैं। समाज सेवाके लिये आपकी सर्वदा तत्परता रहती है। जैन समाजमें आपको बहुत उच्चस्थान प्राप्त है।

(५) पं० चंपतरायजी जैन बैरिष्टर—विद्यावारिधि जैन दर्शन दिवाकर आदि पदवियोंसे युक्त श्री० बैरिष्टर चंपतरायजीसे जैन समाजका बच्चा बच्चा परिचित है। आपने भारतमें रहकर तो जैन समाजका हित किया ही है किन्तु विदेशोंमें वर्षों अपने ही खर्चेसे भ्रमण करके जो जैन धर्मका प्रचार किया है वह भुलाया नहीं जासकता। अभी हाल ही आपने चिकागो (अमेरिका) की सर्वधर्म परिषदमें जैन धर्मके सम्बन्धमें भाषण देकर जगतको नया सन्देश दिया है। अंगरेजीमें जैन धर्मका रहस्य प्रगट करनेवाली अनेक पुस्तकें लिखकर जैन साहित्यकी आपने अपूर्व सेवा की है। तीर्थरक्षाके लिये तो आपका जीवन निर्माण ही हुआ है। हम बैरिष्टर सा०के विशेष गुणगान करके सूर्यको दीपक नहीं बताना चाहते। परिषदके भी आप संरक्षक हैं।

(६) श्री० मणिलाल एच० उदानी—एम० ए० एल० एल० बी० एडवोकेट—राजकोट। आप जन्मतः स्थानकवासी जैन होनेपर भी जैन समाजके तीनों फिरकोंको एक दृष्टिसे देखते हैं और यह चाहते हैं कि हम सब कब एक हो जायं। आपके लेख बहुत ही विद्वत्ता एवं खोजपूर्ण होते हैं। सेंट्रल जैन कालेजकी स्थापनाके सम्बंधमें आपके विचार बहुत समयसे हैं। समाजसेवाके लिये आप सदा तत्पर रहते हैं।

पं० अजितकुमारजी शास्त्री—आप जैन समाजमें एक सुप्रसिद्ध लेखक एवं निर्भीक वक्ता हैं।

जैन दर्शनके संपादक हैं। आपकी लेखनी बहुत ही संयत एवं गंभीर है। विजातीय विवाहके आप प्रबल पक्षकार हैं। अनेकों विरोधी पंडितोंके बीचमें आप विजातीय विवाहके समर्थनके लिये तथा तत्सम्बन्धमें शास्त्रार्थ करनेके लिये सिंहकी भांति अकेले ही कूद पड़ते हैं। कईवार आपने अपनी विद्वत्तामय वक्तृतासे विरोधियोंके दांत खट्टे किये हैं। आप जैन सिद्धांतके भी अच्छे ज्ञाता हैं।

(७)-श्री० जयचंदजी हीराचंद गांधी- सिविल इंजिनियर-भावनगर। दि० जैन दशा हुमड़ जातिमें आप प्रथम ही सिविल इंजिनियर हैं। भावनगर स्टेटने आपको स्कालरशिप देकर इंगलेंड भेजा था। वहांपर रहकर आपने परिश्रम पूर्वक सिविल इंजिनियरकी परिक्षा पास की, और इसी साल आप वापिस आये हैं। भावनगर स्टेटमें आपको तुरत ही उच्च स्थान भी प्राप्त होगया है। आशा है कि आप समाज सेवाकी ओर भी अपना ध्यान देंगे।

जर्मनीमें-जीते जानवरोंको काटना कानूनसे बंद हुआ है! दो वर्षतककी कडी सजा है।

ब्यावर-में दो मुनिसंघकी उपस्थितिमें रथ-यात्रा होगई उसके साथमें मनमानी महासभा व शास्त्रीय परिषद भी होगई। महासभामें उपाधि वर्षाके सिवाय कोई महत्वका काम नहीं हुआ है। उपाधियां देखिये-चैनसुखजी समाजभूषण, कुंवर मोतीलालजी समाजरत्न, कुंवर तोतालालजी धर्म-रत्न व पं० अमोलकचन्दजी समाजभूषण होगये हैं। यहां विजातिविवाहके समर्थक पं० देवकीनंदनजी, पं० अजितकुमारजी मुलतान व पं० शोभाचंद्रजी उपस्थित थे। उनकी विजातिविवाह विरोधी पं० मक्खनलालजी आदिके साथ खूब मुठभेड होगई उससे पं० मक्खनलालजी फीके पड़ गये थे।

षट् स्तवकम्।

(संस्मृतिः)

[ले०-पं० चिन्नम्मादेवी काव्यतीर्थ-नागपुर।]

लोकत्रयगरिष्ठं यच्छिवरूपं शिवप्रदम्।
ज्ञानं तत् क्षायिकं वन्दे योगत्रयविशुद्धितः ॥१॥
त्रिलोके ह्यनन्ता भवन्त्यत्र जीवाः।
सदा सौख्यमिच्छन्ति नेच्छन्त्यसौख्यम्॥
ततः सौख्यदं क्लेशनाशोपदेशम्।
दिशन्त्यार्यवर्या दयासक्तचित्ताः ॥२॥
स्वकीयं शिवम्भो भवान् भव्य! चेच्छेत्।
अचापल्यमासाद्य चित्ते शृणुत्वम्॥
अनादेर्हि पीत्वा महामोहमद्यम्।
स्वरूपं ह्यबुध्वा भ्रमस्यप्यनर्थम् ॥३॥
कथाः सन्ति दीर्घाः सरीसर्ति चेति।
ब्रुवेऽहं तथाल्पं यतिः प्राह यद्वत्॥
निगोदस्य मध्ये गतानन्तकालाः।
शरीरं बहु प्राप्य चैकेन्द्रियस्य ॥४॥
असौ श्वासमात्रेऽपि कांष्टाष्टवारम्।
जनेरत्ययस्यापि दुःखं सहित्वा॥
निगोदस्य मध्यान्निसृत्यात्र भूमेः।
शरीरं दधारेति नूनं जलादेः ॥५॥
यथा दुर्लभं चिन्तितार्थन्तु रत्नम्।
तथैवात्र गात्रं त्रसानान्तु लब्धम्॥
शरीरन्तु कृम्यादि यावद्द्विरेफम्।
प्रभृत्याथ भृत्वाऽसहद्दीर्घदुःखम् ॥६॥
कदाचिद्व्यभूदत्र पञ्चाक्षतिर्यङ्।
विना चेतसासीन्महान् ज्ञानशून्यः॥
तथा क्रूरसिंहादिसंज्ञी च भूत्वा।
पशून्निर्बलान्नादहत्वाधिकान् सः ॥७॥
कदाचिद्व्यभून्निर्बलो यन्तु जीवो।
लघिष्ठो बलिष्ठेन भूत्वा तु भुक्तः॥

बुभुक्षां तृषां छेदमेदौ च लब्ध्वा।
तथा भारशीतातपादींश्च क्लेशान् ॥८॥
महद् घोरदुःखं वधं बन्धनं हा।
न शक्यन्तु तत्कोटिवक्त्रेण वक्तुम् ॥
सहित्वातिक्लेशेन मृत्वा तु दीन।
इत श्वभ्रमध्ये ह्यपप्तत् स जीवः ॥९॥
धरास्पर्शनात्तत्र दुःखं किलेत्थम्।
सहस्रस्य दंशस्तथा न द्रुणानाम् ॥
असृक् पूय कृम्यादियुक्ता सरन्ती।
शरीरं दहन्ती स्रवन्त्यस्ति तस्मिन् ॥१०॥
दलं शाल्मलेरस्ति धारेव चासे–
र्वपुस्तत्र भिन्ते यथा खड्गधारा ॥
तथोष्णानि शीताश्च सन्त्यत्र नित्यम्।
अयोमेरुदघ्नं द्रवेद्यच्च नूनम् ॥११॥
तिलं यावदन्योन्यगात्रन्तु भित्वा।
नृशंसासुराणां सहन्तेऽत्र पीडां ॥
तृषाया न तृप्तिर्भवेदब्धिवार्भिः।
परं बिन्दुमात्रं न विन्देत नूनम् ॥१२॥
त्रिलोक्यास्तु धान्यं प्रभुज्यापि तस्मिन्।
क्षुधा न व्यरंसीत्कणं किन्तु नैकम् ॥
परं ह्यब्धियावद्व्यथां तां विषेहे।
जनिर्नुस्तु कालादि लब्धेः प्रलब्धा ॥१३॥
जनन्याश्च कुक्षौ नवो वासमासम्।
व्यथामङ्गमाकुञ्च्य मर्त्यो विषेहे ॥
जनावस्य लब्धान्तु घोरां व्यथान्ताम्।
जनोऽयं ह्यपारां न शक्नोति वक्तुम् ॥१४॥
अयासीन्मतिं बाल्यकाले तु नासौ।
व्यरसीत्तरुण्यां स्वतारुण्यकाले ॥
अयं मृत्युतुल्ये जराजीर्णकाले।
कथं नु स्वकीयं स्वरूपं हि वित्तात् ॥१५॥
अयं निर्जरां तां विपाकां कदाचित्।
करोतीति जोतिष्कदेवं हि यावत् ॥
जनित्वा हृषीकेय दावेन दग्धः।
विषेहे विपाकेन मृत्यौ व्यथान्ताम् ॥१६॥
गृहित्वा तु जन्म ह्यसौ स्वर्गलोके।
विना सदृशा तत्र दुःखं विषेहे ॥
परावृत्य गात्रं निगोदस्य क्षेमे।
ततश्च कृत्तिर्ह्यभूत्तस्य [illegible] चेत्यम् ॥१७॥*

* इति संसृतिवर्णनं नाम प्रथमस्तवकः। श्री छहढालेति नाम्ना ख्यातस्य ग्रन्थस्य गीर्वाणगिरा विहितानुवादस्यांशः।

समाजव्यवस्थापकः श्रीआदिनाथः।

आदौ कर्मभुवोऽभवन्खलु यदा कर्तव्यहीना प्रजाः।
किंकर्तव्यविमूढतामुपगता निर्वृत्तितश्चिन्तिताः ॥
विश्वेशं सुषुवे तदा पुरुजिनं श्रीनाभिरायप्रिया।
देवार्चितपादपद्मयुगलं मेरौ गिरौ स्नापितं ॥१॥
पूर्वं सोऽपि जिजीविषुः खलु प्रजाः कृष्यादिषट्कर्मसु।
निर्व्याजेन शशास साधितमतिः भीतादिभिर्मोचिताः॥
वर्णेषु त्रिषु भाजिता भगवता सर्वाः प्रजाः यास्तदा।
हा मा धिक्किति मात्रदंडमकरोत्सृष्टा विशिष्टो गुणैः।२।
एताम् ग्रामपुरादिशासनविधिस्सुष्ठेन चादर्शिता।
श्रेयोरूपसमाजशासनविधिस्तत्रैव चारोपिता ॥
संगीतादिकलासु तत्वविषये सार्धं सुताभ्याम् ददौ।
शिक्षां सर्वसुतेसु सर्वविषये चक्रे प्रजासु प्रभुः ॥३॥
भुक्त्वा राज्यसुखं कदाचिदथ सो नीलाञ्जनामृत्युतः।
शीघ्रं प्राप तपो निजात्मनिरतः कैवल्यबोधं गतः ॥
चन्द्रः सः वृषभेन लाञ्छितवपुः धर्मस्य चावर्षणाद्।
धर्मोद्योतविधानतोऽपि वृषभश्चन्द्रार्कभावंगतः ॥४॥
यस्माद् वर्त्म विनिर्गतं शिवपथः स्याद्वादमार्गस्य च।
षट्द्रव्यं नवतत्वमत्रभुवने धर्मं प्रभुः प्रादिशत् ॥
यस्यैवाश्रयमाप्य भव्यमनुजाः स्वात्मोपलब्धिं गताः।
वंदे तं वृषनामकं पुरुजिनं प्रासादयुक्तः सदा ॥५॥

रवीन्द्रनाथो जैनः न्यायतीर्थः।

जैन समाचार संग्रह ।

सिंघई गोकुलचन्दजी वकील दमोह–जो परवार समाजके एक रत्न थे, जातिसेवक थे तथा जो मध्यप्रांतकी धारासभाके वर्षोंसे मेम्बर थे व जिन्होंने अभी म० प्रा० धारासभामें वृद्धविवाह निषेधक बिल पेश किया था उनका २२ नव०को अकस्मात् स्वर्गवास होगया। अतीव दुःख !

ब्र० देवचन्द्रजी बी० ए०–जो महावीर ब्र० आश्रम कारंजाके अधिष्ठाता हैं, उन्होंने ब्यावरमें आचार्यश्री शांतिसागरजीसे क्षुल्लक दीक्षा ली है व नाम क्षुल्लक समन्तभद्र रखा गया है। आप कारंजा आश्रममें यथावत् कार्य तो करेंगे ही।

सम्मेदशिखरजी–में माघ सुदी ५ को पंच-कल्याणक प्रतिष्ठा व खण्डेलवाल महासभा होगी।

परिषदकी परीक्षायें–ता० १४-१५-१६ जनवरीको होगी।

'जगदुद्धारक महावीर'–नामक इनामी लेख १५ फर्वरी तक मांगा जाता है। इनाम रु० २५) है। लेख हिन्दी भाषामें ५००० शब्दोंका हो।

मंत्री, आत्मानंद जैन सभा–अंबाला शहर।

बड़वानी–में पौष सुदी १५को मेला होगा।

मुनींद्र मंडली–इटारसी पहुंची है वहांसे शिखरजी तक जानेवाली है, उससे सावधान रहें।

प्रतापगढ़–में फाल्गुनमासमें श्री० संघपति सेठ घासीलालजीकी ओरसे पंचकल्याणक प्रतिष्ठा होगी तब आचार्य संघके भी वहां पधारनेकी संभावना है।

आई. सी. एस. हुए–कानपुरके स्व० डिप्टी चंपतरायजीके पौत्र बा० लक्ष्मीचन्दजी बी० एस० सी० विलायतमें आई० सी० एस० (कलेक्टर)की परीक्षामें पास हुए हैं। अभी आप वहां ही है।

अजमेर–में श्री० सेठ टीकमचंदजीने अपने यहां मुनियोंके आहारदान होनेके उपलक्षमें २२००) का दान किया है। तथा अपनी नसियाजीमें मनोहर मानस्तंभ बनानेका शिलारोपण मुहूर्त मुनि श्री चन्द्रसागरजीके हस्तसे किया है।

गिरनारजी–में सहसावनमें नेमिनाथ भगवानके दीक्षा व केवलज्ञान कल्याणक–स्थानकी दोनों देहरियोंपर व वहांकी धर्मशालापर श्वे० जैनोंने कबजा कर लिया था, उसका केस पांच वर्षसे चलता था, उसमें दि० जैनोंकी जीत हुई है अर्थात् दोनों देहरी व धर्मशाला खुली रखनेका हुकम होगया है। पहाड़परकी दि० जैन धर्मशालामें एक दीवाल श्वे० जैन नहीं करने देते थे उसका भी हुकम होगया है।

ईटारसी–में ता० २९-३० दिसम्बरको भारत० दि० जैन परिषदका १० वां अधिवेशन श्री० बेरिस्टर बा० जमनाप्रसादजी कलैया सबजजके सभापतित्वमें होगा। साथमें भारत० दि० जैन महिला परिषदका भी अधिवेशन होगा। इसीमें बेरिस्टर चंपतरायजी साहब भी विलायतसे आकर भाग लेंगे।

मूडबिद्रीमें–ता० १३ से १६ तक जैनसिद्धांत भवनका उद्घाटन सेठ रावजी सखाराम दोशीके हस्तसे होगा।

ला० कन्नोमलजी एम. ए.–जज जैन साहित्य व धर्मके प्रेमी थे, उनका स्वर्गवास होगया है।

अहमदनगर–में महाराष्ट्र श्वे० जैन कान्फरंस श्री० सेठ गुलाबचन्दजी ढड्ढा एम० ए० जयपुरके सभापतित्वमें गत मासमें हुई थी जिसमें अनेक उपयोगी प्रस्तावोंके साथमें एक प्रस्ताव यह भी हुआ है कि दि०, श्वे०, स्था० जैनोंके आपसके झगडे आपसमें लवादोंसे ही निपटाये जांय।

श्री० सर सेठ हुकमचंदजी—का हीरक महोत्सव अभी स्थगित रहा है।

गिरनारजी—की स्पेशल ट्रेन ११ दिसम्बरको कासगंजसे रवाना होगी। आने जानेका किराया ३०) है। पता–लडेतीलाल जैन स्टेशन मास्टर, कासगंज।

विधानत्रय—बम्बईमें श्री० सेठ चुन्नीलाल हेमचन्दजी जरीवालोंकी धर्मपत्नी सौ० नंदकोरबाईने अष्टानिकामें गुलालवाड़ी मंदिरमें अष्टानिका, सिद्धचक्रविधान व जिनगुण संपत्ति व्रतके ऐसे तीन उद्यापन विधिपूर्वक किये थे।

बम्बई—में ३ श्राविकाश्रमका वार्षिकोत्सव पंडिता चन्दाबाईजीके सभापतित्वमें मगसिर वदी २ को अतीव धामधूमसे होगया। पं० चन्दाबाईजीका हीराबागमें आम व्याख्यान भी हुआ था।

ગુજરાત—ના દશાહુમડ, ઉત્સાહી અને યુવક મંડળ મુંબાઇના મંત્રી શા. ચુનીલાલ વીરચંદ ગાંધીનો સ્વર્ગવાસ અલ્પ વયમાં થઇ ગયો છે.

આભાર—કંપાલા (યુગાંડા, આફ્રિકા) માં વ્યાપારાર્થ વસતા તથા દિગંબર જૈનના ઉત્સાહી અને ખાસ લેખક ભાઇ મોહનલાલ મથુરાદાસ શાહના પિતાજી કાણીસામાં ૬૫ વર્ષની ઉંમરે તા. ૨૩ અકટોબરે સ્વર્ગવાસી થયા જ્યારે ભાઇ મોહનલાલ તો કંપાલાજ હતા, જ્યાંથી આપ લખે છે કે મારા એ દુઃખમાં આશ્વાસન આપતા અનેક પત્રો મને કુટુંબીઓ અને મિત્રો તરફથી મળ્યા છે તે સર્વેનો હું ઋણી છું. મારા પિતાશ્રીના સ્મરણમાં યથાશક્તિ હું પુણ્યદાન જરૂર કરીશ ને તે હિંદ આવીને પ્રસિદ્ધીમાં મુકીશ પણ એટલું તો નક્કીજ કે પિતાજીના સ્મરણમાં મારૂં રચેલું એક પુસ્તક દિગંબર જૈનના ગ્રાહકોને ભેટ તરીકે જરૂરજ વ્હેંચાશે વગેરે.

નૃસિંહપુરા જ્ઞાતિ—ના કહાનમ વિભાગનું વસ્તીપત્રક ભાઇ નાગરદાસ નરોતમદાસ સંઘવી (આમોદ) એ તૈયાર કર્યું છે તે જોતાં માલમ પડે છે કે કહાનમમાં એ જ્ઞાતિની કુલ સંખ્યા ૩૫૫ ની છે જેમાં ૬૩–૬૩ સ્ત્રી પુરૂષ પરણેલા, ૯૦ કુમારા, ૧૫ વિધુર, ૩૫ વિધવા અને ૫૩ કુમારિકા છે જ્યારે ૧૫ છોકરા ને ૨૧ છોકરીના વિવાહ (સગાઇ) થયેલા છે. વળી એમાં ૨૧ વ્યાપારી, ૧ વકીલ, ૨ સોલીસીટર, તથા ૨ ડોકટર છે. એ વિભાગમાં ધાર્મિક જ્ઞાન આપવાને પાઠશાળા એક પણ નથી જેની અત્યંત જરૂર છે.

પેથાપુર—માં અષ્ટાનિકામાં સાતે વ્રત કર્યું હતું ને જલયાત્રાના આપણા વરઘોડામાં શ્વે. સાધુ તથા શ્વે. જૈન ભાઇઓએ પણ ભાગ લીધો હતો.

ઇડરની જી. ઉ. દિ. જૈન બોર્ડિંગ—વિદ્યાર્થીઓને અત્યંત અનુકુળ છે કેમકે વાતાવરણ ગ્રામ્ય, ટર્મ ફી ઓછી, સ્કુલ ફી માફ ને હાઇસ્કુલ સુધી શિક્ષણનાં સાધનો છે. થોડીક જગ્યા ખાલી છે માટે લખો–સુપ્રિ. જી. ઉ. દિ. જૈન બો–ઇડર. (મહીકાંઠા)

ઇડરની પાઠશાળા—ના વયોવૃદ્ધ ને વિદ્યાપ્રેમી મંત્રી શેઠ પુનમચંદ સાંકલચંદનો તા. ૭ અકટોબરે ૭૫ વર્ષની ઉંમરે સ્વર્ગવાસ થયો છે.

ઉપદેશક પીતાંબરદાસજી—હાલ રાયદેશ, સાઠ અને ખડગના પ્રાંતોમાં ભ્રમણ કરી રહ્યા છે.

કલોલમાં—તા. ૪ નવેંબરે યુવાનોએ સેવા મંડળની સ્થાપના કરી છે, જેના મંત્રી શાંતિલાલ ચુનીલાલ વખારીયા છે. આ મંડલના સભ્યોએ ઠરાવ કર્યો છે કે જ્યાંસુધી કલોલના ન૦ ના બે પક્ષોમાં સંપ ન થાય ત્યાંસુધી ન્યાતિ જમણમાં ભાગ લેવો નહિ તથા એની ખબર પત્રદ્વારા જ્ઞાતિના સમસ્ત પંચને આપી દીધી છે. ધન્યવાદ.

સાઠ જિલ્લામાં—જાતિ ઉન્નતિ અર્થે સત્તર જિલ્લા દિ. જૈન યુવક મંડળની સ્થાપના થઇ છે જેના તરફથી હસ્તલિખિત માસિક પત્રિકા પણ બહાર પડે છે.

સમાલોચના.

'જૈન જ્યોતિ' શિક્ષણાંક—અમદાવાદથી બે વર્ષ થયાં જૈન જ્યોતિ નામે સચિત્ર અને ઐતિહાસિક સુંદર માસિક પત્ર પ્રસિદ્ધ સાહિત્યકાર શ્રી. ધીરજલાલ ટોકરશી શાહના તંત્રીપણા નીચે પ્રકટ થાય છે તેનો ૩ જા વર્ષનો આ પ્રથમ અંક 'શિક્ષણાંક' ને નામે પ્રકટ થયો છે, જેમાં ૧૭૫ પૃષ્ઠ ૮૪ ચિત્ર અને ૫૯ લેખો અને કવિતાઓ શિક્ષા (કેળવણી) સંબંધી છે તથા છેવટમાં જૈનોના ત્રણે ફિરકામાં ચાલતી ૮૬ શાળાઓ, ૫૦ કન્યાશાળાઓ, ૩૬ ગુરૂકુલો, ૨ કન્યા ગુરૂકુલ, ૭૩ બોર્ડિંગ, અને ૩૮૫ પાઠશાળાઓની ગામ, નામ સાથે યાદી છે, જે અત્યંત પરિશ્રમથી તૈયાર થયેલી હોઇ અત્યંત ઉપયોગી છે. લેખો પણ વાંચવા તથા મનન કરવા યોગ્ય છે. તેમજ ચિત્રો પણ અનેક સંસ્થાઓ અને તેના સંચાલકોના છે. દિગંબર જૈન સંસ્થાઓની નામાવલી પણ છે તેમજ ૮–૯ ચિત્રો પણ દિગંબરી છે. દિ. લેખોમાં બાબુ કામતાપ્રસાદજી, પં. પરમેષ્ઠીદાસજી ન્યાયતીર્થ તથા અમારો પણ એક એક લેખ (સચિત્ર) છે. આવો દળદાર અને અનુકરણીય અંક અત્યંત જહેમત પૂર્વક પ્રકટ કરવા માટે એના સંપાદક અત્યંત ધન્યવાદને પાત્ર છે. આ અંકની છુટક કિંમત રૂ. બે છે જ્યારે એના ગ્રાહકોને વાર્ષિક માત્ર રૂ. ૨॥ માંજ આ અંક મફત મળે છે ને વળી એક પુસ્તક પણ ભેટ મળે છે. તેમજ આ પત્ર ત્રણે ફિરકામાં ભેદભાવ વગર પ્રકટ થાય છે એથી આ ઐતિહાસિક માસિકના ગ્રાહક થવા ખાસ ભલામણ કરીએ છિયે.

'પ્રતાપ' દિપોત્સવી અંક–સુરતથી 'પ્રતાપ' નામે ઉચ્ચ શ્રેણીનું અઠવાડિક પત્ર શ્રી. કાલીદાસ કૃપાશંકર શેલતના તંત્રીપણા નીચે પ્રકટ થાય છે તેનો આ દીપોત્સવી અંક ૨૧૬ પાનાનો રંગ બેરંગી ચિત્રો સહિત અતીવ સુંદર હોઇ એમાં ૭૯ લેખો અને કવિતાઓનો સંગ્રહ છે. કવિ નર્મદનું રંગીન ચિત્ર તો અત્યંત આકર્ષક છે. ઘણા લેખો ઐતિહાસીક હોવાથી આ દળદાર અંક ખાસ સંગ્રહ અને મનન કરવા યોગ્ય છે. આવો સુંદર અંક કાઢવા માટે તંત્રીશ્રીને ધન્યવાદ ઘટે છે. છુટક કિંમત માત્ર આઠજ આના છે.

અંકલેશ્વરમાં–જૈન યુવક સંઘની સ્થાપના થઇ છે.

ભાવનગરમાં—સંતોક બ્હેન દિ૦ જૈન પાઠશાળામાં તા. ૧૬ નવેંબરે એક મેલાવડો શેઠ ત્રીભોવનદાસ દયાળજીના પ્રમુખપદે થયો હતો જેમાં અત્રેના શ્રી. જયચંદ હીરાચંદ ગાંધી વિલાયત જઇ ઇલેક્ટ્રીક એન્જીનીયરની પરીક્ષા પાસ કરી આવ્યા ને ભાવનગર સ્ટેટમાં એક ઓફીસર તરીકે જોડાયા છે તેમને અભિનંદન આપી જૈન વિજય મંડળે સીલ્વર મેડલ આપ્યો હતો.

સુરત—માં પર્યુષણમાં રૂ. ૩૪૮॥ ની ટીપ થઇ હતી જેમાથી ૬૧) તીર્થરક્ષા ફંડમાં આવેલા તે તથા બાકીના જુદી જુદી ૨૦ સંસ્થાઓને દાનમાં મોકલી દેવામાં આવ્યા છે.

પં. પીતાંબરદાસજી ઉપદેશક—(માણેકચંદ જુબ્બીલીબાગ ટ્રસ્ટ ફંડ) નું સપ્ટેંબર માસમાં નેકોડા, ગઢોડા, નનાનપુર, સલાલ, રખિયાલ, પાટનાકુવા, અમદાવાદ, ગોધરા, દાહોદ, રતલામ, મકસી, અને ભેલસામાં ભ્રમણ થયું હતું જ્યાં ઉપદેશ આપી અનેક સુધારા કરાવ્યા હતા. તથા અક્ટોબરમાં આપ દેશ જવાથી ભ્રમણ બંધ હતું એટલે નવેંબરમાં સાગર, બરેહ, થાંદલા, દેલવાડ, અલુવા વગેરેમાં ભ્રમણ કર્યું હતું.

ગુજરાતના દિ. જૈનોમાં—પ્રચાર કાર્ય કરવાને કાર્તક માસમાં શ્રી. છોટાલાલ ગાંધી, સરૈયા, નાગરદાસ નરોતમદાસ. ઠાકોરદાસ, અમો વગેરેએ અંકલેશ્વર, આમોદ, સુરત, અમદાવાદ, કલોલ, કપડવંજ, ઝહેર, નરસીપુર વગેરે સ્થળે ભ્રમણ કરી લોકમત કેળવ્યો હતો તથા આ માસમાં દાહોદ, પ્રાંતિજ, ઇડર વગેરે સ્થળે જઇ ગુજરાત દિ૦ જૈન કાન્ફરન્સ માટે પ્રચાર કાર્ય કર્યું હતું.

जैन समाजकी उन्नति कैसे हो ?

(लेखकः—बाबू ताराचन्द जैन पांड्या बी० ए०, झालरापाटनसीटी)।

जैन समाज विश्वका एक अंग है। इसके सिवाय विश्वके कल्याणकारी सर्व श्रेष्ठ आदर्शोंके प्रचारकोंका अनुयायी होनेका दावा करनेकी वजहसे जैन समाज इन आदर्शोंके ज्ञानका केवल सबसे अधिक संरक्षक नहीं है बल्कि उनके द्वारा अपेक्षाकृत आसानीसे प्रभावित भी होसकता है। इस लिये **जैन समाजकी उन्नति एक तरहसे विश्वकी उन्नति है।**

राष्ट्र तथा समाज व्यक्तियोंका समुदाय है। सभी व्यक्तियोंकी दशा सदा एकसी नहीं होती है। इस लिये प्रत्येक राष्ट्र तथा समाजमें अपेक्षाकृत उन्नति और अवनति, समृद्धि और दरिद्रता, ज्ञान और अज्ञान, धर्म और अधर्म, साथ २ सदा दिखाई पड़ते हैं। हां, अलबत्ता, उन्नत और अवनतादि व्यक्तियोंकी संख्याओंके अन्तरमें कमती बढ़तीको देखकर राष्ट्र तथा समाज-विशेषको उन्नत अवनत समझलेते हैं। मगर सब व्यक्तियोंको एक-सा पूर्णोन्नत और सुखी बना देनेका प्रयत्न करनेमें ही मनुष्योंका पुरुषार्थ है।

इसमें सन्देह नहीं कि सबकी एक समान सच्ची और स्थायी उन्नति तो आध्यात्मिक उन्नति ही हो सकती है, मगर जिस तरह टूटे पांवको स्वस्थ होने तक लकड़ीकी सहायता दी जाती है, उसी तरह निर्बल आत्माकी उन्नतिके लिये उसके धर्मसाधनमें सहायक शांति और अध्यवसायके लिये इस उद्देश्यसे न्याय सम्पादित लौकिक उन्नति भी निन्दनीय नहीं है। कर्म सन्यास बन आत्मलीन बन-जाना सबसे अच्छा हैं, मगर वासना मलीन कातर अकर्मण्यतासे तो लौकिक कर्मवीरताको मैं कई दृष्टियोंसे अच्छा समझता हूं। कारण कि कर्मवीरताको आत्माकी शक्तिका भान होता है। उसमें वह निर्भीकता, उत्साह, और दृढ संकल्प-शक्ति होती है कि जिसको बस सद्विवेकसे स्वच्छ कर लेनेपर आध्यात्मिक उन्नतिका सर्वोच्च शिखर सहजमें प्राप्त होजाता है।

काल-चक्र कहो या भाग्य-चक्र कहो, इसके वशसे सब सांसारिक प्राणियोंका उत्थान और पतन चलता ही रहता है। परन्तु मनुष्यका मनुष्यत्व इसीमें है कि वह इस काल या भाग्यकी पर्वाह न कर प्राणियोंकी उन्नतिके अर्थ प्रयत्न करता रहे। प्रयत्न करनेमें ही उसका मनुष्यत्व है, सफलता असफलतामें नहीं। मनुष्य भाग्यसे बीमार पड़ता है तो औषधि आदिके द्वारा उस बीमारीको दूर करनेकी कोशीष की जाती है। वह कोरा भाग्यसे भरोसे ही नहीं छोड़ दिया जाता है। अलबत्ता, अगर मानवीय-प्रयत्नके साथ काल-चक्र या भाग्यका भी सहयोग होजावे तो उसकी सफलतामें सन्देह नहीं। मगर मनुष्य काल या भाग्यका सर्वथा दास नहीं है। सुप्रयत्नसे वह किसी अंशतक काल या भाग्यके प्रभावमें परिवर्तन भी कर सकता है। एक समय था जबकि जैन समाजमें तीर्थंकर, चक्रवर्ती, नारायण आदि उत्तम पुरुष जन्म लिया करते थे। इसमें सन्देह नहीं कि उस गौरवपूर्ण कालको लौटा लाना आजकलके मानवोंके हाथमें

नहीं है, मगर देश कालानुसार समाजकी उन्नति करना तो उनके हाथमें है।

जैन समाजमें बुराईयें भी बहुत हैं और वे भी अनेक रूपोंमें और उनके उपाय भी अनेक हैं। प्रत्येक स्थानकी त्रूटियें और उनके उपाय भी अपनी अलग २ विशेषता रखते हैं। यहां इन सबका विचार करना शक्य नहीं, इस लिये केवल मोटी २ बातोंका ही संक्षेपमें लिखा जाता है। जरासे उद्योगसे विचारशील कार्यकर्ता इस विषयमें पर्याप्त ज्ञान आसानीसे प्राप्त करते हैं।

संगठन—समाजकी दशापर विचार करते समय जिस दोषपर सबसे पहले नजर पड़ती है वह है फूटका साम्राज्य। **श्वेतांबरों और दिगंबरोंके** तीर्थोंके लिये झगडोंके लिये जैन समाज काफी बदनाम है। इन झगडोंसे अर्थका नाश तो खूब हुआ है ही, कुछ तीर्थोंपर अजैनोंका भी अधिकार होगया है। कोर्टोंमें मुकदमाबाजी चलनेपर जब दोनोंको समान रूपसे पूजा करनेका हक मिलता है, तब समझमें नहीं आता कि ये पहिले ही ऐसा समझौता क्यों नहीं कर लेते? जो पैसा इनमें खर्च होता है उससे कितने समाजोपयोगी काम किये जासकते हैं? विश्वप्रेम और सहनशीलताके समर्थक और स्याद्वाद मतको माननेवाले जैनियोंके ये पारस्परिक झगड़े सचमुच कुतुहलजनक हैं। इसी तरह तेरहपन्थियों और बीसपन्थियोंके झगड़े भी कम दुखदायी नहीं हैं।

पंचायतोंके झगडे—गांव २ में फैले हुये हैं। इनकी वजहसे कई फले फूले घर बिगड़ गये। जातिके लिये लाभदायक कामोंकी ओर ध्यान नहीं दिया जा सका, रातदिन द्वेष, वैर और अभिमानकी अग्नि सुलगती रही, और मंदिरों तकको कुप्रबन्धसे अपरिमित हानि उठानी पड़ी। ये झगड़े प्रायः व्यक्तिगत स्वार्थोंके कारण उठा दिये जाते हैं। इनका मूल कारण अज्ञान है। मैं पंचायत प्रथाको बुरा नहीं कहता हूं क्योंकि इसमें संगठनका बीज समाया हुआ है। मगर इसमें सुधार होना चाहिये। यह कुछ व्यक्तियोंके हाथकी कठपुतली न होकर न्याय और सत्यका आश्रय होना चाहिये। निरर्थक बातोंके लिये झगड़ना छोड़कर इसको विधवाओं और दुखियोंकी सहायता, स्त्रियोंकी उनके कुटुम्बियोंके अत्याचारोंसे रक्षा, सदाचार और शिक्षाका प्रोत्साहन, बेकारोंकी आजीविकाका प्रबन्ध, कुरीतियोंका नाश, पतितका उद्धार आदि काम अपने हाथमें लेना चाहिये। क्या ही अच्छा हो कि जैनियोंके लेनदेनके झगड़े भी इनसे निपटा लिये जाया करें। पंचोंको चाहिये कि वे किसी कारणसे गिर जानेवालेको और धक्का देकर नीचे न गिरावें बल्कि उसकी इज्जतको बचाते हुए उसे योग्य उपायोंसे फिर ऊपर उठा लेवें। उन्हें दंड देना चाहिये सुधारके वास्ते।

साधूओं और समाचार पत्रोंको चाहिये कि वे जैनियोंके भिन्न २ सम्प्रदायोंमें प्रेम और सद्भावनाका प्रचार कर और विद्वेष भड़कानेवाली बातोंसे बचे।

अंतर्जातीय विवाह—कमसे कम दिगम्बर समाजकी सब जातियोंमें **पारस्परिक विवाह-सम्बन्ध** शुरू होजाना वांछनीय है। इससे एक होनेकी भावनाको बल मिलेगा, और योग्य सम्बन्ध होनेमें भी सहायता मिलेगी। शास्त्रोंमें तो इससे भी अधिक स्वतंत्रताका विधान है।

समयानुसार परिवर्तन करते हुए और इसकी इतिहास वर्णित बुराइयोंको बचाते हुए **गृहस्थाचार्यकी** परिपाटीको फिर चलाना चाहिये।

शिक्षा—शिक्षाकी दशा बड़ी शोचनीय है। साधारण जन ही नहीं बल्कि शिक्षित और पंडित कहलानेवालोंको भी लौकिक तथा धार्मिक विद्याकी

व्यवहारिकता और महत्वका समुचित ज्ञान नहीं है। अगर हम सुशिक्षाका प्रचार कर सके तो उन्नति अपनी खबर अपने आप ले लेगी, हमें और कुछ करने धरनेकी जरूरत नहीं।

जैनसमाजमें जो इनीगिनी **शिक्षा-संस्थायें** दिखाई पड़ती हैं वे प्राय: स्वावलम्बी नहीं हैं। इसलिये चन्देके लिये उन्हें रातदिन हैरान रहना पड़ता है। उनमेंसे कईयोंकी शिक्षण-पद्धति भी संतोषजनक नहीं है। संस्थाओंको चाहिये कि वे अमेरिकाके टसकेजी विद्यालयका अनुकरण करें। विद्यार्थियोंको औद्योगिक शिक्षा भी देनी चाहिये और सादे जीवन और शारीरिक श्रमसे प्रेमको प्रोत्साहन देना चाहिये। मैं तो चाहता हूं कि विद्यालयोंकी स्वच्छता, रसोई, फर्नीचर और भवन बनाना आदि कार्य विद्यार्थी ही करें। इनसे संस्था और विद्यार्थी दोनों ही स्वावलम्बी होंगे। आजकल तो पढ़ने लिखनेके पश्चात् विद्वानोंको आजीविकाके लिये धनवानोंकी खुशामद करनेमें ही अपनी विद्वत्ता और जीवन खरच करना पड़ता है। भला वे अपने ज्ञानसे अपना और गैरोंका कैसे कल्याण कर सकते हैं? परन्तु अगर वे अपनी आवश्यकतायें कम रखें, शरीरसे काम करनेमें न शरमावें और पर्याप्त लौकिक और औद्योगिक शिक्षासे युक्त हों तो वे धनवानोंसे अपने ज्ञान व चारित्रकी पूजा करा सकते हैं।

गृहस्थ-धर्मकी शिक्षाकी अतीव आवश्यकता है। कारण कि निरी अध्यात्म-विद्यासे समाज अकर्मण्य होता जारहा है। भावी नागरिकोंको उत्साह, शान्ति और कर्मवीरताका सन्देश सुनाना चाहिये, पति-पत्नीके और माता पिता और संतानके पारस्परिक कर्तव्योंका पाठ पढ़ाना चाहिये, और उनकी रग२में जाति-प्रेम, देश-प्रेम और सत्य-प्रेमकी भावनायें भर देना चाहिये। उनकी दृष्टिको व्यापक बनानेके लिये जगतकी विभिन्न जातियों और धर्मोंके उत्थान और पतनके इतिहास बताना चाहिये। सम्यक्दर्शनके वात्सल्य, स्थितिकरण, प्रभावना आदि अंगोंका महत्व समझाकर गुरु-मूढ़ता, देव-मूढ़ता और लोक-मूढ़तासे मुक्त सत्यको खोजने और पालनेकी ओर रुचि करानी चाहिये।

ऐसे **इतिहासकी** बड़ी जरूरत है जिसमें ऐतिहासिक कालके जैन सम्राटों, युद्ध-वीरों, दानवीरों तथा तपवीरोंके विस्तृत जीवनचरित्र प्रमाणिकरूपसे लिखे गये हों। इसके अध्ययनसे जैनियोंको तो लाभ होगा ही किन्तु अजैनोंके जैनियोंके विषयमें केई कुसंस्कार दूर हो जावेंगे।

वर्तमान धार्मिक शिक्षा-प्रथामें सुधारकी जरूरत है। अब खाली संस्कृत ग्रन्थोंके रट लेनेसे काम नहीं चलता है। पंडितोंको नये२ तर्कोंका सामना करना पड़ता है। अत: अब धर्मकी शिक्षा तदनुसार जीवनको सांचेमें ढालनेके लिये देना चाहिये। जैन धर्मका विश्वके अन्य धर्मोंमें क्या स्थान है और वह विश्वके लिये कल्याणकारी क्यों है यह जानना पड़ेगा। अब जैन धर्मका अध्ययन जैन कुलोत्पन्नके धर्मके तौरसे नहीं बल्कि सत्य धर्म और विश्व-कल्याणकी दृष्टिसे करना पड़ेगा। जैन-सिद्धान्तकी रायसे भी तो यही सच्ची दृष्टि है।

नारी जातिके प्रति सन्मानके भाव जाग्रत करना शिक्षाका एक मुख्य प्रयोजन होना चाहिये। उसी तरह **स्त्री-शिक्षा** भी उचित ढंगसे देना चाहिये ताकि कन्याएं स्वाभिमानीनी, बलवान और व्यवहारकुशल होके आदर्श मातायें और सुदक्ष गृहिणीयें होसकें, और अवसर पड़नेपर कुटुम्बियों व अन्य जनोंसे अपने अधिकार व गौरवकी रक्षा करती हुई समाज सेवामें योग देसकें और अपनी आध्यात्मिक उन्नति भी कर सकें। क्रिया कोपका व्यवहारिक ज्ञान, तन्दुरु-

स्तीके उपाय, और घरेलू कला कौशलकी शिक्षा उन्हें अवश्य मिलनी चाहिये और साथ ही जो रुचि रखती हों उन्हें गंभीरतर विषयोंके अध्ययनका भी अवसर देना चाहिये। प्राचीन समयमें स्त्रियें आजीवन ब्रह्मचारिणी तक रह सकतीं थीं कारण कि उस समय प्रत्येक प्राणी दूसरोंकी गुलामीके लिये नहीं पर अपनी आत्माके हितके लिये जन्म लेनेवाला माना जाता था।

शारीरिक, मानसिक, और आत्मिक तीनों प्रकारकी शक्तियोंका विकास ही शिक्षाका ध्येय है। आजकल जैन कालेज खोलनेकी चर्चा चल रही है। इससे जैन धर्मका कुछ ज्ञान अंग्रेजीके विद्यार्थियोंको मिलेगा मगर यह बहुत व्ययसाध्य होगा। सरकारी यूनिवर्सिटियों द्वारा दी गई शिक्षा प्रणालीकी खामियें अब किसीसे छिपी नहीं है। ऐसी दशामें उन्हींके अनुकरणपर कालेज खोलनेके बजाय मैं तो अपनी ही विशेषता रखनेवाली एक ऐसी स्वतंत्र जैन यूनीवर्सिटीकी ज्यादा जरूरत समझता हूं कि जिसकी शिक्षाका माध्यम मातृभाषा हो और जिसका उद्देश्य स्वावलंबन, सादा जीवन, सदाचार और भारतीय आदर्शोंका प्रचार हो। निरे साहित्यिक कालेजसे एक कमर्शियल या औद्योगिक कालेज ज्यादा अच्छा होगा। इसके सिवाय यह भी विचारने योग्य है कि एक कालेजके खर्चसे अनेक प्रारम्भिक पाठशालायें चलाई जासक्ती हैं व धर्मप्रचारके अनेक तरीके काममें लाये जासक्ते हैं कि जिनका प्रभाव बालकों व नवयुवकोंके हृदय व मस्तिष्कपर ज्यादा स्थायी होगा। धर्मके संस्कार जैसे बाल्यावस्थामें जमा दिये जासक्ते हैं वैसे ज्यादा उम्र होनेपर नहीं। उद्योग यह होना चाहिये कि विद्यार्थीगणोंको पवित्र वातावरण मिले।

जैनियोंकी **शारीरिक दशा** बड़ी खेदजनक है इसके कारण व्यायाम और संयमकी अवहेलना, बच्चोंका लालनपालन ठीक तरहसे नहीं होना, माताओंका अज्ञान व उनके प्रति कुव्यवहार, अशुद्ध खानपान, सामाजिक रीतियोंमें अतिव्यय होनेसे आर्थिक चिन्तायें आदि हैं। इनको दूर करना चाहिये। स्थान २ पर अखाड़े कायम होने चाहिये तथा विद्यालयोंमें पढ़नेवालोंके लिये अवस्थानुसार व्यायाम अनिवार्य बनाना चाहिये।

स्वास्थ्यमय खानपानके लिये—क्रियाकोषकी विधियोंका अवलम्बन करना चाहिये। दुख है कि आजकलके जैनी नाममात्र ही इन विधियोंका पालन करते हैं बल्कि इनको जानते ही नहीं हैं, खाली रूढिकी लकीर पीटते हैं। पाश्चात शिक्षा दीक्षित भले ही हंसे, मगर मुझे तो इन **शोधके खानपानमें** गंभीर धार्मिक, वैद्यकी और आर्थिक तत्व भरा दिखता है। जमीकन्द आदि अभक्ष्य माने जाने वाले पदार्थ उदर रोगों व अनेक व्याधियोंको उत्पन्न करते हैं। आटा, दाल आदि वस्तुओंकी जो काल मर्यादा बताई गई है उसके पीछे वे सत्य ही अस्वास्थ्य कर होजाती हैं। हाथसे पीसे आटे आदिका उपयोग करनेमें उनका पौष्टिक सत्व तो पूरा मिलता ही है साथ ही घरकी स्त्रियोंका व्यायाम भी होजाता है। कमसे कम विधवाओं आदिकी रोजी तो चलती है। शोधके घी दूधको पानेकी जो विधि लिखी है वैसा करनेसे वैज्ञानिक शुद्ध दूध, घी मिलता है और पशुका भी वैज्ञानिक स्वास्थ्यमय (Sanitary) पालन पोषण होजाता है जो कि ग्वालोंके यहां संभव नहीं। ऐसे और भी दृष्टांत दिये जासकते हैं।

गृहस्थाश्रम—मानव जीवनके आधार रूप इस मन्दिरकी हालत बहुत ही बिगड़ी हुई है। सारी बुराईयोंके फल यहीं आकर प्रगट होते हैं। आज घर२में पुत्र-पिता, सासू-बहु, और पति-पत्निमें कलहके दृश्य देखनेमें मिलते हैं। हवन और दान

प्रणाली और जिन पूजा आदि षडावश्यक कर्मोंका लोप होता जारहा है। दरिद्रताके पांव बढ़ते चले आते हैं। विधवाओंकी समस्या उधर अलग ही जटिल होती जारही है।

पारिवारिक कलहको मिटानेके अर्थ स्वार्थत्याग और सहनशीलताकी भावनायें भरनी चाहिये। कुटुम्बके प्रत्येक जनको दूसरेके अधिकारों और सुविधाओंका ख्याल रखना चाहिये। जहां पुत्रको अपने माता–पिताकी सेवा करना चाहिये, उनके साथ विनयका वर्ताव करना चाहिये और उनके उचित आरामके लिए अपने आरामका त्याग करना चाहिये, वहां माता–पिताको भी उसकी स्वाधीनता और कर्तव्योंका ध्यान रखना चाहिये। शास्त्रोंमें जो स्त्रियों और कन्याओंके साम्पत्तिक अधिकार दिये हैं उनको कानून बनवाकर दिलवाना चाहिये। धर्म, अर्थ और कामके लिये प्रत्येकको उचित सुविधायें मिलनी चाहिये, क्योंकि इनके विना गृहस्थाश्रम ही नहीं है। सामायिक तथा षडावश्यकका प्रचार करना चाहिये, और स्वदेशी वस्तुओंको प्रोत्साहन देना चाहिये ताकि देशकी बेकारी दूर होवे। खेद है कि बहुतसे जैनी कला-कौशल, उद्योग या व्यवसायकी ओर ध्यान न देकर रुपया कमानेके लिये सट्टेकी ओर झुके हुए हैं जिससे हजारों समृद्धिशाली घराने कंगाल होगये हैं। उद्योग आदिकी उन्नति नहीं होने पाती है। लोगोंमें विना श्रमके धन कमानेकी आदत बढती जाती हैं और इसके फलस्वरूप नैतिक जीवनका ह्रास होकर बेईमानी, छल, कपट, विश्वासघातआदि बढते जाते हैं।

गृहस्थाश्रमके सुधारके लिये सोलह संस्कारों की शुरूआत करनी चाहिये। विवाह-प्रथाका सुधार करना चाहिये, वर्णलाभादि क्रियाओंका पुर्नस्थापन करना चाहिये। **विधवाओंको** आदरणीय समझना चाहिये, उनको उपयोगी काममें लगाना चाहिये, और उनको उचित साम्पत्तिक अधिकार दिलाने चाहिये। उनकी शिक्षा दीक्षाका उचित प्रबंधकर पवित्र वातावरणमें रखना चाहिये। अगर कर्मवश कोई पतित होजावे तो उसे निराशाके खड्डेमें न धकेल कर योग्य प्रायश्चित्त आदि देकर जातिकी छत्रछायामें बनाये रखना ठीक है।

धर्म-प्रभावना–जैन समाजकी सच्ची उन्नति तो जैनधर्मके आदर्शोंको जीवनमें परिणतकर दिखानेमें ही है। जैनधर्मको विश्वके कल्याणके लिये समझके इसके प्रचारका उत्साह होना चाहिये। और उसके सिद्धांतोंको विभिन्न भाषाओंमें सुन्दर और निष्पक्षतासे लिखी गई पुस्तकों द्वारा जगतभरमें फैलाना चाहिये। स्याद्वाद नयके जरिये सब धर्मोंको जैनधर्मको ढूंढ़कर अन्य मजहबवालेको बताना चाहिये। अगर कोई जैनी बनना चाहे तो उसे अन्य धर्मियोंसे ही रक्षित करनेके लिये व उसके विश्वासको स्थिर रखनेके लिये जैनसमाजमें शामिल कर लेना चाहिये।

मैं पुराने जैनोंसे विवाह सम्बंध तो दो तीन पीढ़ियें धर्माचरण करते हुए गुजर जानेपर ठीक समझता हूं, मगर खान-पान, छुआछूत, पारस्परिक सहायता आदिमें क्यों ऐतराज हो? आदिपुराणजीके वचनोंसे तथा प्राचीन आचार्य जो लाखों जैनी बनाते थे उनके इतिहाससे नवदीक्षितोंके जैनसमाजमें शामिल होजानेकी पुष्टि होती है।

धर्म-प्रचारके पांच साधन मुख्य हैं–साधू, विद्वान, समाचारपत्र, साहित्य और चारित्र। इन पांचोंका सुधार करना चाहिये। जैन समाजके साधूओंमें विद्या बल व चारित्र बल बहुत शिथिल दिखाई पड़ता है जिससे उनका यथोचित प्रभाव नहीं पड़ता है। अगर कोई मनुष्य सिंहके समान मुनिव्रतका पालन नहीं कर सके तो बेहतर है कि

वह गृहस्थ रहकर ही उसकी शक्ति पैदा करे। मुनि ऐलक आदिकी शिक्षा बहुत सोच समझ कर परीक्षित पात्रोंको ही देनी चाहिये।

इसी तरह विद्वान लोग श्रीमानोंके दास बने हुए हैं जिससे वे ठीक काम नहीं कर सकते हैं। जैन समाजकी संस्थायें ज्यादातर धनवानोंके इशारोंपर नाचती हैं यानी यहां ज्ञानका काम पैसेसे लिया जाता है। जबतक यह दशा रहेगी तबतक उन्नति होना कठीन है।

उच्च कोटीके समाचार पत्रोंका—भी जैन समाजमें अभाव है। जो समाचार पत्र हैं उनमेंसे अधिकांश दलबन्दी व तू २ मैं २ में फंसे हुए हैं और सारहीन लेखोंसे किसी तरह अपने कालम भरा करते हैं। इस देशोंमें सम्पादकोंको जल्दी चेतना चाहिये और अपने अध्ययन, मनन और लेखनी-शक्तिको बढ़ाना चाहिये।

जैन धर्मकी असंख्य बहुमूल्य पुस्तकें—भंडारोंमें छिपी हुई सड़ रही हैं। उनको प्रकाशमें लाना चाहिये जिससे माछूम हो कि दर्शन, काव्य, व्याकरण, वैद्यक, शिल्प आदि सभी प्रकारके ज्ञानमें जैन विद्वानोंने कितनी उन्नति की थी और जैनधर्म कितना महिमामय है। मैं तो इन सारे तीर्थस्थानों, मंदिरों, रथयात्राओं और श्रीमानोंके एकत्रित समुदायकी अपेक्षा भी इस जैनसाहित्यको असंख्यगुणा अधिक मूल्यवान समझता हूं।

धर्म-प्रभावना—का सबसे उत्तम उपाय यह है कि प्रत्येक जैनधर्मके आदर्शोंको यथाशक्ति आचरणमें लाके जैनधर्मकी सफलताकी जीती जागती मूर्ति बननेका प्रयत्न करे।

जो जातियाँ किसी समय जैन थीं और कालांतरमें स्वधर्मसे पतित या पतित भी होगई उनकी पुनः शुद्धिका उद्योग भी करना चाहिये।
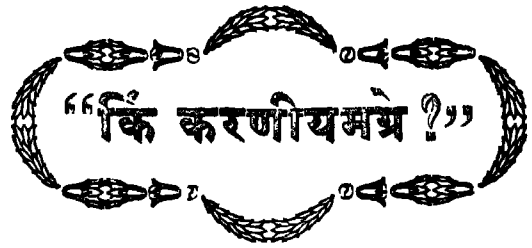
(ले०-पं० रवींद्रनाथ जैन न्यायतीर्थ-रोहतक)

विकटतरा जैनसमाजस्थितिः शैथिल्यमुपगता, भूतानि प्रभूतानि प्रयत्नानि तदुत्कर्षणार्थं, परंच प्रतिप्रतिक्षणमधो एव गच्छति न भवति लेशमात्रोन्नतिः। हेतुरत्र—जैनसमाजाऽद्यावधि रूढिवशंगता याः काश्चित् जैनेषु रूढयः सन्ति तासाम् न हि धर्मेण संबंधः, न धर्महानिस्ताभ्य उवन्नतिर्वा। कस्मिंश्चित् समयेऽभवत् लाभश्चेत् ताभिः; परंचाधुना ब्राह्मणादिसंसर्गवशात् विकृतिः समायाता तेषु। पूर्वं याः धर्मसमाजहेतुभूतास्ता एव विकृति संयुक्ताः समाजापमर्दका भवन्ति। यथा—

(१) भगवतो नेमिनाथस्य दीक्षासमया विवाहसमय एव वर्त्तते, विवाहमध्य एव समीपस्थे गिरिनारगिरौ दीक्षा गृहीता स च काल श्रावणकृष्णा ६ आसीत्, परंचाधुनाषाढ़शुक्लनवम्यन्तरं केनचिद् विवाहः क्रियते तदा वृद्धाः तं "यवनः" इति कथयंति यवनेष्वेव चातुर्मासकाले विवाहो भवति नास्माकम्। चिन्तनीयमेतत् सत्यमिदं चेत् नेमिनाथादयः यवनाः किंकि वर्षाकालेविवाहनाद् धर्महानिर्भवति, नास्तिचेत् किं न विधीयते?

(२) भगवता वृषभेण ६३००००० पूर्व वर्षान्तं राज्यं कृतं, तदेयति महति काले न केनापि यज्ञोपवीतं धारितं, परंचाधुना कश्चिद् यज्ञोपवीतं न धारयति चेत् तदा शूद्रोऽयमिति कथयन्ति। यज्ञोपवीतेन न धर्मस्य हानि उन्नतिर्वा, चेत्तर्हि भगवता किं न कृतं।

(३) पूर्वं मातुलस्यकन्यया सह जीवंधरलक्ष्मण-प्रभृतीनां बहूनां विवाहो जात:, कोऽप्यिदानीं कुर्याच्चेत् यवनसंज्ञया परिकीर्त्यते स:, परं च नहि जीवंधराददयो यवना जाता:, अतोऽनेनसंबंधेन न धर्मस्योन्नतिर्हानिर्वा।

(४) **सूतकपातकप्रथा**पि चित्रास्ति जैनेषु, सूतकं कीदृक् भवितव्यं नास्त्यस्य स्पष्टतयोल्लेख: पुरातनशास्त्रेषु, सूतकशब्देनोल्लेखोऽस्त्यपि परंच कस्य तत्या सूते तां, सर्वेषाम् वा इति नास्ति विधानं। अर्वाचीनेषु विभिन्नरूपेणास्ति, यथा प्रायश्चित्तसंग्रहे जलानलप्रवेशेन भृगुपाताच्छिषावपि, बालसंन्यासत: प्रेते सद्य: शौचं गृहिव्रते। उदाहरणेन–भरतचक्रिण: एकदा पुत्रोत्पत्तिकेवलज्ञानोत्पत्तिश्रवणेन तदा एव भगवतोऽर्चा कृता।

अस्मासु यादृक् सूतकपातकव्यवहारो दृश्यते स हिन्दुस्मृतिशास्त्रेष्वुपलभ्यते न जैनशास्त्रेषु। रूढिवलादपि न हि तत्सिद्धि:, यतो रूढयो विचित्राबुंदेलखंडादिप्रदेशे सूतके पातके सति न हि जिनालयं गम्यते, पंजाबादिप्रदेशे गम्यते अत: कथं निर्णय: स्यात् जैननामियं नान्या। यथार्थत: हर्षकारणे सति शोककारणे सति धर्मस्थानेऽवश्यं वर्त्तनीयं यत: वैराग्यभावना दृढीयसी स्यात्, असाताबन्धो न भवेत् एतादृश्यामवस्थायां जिनालयेऽर्चादिक्रियमाणे का हानि: ॥

(५) **जैनेषु सर्वत्रैव बहुव्ययोऽस्ति,** पूर्वं करपट्टकादिव्यवहार: आसीत् पश्चात् शष्कुल्यादिव्यवहारोऽधुना तु विविधमिष्टान्नादिव्यवहारो दृश्यते, सर्वे जैना: बहुव्ययं कर्त्तुमशक्ता इन्द्रियमपि जेतुमसमर्था: अत: कुर्वन्ति ते क्रन्दनं "विधवा: किं कुर्वन्ति आसाम् विवाह: किं न करणीय:" यदि समाजेऽल्पव्ययेन विवाहस्स्यात् तदा सर्वे विवाहिता: स्यु: पुन: कोऽप्येवं प्रश्नं न कुर्यात्।

(६) **जैन समाजे "ऽन्तर्जातियाविवाह: करणीय:"** इति बहवो वदन्ति परञ्च तेषां कथनमात्रमेव दृश्यते बहव एवं विचारश्रेणिमारूढा: स्वकन्यानाम् अन्यजातीयबन्धुभिस्सह विवाहं न कुर्वन्ति, यदा बहिरागतै: कैश्चित् तेषाम् विवाहार्थं कथितमपि, शास्त्रेषु बहूनि सन्त्युदाहरणानि। एतन्कारणे कैश्चित गोत्रहानि: वर्णसंकरो वा कथ्यते, परञ्च पुरातनानां न हि किंचित् जातं धर्महानिरपि न जाता। गोत्रा इमे न हि पुरातना:, आधुनिका: ग्रामादिनाम्ना निर्गता, अपि च भिन्नगोत्रस्य कन्योद्वहने न दोषो गण्यते स्वगोत्रोद्वहने कथ्यते तदा भिन्नजात्युद्वहनेऽपि को दोषो धर्महानिर्वा।

(७) **कैश्चिन्नेतृभि: पुत्रीपुत्रविक्रयनिषेधार्थं यत्न:** कृत: परंच कोऽपि धनिक एवं (कन्याविक्रय) करोति स पापात्मा, यदि कश्चिद् बुभुक्षाक्रान्तो निर्धनजैन: एवं करोति तदा न केनचिद् दूषणीय: यतो दृश्यते बुभुक्षाक्रान्ते सति न कोऽपि पृच्छति, ऋणादिग्रहणे सति सर्वमपहरति, पश्चात् स कन्याविक्रयादिकार्यं करोति तदा सर्वे दूषयंति, महानन्यायोऽयं।

केचिद् **पुत्रविक्रयनिषेधं** कुर्वन्ति परंच स्वपुत्रीविवाहे बहुव्ययं कुर्वन्ति तन्निषेधं न कारयन्ति निर्धनान् कोऽपि कन्यां न ददाति। यदि यथार्थत: सुधारकास्ते तर्हि तथैव प्रतिज्ञा करणीया, बहुव्ययाभावे धनवतामस्वीकारे निर्धनै: सह विवाहनीया: एतेन विनाछलमात्रं निर्धनानां शोषणमात्रं। गोलालारीय प्रभृतिजातिषु ९२ द्विपञ्चाशत्रूप्यक दानप्रथा विवाहेष्वस्ति तस्या अयमेवाभिप्राय:, एतेष्वेव विवाह: करणीय: यो निर्धन: स वरपक्षात्गृहीत्वा तेष्वेव विवाहमकरोत् धनिकोऽन्यरूपेण वरपक्षं पुनर्ददातिस्म। एतस्या अधुना विकृतिरूपं, पुनरपि

शुद्धरूपेण एतादृश्य: प्रथा: सर्वत्रैव स्यु तदा समाजस्य महदुपकार स्यात् ।

(८) **समाजे शूद्रजलपानेन दोषो गण्यते** यदा मूलाचारानगारधर्मामृतादिग्रन्थेषु शूद्राणां मुनिदानं लिखितं, पूजाविधानं अस्ति, स्पर्शशूद्राणां मद्यादिसेवनरहितानां जलपानादि करणे को दोष: का वा धर्महानिर्बहिष्कारो वा चेत्तर्हि कथं पुरातनानां न कृते। कथनस्य तात्पर्यमेतत् अधुना या: पूर्वः सम्यकरूढय: ता: एव घातकरूढय: जाता: । ताभिर्नधर्मस्य हानिरुन्नतिर्वा परंच समाजस्यातीवावनतिर्भवति ।

जैनयुवकाणामुचितं घातकरूढिधर्मं परित्यज्य याभि: प्रथामि: न सम्यक्त्वव्रतहानि: समाजोन्नतिश्च भवति ता एव रक्षणीया:, अन्या: दूरीकरणीया इत्येव श्रेयस: पन्था ।

एतस्य करणे बहूनि विघ्नानि स्यु:, यथा जातिबहिष्कार: धर्मबहिष्कार: मारनताडनादिप्रयोगो वा, परंच जातिबहिष्कारे सति अन्या पञ्चाशीति: जातिर्निर्मापनीया, प्रारम्भेऽपि इयं जाति वह्नी स्यात् अन्याभ्य: जैनजातिभ्य: यासामल्पीयसी संख्यास्ति ।

धर्मबहिष्कारे सति अन्यो जिनालय: स्थापनीय:, बहुषु जातिषु सत्सु न हानि परंच विरोधे सत्येव हानिर्भवति यथा राष्ट्रे बहुप्रान्तग्रामादय: सन्ति किंतु विरोधाभावेन सर्वे उन्नतिं कुर्वन्ति ।

जैननवयुवकै: मूका: भवनीया: मनसा कार्येन कार्यं करणीयं वचसोत्तरं न दानीयं। जैन समाजावनते: मुख्यकारणं इदमेव, जैनानाम् कर्णधारं मन्या: प्राय: सर्वे वचनचातुर्यविदग्धा:, न सन्ति कार्यपटव:, सर्वत्र मायाबहुलभावो वर्त्तते अत: नवयुवकानां विरोध: न करणीय: कार्यं करणीय:, एवं सति वृद्धा युष्माकम् यदि सहाया: स्यु: तदा हर्षेण तेषाम् आशिष: गृह्णीया: । एवं न भूत्वा मार्गविरोधका: स्यु: तदापि सर्वं द्विगुणोत्साहेन कार्यं करणीयं । यत:–

त्यजति न विदधान: कार्यमुद्दिश्य धीमान् ।
खलजनपरिवृत्ते: स्पर्धते किन्तु तेन ॥

किमु न वितनुतेऽर्क: पद्मबोधं प्रबुद्ध: ।
तदपहृति विधायी शीतरश्मिर्यदीह ॥ प्र. क. मार्त्तंड

सर्वै: भेदभावमन्तरेण क्षत्रियविप्रवैश्यशूद्र शिक्षा गृह्णीया जर्मनजापानादिदेशवत्, यदा पर्यंतं सर्वे सर्वं न स्यु: तदापर्यन्तं देश: स्वतंत्र: । तस्मात् यथा साधारणजना सैनिकाश्रया: भूत्वाऽकर्मण्या भवन्ति सैनिकाश्च परस्परयुद्धपरकन्यापहरणादिकं कुर्वन्ति विप्रा धर्मस्य अधिकारिण एव भवन्ति अन्येषां मंदिरप्रवेशनिषेधादिकं कुर्वन्ति, अत: सर्वे एव क्षत्रिया ब्राह्मणा: वात्सल्यभावेन निश्चला सेवका स्यु: तदा एव समाजोन्नति: धर्मउन्नतिर्वा यत: "न धर्मो धार्मिकैर्विना" ।

जैन नवयुवकानाम् कर्त्तव्यम् ।

द्वौ हि धर्मौ गृहस्थानां लौकिक: पारलौकिक: ।
लोकाश्रयो भवेदाद्य: पर: परलोकसंश्रय: ॥

सर्वमेव हि जैनानां प्रमाणो लौकिको विधि: ।
यत्र सम्यक्त्वहानिर्न यत्र न व्रतदूषणम ॥

(यशस्तिलके उपासकाध्ययने सोमदेवसूरि:)

अत: सर्वै: स्वकीय: मार्ग: स्वेनैव मार्गनीय:, येन समाजोन्नति स्यात् किंतु सम्यक्त्वहानिश्च केनापि प्रकारेण न करणीया । इत्येव करणीयमग्रे ।

श्रीमान् बेरिस्टर बा० जमनाप्रसादजी जैन कलरैया,

एम. बी. आर. ए. एस. एल. बी. व सब जड्ज मध्य प्रान्त।

(इटारसीमें ता० २९-३० दिसम्बर ३३को होनेवाले भारतवर्षीय दिगम्बर जैन परिषद्के १० वें अधिवेशनके सभापति आप ही चुने गये हैं।)

Jain Vijaya Press, Surat.

NO TITLE.

(By:—*Mr. Herbert Warren Jain, London)*

The following is an endeavour to express the central thought, right or wrong, but believed to be right, of an address on Jainism given on the 17th of October, 1933, to a Society in London called "Society for Promoting the Study of Religions." 17 Bedford Square, W. C. I. The headings of the address, or parts perhaps is a better name, were The Teachings (their source), The Universe, Karmas (their natures and causes), Removal of Karmas, The Result of the Removal. The address was given in a room in a private house, to about some sixty people. It is to be published eventually in the Society's Journal.

The title of this article would naturally be "Jainism," but as this title is so frequently used I have preferred to avoid it.

we are a combination of two things soul and matter; a subtle combination; a subtle combination of ourself and fine invisible matter, which though invisible is nevertheless real. By separating the two we reach a satisfactory condition which does not come an end. That is the central thought. It sounds simple enough, in theory: we must know how to do it, and we must do it or it will not be done.

What is the good of a pleasant condition which comes to an end and is followed by a condition which is not satisfactory? No matter how long the pleasant condition may be, still if it comes to an end it is no good. It may last thirty-three thousand billion periods of time each one too long to be counted in years, thirty three thousand billion palyopamas. We may quite well imagine that we have just now finished such a life old have come here to this life on a planet full of miseries all around even if our own life happens to be fairly comfortable. Time is infinite and even such a period of such an enormous duration is only a section Every moment of our present life may be regarded as the end of such a length of time! And it may also be regarded as the beginning of another such period. How, then, can we get into a satisfactory condition which when one of these enormous periods has come to an end it shall be followed immediately by another equally long time equally satisfactory? The Jain Arhats have told us how. Why dont we do it? Why have we allowed infinite time to elapse without having accomplished this work? Why do we waste our time in unprofitable pursuits?

When we first hear that we are a combination of two things, we are apt to ask how is it that we got thus combined. This question implies the assumption that at one time we were not combined. But the teaching is that the combined state precedes the liberated state, in other words that we did not get combined, but are always so been. If after the separation has once been effected there is the possibility of again being combined, then all our work would have to be done again; it would mean that the ideal condition would not be continuous but would come to an end, the unsatisfactoriness of our condition being due to the combination.

We know for certain that our present life is far from being satisfactory, and we feel convinced that a satisfactory life must be possible. But if we do not know, which we do not, what we are like when we are not thus in combination with this fine invisible matter, then we must rely on those who have found out to tell us. They tell us that we are then omniscient, blissful, and immortal, and that this condition does not come to an end.

What a thing does is what it is. So what we do is what we are. What do we do? We eat food, and know that we do it, and we know how to do it. But we do not in the same sense do the digesting: it goes on without our knowledge, and without our conscious doing; in fact we do not know how to digest food. Therefore there must be some other force doing this, some other substance which we are combined with and which does the work of digesting the food we put into our mouths and chew and swallow. Thus in one way we can see a difference between ourself and something which is not ourself although we are in combination with this other force, with this something that does this particular work.

Another thing which we do not do is growing old; we grow old; but we do not do it, we do not know how, and could not do it if we wished to. So apparently we are what we do knowingly, the sound is he who knows how to do things and does them. May be the things we do know are not the natural activities we should perform if we were not thus in combination with influences which urge us to this unnatural behaviour. Is it not a contradiction to say as I have done at the beginning of this paragraph that we grow old after having first said that another thing we do not do is to grow old? We do not grow old, we do grow old; looks like a contradiction, and nonsense. But the 'we' in the one sentence has not the same meaning as it has in the second sentence. The human being is a combination of two things, soul and matter; when we say tha we do not grow old, that we do not know how, and do not do the growing old, the 'we' means one of the two ingredients, the soul, only, while when we say that we grow old, the word 'we' means the two things together. So there is no contradiction. This, of course, is an example of the Syadvada.

Presumably our body is made of the food we eat; We cannot by any stretch of imagination feel that a piece of cake on a plate is part of us. When we have eaten it and it has become a part constituent of our body, it cannot be any part of us any more than when it was on the plate. As this will be true of all food and as food is the only thing our body is made of, it follows that no part of our body, brain, or any part, nor the whole of it, can be ourself.

So parhaps one way to separate ourself from activities which are not our own, is by askiug ourselves. Do we do this? or Did I do this? And if the answer is no I certainly did not, then we have learned one fact about ourself. This seems to me to be true; but I am open to correction. It is possible for our own actions to be natural or unnatural; bur the unnatural ones are still our own and are not done by any other substance than ourself.

If we say to ourselves now I will eat a piece of cake, and we eat it and know that we are doing it, we may call this activity our own, we do it; but we do not in the same manner say to ourselves. Now I will get angry and then get angry. The state of anger following upon a calm condition comes about by some activity which we certainly cannot say we ourselves do; it is therefore the activity of some substance with which we are combined. Going to sleep must be another example of something which we cannot do; getting hungry perhaps is another, we cannot say I will now get hungry, as we can say I will now go for a walk.

Well, I have said about all I have time for at the moment, so I send it off.

Lendon, २9-10-३३. **H. Warren.**

The Present Condition of the Jains.

By Manilal H. Udani, M. A. L L. B. Advocate, RAJKOT.

It will be in the fitness of things if I draw before you this year a picture of the present situation of the Jains and show the ways and means for their uplift so far as it would be possible within the scope of my sight.

2. Now we are passing through the 20th century when all the nations of Europe and some of the nations of Asia have made tremendous progress and have risen at a top in their progress in all lines viz; materially, socially, and industrially. At this time it is a pity that we find very little progress in India and far less in our Jain community. We have come at a time when it is essentially necessary that all the Hindus should do away their castes and sub-castes and should stand together and I believe that that stage is not far off. We are concerned with the Jains and there are no castes among the Jains and we can easily stand together for our uplift on all common questions.

3. I think at this stage we ought to forget our petty differences as Digambars, Swetambers and Sthanakwasis and should meet unitedly for all common questions. If you read the reports of all the sectional Conferences and the resolutions passed by them, you would find that most of the resolutions pertain to questions which are common to all of us; why cannot all of us meet together in a conference of the three sections consisting of the leading gentlemen and intelligentia to discuss and adopt practical ways and means for the uplift of our brethren. The salvetiou of the community lies in such united meetings and for finding out practical ways for bringing our community in light. Last year I pointed out in an article the principles of Jainism and proved that they are superior in every respect, and so I do not wish to dilate upon them here. But I feel that in spite of this spread of education in our community, we have not been able to make any progress which the founders of Jain schools, Jain boardings etc, anticipated and unless and untill, rich and poor, educated and uneducated, can meet together on a common platform and think about these problems, we are bound to remain where we are and struggling for ever aud waisting our energies on petty questions.

4. We Jains are known as merchant class and we can count many as millionaires in our community. These richer people wish to give donations but they do not know how they can best utilise them and thus our charitable grants are being spent away according to the advice of petty people on some petty necessities and bigger objects are always ommitted. They are no common Boards which can appeal to these charitable donors, to utilise their funds for permanent and useful purposes. There is no common battery from which currents can pass in all the directions, so as to bring light to the, community and thus for want of a common platform we are struggling still in darkness and our community has not been able to make its due progress even in this era when everybody is crying for advancement.

near relations of such contributors claim to possess infallible wisdom can, in my opinion govern such funds. The reason is not far to seek The question of awarding scholarships can never be depending upon the mere sentiments and whims of those who know next to nothing about education and who unfortunately for the younger generation happen to be, for the time being, at the helm of such education funds. It should be recognized that education touches the general body of Society and that the society does not consist of only a few persons. Satisfaction of and the advantages for many must be the true test of the propriety of any managing body.

Our Funds.

Under this sub-hedding I wish to write about the existing education funds of Digambaras which have come to my knowledge. The first mention must be made-and I say it does deserve it-of the funds created by Sjt. Manekchand Hirachand Zaveri. The second I believe comes the funds from which Deccan Maharastra Jain Sabha awards the scholarships. About Northern India, our common man knows very little, yet I have come to know that there is one G. P. Jain scolarship fund at Delhi which I like to number as third Some sort of help in the way of education is also being rendered by the so called big- but really only too narrow and only confined within the four walls of the city of Indore-charities of—sit Hukumchand Saroopchand. Sjt. Walchand Hirachand of Bombay and his father Seth Hirachand Nemchand of Sholapur, I frankly express, need not be mistaken as one and the same so far as the active pecuniary or otherwise help in education and other philanthropic works are concerned. I am sorry that I cannot make mention here of those small persons -really great in my opinion- who silently without any ostentation go on helping our younger generation in way of education for want of knowledge on my part.

Look at this number of funds and see whether that much is sufficient for the population of nearly six lakhs of Digamberas. Again, compare this number with the number of funds for this much population of Shwetamberas or any other community with which Digamberas may many times wish to rival. Above this all, let us remember that we have not with us a single fund from which we can award scholarships to the deserving students for prosecuting higher studies in foreign countries I ask the whole community-without this sort of education and enlightenment, can we hope for our amelioration and betterment? People who can think, I am sure, will take no time in finding out the fields wherein we lack, most deplorably, in the real advancement.

Our rich men

And yet our rich men! How many times to tell them and to pray to them for funds! How many times to bother with them trying to persuade them to see the ways in which lies the salvation of those very men whose leaders and great men they call themselves! Our rich men who happen to possess money and no intellect can thre ten with insults the youths who happen to approach them for help. Our rich men can afford to quarrel over the matter as to who has a right to spend money for erecting a beautiful temple at a place where lies the temple already.

My fond hope.

I believe, I have tried to make out fairly a case for starting and organising some education funds in the Digambera community. My fond hope is the change of mental attitude of the rich towards the poor founded on the understanding of the basic principles of richness and poverty and not that of vague religiosity.

The Legendary Account of Bhujabali.

(By: *Bhairundan Padmachand Sethi, Ladnun.*)

PUJUNIO:

The three statues represent Bahuvali or Bhujabali, also known as Gommatesvara, who was the son of Adijina—Risabhanatha, the first Tirthankara, of the Jainas. Risabhadeva, according to tradition, was a king, and had two wives, Nanda (some say Sumangala) and Sunenda. Nanda or Sumangala gave birth to the twins, Bharata and Brahmi, a boy and a girl, the former of whom was placed on the throne by Risabhadeva, when he retired to seek absolute knowledge. Bahubali and his sister, Sundari were born of Sunanda, and the former ascended the throne of Taksa-sila (modern Taxla), when his father distributed his kingdom among his sons. Bharata had possession of a wonderful Chakra (discus) which could not be withstood by any warrior in fight. With the help of this Chakra Bharata conquered the earth and returned to his capital. But the discus would not enter the capital (or, according to another account, the armoury.) Bharata then took this as a sign that there was still another territory on earth which had not been conquered by him, and, after reflection, came to the conclusion that there was only the kingdom of Taksa-Sila, ruled by his brother, Bhujabali, which had not been subdued by him. Bharata then declared war on his brother Bhujabali, and in the terrible fight that followed, Bhujabali was victorious. Even the discus of Bharata could do no harm to Bhujabali. But Bhujabali, though victorious suddenly became last in meditation, thinking of the Vanity of this world. Bharata made obeisance to Bhujabali and returned to his place; but Bhujabali went to the summit of Kailasa mountain, remained standing there (or, according to another account, stood on the very field of battle) in a statuesque posture for one year and " the creepers, wreathing round the boughs of the trees on the bank clung to his neck and crowned his head with their canopy and the blades of Kusa-grass grew between his feet; and he became in appearance like an ant-hill Subsequently, Bhujabali obtained absolute knowledge and became one of the Kevalis.

In an inscription, however, we read that Puru was the father of Bahubali or Bhujabali and Bharata. Then the inscription goes on to say that Bharata, the son of Puru-Deva, surrounded by all the kings conquered by him, erected, in glee, an image, representing the victorious Bahubali Kevali, which was DXXV bows in height, near Podanapura. After a long time, in numerable Kukkutasarpa. (dragons having the body of a fowl and the head and neck of a snake) terrifying the world, grew up in the place surrounding (the image of) that Jina, for which the image became known as Kukkutesavra "

In the light of these tradtions, we shall be able to understand the significance of the sculptured anthills, from which serpants are issuing, and the climbing plant which twines round the legs and arms of the images of Gommatesvara at Sravana Belgola, Karkala and Yenur. These details are identical in all three, and supposed to represent so rigid and complete an absorption in penance that anthills had been raised around his feet and plants had grown over his body, without disturbing the profoundness of the ascetic's abstraction from mundane affairs. "

The Message of Lords.

(By :—Bhairundan P. Sethi, Ladnun).

PUJANIO,

Abhi-chandra.—A patriarch (Kulakara,) lived in the primitive period in that part of the country which lies between the Indus and the Ganges. Son of Yasasvan and Surupa. His wife's name was Pratirupa ; was succeeded by his son Prasreni. In his time, people lived on the fruits of the trees and did not know how to build fire. The civilising mission of Risabha-deva the first Tirthamkara of the Jaina Emperor of Bharata-Varsa came long after. J. H. S.

Pehold : I have given you every herb bearing seed, which is upon the face of all the earth, and every tree in which is the fruit of a tree yielding seed ; to you it shall be for meat. —Genesis chapt. I. 29.

Vide : Report of the Inter-Allied Conference, 1918 and an *Introduction to Jainism* P. LXV by R. B. Mr. A. B. Latthe M. A.

OPINION.

Flesh is unnatural food and therefore tends to create functional disturbances. As it is taken in modern civilixation it is affected with such terrible deseases (readily communicable to man), as Cancer, Consumption, Fever, Intestinal Worms &c. to an enormous extent. There is little need of wonder that flesh eating is one of the most serious cause of the diseases that carry of ninety nine out of every hundred people that are born. —Dr. Sir Joseah Oldfield,

M. R. C. S. D. C. L.

FARMANS.

All shall alike enjoy the equal and impartial protection of the Law, and we do strictly charge and enjoin all those who may be in authority under us that they abstain from all interference with the religious belief or worship of any of our subjects on pain of our highest displeasure.

—Royal proclamation of 1 Nov. 1858.

कब होगा बेड़ा पार।

एक है सारी मनुज समाज।
अभागी प्रथक हुई है आज॥
न आती इसे तनिक भी लाज।
इसीसे बिगड़े सारे काज॥

कोई कहता है हिंदू, हाय।
कोई मुस्लिम कहकर चिल्लाय॥
कोई ईसाई कहता आय।
यहूदी कहता कोई बनाय॥

धर्मके चलगये पन्थ अनेक।
सनातन, बौद्ध, जैनमें टेक॥
मुहमदी, ईसाई क्या नेक।
इसीपर लड़ते हैं प्रत्येक॥

कहो कैसे होवे कुछ काम।
बहस सब करते हैं निष्काम॥
आंख, मुंह नाक सभी इकठाम।
न जानें क्यों तोड़े निजधाम॥

व्यर्थके पचड़ोंको अब तोड़।
ऊंच नीचोंका झगड़ा छोड़॥
जाति बन्धनसे मुंहको मोड़।
मनुज एकेमें हो अब होड़॥

यही है सब धर्मोंका सार।
मिटेगी इससे मारामार॥
विश्व बंधुत्व प्रेम संचार।
शीघ्र, होगा तब बेड़ा पार॥

—"निर्बल"

दिगम्बर जैन ओसवाल।

[लेखकः—प० अजितकुमार जैन शास्त्री, मुलतान।]

जैन समाजमें **ओसवाल** जाति अनेक कारणोंसे एक प्रमुख जाति है। इसका इतिहास बहुत अच्छे अभ्युदयको प्रगट करता है। यद्यपि श्वेताम्बर सम्प्रदायकी प्राचीनता सिद्ध करनेके लिये हमारे अधिकांश श्वेताम्बरी सज्जन ओसवाल जातिकी उत्पत्ति अपने यति लोगोंके कहे, लिखे अनुसार वीर नि० सं० ७०में श्री रत्नप्रभसूरिके द्वारा हुई मानते हैं किन्तु ऐतिहासिक प्रमाण उनकी कल्पनाका समूल खंडन कर देते हैं।

जोधपुर राज्यमें जोधपुरके पास **ओसिया** नामक एक कस्बा है जो कि पहले एक बहुत भारी नगर था। यहांपर किसी जैन आचार्यने राजपूतोंको जैनधर्म अनुयायी बनाकर ओसियाके नामपर **ओसवाल** जातिकी नीब डाली। उन आचार्यका नाम संभवतः **रत्नप्रभसूरि** होगा। यह समय ग्यारहवीं शताब्दीका प्रथम भाग होना चाहिये। क्योंकि **ओसियामें** जो पुरातन ऐतिहासिक श्री महावीरस्वामीका मंदिर है उसके तोरणद्वारपर लेख इस प्रकार है—–

"सं० १०३५ आषाढ़ सुदि १० आदित्यवारे स्वातिनक्षत्रे श्री तोरणं प्रतिष्ठापितमिति"

(जैन शिलालेखसंग्रह प्रथम भाग पृ० १९.५)

इस लेखके सिवाय अन्य जितने भी शिलालेख **ओसियामें** पाये जाते हैं वे भी प्रायः सभी या तो कुछ कम अधिक इस लेखके [illegible] हैं या इससे पीछेके हैं। दशमी शताब्दीका भी कोई शिलालेख यहांपर नहीं मिलता।

इससे यह सिद्ध होता है कि **ओसवाल** जाति **ओसियामें** विक्रम संवतकी ग्यारहवीं शताब्दीमें उन **लोगोंसे बनना प्रारम्भ** हुई जो कि शुद्ध क्षत्रिय **राजपूत** थे। उसके पीछे भिन्न भिन्न समय पर भिन्न भिन्न जातियोंके राजपूत वंश जैनधर्ममें दीक्षित होकर इस ओसवाल जातिमें मिलते गए। इस अनेक शुद्ध राजपूत जातियोंका समुदाय जैन धर्मका अनुयायी होकर **ओसवाल** जातिके रूपमें प्रगट होगया। वीर संवतकी प्रथम शताब्दीमें राजपूतोंकी जब उत्पत्ति ही नहीं हुई थी तब उनमें ओसवाल जातिकी रचना उस समय कैसे सिद्ध हो सकती है? ऐतिहासिक विद्वान कर्नल टॉड, रायबहादुर पं० गौरीशंकरजी ओझा आदि भी **ओसवाल** जातिको **शुद्ध राजपूत** (Pure Rajputs) तथा ११ वीं शताब्दीके लगभग [illegible] हुआ मानते हैं। अस्तु।

तदनुसार अनेकः ओसवाल वंश राजस्थानके राजवंशोंसे बराबर मिलते हैं। रतलाम निवासी श्रीमान सरदार **भंवरलालजी** यदुवंशी भाटीकी वंश परम्परा **जैसलमेर** नरेशके साथ मिलती है। ४५ पीढ़ी पहले उनके पूर्वज और वर्तमान जैस-

लमेर नरेशके पूर्वज भाई भाई थे। मारवाड़में इस समय भी अनेक ओसवाल अस्त्र शस्त्र धारण करके अपने उसी पुराने क्षत्रिय वंशमें रहते हैं। उनको यदि कोई **बनिया** कह दे तो उसपर मानहानिका अभियोग दायर हो जावे। अधिकांश: ओसवाल अब भी अपने नाम **सिंहान्त** (केशरीसिंह, राजकुमारसिंह आदि) रखते हैं। उनका ठाटवाट राजपूतों सरीखा है।

ओसवालोंके पास ढाल तरवार अबतक रहती थी। विवाहके समय वैवाहिक रीति पूरी करनेके लिये ढाल तरवारका होना आवश्यक था। अब जरा कुछ २ वह प्रथा हटती जाती है। पहले ओसवालोंमें अनेक सेनापति तथा शूरवीर योद्धा हुए हैं जिन्होंने वीरतापूर्वक अनेक युद्ध किये थे।

ओसवाल जाति धन सम्पन्न भी अच्छी रही है। जगतसेठ तथा बड़ी २ रियासतोंको ऋणमें गिरवी रखनेवाले धनाढ्य ओसवालोंमें ही हुए हैं। इस समय भी अच्छे २ धनिक ओसवालोंमें विद्यमान हैं, किन्तु पहलेसे दशा बहुत कुछ उतर गई है।

ओसवाल जातिके अनेक गोत्र हैं। जनसंख्या इस समय दश लाख बतलाई जाती है किंतु यह कुछ अतिशयोक्ति मालूम होती है। फिर भी यह निश्चित है कि जैनसमाजमें सबसे अधिक जनसंख्यावाली जाति **ओसवाल** ही है।

इस प्रकार अनेक दृष्टियोंसे ओसवाल जातिका महत्व जैनसमाजमें इतर जातियोंसे बढ़ाचढ़ा है।

यद्यपि इस जातिका निर्माण करनेवाले जैन आचार्य श्वेताम्बरीय थे अत: ओसवाल जाति पहले पहल श्वेताम्बर सम्प्रदायवाली ही थी (सच तो यह है कि श्वेताम्बर सम्प्रदायका अस्तित्व प्राय: केवल ओसवाल जातिपर ही निर्भर था तथा इस समय भी है) किंतु कुछ समय पीछे जिन२ ओसवालोंको दिगम्बर सम्प्रदायके विद्वानोंका संयोग मिला वे सैद्धांतिक सचाई पाकर दिगम्बर आम्नायके माननेवाले होगये। इस समय यद्यपि ओसवालोंके सैकड़ों घर अजैन भी होगये हैं किंतु जैन ओसवालोंमें इस समय सैकड़ों घर दिगम्बर आम्नाय माननेवाले भी हैं। मुलतान, डेरागाजीखान, लखनऊ, धरणगांव, रतलाम, बड़नगर, बनारस, मन्दसौर आदि १८-२० नगरोंमें इस समय दिगम्बरी ओसवाल हैं।

आजसे ३००-४०० वर्ष पहले तक तो दिगम्बरी ओसवाल इतिहाससे प्रमाणित होते हैं। खोज करनेपर संभव है इससे भी पहले मिल सकेंगे। अनेक ओसवाल विद्वान दिगम्बर आम्नायके होचुके हैं।

कवितावद्ध नाटक समयसारके रचयिता पं० बनारसीदासजी, (वि० सं० १६४३), ब्रह्मविलासके निर्माता पं० भगवतीदासजी, अष्टसहस्रीके मर्मज्ञ, सत्स्वरूप, महावीराष्टक तथा भावपूर्ण पदोंके बनानेवाले पं० भागचन्द्रजी छाजेड़, मंत्र शास्त्रके ज्ञाता सेठ मोतीरामजी संघी, श्वेतांबर यति वेशमें रहनेवाले किन्तु दिगम्बर आम्नायके कट्टर पुजारी यति नयनसुखदासजी आदि ओसवाल विद्वान दिगम्बरी ही हुए हैं।

इस समय मुलतान, डेरागाजीखानमें दिगम्बरी ओसवालोंकी संख्या अन्य स्थानोंकी अपेक्षा अधिक है। मुलतान, डेरागाजीखानमें इस समय ६५

घर तथा ३१८ जनसंख्या है। इनमें संघी, गोलेच्छा, बगवाणी, पारख, नौलक्खा, डूगर, कोठारी, सेठी, सुखाणी आदि १५ गोत्र हैं।

मुलतान दि० जैन मंदिरमें एक पुराना पीतलका सिंहासन है। उसपर जो लेख खुदा हुआ है उससे सिद्ध होता है कि मुलतानमें साढेतीनसौ वर्ष पूर्व दिगम्बर जैन मंदिर था, उसमें एक दिगम्बरी ओसवालने वह सिंहासन चढ़ायाथा।

मुलतानमें लगभग साढेतीनसौ वर्ष पूर्व **नौलक्खा** गोत्री एक दिगम्बरी ओसवाल **जयपुरसे** जवाहिरातका व्यापार करने आये थे। वे बडे धनाढ्य थे। उस समयके मुस्लिम शासक नवाबके साथ उनकी मित्रता थी। अतः वे किलेमें नवाबके मकानके पासके मकानमें ही रहते थे। उन्होंने किलेमें एक दिगम्बर जैन मंदिर भी बनवाया था जो कि किला धराशायी होनेसे वह भी धराशायी होगया। कुछ वर्ष पहले किलेमेंसे मिट्टी खोदते हुए एक दिगम्बरी प्रतिमा भी निकली थी जो कि स्थानीय मंदिरमें विराजमान है। उन जौंहरी नौलक्खोंकी स्त्रियां मंदिरको दर्शन करनेके लिये अमूल्य आभूषण पहन कर जाया करती थीं। चलते हुए यदि किसी आभूषण या वस्त्रमें लगे हुए सच्चे मोती गिर जाते थे तो उनको वे नहीं उठाती थीं। मुलतानमें नौलक्खोंका पहले एक विशाल बाग भी था जिसकी प्रसिद्धि अब तक है।

जिस समय अंग्रेजोंने किलेपर धावा किया उस समय किलेका स्थान छोड़नेके कारण वे नौलक्खे अपनी विशाल सम्पत्ति अपने साथ न ला सके। इसी प्रकार **जैसलमेरसे** भी कुछ दिगम्बरी ओसवालोंके घर मुलतानमें आये थे जो कि **संघी** गोत्रके थे। जैसलमेरमें सेठ सागरमलजी बाफणा, जोगीदासजी भणसाली, हीरालालजी फोफलिया आदि अनेक घर दिगम्बरी थे।

इस प्रकार मुलतानमें डेरागाजीखानमें नौलक्खा तथा संघी गोत्रवाले कदीमी दिगम्बरी ओसवाल थे, फिर क्रमशः बगवानी, कनोड़ा, ननगाणी आदि गोत्रवाले श्वेताम्बरी ओसवाल सहवाससे तथा धार्मिक परीक्षा करके दिगम्बरी होते रहे।

२०–२५ वर्ष पहले सेठ पं० घनश्यामदासजी संघी एक अच्छे विद्वान होगये हैं। उन्होंने दिगम्बरी सिद्धांतकी सत्यताकी परीक्षा कराके अनेक श्वेताम्बरी घरोंको दिगम्बरी बनाया था। गोम्मटसारके ज्ञाता स्व० सेठ भोलारामजी बगवानी तथा सिद्धांतज्ञाता, वाग्मी पं० चौथूरामजी संघी पहले कट्टर श्वेताम्बर थे। उनको सैद्धांतिक परीक्षा कराकर दिगम्बर आम्नायी सेठ घनश्यामदासजीने ही किया था।

स्थानीय श्वेतांबर समाजने सांप्रदायिक कट्टरतावश इन दिगंबरी ओसवालोंके साथ कन्या व्यवहार कुछ दिनोंसे रोक रक्खा है। इस कारण कभी२ इनको विकट अवसर आजाता है, किंतु कोई न कोई मार्ग भी निकल आता है। इसके सिवाय इन्होंने जातिबंधन भी तोड़ दिया है जो कि इनके लिये परम आवश्यक था। इस कारण इतर दि० जैन शुद्ध जातियोंके साथ कन्याका लेन देन प्रारम्भ कर दिया है।

यहांके प्रायः सभी लोग व्यवसायी हैं। रंग, तेल, सिगरेटकी अच्छी२ एजन्सी किन्हींके पास

हैं और कोई स्टेशनरी, हौजिरी तथा विसांतखाने, लेन, देन आदिका व्यापार करते हैं। इस प्रकार दि० जैन ओसवालोंकी संक्षिप्त रूपसे सामाजिक व्यवस्था है।

दि० जैन ओसवालोंका यह परिचय हमारे उत्साही कर्मण्य पुरुषोंको आदर्श मार्ग दिखलाता है। जो भाई समाज उन्नतिके लिये अनेक अनुचित उपायोंका अवलंबन करते हैं, उनको वे अवैध उपाय छोड़कर दिगंबरी ओसवालोंके समान अजैन लोगोंके तथा स्थानकवासी श्वेतांबरी भाइयोंके समक्ष प्रेमभावमें धार्मिक सत्यता रखकर उनमें निरन्तर प्रचार करके उनको अपने मार्गका अनुयायी बनाना चाहिये।

हमारी दि० जैन खंडेलवाल महासभाको सचेत होकर किसी सफल नीतिसे उन खंडेलवालोंके भीतर बहुत अच्छा लगातार प्रचार करना चाहिये जो कि जालंधरमें तथा उसके आसपास श्वेतांबर होगये हैं। उनकी संख्या लगभग साढेतीनसौ है। ६०–७० घर हैं। अच्छे सरल, भद्र पुरुष हैं। अनेक अच्छे शिक्षित व्यक्ति भी हैं। यदि लहान बांटनेवाले अपनी लहानका व्यर्थव्यय इस प्रचारके कार्यमें व्यय करदें तो अनुपम लाभ होसकता है। खण्डेलवाल हितेच्छुको अन्य झगड़े छोड़कर इस आंदोलनका कार्य हाथमें लेना चाहिये।

अग्रवाल भाइयोंको तो अपने अग्रवाल सज्जनोंको सच्चा धार्मिक बोध देनेके लिये बहुत कार्य करना है। उनके तो सैकड़ों हजारों घर उनके प्रमाद, फूट तथा प्रचार न होनेसे ढूंढिया तथा अजैन होगये हैं। जो महानुभाव देखना चाहें वे रोहतक, मेरठ, हिसार, कैथल, मथुरा आदि स्थानोंमें तथा उनके आसपास जाकर अवलोकन करें।

दुःख इस बातका है कि बाबू, पंडित, सुधारक, रूढ़िपालक आदि जुदे २ गुट्ट बनाकर हम आपसमें लड़ते हैं, छोटे मुंह बड़ी बातें कहकर सम्भ्रान्त, कर्मठ महानुभावोंका अपमान करते हैं, अथवा कुर्सीपर बैठनेके लिये आकाश पाताल एक कर देते हैं किन्तु सच्चे प्रचार और सुधारको ओर हमारी दृष्टि भी नहीं जाती। बातें अधिक बनाते हैं करते कुछ नहीं। सुधारके लिये प्रस्ताव दर्जनों पास होंगे किन्तु अमल एकपर भी नहीं होगा, विशेषकर उन लोगोंमें, जो कि सभाओंके सभापति, मंत्री आदि बनकर सबसे आगे बैठते हैं। हमारे पत्र संपादक महाशय आग लगाकर तमाशा देखते हैं।

इस कारण पहले स्वयं सुधरिये पीछे दूसरेको सुधारिये। थोड़ा बोलिये अधिक काम कीजिये। जो कहिये उसको करके दिखाइये। उपदेश उतना दीजिये जितना कि आपका निजी आचरण है। संस्थाओंके कार्यकर्ता धार्मिक प्रचार तथा समाजसेवाके लिये बनिये। कुर्सियां तोड़कर कोई हुकूमत करनेवालोंकी आवश्यक्ता नहीं। आपसे यदि इतना नहीं हो सकता तो स्थान छोड़ दीजिये जिससे वहां कोई सुयोग्य व्यक्ति आकर समाजसेवा करे। जिस समाजमें आपने जन्म लिया है तथा आप जिस धर्मके अनुयायी हैं वह सच्चे, वीर, सेवकोंका समाज और धर्म है। इनका आपके शिरपर बहुत भारी ऋण है। उसको उतारे बिना आपका पुरुषार्थ व्यर्थ है।

जैन समाजकी उन्नतिके उपाय।

[लेखक:—श्री० पं० गुणभद्र जैन, राजचन्द्र आश्रम, अगास।]

वर्तमानमें हमारी दशा बड़ी ही शोचनीय है। दिनप्रतिदिन यहां हम लोग ह्रासके सन्मुख आंखे मींचे हुये दौड लगा रहे हैं। आज हमें अपनी अवस्थाका ज्ञान नहीं है, क्या करना चाहिये? किसमे हमारी उन्नति होगी? कौन बात हमारे लिये हितकर है? इसके लिये प्रायः परका मुख ताका करते हैं। स्वावलम्बनकी गंध भी नहीं है, अनेक कुरीतियोंका बडी तेजीसे समावेश होरहा है, जिस सर्पको निकालनेके लिये अनेक प्रकारके प्रयत्न किये जाते हैं वही दौड २ कर तिमिराच्छन्न कोनेमें छिपा रहता है, समय पडनेपर अपना रंग दिखाता है, कोई न कोई आपत्ति हमारे सिरपर हमेशा खड़ी रहती है। कभी मुनि विहार रोका जाता है तो कभी रथयात्राओंमें विघ्न आते हैं। सच पूछो तो आज जैन समाजको अपने भविष्यका कुछ भी विचार नहीं है। अगाढ़ निद्रामें सुखसे सोई हुई है। समाजकी दशा प्रायः छिन्नभिन्नसी होरही है इसकी तरफ शायद ही किसीका लक्ष्य हो। समाजमें उन्नतिके सभी साधन होते हुये भी आज उनका यथेष्ट उपयोग नहीं किया जाता।

हम अपने ही हाथोंसे अपने पगमें कुठाराघात कररहे हैं! समाज बहुत पिछडा हुआ है, उसको आगे लानेके लिये अनेक सभायें हैं, विद्यालय हैं, पत्र हैं, पंचायत हैं, परन्तु इनमेंसे पिछडी हुई समाजको कोई भी आजतक आगे नहीं लासका। इसका कारण विचारा जाय तो समाजमें मतभेदोंकी कमी नहीं है, स्वार्थ पुष्टि और अनिष्ट प्रचारकी भी कभी नहीं है! जरा जरासी बातोंपर कागज काले करना, आजकलके दुराग्रही लेखकों और संपादकोंका एक साधारण कार्य होगया है, जिस मतभेदकी सहज हीमें शांति होसकती है उन्हींकी पत्रोंमें खण्डन मण्डन रूप लेखमाला निकाल करके सामान्य जनताको भीअपने पक्षमें खींचा जाता है। जिसका परिणाम यह आता है कि एक सूक्ष्मसी बातका विशालरूप लोगोंकी नजरमें दिखने लगता है, ठौर ठौर मतभेदका अंकुर फूट निकलता है।

समाज समुदायका नाम है, उसमें मतभेद होना स्वाभाविक है। परन्तु मतभेद होते हुये भी हम लोग जो कार्य करना चाहें तो अवश्य कर सकते हैं। समाजोन्नति प्रत्येक मनुष्यपर आधार रखती है, किन्हीं खास इने गिने व्यक्तियों पर आधार नहीं है।

समाजमें बहुत दिनोंका कूड़ाकचरा इकट्ठा हो रहा है, पहले उसे साफ करना चाहिये। तभी हम अपने असली स्वरूपके दर्शन कर सकेंगे नहीं तो अँधकारमें गोलीवार है।

आज हम सबसे पीछे हैं, आगे आनेके लिये कौनसे उपाय ठीक हैं, यह विचारना अत्यन्त आवश्यक है!

समाजको पहले एकताके सूत्रमें बंध जाना चाहिये तभी उसकी वास्तविक उन्नति होसकती है। हमारा संगठन प्रायः बिल्कुल छिन्न भिन्न है। श्री वीर भगवानके उपासक होकर भी हमने उनका एक भी गुण ग्रहण नहीं किया है। न तो हममें सहिष्णुता है, न निष्कषायता। और न अपूर्व मैत्रीभाव भी है। दिन प्रतिदिन आपसमें लड़कर हम लोग अपनी शक्तियोंका दुरुपयोग कर रहे हैं। जितनी महनत वाग्युद्धमें करते हैं उतनी महनत जो सुन्दर कार्य करनेमें की जावे तो अवश्य ही समाजका भविष्य सुधर सकता है। वात्सल्य अँगका पूर्ण पालन होना चाहिये. उसके बदलेमें हम कुछ दूसरा ही व्यापार लेके बैठे हैं। अपने भाइयोंको दूर करनेमें हम अपनी तथा समाजकी भलाई मान बैठे हैं परन्तु इन बातोंसे स्वप्नमें भी कल्याणकी आशा नहीं है।

हमारा क्षेत्र विशाल और विस्तीर्ण है। वर्तमान जैन समाजकी जीवन डोर पण्डितों और सुधारकोंके हाथमें है। दोनों ही पक्ष उन्नतिके लिये भरसक प्रयत्न करतेहुये सफल नहीं हो पाते कारणकि जहां जहां पण्डितोंने कोई बात जनताके सामने रखी कि सुधारक लोग उसका विरोध करने लगते हैं, उसी तरह जो कोई सुधारक समाज हित कामनासे कोई काम प्रारम्भ करता है कि पण्डित लोग उसका घोर विरोध करके बने बनाये घरको मिट्टीमें मिला देते हैं।

असफल होनेका मुख्य कारण विरोध भाव है। जबतक ये भाव हममें अपना घर किये हुये हैं तबतक लाख प्रयत्न भी सफल नहीं हो सकते। पहले हमें इन भावोंका मुख काला करना पड़ेगा, फिर आगे बढ़ना होगा। वर्तमानका समाज इन व्यर्थके विरोधोंमे घबड़ा गया है। उसे ऐसे विरोधोंको सुननेकी इच्छा नहीं है क्योंकि ये विरोध उन्नतिके बाधक हुआ करते हैं। दोनों पक्ष उन्नतिके इच्छुक होते हुये भी दोनोंमें जमीन आसमानका अन्तर है।

समाज-हित कामनाकी हृदयमें दृढ़ भावना होना चाहिये। तब मध्यस्थ दृष्टिसे विचार करें तो दोनों पक्ष समझ सकते हैं। सामुदायिक शक्ति कोई अपूर्व होती है। अनेक रजकण संचित होकर पर्वत बन जाते हैं। समाज हितेच्छुको समाजके हितको अपना हित और समाजकी हानिको अपनी हानि समझना चाहिये। दोनों पक्षोंके पास उन्नतिकी मशीनें हैं। उनकी भी ज़रा कथा सुन लीजिये। वे मशीनें हैं सभा और समाचारपत्र। आज इन सभाओंमें समाजका हजारों रुपया खर्च होता है। परन्तु उसका परिणाम विशाल रूपमें सामने नहीं दिखाई देता। प्रतिवर्ष इनके अधिवेशन हुआ करते हैं और कभी तो नैमित्तिक अधिवेशन होजाया करते हैं! सभापति किसी लक्ष्मीपुत्रको बना दिया जाता है, जो बिचारे भाषणोंका अर्थ भी बराबर नहीं समझ सकते। उनसे उन्नतिकी तो आशा ही क्या है? बिचारे ग्रामोफोनके समान किसीका लिखा व्याख्यान पढ़ दिया करते हैं। उपस्थित जनता इससे अवश्य खुश होती है परन्तु इसके रहस्यको नहीं जानती। सभापतिका उद्देश्य यह होता है कि हम दोनों ओरसे अच्छे बने रहें

इसलिये दोनोंकी हांमें हां मिलाया करते हैं।

[नोट—लेखक महाशयको यह मालूम होना चाहिये कि भा० दि० जैन परिषदके सभापति हमेशा महा विद्वान, विवेकी एवं परिस्थितिके जानकार होते हैं।] संपादक।

इससे बिचारा सत्य चुपचाप पडा रहता है। प्रस्तावोंकी पुनरावृत्ति की जाती है। भाग्यसे ही कोई नया प्रस्ताव बनता होगा? बहुतसे प्रस्ताव ऐसे हैं जिनका जन्म सभाके ही साथ हुआ है परन्तु आज कितने ही वर्ष व्यतीत होगये, कोई सुन्दर काम इन प्रस्तावोंसे नहीं हुआ है। सभाओंने बाल विवाह, वृद्ध विवाह और अनमेल विवाह रोकनेके खूब ही प्रस्ताव किये परन्तु इनका कुछ भी असर जनतापर न हुआ। समय पड़नेपर प्रस्तावक स्वयं अपने प्रस्तावको कार्यरूपमें नहीं लाते, अन्तमें सरकारके कानूनसे ये विवाह मुर्दासे होगये हैं। जब कभी संचालकसे पूछा जाता है कि आपकी सभा क्या कार्य कर रही है? तो वे कहते हैं कि "रिपोर्ट पढ़िये, आपको सब मालूम होजायगा।" कभी२ बिचारे अपनी लाचारी दिखाया करते हैं, क्या करें? अमुक गांवमें सुधारकोंका जोर है, वे हमारी बात नहीं मानते लोगोंका धर्म तरफ लक्ष्य नहीं है, इत्यादि। ये सब बहानाबाजी है। कार्य करने वालेको न तो सुधारक ही रोक सकते हैं और न पण्डित। जो कार्य सर्वानुमतिसे किया जायगा उसमें अवश्य ही सफलता मिलेगी। जहां केवल अपने पक्षकी पुष्टिका लक्ष्य होगा वहां सिद्धि प्राप्त होना कठिन है।

जमाना कोरी बातें करनेका नहीं है कुछ ठोस काम करना चाहिये। ऐसी बातें करते करते तो वर्षों व्यतीत होगये। सभाओंने अपने प्रचारके लिये अच्छा व्यापार खोल रखा है। जहां तहां बिचारे प्रचारकजीको भेज दिया जाता है, पेटके लिये उन्हें विवश होजाना पडता है। समाजको भाडेके उपदेशकोंकी आवश्यक्ता नहीं है। जितना वे उपदेश देते हैं उससे भी ज्यादा जनता जानती है। उनके उपदेश भी नीरस और निःसार होते हैं। समाजके उपदेशक एक बातकी ही सब जगह पुष्टि किया करते हैं। जहां जांयगे कहीं स्वाध्यायका नियम लिवायेंगे या रात्रि भोजन त्याग करायेंगे। परन्तु स्वयं चाहे रात्रि-भोजन करते हों। बेगारी उपदेशकोंसे समाजका क्या भला होगा? उपदेशकी करनेके लिये पहले मनुष्यको समाज शास्त्रका गूढ़ अध्ययन करना चाहिये। अथवा जिस ग्राममें उपदेशके लिये जाते हैं उस ग्रामकी सम्पूर्ण अवस्था जानना आवश्यक होगा। तभी समाजका सच्चा हित होसकेगा।

समाजोन्नतिमें शिक्षण भी एक मुख्य कारण है। बिना जाने उन्नति क्या? शिक्षणको दो भागोंमें बांटा जासकता है। बालशिक्षण और कन्या शिक्षण। बालकोंकी शिक्षाके लिये समाजमें बहुतसे विद्यालय और पाठशालायें हैं, जहां कि उनको उच्च दर्जेकी धार्मिक तथा संस्कृत शिक्षा दी जाती है। मैं इस शिक्षणका विरोधी नहीं हूं परन्तु इसमें सुधारकी बड़ी भारी आवश्यकता है। जिस समय इन विद्यालयोंका जन्म हुआ था उस समय उनका लक्ष्य संस्कृत तथा धर्मके प्रखर

विद्वानोंको उत्पन्न करनेका था। और कितनी ही संस्थायें अपने प्रयत्नमें सफल भी हुई हैं। कुछ वर्षोंसे विद्यालयोंमेंसे प्रतिवर्ष अनेकों छात्र विद्या प्राप्त करके बराबर निकल रहे हैं, समाज इतना विशाल नहीं है कि प्रत्येकको उच्च स्थान देसके। इस लिये बिचारोंको आजीविकाकी तंगी रहती है इसीमें अपने विचारोंका भी सदुपयोग नहीं कर पाते। मेरा अनुभव है कि अध्ययनके समय उतनी चिन्ता नहीं रहती जितनी कि विद्यालय छोड़नेके बाद। आज हमारे छात्रोंका भी लक्ष्य किसी विषयका पूर्ण विद्वान बननेका नहीं होता है किन्तु परीक्षाओंको पास करनेका होता है इससे असली विद्वत्ताका प्रायः अभावसा रहता है, परीक्षा पास करलेना और विद्वत्तामें अन्तर है। कोरी संस्कृत शिक्षापर अंग्रेजी शिक्षासे काम न चलेगा। दोनों शिक्षाओंके साथ२ कुछ औद्योगिक धंधा भी अवश्य सीखना चाहिये। समाजके कितने ही विद्वान इसके विरुद्ध हैं परन्तु इसका अनुभव उनको तब होसकता है जब कि उन्हें पैसोंके वास्ते तंग होना पड़े। आनंदसे वेतन आता हो। इसलिये इसका निषेध करना स्वाभाविक है।

समाजको अब इस बातकी प्रतीति होने लगी है कि वर्तमानमें शिक्षणका कोई जुदा ही ढंग होना चाहिये। वर्णी-त्रयोंने जैन-कॉलेजकी चर्चा भी बड़े जोरोंसे छेड़ रखी है, और समाजका अधिकांश भाग इसमें सहमत है। यदि यह कार्य होगया तो समाजका अपूर्व भाग्य समझना चाहिये। यह सोनेका समय नहीं है। भारतवर्षमें सभी समाजोंके कॉलेज मौजूद हैं, हमारी ऐसी कोई विशाल संस्था नहीं है जहां कि ५०० छात्र सुखसे अध्ययन कर सकें।

अन्य समाजोंकी तरह जैनसमाज भी सदासे स्त्रियोंकी उपेक्षा करती आई है, उसका परिणाम हम लोग प्रत्यक्ष भोग रहे हैं, हमारा लक्ष्य उन्हें आदर्श गृहिणी बनानेका नहीं होता। किंतु पराया धन समझकर नफरत की जाती है।

शादी विवाहमें मा बाप कितना ही द्रव्य खर्च करडालते हैं लेकिन उनके शिक्षणमें पाई भी खर्च नहीं करते। आखिर कन्यायोंकी शादी तो करना ही पड़ती है शिक्षणमें जरा और खर्च पडेगा। एक पंगत कम करदी जावे। कितनोंका कहना है कि समाजमें कन्या पाठशालायें श्राविकाश्रम है फिर भी शिक्षणका रोना क्यों रोया जाता है। कन्याशालाओंका शिक्षण देखकरके, बड़ा भारी आश्चर्य होता है, वहांकी उच्चमें उच्च पढ़ाई तत्वार्थसूत्रकी है यदि इसके आगे कोई कन्या अभ्यास करना चाहती है तो अवश्य किसी श्राविकाश्रमका शरण लेना चाहिये, मा बाप कन्यायोंको दूर भेजनेमें अपमान समझते हैं, तत्वार्थसूत्र पढ़ाके कन्याको मां बाप पूर्ण पण्डिता मान बैठते हैं।

कन्याशालायोंमें कन्याओंकी कोमल बुद्धि बराबर नहीं खिल पाती, एक तो उन्हें घरकी झंझटोंके मारे समय भी थोड़ा मिलता है। वहां जाके पाठ सुना दिया जैसा कि पुस्तकमें लिखा है। जिसकी सारी बुद्धि घरके कामोंमें रहती हो वह एक घंटेमें क्या करेगा क्योंकि चित्त तो घरके कामोंमें रखा रहता है।

श्री० विद्यावारिधि जैनदर्शनदिवाकर—
पंडित चम्पतरायजी जैन बैरिस्टर एट-लॉ।

(आप चिकागो–अमेरिकाकी सर्व धर्म परिषदमें जैनोंकी ओरसे अनेक व्याख्यान देकर व लंडन और अमेरिकामें जैनधर्मका प्रचार करके अभी ही भारत लौट रहे हैं।)

Jain Vijaya Press, Surat.
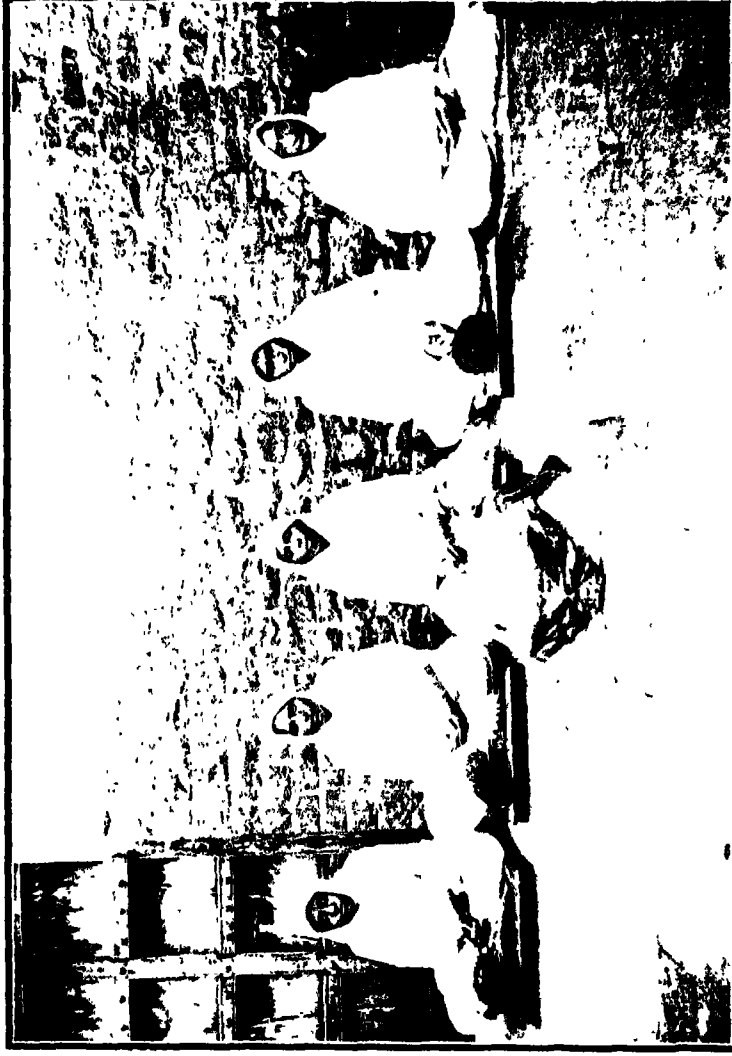
सोलापुरके चातुर्मासमें ५ क्षुल्लिकायें।

(१) क्षुल्लिका शांतिमतीजी, (२) क्षु० ज्ञानमतीजी, (३) क्षु० विमलमतीजी, (४) क्षु० अजितमतीजी, (५) धर्मचंद्रिका ब्र० कंकूबाईजी।

Jain Vijaya Press, Surat.

सभाओंकी छोटी बहिन इन पंचायतोंको समझना चाहिये। इन्होंने कुछ अपना जुदा ही मार्ग पकड़ रखा है। इसका कारण है कि पंचायतोंकी सारी लगाम बड़े बुढ्ढोंके हाथमें या श्रीमानोंके हाथमें होती है, जिन्हें दूसरोंकी कठिनाइयोंका जरा भी अनुभव नहीं होता। वे अपने बाप-दादाओंके कायदाओंमें फेरफार करना महान पाप समझते हैं, परन्तु उन्हें समझना चाहिये कि अब जमाना दूसरा हैं। पुरानी नीतियोंसे काम नहीं चलेगा। पंचायती दंड विधान इतने कठोर हैं कि साधारण आदमीको तो जरासे अपराध पर मृतकसा होजाना पड़ता है। कभी २ पुरुषोंको तो अपराधसे वरी भी किया जाता है परन्तु स्त्री समाजकी बड़ी ही दुर्दशा होती है।

वर्तमानकी पंचायतमें निष्पक्षपातता कहां है? न्याय तो मर ही चुका है सिर्फ वहां धांधल बाजी सजीवन है। न्यायप्रिय मनुष्यको तो इनमें जाना भी पसन्द न पड़ेगा। ये लोग चिल्लानेमें तो कूजड़ियोंको भी मात कर देते हैं। रातके दो दो बजेतक पंचायत करेंगे, अन्तमें परिणाम कुछ भी नहीं आता। दोषी निर्दोषीका भी विचार नहीं किया जाता। जहांपर इसका विचार किया जाता है वहांपर छोटेसे अपराधमें बड़ा दंड देदिया जाता है।

पंचायतोंको अब अपने नियम बनाने चाहिये। वे ऐसे हों कि सर्व साधारण सहूलियतसे उनका पालन कर सकें। और सर्वानुमतिसे पास होना चाहिये। अमुक कार्य समाजसे विरुद्ध है और अमुक समाजके विरुद्ध नहीं है। इसका निर्णय होना वर्तमानमें अशक्य है। मानिये कि जो मध्य प्रांतमें दोष माना जाता है, वही अन्य प्रान्तोंमें दोष नहीं माना जाता। तो फिर अपराधका निर्णय कैसे हो?

पंचायतोंको अब निष्पक्ष बन कर न्याय करना होगा तभी वे समाजोन्नतिमें सहायक हो सकेंगी। समाजके सभी अंग शिथिल पडे हुये हैं। उन्हें सजीवन करनेकी अत्यन्त आवश्ययता है। और तभी असली उन्नति हो सकेगी।

श्राविकाश्रममें कन्याको भेजते हुये माबाप अवश्य संकोच करते हैं, संकोचके कारणकी पूर्ण शोध करके कि कहांतक यह कारण सत्य हैं, उन्हें जरूर अपनी सन्तानोंको आश्रमोंमें भेजना चाहिये। आश्रमोंमें प्रवेश होनेके लिये आज अखबारोंमें छपाया जाता है, परन्तु कोई भी नहीं आता। साधनोंके होते हुवे भी जो हम साधनोंका उपयोग न करें तो यह हमारी कायरता है, समाजमें जवान विधवाओंकी कमी नहीं है। घरके अन्दर रह कर चाहे सास ससुरकी गालियाँ सुना करेंगी, पढनेके नामसे उनके रोम २ दुखते हैं। कभी कभी तो किसीकी पढ़नेकी इच्छा होते हुवेभी सास-ससुरकी मर्जी नहीं होती। सारी जिन्दगी गुलामीमें सडना पडता है। अज्ञान सदैव दुखरूप है। ऐसी रूढियोंके भक्त हम लोग कबतक बने रहेंगे? समाजकी स्त्रीसमाजको भी अब जागृत होजाना चाहिये। पर्देमें रहनेसे काम नहीं चलेगा, पर्देका जमाना गया, यह उन्नतिका जमाना है। सामाजिक सभी कार्योंमें सुधारकी बडी आवश्यक्ता है।

जैन समाजके युवक संघ और उनका कर्तव्य।

[लेखकः—पं० उग्रसेन जैन, एम० ए०, एल एल० बी०-रोहतक ।]

प्यारे पाठको! किसी जाति तथा किसी देशकी उन्नति उस जाति तथा देशके नवयुवकों पर ही निर्भर हुवा करती है। आधुनिक समयमें तो यह हम सबको मालूम ही है कि जिस किसी देशने भी उन्नति की है, अपने नवयुवकोंके द्वारा ही की है। महाराजा चन्द्रगुप्तके सोल्ह स्वप्नोंमेंसे एक स्वप्न यह था कि एक बडे भारी रथको छोटे २ बछड़े खेंच रहे हैं। इस स्वप्नका फल यही बताया गया है कि इस कलिकालमें नवयुवक ही सत्य धर्मका प्रचार करनेवाले होंगे।

आज हम देखते हैं कि हमारे नवयुवकोंमें उत्साह नहीं। वे धन्धेके लिये मारे २ फिरते हैं। चाहे वे केवल संस्कृत विद्याके पाठी हों, चाहे स्कूल और कालिजमें पढे हुवे अंग्रेजी जाननेवाले हों। दोनोंके रास्तोंमें बडी कठिनाइयां हैं। दोनों ही में संगठन नहीं, वास्तविक जातिप्रेम नहीं, धर्मभाव नहीं, दोनोंके सामने रोटीका जटिल प्रश्न उपस्थित है। संस्कृत पढे हुवे विद्वान सेठ साहूकारों, पाठशालाओं, विद्यालयोंके दरवाजे नौकरियोंके लिये खटखटाते फिरते हैं, तो अंग्रेजी पढे सर्कारी नौकरियोंके लिये, स्थान२ पर ठोकरें खाते फिरते हैं। नौकरीकी खोजमें जिस प्रकार आज हमारे युवकोंको अपमानित होना पडता है और जिस-प्रकार हानि उठानी पडती है, उसका उल्लेख करते हुए हृदयको दुख होता है। यह कोई नई बात नहीं, नितप्रति ही ऐसी घटनायें सुनने तथा देखनेमें आती हैं, कारण यह है कि हमारी समाजकी आधुनिक शिक्षाप्रणाली दूषित है।

किसी भाषाका केवल अक्षरज्ञान प्राप्तकर लेनेसे ही शिक्षाप्राप्ति नहीं कही जा सकती। वास्तविक शिक्षा वह है कि जो हमें हमारी सभ्यताकी ओर अग्रसर करे और हमारी अपनी संस्कृतिके बनाये रखनेमें सहकारी हो, जो हमारे हृदयोंमें स्वपर विवेक पैदा करे। शिक्षाका केवल यही उद्देश नहीं कि हम उसके द्वारा द्रव्य कमानेकी मशीन बन जावें। शिक्षाका मूल उद्देश्य है आत्मविकाश। इसलिये सबसे प्रथम तो हमारे नवयुवकोंका कर्तव्य है कि वह अपनी प्रचलित शिक्षाप्रणालीका सुधार करें। लाभालाभका विचारकर अपनी सभी शिक्षा-संस्थाओंमें शिक्षाकी ऐसी व्यवस्था करें कि वहां शिक्षा पानेवाले छात्र धार्मिक शिक्षाके साथ २ लौकिक शिक्षा भी प्राप्त कर सकें। और वहांसे वे निर्भीक, स्वतंत्र विचारवाले दिग्गज विद्वान, योग्य नागरिक तथा पूर्ण व्यवसाई बनकर निकलें। हमारी जाति एक व्यापार-प्रधान जाति है। इसलिये हमारे नवयुवक संघके लिये आवश्यक है कि वह बेकारीके प्रश्नको हल करनेके लिये नवयुवकोंको गृहशिल्पके लिये उत्साहित करें। उनको

नाना प्रकारके उद्योग धंधे सिखावें। यदि बेकारीका प्रश्न हल होजाता है तो नवयुवकोंके चित्तको शान्ति मिलती है और वह अधिक उपयोग परोपकारके कार्योंकी ओर दे सकते हैं।

हमारे नवयुवकोंको चाहिये कि वे अपने जीवनको सरल और अपने विचारोंको उन्नत बनावें। सादे स्वदेशी वस्त्र पहनें। और अपना स्वास्थ्य ठीक रखनेके लिये नितप्रति पर्याप्त व्यायाम किया करें। नवयुवकोंको चाहिये कि वह युरूपियन फैशनका अनुकरण न करें। परन्तु नियमित रूपमें अपने हाथसे काम करनेकी आदत डालने, खूब परिश्रम करने और संकल्पमें दृढता लाने आदि बातोंमें उनका पूर्ण अनुकरण करें तो श्रेष्ठ है। हमारे नवयुवकोंका जीवन धार्मिक हो, वे धार्मिक तत्वों तथा क्रियाओंके रहस्यको समझें। धार्मिकता उनके जीवनके प्रत्येक कार्यसे टपके। ऐसा करनेपर ही वह स्वयम् धर्ममार्गपर दृढ रहते हुवे दूसरोंको भी धर्ममार्गपर लगा सकेंगे और धर्मकी रक्षा तथा प्रतिष्ठा कर सकेंगे।

नवयुवकोंको चाहिये कि जातिके विखरे हुवे शीराजेको संगठित करें। संगठन विना आज हमारी दुर्दशा होरही है। हमारी किसी जगह कोई पूछ नहीं। " संघे शक्तिः कलौ युगे " के अनुसार हमारे लिये आवश्यक है कि हम सब अपना व्यापारिक, सामाजिक, तथा राजनैतिक अभ्युत्थान करनेके लिये संगठित होजावें और जो २ रूढियां तथा रस्मोरिवाज जातिके लिये हानिकारक हैं उनको दूर करनेका प्रयत्न करें। यह ध्यान रहे कि हमारा सामाजिक संगठन हमारे राष्ट्रीय हितके लिये बाधक न हो। यदि राष्ट्रीय हितको कोई बाधा न पहुंचाते हुवे हम अपने समाजका उत्थान करते हैं, तो हमारी उन्नति राष्ट्रीय उन्नतिके लिये एक बडी सहायताका कारण होगी।

आज फजूलखर्चियोंने जैनियोंका नाकमें दम किया हुवा है। हजारों फजूल रस्में ऐसी हैं जिनको पूरा करनेके लिये हमें कोल्हूके बैलकी तरह पिलना पडता है। और अपना कठिन परिश्रमसे कमाया हुवा धन योंही व्यर्थ लुटाना पडता है। हमारे नवयुवक इन फजूलखर्चियोंको बंद करावें, साथमें ही दान प्रणालीको भी बदलें। जो रुपया फजूलखर्चियोंसे बचे उसको बच्चोंकी शिक्षा, बिधवाओं तथा अनाथोंके पालनपोषण तथा शिक्षणमें लगाया जावे। एक ऐसा फंड स्थापित किया जावे जिसमेंसे होनहार असमर्थ विद्यार्थियोंको छात्रवृत्तियां, दी जासकें। बे रोजगार भाइयोंको अपना कारोबार चलानेके लिये या कोई व्यवसाय धन्धा जारी करनेके लिये रुपया उधार दिया जावे। योग्य छात्रोंको शिल्पकला आदि सीखनेके लिये अन्य देशोंमें भेजा जावे।

समाजको अनमेल विवाह, वृद्ध विवाह, नुकता, कन्याविक्रय, पुत्र विक्रय आदि अनेक रोग सता रहे हैं। यह घुनकी तरह समाजकी जडोंको खा२ कर खोखला बना रहे हैं। कितनेही घराने इन बुरी रस्मोंके कारण तबाह हो रहे हैं। इस ओर समाजका ध्यान ही नहीं जाता। प्यारे नवयुवको! इन कुरीतियोंका निवारण करना तुम्हारे ही आधीन है। इन कुरीतियोंके हानिकारक

फलसे कौन अनभिज्ञ है? आज समाज इनके कारण पनपने नहीं पाता। वीर नवयुवकोंको चाहिये कि देश कालकी स्थितिपर विचार कर समाजका इनसे छुटकारा करावें।

समाजमें सेवा-संघकी बडी आवश्यकता है। नवयुवक ही इस कार्यके लिये अधिकतर योग्य होते हैं। Young-men Christion Association (Y. M. C. A) तथा Red-cross Society से हम पाठ सीख सकते हैं। दीन, दुःखी, रोगी, अपाहजोंकी सेवा करना सेवा-संघका काम होगा। भूखोंको रोटी देना, रोगियोंके पास औषधि पहुंचाना, उनकी टहल करना, असहाय निर्बल बालकों तथा विधवाओंका पालनपोषण करना, घायलोंकी मरहमपट्टी करना, दुःष्काल तथा बाढ-पीडित जीवोंकी सहायता करना, इत्यादिक कार्य सेवा-संघ द्वारा किये जा सकते हैं। अपने मेलों, पूजा प्रतिष्ठाओंका सुप्रबन्ध करना, ऐसे अवसरों पर यात्रियोंकी सहायता करना, यह सब श्रेष्ठ कार्य है। जो कि एक सेवासंघको करने चाहिये।

इस सेवासंघके कार्यकर्ता विशेषरूपसे जाति सेवा तथा धर्म-प्रचारके ऐसे ठोस और रचनात्मक कार्य करें जिनसे जातिका गौरव बढे। धर्मकी सच्ची प्रभावना हो और कार्यकर्ताओंका आत्म-कल्याण हो। आधुनिक समयमें किसी धर्मका महत्व केवल इस बातसे प्रगट नहीं होता कि उसके सिद्धान्त कैसे हैं। साधारण जनता तो उसके महत्वका अनुमान उसके अनुयाइयोंके जीवन, आचरण, बर्ताव आदिसे ही लगाती है। यदि हम ज्यादह जबानी ज़मारवर्च न करके अमली काम निःस्वार्थ भावसे करें तो हमारे अहिंसा धर्मका प्रभाव अधिक पड सक्ता है।

हमारे घरोंमें अज्ञानता और मिथ्यात्वका साम्राज्य छारहा है। न्याय अन्याय, भक्ष्याभक्ष्य, सम्यकूमिथ्यात्वका पता तक हमारी स्त्रियोंको नहीं। कितने ही घरानोंमें स्त्रियोंका कोई आदर-सत्कार नहीं, उनके साथ पशुओंका सा बर्ताव किया जाता है, उनके कोई अधिकार ही नहीं समझे जाते, उनको साधारणतया एक भोग-विलासकी मशीन समझा जाता है। यह एक महान अन्याय है। इस अन्यायको दूर करनेका एक उपाय यही है कि हमारे नवयुवक यह प्रण कर लेवें कि वे अपने कुटुम्बमें किसी स्त्रीको या किसी भी कन्याको अशिक्षिता न छोडेंगे, फुर्सतके समय स्वयं उनको शिक्षा देवेंगे, धर्म शिक्षा देकर मिथ्यात्वको तिलां-जलि दिखावेंगे, साफ और सुथरा रहना सिखावेंगे, बच्चोंका पालनपोषण गृह-प्रबन्ध, स्वास्थ्य विधिका यथोचित ज्ञान उनको प्राप्त करावेंगे। अपने आपको शिक्षित कहलानेवाले नवयुवक यह काम बडी आसानीमें कर सकते हैं। ऐसा करनेसे वह जैन जातिके उत्थानके ही नहीं बल्कि समस्त भारतवर्षके उत्थानका कारण होते हैं। भारतका उत्थान हमारी स्त्री समाजके उत्थानपर ही अधिकतर निर्भर है।

जो नवयुवक गृहस्थीसे उदासीन हों, वे योग्य धुरंधर विद्वान बन अखंड ब्रह्मचर्यका पालन करें। धर्मके प्रचारक बनें, सच्ची Missionary Spirit में प्रचार करें, भूमंडलके एक सिरेसे दूसरे सिरे तक विहार करके संयमका पालन करते हुवे अपनी

आत्माका भी कल्याण करें, दूसरोंका उपकार कर अपने वैय्यावृत्य धर्मका पालन कर अपने सद्-उपदेशद्वारा अहिंसा धर्मका प्रचार करें, धर्मकी वास्तविक प्रभावना करें, अपने आत्मकी सच्ची सेवा करें। सेवाका विचित्र महात्म्य है। एक सम्यक्‌दृष्टि सेवक सेवाके प्रभावसे विशेष पुण्यका बन्ध कर देवाधिदेव बन जाता है।

प्यारे मित्रो! यह कुछ विचार आपके समक्ष्य रखे हैं। यदि यह उपयोगी जान पड़ें, तो इनको अमली जामा पहनानेकी कुछ कोशिश करो। ऐसे कार्योंमें कठिनाइयां अवश्य आया करती हैं। कभी २ निराशा काममें मुख मोड़नेके लिये बाधित करती है। परन्तु जो सेवक हैं वे निराशाको कभी पास नहीं फटकने देते हैं। अपने उद्देश्यकी पवित्रता और अपने आत्मबलमें दृढ़ विश्वास रखते हुवे सिंहवृत्तिसे आगे बढते हुवे चले जाते हैं। विजयश्री उन्हीके हाथ आती है।

सेवकोंको एक महान आत्माके नीचे लिखे वाक्य अपने हृदयांकित कर लेने चाहिये और यथा अवसर उनका स्मरण करना चाहिये:—

"आदर मिले या न मिले,
हमको कभी परवाह नहीं।
फल भी मिले या ना मिले,
उसकी कभी इच्छा नहीं।
कर्तव्य करनेके लिये,
यह जन्म धारण है किया।
ऋणमुक्त होनेके लिये,
कर्तव्य पथ स्वीकृत किया॥"

जैन समाज और जैन कालेज।

[लेखकः—श्री. नाथूराम सिंघई—ललितपुर।]

इस उन्नतिशील संसारमें यदि जैन समाज अपनेको सजीव, सभ्य तथा सुशिक्षित बननेका दावा रखती है तो इसको अपने पैरों आप खड़े होजाना चाहिए और अन्य समाजोंकी भांति उच्च शिक्षणके लिए अपने निजका एक 'आदर्श जैन कालेज' खोल देना चाहिए। बिना कालेज खोले इसकी गिन्ती सभ्य समाजोंमें नहीं आसकती है। भारतवर्षकी पारसी और आर्यसमाजको ले लीजिए कि जिनकी संख्या जैन समाजसे पौनी भी नहीं; परन्तु वे भारतवर्षकी सब जातियोंसे अधिक सभ्य तथा शिक्षित हैं। इसका मूल कारण उनके कालेज ही है जिनमें उन्हें धार्मिक शिक्षणके साथ साथ उच्च लौकिक शिक्षण दिया जाता है। यदि उनमें भी निजके कालेज न हो तो वे आज इस प्रकार शिक्षित न दिखाई देते।

इसी शिक्षाके बलसे आज पारसी समाज, भारत सरकारके उच्च पदोंपर आसीन हैं और उन्नतिशील समाजोंमेंसे सर्व प्रथम समाज है। हमारी जैन समाजको भी चाहिये कि यदि वह अपने निजके दो चार कालेज नहीं खोल सक्ती है तो एक आदर्श कालेज अवश्यमेव खोल देना चाहिये। कालेजकी स्थापनासे ही समाजका गौरव

है। अभी जैन समाज भारतवर्षकी नगण्य समाजोंमेंसे एक है। इसको अपने गौरवके हेतु एक कालेजकी स्थापना शीघ्रातिशीघ्र कर देना चाहिये। इसके अभावमें जैन समाजके नवयुवक अशिक्षित अथवा अर्द्धशिक्षित ही रह जाते हैं। इनका कहीं भी ठिकाना नहीं, जहां देखो वहींसे अपनासा मुँह लेकर लौटना पड़ता है।

यदि भाग्यवशात् कहींपर स्थान भी मिल गया तो फिर उस धर्मके संस्कारोंसे संस्कारित होना पड़ता है। बस, यही कारण है कि उच्च शिक्षित नवयुवक जैनधर्मके मर्मसे बिलकुल ही अनभिज्ञ रह जाते हैं और फिर उनको धर्मकी बातें अधिक प्रिय नहीं लगती हैं। यदि हमारी जैन समाज श्रीमान् बाबू चम्पतरायजी बैरिष्टर तथा श्रीमान् पंडित अजितप्रसादजी वकील लखनऊ सरीखे धुरन्धर जैन विद्वान् देखना चाहती है, जो जैन धर्मके तत्वोंको देश विदेशमें भली प्रकार निरूपण करते हुए जैन धर्मका प्रचार करें तो समाजका यह सर्व प्रथम कर्त्तव्य है कि इस समय धार्मिक कार्योंमें अधिक द्रव्य व्यय न करके जैन कालेजकी स्थापनामें सहायता पहुंचाए। बिना काफी सहायता दिए कालेजका खुलना बड़ा कठिन कार्य है। इससे समाजके धनीमानी श्रीमानोंको चाहिए कि जैन कालेजकी सहायताके लिए दिल खोलकर द्रव्य देवें ताकि वर्णीत्रयका खूब ही उत्साह बढ़े।

यह जैन समाजका बड़ा सौभाग्य है कि जिसको ऐसे कर्मठ वर्णीत्रय इस आदर्श कार्यके लिए बिना किसी प्रेरणा अथवा आग्रहके मिल गए हैं। अब समाजका कर्तव्य है कि उनका साथ देवे और उनके द्वारा कालेजकी स्थापना करा देवे। हमारी जैन समाजके कतिपय शिक्षित और श्रीमानोंने उनको इस कार्यके बंद कर देनेकी सलाह दी है; परंतु मेरी समझसे उनका यह कार्य किसी प्रकार भी श्रेयस्कर नहीं। हरएक कार्यका समय होता है और वह समय ही उस कार्यको कर लेता है। जैन कालेजके ऊपर एकबार ही नहीं अनेकोंबार लिखा जाचुका है। परन्तु इसके लिए किसीके जूं तक नहीं रेंगी। अब उसका समय आया है इससे हमारे पूज्य वर्णीत्रयका ध्यान कालेजकी स्थापनाकी ओर स्वतः ही गया है। अब तो समाजको चाहिए कि इस समय इसी उद्देश्यकी ओर लगजाएँ और उसकी पूर्ति करा दें। यदि इस कालेजके प्रश्नको यों ही छोड़ दिया तो मैं दावेके साथ कहे देता हूं कि आजसे कई वर्ष बाद भी इसकी स्थापना नहीं हो सकती हैं। अतएव वर्णीत्रयसे मेरा यही अंतिम निवेदन है कि आप लोग कर्मशील पुरुष हैं आपको अपने ध्येयसे किसी प्रकार भी विचलित नहीं होना चाहिए। चाहे सैंकड़ों क्या हजारों ही विघ्न-बाधाऐं आप लोगोंके मार्गमें रोडे अटकाऐं परन्तु आप लोगोंको अपनी प्रतिज्ञामें दृढ़ रहना चाहिए। फिर आपका कोई भी कुछ नहीं कर सकता। आप अपने कार्यमें सफल होंगे और जैन समाज और जैनधर्मके हेतु आप जैन कालेजकी स्थापना कर सुयश और पुण्य फलके भागी होंगे।

जैन समाजकी अवनतिके कारण।

(लेखक:-श्री० पं० रवीन्द्रनाथ जैन न्यायतीर्थ-रोहतक।

किसी कविका वचन है—

"यत्ने कृते यदि न सिद्ध्यति कोऽत्र दोषः" उपाय करते हुये यदि सफलता न मिले तो 'हताश होनेकी अपेक्षा' सोचना चाहिये कि हमारे उपायोंमें क्या कमी रहगई है? बस, त्रुटियोंको दूर करनेसे सफलता अवश्य मिलेगी। इस उक्तिके अनुसार ही जैन जातिमें उन्नतिके बाधक या अवनतिके कारण बताये जाते हैं।

भगवान ऋषभदेवके आप्त हुये पीछे दिया गया वस्तु स्वरूपका उपदेश जैन धर्म है। उसको माननेवाला जैनी है। और जैनियोंके समूहको जैन जाति कहते हैं। ऋषभदेवसे वीरप्रभुतक जैन समाज अनेकवार अवनत और उन्नत होती रही है। यहांतक कि विदेशी और उनमें भी मुसल्मानी जमानेके पूर्वतक इसके उन्नत होनेके कारण मिलते रहे। यही कारण है कि चन्द्रगुप्त, अशोक, संप्रति, खारवेल, कुमारपाल, कुम्भ, अमोघवर्ष आदि कितने ही क्षत्रिय राजा तथा लोहाचार्य, जिनसेन, अकलंक आदि जैन दीक्षा देनेवाले कितने ही पुण्य पुरुष हुये। पर समयने पल्टा खाया, विदेशी आक्रमणसे लोग तंग आगये, अपनी जीवन रक्षा करना दूभर होगई, तब वे उनसे दूर होते गये, और अपनी २ टोली बांध रीति रिवाजोंकी रक्षा करने लगे। अपनी पुरानी संस्कृति भूल गये। उन्हें अपने पड़ोसी भाईयोंका कुछ पता न रहा। उनपर भी ब्राह्मण जाति (जो कभी धर्मरक्षाके लिये बनाई गई थी, पर पश्चात् भगवानके कथनानुसार धर्म विराधक सिद्ध हुई) का असर पड़े बिना न रहा। वे प्रत्यक्षमें गुरू कहलाते हुये भी धर्मका नाश करने लगे। बहुतेरोंको उल्टा आचार व्यवहार बता धर्म विमुख कर दिया, और कितनों हीको जैन धर्म न छोड़नेके कारण मौतके घाट उतरवा दिया! (देखो भारत० इतिहास ला० लजपतरायजी कृत पृष्ट २८२ से २९०) तब हम सामना करनेको असमर्थ हो क्षत्रिय वृत्ति छोड़ वैश्य वृत्ति स्वीकार कर बैठे (अग्रवाल, परवार, कठनेरा आदि जिन जातियोंका इतिहास प्रकाशमें आया है उनमें अधिकांश क्षत्रिय थे)। बस, इस वृत्तिके घुसते ही हम अपनेको दीन हीन असमर्थ समझ बैठे और हममें मानसिक, शारीरिक, आर्थिक, संख्यापेक्षा, प्रभुत्व, बौद्धिक हृदयकी विस्तीर्णता आदि अनेक प्रकारकी अवनतियाँ प्रारम्भ होगई।

इन अवनतियोंके जड़ पकडनेका मुख्य कारण हमारा कोई मार्गदर्शक आचार्य या राजा वगैरह इस तरह योग्य न हुवे जिनका जीवन पूर्ण धर्ममय हो। जिससे आत्मिक बलकी वृद्धि हो और मानसिक एकाग्रता प्राप्त हो। फिर आत्मोन्नतिके उपरान्त बुद्धि और शारीरिक बल बढ़े चढ़े हों

क्योंकि जितनी बुद्धि अधिक होगी उतनी ही योग्यता मनुष्य पासकता है। जितना शारीरिक बल बढ़ा होगा उतना ही अधिक श्रम कर सकेगा, उतना ही अधिक (गृहस्थ) धनोपार्जन कर सकेगा और उसे उचित रीतिसे व्ययकर उन्नत बन सकेगा। यदि ऐसे मार्गदर्शक मिल जाते तो यह जाति फिर भी सम्हल जाती, पर दुर्भाग्य इसका!

कुछ लोग इस अवनितिको काल दोषके कारण कहते हैं पर काल दोष क्या जैनियोंके ही पल्ले पड़ा है? ईसाई आदि तो अपनी सर्व प्रकारकी उन्नति कर रहे हैं और जैन धर्म इस जातिसे हीन हो रहे हैं कि २०० वर्ष तक भी उसका अस्तित्व न रह सके।

आज जैन समाजकी दशा पर दृष्टि डालते हुये आंखोंके सामने अंधेरा छाजाता है। उसकी जनसंख्या और विद्वानोंकी गणना करते ही हृदय थर्रा जाता है।

जैन समाजमें क्षय रोग भी बड़ा भारी घुसा हुवा है। करोड़ोंसे तो लाखों रह गये और उनमें भी अनेकों पंथ हैं। हर दस सालमें एक लाखके करीब घट जाते हैं (यद्यपि इस दस सालमें कुछ वृद्धि अवश्य हुई है पर यह अन्य जातियोंकी अपेक्षा बहुत ही कम है) जिस जातिमें जानेका द्वार खुला हो और आनेका बंद हो उसका नाश न होगा तो और क्या होगा? उसका नाम मात्र इतिहासकारोंकी कृपासे इतिहासमें मिल जाय तो उनकी महिरबानी समझना चाहिये। अब हममें लोहाचार्य या जिनसेन नहीं हैं जो स्वयं शुद्ध हो हमें सत्यका उपदेश दें। अब भी यदि वैसे विद्वान व त्यागी प्रत्येक प्रान्तमें कमसे कम आधे दर्जन भी हों तो उन्नत होते देर न लगे। पर उनका स्थान तो भट्टारकों, त्यागी कहाने वालों या पंडितोंने लेरक्खा है। और उनको इतना अवसर ही नहीं कि वे सर्वत्र समाजकी दशाका अनुभव कर सुव्यवस्था कर सकें, प्रत्युत उनसे समाजका किन्हीं अंशोंमें अहित होरहा है, क्योंकि वे पराधीन अथवा परमुखापेक्षी मात्र रह गये हैं, अपने भावोंको निर्भीकता पूर्वक प्रगट नहीं कर सकते।

कुछ स्वाधीन वृत्तिवाले त्यागी पंडित यद्यपि होंगे भी पर उनने एकान्त स्थानको पकड़ रखा है।

निर्धनता व दरिद्रता भी हमारी अवनतिका कारण बनी हुई है। दरिद्रतासे लज्जा आती है, लज्जायुक्त अधिकारसे गिर जाता है, अधिकार गिरे हुयेका अपमान होता है, अपमानसे दुःख, दुःखसे शोक, शोकसे बुद्धि हीन होती है और निर्बुद्धिका नाश होजाता है। (देशदर्शन)

अतः दरिद्रता सारी आपत्तियोंकी जड़ है। इससे जनसंख्या नाश होती है।

लक्ष्मीकी चकाचौंधमें रहने वाले कुछ लोग इस जातिको धनिक कहते हैं, उनको छोटे२ ग्रामोंकी हालत देखनेको घरसे बाहर निकलनेका कष्ट उठाना चाहिये। वे ग्रामीण तमाम दिन परिश्रमसे भी पेट भरनेके लिये सेरभर आटा भी नहीं पाते। फिर संसारके अन्य पदार्थोंका तो कहना ही क्या? जैनी निर्धन इसका प्रत्यक्ष प्रमाण उनकी जनसंख्या ह्रास, दुर्बलता और उनके पीले मुख हैं। वास्तवमें जैनी धनी नहीं, किंतु वे कंजूसी करके लोक दिखावेकी बातोंमें विशेष

खर्च करते हैं, पुराने मंदिरोंकी संभाल न करके नये बनते हैं। आंखोंके अगाड़ी एक जैन गृहस्थ दरिद्रताके कारण भीषण दुख सह रहा हो उसपर दया नहीं पर वात्सल्य अंगका अर्घ जरूर चढा-वेंगे। बीमारकी सेवा दवामें उतना खर्च नहीं करेंगे, जितना मरनेपर नुक्तामें करेंगे। शिक्षामें उतना खर्च नहीं करेंगे जितना विवाहमें, वेश्या नृत्यमें करेंगे। सारांश यह है कि अपनी पोल ढकनेको दिखावा बहुत करते हैं।

वास्तवमें हम धनिक व्यापारी नहीं रहे हैं किन्तु दलाल मात्र रह गये हैं। और दलालीको ही व्यापार समझ रहे हैं। हमें चाहिये कि देश विदेशोंमें घूमकर अनुभव पा नये व्यापार चलावें जिससे हमारे नवयुवक मारे२ न फिरें।

हमारी समाजमें कुछ कारखाने हैं भी पर उनमें जैन रखनेका ख्याल नहीं है। उच्च शिक्षा भी अन्य देशोंके बराबर हममें नहीं है। पुरुषोंमें $\frac{५}{१००}$ और स्त्रियोंमें $\frac{२}{१००}$ औसतन पढी हैं और वे भी केवल चिट्ठी लिखने तक।

समाजमें कुछ विद्यालय व हाईस्कूल खुले भी हुये हैं पर उनसे यथेष्ट लाभ नहीं होता। वे सब भृत्यता ही सिखाते हैं। उनकी शिक्षाविधिमें घोर परिवर्तन आवश्यक है। हमारी समाजमें बालविवाह, वृद्धविवाह, अनमेलविवाह भी अवनतिके कारण हैं। इनसे विधवाओंकी वृद्धि होती है, उन बेचारी गरीब बालिकाओंको मां बाप भेड़ोंकी तरह बेच देते हैं, विषयांध बूढ़े खरीद लेते हैं। हृदयहीन चौधरी दलाली खाते हैं, पापी पण्डित फेरे फिराते और पंच तर माल खाते हैं। इस तरह ये कन्यायें वैधव्यकी यज्ञ-वेदीपर बलि चढ़ा दी जाती हैं।

इधर समाजके खर्च रीति-रिवाजोंमें बढ़े चढ़े हैं गरीबको कोई लड़की नहीं देता। वे नवयुवक मनको मार सकते नहीं, तब चिल्ला उठते हैं कि ये विधवायें अकारण क्यों बैठी है, इनका विवाह कर डालो, अगर हमारे खर्च घट जांय, खेद। और उच्च वर्णी जातियोंमें विवाह होने लगें, जैसे जीवंधरकुमारने वैश्यपनेकी जानकारीमें क्षत्रिय पुत्रियोंसे किये थे (अन्तर्जातीयविवाह तो १५० वर्षसे खण्डेलवाल, जैसवाल, पल्लीवाल जातिमें अब भी प्रचलित हैं) विजातीय या अन्तर्जातीयविवाहसे संख्या अवनति मिट सकती है व विधवाविवाहका नाम मिट सकता है।

हमारी समाजमें १००० पुरुषों पीछे ८५३ स्त्रियें हैं उनमें विधवायें ७९, (१—२९, वर्ष तककी) हैं। इस तरह १००० में ७७४ विवाहे हैं २२६ कुंवारे रह जाते हैं। इनका विवाह जैनियोंकी उपजातियों अथवा उच्चवर्णीय जातियोंमें आदिपुराण, धर्मसंग्रह श्रावकाचार आदि शास्त्रानुसार कर लेवें तो किसी हद तक संख्या बढ़ सकती है, इसके न होनेसे बड़ी अवनति होरही है।

कभी किसीपर दोष होजाय तो हमारी पंचायतोंका अनोखा दंड है। पुरुष थोड़े लड्डू खिला ऊंचा बन जाता है मानो उसका कर्मबंध हट गया, स्त्रियोंकी यातो भ्रूणहत्या करायी जाती है अथवा जाति पतित कर वेश्या या विधर्मी बनाई जाती

हैं। हमारा प्रायश्चित्त शास्त्रोंपर ध्यान नहीं जाता। पुरुषोंका दूसरा विवाह होना भी अवनतिका कारण है, एक तो स्त्रियां वैसे ही थोड़ी हैं दूसरे पुरुष कई विवाह कर लेते हैं। इससे रंडुवोंकी तादाद कम होती है। स्त्रियोंके मरनेकी अधिक। गोत्रोंकी मिलावट हमें अवनत किये हुवे हैं, इन गोत्रोंका मिलाना कोई संगत नहीं, अन्यथा सबके एक सरीखे मिलाये जाते। ऐसा नहीं कि अग्रवालोंका एक गोलालारोंके दो, परवारोंके ८ और पद्मावती पुरवालोंके संभवतः है ही नहीं। यह तो एक विडम्बना हो गई है। अतः यह भी हमें अवनत बनाये हुये हैं और समाज इनके झगड़ोंमें वर्षों चक्कर लगाकर भी योग्य सम्बन्ध नहीं ढूंढ पाती जिससे योग्य संतान नहीं होती। हमारी समाजने कुछ सभा व उपदेशकों समाचारपत्रों द्वारा उन्नतिका काम शुरू किया है पर इनसे यथेष्ट लाभ नहीं होरहा है कारण इनकी पहुँच गरीब ग्रामीणों तक तो है ही नहीं, वे तो अधिकांश वंचित रहते हैं और न इनमें आपसी द्वेषाग्नि फैलानेके सिवाय कुछ काम ही होता है। पैसा मांगना इनका मुख्य उद्देश्य है जिससे उपदेशकादि खर्च चल सके पर वे गरीब जिनको १६-२० रु०की साल मिलती हो १० आदमी खानेवाले हों कहांसे देवें। अतः इन उपायोंसे भिन्न उपाय सामाजिक उन्नतिके करना चाहिये या इनमें ही परिवर्तन करना चाहिये! मौजूदा रूपमें तो यह या इन सरीखे और उपाय अवतिके कारण ही दिख रहे हैं!

उन्नति--उपाय।

[रचयिताः---श्री० मुनद्दरीलाल जैन वि० जम्बूविद्यालय-सहारनपुर।]

रंगमञ्चपर जिनमत वीरो सजकर आना होगा।
जाते जाते नैपथ तक ये राग सुनाना होगा॥
जैनधर्मके वीरो बोलो,
उठकर अपनी आंखें खोलो।
वीर प्रभूकी मिल जय बोलो,
प्रेमसूत्रमें बंधकर हिंसाधर्म मिटाना होगा॥१॥

इन्द्रिय विषय महा दुखदाई,
बल वैभवकी करी सफाई।
हेतु यही निर्बलता छाई,
अपने बलसे जैनजातिको वीर बनाना होगा॥२॥

क्यों निकलंक याद नहीं आये,
धर्म हेतु जिन प्राण गंवाये।
यों अबतक जैनी लखि पाये,
गया काल सबके हृदयोंपर तुम्हें बिठाना होगा।

है अब क्या कर्तव्य तुम्हारा,
कैसे होवेगा निस्तारा।
है नैया नदिया मझधारा,
विद्याबलसे इसे चलाकर पार लगाना होगा॥४

संस्कृत है महान सुखदाई,
दुनियांके आगममें छाई।
है सब भाषाओंकी माई;
इसहीका अपने पुत्रोंको पाठ पढ़ाना होगा॥५॥

मेरा संसार।

ले०-बा. नानकचन्दजी जैन
बी. ए. एलएल. बी. एडवोकेट–रोहतक।

संसार भी एक अद्भुत वस्तु है। हर तरफ खुशी ही खुशी दिखाई पड़ती है। सूर्य निकलता है, चारों ओर उसका प्रकाश फैलजाता है। प्रातःकालकी ठंडी२ हवा चलने लगती हैं, चारो और पक्षी गाते हैं और चहचहाते है, हरेभरे वृक्ष झूमने लगजाते हैं, मनुष्य जीवनमें भी नई जिन्दगीका संचार होता है। ज्यों २ दिनका प्रकाश बढ़ता है, त्यों२ मनुष्य जीवन बढ़ता है। शाम होती है मंद मंद समीर बन उपवनमें चलती है, मनुष्यपर जादूका काम करती है। इसी आनन्दमें रात्रि होजाती है, आकाश तारोंसे भरजाता है, चांदकी किरणे शांति दायक होती हैं और रात्रिकी शोभाको दोबाला कर देती हैं।

मनुष्य इस दृश्यको देखकर प्रफुल्लित होता है। और समझता है कि समस्त प्रकृति मेरे लिये ही है। सूर्यका प्रकाश, चांदका उजयाला, तारोंकी ज्योति, रात्रिका अंधेरा, हवाका प्रवाह, जलवृष्टि, बन उपवनकी शोभा, पहाड़की ठंडक, सारांश जो कुछ भी दिखाई पड़ता है, मनुष्यको खूब ही आनन्ददायक है। मनुष्यने भी सब शक्तियोंपर विजय ही पाली है। बिजली इसके कहनेमें है, जब चाहता है रोशनी करता है, खाना पकवाता है, दूर २ खबरे भेजता है और वहांसे मंगवाता है, अद्भुतसे अद्भुत काम उससे लेता है। बिजली उसके इशारोंपर नाचती है। अग्नि जल और वायु इसकी आज्ञाकी इन्तेजारी करते है और मनुष्यकी सेवा करनेमें हर समय तत्पर है। परन्तु—

मनुष्य दीन है, वह छोटेसे छोटे जलबिन्दुसे भी यह नहीं करा सकता कि वह अपना Level (हद) छोड देवे। अग्निके एक कणको भी ठंडा करनेमें असमर्थ है, वायुके एक अणुको भी बदल नहीं सकता। मेंह बरसता है। वह रोक नहीं सकता है। भूचाल आता है तो विवश है, बाढ आती है तो बलवानसे बलवानको बहा लेजाती है। बिजलीकी छोटेसे छोटी मात्रा सब कुछ जला देती है। परंतु मनुष्य देखताका देखता रह जाता है।

ऐसी अवस्थामें क्या करूं क्या न करूं, मार्ग नहीं सूझता। क्या मेरा कर्तव्य यह है कि मैं प्रकृतिके साथ होलूं। यदि अग्नि जलाती है तो जल जाऊं, यदि बर्फ ठंडक पहुंचाती है तो ठंडा होजाऊं और स्वयम् कुछ न करूं? नहीं नहीं, ऐसा नहीं हो सकता। ऐसा करना कायरता है। मूर्खता पराधीनताकी पराकाष्ठा होगी। मेरा कर्तव्य है कि मैं विवेकसे काम लूं। जिस तरह अग्नि, जल, वायु, अपने २ स्वभावको किसी भी शक्तिके सामने नहीं झुकाते हैं वैसे ही मैं भी अपने स्वभावको जानूं और उसपर दृढताके साथ आरूढ़ होजाऊं। जिस तरह अग्नि, जल, वायु अपने२ स्वभावमे स्थिर रहते हुवे अद्भुतसे अद्भूत कार्य कर डालते हैं। उसी भांति मैं भी अपने स्वभावमें स्थित रहकर अपने गुणोंकी उन्नति करताहुवा अद्भुत बनजाऊं। यही मेरा संसार है, यही मेरा आदर्श है।

जातीय जीवनका रहस्य और शिक्षाका महत्व।

(लेखक—विद्यारत्न पं० कमलकुमार जैन शास्त्री—हरदा।)

संसार प्रगति एवं परिवर्तनशील है! सूर्य प्रातः-काल जिस छटासे उदय होता है शामको उसी प्रकाशकी मलिनतासे अस्त होजाता है, और फिर प्रातःकाल उसी आभासे उदय होकर संसारको प्रकाशवान करता है। यही दशा जातियोंके जीवनकी है। यदि कोई जाति कभी उन्नतिपर हो और आगे चलकर कभी समयके हेरफेरसे वह अवनति पर पहुंच जाय तो यह आश्चर्यकी बात इसलिये नहीं है कि यह तो प्रकृतिका नियम ही सदाकालसे चला आया है।

उन्नति, अवनति, हार, जीत, जीवन, मरण, हानि और लाभ यह तो प्रत्येक मनुष्य और समाजके साथ लगे ही हुए हैं। इसी प्राकृतिक नियमके अनुसार एक समय जैन समाजका वैभव संसारमें उच्च शिखरपर चढा हुआ था, लेकिन समयके फेरसे वही समाज आज अविद्या और अन्धकारके गर्तमें गिरा हुवा, अवनतिकी दशामें वह अपने जीवनकी घडियां बिता रहा है। जैन समाजकी दशा इस समय ठीक इस प्रकारकी हो रही है जिस प्रकार महा भयंकर अंधेरी रात्रिमें किसी पथिकको अपने निश्चित स्थानपर जानेके लिये रास्ता नहीं दीखता और वह इधर उधर जंगलमें भटकता हुआ थक्का खाकर अपने आपको परेशान करता रहता है। इस प्रकारके कठिन अवसरपर बिजलीकी चमक अथवा अन्य किसी प्रकारसे प्रकाश द्वारा ठीक रास्ता मिलजाता है तो वह भूला हुवा पथिक अपने आपको कुछ संभाल लेता है।

जैन समाज भी इस समय अविद्या, वैमनस्य, रूढियों एवं निरक्षरताके अंधकारमें फंसा हुआ इधर उधर भटक रहा है, जातीय संस्थाओं द्वारा कुछ२ विद्याका प्रकाश होना आरम्भ होनेसे यदि समाजने सतर्क होकर कुछ लाभ उठानेका उद्योग किया तो यह भी निःसन्देह कहा जा सकता है कि उसका भविष्य अति उज्वल है। लेकिन यहां विचारणीय विषय यह भी है कि अपने भविष्यको उज्वल बनानेके लिये किन २ साधनोंकी आवश्यक्ता है।

यह एक मानी हुई बात है कि शिक्षाके अभावसे आज समाज अधःपतित होरहा है। यह बात कोई भी विचारशील व्यक्ति स्वीकार कर सकता है। अधिकांश जैनी अशिक्षित हैं। इसी लिये दूसरे संप्रदायवाले हमारे ऊपर रौब कसते हैं। वास्तवमें इस सभ्यता एवं प्रकाशके युगमें अशिक्षित रहना जीवनमें मृत्युके समान ही समझना चाहिये। एक ओर अन्य समाजें तीव्र

वेगसे अग्रसर होती जारही हैं तो दूसरी ओर हमारा जैन समाज अवनतिकी ओर झुकता जारहा है। क्या इसीके बुतेपर हम संसारमें जैनधर्मकी कीर्ति ध्वजा फहरायेंगे?

गत मनुष्यगणनासे पता चलता है कि केवल ८ प्रतिशत जैनी लिखना पढना जानते हैं, परन्तु इसमें भी स्त्रियोंकी शिक्षाका अनुपात तो नितांत नगण्य है। स्त्रियोंकी अशिक्षाके कारण ही पुरुषोंमें भी शिक्षाका काफी प्रचार नहीं हुआ है, जिस जैन स्त्री समाजमें चेलना, मैनासुन्दरी जैसी विदुषी नारियां होगई हों उस समाजमें शिक्षाका इतना अभाव होना कितने दुखकी बात है।

हमारे समाजके कर्णधारों एवं हितैषियोंको चाहिये कि वे स्त्रीशिक्षाका अधिकसे अधिक प्रचार कर समाजोन्नतिमें सहायक बनें।

दूसरा कारण जातिकी उन्नति व अवनति उसके नवयुवकोंपर निर्भर है। यदि वे चाहें तो अपनी जातिको अपनी सेवामय जातीय भावनाओंके कार्योंसे संसारमें ऊँचा उठाकर चमका सकते हैं। यदि अपने आपको निरुत्साहितकर कुछ करें अथवा निराशामें लवलीन होजांय तो फिर ऐसी कोई भी शक्ति नहीं जो उस सोई हुई जातिका उद्धार कर सकनेमें समर्थ होसके। इसलिये आवश्यक्ता अब इस बातकी है कि जैन समाजके नवयुवक मंडल उसकी उन्नतिके लिये प्राणपणसे लग जांय। हमारे नवयुवक समुदायको यह बात भलीभांति जान लेनी चाहिये कि जिस जातिमें उसने जन्म लिया है, जिसने उसे इतनी मानमर्यादा और शक्ति प्रदान की है, उसकी उन्नतिमें भी कुछ किये जानेका इसका कर्तव्य है। समाजकी उन्नति और सुधार उसके युवकोंपर इसलिये निर्भर है कि आगे उनको गृहस्थ बनकर जातिके स्तम्भ बनना है। इसलिये जातिका भविष्य सब प्रकारसे उन्हींके ऊपर निर्भर है। जिस युवक मंडलकी इतनी भारी जिम्मेवारी हो उसका समयके अनुसार जाति उन्नतिका कार्य किये जानेके मैदानमें बढ़ना सब प्रकारसे समुचित ही है।

आज जिधर देखा जाय उधर ही सामाजिक संगठन सुधार और उन्नतिकी धूम मच रही है। प्रत्येक जाति और समाज प्राणपणसे यह चेष्टा कर रहा है कि उसका सुधार और उद्धार हो। भारतके मुसलिम समाजने मुख्य साधन शिक्षाकी ओर पिछले १५-२० वर्षोंमें भारी प्रयत्न कर जो अपनी उन्नति की है वह आज किसीसे छिपी हुई नहीं है। उसकी इस उन्नतिका ही यह फल है कि इस समाजमें एक आशातीत सुधार और उन्नतिकी लहर चल रही है। हिंदू जातिके प्रत्येक समूहमें इस ओर काफी कार्य किया जारहा है जिससे इन समस्त समाजोंकी अच्छी उन्नति देखी जारही है। जैन जातिने भी पिछले २०-२५ वर्षोंमें इस ओर कुछ कदम उठाया है परन्तु जितनी उसकी भारतमें आबादी है उसके देखते हुए उसने अभी न कुछके बराबर ही कार्य अपनी सन्तानोंके शिक्षित बनानेमें किया है।

जातीय संगठन, सुधार और उन्नतिकी पूर्तिके लिये शिक्षा ही एक इस प्रकारका साधन है जिसके द्वारा ये सब काम पूरी तरह पर किये जासकते हैं, प्रत्येक व्यक्ति चाहे वह किसी आयु, पद और

जातिका क्यों न हो यह माननेसे इन्कार नहीं कर सकता है।

"शिक्षा ही एक मात्र उन्नतिका पथ प्रदर्शक है।"

हमारे सामाजिक जीवनमें कितनी भी कुरीतियां क्यों न हों वे सब शिक्षाके अभावसे हैं और इसीका यह कारण है कि हम अपनी वास्तविक परिस्थितिके अनुकूल कार्य न करके ही आज इस गई गुजरी हालतको पहुंच गये हैं। अतः आवश्यक्ता इस बातकी है कि हमसे जहांतक होसके अपनी संतानोंको शिक्षित बनानेके लिये जो भी कुछ होसके करें। इस दिशामें जातिके विशाल प्रयत्न करनेकी आवश्यक्ता है। इसी शिक्षा प्रचारको दृष्टिमें रखते हुए समाजके गणमान्य कतिपय व्यक्तियोंने एक कोलेज खोलनेकी आयोजना समाजके समक्ष रक्खी है। प्रत्येक भाईका उसकी श्रद्धा और सामर्थ्यके अनुसार कर्त्तव्य है कि वह अपनी और अपनी जातिकी संतानोंकी शिक्षामें जो भी होसके कालेजकी सहायता करे।

बन्धुओ! अपनी तन्द्राको त्यागकर जातीय शिक्षा क्षेत्रमें हिस्सा बतानेके लिये कूद पडो। और इसमें जो कुछ जिससे होसके वह करनेकी ओर पग बढाकर अपना कर्त्तव्य पालन करो।

इस समय जातिके अन्दर ऐसे२ होनहार बच्चे हैं जिनकी यदि शिक्षाका प्रबंध किये जानेमें थोडी२ भी सहायता दीजाय तो वे अपना जीवन सुधारनेके साथ ही साथ जातिकी ज्योति जगमगानेमें दीपकका कार्य देसकते हैं।

'दिगंबरजैन'को संदेश!

जैन जातिके हित चिन्तनका,
उर प्रदेशमें रखना ध्यान।
जगती-तलपर आनेका वह,
समझा देना विषय महान॥

× × ×

धर्म मार्गसे विचलित जनको,
वही मार्ग दिखलादो तुम।
'सत्य' 'अहिंसा' वीर नीतिका,
शुचि उपदेश सुनादो तुम॥

× × ×

प्रेमा सबका प्याला देकर,
कर देना बस मतवाला।
पर्दा पृथा हटा शिक्षा दे,
अबलासे कर दे ज्वाला॥

× × ×

जैन जाति खद्दर अनुरागी,
होकर राष्ट्रोत्थान करे।
निज जननीके मस्तकपर बस,
स्वर्ण मुकुट वह आन धरे॥

× × ×

"जैन दिगम्बर" इस भारतमें,
सबसे ज्यादा पावे मान।
नूतन वर्ष वितावे सुखमय,
कृपा तुम्हारीसे भगवान॥

—"निशेश"

वीर भगवानके चरणोंमें।

वीर !

तुम्हारी शक्तिशाली चट्टानसे चिरन्तन हाहाकार, विस्तृत निर्दयता, हृदय-दारक क्रन्दन, भयानक चीत्कार, नृशंस अमानुषिकता और वीभत्स अनाचार खंड! खंड ! हो धराशायी हुये।

युगने पल्टा छाया–

अत्याचार दहला, अन्याय कांपा, पापाचारने कला खाई, आततायी तिलमिला उठे और जगतमें एक अपूर्व झंझावातका अविर्भाव हुआ।

आत्मबल! ने पशुबल! पर विजय पाई–

प्रेममार्तण्ड उदय हुआ, अहिंसा विजयी हुई, दयाने जीवन पाया, करुणा दृष्टिगोचर हुई, क्षमता खुलकर खेलने लगी, शांतिका साम्राज्य फैला और विश्वमण्डल एक नई लहरसे अभिमण्डित हो मज्जित हो उठा।

क्रान्त विफल हुआ,

क्रान्ति सफल हुई–

वीर चट्टानसे प्रेम, अहिंसा, दया, करुणा, क्षमता, शांति तरंगोंसे विभूषित होकर एक निर्मल धारा वह चली, जिसके कलकल निनादने समस्त संसारको सहज ही आकर्षित कर लिया। उस धाराने गति नहीं रोकी, अपितु हृदय बदलनेकी मौलिकता विश्वके समक्ष उपस्थित की।

वीर पताका फहरा चली।

अहिंसा प्रेमका विगुल बजा, मनुष्यताका द्वार खुला, जगज्जीव निर्भेद उसकी छायामें शरण पाने लगे। दया और उदारता उमड़ पड़ी। विरोधियोंने घुटने टेक दिये। इस समय दुनियांने शांतिकी ठण्डी और सुखद सांसली।

वीर !

आज भी फिर वही दृश्य रह रहकर हमारी आंखोंमे घुम रहा है। मन चाहता है–पुकारकर कह उठे–वीर!–हम तेरे अनुयायी है, किंतु हमारे कृत्य कानोंपर पुकार पुकार कर कह रहे हैं कि शर्म–दया जबतक जगतमें जिन्दा है तब तक तो ऐसी धृष्टता नहीं होनी चाहिये।

वीर !

फिर भी न जानें क्यों? तुम्हारी पुण्य स्मृतिपर तुम्हारे पवित्र चरणोंमे 'श्रद्धाके फूल' चढानेका लोभ संवरण नहीं होता।

हे विश्वोद्धारक !

तुम अपनी विशाल उदारता और विशेषताओंके नाते सेवककी श्रद्धाञ्जली स्वीकारता कर लोगे–मुझे ऐसी आशा है।

कल्याणकुमार जैन 'शशि'–रामपुर।

भोजनशालाकी पुकार।

लेखकः—
बा० पन्नालालजी जैन-इन्दौर।

छोटे२ कई मकानोंको गिराकर एक बड़ा आलीशान बिल्डिग बनानेका आयोजन शुरू हुआ। लोग आपसमें बातें करने लगे। भाई! अब इसमें सबको आराम मिलेगा। नगरमें इसका अभाव खटकता था। पंचोंकी रसोई शांतिके साथ नहीं होती थी। बारिशमें पानीसे, शरदमें ठंडसे और गरमीमें कड़ाकेकी धूपके कारण अत्यंत तकलीफ होती थी। इस आलीशान बिल्डिंगके बन जानेसे सब बातकी सुविधा होजावेगी।

यह देख भोजनशालाको अजहद खुशी हुई कि छोटे२ मकानोंकी जगह उसका निर्माण हो रहा है। वह लोगोंका परोपकार भी दिलसे चाहती थी। उसने सोचा चलो यह अच्छा समय हाथ आया; अब तो अपनी वृत्तिके मुताविक खूब ही जनताकी सेवा करूँगी।

भोजनशालाकी बिल्डिंग बनकर तैयार होगई। उसकी बनावटको देखकर लोग बनानेवालेकी खूब तारीफ करने लगे, उसे सराहने भी लगे। विवाह, अगरनी आदि कई खुशहालीके समय छोटी बड़ी रसोइयां अब इसमें होना शुरू होगई। हजारोंकी संख्यामें जब लोग एक साथ बैठकर भोजनशालाकी धर्मशालामें लड्डू पूड़ी आदि तरमाल उड़ाते उस समय वे भले ही लड्डू खाते तो अघा जाते परन्तु उसमें बैठकर जो उससे सुविधा मिलती थी उसकी और उससे बनवानेवालेकी प्रशंसा करते नहीं अघाते थे! एक ग्रास लड्का खाते और चार २ वार तारीफ करते। अब तो चाहे ठंड हो, चाहे वरसात हो, चाहे गर्मीके दिन ही क्यों न हो, प्रत्येक आदमी आसानीके साथ उसमें एक बड़ा सारा भोज जनताको देसकता था।

भोजनशालाकी परोपकार वृत्ति होनेसे उसकी शय्यामें जनताको इतनी सहूलियतें मिलने लगीं, यह देख उसने अपना जीवन बहुत ही सफल समझा। उसके जीवनकालसे अबतक कभी सगाई, कभी शादी, कभी बच्चा होने या कभी अगरनी आदिकी खुशीमें कितनी ही छोटीमोटी रसोइयां होगई। गुलाबके फूलमें भी कांटे होते हैं यह शायद उसे मालूम न था; क्योंकि इन खुशीकी रसोइयोंके बाद अब मृत्युभोजका नंबर आया।

समाजमें एक धनी आदमीकी मृत्यु होगई। वह पैसेवाला तो था ही परन्तु साथ ही बड़े कुटुम्बका था। इतना होनेपर भी उसने समाजकी खातर कभी दान धर्म नहीं किया। जब वह अपनी वयको प्राप्त हुआ तो ऊपरसे उसके नाम वारंट आया और वह अपनी समाजकी ओर ध्यान लगाकर कि मैंने इससे इतना लिया परंतु इसके लिये कुछ किया नहीं इसलिये अपने बाद अपने नामसे कमसे कम जातिवालोंको एक बार पेट भर कर जिमा जानेको अपने पुत्रोंसे कह गया। उसकी मृत्युके बाद पुत्रोंने उसकी आज्ञाका

श्रीमान पण्डित अजितप्रसादजी जैन एडवोकेट,

एम. ए., एल.एल. बी., भूतपूर्व हाईकोर्ट जज बीकानेरस्टेट लखनऊ।

[आपकी समाजसेवा, धर्मसेवा व जैन साहित्यसेवा सुप्रसिद्ध है, आपने श्री० १०८ मुनिश्री जयसागरजीके उपसर्ग निवारणार्थ हैद्राबाद जाकर जो धर्म रक्षा की है वह कभी भी भुलाई नहीं जा सकती। आपका हिन्दी लेख इसी अंकमें पृ० ६० पर पढ़िये]

पालन कर उसी भोजनशालामें नगरभोजका आयोजन किया। भोजनशालामें लोग लोटे ले ले कर आने लगे और आनंदसे माल उड़ाने लगे। यह दशा देख भोजनशालाको विचार आया कि ये लोग कैसे अजीव हैं? किसीके मरनेपर ये लड्डू उड़ाते हैं। इससे मालूम होता है कि ये लोग कौवोंसे भी गये बीते हैं। भोजनशालाने इसे यों उपेक्षाकी दृष्टिसे देखा कि यह धनी आदमी कुटुम्बवाला था! और इन्हें ऐसा करनेको कहा गया था। शायद लड़कोंने उसकी आज्ञाका पालनभर ही किया है।

चातुर्मासके बाद भोजनशालामें फिर रसोइयां होनेके लिये उसका फाटक खुल गया। चातुर्मासमें एक मामूली धनी आदमीकी मृत्यु हो गई थी। उसके घरमें कोई नहीं था। सिर्फ एक लड़का और उसकी बहू घरमें थी। उमर उसकी पचाससे कम थी। जीवनभर जूती चटकाने २ और दलालीका धंधा करने २ उसने कुछ रुपये इकट्ठे किये थे। दान धर्म करना तो दूर किनारे रहा वह लड्डूका इतना प्रेमी था कि जातिमें रसोई है ऐसा मालूम होने ही सबसे पहले वह वहां हाजिर होजाता था। इसीसे लोगोंने उसका उपनाम "लड्डू" रख लिया था। चातुर्मासमें ही लोग बातें करने लगे कि अब तो कंजूसका माल मिलेगा, अरे "लड्डू" के लड्डू मिलेंगे आदि। लड़केने चातुर्मासके बाद फाटक खुलने पर मृत्यु भोजकी तैयारी की। अब तो प्रत्येक भोज छोटा या बड़ा सब इसी भोजनालयमें होते थे। भोजनशालाको इसकी खबर जब मिली तो उसे एकाएक विश्वास नहीं हुआ परन्तु जब लोटे ले २ कर लोग ढेरके ढेर जीमनेको आने लगे तो उसने सोचा कि ये लोग कैसे निर्दयी हैं कि बेचारेने जिन्दगीमें थोड़ासा कमाया है उसे सफाचट करके लड़केको दाने २ से मोताज कर देंगे। कहां तो उसके दुःखमें उसे मदद करनी चाहिये थी परन्तु यहां तो ये लोग जीते हुयेको भी हजम कर रहे हैं। मुझे क्या मालूम था कि मुझे इतना पापका भागी बनना पड़ेगा।

लोग "लड्डूके लड्डू उड़ा रहे थे तब आपसमें बात करते जाते थे कि इसके बाद अब इससे भी बड़ेका नंबर है। अरे वह तो लड्डू भी जिमावेगा और दक्षिणा (लाण) भी देवेगा। उसे तो दो नुकते करने पड़ेंगे। एक तो उसके बापका जो २० वर्ष पहले मरा था और अब बावाका जो अभी मरा है। इतनी बातें सुनकर भोजनशालाका हृदय एकदम दहल गया और उसे कंपकपी आ गई। उस कंपकंपीको देखकर जीमनेवाले घबराने लगे कि यह इमारत तो बड़ेही कच्चे पायेकी बनी है। यह किसीका प्राण लेगी। देखो ना इसे बननेको तो देर ही नहीं हुई सिर्फ एक बरसात ही खाई है और हिलने भी लगी! इधरके देशमें भूकम्प होने देखा नहीं जो उसका असर हो।

कुछ समयके पश्चात् भोजनशालाकी सुनी हुई बात सत्य साबित हुई। १४ वर्षके लड़केका भी नुक्ता बड़ी धूमधामसे रचाया गया। भोजनशालाने सोचा कि इतना पाप और अनर्थ मेरी छत्रछायामें लोग करते नहीं शर्माते हैं, यह देख मुझे

शर्म आती है । यदि उन्हें मेरे साथ ऐसा सलूक करना है तो ऐसे अशुभ कामोंके लिये वे मृत्यु भोजनालय क्यों नहीं बनवा लेते हैं ? उसने सोचा कि वह लड़का जिसे मरे बीस वर्ष हो चुके हैं, अरे ! इस लंबे समयमें तो उसके यहां कितनेही शुभ कार्य हो चुके होंगे। भोजनशाला इस अनर्थको सहन न कर सकी और उसे उस रोज सुनकर कंपकंपी आगई थी और आज तो इतने जोरका चक्कर आया कि उसका एक तरफका भाग गिर गया। उसके गिरनेका बड़ा भारी धड़ाका हुआ। देशमें बंमके भीषण धडाकेको जाननेवालोंने कहा कि बंम फूटा है ? किसीने कहा नहीं, भोजनशालाका एक तरफका हिस्सा गिर गया है। वहां बैठ कर जीमने वाले जो इस भोजकी भली-बुरी वखान कर रहे थे सबके सब एकाएक दब गये। लोग कहने लगे कि यह इमारत शुभ मुहूर्तमें नहीं बनी। उस दिन तो यह हिली थी और आजतो गिर ही पड़ी। इतना कच्चा पाया है। ताबड़तोब लोगोंने उन सब दबे हुओंको बाहर निकाला। कईयोंको हलकी और कुछको गहरी चोट आई। लोगोंने अब उस मालिकको जिसने धर्मशाला बनवाई थी बड़ा आड़े हाथ लिया। क्या लोगोंके प्राण लेनेको यह बनवाई है ? आपने जब ऐसा खर्च किया है तो पक्के पायेकी बनवानी चाहिये। इसी प्रकार सब कहने लगे।

इतनेमें एकने कहा कि आप सब कुछ तो करते हैं परंतु यह भी विचारा कि यह क्यों हो रहा है ? यह सब पाप और अनर्थके फल हैं। उस रोज भी जब इमारत हिली, नुकतेकी रसोई थी और आज भी नुकतेकी रसोई है। इसे सुन सब लोग खूब चिढ़े परन्तु हाथापाईका मौका नहीं आया, बस इतना ही।

नगरके कुछ सुधारक सज्जनोंने बैठकर इसपर विचार किया और इस अनर्थकारी प्रथाको दूर करनेका आंदोलन करनेका विचार किया। नगरके सब धनी मानी सज्जनोंसे प्रार्थना की कि ऐसी नाशकारी प्रथाको आप लोग क्यों नहीं पंचायतीसे हटाते हैं ? उससे होनेवाले कितने ही दोष बतलाते हुए समाजकी त्रुटियोंको दूर करके उसके हितार्थ शुभ कार्योंमें इस रकमको लगानेकी योजना बताते थे। लोग इसके उत्तरमें एकके बदलेमें दस गाली सुनाते थे। इन सबकी परवाह न कर कमेटी अपना काम करती ही जाती थी। उसने जब पंचायतियोंके कानोंपर जूं रेंगती हुई नहीं देखी तो उसने अपनी प्रांतीय कौन्सिलमें इसके सम्बन्धका बिल पेश किया।

इस बातकी खबर भोजनशालाके कानोंपर जब पड़ी तो वह बड़ी प्रसन्न हुई और इनकी सफलताकी कामना करने लगी। मैं अपनेको असहाय समझती थी सो भ्रम था। मेरे भी सहायक हैं ! परन्तु विचार इतना ही आता है कि जितने आगे बढ़े हैं सब अपनी जवाबदारी समझकर काम करें और पीछे न हों तो अच्छा है। भोजनशालाको मालूम नहीं था कि हीरेकी खानमें मिट्टी भी होती है। इन नुकता विरोधकोंमेंसे सभी दृढ़ निश्चयी हों तो बारडोली-सी विजय न होजावे। परन्तु उत्साहमें लोग आगा पीछा नहीं

सोचकर या अपनी परिस्थितिका विचार नहीं कर आगे आजाते हैं और कसोटी पर कसे जानेके समय खोटे उतर जाते हैं। ये कायर ही सब काम खराब करते हैं।

यह भोजनशालाको तब मालूम हुआ कि जब उन्हीं आंदोलकोंमेंसे एक फिसल गया। उसके घरमें अपने पिताकी मृत्यु होगई। किसीको क्या खबर थी कि यह रंगा सियार निकलेगा। उसे नुकता करनेवालोंने उल्टा सीधा समझा कर मृत्यु भोजकी रसोईका नक्की करवा कर अपना उल्लू सिधा किया।

भोजनशालाने इसे सुना तो एकाएक उसने इस पर विश्वास नहीं किया। परंतु निश्चित किये समय पर जब फाटक खुला और सब सामान आकर तैयारियां होने लगीं तो भोजनशालाके पैरके नीचेसे जमीन खसकने लगी। उसने सोचा फिर मेरा कोई सहायक नहीं। इसने तो मिलके दगा किया है। अरे! देशमें इस समय "धरने" का खूब जोर है तो क्या यहांके लोग धरना नहीं देंगे? मैं तो समझती हूं कि शायद ऐसे दगाबाजकी रसोई कोई भी खानें नहीं आवेगा। भोजन शालाको अभी यह ज्ञान नहीं है कि जिमकड़ इतने उधीर बैठे रहते हैं कि उन्हें सिर्फ खानेसे परवाह है। न्याय अन्याय सोचनेसे कुछ मतलब नहीं।

लोग खूब सज धज कर ठीक समयपर तेल फुलेल लगाकर अपने २ लोटोंसे लेस होकर जीमनेके लिये फाटकमें आही धमके। लोग एकसाथ जीमने बैठ गये। सब मिष्टान्न परोसा गया इन सब निष्ठुर कृत्योंको देखकर भोजनशालाको बड़ा ही हार्दिक दुख हुआ। यह देख उसे बड़ी ग्लानि आई और अपने माथेको पकड़कर अपने परितापको संभालने लगी। उसने अपने दुखके वेगको बहुत संभाला परन्तु सब निष्फल हुआ। दुख असह्य होजानेसे पहिले तो उसे कुछ कंपकंपी आगई और उसके $\frac{1}{100}$ सेकंडके बाद ही इतनी जोरका गश्त आया कि वह सबकी सब धड़ामसे गिर पड़ी। बाहरके लोग एकदम दौड़ पड़े, बहुत ही अनर्थ हुआ सबने कहा। पुलिस वगैरा सब आगई, कुछ तो परम धामको पहुंच गये और कईयोंको अधिक चोटें आईं। अब तो लोग बड़ी बुरी तरहसे बकने लगे कोई बनवाने वालेको, कोई जीमनेवालोंको और कोई जिमाने वालोंको दोष और गालियां देने लगे।

इतनेमें फिर उसी पहलेवाले सज्जनने कहा कि भाई लोगों! मेरा फिर भी आपसे वही कहना है कि इस मृत्यु भोजको बंद करो। क्या अब भी ध्यान और विश्वास नहीं होता कि यह सब इसीका कारण है। शुरूमें वह इमारत हिली थी और फिर उसका थोड़ासा भाग गिर गया और अब तो वह सारीकी सारी ही गिर गई। तीनों समय जब उसकी यह हालत हुई—नुकतेकी ही रसोइयें थीं। इससे साबित होता है कि उन आंदोलकोंका आंदोलन उचित है और वास्तवमें यह मृत्युभोज महा पापका कारण है। मेरी समझसे तो यह आप भोजनशालाकी पुकार ही समझिये, जो बार २ आपको पुकारकर मृत्यु भोजको कतई बंद करनेको कहती है।

सच्चे श्रावक बनो।

लेखक—प्रो० पं० अजितप्रसादजी जैन एम. ए; एल एल. बी. एडवोकेट, लखनऊ।

पिछले २० वरससे जैन समाजकी दशा ऐसी हो रही है कि "मरज़ बढ़ता गया जूं जूं दवाकी."

महासभा, परिषद्, सभा, मंडल, कमेटी, संघ, आदि नामसे अनेक संस्था अखिल भारत वर्षीय विशेषण लगाकर समाजोत्थान और धर्म्मोन्नतिका दावा कर रही हैं। स्थानीय संस्था और समाचार पत्रोंकी तो गिनती ही लगाना मुशकिल है। इन संस्थाओंमें, और रथोत्सव, बिम्ब प्रतिष्ठा, वेदी प्रतिष्ठा, मंदिर निर्माण, मूर्ति निर्माण, भोज, मंदिरोंकी सजावटमें लाखों रुपया जैन समाजका प्रतिवर्ष खर्च हो जाता है।

"**जैन धर्मकी जय**" ध्वनि मेले तमाशोंमें जैनियोंके मुंहसे सुननेमें आती है, किन्तु धर्मका प्रभाव जैन वा अजैन जनता पर पड़ता हुआ कहीं भी नज़र नहीं आता।

कारण यह है कि जैन समाजका दैनिक व्यवहार श्रावक वृत्तिके अनुसार नहीं है। धर्मकी ओटमें अधर्मकी प्रवृत्ति है। मोक्षकी प्रार्थना केवल मुखसे करते हैं। और संसारका प्रसार हृदयसे चाहते हैं।

शास्त्र वक्ता पंचाणुव्रत ग्रहण, विषय कषाय त्याग, हितमित वचन बोलनेके नियम श्रोतागणको नही दिलाते, केवल रूढि मात्र, दर्शन, पूजन, जाप, रात्रि अन्नत्याग, शूद्र जल त्याग, अष्टमी चतुर्दशीको वनस्पती त्याग आदि नियम दिलाते हैं। और इतने ही पर वक्ता और श्रोता अपनेको कृतकृत्य समझ लेते हैं।

देवदर्शन केवल दाल, चावल, बादाम, लौंग आदि चढा देने. और मुखमें शुद्धाशुद्ध कुछ पाठ पढने मात्र रह गया है। मंदिरमें वस्त्राभूषणकी दिखावट, प्रेमालाप, व्यापार, शिष्टाचार, वा शादी—व्याहकी बात करनेमें अधिक समय लगाता है। ऐसा कोई विरला ही होगा जो सच्चे हृदयसे कह सके कि दर्शन पाठ मुंहसे पढते हुए, उसके भाव अर्हन्त के अनन्त चतुष्टय वा ४६ गुणमें लीन थे, और १८ दोष रहित देहस्थ शुद्ध आत्माका वह चिन्तवन कर रहा था। वेदियां बनानेकी प्रथा भी अब ऐसी पड़ गई है कि उससे न अपने पर, न दूसरे पर कोई प्रभाव पड सका है।

दिल्लीमें जब लाला हरसुखरायजीने धर्मपुरे और सेठके कूचेके मन्दिर बनवाये थे तो केवल एक ही ऊंची वेदी थी। और उसमें एक ही प्रतिमा बिराजमान की थी। १८५७ में अन्य मंदिरोंके भग्न होनेसे, वा अन्य प्रकार, जो और प्रतिमा समूह था, वह सब एक कोठेमें पधरा दी थी। वेदियोंकी और मूर्तियोंकी बहुतायमत आधु-

निक शौक है। सुना जाता है कि लाला हरसुखरायजीने २६ शिखरबद्ध मन्दिर बनवाये किन्तु अपना नाम कहीं भी नहीं लिखवाया। इन दिनों तो मन्दिरकी सीढ़ी चढते ही, सीढियों पर, फर्श पर, पूजाकी चौकी पर, वेदीके दरवाज़े पर, पूजाकी थाली पर लोगोंके नाम ही नाम रोशन हो रहे हैं। और यह नाम, विलायती रंगबेरंगे चमकते चौके, वेल बूटे, रेशमी कारचोबी परदे, दर्पण, वस्त्राभूषणोंकी चमक और झंकार, घंटोकी घनघनाहट, गानेवालोंके तालसुर, हावभाव, विशेष कर दर्शन करनेवालेका उपयोग अपनी और खेंच लेते हैं, और वाज़ दफ़ा तो मुंहसे पढ़ा जाता हुआ पाठ भी विस्मृत हो जाता है।

पूजा करनेवाले रेशमी कलावतूनी वस्त्रों और सुनहरी मुकुटोंसे सुसज्जित होकर, आवाजकी उंचाईमें आपसमें स्पर्धा करने, थरकने, मटकने, नज़र दौडाने, और जान पहचानके स्त्री पुरुषको अर्ध बनाकर देनेमें विशेष करके दत्तचित्त रहते हैं। अष्टमी चतुर्दशीको जबकि स्त्री पुरुषोंका जमाव अधिक होता है, पुजारियोंकी संख्या भी बढ़ जाती है। पूजाके भाव, पाठकी शुद्धता, स्पष्टोच्चारण, शब्दार्थ और भावार्थकी समझका विचार किसी विरलेहीको होता होगा।

जाप करना केवल मालाके दाने फिराना, और जल्दी २ शुद्धाशुद्ध मंत्र पढना रह गया है। इंद्रिय और मन भटकते फिरते हैं। सामाजिक समता भाव, चित्तकी एकाग्रताका तो जिकर ही क्या ?

दानका आशय बहुधा व्यापारकी वृद्धि, अपने दोष छिपाना, और झूठी तारीफ़ करवाना है। स्वर्गीय दानवीर सेठ माणिकचंद हीराचंदजी J. P. और उनकी सुपुत्री मगनब्हेन J. P. जैसे सच्चे दानी विरले हैं। विशेष करके तो मन्दिरोंकी सजावट, अच्छा मजबुत फर्श खुदवाकर अपने नामके पत्थर लगवाने, प्रतिष्ठा रथोत्सवके नामसे मेले कराने, नाटक रचाने, मनोरंजनके वास्ते नाचगान व्याख्यान कराने, तीर्थयात्राके नामसे सैर तपाटेमें अंधाधुंध लाखों रुपया जैन जातिका खर्च हो रहा है। प्रतिष्ठा कराना, नाटक रचाना, जैन पद्धतिसे विवाहादि संस्कार कराना अब जैनियोंका रोज़गार पेशा हो गया है।

जब यह प्रश्न उठता है कि जैन जातिने भारतकी या स्वतः अपनी क्या उन्नतिकी तो लज्जासे सिर झुकाना पडता है। **सेठ हीराचंद गुमानजी**की धार्मिक संस्थाओं और एक दो जैन होस्टेलोंको छोड़के एक भी ऐसी उल्लेखनीय जैन संस्था नहीं है। जो सार्वजनिक कही जाय, या जिसमें कोई विख्यात पुरुष निकला हो। या जिससे अजैन जनताको सहानुभूति हो। जिसमें जैन जनता द्रव्य प्रदान करती, या अवैतनिक काम करती हो। महाविद्यालय, नामांकित पाठशाला, स्थानीय धर्मशाला, वा औषधालय उल्लेखनीय नहीं हैं।

जैनियोंको इस बातका अभिमान है **कि महात्मा गांधी**के जीवन पर **जैन धर्मकी छाप** बाल अवस्थासे पड़ी है, और **अहिंसा**का **सिद्धान्त** जगद्व्यापी हो गया है, किन्तु महात्माजीने जैनि-

योंके व्यवहारको देख कर कह दिया कि जैनी अहिंसाकी पुकार लगाते हैं; किन्तु अहिंसाको दैनिक व्यवहारमें नहीं लाते ! और इसी कारणसे जैन धर्म वा जैन जातिका जिकर उनके लेख या भाषणमें बरसोंसे नहीं मिलता।

लाला लाजपतरायजी भारतके महान पुरुषोंमें थे। वह जैन कुलमें उत्पन्न थे। किन्तु जैनियोंके व्यवहारको देखकर उन्होंने जैन धर्मको परित्याग किया और आर्यसमाजका प्रचार किया।

जैन जातिने अपने होनहार वीरोंका निरादर बहिष्कार करने पर कमर बांधी है, यही कारण है कि जैन जाति और जैन धर्मका उत्थान नहीं होता। वर्तमान भारतमें जैनी गिनतीमें ही नहीं हैं। किसी सार्वजनिक व्याख्यान, लेख, वा सभामें जैनियोंका आदर कैसा, ज़िकर तक नही आता।

इस गिरावटका इलाज, और उन्नतिका मार्ग सीधा है। धर्मको ढकोसला, और पेट पूर्तिका साधन न बनाओ, अहर्निश अपनी आत्मा और संसारको मत ठगो। धार्मिक व्यवहार करो **"मनमें होय सो वचन उचरिये, वचन होय सो तनसे करिये"** के उपदेशको हर समय याद रखो। जैन जातिके होनहार वीरोंका प्रोत्साहन करो, **सच्चे श्रावक बनो**।

फिर निःस्संदेह जैन जाति और जैन धर्म उसी उन्नत शिखर पर पहुंच जायगा, जिसका वर्णन पुराण और इतिहासमें पढते हैं।

क्या-से-क्या ?

[रचयिता—श्रीयुत **रामनरेश बरुवा—हरदा**]

ओ समाज ! देखा था तूने,
महावीर उद्भट विद्वान।
श्री समंतको देखा आंखों,
अऽकलंकका होगा ज्ञान ॥
चद्रगुप्त औ नृप अशोकको,
देखा खारवेल रानी।
वस्तुपाल जैसेको देखा,
देश भक्त था अति दानी ॥

× × ×

भैरव देवी खारवेल नृप,
तेजपाल औ भामाशाह।
वह दिन कैसा था तुझको हा,
महापुरुष ये थे नरनाह ॥
देखा जगतीतल पर तूने,
धर्म भानुका अरुणोदय।
दोपहरीसी प्रतिभा देखी,
देखे ऐसे कई अभिनय ॥

× × ×

देखा फिर देखा आंखों ही,
यश वैभव प्रतिभा जाते।
जैन विपिनकी धर्म लता को,
देखा हा फिर मुरझाते ॥
सत्य अहिंसा प्रेम पूर्णिमा,—
का था प्रति हृद पर नर्तन।
उसी सभ्य आदर्श जातिका,
देखा सहसा परिवर्तन ॥

सदगुरु हीन हुई यह जाती,
पाया जाता अवनति भाव।
दिन प्रति दिन होता ही जाता,
अर्थ धर्मका मित्र अभाव ॥
इस विनाशताका बस कारण,
यही समझमें आता है।
अबला, दीन, कृषकका क्रन्दन,
तुमरा नाश कराता है ॥
× × ×
बाल विवाह करा युवकोंको,
बना दिया है शक्तीहीन।
मृतक भोजके उस अपव्ययने,
कर डाला है तुमको हीन ॥
कन्या विक्रयके पैसेने,
ऐसा रंग जमाया है।
सतरा सौसे ऊपर युवती,
विधवा हाय! बनाया है ॥
× × ×
चौतिस सौ आंखोंके आंसू,
क्या कुछ रंग न लायेंगे?
सह समाज, परिवार देखना,
जैनों! तुम्हें डुबायेंगे ॥
किंचित दया न आती फिर भी,
उनके रोने धोने पर।
बार बार धिक देता हूं मैं,
ऐसे चांदी सोने पर ॥
× × ×
वह हृद नहीं कड़ा पत्थर है,
जिसमें आवे दया नहीं।
नर हो नहीं कभी सकता वह,
जिसको शर्मो हया नहीं ॥

कृशकोंको पैसा देकरके,
खाता वही बढ़ा लेना।
"वीर" नीतिमें लिखा कब है,
कोई मुझे दिखा देना ॥
× × ×
वीर धर्मका फिरसे देखा,
चाहो जो जैनों अस्तित्व।
धर्म नियम पर कायम होकर,
दिखलाओ अपना पुरुषत्व ॥
उन्मुख, दलित व्यथित हृदयोंपर,
सत्यज्ञानका करो प्रकाश।
बाल विवाह व्यर्थका धन व्यय,
मृतक भोजका करदो नाश ॥
× × ×
कृषकोंके कृष तनपर देखो,
सत्य दयाका भाव रखो।
परदा पृथा उठादो जगसे,
भला चाहते यदी सखो ॥
स्त्री शिक्षाका साधन यह,
जब तक नहीं करायेंगे।
सीता सती सत्यभामासी,
उनको नहीं बनायेंगे ॥
× × ×
धर्म कीर्तिकी धर्म पताका,
कभी नहीं फहरायेगी।
यही दशा यदि रही मित्र तो,
जैन जाति मिटजायेगी ॥
निज समाजकी बुरी रीतियां,
यदि जो आप मिटायेंगे।
वास्तवमें फिर आप आपको,
उन्नति पथ पर लायेंगे ॥

जैनसमाजमें सुधारकी आवश्यक्ता।

[लेखक:—डा० मोतीलाल बागड़िया, L. D. Sc., F. A. E. D. उज्जैन ।]

जैन जातिमें "समाज सुधार" शब्द बड़े चौंकाने वाले हैं। हमारी जैन समाजमें सुधार शब्द इतना अटपटा मालूम पड़ता है कि कोई उस अवस्थाकी कल्पना भी नहीं करसक्ता। कभी २ और कहीं २ अखबारों व लेक्चरोंमें इन शब्दोंको पढ़ते और सुनते अवश्य हैं किन्तु पढ़ या सुनकर वहीं भूल जाने भरके लिये। हम हमारी सामाजिक अवस्थापर जब दृष्टिपात करते हैं तो हर जगह सुधारकी नितान्त आवश्यक्ता प्रतीत होती है।

वैसे तो भारतकी सभी जातियां आम तौरपर पिछड़ी हुई हैं, पर जैन समाजका जब अवलोकन करते हैं तो यह एकाध सदी और भी पीछे है ऐसा मालूम होता है। जैन समाज आम तौरपर स्थितिपालक Conservative है। जिस अवस्थामें यह अपने आपको पाती है उसीको वह उत्तम और सनातन मानती है। जिन पूर्व पुरुषोंने इन रूढ़ियोंको प्रचलित किया, भला वे कभी गल्ती कर सक्ते हैं। और आज हम उनसे अधिक बुद्धिमान होनेका दावा तो कर ही कैसे सक्ते हैं। हमारे जैन समाजकी मनोदशा इस प्रकारकी होनेके कारण किसीको यह साहस नहीं होता कि पुरानी लीकको तोड़कर नया रास्ता खोज निकाले।

एक ओर यह मनोदशा, दूसरी तरफ प्रगतिकी या अवनतिकी लहर है। जमाना तेजीसे पलट रहा है, राजसंस्थाओं और सामाजिक संगठनोंके हजार २ प्रयत्न करने पर भी वे उसके बढ़ते हुए वेगको रोकनेमें असमर्थ हैं। नवीनता और प्राचीनताकी इस खींचातानीमें समाज इस सुप्त अवस्थामें भी बड़ीबुरी तरह आन्दोलित हो रही है।

ऊपर-ऊपर विचार करने पर भी हम देखते हैं कि समतामें गहरी हलचल उत्पन्न करनेवाली तीन विचार-धारायें हैं, बल्कि यह कहना चाहिये कि अब वे विचार वर्षोंसे ठोंस सत्यके रूपमें हमारे सामने उपस्थित हो गये हैं। वे ये हैं—

१—समाजकी बढती हुई गरीबीके कारण खर्चीली प्रथाओंकी बन्दी।

२—वैवाहिक अथवा स्त्रीपुरुषोंके पारस्परिक जीवनसे सम्बन्ध रखनेवाली रूढियोंमें परिवर्तनकी आवश्यकता।

३—देशकी राजनैतिक अवस्था।

सबसे पहला सवाल है समाजकी आर्थिक अवस्थाका। इन सौ डेड़सौ वर्षोंमें जैन समाजमें निर्धनताका आधिपत्य दिन २ बढ़ता जा रहा है, इस बातको प्रत्येक विद्वान मान्य करता है। हम तो अपने जीवनमें प्रतिदिन इस सत्यको अनुभव करते हैं। आजकल तो ऐसा जमाना आ गया है कि आदमीके लिये अपना पेट भरना मुश्किल हो रहा है। ऐसे समयमें विवाह और मृत्युके समय बड़े २ भोज देना कितना हानिकारक है। निःसन्देह यह अन्न-

दानकी प्रथा बहुत अच्छी है, पर उसका यह तरीका ठीक नहीं। हम उन लोगोंको खाना खिलाते हैं जिनको उसकी जरूरत नहीं, जो सुस्त हैं और जो उसका अच्छा उपयोग नहीं कर पाते और वे लोग वंचित रह जाते हैं जो ऐसी सहायताके सच्चे पात्र होते हैं। जैन समाजकी दानपद्धतिका अगर सुधार हो जाय तो सैंकड़ों विद्यालय, छात्रालय, स्वदेशी चीजोंके कारखाने वगैरा खुल सक्ते हैं और वर्तमान अवस्थाको देख कर कहें तो हजारों निरुद्योगी जैन बन्धुओंका जीवन सह्य बनाया जा सक्ता है।

दूसरे राजनैतिक और आर्थिक परिस्थितिका असर स्त्री पुरुषोंके जीवनपर पड़ता ही है। इसलिये उसमें भी परिवर्तनकी आवश्यक्ता है। यदि किसी समय कारणविशेषसे बालविवाहोंकी रूढ़ि प्रचलित होगई हो या कहीं २ वृद्ध विवाहका एकाध उदाहरण हो गया हो तो वह हमारे लिये अब रूढ़ि नहीं बन सक्ती, पर आज वही अवस्था है और जिनके फल स्वरूप समाजमें स्त्री पुरुषोंके वैवाहिक जीवनकी बड़ी दुर्गति होरही है।

प्रत्येक भाई या बहन अगर अपने समाजकी ओर जरा शोधक दृष्टि डालेंगे तो वैवाहिक जीवन सम्बन्धी उन्हें अनेक ऐसी बिषमताएं नजर आवेंगी जिनको बरदास्त करना समाजके नाशको निमंत्रण देनेके बराबर होगा।

पर जनतामें इन सारी बातोंको समझावें कौन? समाज सुधारके लेख या भाषण जबतक लोग दो घंटे मनोरंजनकी वस्तु समझते रहेंगे तबतक कोई असली काम न होगा। इस कामके लिए तो ऐसे युवकोंकी जरूरत है जो अपना समस्त जीवन इस कार्यके लिये अर्पण करनेको तैयार हों पर ऐसे प्रथम श्रेणिके कार्यकर्ता तो बहुत कम मिलते हैं जो दूसरेकी सेवाके लिये अपना जीवन अर्पण करदें।

इस लिये यदि हम चाहते हैं कि हमारी जैन समाजमें सुधार हो तो हमें सुसंगठित होजाना चाहिये। हम एक दूसरेसे पूछकर सलाहसे काम करेंगे तो हमारी शक्ति बहुत बढ़जायगी। सुधारके इस संगठनके लिये जाति पांतिकी कोई कैद न होनी चाहिये। हूमड़, खंडेलवाल, बघेरवाल, जैसवाल, परवार, सब एक ही जहाजके मुशाफिर हैं। जो बुराई एकके लिये घातक है वह सबके लिये है। इस लिये हमारे इस सर्वमान्य शत्रुका मुकाबला हम सबको मिल कर करना चाहिये। यदि हमारे हृदयमें समाज सुधारकी सच्ची भावनाएं हैं तो हमें निम्न बातोंका पालन आवश्य करना चाहिये—

१—किसी भी बाल विवाह या मृत्यु भोजमें शरीक न हों।

२—अनमेल विवाह या वृद्ध विवाहका शक्तिभर विरोध करें।

३—अपने यहां विवाह इत्यादि प्रसंगों पर फिजूल खर्चा न करें।

४—ऐसी रुढ़ियोंका पालन न करें जिनमें अन्ध विश्वास हो।

५—शुद्ध व स्वदेशी वस्त्र व वस्तुओंका ही उपयोग करें।

जैन समाजकी कुरीतियां।

लेखक—
श्री० ब्र० प्रेमसागरजी पञ्चरत्न।

समाजमें जो बात प्रचलित होती है, अथवा जिसके द्वारा समाजका व्यवहारिक कार्य संचलित होता है उसे या यों कहिए कि जिसके द्वारा समाजका जीवन बनता है, उसे रीति अथवा रिवाज़ कहते हैं।

रीति-रिवाज़, किसी धार्मिक गुरुके बनाए नहीं हैं। वे तो समाजके सुभीतेके लिए, समाजके मुखियोंके बनाए हुए हैं। उन रीति-रिवाजोंमें अच्छी और बुरी याने सुरीति एवम् कुरीतिका नाम भी प्रचलित है। जो अच्छी रीति है उसे समाजके सुधारक लोग सुरीति कहते हैं और जो बुरी रीति है उसे कुरीति कहते हैं। कुरीतिको दूसरे नामोंमें कुप्रथा, कुरूढ़ि और उर्दू भाषामें बद-रस्म कहते हैं।

पुराने जमानेके लोगोंने जिन रीतियोंको बनाया था, वे उनके लिए उस ज़मानेमें सुरितियां थीं, परन्तु वही आज कुरीतियां मानी जाती हैं। क्योंकि तब वे सुविधा और हित-रूप जचतीं थीं। लेकिन आज वही असुविधा और अहितकर अनुभवमें आ रहीं हैं इस लिए वे कुरीतियां हैं। जैसे बाल विवाहकी रीति, इस्लाम-राज्यके ज़मानेमें सुरीति समझी जाती थी क्योंकि जब मुसल्मान बादशाह लोग हिन्दुओंकी कुँवारी कन्याओंको जबरदस्ती विवाह लिया करते थे, तब उस समयके दूरदर्शी ब्राह्मण पंडितोंने कुछ ऐसे श्लोकोंकी रचनाएँ कीं थीं कि जिनसे लोग छोटी छोटी अवस्थामें पुत्रियोंकी शादी करने लग गए थे। वही रिवाज अब तक चालू है। परन्तु आज वह ज़माना नहीं है। आजका ज़माना सुधारका जमाना है।

इसी प्रकारसे आज जिन रीतियोंको हम सुरीतियां समझ रहे हैं, वही आनेवाले ज़मानेके मनुष्योंकी दृष्टिमें कुरीतियां जचेंगी तब वे उनके विरूद्ध आवाज़ उठावेंगे और उनको समाजके लिए हानिकारक समझ, शीघ्रसे शीघ्र उनको निकाल बाहर करेंगे। क्योंकि आनेवाले जमानेके मनुष्योंको लौकिक एवम् धार्मिक उन्नतिके लिए सबसे अधिक ज्ञानकी आवश्यक्ता प्रतीत होगी।

मतलब यह है कि जमानेकी तब्दीलीसे ही रीतियोंकी तब्दीली भी अनिवार्य है। इसमें किसी भी धर्माचार्यका हाथ नहीं है, कि वह उन्हें उस तब्दीलीसे रोक सके एवम् उनका जैसाका तैसा रूप रखनेकी कोशिश कर सके।

यदि हम थोड़ी देरके लिए, जमानेकी तब्दीलीका असर समझलें तो बहुत जल्दी ही कुरीतियोंके विषयमें अपने दिलमें ठीक फैसला करलें यह एक अनुभवगम्य बात है।

इस समयके बुद्धिमान लोगोंने एवम् सुधारकोंने कुरीतियोंके ये नाम रख लिए हैं। जैसे—बाल विवाह, वृद्ध विवाह, कन्या विक्रय, व्यर्थ

व्यय, बेजोड़ विवाह और तेरही या नुक्ता। दर असल उनका यह सोचना बहुत ही ठीक है, क्योंकि उक्त कुरीतियोंने ही हमारा अधःपतन किया है। यदि ये कुरीतियां हमारी समाजसे अपना वन्दना-बोरिया उठाकर कहीं अन्तको गमन करलें तो हमारी सामाजिक उन्नतिमें देरी न लगे।

कुरीतियोंने हमको कहांतक और कैसा पतित बनाया है, जब इसके ऊपर हम सूक्ष्म दृष्टिसे विचार करते हैं, तब हमारा हृदय विदीर्ण हो-जाता है, लेकिन हमारे भाई, जोकि समाजके मुखिया माने जाते हैं। अर्थात् जिनके हाथमें जातिकी बागडोर है वे ज़रा भी इस बातपर विचार करनेको तैयार नहीं हैं क्योंकि उनका इसमें स्वार्थ है।

शारीरिक शक्तिकी क्षीणता, नपुंसकता, विद्याविहीनता, पैदायशका रुकना, अनेकानेक रोगोंका आक्रमण, स्त्रीका अपने शीलधर्मसे च्युत होकर व्यभिचारमें रत होना और भ्रूण हत्याएं करना तथा अपघात करके मरजाना एवम् ऐसा ही हाल उसके पतिका होना, ग़रीब घरानेके युवकोंका अविवाहित रहना और उनका आवारा होजाना तथा छिपकर व्यभिचारका करना या किसी व्यभिचारिणी स्त्रीको रखलेना अथवा दूसरी कौमोंमें जाकर मिलजाना, विधवाओंका उत्पन्न होना और उनकी संख्याका बढ़ना इत्यादि हानियां उक्त कुरीतियोंके द्वारा होती चलीं आरही हैं जिससे समाज दिनोदिन जर्जरित होती चली जा-रही है, पनपती नहीं। बल्कि दिनोंदिन पतित होती जारही है।

१ बाल विवाह—इस कुरीतिने हमारी होनहार सन्तानको शक्तिहीन बना दिया है तथा अधिकांशको दुष्ट कालके गालमें फंसादिया है। उन छोटे छोटे पुत्र पुत्रियोंका विवाह उनके मूर्ख मां बाप करदिया करते हैं, जो यह भी नहीं जानते कि विवाह किस चिड़ियाका नाम है। ९, १०, ११, और १२ वर्षका समय उन मूर्ख मां बापोंके लिए एक शुभ और धार्मिक समय है तभी तो वे, अपनी सन्तानको उसी पुण्य (?) समयमें विवाहते हैं। यह समय उनके लिए ऐसा मीमाबद्धसा होगया है कि वे अपनी सन्तानको उसको छोड़कर ऊपरके समयमें नहीं विवाहते।

उन मूर्ख मां बापोंने आजतक भी यह विचार नहीं किया कि हमने जिस सन्तानोंको बड़े ही लाड़ प्यारसे पालन किया है, जिसकी रक्षाके लिए हमने अपना सर्वस्व लगाया है और जिसे हमने अपनी भावी रक्षाका ठेकेदार समझ रक्खा है उसीके साथ ऐसा अन्याय करते हैं! उन्हें छोटीसी उम्रमें विवाहित कर, उनकी जिन्दगी पर पानी फिरते हैं, धिक्कार है हमारी बुद्धिको!

मूर्ख मां बाप उक्त प्रकारका विचार क्यों करें क्योंकि उनको तो छोटीसी बहू देखनी है, तथा अपनी छोटी पुत्रीको विवाह करके छोटासा जमाई देखना है।

जिन्होंने यह नहीं समझा कि विवाह किस चिड़ियाका नाम है वे, बाल दम्पति अपने मनमें अनेक प्रकारकी अधम कल्पनाएं कर बहुत दुखी होते हैं, और खेलने खानेकी तथा पढ़ने लिखनेकी स्वतंत्रता छिन जानेसे अविवेकी

और असुन्दर होते हुए अपनी ज़िंदगी पर रोते हैं। उनका कच्चा वीर्यपात होता है, जिससे वे दिनोंदिन शक्तिहीन और छविछटा क्षीण होते जाते हैं। उनका मुख पके आमकी तरह पीला हो जाता है। परन्तु मूर्ख मांबाप समझते हैं कि हमारे लड़कोंमें किशोर अवस्थाकी खूबसूरती आ रही है? कुछ दिनोंके बाद दम्पति, रोगसे ग्रसित होकर अत्यन्त निर्बल और असाध्य हो जाते हैं। ज्यादातर देखा गया है कि पत्नी ही पहिले कालके गालमें फँसती है, क्योंकि वह अधिक रोगमें ग्रस जाती है।

जिन बालकों या बालिकाओंकी छोटी उम्रमें शादी करदी गई है और उनका कच्चा वीर्यपात करा दिया गया है उनके द्वारा सन्तानकी आशा कैसे की जा सकती है? और जो करते हैं वे आकाशसे फूल प्राप्त करनेका ही प्रयास करते हैं।

यदि भाग्यवशात् सन्तान हो भी जावे, तो वह न हुएके ही बराबर है क्योंकि वह अधिक दिनों तक नहीं ठहर सकती। कोई कोई तो होते हो मरजाती है तथा कोई कोई कुछ समयके बाद मरजाती है। जीती कोई भी नहीं, ऐसा प्रत्यक्ष देखा गया है। कोई अनुभवी या जांच करनेवाले विद्वानोंने बताया है कि "छोटे बच्चोंके मरनेमें अधिक संख्या बालविवाहवालोंके सन्तानकी है। अतएव ऐसी नाशकारक कुरीतिका शीघ्रातिशीघ्र अन्त करदेना चाहिए तभी समाजमें बलवान सन्तान पैदा होगी।

हम यह तो अवश्य ही चाहते हैं कि—हमारी सन्तान निरोग रहे, चतुर बने, व्यापार कुशल बने और बलवान बने लेकिन हम यह नहीं समझते और न कभी इस बातकी जिकर ही करते कि "सन्तानको योग्य कैसे बनाया जावे" यह तो अवश्य ही अपने सगे-सम्बन्धियोंसे, मित्रोंसे और मुहल्लेके लोगोंसे पूछते हैं, चर्चा करते और सलाह करते हैं कि हमारी लड़की या लड़का दश वर्षका तो है परन्तु लगता है बारह या तेरह वर्ष जैसा, कहिए इस वर्ष इसका विवाह करें या नहीं? उनके इष्टजन (!) उनकी मन्साके माफिक सलाह देते हैं और कहते हैं कि "भाई बच्चोंकी उम्रपर क्या विचार करते हो? विचार करो उनके कदपर, विचार करो उनके चंचल याने चुल-बुलेपनपर और विचार करो अपनी जिंदगीपर। क्योंकि आजकलकी सन्तान उम्रकी अधिक होकर भी कदमें छोटी रहती है और उम्रकी कम होकर कदमें लम्बी रहती है। तथा आपका शरीर कमजोर हो गया है, क्योंकि वह रोगी रहता है, अथवा आप अब अधिक वृद्ध भी होगए हैं। इसलिए अब आपकी जिन्दगीका भरोसा नहीं। अतएव अपने साम्हने अपनी सन्तानको विवाह दें तो अच्छा हो। हमारी समझमें तो इसीमें भलाई है। इस प्रकारकी सलाहको तो हम बहुत जल्दी स्वीकार कर लेते हैं परन्तु अगर कोई हमें ऐसी सलाह दे कि—"इतनी छोटी उम्रमें क्यों सन्तानकी शादी करते हो? अभी तो उसे विद्या पढ़ाओ, शिक्षित बनाओ, प्रौढ़ अवस्थामें उसकी शादी करना। क्यों विवाहके बंधनमें बांधकर उसे मूर्ख रखते हो" तो आपेसे बाहर होजाते हैं, नाक भोंह सकड़ते हैं।

यदि उक्त विषयपर मुझसे कोई पूछे तो मैं

यही कहूं कि माता-पिताका सन्तानके प्रति केवल हित करना है, अहित नहीं। किसी भी माता-पिताका फर्ज है कि वह अपनी सन्तानका अच्छी तरह पालन-पोषण करके उसे योग्य बनावे और फिर विद्यासे विभूषित करे। इसके पश्चात् १८ या २० वर्षकी उम्रमें (या शारदाएक्टके अनुकूल) उसकी शादी करे। यह उसका कदापि कर्त्तव्य नहीं है और न उसका उसके ऊपर कोई ऐसा हक ही है कि वह उसे मूर्ख रख, विवाहके अनुचित एवम् मजबूत बंधनमें बांधकर उसकी जिन्दगीपर पानी फेरे। परन्तु दुःखके साथ लिखना पड़ता है कि—आज समाजके कोई भी लोग इस आवाजको नहीं सुनते। मेरी समझमें नहीं आता कि इसमें उनका क्या स्वार्थ है।

हमारी समाजमें अधिकतर बालविवाह ही होते हैं। मैंने अबतक जितना जो कुछ अपनी समाजकी वैवाहिक प्रथाका अनुभव किया है, वह सन्तानके प्रति अन्यायके सिवाय कोई न्यायसंगत कार्य नहीं है। मैंने अपने ही कुटुम्बके एक लड़केका बालविवाह आपसी तौरपर रुकवाया था, तिसपर उसकी दादी बहुत समयतक मुझसे तनी रही थी, परन्तु मैंने इसकी कुछ परवाह नहीं की थी। तब उसका यह फल हुआ था कि शादी अठारह वर्षकी अनुमान अवस्थामें हुई थी।

जातिके हितैषियोंसे निवेदन है कि वे बालविवाहको पंचायती सत्ता कायम कर रोकनेको तत्पर हों, तभी सफलता प्राप्त होगी।

स्थानाभावसे अन्य कुरीतियोंपर फिर लिखूँगा।

वीर-वन्दन।

(लेखक—कल्याणकुमार जैन "शशि"—रामपुर।)

जयति वीर भगवान!
जयति वीर भगवान!

हे करुणेश तुम्हारी जय हो,
विश्व—पटल पर यश अक्षय हो।
जगमें फिरसे वीरोदय हो॥
तब हो विश्वोद्धार!
जयति वीर अवतार!

करुणा-दया-अहिंसा-क्षमता,
रही कहां वह रक्षा-समता।
विश्व-प्रेममें मिली विषमता॥
हुआ अनर्थ अपार!
जयति वीर अवतार!

सफल 'समाज' व्यवस्था सारी,
बिगड़ गई सर्वथा हमारी।
आज हुये हम मायाचारी॥
त्याग विवेकाचार!
जयति वीर अवतार!

गुण गौरवसे हीन हुये हम,
ज्ञान-दानसे दीन हुये हम।
निर्धन तेरा-तीन हुये हम॥
हुये पतित लाचार!
जयति वीर अवतार!

झूठी चमचमता पर फूले,
कुमति हिंडोले पर सब झूले।
वीर! तुम्हारा भी अब भूले॥
शुभ-सन्देश उदार!
जयति वीर भगवान!

समाज और नारि जाति।

[रचयिता–पं. रामकुमार "हिन्दी प्रभाकर"]

(१)

प्रथम सृष्टिकी नौकाकी पतवार हमी थीं।
विश्व वृक्षके सिंचन हित रसधार हमी थीं ॥
प्रथम नर्तकी हमहीथीं जग नाट्य-मंचकी।
खिली ज्योति पहले हमसे ही थी दिगन्तकी ॥

(२)

प्रथम रूपमें आईं हम बन करके कन्या।
कन्यानिधि धारणकर धरा होगई धन्या ॥
सुत धन भी मंगलमय किन्तु स्वार्थके हित ही।
किन्तु सुताकी निधि सदैव होती परहित ही ॥

(३)

दिया दिया घरको गृहलक्ष्मी देवी बनकर।
नारि रूपमें की सेवा पति सेवी बनकर ॥
सती तेज प्रगटाया हमने सीता बनकर।
विश्व कँपाया दमयन्ती सी प्रीता बनकर ॥

(४)

क्या बलिदान हमारे पूछोगे कवितासे ?
जा पूछो झाँसीसे और चितौड़ चितासे ॥
जा पूछो दुर्गादेवीके गढ़ मन्डलसे।
गूंज उठेगी अबभी ध्वनि फूटे खंडहरसे ॥

(५)

गोदीके लालोंको देशधर्मके कारण।
बलिवेदी पर चढ़ा किया जीवन संचारण ॥
लगा भाल पर टीके रणमें भाई भेजे।
स्वर्ग–गमनहित मिली जिन्हें बाणोंकी सेजें ॥

(६)

वीर, बुद्ध और रामकृष्णसे अनुपम ज्ञानी।
तिलक, गोखले, गाँधीसे अद्भुत गुणखानी ॥
पुरुष जाति है गर्व कर रही जिनके ऊपर।
नारि जाति थी प्रथम शिक्षिका उनकी भू पर ॥

(७)

पकड़ पकड़ उंगली हमने चलना सिखलाया।
मधुर बोलना और प्रेम करना सिखलाया ॥
राजपूतिनी भेषधार, मरना सिखलाया।
व्याप्त हमारी हुई स्वर्ग और भू पर माया ॥

(८)

पुरुष वर्ग खेला गोदीमें सतत हमारी।
भले बना हो सम्प्रति हम पर अत्याचारी ॥
किंतु यही सन्तोष हटी नहिं हम निज प्रणसे।
पुरुष जाति क्या उऋण हो सकेगी इस ऋणसे ॥

भगवन ! हमपर दया दिखाओ,
ज्ञान-सुधा जगपर बरसाओ।
अब फिरसे हे नाथ बनाओ ॥
भारत स्वर्गागार !
जयति वीर भगवान !

आज तुम्हारी पुण्य स्मृति पर,
भक्ति-प्रेमसे गद् गद् होकर।
लाये श्रद्धाञ्जलि शशि-शीकर ॥
नाथ ! करो स्वीकार !
जयति वीर भगवान !

आधुनिक शिक्षा प्राप्त जैन युवक।

(लेखक—श्री० ज्योतिप्रसाद जैन विशारद बी० ए०-आगरा।)

(सुमतिप्रसाद जैन इस वर्ष बी० ए० पास करनेके पश्चात् आगरा कालिजमें कानून तथा दर्शनशास्त्रका अध्ययन कर रहे हैं। मि० निर्मलस्वरूप गुप्ता भी बी० एस० सी० कर लेनेके पश्चात् उसी कालिजमें कानून तथा गणितशास्त्रका अध्ययन कर रहे हैं। गत निर्वाणोत्सवके दिन मंदिरमें लड्डू चढ़ानेके उपरान्त शास्त्रभवनमें दोनोंका साक्षात्कार होता है। निर्मलस्वरूप गुप्ताको मंदिरमें देखकर सुमतिप्रसादको बहुत आश्चर्य होता है।)

सुमतिप्रसाद जैनः—अरे मि० गुप्ता, क्षमा करिये, क्या आप जैन **हैं**?

निर्मलस्वरूप गुप्ताः—हां मि० जैन, हूं तो मैं भी जैन ही। आपको आज ही ज्ञात हुआ?

सुमति० जैन—भाई, मुझे तो वास्तवमें आज ही मालूम हुआ कि आप जैन हैं। और पहले मालूम भी कैसे होता, अपने नामके साथ तो आप जैनके स्थानमें 'गुप्ता' शब्दका प्रयोग करते हैं। सम्भव है जैन लिखनेमें कुछ लज्जा अनुभव करते हों! मंदिरमें आजके पहले कभी आपको देखा नहीं। 'जैन विद्यार्थी संघ' की किसी मीटिंगमें भी आपके दर्शन न हुए। कालिजके जैन विद्यार्थियोंकी संख्या जाननेके जोर२ प्रयत्न 'संघ' ने किये उनकी भी पकड़में आप न आसके। अस्तु उक्त अनभिज्ञता क्षम्य ही है।

नि० स्व० गुप्ताः—मित्र, इस सबके लिये मैं स्वयम् लज्जित हूं। किन्तु इस अकर्मण्यताका कारण केवल मेरा प्रमाद ही नहीं है।

सुमति०—तो क्या मैं भी जान सकता हूं कि वह ऐसे कौनसे कारण हैं, जो आपको अपनेको जैन कहनेमें भी बाधा पहुँचाता है।

नि० स्व०—अवश्य, आप मेरे सहपाठी एवं मित्र हैं अतः आपसे हृदयकी बात कहनेमें क्या हानि। ध्यान पूर्वक मेरी राम कहानी सुनिये और तब निष्पक्ष भावसे देखिये कि मैं इस दोषका कहांतक भागी हूं।

अपने नगरके जिस भागमें मेरे पिता रहते थे, वहां दो विशाल जैन मंदिर थे, और लगभग पचास घर अपनी विरादरीके थे जिनमेंसे अधिकांशकी आर्थिक परिस्थिति पूर्ण सन्तोष जनक थी, तिसपर भी उक्त स्थानमें एक भी जैन पाठशाला उनके बच्चोंको प्राथमिक-लौकिक शिक्षाके साथ२ धार्मिक शिक्षा देनेके लिये न थी। अतः म्युनिसिपालिटी द्वारा स्थापित प्राइमरी स्कूलमें प्राथमिक शिक्षा पालेनेके उपरान्त मैंने गेंग्लो वर्नाक्युलर स्कूलमें प्रवेश किया। वहां भी धार्मिक-शिक्षा प्राप्तिका कोई सुभीता न था। जबकि प्रायः प्रत्येक छोटे बडे नगरमें इसाइयों एवं आर्यसमाजियोंका कमसे कम एक२ हाईस्कूल तथा अनेक स्थानोंमें एक न एक कालिज अवश्य होगा

तब इस धनीमानी जैन समाजके नामसे कालिजकी तो कौन कहे, हाईस्कूल ही, समस्त भारतवर्षमें केवल ५ या ६ दृष्टिगोचर होते हैं। अभी हालमें ही पूज्य वर्णीत्रयने एक जैन कालिज स्थापनका बीड़ा उठाया है, देखिये कि यह धनके लिये इतिहास-प्रसिद्ध जैन समाज इन त्यागियोंके इस महदनुष्ठानमें जो कि उसीके लाभार्थ किया जा रहा है, कहां तक सहयोग देती है। २५०० वर्ष पूर्व अन्तिम तीर्थंकरकी छत्रछायामें विश्वविख्यात 'नालन्दा' विश्व विद्यालय द्वारा जिस सत्य धर्मकी तूती संसारभरमें बोलीथी, क्या उसी धर्मके प्रचारार्थ, उसीके अनुयायियोंसे इस समय केवल एक कालिजकी भी आशा नहीं की जा सकती?

हां मित्र, तो मेरा तात्पर्य यह है कि प्राथमिक शिक्षासे लगाकर विश्व विद्यालयकी शिक्षा समाप्ति तक, एक आधुनिक शिक्षा प्राप्त जैन युवकको धर्मज्ञानके लाभका कोई भी सुभीता नहीं है। घरपर पिता अपने व्यवसायमें फँसे रहनेके कारण, तथा माता उतनी शिक्षिता न होनेके कारण, णमोकार मन्त्र, २४ तीर्थंकरोंके नाम, एक आध स्तुति, नित्य जिन दर्शन, रात्रि अन्न त्याग तथा छना पानी पीना—चाहे धुलना कितना ही मैला क्यों न हो। इनके अतिरिक्त और कुछ न सिखा सके। उक्त बातोंमें यदि कोई शंका होती तो उसका कोई समाधान नहीं मिलता।

भाद्रपद मासमें जैनोंका धार्मिक उत्साह अपनी चरम सीमाको पहुंच जाता है। उक्त महिनेमें पूरे वर्षभरके व्ययके लिये पुण्य संचय करलिया जाता है। अधिकांश स्थानोंमें तो केवल उसी मासमें वैतनिक अथवा अवैतनिक पंडितोंद्वारा शास्त्र सभा कराई जाती है। उन शास्त्र सभाओंमें मैं जब २ गया, या तो पंडितजीको ऐसे पारिभाषिक शब्दोंकी भरमार करते पाया कि कुछ समझमें ही न आता था, या वह क्रियाकांड सम्बन्धी ऐसे संकुचित विचारोंका प्रचार करते होते थे कि जिनमें समय और परिस्थितियोंके लिये कोई स्थान न था। या पंडितजी कोई ऐसी कथा कहते होते थे और वह भी इस ढंगसे कि जिसकी असम्भव एवं कल्पनातीत बातें सुनकर अपनी श्रद्धाको दृढ़ रखना टेढ़ी खिर हो जाता था।

इस सबका पाल यह हुआ कि धार्मिक विश्वास अचल न रह सका। तिस पर यदि कोई आर्यसमाजी, ईसाई व अन्य मतावलम्बी मित्र जैन सिद्धान्त सम्बन्धी कोई प्रश्न कर बैठता तो उसका उत्तर न बन पड़ता, अपनी निजकी अनभिज्ञताके कारण उनके सामने हास्यास्पद बनना पड़ता। अतः अपने आपको जैन न कहनेमें ही कल्याण समझा। न होगा बांस न बजेगी बांसुरी।

सु० प्र०—वास्तवमें मि० गुप्ता तुमने बिल्कुल ठीक कहा। इसमें तुम्हारा उतना दोष नहीं जितना हमारी समाजका, हमारे माता पितादिकोंका है। अनेक व्यक्तियोंसे मेरी इस विषयमें बातचीत हुई, किन्तु मैंने तो यही परिणाम निकाला है कि जो तुम्हारे साथ बीती है वही अधिकांश आधुनिक शिक्षाप्राप्त जैन युवकोंके साथ बीती है, और उनकी भी ठीक तुम्हारे जैसी ही दशा है। केवल

श्रीमान् विद्वद्वर्य पंडित अजितकुमारजी जैन शास्त्री-मुलतान।

[सुप्रसिद्ध निडर लेखक, वक्ता, जैन शास्त्रोंके अपूर्व अभ्यासी व "जैनदर्शन" पत्रके सुयोग्य संपादक; आपका लेख इस अंकमें पृष्ठ ३३ पर पढ़िये।]
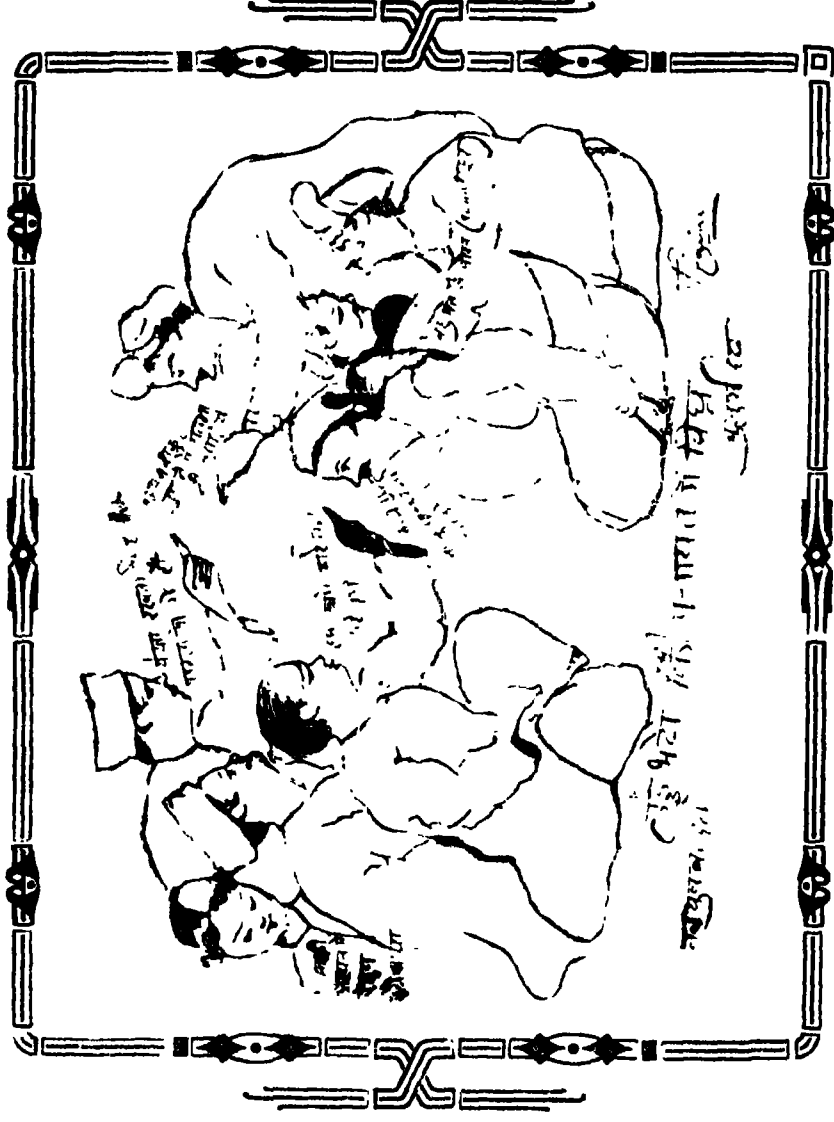
[जब लड्डू भक्तोंकी पंचायतमें मरण भोजके लिये १० मन शक्कर गळानेका प्रस्ताव पास हो रहा है तब नवयुवक दल ऐसे खून भरे लड्डुओंका विरोध करके बुजुर्ग दलको समझा रहा है।]

Jain Vijaya Press, Surat.

अन्तर इतना ही है कि तुम्हें अपनी दशापर खेद एवं लज्जाका अनुभव तो भी हो रहा है। जब कि तुम्हारी परिस्थितिमें अधिकांश या तो उदासीन रहते हैं या धर्मसे प्रतिकूल होजाते हैं और धर्म-त्याग तक कर देते हैं। अस्तु, अब यह बताइये कि आपके विचारमें इस रोगकी क्या औषधि है।

नि० स्व०—भई मेरे विचारमें तो, जो पूज्य व्यक्ति जैन कालिज स्थापनके लिये उद्योग कर रहे हैं वह करते रहें किन्तु अभीसे समाजके धनी मानी व्यक्तियोंको ५ या ६ कमसेकम पचास २ रुपयेकी छात्रवृत्तियोंका उन योग्य विद्यार्थियोंके लिये प्रबन्ध करदेना चाहिये जो आधुनिक विश्वविद्यालयकी शिक्षाको समाप्त कर धर्म-शास्त्रोंका अध्ययन करना चाहे। इस प्रकार वह लोग निराकुलता पूर्वक किसी योग्य विद्वानके समीप व अन्य किसी प्रकार धर्म शास्त्रका अध्ययन कर सकेंगे। फल यह होगा कि ३ वा ४ वर्षके उपरान्त वह व्यक्ति जैन सिद्धांतके प्रकान्ड आधुनिक विद्वान बन सकेंगे।

वर्तमान जैन विद्वानोंके साथ २ ये लोग भी तब वैज्ञानिक रीतिमें लिखे गए सरल सुबोध जैन साहित्यका निर्माण भिन्न २ भाषाओंमें कर सकेंगे, जिसकी पहुँच न केवल अंग्रेज़ी शिक्षा प्राप्त जैन नवयुवकों तक ही हो सकेगी, वरन् जिसका प्रचार विश्वके समस्त सभ्य एवं शिक्षित जन समुदायमें हो सकेगा। इस विषयमें हमें ईसाई लोगोंसे शिक्षा लेनी चाहिये जिनका धार्मिक साहित्य जो केवल एक छोटीसी बाइबिल पर आधारित है कितना विशाल है!

इस प्रकारका साहित्यिक निर्माण ही आधुनिक समयकी आवश्यक्ताओंकी पूर्ति कर सकता है। इसके अतिरिक्त प्रत्येक गाम तथा नगरमें आवश्यक्तानुसार जैन पाठशालाएं तो अवश्य स्थापित हो जानीही चाहिये। स्थान २ में जैन पुस्तकालय और जैन हाईस्कूल खुल जाने चाहिये। स्कूल तथा कालिजोंमें इस प्रकारके विद्यार्थी संघ स्थापित हों जिनमें धार्मिक विषयों पर वादविवाद, लेख, भाषणादिका सुभीता हो। मेरे विचारमें तो वर्तमानमें जैन समाजके जीवनार्थ इन सब बातोंकी अत्यन्त आवश्यकता है।

सुमति०—मित्र, तुम्हारे विचारोंसे मैं सर्वथा सहमत हूं। वास्तवमें इस समय यही युक्ति वाञ्छनीय प्रतीत होती है। आशा है शीघ्रही समाजके विद्वान और धनवान इस प्रश्नकी ओर ध्यान देंगे तथा नवीन संततिकी शिक्षाका समुचित प्रबंध करेंगे। इस समय यह भी आवश्यकता है कि जैन सिद्धांतका ऐसा विशद विवेचन हो कि प्रत्येक व्यक्ति उसे समझ सके किन्तु उसका खंडन करनेके लिये हरकोई एकदम तय्यार न होजाय। हमारा तुम्हारा जैन युवकोंका यही कर्तव्य है कि शुद्ध चारित्रपूर्वक लौकिक विद्याओंके साथ २ धार्मिक ज्ञान प्राप्त कर निज धर्म, जाति और देशका मस्तक संसारमें ऊंचा करें।

अच्छा जय जिनेश। विलम्ब हो रहा है, आइये चलें।

नि० स्व०—चलिये, जय जिनेश।

(दोनों अपने २ स्थानको चले जाते हैं)

समाजकी वर्तमान स्थिति और सुधारके उपाय।

[लेखकः—पं० परमानन्द जैन शास्त्री–सलावा।]

जैन धर्म और जैनियोंका प्राचीन इतिहास सचमुच बड़ा ही गौरवशाली है। यह बात प्रायः सब ही स्वीकार करेंगे कि भारतके धार्मिक नैतिक विचारोंके विकाशकालमें जैन धर्म व जैन समाज बहुत ही उन्नति–पथपर आरूढ़ था, इतना ही नहीं किंतु अहिंसा धर्मके विकाशके साथ२ देशोद्धारमें भी जैनियोंका पूरा२ हाथ रहा है।

परन्तु पिछली कुछ शताब्दियोंसे उसकी गति बिल्कुल रुकी हुई है। उसके अंग प्रत्यंगोंमें लकवा मार गया है। उसके खूनमें शर्दी आ गई है। अन्ध विश्वासने अपना घर कर लिया है। यदि इस रोगकी शीघ्र दवा न की जायगी तो फिर इसका रोग–मुक्त होना दुःसाध्य हो जायगा। इतना ही नहीं किंतु इसका भविष्य जीवन भी संकटमें पड़ जायगा।

अस्तु, जैन समाजकी वर्तमान अवस्था बड़ी ही शोचनीय हो गई है उसे देखकर सहृदय पुरुषोंके हृदय-पट पर बड़ी चोट लगती है। भगवान महावीर जैसे ज्ञान–सूर्योके उपासक तथा समंतभद्र अकलंक जैसे प्रतिभाशाली वादीम-केशरी विद्वानोंकी संतान आज अज्ञानांधकारमें गोते लगा रही है। प्रति सैकड़ा ९० तो विद्या-शत्रु बने हुये हैं व जो पढ़ना चाहते हैं उनको उसका यथेष्ट साधन नहीं है। तथा जो कुछ पढ़ लिख-कर तय्यार हैं वे अपनी आजीविकाके लिये तरस रहे हैं। इतना ही नहीं किंतु सैकड़ों निर्धन जैनी आजीविकासे दुःखी हो अपनी जीवनलीला समाप्त कर रहे हैं। स्त्रियोंकी दुर्दशाका भी कुछ ठिकाना नहीं है। इस उच्चादर्श जैन जातिमें भी लोकरूढ़ियां और अनैक्यता रूप घुन लग रहा है जो इसके सार भागको खोखला किये देता है। कोई २ विद्वान अहंकारता वश जैन धर्मके मौलिक सिद्धांतोंका घात कर रहे हैं तो कोई २ विद्वान उच्छृंखलतावश धर्म और समाजघातक लान जैसी घृणितप्रथाको समदत्तिदान कह कर समाजको धोखा दे रहे हैं। बालविवाह, वृद्ध-विवाह, कन्याविक्रिय आदि कुरीतियोंने इसको जर्जरित कर दिया है। उनका नैतिक चारित्र भी अधोदशाको पहुंच चुका है। उनमें बल साहस अध्यवसायका नाम नहीं है। प्राचीन धार्मिक ग्रंथ ग्रंथ–भंडारोंमें पड़े २ सड़ रहे हैं। एवं दीमक कीटकादिके भक्ष्य हो रहे हैं। दीन दुर्बल सताये जा रहे हैं, उनके साथ अनेक प्रकारके अत्याचार किये जाते हैं। वर्तमान

शिक्षा संस्थाओंमें व्यवस्थाकी बड़ी कमी है। हमारे धार्मिक कार्यों पर आघात हो रहे हैं। संसारको गौर पति कृष्ण और धूसर जातियां उन्नतिपथमें शीघ्रतासे बढ़ती चली जा रही है। शक्तिशाली राष्ट्र और बलवती जातियां कैसे कैसे कूट नीतियोंके पासे फैंककर निगल एवं अल्प संख्यक जातियोंको निर्गल जानेका प्रयत्न कर रहे हैं। इस प्रलयकारी विक्षुब्ध संसार-सागरमें जबकी बड़े २ सत्ताधीश डांवाडोल हो रहे हैं तब हमारी इस जीर्णशीर्ण झांझरी नौकाकी क्या स्थिति होगी, इसकी हमें जरा भी चिंता नहीं है। मानों हम ऐसी भीषण विषमावस्थामें भी मल्हार गा रहे हैं। हमारी समाज व उसके नेतागण इन पेंचीली और उलझी हुई समस्याओंको हल करनेकी भी आवश्यक्ता नहीं समझती। किसी कविने सच कहा है।—

"हम ठोकरें खाते हुए भी होशमें आने नहीं।
जड़ होगये ऐसे कि कुछ भी जोशमें आते नहीं॥"

अस्तु, उक्त भीषण विषमावस्थामें भी यदि जैन समाज अपना कल्याण चाहता है अथवा उसके नेतागण उसको उन्नत बनाना चाहते हैं, तो उनका परम कर्त्तव्य है कि वे उसकी उन्नतिके बाधक कारणोंको हटावें एवं निस्वार्थभावसे उसके उन्नत बनानेमें अपनी आर्थिक और मानसिक शक्तियोंके साथ२ अपने जीवनको भी धर्म व जाति रक्षार्थ समर्पण करदें। क्योंकि प्रत्येक राष्ट्र व जाति धार्मिक, लौकिक विज्ञानके साथ२ संघ-शक्ति और संगठनशक्तिसे ही उन्नति शिखरारूढ़ हुए हैं। अस्तु, सबसे प्रथम जैन समाजमें जो शिक्षाकी कमी है उसे पूरा करना चाहिये। इस बातको हरएक आदमी स्वीकार करेगा कि सबकी उन्नतिकी जड़ शिक्षा है। उस शिक्षाका मुख्य उद्देश्य हमारी शारीरिक मानसिक और नैतिक शक्तियोंका विकाश करना है। जिस शिक्षासे हमारा हृदय उदार और निष्कपट एवं मन विचारशील नहीं बनता वह शिक्षा प्रशंसनीय नहीं कहला शक्ती।

अस्तु, हमें खेदके साथ लिखना पड़ता है कि हमारी जैन समाजमें प्रथम तो ऐसी उच्च शिक्षा-संस्थाओंका अभाव है जिनसे वैज्ञानिक ढंगसे धार्मिक विद्याका प्रौढ़तासे शिक्षण होता हो तथा साथमें लौकिक कार्योंकी भी उचित एवं समयके अनुकूल शिक्षा दी जाती हो। दूसरे शब्दोंमें इसे इस रूपमें कह सक्ते हैं कि जैन विश्व विद्यालय और जैन कालेजका अभाव है। इसी कारणसे धार्मिक और लौकिकज्ञानके परिज्ञानी निःस्वार्थी प्रभावशाली विद्वानोंका तो अभावसा है। और जो कुछ है उनको उक्त कार्योंसे उदासीनता है।

हमारी धनिक समाज भी मंदिर, रथ प्रतिष्ठा, विवाह आदि कार्योंमें सहस्रों रुपया व्ययकर रही है। किंतु उक्त प्रकारकी उच्च शिक्षा-संस्थाओंका उद्घाटन कर रूपयोंका सदुपयोग करना नहीं जानती हैं। लेकिन एक दूसरेको नीचा दिखानेमें और मुकद्मेंबाजी करनेमें अपनी सम्पूर्ण शक्तियोंका व्ययकर रही है।

वर्तमानमें जो प्रचलित विद्यालयादि संस्थायें हैं उनकी वर्तमान शिक्षा पद्धतिमें बहुत कुछ सुधार करनेकी आवश्यक्ता है। जबतक इन शिक्षा

संस्थाओंकी व्यवस्थामें और उनके वर्तमान शिक्षण कार्यमें उचित सुधार न किया जायगा तबतक उनसे यह आशा नहीं कीजासक्ती कि वर्तमान समयकी प्रगतिके अनुकूल निस्वार्थी, उदार, अनुभवी, साहसी उभय विद्याओंके पारगामी, विद्वान हों जो धार्मिक उन्नतिके साथ २ अपनी आत्माके उत्कर्षके अभिलाषी हों।

२—दूसरे जैन समाजमें जो प्रचलित सभासोसाइटी हैं उनसे जैसा समाजका हित होना चाहिये नहीं होता, उसका यह कारण है कि आपसी खैंचातानी बाबू पंडित पार्टी, गोबर पंथ आदि समस्यायें हैं जिनसे उनका कार्यक्रम दूषित है एवं उनके संचालकगण एक दूसरेकी निंदा करनेमें ही अपना महत्व समझते हैं। क्या ही अच्छा हो यदि धर्मसंरक्षणी महासभा और प्रांतिक सभाओंकी नियमावलिमें सुधार होजाय तो निःसन्देह समाजका हित हो।

३—तीसरे समाज सुधारके लिये संगठन शक्तिकी भी अत्यन्त आवश्यक्ता है क्योंकि जितने राष्ट्र और जातियां समुन्नत अवस्थामें देखे जाते हैं वे सब संगठन शक्तिसे सम्पन्न एवं बलवान देखे जाते हैं। जिन्होंने जर्मनी साम्राज्यकी उन्नतिका इतिहास पढ़ा हो उन्हें मालूम होगा कि उनमें कैसा संगठन और उन्होंने संस्थाओंकी व्यवस्थाका कितना उचित प्रबन्ध किया था।

इतना ही नहीं किंतु दुनिया एक स्वरसे यह कहती है कि उनकी संगठन शक्ति सब राष्ट्रोंकी अपेक्षा अच्छी है। जैनियों! अब सोनेका समय नहीं है, इस कुम्भकर्णी निद्राको छोड़ो व अपने अपने अस्तित्वकी तरफ ध्यान दो। बचपनके जहरीले संस्कार और विलासप्रियता, अनुदारता, स्वार्थतत्परता आदि दोषोंको छोडनेका प्रयास करो जिनसे तुम पतित हुए हो। तथा समाज सुधार, शिक्षा प्रचार, धर्मप्रचारकी तरफ दृष्टिपात करते हुए अपने अध्यवसाय एवं बलवीर्यका परिचय दो जिससे भूमण्डलमें अहिंसामयी दिव्य पताका फहरावे जिससे अहिंसा धर्मके ऊपर जबर्दस्ती मढ़े गये कलंक धुल जावे एवं पूर्वजोंके समान तुम्हारी भी धवल कीर्ति दिगंत-व्यापी हो।

४—अहिंसा धर्मका प्रचार करनेके लिये एक प्राचीन साहित्यका अनुसंधान करनेवाला प्रौढ़ गम्भीर लेखोंमें भूषित एवं स्याद्वादका रहस्य दिगंत-व्यापी करनेवाला पत्र निकाला जाय जिससे भारतियोंके साथ २ विदेशी विद्वान भी जैन धर्मके मौलिक सिद्धांतोंके रहस्यको समझें।

यदि जैनियो! तुमने जातिकी सुधारकी तरफ ध्यान नहीं दिया एवं ऐसी खैंचातानी, पारस्परिक विद्रोहानलमें अपनी बलवती शक्तियां भस्म करते चले गये और मिथ्यात्वके साथ २ प्रचलित धर्मघातक रूढियोंके ही गुलाम बने रहे तो इसमें संदेह नहीं कि तुम अपने अस्तित्वसे भी हाथ धो बैठो।

अस्तु—अब भी समय है। यदि सम्पन्न होनेकी अभिलाषा है तो सुधारके उक्त एवं अन्य उचित तरीकोंपर अमल करो। अपनी सन्तानको सभ्य सुशील एवं आदर्श बनाओ एवं अपने भाइयोंको विधर्मी होनेसे बचाओ तभी धर्म व जैन समाजकी उन्नति होसक्ती है।

मृत्युभोज।

लेखकः—
पं. हीरालाल जैन शास्त्री—उज्जैन।

किसी भी कार्यका प्रारम्भ कोई खास उद्देश्यको लेकर होता है। जबतक उसका मूल उद्देशानुसार प्रवर्तन होता है, तबतक वह कार्य यौगिक कहलाता है। किन्तु पीछे यथार्थ उद्देश्यसे च्युत हो जानेपर भी जब वह कार्य गतानुगतिक रूपसे ही होने लगता है, तब उसे रूढ़ि शब्दसे कहने लगते हैं।

आज जैन समाजमें ही क्या, अपि तु भारतवर्षकी प्रायः सभी जातियोंमें जो रूढ़ियां दिखाई पड़ रही हैं, उनका प्रारम्भमें कोई न कोई उद्देश्य अवश्य रहा होगा, चाहे वह व्यक्तिगत हो, अथवा समष्टिगत। परन्तु समयके परिवर्तनके साथ ही लोग उन रूढ़ियोंका मूल उद्देश्य भूलते गए और लकीरके फकीर बनकर "हमारे पूर्वजोंने यह काम किया, इसलिए हम भी करते हैं।" यह कहकर उसे करते हुए, रूढिकी शृंखलामें बंधे हुए अपनी अज्ञानताका परिचय देरहे हैं।

'मृत्युभोज' भी उनही रूढियोंमेंसे एक बढ़ी हुई रूढि है। जिसका कि प्रचार भारतवर्षकी प्रत्येक जातिमें है। इस लेखद्वारा उसपर ही विचार करता हूं :

किसी भी मनुष्यकी मौत हो जानेपर उसके नामपर किए गए भोजको मृत्युभोज कहते हैं। यह 'भोज' किसी मनुष्यकी मृत्युके हर्षोपलक्षमें किया जाता हो, यह बात तो किसी भी बुद्धिमान् मनुष्यके विचारमें नहीं आसकती। यदि थोड़ी देरके लिए इसे 'मृत्युमहोत्सव' भी मानलें, तो फिर मृत्युभोजके समय मृत व्यक्तिके कुटुम्बीजन क्यों रोते चिल्लाते हैं? उस समय तो उन्हें प्रसन्नचित्त हो स्वयं भी लाडुओंपर हाथ मारकर अपनी आन्तरिक प्रसन्नताका परिचय देना चाहिए।

दूसरे यदि इसे गृहत्याग (निष्क्रमण कल्याण) या मरण (निर्वाण कल्याणक) के हर्षोपलक्षमें किया गया माना जावे, तो भी यह बात असंगत जंचती है, क्योंकि किसी भी प्रथमानुयोगकी चर्चामें इसका उल्लेख नहीं मिलता। प्रत्युत इस प्रकारके उल्लेख अवश्य मिलते हैं कि श्री ऋषभनाथके निर्वाण होजानेपर भरत चक्रवर्ती जैसे महापुरुषोंने हम लोगोंसे भी गया बीता विलाप किया, जिसके लिए श्री वृषभसेन गणधरको समझानेके लिए लाचार होना पड़ा था। इसी प्रकार नारायणोंके मरण होनेपर उनके सगे भाई बलदेव भ्रातृस्नेहके कारण ६ महीनोंतक उनके सबोंको कंधेपर टंगे हुए फिरा करते हैं। अगर तब ऐसी दशामें उनके बारंवा, तेरहवीं, 'मोसर' आदिकी तो कथा ही सैकड़ों कोश दूर रह जाती है।

इस प्रकार उक्त निर्णयसे यह बात सिद्ध होती है कि यह मृत्युके हर्षोपलक्षमें नहीं किया जाता है।

यदि मृत्युके दुःसह दुःखके उपलक्ष्यमें किया गया मानें, तो भी यह कथन उचित नहीं जंचता, क्योंकि दुःसह दुखके कारण तो गार्हस्थिक जीवनमें अनेकों आते हैं, फिर उन सबके साथ भी एक २ भोजका विधान लगा हुआ होना चाहिए, जिससे उन दुःखोंके सहनेकी सामर्थ्य प्रगट हो सके, सो भी देखनेमें नहीं आता।

इस प्रकार अनेकों विचारोंके निरन्तर हृदयमें उठते रहने पर मुझे ब्रह्मसूरि कृत प्रतिष्ठातिलक नामके त्रिवर्णाचारके देखनेका अवसर मिला। उसके अन्तिम अष्टम वर्षमें सूतकपातक सम्बन्धी वर्णन है। जहां कि मरण दिवससे लेकर बारहवें दिनतक, प्रत्येक दिनके कार्योंका विधान किया गया है। जोकि प्रायः सभी ब्राह्मणोंके क्रिया-कांडोंसे मिलता है। एवं सर्व प्रकारसे मिथ्यात्व पोषक है। यथा—मृत्युके दूसरे दिन स्त्रियां व कुटुम्बी लोग स्मशान जाकर अग्निमें दूध सींचे। तीसरे दिन जाकर अग्निको बुझावें। चौथे दिन जाकर हड्डियां आदिको एकत्रित कर आवें। पांचवें दिन जाकर एक वेदी बना आवें। छठे दिन जाकर पुष्पांजलि क्षेपण कर आवें। सातवें दिन जाकर बलिकर्म सीझे हुए चांवल वगैरह वहां रख आवें। आठवें दिन वृक्षकी स्थापना करें।

पाठक स्वयं विचारें कि क्या यह उक्त वर्णन सम्यक्त वर्धक है अथवा सम्यक्त कृन्तक? हां, तो प्रकरणमें दुष्ट तिथि, दुष्ट नक्षत्र आदिमें मरनेका प्रायश्चित्त कहा गया है। साथ ही दुर्भिक्ष शस्त्र, अग्नि, जलपातादिसे मरे हुये व्यक्तिके लिए भी प्रायश्चित्तका विधान किया गया है। जिसे पाठकोंके अवगमार्थ उद्धृत करना उचित है। तद्यथा—

तिथिवारर्क्षयोगेषु, दुष्टेषु मरणं यदि।
मृतस्योत्थापनं चादि, दीर्घकालमभूद्यदि ॥११३॥
आर्त्ति दुर्भिक्षशस्त्राग्नि-जलपातादिनाभृतौ।
प्रायश्चित्तं तु पुत्राद्यैस्तदानीमिदमिष्यते ॥ ११८ ॥
महामंत्रं समारोप्य, शान्तिहोमं विधाय च।
अष्टोत्तरसहस्रेण, घटैरष्टशतेन वा ॥ ११९ ॥
जिनस्य स्नपनं कार्यं, पूजा च महतोऽथवा।
दशतीर्थानि वंद्यानि, नव वा सप्त पंच वा ॥१२०॥
गोदानं, क्षेत्रदानं च, तीर्थस्य विदुषामपि।
पंचानां मिथुनानां च, यथा स्वं वसनार्पणम् ॥१२१॥
सहस्रस्य तदर्धस्य. तदर्धस्याथवा तदा।
शतस्यान्नं प्रदेयं वा, तदर्धस्य सधर्मिणाम् ॥१२२॥
अष्टादर्वागिविधायैवं, पूजनीयो जिनोऽघजित्।
एवं कृते तु बंधुनां, स दोष उपशाम्यति ॥१२३॥

अर्थात् यदि किसी मनुष्यका मरण दुष्टतिथि, दुष्टवार, या दुष्ट नक्षत्रमें होजावे, अथवा मृत पुरुषको मरनेके बहुत देर बाद उठाकर जलानेके वास्ते लेगये हो, अथवा अत्यन्त पीड़ा, दुर्भिक्ष, शस्त्र, अग्नि, जलपातादिके सम्बन्धसे किसी बन्धुका मरण होजाय तो उस समय मृत पुरुषके पुत्रादिकको यह प्रायश्चित्त करना चाहिए।

महामन्त्रकी आराधना कर शान्तिपाठ होमादिको करके १००८ या १०८ कलशोंसे श्री जिनदेवका अभिषेक करे। अथवा महती पूजा करे। दश, नव, सात अथवा पांच तीर्थोंकी वन्दना करे। तीर्थको अथवा विद्वानोंको गोदान और क्षेत्र (भूमि) दान करे, पांच सात धर्मी स्त्री पुरु-

बंके जोड़ोंको यथायोग्य वस्त्रादिक भेंट देवे। साथ ही एक हजारको, या पांचसौको, अढ़ाई सौको या सौको, अथवा पचास साधर्मी जनोंको आहार दान करे। इस प्रकार जिनभगवानकी पूजा करने व उक्त कार्यके करनेसे बंधु जनोंके ग्रहादि सम्बन्धी दोष उपशान्त होजाता है।

नोट—अन्तिम श्लोकके प्रथम चरण 'अष्टाद-र्वाग्विधीयैवं' का भाव मेरे समझमें नहीं आया। इतना स्पष्ट प्रतित होता है कि अमुक तिथिके पूर्व ही उक्त क्रिया कांड करडाले अन्यथा वह दोष दूर नहीं होगा।

इस उक्त कथनसे यह ध्वनित होता है कि उक्त परिस्थितिमें ब्राह्मणोंका अनुकरण करनेवाले क्रियाकांड-प्रधानी लोगोंने प्रायश्चित्त स्वरूप ही 'मृत्युभोज' का विधान किया था। हालांकि वह स्वयं मिथ्यात्व पोषक है, जैसा कि उसके पूर्वापर सम्बन्धको देखते हुए स्पष्ट प्रकट होता है। सर्व प्रथम यह प्रथा किसी एक देशीय जनतामें ही वैसी परिस्थितिवश प्रचलित हुई होगी। धीरे२ समयके परिवर्तनके साथ उसका प्रचार बढ़ा और लोग उसके उद्देश्यको भूलते गए।

उक्त बातपर गंभीर मनन करनेसे यह भी पता चलता है कि देखा-देखी लोगोंने अपनी मान कषायके वश इसे अंगिकार किया। जब अमुक व्यक्तिने यह किया तो हम भी इसे करेंगे, क्योंकि क्या हम छोटे हैं? जो उसने लोगोंके लाड्डू खिलाए और मैं न खिलाऊं। यही कारण है कि आज भी अनेकों लोग इस निंद्य प्रथाके विरुद्ध होते हुए भी केवल लोक लाजसे--कि जब हम दूसरोंको उक्त अवसरपर लाड्डू खाए बैठे हैं, तो बदला चुकाना अपना कर्तव्य समझकर खिलाया करते हैं।

आशा है, इस प्रथाके भक्त पाठकगण इसे पढ़कर यथार्थ परिस्थितिकी खोज करेंगे। और अनेको बर्बाद होते हुये घरोंको नष्ट होनेसे बचायेंगे, उन दीन दुखी अनाथ बच्चोंको दरिद्रताके अगाध समुद्रमें ढकेलनेसे विश्राम लेंगे।

आजकल यद्यपि अनेकों स्थलोंपर इस दुष्ट प्रथामें बहुत कुछ सुधार होरहा है और ४० या ४५ वर्षके बाद ही मृत्यु भोजके करनेकी प्रेरणा की जारही है, परन्तु मेरे ध्यानसे तो लोगोंको इसकी यथार्थता समझकर इस घातक प्रथाका एकदम बन्द कर देना ही सर्व-श्रेष्ठ होगा।

सेठ—"मैं चोरीका माल कभी न रखूंगा जिसकी यह बकरी है उसीको वापिस कर दो।"

चोर—"मैंने उसे दी थी परन्तु उसने लेनेसे इन्कार कर दिया।"

सेठ—"ऐसी अवस्थामें तुम ही इसे रख सकते हो"

चोर—"धन्यवाद!"

जब सेठ घर पहुंचा तो उसने अपनी बकरी गायब पाई।

× × ×

"कोई नया समाचार?"

"कलसे आज "जिन्दगी" का एक दिन घट गया है"

× ×

जैन समाजकी वर्तमान दशा।

[रचयिता—पं० गुणभद्र जैन-अगास]

मङ्गलाचरण।

हा ! अपनी ही जांघ आज किस भांति उघाड़ें।
अपने घरका गूढ़ भेद किस भांति सुनावें ॥
लख करके दुर्दशा नीर बहती दृग धारा।
कहां गया ऐश्वर्य पूर्व उत्कृष्ट हमारा ? ॥
जितने हम ऊँचे रहे, उतने ही अब गिर रहे।
इस विशाल संसारमें, निर्बल जाते हैं कहे ॥१॥

× × ×

कर प्रभुका संस्मरण—लेखनी! जो कुछ लिखना।
सो लिखदें निर्भीक शर्म नहिं इसमें रखना ॥
जबतक जीवित रहो नित्य कर्तव्य निभाओ।
बतलाओ शुभ मार्ग नहीं उन्मार्ग बताओ ॥
गुण अवगुण क्या वस्तु है, जोलों यह जानें नहीं।
तोलों अपने रूपको, कोई पहिचाने नहीं ॥२॥

पश्चात्ताप।

कहां हमारा ज्ञान और विज्ञान कहां है।
कहां हमारी शान और सन्मान कहां है ॥
कहां गया पाण्डित्य और बलवीर्य हमारा।
सोता है किस ठौर आज हा ! शौर्य हमारा ॥
सबके ही सम्मुख अरे, हम तो अब ऐसे गिरे।
पतित देखकर यों हमें, हंसते हैं नित दूसरे ॥३॥

× × ×

पलट गये सब दिवस हाय, हम हुये भिखारी।
विधिको भी तो नहीं आई कुछ दया हमारी ॥
हिल मिलकरके जहां कार्य करते थे सुखसे।
बढ़ी वहीं द्वेषाग्नि पूर्वके अशुभ उदयसे ॥
छिन्न भिन्न ऐसे हुये, मानों मिट्टीके घड़े।
तो भी मिथ्या ज्ञान पर, रहे निरन्तर ही अड़े ॥४॥

× × ×

जहां कलहका नाम वहां पर प्रीति कहां है ?
जहां स्वार्थका वास वहांपर नीति कहां है ?
जहां कलुषता रहे वहां सद्धर्म कहां है ?
जहां दृष्टि है दुष्ट वहां सत्कर्म कहां है ?
शनैः शनैः दुर्गुण सभी, आकरके हममें बसे।
उन्नति पथ तजकर त्वरित, हर्षित नीचेको धसे ॥५

× × ×

भूलोंका परिणाम सामने अब लख लीजे।
लखकर उसको कहो न किसका हृदय पसीजे ॥
हा ! अन्तर रो उठे सोच होता है अतिशय।
होगा क्या फिर कभी पूर्वसा जीवन सुखमय ॥
हे करुणामय ! कर कृपा, सत्वर वे दिन लाइये।
अपनी इस संतानके, सब ही दुःख भगाइये ॥६॥

अपमान।

होता है अपमान हमारा हा ! पद पद पर।
लेकिन होता हृदय दुखित कब इसको लखकर ॥
रोका जाता मुनि विहार, हम दीन कहाते।
रथ भी तो निर्विघ्न यहां कब फिरने पाते ? ॥
होते हैं आक्षेप हा, हमपर प्रतिदिन ही नये।
आता नहिं उठना हमें, ऐसे हैं सोये हुये ॥७॥

अविद्या।

यद्यपि शिक्षाभवन अनेकों आज दिखाते।
फिर भी विद्या हीन विश्वमें लेखे जाते ॥
क्या इसका है हेतु लेश भी समझ न आता ?
कब समाजका पुत्र नियमसे शिक्षा पाता ?
चिट्ठी पढ़ना आगया, अथवा खातावही कहीं।
सब विद्याओंकी हुई, मानों इतिश्री ही वहीं ॥८॥

विद्यालय।

दिन प्रतिदिन विद्यार्थी भवन भी खुलते जाते।
सोचो कितने छात्र वहां पर शिक्षा पाते ॥
करते हैं पाण्डित्य प्राप्त वे सम्प्रति जैसा।
इस समाजके लिये कभी अनुकूल न वैसा ॥

करके दश दश वर्ष भी, कठिन परिश्रम अध्ययन।
विद्यालय तज छात्रगण, करते कब उसका मनन ॥९

निकले हुये विद्यार्थी।

करके पूरा कोर्स किसी विधि छात्र विचारे।
फिरते हैं पेटार्थ हाय फिर मारे मारे ॥
शारीरिक श्रम नहीं भूलकर कर सकते हैं।
है अधर्म इसलिये नहीं वे मर सकते हैं ॥
सुन्दर शिक्षणके लिये, सतत परिश्रम था किया।
विधिने होकरके कुपित कटुक अरे क्यों फल दिया ॥

निर्धनता।

वैश्योंकी लख द्रव्य हीनता रोना आता।
व्यापारोंका केन्द्र वैश्य समुदाय कहाता ॥
गया सभी परदेश रह गये हाथ मसलते।
परिजनके भी लोग आज नहिं हमसे पलते ॥
द्रव्य विना घरमें कलह, होती रहती है सदा।
हमसे क्या क्रोधित हुई, सचमुच देवी-संपदा ॥११

जाति-बंधन।

बढ़ा हुआ है जातिभेद भी आज भयंकर।
इसका तो परिणाम पा रहे अधिक युवक वर।
अविवाहित वे रहें सर्व जीवनमें देखो।
जाते हैं परलोक वंश निःशेष विलोको ॥
कितने ही इस भांति हा! होते जाते बंद घर।
करते हैं इस ओर कब? सावकाश होकर नजर ॥१२

× × ×

यह यौवन आवेश दीर्घ जब सहा न जाता।
चित्त प्रचुर सन्ताप किसीसे कहा न जाता ॥
अनाचार ही गुप्त रूपसे तब वे करते।
होकर रोगाधीन शीघ्र असमयमें मरते ॥
लखकरके ये दृश्य सब, यहां न हृदय पसीजता।
बन्धनसे भी तो अधिक, होती जाती हीनता ॥१३॥

सोच।

होकरके सन्तान एक प्रभुकी हम न्यारे।
पड़े हुये हैं मृतक-तुल्य आदेश विसारे ॥
कुछ दिन भी यदि यही प्रवर्तन और रहेगा।
तो भूतलमें नहीं नाम भी शेष रहेगा ॥
जहां तहां मंदिर शिखर, अथवा ये प्रभु मूर्तियां।
प्रगट करेंगी विश्वमें दुर्मतियोंकी रीतियां ॥१४॥

मतभेद।

था हित दर्शक मार्ग एक ही जहां मही पर।
पड़े अनेकों भेद बुद्धिसे आज वहीं पर ॥
हो हा! इस विधि छिन्न-भिन्न निज शक्ति गमाई।
कर न सके इस हेतु भाईकी भाई भलाई ॥
नित ही नूतन पंथ अब, होते हैं प्रगटित यहां।
एक चित्त होना अरे, हमने सीखा है कहां ॥१५॥

वर्तमानकी उदारता।

शनः शनैः सब धर्म भाव भी नष्ट हुआ है।
अपना ही सन्मान विश्वमें इष्ट हुआ है ॥
भले मरे या जिये दूसरा काम नहीं है।
क्योंकि हमको जरा कष्टका नाम नहीं है ॥
दीर्घ-दृष्टि हममें नहीं, बने कूप-मण्डूक हम।
तो उदारता पाठको, सीख सकें किस भांति हम॥१६

पञ्च।

दम्भ, द्वेष, अभिमान स्वार्थकी जहां अधिकता।
वह नर कैसे कहो पंच निस्पृही बन सकता ॥
आती है अति हँसी बात सुनकर अब इनकी।
मानों हां हो चुकी धर्म सम्पद भी इनकी ॥
जरा जरासे दोषपर, देते दण्ड प्रचण्ड हैं।
हाय! गरीबोंपर सदा, चलते इनके दण्ड हैं ॥१७॥

पंच प्रणाली।

वर्तमानमें देख जातिमें पंच प्रणाली।
पक्षपातसे कहो कौन पंचायत खाली ॥
फोड़े जाते यहां फफोड़े अपने मनके।
देखे जाते यहां दोष निर्दोषी जनके ॥
निर्धनको ही चूसना, सचमुच इनका काम है।
ईश्वर! पंचायत प्रथा, कलियुगमें दुखधाम है ॥१८॥

जैनधर्ममें उदारता और जैनोंकी अनुदारता।

[लेखकः—पं० मंगलप्रसाद जैन शास्त्री-वासौदा।]

जिस मनुष्यने जैन धर्मका थोड़ासा भी मनन किया होगा जिसका हृदय रुढ़ियोंका गुलाम न होगा. वह यह [illegible] विना नहीं रह सकता कि संसारके सर्व धर्मोंमें श्रेष्ठ एवं उदार धर्म हो सकता है तो एक जैन धर्म ही हो सकता है। इसमें सन्देह नहीं कि इसकी छत्र-छायोंमें रह कर हरएक प्राणी अपनी २ योग्यताके अनुसार आत्मकल्याण कर सकता है। और किया है। चाहे वो चान्डाल, भील, चमार. तेली, तमोली. कोरी, धीवर क्यों न हो। इतना ही क्यों, पशुओं तकने इस धर्मका पालन कर आत्म कल्याण किया है, क्योंकि जैन धर्म प्राणी मात्रका धर्म है। हमारे शास्त्रोंमें एक नहीं दो नहीं बल्कि ऐसी बातोंके सेकड़ों उदाहरण मिलेंगे। पूज्य तीर्थंकर महावीरस्वामीका जीव एक हिंसक सिंह ही तो था। जिसे मुनिराजने संबोध-कर जैन धर्म धारण कराया था। और वह आयुके अन्तमें मरकर प्रथम स्वर्ग गया। और उन्नति करते२ महावीरस्वामी हुआ। इसी प्रकार पूज्य पार्श्वनाथजीका जीव हाथी था जो परम दयालु अरविन्द मुनिके उपदेशसे जैन धर्म पालकर बार-हवें स्वर्ग गया था। और अन्तमें पार्श्वनाथ स्वामी हुआ। कहनेका तात्पर्य यह है कि अच्छा संयोग मिलनेपर यदि उस जीवका उदय अच्छा है तो हरएक जीव इस पतित पावन धर्मको पालकर स्व कल्याण कर सकता है।

जैन धर्म किसी भी जाति एवं वर्णवाले मनु-ष्योंको किसी भी कालमें धर्मसेवनकी मनाही नहीं करता है। जो भी पालन करना चाहे खुशीसे कर सकता है। हरिवंशपुराणमें लिखा है कि—

१-त्रिपद नामके धीवर (कहार)की लड़की जिसका कि नाम पूतगन्धा था अर्थात् उसके शरीरसे दुर्गन्ध आती थी. समाधिगुप्त मुनिने उसे श्रावकोंके व्रत दिये. जिसे वह सच्चे हृदयसे पालन कर अंतमें मरण कर सोलहमें स्वर्ग गई।

२-महा पातकी मृगसेन धीवरने जैनधर्म स्वीकार कर उत्तम पर्याय पाई।

३-अनंगसेना वेश्या जिन दीक्षा लेकर स्वर्ग गई। ४-देवलिग्राम पटैलकी पुत्री जो कि सूद्री थी. उसने एक दिन मरे हुये कुत्तेका मांस मुनिराजके सामने डाला। मगर उत्तम क्षमाके पालक मुनिराजने उसे क्षमा प्रदानकर "जिनगुण-सम्पत्ति" और श्रुतज्ञान ये दो व्रत धारण कराये. जिसे वह विधिपूर्वक पालनकर दूसरे स्वर्ग गई।

५—श्रीमती पण्डिता धाय जो शूद्री थी महां-पूत जिनालयकी वन्दना की और कुछ समय पश्चात श्राविका होगई।

६—मणिभद्र और मानभद्र नामके दो वैश्य-पुत्रोंने एक चाण्डालको श्रावकके व्रत ग्रहण कराये और उन व्रतोंके कारण वह चाण्डाल सोलहमें स्वर्गमें महाऋद्धिधारक देव हुआ।

७—व्यभिचारोत्पन्न कार्तिकेय मुनि होकर महान जैनाचार्य होगये।

८—श्री नेमनाथ स्वामीके चचा वासुदेवने मलेच्छ राजाकी पुत्री जिसका कि नाम जरा था विवाह किया था और उसमे जरत्कुमार उत्पन्न हुये थे जो जैनधर्मके बड़े श्रद्धानी थे और उन्हों-ने अन्तमें मुनि दीक्षा धारण की. इतना ही क्यों साक्षात् महावीरस्वामीके समवसरणमें सभी वर्णके मनुष्य बराबर बैठकर आत्म कल्याग करते थे। उपर्युक्त दृष्टांतोंमें यह अच्छी तरह ज्ञात होजाता है कि जैन धर्मपर किसी खास जाति या वर्णकी शील मुहर नहीं लगी हुई है कि वही पालन करे और पालन न करें। हर एक प्राणी इस धर्मका पालन कर स्वात्म कल्याण करसक्ता है।

मगर बड़े दुःख एवं शर्मकी बात है कि वर्तमानमें इसके अनुयायियोंने ऐसे उदार एवं विश्व धर्मको निजी पैत्रिक सम्पत्ति समझ रक्खी है। वह न तो खुद ही उसका ठीक २ उपभोग करना चाहते हैं और न दूसरोंको ही करने देना चाहते हैं। जो हमारे दुर्भिमान एवं बद ख्या-लातोंके और कुछ नहीं कहा जासक्ता है। और यही कारण है कि आज इस पतित पावन धर्म-के विषयमें जन समुदायमें नाना प्रकारकी अ-सत्य धारणाएँ उत्पन्न होगई हैं। कोई इस धर्मको नास्तिक कहता है तो कोई राष्ट्र नाशक तो कोई कायरोंका धर्म कहनेका साहस करता है। जिसके कारण हमीं लोग हैं। हमने जिन वाणीको तिजोड़ियोंमें बन्द कर रखनेकी चीज सम-झा या दो चावल दानेके चढ़ानेमें ही जिनवाणी भक्तिका परिचय दे दिया। हमने दूसरोंको अपना धर्म बतानेमें बड़ा भारी पाप समझा, फिर भी ऐसी समाज पराभवको प्राप्त न हो तो कौन होवेगी?

शूद्र ग्यारह प्रतिमाका पालन करे तो भले ही करे, मानो मोक्षके कारणभूत सम्बर और नि-र्जरा भले ही करता रहे।

मगर देव दर्शन, शास्त्र पठन जो शुभाश्रवके कारण हैं उन्हें नहीं करसक्ता। भला हमारी इस धांधलबाजीका भी कोई ठिकाणा है। जिस समय मथुरामें मरी रोगका दौड़ दौड़ा था उस समय उस रोगकी निवृत्तिके लिये सप्तर्षियोंने प्रत्येक घरमें जिन प्रतिबिम्ब रखनेका उपदेश दिया था और यह कहा था कि जिस गृहमें जिन प्रतिमा नहीं रक्खी जावेगी उस घरके मनुष्योंको मरी रोग वैसे ही खाजाइगा जैसे मृगीके लिये व्याघ्र। क्या उस शहरमें रहनेवालों शूद्रोंको इस बातका निषेध किया गया था? नहीं, कदापि नहीं, जैन धर्म शूद्रोंसे द्वेष एवं ब्राह्मणादि जातियोंसे प्रेम रखता हो. सो नहीं हो सकता, वह तो सूर्यकिरण वत समदर्शी है। चाहे वह

कान्त धर्मकी किरणोंको फेलायेगा । जैन धर्मको शूद्र पालेंगे तो धर्म न शूद्र हुआ है और न हो सकता है बल्कि अपवित्र कही जानेवाली जातियां पवित्र ज़रूर होजायेंगी जो होना ही चाहिये। मगर हमारे इन दूषित ख्यालातोंने तथा ईर्ष्या, द्वेषादि विचारोंने आज हद्द कर दी। शूद्रोंको जाने दीजिये, यह तो बहुत दूरकी बात है, अपने निज भाईयोंको जरा२ सी वात परसे जाति च्युत और धर्म च्युत करनेमें ही शान समझ रक्खी है, वे वेचारें निराश्रित हो विधर्मी होते चले जारहे हैं।

हम इन निरपराध गरीब भाइयों पर अपनी शक्तिका दुरोपयोग कर बर्षोंके वैरभावका बदला निकालते हैं। अगर कोई गरीब भाई किसी श्रीमान्‌के अन्यायके खिलाफ जरासी वात कहता तो समझ लो उस बेचारेको शामत आगई, वह हर तरहसे दबाया धमकाया जाता है जिसका कि दुष्परिणाम यह हुआ कि आज हम हर पहलूसे गिर गये हैं और इतने गिरे कि शदियों तकमें नहीं उठ सकते हैं। धन बल, जन बल, राजबल विद्याबलोंसे विहीन हो कायर बन अन्याय और अत्याचारोंको चुपचाप सहन करते चले जा रहे हैं।

हा! कितने दुःखकी बात है कि जिनके पूर्वज बड़े पराक्रमी, उदार और शक्तिशाली थे उन्हींकी सन्तान आज हम कायर, अनुदार, शक्तिहीन दशामें देखनेमें आ रहे हैं, जिसके कि कारण हम स्वयं हैं। दूसरोंको लाच्छन देना भूल है। हमने दूसरोंको अपनाया नहीं, उनके साथ ईर्षा एवं द्वेष किया जिसका कि फल हमको भोगना ही चाहिये, क्योंकि कर्मफल अमिट है। मौजूदा हालतमें भी हमारे बहुतसे पंडित कहे जानेवाले भाई अपने आपको धर्मके ठेकेदार समझ जैनेतर समाजको धर्म बतलानेमें पाप समझते हैं। मानों उन बुद्धिमानोंकी समझमें धर्म क्या हुआ एक छुई मुईका पेड़ हुआ, जो छुआ कि मुरझा गया!

ये धर्मके ठेकेदार स्वयं धर्म प्रचार नहीं करना चाहते और न दूसरोंको ही करने देते हैं। अगर कोई धर्म वीर करनेको तय्यार होता है तो ये ठेकेदार भाड़ोंकी तरह धर्म डूबा २ की कर्णकटुक आवाज़ोंसे भोली समाजको भड़का कर उपेक्षित कर देते हैं। क्या भविष्यमें इससे होनेवाले बड़े भारी पापके प्रायश्चित्त रूप इन धर्मके ठेकेदारोंको दुर्गतिका भाजन नहीं बनना पड़ेगा? भोगना पड़ेगी और अवश्य भोगना पड़ेगी। मैं ऐसे महानुभावोंसे सनम्र प्रार्थना कर देना चाहता हूं कि तुम्हें धर्म प्रचार अभीष्ट नहीं है तो न सही। मगर उन धर्मवीरों पर दया करो, जो धर्म प्रचारमें अपना शरीर तक अर्पण करनेको तय्यार हैं। अगर धर्म प्रचार करनेमें धर्म डूबता है तो डूबने दो। तुम कौन होते जो रोड़ा अटकाते हो। तुम अपने धर्मको बचाये रक्खो और ऐसा रक्खो जिससे किसीको हवा तक न लगने पावे।

अब वह समय नहीं रहा है जिस समय तुम्हारी हां में हां मिलानेवाले बहुत थे, अब समाज कुछ२ सचेत हो चली तथा आप लोगोंकी चाल-

वाजीको भी पहचानने लगी कि ये लोग सिवाय स्वार्थ साधनके कुछ करते धरते तो हैं ही नहीं। अतएव प्रिय धर्म बंधुओ, "बीती ताहि बिसार देय, आगेकी बुध लेय" की लोकोक्तिके अनुसार जो कुछ हो गया सो हो गया। आगेके लिये सचेत हो जाओ और धर्म एवं जाति उन्नतिके लिये कुछ कर दिखाओ। याद रक्खो यदि आप लोग ऐसे अनुकूल समयमें भी सचेत नहीं हुये जब कि संसार सत्यकी तरफ झुक रहा है और उसकी तलाशमें है और भारतकी सम्पूर्ण समाजें उन्नतिके पथपर सरपट दौड़ लगा रहीं हैं, अतएव आलस्यको त्यागकर अपने पूर्वजोंके ऊपर दृष्टिपात कर धर्म-प्रचारके कार्यमें लग जाओ। अन्यथा आप अपने अस्तित्वसे हाथ धोकर संसारके इतिहासमें फिसड्डियोंकी लिष्टमें नाम दर्ज कराओगे। इसलिये आपका कर्तव्य है कि कुछ ऐसे काम कर दिखाओ जिसमें आपका यश रहे और जाति एवं धर्मकी उन्नति हो।

"कोई नया समाचार?"

"कलसे आज "जिन्दगी" का एक दिन घट गया है।"

× × ×

एक छोटा बच्चा जब पहले पहल अपनी टांगों-पर चलने लगा तो उसकी बड़ी बहिनने चिल्लाकर कहा---

अम्मा! देखो बच्चा अपने पिछले पैरोंपर चल रहा है।"

× × ×

जैनसमाजकी उन्नतिके उपाय।

(ले:-पं० मुन्नालालजी जैन काव्यतीर्थ-इंदौर)

हमें क्या ज़रूरत है कि आज ये चिंता पैदा की जाय कि जैन समाजकी उन्नतिके उपाय क्या होसकते हैं? ऐसी चिंता हो भी किसको सकती? इन प्रश्नोंका उत्तर यही होसक्ता है कि जब कोई "उदार चरितानां तु वसुधैव कुटुंबकं" का सिद्धान्त रखने वाला समाज हितैषी भाई, दुनियाकी प्रगतिकी तरफ दृष्टि डालकर, अपने समाजकी तरफ दृष्टिकोनको फेरता है और उसको अपनी अवनति ही अवनति दृष्टिगोचर होती है तब वही व्यक्ति ऐसी चिंता पैदा करता है। वास्तवमें विचारा जाय तो जो समाज किसी वक्त हर हालतमें सब समाजोंसे चढ़ा बढ़ा था। क्या व्यापारमें, क्या कलाकौशलमें और क्या शासन विधानोंमें, उसी समाजकी आज अत्यन्त गई गुजरी अवस्था प्रतीत हो रही है। जो समाज किसी समय सर्वांग रूपसे धनादि सामग्रियोंसे सम्रद्ध था वही आज दरिद्रताका साम्राज्य भोग रहा है इत्यादि दशाओंको देखकर ही ऐसे प्रश्न खडे होते हैं। आज इसी बातका विचार इस लेख-में किया जावेगा, आशा है पाठकगण पठन कर यदि इसमें कुछ तथ्य हो तो ग्रहण करें अन्यथा अग्राह्य समझ उपेक्षा धारण करें।

इस विषयमें अभीतक बड़े बड़े विद्वानोंने प्रकाश डाला है जिसका परिणाम समाज पर

कुछ नहीं हुआ ये बात नहीं है, बहुत कुछ हुआ तथापि वह अभीतक नहींके बराबरी है। जब तक समाजमें अपनी अवनतिके कारणोंको अपने पाससे दूरीकरणकी पूर्ण लगन न उत्पन्न हो जावेंगी तब तक उसकी वास्तविक उन्नति हो सकेगी ऐसी आशा दूर है।

यद्यपि जैन समाज कई विभागों वा पन्थोंमें विभक्त है तथापि परस्परमें गहरा सम्बन्ध है। कुछ धार्मिक प्रक्रियाओंका भेद होनेपर भी बाह्य दृष्टिमें एक है तो भी सामूहिक उन्नतिका होना ही जैन समाजकी उन्नति कही जासकती है।

विज्ञान, कलाकौशल्य, उद्योग और धार्मिक आचरण उन्नतिके ये प्रधान अंग हैं। प्राचीन समयमें हममें ये आदर्श सब मौजूद थे, कुछ समयसे मोह और प्रमादसे तथा स्वार्थांधतासे इन आदर्शोंकी उपेक्षा कर देनेसे हमारी अवनति चरमसीमाको पहुंच चुकी है। समाजको अपने ही द्वारा इन आदर्शोंको पूर्णतया पुष्ट करने होंगे, तभी हमारी गणना संसारकी दृष्टिमें प्रतिष्ठित रूपसे हो सकेगी।

विज्ञान।

विना शिक्षाके किसी भी समाज वा देशने अपना अभ्युदय न दिखलाया है और न दिखला सकेगा, केवल नाम मात्रको अक्षरोंका ज्ञान विज्ञान नहीं कहा जा सक्ता, किंतु हरएक विषयोंका चरमसीमाका ज्ञान ही विज्ञान कहला सक्ता है। सरकारी रिपोर्टोंसे शिक्षिकोंके अङ्क देखनेसे किसी २ विशेष प्रांतोंकी अपेक्षा जैन समाजमें साक्षरोंकी संख्या अधिक भी बतलाई गई है परंतु उससे हमें संतोष नहीं होता है। जब तक कि सारे समाजकी अपेक्षा हमारी उन्नति न बतलाई जावेगी।

समाजमें दो तरहके शिक्षित हैं (१) धार्मिक (संस्कृत प्राकृत भाषाके विद्वान) (२) लौकिक (इंग्लिश भाषाके ज्ञाता। हमें दोनों तरहके विद्वानोंकी आवश्यक्ता है। वर्तमानमें हमारे देशके शासक सात समुद्र पारके हैं। और शासनकार्य उन्हींकी भाषामें होता है, सो भी वह भाषा न केवल उनके शास्य प्रदेशोंमें ही प्रचलित हैं किंतु इस समय सारे दुनियामें उसका प्रचार है। विना उस भाषाको जाने हमारा कोई भी कार्य सुसंपन्न नहीं हो सक्ता किंतु ऐसे विद्वानोंमें जो भारी कमी है वह धार्मिक शिक्षाकी। वास्तवमें देखा जाय तो हमारा इतिहास वा सिद्धांत संस्कृत और प्राकृत भाषामें ही है, उन्हें जाने विना हम अपने सामाजिक और धार्मिक हकोंकी ठीक २ रक्षा किसी प्रकार नहीं कर सक्ते इस लिये अपने धार्मिक सिद्धांतोंके ज्ञाता होनेकी बड़ी आवश्यक्ता इन विद्वानोंमें है। धार्मिक विद्वानोंमें लौकिक विद्याके अभाव होनेसे ये भी दुनियांमें कुछ नहीं कर सक्ते, परोद्धार तो दूर रहा स्वकीय उद्धार करना भी अशक्य है। जैसा कि वर्तमानमें हम लोग देख रहे हैं, इस लिये इन विद्वानोंमें लौकिक विद्याके जाननेकी अत्यन्त आवश्यक्ता है। इन दोनों प्रकारके विद्वानोंमें परस्पर अनैक्य होनेका कारण खास तौरसे एक दूसरेके विचारोंको समता न होनेसे एक दूसरेके विचारोंके सुननेकी क्षमता न होना इत्यादिका

कारण उपर्युक्त प्रकार विद्याओंकी कमी ही है। इस प्रकारकी कभी दूर हो जावे तो ये दोनों आवश्यक अङ्ग परस्पर अविरोधी होकर धर्म, समाज और अपने आपकी हर तरहसे उन्नति कर सकनेमें समर्थ हो सकते हैं।

यद्यपि समाजमें शिक्षा संस्थाओंकी कमी नहीं है वा समाज इस कामके लिये द्रव्य व्यय नहीं कर रहा है ये भी बात नहीं, कमी है केवल ऐसी संस्थाओंकी, जिनमें उपर्युक्त उद्देशोंकी पूर्ति होसके। हर्ष है कि इस समय पूज्य उदासीन वर्णीत्रय अपना कर्तव्य अदा करनेके लिये जीजानसे ऐसी संस्था स्थापन करानेकी कोशिश कर रहे हैं। यदि समाजने उदारता दिखलाकर वर्णीत्रयका उद्देश्य सफल कर दिया तो आये दिन वो होंगे जबकि समाजकी वह कमी पूर्ण होती हुई नजर आवेगी जिससे हमारा उत्थान होनेके साथ २ हमारी गणना हर एक संस्थामें प्रतिष्ठित रूपमें हो सकेगी।

जब लौकिक और धार्मिक उभय विद्याके जानकार विद्वान होंगे तो समाजमें वा जातीय पंचायतोंमें जो धांधलबाजी चलती है वह न चल सकेगी। जिस समाजने विद्वानको मुख्य स्थान दिया है उसका अभ्युदय सर्वत्र होता है।

वर्तमान राष्ट्रिय आंदोलनमें हजारों जैनियोंने तन, मन, धनकी आहुतियां दीं लेकिन दुःख है कि किसी भी जगह जैनियोंका नाम भी नहीं लिया जाता। एवं सरकारी तनाम संस्थाओंमें जैनियोंके प्रतिनिधी नहीं लिये जाते. इसका यही कारण है कि जैन समाजने अभीतक ऐसे विद्वान ही तैयार नहीं किये जिससे यह उद्योत उदित हो कि जैनियोंका भी प्रथक् प्रतिनिधित्व लिया जावे। आशा है वर्णीत्रयके उद्देशानुसार समाजने उचित विद्वत्ता दिखाकर कार्य कर दिखाया तो जरूर सर्वत्र जैनियोंका डंका बजेगा।

विज्ञानका उद्योत होते ही पारस्परिक अनैक्य वा मनमाने पंचायतोंके अन्याय, अनावश्यक कुरीतियां, देवद्रव्यपाचन आदि दुर्व्यवस्थाएं दूर होंगी और ठोस कार्य होसकेंगे।

कला कौशल।

आज कल स्कूल कालेजों तथा संस्कृत पाठशाला और महाविद्यालयोंमें जो शिक्षाक्रम है उससे सिवा गुलामीके कुछ उद्देश्य सिद्ध नहीं होता, उसकी भी हद्द होचुकी, दोनों तरहके विद्वानोंको पढ़नेके बाद यदि दास्यवृत्ति न मिल सकी तो संसारमें सिवा अंधकारके उनकी आंखोंके सामने उजेलाका नामोनिशान नहीं आता। संस्कृत विद्वानोंका इतना संकीर्ण क्षेत्र है कि उनको हाथ पैर हिलानेको भी जगह नहीं। वर्तमानमें इतने विद्वान तैयार हैं कि एक छोटीसी जगहके लिये छोटीसी तनखा पर कई विद्वान काम करनेको तैयार हो जाते हैं; परंतु भाग्यवानको स्थान मिल जाता है, वाकीके हताश होकर इधर उधर मारे २ फिरते हैं। यहां तक भी नीच व्यवहार चालू हो गया है कि एक दूसरेकी रोटी पर धावा बोलकर उसका स्थान छीनकर अपना पैर जमा लेते हैं इतने पर भी सैकड़ों बेकार हैं। रही लौकिक विद्वानोंकी बात सो वे भी दर २ मारे २ फिरते हैं, जो भी उनके लिये अत्यंत विस्तीर्ण क्षेत्र है। उनको यदि

नौकरी मिल भी जाती है तो पढ़ाई खर्चेका व्याज भी पैदा नहीं हो सक्ता, इस लिये अब जरूरत इस बातकी है कि छात्रोंको पढ़ाईके साथ कलाकौशल सिखाया जावे जिससे स्वाभिमानी विद्वान तैयार हो सकें। यदि नौकरी न भी मिल सके तो अपने कलाकौशलके हुन्नरके बल अपनी जीविका उचित रीतिसे कर सकें। जैन समाजमें कलाकौशलका क्या स्थान था? यदि ये बात जानना हो तो वीरका कलांक देखिये उससे पाठकोंको पता लग सकेगा कि पुराने समयमें जैनियोंमें कलाके विषयमें कैसा प्रचार था उनके नमूने भी प्राचीन लिखित शास्त्रोंमें चित्रित चित्रोंसे जाना जासक्ता है। वर्तमानमें भी यदि समाज चालू शिक्षालयोंमें ऐसे साधनोंकी योग्यता मिला दे तो हजारों गरीबोंका उद्धार होजावे।

आशा है कि वर्णीत्रयके उद्योगसे स्थापित होने वाली संस्थासे इस कार्यकी भी पूर्ति होजावेगी।

उद्योग।

हमारा समाज हमेशासे उद्योग-प्रधान रहा है। इस समाजका सिद्धांत ही ऐसा रहा है कि "व्यापारे वसते लक्ष्मीः" शास्त्रोंसे भी ऐसा ही जाना गया है कि हजारों सेठोंने अन्य द्वीपोंसे अर्बो खर्चोंका व्यापार द्वारा लाभ उठाया। चालू संसारमें भी जितने बड़ेसे बडे समृद्धिशाली देखे जाते हैं जो स्वोपार्जित विपुल द्रव्य द्वारा हजारों आदमियोंको आश्रय देते हैं वे सब व्यापारी ही हैं। नौकरीवृत्ति हमारे समाजमें रुपयेमें एक पैसा प्रमाण भी नहीं थी लेकिन समयने पल्टा खाया, पाप कर्मका उदय सवार हुआ, दरिद्रताका साम्राज्य छा गया इसलिये लाखोंकी तादादमें लोग नौकरी करने लगे, पेटकी जाज्वल्यमान अग्निकी शांति करते थे। उपायोंमें ऊंच नीच कार्य करनेमें आगापीछा नहीं देखते हुए भी उद्देशकी सिद्धि नहीं होती। समाजमें ऐसे २ भी समृद्धिशाली व्यक्ति मौजूद हैं जिनके ऐसे २ उद्योग चल रहे हैं जिनमें हजारों आदमी कार्यकर अपना उदर निर्वाह करते हैं परन्तु हतभाग्य जैनियोंको वहां भी स्थान नहीं मिलता, यदि मौकावश मिल भी जाता है तो अन्य आदमियोंके मिलते ही फौरन निकाल दिये जाते हैं। इस तरफ उद्योग करनेको पासमें पूंजी नहीं, उस तरफ सामाजिक अज्ञानी समृद्धशाली व्यक्तियोंका अपने ही भाइयोंके साथ वह व्यवहार, परिणाम ये होगया कि हजारोंकी संख्यामें जैनीभाई गली २ मारे २ फिरते हैं। समाजका कर्तव्य है कि ऐसी व्यवस्था बनावे जिससे हमारी समाजमें अधिकतर व्यापार धंधेकी प्रवृत्ति द्वारा लोग अपनी उचित व्यवस्था कर सकें।

धार्मिक आचरण।

जैनी वह जो जिनेन्द्र भगवानके कहे हुए उपदेशोंपर अमल करे। धर्मका अभिमान यहांतक किया जाता है कि जैन धर्म पालन किये बिना संसारिक दुःखोंसे निवृत्ति नहीं होसकती है तो ठीक, पर अपने आचरणोंपर भी जरा दृष्टि डालनी चाहिये कि हम धर्मोपदेशपर कहांतक अमल करते हैं। वर्तमानमें देखनेमें आता है कि कितने ही पढ़े लिखे पूर्ण शिक्षित तथा कितने

ही समृद्धिशाली व्यक्ति कुछ भी भक्ष्य या भक्ष्य विवेक नहीं रखते, रात्रि भोजनका मंडन करते हैं कितने ही तो धार्मिक सिद्धान्तों पर भी मखोलें उड़ाते हैं। यदि आप अपने आपको जैनी कहते हैं तो कमसे कम धर्म विरुद्ध तो मत बोलो। जैनीका कर्तव्य तो यही है कि संसारमें जैन धर्मकी महत्ता व्यक्त करनेके लिये कमसे कम मोटे २ आचरणोंपर अमल करे।

हजारों भाई अनछना पानी पीते हैं ऐसे आचरणोंको देखकर कितने ही जैनेतर भाई यदि कहते हुए पाये जाते हैं कि जैन धर्म केवल मात्र बतलानेका है उसमें आचरण पर बिलकुल जोर नहीं है। प्रभावना अंग जो कि सम्यक्तका आठवां अंग है उसकी पुष्टि इन्हीं सिधान्तोंके पालनेसे ही हो सकती है। यदि अपने आपको जैन कहनेवाला व्यक्ति शास्त्रस्वाध्याय द्वारा पदार्थका स्वरूप अच्छी तरह समझकर इन मोटे २ आचरणों पर भी अमल करे तो जैनधर्म और जैन समाजकी तरक्की हो। इस लिये जैन समाजको जैन धर्मानुकूल आचरण करना ये भी उसकी तरक्कीका कारण है। इसके अतिरिक्त भी कई और २ भी उपाय हैं। जैसे—अजैनोंको जैन धर्मी बनाना, फिजूल खर्ची दूर करना, विवाहादि व्यावहारिक कार्य उचित रीतिसे करना इत्यादि २।

आशा है समाज इन वातों पर लक्ष्य देगी तो समाजका पुनरपि शीघ्र उत्थान होगा।

समाजके घातक बंधन।

[ले०—श्री० अमृतलाल जैन—रोहतक।]

प्रत्येक स्त्रीपुरुष चाहे शिक्षित हो या अशिक्षित, नाना प्रकारके बंधनोंसे बंधे हुये हैं। यह बंधन कई प्रकारका है। जैसे:—कर्मका बंधन, राष्ट्रीय बंधन तथा सामाजिक बंधन। कर्मके बंधनमें प्रत्येक क्षण जैसे शुभ अशुभ मन, वचन, कायकी क्रिया जीव करता है वैसा ही पुण्य पापरूप कर्मका बंध करता रहता है। फिर कर्मका उदय आनेपर वैसा ही सुख दुःख भोगा करता है। राष्ट्रीय बंधनमें नाना प्रकारके सरकारी हुकम तथा कानूनके बंधन हैं जिनमें सब मनुष्योंको बंधना पड़ता है।

सामाजिक बंधनोंमें हम बुरी तरहसे पिसे जारहे हैं, फिर भी हम उनसे होनेवाले अपने हित अहितको न सोचकर भेड़िया चालकी तरह उनको पकड़े हुये दुःख उठा रहे हैं। उन थोड़ेसे सामाजिक बंधनोंके स्वरूपका वर्णन करना ही प्रस्तुत लेखका विषय है।

परदेका बंधन—

परदेका रिवाज हमारे यू० पी० राजपूताने व देहली प्रान्तमें बहुत है। इससे हमारे घरोंकी स्त्रियोंके स्वास्थ्यकी बड़ी हानि होती है। प्रायः इससे स्त्रियां लिखपढ़ नहीं सकतीं, देव दर्शन पूजन नहीं करतीं, तथा उनके अंदर आत्मबल नहीं होता है, वे अकेली सफर नहीं कर सक्ती हैं, प्रत्येक कार्यमें पुरुषोंकी मोहताज बनी रहती हैं। संकट आनेपर मेहनत करके कुछ उद्योगसे उदरपूर्ति नहीं कर सक्ती हैं। अपने सतीत्वकी रक्षा करनेकी भावना व साहस उनमें नहीं होता, देश व समाजकी दशासे अनभिज्ञ रहती हैं। जिस समय देशमें परदेकी प्रथा

नहीं थी, स्त्रियां युद्धमें लड़ती थीं, घोर विपत्तिमें भी अपने साहस धैर्य धर्मको नहीं छोड़ती थी, तथा विदुषी होती थी। हम पुरुषोंने स्वार्थान्ध होकर ही परदेकी घातक प्रथासे स्त्रियोंको बन्धनमें डालकर अर्धांगिनी बननेके अयोग्य बना रक्खा है।

सांपे (मरण पीछे रोने) का बंधन—

सांपेकी प्रथाने स्त्री समाजको बुरी तरह जकड़ रक्खा है। जिसके घरमें कोई मृत्यु होजाती है तो प्राय: स्त्रियां उनके घर आ आकर उनको ज्यादा रुलाती हैं, तथा एक प्रकारकी महारनीसी रट रटकर उनको खूब पिछली बातें याद दिलाकर ज्यादा शोकमें गिराती हैं !

चाहिये यह था कि मृतकके घर जाकर उनके कुटुम्बको धीरज बंधाती, तथा उनको शोक-समुद्रसे निकालकर घरके धंधों तथा धर्ममें लगाती।

परन्तु उससे उल्टा महीनों छह छह महीनों तक रोना तथा शोक करना पड़ता है इससे स्त्रियोंके स्वास्थ्यको जो नुकसान होता है वह अकथनीय है तथा घरके सब स्त्री पुरुषोंको शोक पैदा करनेसे तीव्र असाता वेदनीय कर्मका बंध होता है।

नुकते (काज) का बंधन—

मृतक भोजनका बन्धन भी हमको बुरी तरह जकड़े हुये हैं। यू० पी०, पंजाब, देहली प्रान्तमें तो प्राय: किसी वृद्ध पुरुषकी मृत्युपर जीमन करके हजारों रुपयोंका स्वाहा किया जाता है परन्तु राजपूताना आदिमें जवान हो या वृद्ध हो सबकी ही मृत्युपर बिरादरीका जीमन किया जाता है। कैसा भयंकर चित्र है! एक जवान पुरुषकी मृत्युपर जीमनमें पंच लोग इकट्ठे होकर गटागट खालेते हैं! वह नहीं सोचते हैं कि मृतकके असहाय बाल बच्चे तथा अनाथ विधवाके पास भोजनका भी ठिकाना है या नहीं। इस प्रथासे गरीबोंको कर्ज लेकर, विधवाओंको अपना मकान या पुत्रियां बेचकर बिरादरीका जीमन करना पड़ता है, इसलिये ऐसी नाशक प्रथाको दूरसे ही तिलांजलि देना उचित है।

विवाहका बंधन (अयोग्य विवाह बंधन)—

आज कल प्रत्येक माता पिता अपने पुत्र पुत्रीका विवाह करना ही अपना कर्तव्य समझते हैं। चाहे हम अपाहज हों, नपुंसक हों, कोढ़ी हों, अशिक्षित हों, शक्तिहीन हों, धन कमानेमें असमर्थ हों पर विवाह जरूर करते हैं। सिर्फ विषय वांछाकी तृप्ति ही हमने विवाहका उद्देश्य मान लिया है। जैसी भारत देशमें विवाह करनेकी रीति प्रचलित है कोई भी देश ऐसी लापरवाहीसे विवाह नहीं करता है। समाजमें बालविवाह, अनमेलविवाह, वृद्धविवाहका खूब प्रचार है। चाहे स्त्रीपुरुष विवाहके योग्य हों या न हों, उनके गलेमें विवाहको बांध दिया जाता है। इसीसे प्राय: दंपतियोंमें अनबन रहती है, गृहस्थ जीवनके वास्तविक सुखको वह नहीं प्राप्त कर सकते हैं। समाजमें गिनतीके ही आपसमें स्त्रीपुरुष विवाहित सुखी पायगें। कहीं स्वभाव नहीं मिलता, कहीं दरिद्रताके कारण सुखका लोप होगया है, कहीं पुरुष रोगी, स्त्री आरोग्य, कहीं इसका उल्टा।

ऊपरी नजरसे तो यही दिखता है कि अमुक दंपति बहुत सुखी है परन्तु भीतरी दशा कुछ और ही होती है।

जो विवाहके योग्य नहीं उसका विवाह होजानेसे विवाहका पुनीत सुख दुखमें परिणत होजाता है, हर्षकी जगह विषाद होने लगता है, फिर भी लोग आंखोंमें पट्टी बांधकर अयोग्य विवाहको करते रहते हैं। शारीरिक, मानसिक, आर्थिक अयोग्यता विवाहित दु:खोंका प्रधान कारण होती है। इसी कारण आजकल समाजमें भीष्मपितामह जैसे ब्रह्मचारी तथा सुखी जीवनवाले गृहस्थोंका अभावसा ही होगया है।

दहेजका बंधन—

दहेजकी ऐसी बुरी चाल समाजमें घुस पड़ी है जिससे निर्धन अथवा सामान्य आमदनीके पुरुषोंको अत्यंत क्लेश उठाना पड़ता है। दुख अमीर गरीब दोनोंको होता है, जो जिस दर्जेका धनी होता है उससे उसी हिसाबसे अधिक दहेज मांगा जाता है पर ज्यादा मुशकिल उन गरीबोंकी है-जिनके लड़कियां हैं-पर धन या जायदाद नहीं है, जहां जाते हैं वहां रुपयेकी पुकार सुनते हैं—पहिला प्रश्न यही होता है कि दहेज कितना दोगे।

यह चिंता उन्हें चिताकी अग्नि समान भस्म कर देती है, लडकी पैदा होनेके साथ ही यह चिंता भी हृदयमें समा जाती है, और उसी समयसे पेट काट काट कर धन इकठा करना शुरू किया जाता है, इससे परिवार भरके लोगोंको क्षयकी बीमारी होने लगती है। बहुतसे लोग तो लाचार होकर विषद्वारा अपना कष्ट और सामाजिक अनादरका अँत कर देते हैं।

जातिबंधन—

जैन समाजके अंतरगत उपजातियोंमें विवाह न करके हम जातिबंधनमें बुरी तरह जकड़े हुवे हैं। एक वर्ण एक धर्मकी उपजातियोंमें विवाहकी रीति प्रचलित होनेसे कोई भी धार्मिक तथा सामाजिक बुराई नहीं है। इसके न होनेसे ही समाजमें विवाहके क्षेत्रमें संकीर्णता होनेसे ही प्रायः दहेजकी घातक प्रथाका जोर बढ़ता जाता है, तथा समाजके बहुतसे गरीबोंके योग्य नवयुवक अविवाहित रहकर समाजके लिये क्षति तथा असदाचारका कारण बनते हैं। इस लिये जैन धर्मकी प्रत्येक अग्रवाल, खंडेलवाल, पल्लीवाल, ओसवाल आदि सभी उपजातियोंमें विवाह करना चाहिये।

इस जातिबंधनमें न फंसकर अपना हित अहितका विचार करना चाहिये।

सज्जनों! उपयुक्त सामाजिक बंधनोंका दिग्दर्शन मात्र कराया गया है। और भी बहुतसे बंधनोंसे हम रात दीन पिस रहे हैं जिनके कारण अपनी गृहस्थ रूपी नौकाको सुखमय बनानेकी अपेक्षा दुःखी बना रहे हैं। हमारा कर्त्तव्य है कि इनसे अपने हित अहितका विचार कर इन बंधनोंसे शीघ्र मुक्त होनेका प्रयत्न करें।

जैन समाजका कर्तव्य।

(लेखक—सिं० दामोदरलाल जैन वैद्य—घौरा)

जै—नियो इस जैन पदका लाभ कुछ अब लीजिये।
नि—धि धर्म कलमष हरण सुखकर धार हियमें लीजिये॥
यो—नियोंमें भ्रमण करते गया बहुतक काल है।
दि—ढ़ कर्मरूपी बंधमें बंधे फिरत दुखकार है॥
गं—ध बिन ज्यों पुष्प शोभा नहीं पाता है कभी।
ब—ही सम नर धर्म बिन नरपद निरर्थक है सही॥
र—खिये सदा जिनधर्म दीपक हिये मांही उजारिये।
जै—न पदको सफलकर अज्ञान अंध हटाईये॥
न—र अमोलक पद ये प्यारा नहीं मिलता हर कभी।
के—ईक भव वन भ्रमण करते धरे जन्मामरण ही॥
गि—रसते कईवार दुःख पाया है नर्कादिकोंका।
रा—ह धारण करी जब कुछ धर्म धर सुख सम्पदा॥
ह—रण कर कलमष तभी तब सुपद यह पाया कभी।
क—रिये सदा जिन धर्म वृद्धि यह सुपद पाकर सही॥
ब—निये श्री जिन धर्म सेवक आत्म लाभ करीजिये।
नि-ज घरोपर घरवाओ हिय सुख सरित मांहि नहाईये॥
ये—पाय नरपद नहीं खोओ धारिये जिन धर्म ही।
गा-फिल न कीजे "लालवृष" धर बनो शिवरमणी पती
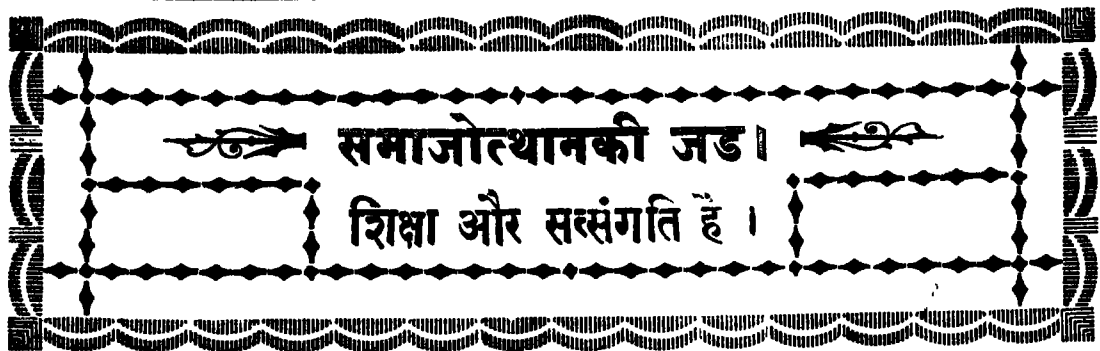
[लेखक:—श्रीमान् ब्रह्मचारीजी सीतलप्रसादजी।]

हरएक समाज स्त्री पुरुषोंका समुदाय है। अतएव हर एक स्त्री तथा पुरुषको अपने जीवनकी सफलताका यथार्थ ज्ञान व तदनकूल आचरण होना आवश्यक है। मानव जीवनका समय मर्यादित है अतएव प्रमाद व शिथिलताको अवकाश न देते हुए पुरुषार्थी होना हरएक स्त्री तथा पुरुषके लिये जरूरी है। पुरुषार्थ ही मानवको कर्तव्यपरायण तथा महान आत्मा बना देता है। शिक्षाके बिना किसी भी मानवका विकाश होना अशक्य है। जिनको पूर्व जन्मका संस्कार है उनको भी जागृत करनेके लिये शिक्षाकी आवश्यक्ता है। किन्हीको शीघ्र व किन्हीको देरमें शिक्षा अपना असर दिखलाती है। पूर्व संस्कारित व्यक्ति शीघ्र ही शिक्षाका लाभ उठा लेते हैं। शिक्षा देनेका काम बालक बालिकाओंके लिये गर्भसे ही प्रारम्भ होजाता है। इस लिये शिक्षिता माताओंकी बहुत बड़ी जरूरत है।

जबतक बालक माताके आलम्बनसे अपना काम करता है तबतक सबसे बड़ी शिक्षिका माता ही है। जिन जातियोंने अपनी जाति भरको शिक्षित बनानेका पवित्र भाव किया उन्होने सबसे पहले माताओंको बनानेका उपाय किया। जैसे कच्चे घट पर चित्रोंकी छाप अति पक्की होती है ऐसेही बालकोंके कोमल हृदयों पर शिक्षाकी दी हुई छाप जन्मभर तक पक्की रहती है। अतएव पुरुष शिक्षाकी अपेक्षा स्त्री शिक्षाको बहुत बड़ी जरूरत है। यद्यपि शिक्षित तो पुरुष व स्त्री दोनोंको होना उचित है तथापि स्त्री शिक्षाका मूल्य पुरुष शिक्षाकी अपेक्षा अत्यधिक है।

बहुतसे समाज सुधारकोंका ध्यान स्त्री शिक्षा पर उतना नहीं होता है जितना पुरुष शिक्षा पर होता है यह उनकी बड़ी भारी भूल है। समाजकी उत्तमता स्थापित करनेका काम उत्तम माताओंके ही हाथमें रहता है। कहा है—Mothers a:e the builders of nation माताएं ही समाजको बनानेवाली होती हैं। दृढ़ शरीरवाली माता बालकोंके शरीरको दृढ़ बनाती है। उच्च विचारवाली माता बालकोंके मनको व उनकी वाणीको सुसंस्कृत करती है। वीर पुत्रोंकी माताएं वीरांगनाएं ही हुआ करती हैं। शिक्षाके प्रचारके बिना समाजमेंसे बुरी रूढ़ियां मिट नहीं सक्ती हैं व उसमें सुरीतियोंका प्रचार नहीं हो सक्ता है।

जिस समय समाजके स्त्री व पुरुषोंके मनमें यह दृढ़ विश्वास आयगा कि अमुक कर्तव्यके पालनसे अपना हित होगा व अमुक अकर्तव्यके छोड़नेसे अपना भला होगा तब ही विश्वासके अनुकूल कार्यका आचरण होने लग जायगा। यह शिक्षा ही है जिसकी बदौलत आफ्रिकाकी मानव मांसभक्षी जातियां दयावान व शाकाहारी बन जाती हैं, वे

शिक्षाकी परम्पराके टूटनेसे दयावान व शाकाहारी जातियां बिगड़ते २ हिंसक और मांसाहारी बन जाती हैं।

सबसे प्रथम प्राथमिक शिक्षाका लाभ हरएक बालक व बालिकाको देना आवश्यक है। इसलिये देशमें हर जगह अनिवार्य व मुफ्त शिक्षाका कानून होना चाहिये। यदि सर्कारी कानून न हो तौ हरएक समाजके विभागको उचित है कि वह अपने२ विभागमें प्राथमिक शिक्षाका पक्का प्रबन्ध करदे। जातिमें यह नियम बना दिया जावे कि अनपढ़ बालक व बालिकाका विवाह नहीं होगा। तथा उस विभागके लोग अपना धन व्यर्थव्ययसे बचाकर शिक्षाके प्रचारमें अर्पण करदें तौ आवश्यक शालाएं खुल सक्ती हैं। और हरएक बालक बालिका शिक्षासे विभूषित होसक्ती हैं। मातापिता बालकोंको गहनोंसे सज्जित करते हैं। २००) व ४००) का गहना बनवा लेते हैं। यदि इन जड़ बेड़ियोंको न डालकर उसी पैसेसे उनको शिक्षासे विभूषित किया जावे तो बालक व बालिकाओंका सच्चा कल्याण होवे। हरएक शिक्षा धार्मिक ज्ञानके विना अधूरी है व जीवनको उपयोगी बनानेमें त्रुटिपूर्ण है। इसलिये आध्यात्मिक ज्ञानके साथ २ लौकिक ज्ञानका दिया जाना आवश्यक है। जिन किन्हीं सर्कारी शालाओंमें धार्मिक ज्ञानका प्रबन्ध न हो तो बालकोंको धर्मशिक्षा देनेका विशेष प्रबंध विशेष समयमें करना उचित है। शिक्षाका ध्येय यह होना चाहिये कि हरएक मानव अपने जीवनको पाल सके तथा अपने आत्माका उद्धार कर सके। कहा है:—

कला बहत्तर पुरुषकी, तामें दो सर्दार।
एक जीवकी जीविका, एक जीव उद्धार॥

यदि जैन समाज अपना उत्थान चाहती है तो उसे उचित है कि ग्राम ग्राममें धार्मिक शिक्षा सहित प्राथमिक शिक्षाका पक्का प्रबन्ध करे। जिससे हरएक बालक व बालिकाको पुस्तकोंको पढ़कर समझनेकी योग्यता प्राप्त होजावे। कठिनसे कठिन गद्य व पद्यकी पुस्तकका अर्थ लगाना मालूम होजावे। यही ज्ञानकी जड़ बना देना है। समझनेकी योग्यता होनेसे ही हरएक स्त्री पुरुष नाना प्रकार उपयोगी पुस्तकोंको पढ़कर अपने ज्ञानका विकाश कर सक्ते हैं, ज्ञानका पर्दा हटाते हुए विशेष ज्ञानी होसक्ते हैं।

जैसे बागके छोटे २ पौधोंकी माली बहुत सम्भाल रखता है वैसे छोटे २ बालक व बालिकाओंकी पूरी सम्हाल उनके संरक्षकोंको करना चाहिये। जब वृक्ष बड़े होजाते हैं तब वे स्वयं अपनी रक्षा करसक्ते हैं इसी तरह जब युवा वयमें स्त्री व पुरुष पहुंच जाते हैं तौ वे अपनी रक्षा स्वतंत्रतासे करसक्ते हैं। इस लिये सर्व ही बालक बालिकाओंको जिस तरह धार्मिक व लौकिक प्राथमिक शिक्षा देना जरूरी है वैसे उनकी संगति भी योग्य रखनी उचित है। यदि ब्रह्मचर्याश्रमोंकी सुसंगति हो तो उनमें सदाचारकी जड़ जमजावे व कोई असदाचारकी टेव न पड़े। बीस वर्ष पहले यदि सदाचारकी टेव पड़ जायगी तौ जीवनपर्यंत वही बनी रहेगी। यदि असदाचारकी कुटेव पड़ जायगी तौ फिर उसका छूटना कठिन होगा।

जैन समाजके संरक्षकोंको सर्व जैन समाजमें प्राथमिक शिक्षाका प्रचार करके माध्यमिक शिक्षाके लिये यत्र तत्र दो प्रकारके शिक्षालय खोलने चाहिये। एक तो देशके रिवाजके अनुसार मिडिल व हाईस्कूलोंकी स्थापना जिनमें धर्मशिक्षा अवश्य दी जावे। दूसरे संस्कृत विद्यालय जिनमें इंग्रेजी व उद्योगी शिक्षा अवश्य दी जावे। ऐसे स्कूल व पाठशालाऐं लड़का व लड़कियोंके लिये भिन्न २ एक एक जिलेमें होने चाहिये।

तत्पश्चात् जैनियोंका एक बृहत् जैन कालेज होना चाहिये जिसमें माध्यमिक शिक्षाकी पूर्णता होनेपर उच्च लौकिक शिक्षा बी० ए०, एम० एम० की धार्मिक शिक्षाके साथ देनी चाहिये तथा धार्मिक विभागमें उच्च संस्कृत प्राकृतकी शिक्षा इंग्रेजी व उद्योगकी शिक्षाके साथ होनी चाहिये।

धार्मिक संस्कारकी रक्षा उच्च कोटिके विद्वानोंमें करनेका साधन उस धर्मका अपना एक स्वतंत्र विद्यालय या कालेज ही है।

इस कालेजके लिये दिगम्बर जैन समाजमें कुछ आवाज़ उठ रही है परन्तु वह ऐसी दृढ़ नहीं है जिससे भरोसा किया जावे कि कालेज शीघ्र खुल ही जायगा। जैनधर्मी जैन धर्मके आचारप्रिय व सिद्धांतप्रिय उच्च कोटिके लौकिक विद्वानोंके विना जैनधर्मका प्रभाव देशकी स्थितिपर पड़ नहीं सक्ता और जैनधर्मके वैज्ञानिक सिद्धांतोंके तरफ जगतका लक्ष्य नहीं दौड़ सक्ता है। अतएव जैन समाजमें कालेज या विश्वविद्यालयकी स्थापना जगतको तीर्थंकरकी वाणीका रस चखानेके लिये बहुत ही आवश्यक है।

जैन समाज किसी समय सब समाजोंमें अग्रगण्य व माननीय समझी जाती थी, इसके भीतर बड़े २ सम्राट् तक हो गए हैं। यह सब कुछ शिक्षा व सत्संगतिका ही प्रताप था। अब भी यदि इस कौमको पूर्ववत् प्रतिभाशाली बनाना है तो और सब भोगोंसे उपयोगको हटाकर एक शिक्षाके प्रचारमें ही तन मन धनको उपयुक्त करनेकी आवश्यक्ता है। शिक्षाके सांचेमें पालिश किये विना स्त्री रत्न तथा पुरुष रत्न नहीं बन सक्ते हैं। विना रत्नोंके समाजकी कोई शोभा नहीं हो सक्ती है न उसका कोई जीवन ही बन सक्ता है। पाठकोंको इस विषयपर गंभीरतासे मनन करना योग्य है।

सामाजिक गल्प।

(ले:—पं० मूलचंद्र जैन वत्सल, काव्यकलानिधि।)

रात्रिके नौबजेका समय था। दिवालीकी रोशनीकी बहार देखते २ मैं उस मुहल्लेमें पहुंचा। वह मुहल्ला दिवालीकी रोशनीसे बिलकुल शून्य था। साम्हने एक युवक था।

मैंने पूछा—"इस मोहल्लेमें रोशनी क्यों नहीं होती?"

युवकने अन्य मनस्क भावसे कहा—"भाई! यह जानकर क्या करोगे? यह एक दुखद घटना है।"

मेरा कौतूहल और भी बढ़ गया। "इस उलझनको अधिक मत बढ़ाइए।" मैंने बड़ी उत्सुकतासे पूछा।

युवकने एक दीर्घ श्वास लेते हुए कहना प्रारम्भ किया।

पांच वर्ष पहिलेकी एक घटना है। यहांके रईस बृजेन्द्रबाबूका नाम अब भी अधिक प्रसिद्ध है।

शुष्क व्याकरण और अमरकोष रटकर पाठशालासे निकलते ही कच्चे, पक्के और अधकचरे सभी छात्र जिसप्रकार अपने नामके साथ पंडित लगानेके लोभको संवरण नहीं कर सकते उसी प्रकार आज कलके अधिकांश धनिक, अर्ध धनिक और उनके सहयोगमें रहने वाले व्यक्ति अपने नामके पीछे रईस शब्द जोड़नेकी शानको कम नहीं कर सकते और चाहे दिवाला ही क्यों न निकलनेवाला हो परन्तु बेंकर और जमीदार तो इनके रजिस्टर्ड उपपद हैं।

वृजेन्द्रबाबू भी रईस थे। कह नहीं सकते यह रईसका पुछल्ला उनकी कितनी पीढ़ियोंसे चला आता था। किन्तु वह तो अपने नामके साथ रईस लिखने और लिखानेसे कभी नहीं चूकते। और हां, कोठी, बाग, बग्घी, और उनकी शानवानको देखकर कोई उन्हें रईस समझनेसे बाज भी कैसे रहते?

वृजेन्द्रबाबूके कुटुम्बमें उनकी वृद्धा माता, पत्नी और बहिन शान्ता यह इतने प्राणी थे।

उनके पिताका स्वर्गवास होचुका था, वृद्ध पुरुषोंसे सुननेमें आता है कि वह बड़े परिश्रमी, सरल और सीधी चालके थे, किन्तु आजकल वृजेन्द्रबाबू तो आधुनिक सभ्यताके रंगमें पक्के रंगे हुए थे। आप अपनी प्रयोजनसिद्धिमें सिद्ध-हस्त, रईसोंकी चापलूसीमें निपुण और हवाके साथ बहनेवाले थे। उनकी माता धार्मिक विचारोंसे पूर्ण, पूर्व और वर्तमानके मिश्रित वायुमंडलमें रहनेवाली कुशल माता थी। बहिन शान्ता उन्नत विचारवाली धार्मिक कन्या थी।

कुछ दिनोंसे युवती शान्ताके लग्नकी चिन्ताने उनकी माताके हृदयमें भीषण रूप धारण कर रक्खा था। वृजेन्द्रबाबूको भी इसका ध्यान न था। किन्तु वह अपनी मित्रमंडलीके विनोदमें इस चिन्ताको बहुत कुछ कम कर लेते थे।

× × ×

प्रेमनाथ कर्तव्यशील युवक था। वह सदाचारी भी था। साहित्याचार्यकी परीक्षा उत्तीर्ण करके एक अच्छे पद पर नियुक्त होकर वह यहां पर आया था। वृजेन्द्रबाबूके निकट ही शुक्लजीके मकानमें वह रहता था। उसे रामायणसे बड़ा प्रेम था। संध्याके समय ललित ध्वनिसे वह नित्य प्रति रामायणकी कथा किया करता था। मोहल्लेके बड़े बूढ़े स्त्री पुरुष उसकी कथा सुनने आया करते थे। शान्ता भी कभी२ अपनी माताके साथ२ रामायण सुननेमें भाग लिया करती थी। जाते समय वह एकवार प्रेमनाथकी ओर स्नेहदृष्टिसे देख लेती थी। उसकी दृष्टिमें माछम नहीं क्या जादू था। जिससे प्रेमनाथके हृदयमें एक नवीन ही हलचल मच जाती थी। नित्य प्रतिके आनेजानेसे उनका स्नेह अधिक बढ़ गया। अब वह निःसंकोच रूपसे परस्पर वार्तालाप करने लग गए थे। किन्तु इस वार्तालापमें शुद्ध प्रेमके अतिरिक्त कोई वासना नहीं थी।

छह मास भी नहीं हुए होंगे, दुर्भाग्यसे प्रेमनाथकी पत्नीका स्वर्गवास होगया। प्रेमनाथ और शान्ता अब भी कभी २ एक दूसरेका दर्शन कर लेते थे और अब उनके प्रेमका स्नेह भी अन्य गतिसे बहने लगा था। उनके हृदयमें दूसरा ही परिवर्तन होगया था, धीरे २ प्रेमका बंधन दृढ़ बंध गया। दोनों परस्पर प्रणय बंधनमें बंधनेको उत्सुक हो उठे और आखिर एक दिन दोनोंने मिलकर स्पष्ट रूपसे इस उलझनको सुलझा डाला। दोनोंने परस्पर अपना जीवन एक दूसरेको अर्पण कर दिया।

दोनों यद्यपि एक जातिके थे किन्तु हाय निर्धनता! प्रेमनाथ रईस न था। वह निर्धन युवक था। और व्रजेन्द्र बाबू रईस। प्रतिष्ठा और सन्मानके प्यासे वृजेन्द्रके साम्हने इस बातको कौन लाता? दोनोंमेंसे किसीका भी साहस नहीं होता कि हृद्गत विचारोंको उनसे प्रकट कर सकें। दोनों हृदय ही हृदयमें धुलने लगे।

× × ×

असुरेन्द्रनाथ जौनपुरके प्रसिद्ध धनिक थे। उनके एक पुत्र था। उसका नाम था भूपेन्द्र।

विलासिताके साथ २ सभ्यताके नवीन युग-विकासमें मदिरादेवीके मधुर सम्मेलनसे किसी

अभागे धनिकका द्वार ही बन्द रहा होगा। और मंगलमय मंगलामुखीका सम्मिलन, पर्यटन और विनोदता प्राय: वर्तमानके अधिकांश उच्च घरानोंकी प्रतिष्ठा बड़प्पनके रक्षक ही रह गए हैं, अभक्ष भक्षण तो उनके लिए साधारणसी बात है? भूपेन्द्र! युवकोंकी उछृंखल प्रवृत्ति और विलास-पूर्ण वायु मंडलमें आजसे ही नहीं किन्तु बहुत समय पहिले ही प्रवेश कर चुका था। उपरोक्त बातोंमें वह किसी तरह भी कम नहीं था। किन्तु एक रईसके सुपुत्रकी ओर किसीको उंगली उठानेका साहस नहीं होता था और हो भी कैसे! द्रव्यके पीछे समस्त दुर्गुण विलोप होजाते हैं, वह था धनवान पिताका लाड़का सुपुत्र! ऐसी बातों-की ओर कौन ध्यान देता?

पिताको अपने इस सुपुत्र पर बड़ा अभिमान था। भूपेन्द्र युवक होगया था किन्तु उन्हें उसके विवाहकी कुछ चिंता नहीं थी। और हो भी क्यों? केवल द्रव्यकी प्रतिद्वन्दिताके कारण ही अनेक व्यक्ति अपनी कन्याओंके भविष्य जीवनकी परी-क्षामें रोली तिलक उसके मस्तक पर चढ़ानेको बैठे थे। अनेकों कन्याओंके जीवनका पांसा उसके चरणोंकी ओर फेंका जारहा था। किसके लिए? गुण, सच्चरित्रता, सज्ञानता और मनुष्यत्वके लिए? केवल द्रव्य, सम्मान, कोरी प्रतिष्ठा और बड़ी नाकके लिए।

बृजेन्द्रबाबूने भी शान्ताका पांसा उनकी ओर फेंका। उलटते पलटते अन्तमें दैवात् उनका पांसा सीधा पड़ गया। सौभाग्य और कुलकी प्रतिष्ठाका सितारा मानो सातवें आसमानपर चमक उठा। उन्होंने अपने लिए, अपने घरानेके लिए कृत कृत्य समझा। इसके अतिरिक्त और वह समझ ही क्या सकते थे।

सहस्रोंके व्यर्थ व्ययके साथ २ शान्ताके भविष्य जीवनके सौभाग्यका तिलक भूपेन्द्रके मस्तक पर चढ़ा दिया गया। किन्तु बेचारी शान्ताने इसे अपना सौभाग्य समझा अथवा दुर्भाग्य इस बातको समझनेवाला वहां कोई नहीं था।

× × ×

शान्ता अपने प्रण पर स्थिर थी। वह प्रेम-नाथको अपना हृदय समर्पण कर चुकी थी। शान्ताको अपने जीवनसे अब अधिक मोह नहीं रह गया था "इस जीवनमें ऐसा विश्वासघात तो नहीं किया जा सकता! फिर इस नि:सारजीवनको लेकर ही क्या करूँगी?" एकवार नहीं अनेक-वार उसने इन शब्दोंको दुहराया था।

माताको उसके विचारोंका किंचित्सा पता लगा था। वह अन्य मनस्क मुंहसे कभी २ शान्ताके साम्हने कह देती थी "किन्तु क्या किया जाय? ऐसा कौन नहीं करते? रईसोंके लड़के तो ऐसे होते ही हैं, भविष्यको कैसे मिटाया जासक्ता है और चिन्ता करनेसे ही क्या होता है? किन्तु शान्ताके हृदयको इन शब्दोंसे किंचित् भी संतोष नहीं होता। यदि वह चाहती तो किसी अन्य मार्गका अवलंबन कर सक्ती थी किन्तु अपने स्वार्थकी अपेक्षा उसे अपने कुलकी प्रतिष्ठाका अधिक ध्यान था। इस लिए उसने एक ही मार्गका अवलम्बन किया।

\+ + +

धीरे २ विवाहका दिन फाल्गुन पूर्णिमा निकट आ पहुंचा।

वारांगनाओंके नृत्य तथा अनेक भांड और नटोंके साथ २ वरके पीछे घूमती हुई मस्त मंडली ब्रजेन्द्र बाबूकी कोठीपर पहुंची। विवाहका समय होचुका था, कन्याकी तलाश हुई, किन्तु

श्रीयुत मणिलाल एच. उदानी एम. ए.; एल एल. बी. एडवोकेट—राजकोट।

(जैनोंके तीनों सम्प्रदायोंमें ऐक्य चाहनेवाले अंग्रेजी पढ़े लिखे स्थानकवासी श्वेताम्बर जैन धार्मिक विद्वान व जैनोंमें सेन्ट्रल जैन कॉलेजकी स्थापनाके इच्छुक। आपका अतीव उपयोगी अंग्रेजी लेख इसी अंकमें पृष्ठ २७ पर पढ़िये।)

Jain Vijaya Press, Surat.
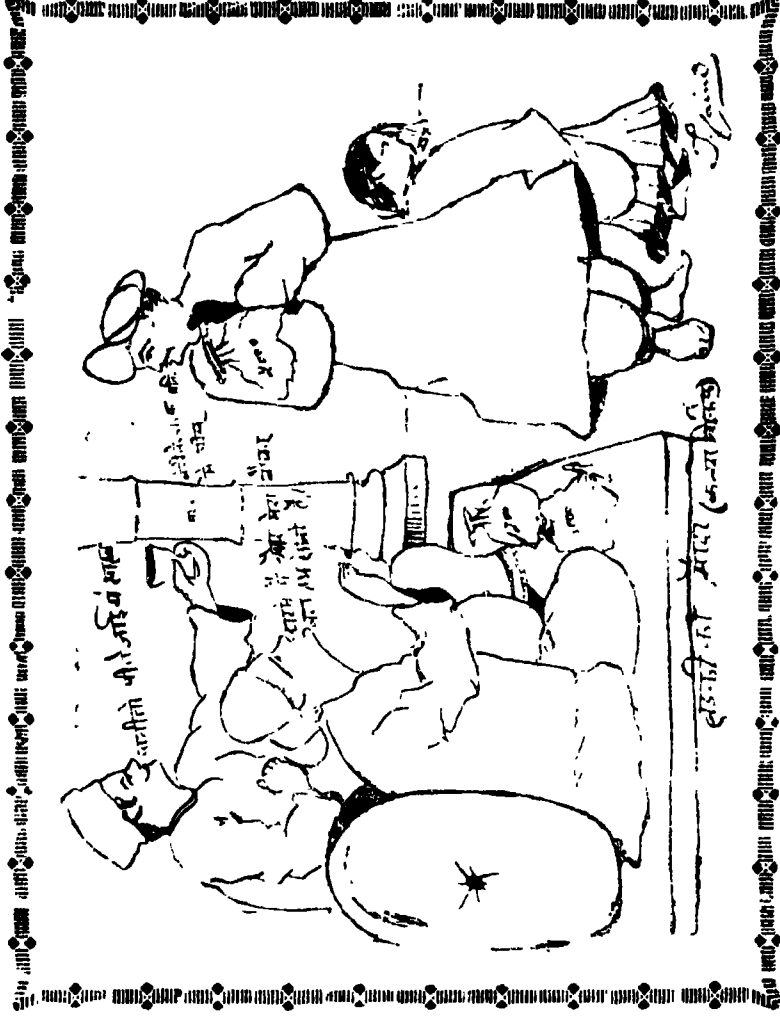
[जो कन्या विक्रेता बेटीके घरका पानी नहीं पीनेका ढोंग करता है वही ५०००)की थैली प्राप्त करके अपनी जीवित कन्याका मांस खुशीमे बेच रहा है ! अहिंसा प्रिय जैन समाजमें अभी भी ऐसे बगुलाभक्तोंकी कमी नहीं है !]

Jain Vijaya Press, Surat.

घर भर देख डाला कहीं भी शान्ताका पता नहीं था। इसपर बड़ा कौतुहल मच गया। शान्ता कहां गई! क्या हुवा? सारा मोहोल्ला ढूंढ डाला गया। माताका वामां नेत्र फड़क उठा। भविष्यकी आशंकासे उसका माथा ठनका।

कुछ बालक होलीकी ओर दौड़े गए। उन्होंने देखा होली धधक २ कर जल रही है। अचानक कुछ लड़के बोल उठे "अरे यह क्या? इसके मध्यमें यह कौन पड़ा है?" जलता हुआ अर्धदग्ध शरीर होलीमेंसे निकाला गया। सबने देखा और पहिचाना तो वह शान्ताका शव था। उसके कुछ अँग ही शेष रह गए थे। होलीकी आहुतिमें उसका शरीर स्वाहा हो चुका था। उस दिनसे ही प्रेमनाथको किसीने कहीं भी नहीं देखा। तभीसे इस मोहल्लेमें न होली जलाई जाती और न दिवालीकी रोशनी ही होती है युवकने एक दीर्घ स्वास लेकर कथाको समाप्त किया।

मैं भी यह कहता हुआ वहांसे चल दिया "वह दिन कब आयगा जब इन खिलते हुए पारिजात पुष्पोंकी बलिदान प्रथाका अन्त होगा।"

मेरी भावना।

दिगम्बर पत्र यह प्यारा, फलो फूलो फलो फूलो।
सदा जिन धर्मको कहता रहे प्यारा फलो फूलो ॥१॥
'दिगम्बर जैन' जातिमें, सदा वृद्धीको यह पावे।
सदा शुभ मार्गका दर्शक, बना यह जातिमें रहवे॥२॥
वीर भगवन्के शासनका, सदा उद्योत यह करता।
रहे जगमें सदा कायम दिगम्बर पत्र यह प्यारा ॥३॥
भावना है मेरी येही, नूतन वर्षके प्रारम्भ।
दिगम्बर पत्र यह प्यारा रहे हिंदमें सदा कायम ॥४॥
यही विनती हमारी है सदा चितमें सभी लाओ।
हाथ जोडे सदा सुन्दर दिगम्बर पत्रअपनाओ॥५॥

पं० सुन्दरलाल, जैन पाठशाला–सजोड़िया।

क्या सुधार आवश्यक है?

(लेखक–बा. कामताप्रसाद जैन, संपादक 'वीर')

भाडेके छकडेमें रातदिन जुते रहकर एक चाल चलने और माल ढोनेवाले बैलोंको यदि किसी सवारी गाडीमें जोतकर उन्हें तेज चलाया जाय तो वह बहुत नटखटी देते हैं और अपनी पुरानी चाल छोडनेके लिये जल्दी तैयार नहीं होते हैं! ठीक यही हाल समाज रूपी गाडीका है। समाज-गाडीको चलानेवाले उसके सदस्य प्रत्येक जैनी हैं। उनके लिये यह स्वाभाविक है कि वह जिस चालसे चलते आये हैं, उसीमें चलते चलें। ऐसा करनेमें उन्हें कोई नया उद्योग और किसी प्रकारका त्याग नहीं करना पडता। इस प्रवृत्तिके बैल बने रहकर वे बडेसे बडा नुकसान सहते हैं और सुधार करनेको राजी नहीं होते। किंतु प्रश्न यह है कि उनकी यह प्रवृत्ति क्या उचित है? क्या सुधार आवश्यक नहीं है? सुधारके नामसे चिढनेवाले मनुष्य तो पुरातन मर्यादाके अंधे गुलाम बना रहना ठीक समझते हैं; किंतु अन्ध विश्वाससे सुख नहीं मिल सक्ता, यह हर मनुष्य समझ सक्ता है जिसमें जरा भी विवेक हो! विवेकहीन जीवन तो पशु जीवन है, पशु बनना भला कौन स्वीकार करेगा?

उसपर बड़ी बात तो यह है कि ऐसे लोग जो पुरातन प्रथाका दम भरते हैं, यदि पुरातन जैन संस्कृतिपर स्थिर रहते तो उनका कहना कुछ ठीक भी होता। इस समय जैनोंकी मर्यादा न शुद्ध प्राचीन जैन है और न नई ही–वह खिचड़ी है! एक जैन पंडित जो अंग्रेजीका तिरस्कार और सुधारका विरोध बड़े दर्पसे करता है, वह अंग्रेजी कोट, कमीज और बूट जूता अथवा मुसलमानी अंगरखा और पायँनामा बड़े चावसे पहनता तथा टूटेफूटे शब्दोंमें

अंग्रेजी लिखना अपना बड़प्पन समझता है। हम उससे पूछते हैं, भाई, जब तुम प्राचीन जैन संस्कृति पर कायम नहीं रह सके हो तो सुधारका विरोध क्यों करते हो? विवेकसे काम लो और समाजमें साहसपूर्वक वह सुधार करो जिससे जैनोंकी धर्म और कर्म दोनों क्षेत्रोंमें उन्नति हो। जैन धर्मका सिद्धान्त तो मनुष्यको प्रगतिशील और सुधारप्रिय बनाता है। वह साफ कहता है कि यदि तुम स्थितिके पालक बने रहोगे, अंधे रहकर जीवकी अनादि मिथ्या दशामें पड़े रहोगे, तो कभी सुखी नहीं होंगे, मोक्ष तुम्हें नहीं मिलेगा। इसके विपरीत यदि अनादि पुरातन दशा मिथ्यात्वका तुम त्याग करके अपनी दशा सुधारने लगोगे तो सुखी होंगे। संसार परिवर्तन शील है। इस सत्यको कोई कैसे भुला सक्ता है। अतः सुधार मार्गमें हमें अपने विवेकसे काम लेकर अग्रसर होना ही उचित है। चाहे पण्डित कहे या बाबू अथवा कोई मुनि कहे या शास्त्र, हमें तबतक उसकी बात नहीं मानना चाहिये जबतक हम अपनी विवेक वृत्तिसे यह निश्चित न करलें कि यह बात हमारे सम्यक्त्वके लिये साधक और लौकिक जीवनको उन्नत बनानेवाली है।

चाहे परमार्थका काम हो अथवा अपना निजी, उसमें हमें अपने विवेकको जागृत रखना उचित है। अच्छे बुरीकी तमीज रखकर ही जीवन बिताना चाहिये। समाजसे विवेकका मिटजाना उसकी अवनतिका लक्षण है। आज चहुंओर यह कहा जाता है कि लोग 'अर्थ' के पीछे पागल होरहे हैं। वे 'धर्म' को नहीं चीनते। परन्तु चीनें कैसे? समाजने विवाह, शादी, जीवन, मरण इत्यादिके खर्च इतने बढ़ा दिये हैं कि रात-दिन कोल्हूके बैलकी तरह पैसा पैदा करनेमें लगे रहने पर भी हाय तोबा मची रहती है। कहा जासता है कि समाज नहीं कहती कि कोई अपनी शक्तिसे अधिक रुपया खर्च करे। किन्तु यह कहना, सूर्यके अस्तित्वसे इनकार करना है। पहले तो समाजमें ऐसे लोगोंकी कमी नहीं जो व्यक्तिविशेष पर दबाव डालके उसकी इच्छाके प्रतिकूल और मनोनुकूल खर्च न कराते हों। जिस समाजमें एक असहाय विधवाको मरण भोजके लिये विवश किया जासक्ता है और जिस समाजमें चौदसके दिन महज बाल बनवानेके लिए बिरादरीसे बाहर किया जासक्ता है, उस समाजमें व्यक्ति-स्वातंत्र्यकी बात कहना एक मजाक है। थोड़ी देरके लिए यदि ऐसा मान भी लें तो भी समाजकी प्रवृत्ति कुछ ही ऐसी होरही है कि प्रत्येक व्यक्तिको अपनी प्रतिष्ठा रखने-नहीं, एक मात्र अपने पुत्र पुत्रियोंके अच्छे सम्बंध करनेके लिए आर्जव धर्मको तिलाञ्जलि देकर "ढोंग"का आश्रय लेना पड़ता है। परिणाम स्वरूप समाज आये दिन ऋणभारसे दबता जारहा है। इस अवस्थामें मेरे ख़यालसे इस समय सुधारका विरोध करना किसी भी तरह उचित नहीं है। सबसे पहले हमें समाजमें यह भाव जागृत कर देना चाहिये जिससे वह अपने विवेकसे काम लेसके और वह कार्य करे जो उसको स्वयं और उसकी समाजके लिये लाभप्रद हों। हमें यह याद रखना चाहिये कि जो बात हमारे लिए बुरी है, वह समाजके लिए भी उतनी ही बुरी है। बस अपना व्यक्तिगत जीवन यदि हम सुधार लें तो समाजके सुधरनेमें देर न लगे। और हमारा व्यक्तिगत जीवन तब ही सुधर सक्ता है जब हमारी मातायें सुशिक्षित बनें। अतएव इस समय सब ही विचारवाले जैनियोंका यह कर्तव्य होना चाहिए कि वह एक शक्तिसे समाजमें स्त्री-शिक्षाका प्रचार करें। किसी केन्द्रस्थान पर एक "कन्या महाविद्यालय" स्थापित करें! यह समाज और धर्म सम्बंधी सुधार करनेका मूल मंत्र है, जिसकी इस समय परमावश्यक है। इति शम्।

जैनसमाज और हमारा कर्तव्य।

लेखक—
पं० आनंदकुमार जैन शास्त्री
झालरापाटन।

बन्धुओं! संसारमें कोई भी कार्य दु:साध्य नहीं है, जितने भी कार्य होते हैं वे सब कार्य क्षमतापर निर्भर हुवा करते हैं। वर्तमान जैन धर्मके प्रचारकोंकी जो व्यवस्था एवं कार्यप्रणाली है वह किसीसे भी छुपी हुई नहीं है। उन सबकी रीति, नीति, कार्य, व्यवहार, रहन, सहन, चाल, चलन भिन्न२ हैं। एक दूसरेसे नहीं मिलती, इसी कारण सामाजिक कार्योंमें समता व सुचारु रूपताका अभाव पाया जाता है। जहां सहनशीलताका परस्परमें अभाव है वहांपर इनके विपरीत क्रोध, मद, मात्सर्य आदि कुभाव अपना प्रभाव जमा लेते हैं, यही दशा वर्तमान प्रचारकोंकी है! एक दूसरेको योग्यायोग्य बतलाना तो इनका एक सामान्य स्वभाव पड़ गया है! मैं इस बातको अच्छी तरह कह सक्ता हूं कि कोई भी व्यक्ति अयोग्य नहीं होता है परन्तु एक दूसरेकी अपेक्षा योग्य अयोग्यकी कल्पना हुवा करती है। यदि समस्त मानव समान होजावें तो बड़ा भारी आतङ्क छाजावे। परन्तु कभी किसी समयमें गुणोंकृत साम्यावस्था होना नहीं पाया जाता। नीतिका वाक्य है, "अयोग्य पुरुषो नास्ति योजकस्तत्र दुर्लभः" अर्थात् संसारमें कोई भी मनुष्य स्वभावसे अयोग्य नहीं है परन्तु किसी जीवको योग्यताकी ओर लगाना या किसीकी योग्यतासे काम लेना यही कठिन कार्य है, और इसीपर दूसरे मनुष्यकी परीक्षा भी निर्भर है। थोड़ी देरके लिये समझ लीजिये कि कोई महाशय सभास्थानमें जैन धर्म सम्बन्धी उपदेश अपनी योग्यतानुसार भरसक समझानेकी कोशिश कर रहे हैं, किन्तु सभास्थलमें स्थित सभासद गण आपके उपदेशको न समझसके तो उसमें उनका व जैन धर्मका दोष नहीं है, दोष है उपदेशदाताका तथा उपदेश देनेकी प्रणालीका।

क्योंकि धर्म जो यह शब्द है वह प्राणीमात्रका अन्तर्भाव गर्भित विशिष्ट तत्वका द्योतक है! यदि धर्मका लक्षण पूर्ण खोज व विचारसे अन्वेषण किया जाय तो यही ठहरता है "कि जो प्राणीमात्रको संसारदु:खोंसे छुड़ाकर उत्तम स्थानमें प्राप्त कराता" है। अर्थात् जीवोंको अशुभ प्रवृत्तियोंसे रोककर शुभ प्रवृत्तियोंमें आत्मप्रवृत्ति कराता है, यही धर्मका श्रेष्ठ एवं उत्तम सर्वजन् मान्य लक्षण है। इसी धर्मके धारण करनेवाले कैसे२ वीर पुरुष होगये हैं कि जिनके चरित्रोंका चित्रण करनेवाले आपके इतिहास स्वरूप पुण्यशास्त्र मौजूद हैं, तथा जिनमें आप नित्यप्रति किसी न किसीकी जीवनी सुनते ही हैं!

मित्रों! आप उन्हीं वीर पुरुषोंकी संतान हो, जिन्होंने स्वार्थ बुद्धिको अपने समीप तक नहीं आने दी थी!

पौरुष हीनता व भीरुताका स्वप्नमें भी जिनको दर्शन नहीं हुआ था, जिन महात्माओंके उपदेश अमृततुल्य बडे ही निर्मल, गंभीर तथा हृदयग्राही थे और समस्त भूमण्डलके सच्चे शुभचिंतक तथा प्राणी मात्रकी हितकामनामें ही अपनेको कृतार्थ समझनेवाले थे, आप भी उन्हींकी वंशपरम्परामें उत्पन्न हुए हैं जिनका समस्त जीवन परोपकार करनेमें ही लगा रहता था! धार्मिक जोशसे जिनका मुखकमल हमेशा प्रकाशमान सूर्यके सदृश दमकता रहता था, जिनका सिद्धांत सूत्र यह बना था कि

"आत्मवत् सर्वभूतेषु" अर्थात् जो अपनी आत्माके समान दूसरे जीवोंकी रक्षा करते थे। "सत्वेषु मैत्री, अथवा वसुधैव कुटुम्बिकं" की भावनाके द्वारा अखिल जगतको अपने स्वरूप करनेको समर्थ थे और इस संसारको असार समझकर निरन्तर अपना तथा अन्य जीवोंका कल्याण करनेमें ही संलग्न रहते थे, ऐसे ही पूज्य पुरुषोंको आप अपने आपको अनुयायि तथा उपासक भी बतलाते हैं।

जो ज्ञान विज्ञानके पूर्ण ज्ञाता दृष्टा थे, जिनके उपदेशमें पशु पक्षी तक भी उपदेश सुननेको आते थे, जिन्होंने जीवोंको उपदेश देकर धर्म तथा धारण कराकर जीवोंका उद्धार किया था तथा अन्य मतावलम्बियोंपर धर्मका पूर्ण प्रभाव जमा दिया था इस लिये आप भी अपने हृदय पर हाथ रखकर विचार कीजिये कि जैसा आपके पूर्व महा पुरुष करते चले आये हैं उसका कुछ अंश तो पालन करो, जो आप दिन प्रति दूसरोंका उपकार करनेसे अपना हाथ खींचते हैं। तथा जी चुराते हैं क्या यह कार्य आपका उचित एवं योग्य कहा जासक्ता है! सबसे प्रथम हमारा कर्तव्य होना चाहिये कि अपने आपमेंसे स्वार्थ-परतादि दोषोंको तिलांजली देडालें। बाद उत्साहसे परोपकारको ही अपना मुख्य धर्म बनालेना चाहिए।

अपने पूज्य पुरुषों व ऋषि मुनियोंका मार्ग अवलम्बन करना चाहिए, और दूसरे जीवोंपर दयाकर मिथ्यात्वरूप कर्दमसे निकालना ही मुख्य कर्म होना चाहिए। यही हमारा इस समय मुख्य ध्येय होना चाहिए तभी हम अपने कर्तव्यको पालन कर सकेंगे। अपनी संतानको विद्या बुद्धि बलसंपन्न बनाकर परोपकारमय भावोंसे ओतप्रोत बनादें। तभी यह जैन समाजकी जंजरी नौका पार होनेका अवसर प्राप्त होगा।

आयुर्वेद और जैन समाज।

(ले०-पं० सिद्धिसागर जैन वैद्य-ललितपुर।)

आयुर्वेद मनुष्य मात्रका ही नहीं बल्कि प्राणी मात्रका कितना उपयोगी है। आयुर्वेदका ज्ञान प्रत्येकको होना अत्यावश्यक है। क्योंकि "शरीरं व्याधिमंदिरम्" यह शरीर व्याधियों (रोगों) से ही भरा हुवा एक पिटारा समझना चाहिये।

शरीरमें वात, पित्त, कफ ये तीनों ही शरीरके स्थिर रखनेके लिये शरीरके परमोपकारी हैं। ये तीनों जबतक अपने २ प्रमाणमें यथावत् रूपसे स्थित रहते हैं तब तक शरीरमें कोई भी कष्ट नहीं होने पाता। जहां थोड़े ही मिथ्याहार विहारसे किसी भी वातपित्तादिकी हीनधिकता हुई बस इसेही रोग होना कहते हैं। इन्हींकी कमी या अधिकतासे मनुष्य बड़े बड़े सन्निपात, संक्रामक, राज्यक्ष्मा, व्याधि आदि भयंकर रोगोंमें फंसकर योग्य चिकित्सा न होने पर अपनी अवधिके पूर्वही अकाल मृत्युके नियमानुसार मरणको प्राप्त हो जाते हैं। इसी लिये हमारे पूर्वाचार्योंने बतलाया है कि:—

आयुर्हिताहितं व्याधिर्निदानं शयनं तथा।
विद्यते यत्र विद्वद्भिः स आयुर्वेद उच्यते॥
अनेन पुरुषो यस्मादायुर्विन्दति वेत्ति च।
तस्मान्मुनिवरैरेष आयुर्वेद इति स्मृतः॥

अर्थात्—जिसमें आयुके हित अहित पदार्थोंका रोगोंका निदान और व्याधियोंके विनाशके उपाय बतलाये हों, वही आयुर्वेद शास्त्र है। जिससे मनुष्य आयुको प्राप्त करता है वही मुनिवरोंने आयुर्वेद कहा है।

ऐसे जगत उपयोगी आयुर्वेदकी मान्यता जैन ऋषियोंने किस भांति की है। हमारे पूर्वाचार्योंने

हम लोगोंके हितार्थ श्री अष्टांग हृदययोगचिंतामणि जैसे महान् ग्रन्थोंकी रचना श्री स्वामी हर्षकीर्ति आदि जैनाचार्योंने की है। जिससे आज संसारका भारी कल्याण होता है।

ये लिखते हुए हमें भारी खेद होता है कि वर्तमान समयमें हम लोगोंने इसकी ओर कुछ भी ध्यान नहीं दिया। जितने विद्वान आजकल अन्य विषयोंके दिखला रहे हैं कहीं आज आयुर्वेदिक शिक्षा हम लोगोंने प्राप्त की होती तो हम लोगोंका कितना मान सन्मान अर्थकी प्राप्ति एवं जगतमें कितना यश फैलता!

चिकित्सक (वैद्य) यदि उत्तम विचारोंसे बुद्धिपूर्वक जनताकी सेवा चिकित्सा करे तो उसका भारी महत्व बढ़ता है। जनता उसे अपना सर्वे-सर्वा मान लेती है। जो कुछ भी वैद्य जिससे जेसा कहे करनेको तैयार होजाते हैं, कोई भी धर्म या अपने विचारोंके प्रतिकूल नहीं होने पाता। आयुर्वेदकी जितनी प्रशंसा की जाय थोड़ी है।

हमारा मन्तव्य कहनेका केवल यह है कि जैन समाज जो इसे पूर्णरूपसे अपनाती नहीं है, इसे शीघ्र ही स्व परहितकारी जानकर शीघ्रही इस ओर लक्ष्य करे।

जैन समाजमें आजकल अनेकों विद्यालय हैं और नवीन२ खोले जारहे हैं, उनमें आयुर्वेदका कोर्स अवश्य ही रक्खा जावे या कोई नवीन आयुर्वेदिक विद्यालय खोला जावे, जहांपर गरीब होनहार एवं उत्साही जैन बालक आयुर्वेदिक आठ अंगोंकी यथावत् रूपसे शिक्षा ग्रहण करके अपना और परका उपकार कर सकें।

कई आयुर्वेदिक वैद्य सम्मेलनोंमें जानेका अवसर हमें मिला, परन्तु यहां जैन समाजके अल्प संख्यामें ही पठित वैद्य देखकर हृदयमें दुःख हुवा। अन्य वैद्य वर्गोंके सामने अपनी संख्यापर बहुत ख्याल होता है। परन्तु क्या करें, हमारे धनीमानी रईस इस ओर दृष्टिपात करेंगे तभी कार्य होना संभव है।

हम परोपकारी जैन समाजके आयुर्वेदिक विद्वान गुरुवर्य हकीम कन्हैयालालजी जैन गवर्नमेंट यू० पी० इंडियन मेडिसन बोर्डके चीफ मेम्बर कानपुरको बार२ धन्यवाद देंगे जिन्होंने हम जैन नवयुवकोंको आयुर्वेदकी शिक्षाका कितना उत्तम प्रबंध कर रक्खा है। जहांसे अनेकों वैद्य आयुर्वेदिक शिक्षा प्राप्त करके विशारद, शास्त्री एवं आचार्य परीक्षाएं उत्तीर्ण करके अनेकों डिस्ट्रीक्ट बोर्ड, म्युनिसिपल बोर्ड आदि औषधालयोंमें काम कर रहे हैं।

श्रीमान् वैद्यराज कन्हैयालालजी बादशाही नाकेपर जैन बृहत् औषधालय और गिल्लिबाजारमें आयुर्वेद विद्यालय एवं शाखा औषधालय चला रहे हैं जिससे नित्य ४००-५०० रोगी लाभ उठाते हैं। पूर्ण रूपसे शिक्षाका प्रबन्ध है। जैन समाजके बालकोंको यहांसे शिक्षाका लाभ लेना चाहिये।

अनेकों जैनाचार्य कृत आयुर्वेदिक जैन ग्रन्थ यत्रतत्र ग्रन्थालयोंमें अप्रकाशित हुए हस्तलिखित दीपकों और क्रीडोंसे खाये जारहे हैं, उन्हें प्रकाशित कराकर अपने जैनचार्योंकी कृति सब लोगोंके सामने रखना चाहिए।

वर्तमानमें मौजुदा जो अष्टांग हृदय योग चिंतामणी आदि महान ग्रन्थ हैं इन्हें गवर्नमेंट परीक्षालयके कोर्समें प्रयत्न करके रखवाना चाहिए।

जिस तरहसे होसके जैन समाजको आयुर्वेदकी शिक्षापर ध्यान देना चाहिये। आशा है समाजके श्रीमान एवं विद्वान् गण इस ओर अवश्य ही दृष्टिपात करेंगे।

जैन समाजमें विद्याका अभाव।

(रच०—श्री पं० रामकुमार न्यायतीर्थ, विद्याभूषण, हिंदी प्रभाकर।)

(१)

हम क्यों न फिर अंधे बनें जब ज्ञानज्योति नहीं रही।
इस ही लिये संपत्ति और सारी सुमति जाती रही॥
दिल होगये पत्थर हमारे जोशमें आते नहीं।
हा! ठोकरें लगती रहें पर होशमें आते नहीं॥

(२)

हम किस तरहसे जातिका इतिहास बोलो जानलें।
क्यों होगया है ह्रास इतना किस तरह पहचानलें?
जब शास्त्रके भण्डार हैं बस खाद्य कीड़ोंके लिये।
लेकिन न खुल सकते कभी वे सुप्रवीणोंके लिये॥

(३)

जब सप्तवर्षी सुत हुवा तो मारवाड़ी सीखली।
या नमक, धनियाँ बेचनेकी कुशलकारी सीखली॥
सम्पन्न अब वे होगये सब सेठजी कहने लगे।
पंचायतोंमें कुर्सियां उनको सभी देने लगे॥

(४)

दुर्भाग्यसे लीडर हमारे जब कि लाला बन गये।
उद्यानमें ओले पडे सब दब गये अँकुर नये॥
डूबे न क्यों नैया हमारी फिर भला मंझधारमें?।
हम खुद मिलाते हैं गरल जब ज्ञानकी रसधारमें॥

(५)

अज्ञानियोंके हाथमें जब बागडोर चली गई।
कलियां सुशिक्षाकी तभी पैरों तले कुचली गई॥
हा! ज्ञानसर सूखा हुआ और कमलिनी कुम्हाला गई।
कुहरा पडा अज्ञानका जिन ज्योति सब धुँधला गई॥

(६)

विकसित बताओ किस तरह फिर हों हमारी शक्तियां।
जब बाल वयसे सीखलीं हमने कुभोगासक्तियां॥
यह धुन लगा है जातिको जो मूलसे खा जायगा।
यह कोढका वह रोग है जिससे कि तन गलजायगा॥

(७)

विद्या विभवसे हीन हो यों दीनसे हम होगये।
तालाव सूखा तड़फड़ाती मीनसे हम होगये॥
चिन्तामणी करमें बंधा और हम भिखारी रह गये।
है पासमें सागर भरा प्यासे अनारी रह गये॥

(८)

जगदीश वसुसे लोकमें विख्यात विज्ञानी हुवे।
जिन आगमोंको देखकर योरोप तक नामी हुवे॥
हम बेचते हैं आज उनको कलहके बाजारमें।
तुम डूब जाओगे किसी दिन अश्रुओंकी धारमें॥

(९)

श्री मेंक्समूलर कह उठे पढ़ वीर प्रभुकी वाणियां।
हा! जैन इनको भूलकर हैं कर रहे निज हानियां॥
क्यों रो न पड़ते हो भला क्या है तुम्हारे दिल नहीं।
क्या डूब मरनेके लिये दुनियांमें चुल्लू भर नहीं॥

(१०)

हां! जर्मनीवाले हमारे तत्वको खोजा करें।
हम तानकर चद्दर भवनमें मौजसे सोया करें॥
क्या और भी शर्मिन्दगी इससे अधिक है लोकमें।
नीचे झुकी ही जारही गर्दन हमारी शोकमें॥

(११)

सोचो सही हम जुल्म कितना ढारहे सन्तानपर।
तलवार जब बाकी नहीं क्या रीझते हो म्यानपर?॥
विद्या नहीं तो धूल है उस लखपतीकी शानपर।
क्या देखते हो सज्जनो! आई है बाजी प्राणपर॥

(१२)

तूफानसे है आरही आवाज जो अतिक्रूर है।
हे जैनियो! गाफिल न हो देखो किनारा दूर है॥
सन्तानको विद्या पढाना यदि नहीं मंजूर है।
तो फिर अविद्याकी शिलासे नाव चकनाचूर है॥

(१३)

क्या काम आयेंगी भला रक्खी हुई ये चाँदियाँ।
जिनवृक्ष जब गिर जायगा चलकर अविद्या आँधियाँ॥
फलफूलके गुच्छे कहां अब पत्तियां तक हैं नहीं।
सींचा न यदि विद्या सलिलसे लकड़ियाँ तक भी नहीं॥

(१४)

सचमुच प्रलयका दृश्य होगा जातिके अवसानका।
क्या रूप धारेगा अहो! उद्यान यह श्मशानका॥
हम क्रूर काल करालकी सब खाद्य बलि बन जांयगे।
क्या फिर पता जैनत्वका हम ढूंढ़ने पर पाँयगे?

दिगम्बर जैन सूरत।

दि–व्य धर्म है जैनका, स्याद्वाद है मूल।
शरण कर परखो सभी, सत्यासत्य समूल॥१॥
ग–ण्यमान्य है विश्वमें, धर्मोंके मंझधार।
एक पक्षके ग्रहणसे, करते सब निर्धार॥२॥
म्–त खींचो तुम पक्षको, पक्ष दुःखका मूल।
निर्भय हो विचरो सभी, जंह न पक्षका सूल॥३॥
ब–र्णन है जहां देशका, है वह नयका रूप।
नय होता है अँशमें, सकल प्रमाण स्वरूप॥४॥
र–जनी भूषण चंद्र ज्यों, त्यों नय जैन प्रमाण।
पक्ष–पातको त्यागके, लख जैनागम मान॥५॥
जै–न धर्म परमार्थका, प्रतिपादक निर्धार।
अन्य धर्म संसारके, विषय भाव रचनार॥६॥
न–हिं जीवोंमें भिन्नता, सब हैं एक समान।
व्यवहार दृष्टिसे भिन्न हैं, निज निज कर्म प्रमान॥७॥
सू–रवीर नर धारकर, याते अविचल धाम।
नहिं कायर धारण करें, महाविषम जिन नाम॥८॥
र–त होकर लेवो सभी, जैन पत्रको मित्र।
तत्पर हो वांचो सभी, जैन दिगम्बर पत्र॥९॥
त–भी ज्ञान निज जातिका, होगा तुमको मित्र।
फुल्ल चित्त हो बंधुवर? धर 'आनंद' पवित्र॥१०॥

आनंदकुमार शास्त्री–झालरापाटन।

आजकलके नवयुवक।

फेशनभूत चढ्यो सिरपै, निज आयव्ययकों नाहिं विचारें, सागे हु देश भयो कंगालपै, चाल वही बेढंगी सम्हारें॥१॥ बाहर छैल बने बढ़िया, सिर ऊपर 'फाइन' मांग सम्हारें। जर्जर होय रहे तनसे मुख माखी उड़ानकौं भृत्य पुकारें॥२॥ इक लेय रहें करमें लकुटी, तिहिको निज बानिमें 'केन' उचारें। श्वान भगावन हेतु गहैं, नहीं शक्ति असी जो शत्रुको मारें॥३॥ कोमल होय रहे इतने नहिं, खादीके वस्त्र शरीर सुहावें। मलमल चीनके पट्ट बिना, नहिं आन बसन इनके मन भावें॥४॥ दूधको पान भुलाय दियो "टी"के "कपके कप" खूब उड़ावें। जठराग्नि सु मंदभई इनकी, नहिं सोडा विना पाचन कर पावें॥५॥ आंखन ज्योति सुछीन भई, नहिं चश्मा बिना कुछ भी लख पावें। दो हु कपोल सुशुष्क भये, नहिं यौवन चिह्न सु–प्रकट दिखावें॥६॥ 'टाइम' हेतु रखें घड़ियां 'फेन्सी' तिनमें इक 'चैन' लगावें। क़ायम 'टाइम' पै न रहैं, नकलीपन कौ इक दृश्य दिखावें॥७॥ डासन "फ्लैक्स" के शूज बिना, नहिं एक क़दम आगे चल पावें। देशीको दैंय बताय बुरे, नहिं देशको कछु व्यवसाय बढ़ावें॥८॥ "वैसलिन" तैल मलैं मुखपैं, तासौं मुखकौ कछु ओज बढ़ावें। दांतुन मंजन भूल गये, 'ब्रश' 'पाउडर' से दांतन चमकावें॥९॥ 'मण्डल' आदिक खोलैं अनेक, पै एकहिकों नहिं ठीक चलावैं। पूर्व दिखा उत्साह अति, पै अन्त समय शैथिल्य जतावें॥१०॥ देख दशा इन युवकनकी सज्जन जन तो अति ही दुःख पावें। निर्बल थंभ भये जिनके, वे सदन कहो कैसे टिक पावें॥ ११॥

गोविंदराय जैन न्यायतीर्थ–भोपाल।

तेरही या नुक्तेकी प्रथा।

[(रचयिता-श्री० ब्र० प्रेमसागरजी पंचरत्न)

नहीं किसी ऋषिवरने इसको लिखकर हमें बताया।
अथवा नहीं किसी ऋषिवरने, भाषण हमें सुनाया॥
नहीं किसी शास्त्रोंमें इसका, विधान हमने पाया।
नहीं किसी भी धर्मगुरूने, इसको धर्म बताया॥
धर्म आत्माका स्वभाव है, जिसने उसको पाया।
वही मनुज मिथ्यात्व छोडकर, सम्यक् श्रद्धा लाया॥
किंतु आज हम उस स्वभावसे, परिचित नहीं हुए हैं।
इस कारण मिथ्यात्व कर्मसे विरचित नहीं हुए हैं॥
जितने भी मिथ्यात कर्म हैं, उनमें बड़ा यही है।
धन और धर्म नाश करता है, अघका घडा यही है॥
जिस प्रकार जैनेतर भाई, इसपर श्रद्धा लाते।
उसी तरहसे हम भी इसको, धर्म मानते आते॥
वह कहते हैं मृतक मनुजकी, जबतक श्राद्ध न होती।
तबतक वह इस जगत-जालमें, फिरें भटकती रोती॥
ऐसा ही श्रद्धान बहुतसे, जैनी करते आते।
तथा बहुतसे नामवरीपर, इसे मनाते आते॥
नामवरी या रूढ़ि भक्तिका, इसमें भाव भरा है।
जिसका बिलकुल ठीक विवेचन, सुनिए आप जरा है॥
नामवरीपर धनिक हमारे, इसपर द्रव्य लुटाते।
सहस्रसे ऊपर पंचोंकी, जीमनवार कराते॥
पुड़ी, कचोड़ी, घेवरबावर, लड्डु खूब खिलाते।
इस जीमनको जीम पंच भी, फूले नहीं समाते॥
इतने पर भी लान बांटते, कहते पुण्य कमाते।
उनके पिट्ठू पंडित गण भी, इसको धर्म बताते॥
इन धनिकोंके पीछे चलकर, निर्धन लुटते जाते।
वे भी उनसा जीमन देकर, धनको खूब लुटाते॥
कर्जा लाते, सदन लिखाते, जीमनवार मचाते।
अथवा जेवर गिरवी रखकर, उसको सफल बनाते॥
अगर नहीं वह पुड़ी कचोड़ी, औ लड्डू बनवाते।
तबतो न्यायी(?) पंच खफा हो, आंखें उसे दिखाते॥

सादा भोजन उन्हें न भाता, करनेमें शरमाते।
इससे लड्डू बननेका, कानून उन्हें बतलाते॥
धनिकोंकी उस नामवरीको, निर्धन हैं अपनाते।
जिसके कारण वे कुछ दिनमें, कर्जी है हो जाते॥
नुक्तेमें सब द्रव्य लुटाकर, विपत्तिमें फँस जाते।
लेकिन लोभी पंच तनिक भी, उनपर रहिम न लाते॥
जो निर्धन जन तेरहीके प्रति, चुप होकर रह जाते।
उनपर मुखिया लोग खफ़ा हो, आंखें लाल दिखाते॥
अगर नहीं वह करता नुक्ता, तो उसको धमकाते।
मंदिर जाति बंद करनेका, भय उसको दिखलाते॥
अगर कहे उस वक्त नहीं वह, तो यों कह समझाते।
'करना अबकी साल किन्तु हम खातेमें लिखवाते'॥
वह करना स्वीकार इसे, तब मुखिया खुश हो जाते।
पाकर समय तक़ाजा करते, खोटी-खरी सुनाते॥
अगर नहीं वह फिर भी करता, तो मुखिया रिस-आते।
गुस्सा होकर जाति और मंदिरसे बंद कराते॥
इस कारणसे बहुत लोग तो अजैन होते जाते।
इन जैनोंको हाथ जोड़कर नमस्कार कर जाते॥
मुखियो? सच तो कहो, तुम्हें वे लड्डु कैसे भाते।
कैसे होकर धनिक आप, निर्धनियोंको धमकाते॥
उनके घरमें मातम छाया, लेकिन तुम मुस्काते।
क्रन्दन-नाद मचा उसके घर, लड्डू तुम्हें सुहाते॥
अगर सुधारक आज आपसे, नुक्ता बंद कराते।
तो मनमानी कह कर उनको, धर्मभ्रष्ट बतलाते॥
करते नहीं बन्द तुम इसको, धार्मिक प्रथा बताते।
उसके लिए एक निर्धनका घर भी तुम बिकवाते॥
अब लाओ कुछ समझ हृदयमें, इसको बंद करादो।
धन अरु धर्म बचाकर दोनों, जगमें सुयश कमालो॥
बहुत बुरी यह प्रथा इसीने समाजको तड़फाया।
जो करता है बन्द इसे वह, 'प्रेम' पन्थपर आया॥

"ઘાતક રૂઢીયો."

(લેખક—સાગરમલ મૂલચંદ તલાટી—દાહોદ.)

કવિ શ્રી નાનાલાલભાઇએ કહ્યું છે કે "રૂઢીયો તે તો સંસારનગરીના રાજમાર્ગો છે." જેવી રીતે એક શહેરને મુખ્ય રાજમાર્ગ અગર ધોરી રસ્તો હોય છે તેમ સંસારરૂપી નગરને રૂઢીયોરૂપી અનેક રાજમાર્ગો છે. કેટલાક રાજમાર્ગો સારા પણ હોય છે, કેટલાક ખરાબ, ગંદા અને લુટારૂના ભયવાળા પણ હોય છે, તેવીજ રીતે કેટલીક રૂઢીયો સારી અને કેટલીક નરસી પણ હોય છે.

મરણ પછાડી રોવા કુટવાનો પણ ચાલ, પ્રેત ભોજન કરવાનો ચાલ, કન્યાવિક્રયનો ચાલ વિગેરે ચાલો ખોટા છે, ત્યારે છોકરાઓને ઉમર લાયક થતાં સંસ્કાર આદિ ભણાવવાનો ચાલ, દાન કરવાનો ચાલ વિગેરે રીતરીવાજો સારા છે.

આ લેખમાં આપણે સારા રીત રીવાજો પર વિચારવાનું નથી પણ ખોટાથી થતાં નુકશાન પર વિચાર કરીશું.

મરણ પછાડી રોવા કુટવાનો ચાલ બહુજ ખરાબ છે. માણુસના મર્યા પછી સાધારણ રીતે દરેકને રડવું તો આવે, પણ તે અમુક વખતેજ આવશે તેવું કંઇ નક્કી હોતું નથી. તે છતાં પણ "સવારનો છેડો" ને "બપોરનો છેડો" એમ કહી અમુક મુકરર કરે તે વખતે રાગડા તાણીને રોવામાં આવે છે. આ એક જાતનો ઢોંગ ન કરતાં હોય તેવું લાગે છે. તે વખતે એક બીજાના મેણાં પણ બૈરા રોતે રોતે ગાય છે. તે વખતનો દેખાવ વાક્ય યુદ્ધના મહાભારત જેવો લાગે છે.

બીજું માણુસ મરી જાય તો તેના પછાડી "હાયરે હાય" કરી છાજીયાં લે છે, અને છાતીયો (સ્ત્રીઓ) કુટે છે. બજાર વચ્ચે ઉઘાડી છાતીયો કરી કુટવું તે કેટલું બેશરમું કામ છે? કુટવાથી શરીરને નુકશાન પહોંચે છે. કુટવું તે મનુષ્યને દરેક રીતે નુકશાન કર્તા છે. આ રીવાજો બંધ કરવા સારૂ સ્ત્રી વર્ગમાં કેળવણીનો પ્રચાર કરવો જોઇએ. જો તેમ કરીશું તો આ રીવાજ એની મેળે ધીમે ધીમે નાશ પામશે.

હવે આપણે પ્રેત ભોજનની વાત કરીશું. પ્રેત ભોજન એટલે માણુસ મરી ગયો હોય તેની પછાડી ભોજન કરવું અગર નુકતો કરવો તે. માણુસ મરી જાય ને તેને ત્યાં આપણે જમવા જઇએ તે આપણા માટે કેટલી લજ્જાસ્પદ વાત છે? જેના ઘરમાં મરણ થયું તેના ઘરમાં રોકુટ ચાલતી હોય, દરેક ઠેકાણે શોકમય વાતાવરણ પથરાયલું હોય, તે વખતે આપણે પટેલીયા બની લાલ પાઘડી પહેરી, ગાળેલા પાણીનો લોટો ભરી લાડવા ખાવા બેસી જવું તે આપણને ગમે ખરૂં કે? ખરેખર એક કવિ કહ્યુંએ છે કે—

"મેરે ઘરમેં મોત હુઈ, પંચોકો લડુ ખાને હૈ,
લડડુ ખાને કયા આતે હૈં, જીવ હમારા ખાતે હૈં.

ખરેખર તેના ઘેર જમવા જવું એટલે તેનો જીવ ખાવો બરાબર છે. પ્રેત ભોજન જમવું કે લોહીના લાડુ જમવા તેમાં ફેર નથી. આ ભોજન દાઝયા પર ડામ જેવું છે. તેથી એક કવિ લખે છે કે:—

ધિક્ક ધિક્ક એ ચાલ, મરણ પાછળ જમવાનો;
ધિક્ક ધિક્ક એ ચાલ, દુઃખમાં છે જમવાનો.
ધિક્ક ધિક્ક એ ચાલ, હળાહળ અનરથ રૂપે;
ધિક્ક ધિક્ક એ ચાલ, ઉતારે ઉંડે કૂપે.

આ પ્રેત ભોજનની રૂઢીયે દેશના હજારો કુટુંબોને ધનહીન કર્યાં છે. જ્યાં એક ટંકના ખાવાનાં સાસાં હોય, દાંત ને અન્નને વેર હોય, તેવે વખતે ઘરમાં કોઇનું મૃત્યુ થાય તો આ પ્રેત ભોજન કરવાને હજારો રૂપીઆ ઉધારે લેવા પડે,—ન હોય તો તે વખતે સગાં સબંધીઓ આપવા પણ ઉભા થઇ જાય—અને પંચો માટે ભોજન કરાવે. ભલે માણુસ પંચો પાસે કરગરે

પણ મિષ્ટાન્ન પ્રેમી પંચો સાંભળતા નથી પણ ઉલ્ટું તેનું કુળ મોટું છે એમ કહી ભોજન કરાવે છે. અને તેને દેવામાં છેવટે ડુબાવે છે. તે પોતાની અને પોતાના કુટુંબની પાયમાલી કરે છે અને પંચોપર શાપ વરસાવે છે.

"જૈન ગેઝેટ" ના માન્યવર પ્રકાશકજી આ રૂઢીને પૂર્વજોનું નામ સ્મરણ કરાવતી કહી ચાલુ રાખવાનો આગ્રહ કરે છે! અને કહે છે કે ગરીબોને કોણ કરવાનું કહે છે? પણ શ્રીમંતોએ અવશ્ય કરવુંજ જોઇએ પણ તે પ્રકાશકજીને આ વાત ધ્યાનમાં નથી કે મનુષ્યનો સ્વભાવ નકલ કરવાનો છે. જો આજ કોઈ પૈસાદાર કરશે તો આવતી કાલે કોઇ ગરીબ પોતાનું કુળ ઉંચું છે તેવા ફાંકાંમાં તે પૈસાદારની નકલ કરશે. અને આજકાલના કટોકટીના જમાનામાં દુઃખમાં સબડતો ગરીબ પછીથી શાપો વરસાવશે, માટે આ પ્રથા સમાજમાંથી બીલકુલ તિલાંજલી આપવા યોગ્ય છે.

જો આ પ્રેત ભોજન ન કરતા તે પૈસા જો સમાજના હજારો ગરીબ કુટુંબો કે જેમણે અન્ન ને દાંતને વેર છે તેવાને વગર વ્યાજે ધીરવામાં આવે તો તેઓ થોડો ઘણો વ્યાપાર કરી પાપી પેટનો ખાડો પુરતા થાય અને સમાજને આશીર્વાદ આપે કે જેથી સમાજની વૃદ્ધિ થાય. તે આજે પાપી પેટને ખાતર પોતાની વહાલી પુત્રીઓને વૃધ્ધો સાથે કન્યાવિક્રય કરીને પરણાવતા હોય તે બંધ થશે. જેથી વૃદ્ધ વિવાહ અને કન્યાવિક્રય બંન્ને બંધ થશે, માટે આ અનિષ્ટ રૂઢીનો જેમ બને તેમ જલ્દીથી દેશ નિકાલજ કરવી જોઇએ.

કન્યા વિક્રય અને વર વિક્રયના ચાલો તે પણ બહુજ ખરાબ છે. આ વિષયો ઘણાજ ચર્ચાઈ ગયેલાં છે તેથી તે વિષે ઘણું થોડુંજ લખીશ. આ રીવાજોથી બાળ લગન અને વૃદ્ધ લગ્ન જેવી ઘાતક પ્રથાઓએ સમાજમાં ઘર ઘાલ્યું છે. કન્યાવિક્રય અને વરવિક્રય બંધ કરવામાં આવે તો મારૂં મંતવ્ય છે કે આ બંને પ્રથાઓ બંધ થઇ જશે. માટે આ જલ્દીથી બંધ કરવી જોઇએ. જો આ પ્રથાઓ બંધ નહિ કરવામાં આવે તો વિધવાઓની સંખ્યા વધશે અને તેને પરિણામે વિધવાઓ બળવો કરીને પુર્નલગ્ન-કે જેને આપણે અધર્મ ગણીએ છીયે તે કરવા તત્પર થશે, માટે ચેતો, "ચેતતા નર સદા સુખી." ચેતશો નહિ તો પાછળથી પસ્તાશો.

દશા હુમડની કન્યા દશા હુમડનેજ અપાય તે વીસાને ન અપાય એવી રીતની જે રૂઢીયો આપણા સમાજમાં પેસી ગઈ છે તે બહુજ નુકશાનકારક નીવડી છે. આ રૂઢીથી કજોડાં ઘણાં થાય છે. લાયક વરને લાયક કન્યા મળતાં ઘણીજ મુશ્કેલી પડે છે, તેથી ઉંટને ગળે બકરૂં અને હંસને ગળે કાગડો વળગાડાય છે, માટે આપણે નાનાનાના નાતના વાડાઓ તોડી નાખી દરેક જૈનને દરેકની કન્યા ખપે તેવું કરી નાખવું જોઇએ. અંતમાં મારી કહેવાની મતલબ કે આંતર જાતીય લગ્નની શરૂઆત કરી દેવી જોઇએ, આ શરૂઆત પ્રથમ શ્રીમંતોએજ કરવી જોઇએ કે જેથી એની નકલ બીજાઓ કરે.

સમાજમાં બીજી અનેક ઘાતક પ્રથાઓ છે. પણ ચર્ચતાં આ લેખ ઘણોજ લાંબો થઇ જાય તેથી હવે હું વિરમીશ.

પ્રતિજ્ઞા.

હિંદી ખરે હું હિંદી છું, વસ્ત્રોજ હિંદી વાપરૂં;
વાણી વદી હું હિંદી ને, સૌ રીત હિંદી આચરૂં.
મહેનત તણો કરનાર હું, નેકી અને ટેકી બની;
રક્ષાજ છું કરનાર હું, નબળાજ જે મારા થકી.
ચહાનાર હું તે ફર્જથી, સાચી રીતે મમ દેશને;
સન્માન ભારત માતનું, કરવાજ હું શિખું ખરે.
અભિલાષ મારો છે ખરે, ઇચ્છુજ પણ હું એટલું;
ઉન્નત્ત કરવા હિંદને, સર્વસ્વ હું ચરણે ધરૂં.

મોહનલાલ એમ. કારણીસાકર-કંપાલા.

"પ્રેત ભોજન."

(૧)

"બ્હેન દીવાળી ? જો આજ તારા પતિને મર્યાને તેર દિવસ થયા તો તેની પછાડી તારે ન્યાતને જમાડવી જોઇએ." આ પ્રમાણે ન્યાતના ખાઇ બદેલા પણ આગેવાન અને પ્રતિષ્ઠિત ગણાતા મોટા પેટના શેઠ ચોરમલજી બોલ્યા.

"કાકાજી, તમે કહી તે વાત ખરી પણ હું પૈસા કયાંથી લાવું ? તમે તો મારા પિતા જેવા છો. તમે મારા ઘરની બધી વાત જાણોજ છો. તે તો મહીને પચ્ચીસ રૂપીઆ લાવતા તેમાં શું વધતું ?" એમ દીવાળીએ હૃદયની વાત ઉકેલતાં જવાબ આપ્યો.

"બ્હેન તારી વાત તો ખરી પણ તું જાણે છે, કે આપણું કુળ તો મોટું. આપણે કુળવાન ગણાઇએ. આપણા કુટુંબમાં કોઇનો નુકતો બાકી રહ્યો નથી. દરેકના નુકતાની લ્હાણી પણ કરી છે. કેશવના દાદાના દાદાના દાદાના નુકતાની લ્હાણી તો ચાંદીના લોટાની કરી હતી. બ્હેન સમજી ? આપણે તો કેશવનો નુકતો કરવો જોઇએ."

"કાકાજી, તમારી વાત તો ખરી, મારી પાસે તો એક ફૂટી કોડી પણ નથી રહી. જે કંઇ બચાવ્યું હતું તે તેમના દવાદારૂમાં ખર્ચાઇ ગયું. હવે તો કાંઇ પણ......" આટલું દીવાળી બોલે તે પહેલાં કાકાજી વચમાં એકદમ બોલી ઉઠયા. "અરે શું ફિકર છે. આ આખું ત્રણ હજારનું મકાન તો છે. તેના ઉપર રૂપીઆ લાવીશું. હવે તું ફિકર કરતી નહિ. બોલ નુકતામાં શું બનાવીશું ?"

દીવાળી તે વાતમાં સંમતિ આપે તે પહેલાં જીભના રસીયા ચોરમલ શેઠ "શું બનાવવું" એમ પુછવા લાગ્યા.

દીવાળીની આંખમાં આંસુ આવ્યાં. મનમાં થઇ આવ્યું કે એ લોકો કેટલા નીચ છે કે જે આ મકાન કે જેના પર મારા ભરણ પોષણનો આધાર છે તે તેમના લાડુ ખાતર ગીરો મુકાવવા તૈયાર થઇ ગયા છે. તેણે મુંગે મોઢે ચોરમળ શેઠ જે કરાવે તેમ કરવા સંમતિ આપી.

(૨)

દીવાળીની ઉમ્મર ફકત ૨૪ વરસની હતી. તેને બે છોકરીઓ ૭ અને ૬ વરસની હતી. દીવાળી હજી જુવાન હતી. તેના પતિ કેશવલાલની ઉમર ૨૮ વરસની હતી. તે ગુમાસ્તાગીરી કરી રૂ. ૨૫) નો પગાર લાવતો. ધણી ધણીઆણી ખુશીથી જીંદગી કાઢતાં હતાં. કુદરતને સારૂં ન ગમ્યું. અને કેશવલાલની ૨૮ ની ઉમરે તે હૃદય બંધ પડવાથી અચાનક મરણ પામ્યો. તે તેની પછાડી એક વિધવા અને બે પુત્રીઓ મુકી ગયો. તે જુવાનીમાં મરણ પામ્યો તે વાતની દયા ન ખાતાં પંચો તેના મરણના લાડુ ખાવા તૈયાર થયા. તેની પાસે લાડુ કરાવવાનું બીડું ચોરમલ શેઠે ઝડપ્યું આપણે ઉપર જોઇ ગયા તેમ દીવાળી પાસે જેમણે લાડુ કરાવવાની બળાત્કારે સંમતિ માંગી લીધી.

જુવાનીઆઓએ આ ભોજન સામે બંડ ઉઠાવ્યું. આ જમણ થશે તો હમે પીકેટીંગ કરીશું એવી પત્રિકાઓ પણ યુવક મંડળ તરફથી બહાર પડી. શેઠ ચોરમલે કોઇનું માન્યું નહિ. તેઓ કહેવા લાગ્યા કે "કોણ છે પીકેટીંગ કરનારૂં ? અમે તો અમારા ઘરથી આવાં જમણ બંધ કરવાનો રીવાજ પાડીશું નહિ," વિગેરે બોલી યુવકો ધમકાવવા લાગ્યા.

અંતે બાસુદી પુરીનું જમણ થયું, યુવકોએ નિરધાર કર્યા મુજબ સવારે "લોહીના લાડુ બાઇકોટ" પોકાર કરતુ સરઘસ કાઢયું, સાંજે જમવાને વખતે જમણવાર અગાડી પીકેટીંગ શરૂ કર્યું.

હજારો માણસો પરનાતના પણ આ પીકેટીંગ જોવા ભેગા મળ્યા હતા. જે કોઇ જમવા

જાય તેના માટે "શરમ, શરમ" ના પોકારો આ ટોળીઓ કરતી હતી. જમવા જનારા શરમાઇને પાછા ફરતા હતા.

યુવકોએ તો શાંત પીકેટીંગ ચાલુ રાખ્યું. તેમણે કોઇનું માન્યું નહિ. ચોરમલ શેઠ કોઇને કાંઇ ગાંજ્યા જાય તેવા ન હતા. તેમણે સુલેહના ભંગની અરજી આપી ચાર પાંચ યુવકોની ધરપકડ કરાવી, પણ તેથી શું યુવકો ડરવાના હતા? યુવાનોમાં નવું જોમ આવ્યું. તેમણે બમણા જોરથી પીકેટીંગ ચાલુ કર્યું. પોલીસથી પોતાની ભૂલ સમજાઇ, અને તેમણે પકડેલા યુવકોને છોડી મૂકયા. તેઓ પાછા આવી શાંત પીકેટીંગ કરવા લાગ્યા.

પીકેટીંગ સફળ રીતે પાર ઉતર્યું. ફકત બે આની માણસો જમવા ગયા. એમની બાસુદી પુરી એમની એમ પડી રહ્યાં. ત્યારે એમને સમજાયું કે આપણે યુવકો ના ના કીધા પર જમણુ કર્યું તે એક મોટી ભૂલ કરી છે.

(૪)

હવે જમણુ વિગેરે ખલાસ થયાને ૧૫ દીવસ વહી ગયા હતા. દીવાળીનું ઘર ગીરો મુકાઇ ગયું હતું. ચોરમલ શેઠે દુકાનદારોના બીલો પોતાની રીત પ્રમાણે ચુકવી આપ્યાં હતાં.

જે ધણીએ ઘર પર પૈસા આપ્યા હતા તે ધણીએ વિચાર્યું કે હવે દીવાળી પાસે કાંઇ નથી. જો આપણે તકાદો કરીશું તો મકાન સસ્તામાં મળી જશે, તેથી તેણે તકાદો શરૂ કર્યો. દીવાળીએ કહ્યું કે હું પૈસા કયાંથી લાવું? શેઠ ચોરમલ પાસે જાઓ !!' શેઠ હવે સાંભળે ખરા કે? તે તો લાડુપ્રેમી હતા.

અંતે દેવું ચુકવવાને દીવાળીએ મકાન વેચી દીધું. ભીની આંખે ધડકતે હાથે શેઠ ચોરમલ પર શાપ વરસાવતી દીવાળીએ મકાન ખાલી કર્યું.

હાય! પ્રેત ભોજને આ કુટુંબનું આધારભૂત મકાન છીનવી લીધું. દીવાળી ને તેની છોકરીને ભિખારણ બનાવી રઝળતા કર્યાં.

સાગરમલ મુળચંદ તલાટી–દાહોદ.

જૈન સમાજને.

(લેખક–માણેકચંદ રામચંદ ગાંધી–ફતેપુર.)

સમગ્ર જગતમાં જ્યારે વિદ્યાની નવી નવી કળાની ભરતી આવી છે, જ્યારે નવાં નવાં આયુધો શોધાય છે, જયારે નવી નવી ભાવનાઓ ઘડાય છે, જ્યારે નવી નવી આર્થિક અને સામાજીક યોજનાઓ યોજાય છે, ત્યારે જૈન સમાજ કુરીવાજોને વળગી રહયો છે. ઉચ્છૃંખલતા અને સ્વચ્છંદતા અનુભવી રહયો છે.

જૈન જાતિની આધુનિક સ્થિતિ નિહાળતાં અશ્રુપાત થયા સિવાય રહેતો નથી. તેનું દિગ્દર્શન આલેખતાં કમકમી છૂટયા સિવાય રહેતી નથી. તેનું વૃત્તાંત લખતાં લેખની ધ્રૂજ્યા સિવાય રહેતી નથી. તેની આર્થિક સામાજીક અને નૈતિક સ્થિતિનું વિવરણ કરતાં શું ન થાય? જે જાતિ એક સમયે ઉચ્ચતાને શિખરે હતી, જે સર્વ શ્રેષ્ઠ જાતિઓમાંની એક જાતિ હતી, જેના અનુયાયીઓ ઉત્કૃષ્ટ અને ઉત્તમ હક ભોગવતા હતા તેની મનોદશા શું આ હોઇ શકે? જે જાતિની પ્રશંસાનાં પાનેપાનાં ભરેલાં છે, જેના અવર્ણનીય ગુણોનું માપ આપણી આગળ ખડું છે તે જાતિના શું આવા હાલ? એ બધું કોને કોને આભારી છે?

જૈનત્વ તને, તને, તારી કુરૂઢીઓને, તારા કુરીતરીવાજોને, તારી જનતાને એ બધું આભારી છે.

જૈનત્વનાં પાને પાનાં ફેરવ્યાં, તેમાં પારંગત થયા, તેના અનુયાયી થયા, આશ્રિત થયા છતાં આજે આ દશા કેમ નિહાળો છો? અરે જૈન સમાજના વડીલો, આ ડંકા નિશાન શાના ગગડી રહ્યા છે. આ બધું શું જણાવે છે? તમારી ઉન્નતિ કે અવનતિ? ભૂલ્યા છો ત્યાંથી ફરી ગણવાનું શરૂ કરો. કુંભકર્ણની નિદ્રાને પરિત્યાગો, અજ્ઞાનતાના વાદળને વિખેરો. ચાલતા અનહદ કજીઆ

કંકાશને તિલાંજલી આપો. રૂઢીચુસ્ત ન બનો. બાપ દાદાના પુછને તરછોડો. જૈનતત્વના અનુયાયી થતા પહેલાં ઓળખો જૈનત્વને. રૂઢી ગુલામ મા બનો.

જે નાવ ભર દરીએ ઝોલાં ખાઇ રહ્યું છે તે નાવને ડુબાવવું કે તારવું એ તમારે હાથે છે. તમે તેના નાવિક છો, તારણહાર છો. સુ સુકાની છો. ઉપરોક્ત બાબતને અનુસરશો તો ભરદરીએ તમારૂં નાવ ડુબશે. અડગ ટેકી બની, નહિ અનુસરવાને પ્રતિજ્ઞા લેશો તોજ તેના તારણહાર બનવાના નહિ તો તેના સંહારક તો છોજ ને? નાવ ને બચાવવાના અનેક ઉપાયો છે. દિવસ વધે એકેક ઉપાય અજમાવજો અને જોજો પછી તેનું પરિણામ.

જૈન સમાજના નાવને ડુબાવવાને અનેક ઝેરી નાગો અને મગરોએ સમુદ્રના પાણીમાં વસવાટ કર્યો છે. એ નાવ હવે હલાયમાન થઇ રહ્યું છે. બાળ લગ્ન, વિધવા વિલાપ, વૃદ્ધ લગ્ન, બાળ વિવાહ અને ભોજનવરા વિગેરે નાગ અને મગરોએ સમુદ્રમાં પ્રાધાન્યપદ મેળવ્યું છે. સામ્રાજ્ય ફેલાવ્યું છે, પણ એ સામ્રાજ્ય અને પ્રાધાન્ય પદ કયાં સુધી? એ પ્રાધાન્ય પદ અને સામ્રાજ્યને તોડવાને જૈન યુવાન વર્ગે સુપ્ત દશાને ત્યાગવી ઘટીત છે. કમર કસવી જોઇએ આગળ ધપવાને, કુરૂઢીઓને બરતરફ કરવાને, જૈન વૃદ્ધ સંચાલકોને ચેતવવાને, દિવ્ય, સંદેશા સુણાવવાને જૈનત્વનાં આદેશ અનુસરાવવાને.

જૈન જાતિના અગ્રેસરો! તમારી જાતિનું હિંદુ જાતિઓમાં શું સ્થાન છે? જૈન જાતિ એ અનેક વિભાગમાં વહેંચાઇ છે, અનેક ભાગલા પડયા છે. આવી ઉપજાતિઓ શાને? આવા નાહકના ભેદ શાને?

હિંદ આવી જાતિ અને ઉપજાતિઓથી ભરપુર છે. આ ઉપજાતિઓએ હિંદને પરવશ કર્યો છે. ઉપજાતિઓથી દરેક સમાજને અતિ હાનિ થઇ છે, છતાં ઐકયતાના મંત્રને પઢવો ગમે છે કોને? મમત્વતાથી આ ઉપજાતિઓ ઉપજી છે. શેઠાઇ શાહથી ઉપજાતિઓ ઉપજી છે, શેઠાઇશાહીમાં તમો અંધ બન્યા છો. મમત્વતાએ તમારો કેડો છોડયો નથી. શેઠાઇશાહી અને મમત્વતાએ તમારી સ્વતંત્રતા ઉપર કાપ મુકયો છે. કુળ લંઘરથી પરવશ કર્યા છે, ઐકયતા ઉપર કાપ મુકયો છે. આવી શેઠાઇશાહી અને મમત્વતા એ તમને ન છાજે. આવા ગુલામીના મંત્રો તમને ન છાજે. **અહિંસાવાદી છો, સત્યધર્મના પાલક છો, મહાવીરના તનુજો** છો......તો પછી?

આખુંએ જગત જ્યારે ઉન્નતિનો શંખનાદ ફૂંકી રહયું છે, ઉન્નતિનાં સ્વપ્નાં સેવી રહયું છે ત્યારે તમારો પંથ ન્યારો છે, ઉલટો છે, જુદો છે દરેક જ્ઞાતિના અગ્રેસરો નૂતન વર્ષે નવાનવા કાયદા કાનુનો ઘડવા બેઠા છે ત્યારે તમારી જ્ઞાતિના અગ્રેસરો અજ્ઞાનતાની શય્યામાં સુપ્ત છે, મોજ શોખમાં આનંદ માની રહયા છે, આળસાઇમાં દિવસ ગુજારી રહયા છે, પણ સૂઝે છે કંઇ વિચાર જ્ઞાતિના ઉદ્ધારનો? થાય છે કંઇ ઇચ્છા તીર્થક્ષેત્રોમાં ખર્ચવાની? થાય છે કંઇ ઇચ્છા છાત્રાલયોમાં આપવાની? થાય છે કંઇ ઇચ્છા દાનાર્થે ખર્ચવાની? કીર્તિની ખાતર હજારોનું પાણી કરવું ગમે છે, લગ્ન પાછળ લાણી કરવી ગમે છે, મરણ પાછળ ન્યાતી કરવી ગમે છે, પણ નથી સૂઝતો એકે ઉપાય પૈસાના સદુપયોગનો.

જ્ઞાતિના ચુરેચુરા કરનાર, જ્ઞાતિને છેલ્લે પાટલે બેસાડનાર, જ્ઞાતિના ઉગતા યુવકોનાં લોહી ચુસી લેનાર **બાળ લગ્ન** જેવા કાળા નાગની સંખ્યાઓ વધતી જાય છે. દિવસ વધે તેનું પ્રમાણ વધતું જાય છે. એ નાગે-એ કીડાએ જ્યારથી ઘર ઘાલ્યું છે ત્યારથી આપણે અધોગતિમાં સડતા જઇએ છીએ. એ સંબંધીને તો હવે રજા આપવીજ જોઇએ નહિ તો ઉપરી પણું મેળવી

લેશે તો નોકરશાહીની નાદીરશાહી થશે. હે જૈન જાતિના અગ્રેસરો ! તમારૂ સુકાન આગળ ધપાવવાને જરૂર આ કીડાને તિલાંજલી આપજો.

કેટલીએ વિધવાઓ ચોધાર અશ્રુ પાડી રહી છે. કુમાર્ગે દોરાઇ રહી છે. છે કોઇ આની દાદ સાંભળનાર ? છે કોઇ આની મદદે આવનાર ? વિધવા બ્હેનોના અશ્રુઓથી જૈન સમાજ ખરડાઇ છે, પણ નથી ગમતું લેપ મારવાનું કોઇને ? એ દેવીઓની સ્વતંત્રતાનું હરણ કેમ ? આ સવાલનો જવાબ હજુ નથી અપાયો. અનેક વિચારો યોજાઇ રહ્યા છે.

જૈન સમાજ કેળવણી વિના ભુખે મરે છે એમ નથી પણ કેળવણીથી અધુરો છે. અજ્ઞાનતાએ પોતાની જાળ બીછાવી છે. કેળવણીએ દુઃખી એટલે દરેક રીતે દુઃખી. કેળવણીમાં સર્વસ્વ છે. કેળવણી તમારો ગુરૂ છે. માતા છે, પિતા છે પૈસો છે. તો પછી બીજાં ફાંફાં શાને ? આથી અધિક શું હોઇ શકે ? તમોએ હજુ કેળવણીની અસરો નથી જાણી અને તેથીજ તેનો અંગીકાર નથી કર્યો; પણ કેળવણી કે જે લક્ષ્મીની પણ લક્ષ્મી છે, દેવીની પણ દેવી છે તો પછી એને કેમ તરછોડાય ? તમારે હજુ આભૂષણોથી સજ્જ થવું છે અને એ લ્હાવા મેળવવા છે ત્યાં સુધી એ આશા ક્યાંથી 'હોય ?

દરેક સમાજનાં યુવક યુવતિઓની રોમેરોમમાં "કેળવણી" ના શબ્દો વહી રહ્યા છે, પણ જૈન સમાજની રગેરગમાં હજુ એ શબ્દો નથી વહી રહ્યા યુવકોએ કેળવણીનો અંગીકાર કર્યો છે તે પણ બહુજ થોડે અંશે, પણ યુવતીઓનું શું ? યુવતીઓ જે ભાવીને ઘડનાર છે, જેની કુંખે વિરલા ઉત્પન્ન થવાના છે. જેને એક આંખે આખું જગત નિહાળી રહ્યું છે, જેના ઉપર જગત અને જાતિનો આધાર છે, જેના ઉપર સંસારનું ભાવી વાતાવરણ ચાલી રહ્યું છે, જે શાંતતાની દેવીઓ છે તેઓની અજ્ઞાનતા અને અભણતાને કેમ સાંખી શકાય ? કેળવણી આપવી ઘટે છે પહેલાં યુવતીઓને અને પછી યુવાનોને. કેળવણી સિવાય બધુ અંધારૂ છે, સમાજની અધોગતિ છે, દેશની પાયમાલી છે, વીર સંતાનોની આશા વ્યર્થ છે, પરતંત્રતાની બેડીઓને તોડવી અશક્ય છે.

મરણ પાછળ થતી ન્યાતો નિરાંતે જમો છો. હજારોનો ધુમાડો કરો છો, લાડુ ખાવા ખવડાવવાનો લ્હાવો લો છો. વધારે ખર્ચ જ્યાં થાય તે ન્યાતને તમો પ્રશંસનીય બનાવો છો. બાહ્ય આડંબરથી તેની વાહવા બોલો છો, પણ જૈનો વિચારો કે આ તમો શું કરો છો ? મરનારની આંતરડીને તમે ઠારો છે કે પાળો છો ? દુઃખી કરો છો કે સુખી કરો છો ? કળકળતી આંતરડીને કદી આવી રીતે શાંત્વન ન મળે. એક બાજુ મિષ્ટાન ઉડે અને બીજી બાજુ છાજીઆ લેવાતાં હોય, અશ્રુપાત થતો હોય એ શું શાંત્વનનું નીશાન કે દુઃખી કરવાનું નિશાન ? આવા પ્રેત ભોજનના લાડુ શાને ? આવાં નાહકનાં ખર્ચ શાને ? આવી ન્યાતોને તિલાંજલી આપવી એજ ઉચિત છે.

બાળવિવાહ અને વૃદ્ધલગ્ન એ પણ જૈન સમાજમાં પ્રચલિત છે, તેનું પણ નિકંદન થયું નથી. જો એનું નિકંદન થશે તોજ ઠીક નહિ તો સમાજને સડવું પડશે, રીબાવું પડશે.

જૈન સમાજના વડીલો હવે તો ચેતો. કલમને કસતા પહેલાં અમલમાં મુકવાનું શરૂ કરો. જૈન સમાજનું જે સ્થાન હતું તે સ્થાનને કબજે કરવાને કટિબદ્ધ થાઓ. હવે દિવસો વીતાવવાનો સમય નથી રહયો. કુરિવાજોને તિલાંજલી આપો. ખરા જૈનત્વના અનુયાયી બની ખરા માર્ગે દોરાઓ. આલેખાયું છે બહુ પણ જુગજુગની નિંદ્રા હજુ ઉડતી નથી, વિકાસ કરવો ગમતો નથી, ગુલામીને તરછોડવી ગમતી નથી.

કરજો, કંઇ કરજો એક સમાજ સેવાની ધગશ રાખી હમેશાં આગળ ધપ્યા રહેજો.

ઐક્યતાનો મંત્ર પઢજો. ગુલામગીરીનાં બંધનોને તોડજો. સમગ્ર જૈન જાતિને પ્રેરજો. ઝળકાવજો તમારી જૈન જાતિનું નામ હિંદની જાતિઓમાં. અસ્તુ.

આપણી ઉન્નતિ કે અવનતિ ?

(લેખક–ગોપાળભાઈ પી. શાહ, નરસીપુર)

મનુષ્યને મનુષ્યત્વમાં આણનાર કોણ? તેને તેની શૈલીનું ભાન કરાવનાર કોણ? જે સમયે સારો ભારતવર્ષ વામ માર્ગીઓથી પીડાઇ રહ્યો હતો, યજ્ઞ ક્રિયા સર્વત્ર પોતાનું સામ્રાજ્ય પ્રસારી રહી હતી, અને તેના પાખંડી પુજારીઓ પેટને અંગે તેનું મહાત્મ્ય બતાવી રહયા હતા, અન્ય રાજાઓ પણ તેને ઉત્તેજન આપી રહયા હતા, તેવે સમયે અજ્ઞાન રૂપી ઘનઘોર વાદળથી ઘેરાયલા ભારત વર્ષને વીજળીની માફક ઝળુકી તાળનાર તે જૈનત્વજ હતું.

જે સમાજ જૈન તત્વોને માને, તેના આદર્શોનું સંપૂર્ણ રીતે પાલન કરે અને તેના સિદ્ધાંતોને અખંડિત રીતે અનુસરે તેજ જૈન સમાજ.

તેવા જૈન સમાજનો આદર્શ શો હોઇ શકે? પરસ્પર પ્રેમ, મિત્રતા, ઉંચ નીચનો ભેદ તેમાં ન હોઇ શકે. ઐકયતાનો આદેશ તેના અંગે અંગમાં વ્યાપેલ હોવો જોઇએ. જૈન સમાજ એ સર્વત્ર શાન્તિનુંજ સામ્રાજ્ય પ્રસારી શકે. મમત્વતાનો તેમાં સર્વદા અભાવજ હોવો જોઇએ. જેણે "હું" ને તિલાંજલી આપી છે તેજ કંઇ ઉદ્ધાર કરવાને શકિતમંત નિવડી શકે છે, મમત્વથી કરેલ કંઇ પણ કાર્ય ફળદાયી નિવડતું નથી, આત્મવાદિ ન બનો, દેહ સદાને માટે નાશવંત છે. આત્મોન્નતિને પંથે વળો.

ઉપરોકત આદર્શોને માનનાર સમાજ આજે કેવી સ્થિતિમાં ઝોલા ખાઈ રહયો છે? તેનું નાવ આજે ડુબુડુબુ થઇ રહયું છે, તેનું કારણ?

સામાન્ય રીતે નિહાળતાં સમાજના નાવિકો બેજ હોઇ શકે એક આચાર્યો; અને બીજા જ્ઞાતિ આગેવાનો.

આજ કાલ આચાર્યો ધર્મ ઝનુનથી ભાગ્યેજ બળતા દેખાય છે. શાન્તિની મૂર્તિ રૂપ આચાર્યો પરસ્પર નિંદામાં નિશદીન મશગુલ રહેલા માલુમ પડે છે તેઓ ધર્મની અગ્રસ્થતાને બદલે પોતાની અગ્રસ્થતા મેળવવાને તનતોડ પ્રયત્ન કરતા હોય તેમ લાગે છે. દિવસે દિવસે ધર્મના તત્વોને બાજુએ મુકતા લાગે છે. આવા સાધુઓની સમાજ ઉપર કેવી અસર થાય તેનો વિચાર કરો ને તેઓ ધર્મનું મહાત્મ્ય કેવી રીતે વધારી શકે.

તેથી પણ વધુ અસર તો સમાજના કાર્યવાહકોની થાય છે, પરંતુ હાલ તેઓ કેવી સ્થિતિમાં સંડી રહ્યા છે? કદી તેમણે સમાજ ઉન્નતિનાં સ્વપ્નાં પણ સેવ્યાં છે? દિવસે દિવસે તેઓ ટંટાફિસાદનાં બીજ રોપતાજ જાય છે. પક્ષાપક્ષી કરી, વધુ ને વધુ ભાગલા પાડી,–કાંતો સ્વાર્થ ખાતર યાતો હુંપદ ખાતર,–સમાજને અધોગતિને પંથે વાળી રહ્યા છે; નહિતર આટલા વિશાળ આદર્શવાળા જૈન સમાજમાં પરસ્પર મિત્રતાને બદલે આટલા બધા ભાગલા શાને? જવાબ તો એકજ મળી શકે "સ્વાર્થ" પછી તે કોઇ બી નિમિત્તે. દરેક આગેવાન પોતાનો પક્ષ મજબુત કરવાને તનતોડ પ્રયત્ન કરે છે ને નાનાવિધ લાંચ રૂસ્વતો પણ વાપરે છે. તેને બદલે ઐકયતા સાધવાને આટલા પ્રયત્નો આદરે તો કેવું સારૂં! પણ કયાંથી હોય આશા તેની. ગૃહકાર્યના ઝગડાઓનેજ ધાર્મિક કાર્યોમાં ભેળવે ત્યાં. ખરેખર જો ધાર્મિક કાર્યોમાં વિઘ્ન પડતું હોય તો તે ગૃહકાર્યના ઝગડાજ છે. કહેવાતા સમાજના ધારાધોરણોને અંગે તેઓ સર્વસત્તાધિકારીની માફક તેનો છુટે હાથે ઉપયોગ કરે છે ને તેથી પ્રતિદિન પક્ષાપક્ષી વધતીજ જાય છે.

એવી રીતે ધર્માચાર્યો ને કાર્યવાહકો જ્યારે

સમાજને અવનતિને પંથે ખેંચી રહયા છે તો તેનો ઉદ્ધાર રહયો કોના હાથમાં ?

હે યુવક ! તુંજ તેનો નાવિક બન. ધર્માચાર્યો કે વડિલોને પંથે વહયા કરતાં ધર્મને પંથે વળ. તેથીજ તું ત્હારો ને તારા સમાજનો ઉદ્ધાર કરી શકીશ, સમાજના કેટલા ભાગલા ને વળી તેમાં કેવી પક્ષાપક્ષી ? જાણે સાપ નોળીયાની મિત્રતા. તે વેર ને ઝેર દૂર કરવા હવે ત્હારે હસ્તકે રહયાં. જો યુવક મંડળનો આદેશ આ એક હોય તો ને અસ્થાને નહિજ ગણાય. સમાજ ને મંદિરોના ઝગડાથી દૂર કરવાને તું તત્પર બન. સંકુચિત વિચારોને તિલાંજલી દે. જુંનું તેટલુ સારૂં નહિ માનતાં ઉન્નતિને ઉપયોગી તેટલું સારૂં માન. ત્હારાં જ્ઞાતિનાં બંધનો કારણકે તે જુનાં છે માટે હોવા જોઇએ તેમ નહિ માનતાં તે જરૂરી છે કે નહિ તેનો વિચાર કર ને તેને અમલમાં મૂક. જો યોગ્ય લાગે તો તે શુદ્ધ બનાવ. અયોગ્ય લાગે તો તોડવાને યથાશક્તિ પ્રયત્ન કર. સમાજ બંધનો જરૂરી છે પણ તે ઉન્નતિને પંથે દોરનાર નહિ કે અવનતિને.

જ્ઞાતિમાં અગ્રપદ ભોગવતો પ્રેત ભોજનનો રીવાજ છે, તે પર કદિ વિચાર કર્યો છે ? મૃત્યુ-શોકે વિહોમાતા આત્માઓ તેવા અઘટિત ખર્ચથી વધુ ને વધુ વિહોમાય છે. તે તેમને વધુ ને વધુ દુઃખ દીધાં કરે છે. પ્રેત ભોજન માટે સાધારણ રીતે બે ઉદ્દેશો બતાવવામાં આવે છે. (૧) મૃત આત્માને શાન્તિ મળે છે!!! (૨) પરસ્પર મળી શકાય છે.

(૧) આત્મા અમર છે. તેનો કદી નાશ થતો નથી. હાડપિંજરનોજ નાશ થયા કરે છે. તે પોતે કરેલ સારાં નરસાં કર્મોનું ભાથું પોતાની સાથે લઇ જાય છે. પર હસ્તે થયેલ પુન્ય તે મૃત આત્માને કેવી રીતે શાંન્તિ આપી શકે ? સ્વહસ્તે કરેલ કર્મોનોજ તે ભોક્તા થાય છે. તો પછી...?

(૨) પરસ્પર મળવું એટલે પ્રેમના બંધનો મજબુત કરવાં. પરંતુ જીવડો દુઃખ ઉદધિમાં ઝોલા ખાતો હોય ત્યાં આવો પ્રેમ સાંભળેજ કયાંથી ? હૃદય અનેક ઉપાધીઓથી ઘેરાયેલ હોય છે, તો પછી તે બંધનો કેવી રીતે મજબુત બની શકે ? લગ્નોત્સવ આદિ ખર્ચાઓ પણ સમાજના રિવાજને અંગે તો નજ હોવા જોઇએ. કેટલાક પોતાની જુની કીર્તિને વળગી રહીને પોતાની શક્તિ ન હોવા છતાં ખોટા ખર્ચ કરે છે, તો તેમ ન હોવું જોઇએ, તેવા ખર્ચા તો અવશ્ય દૂર હોવાજ જોઇએ.

વધુમાં આપણા સમાજમાં એક નવો રીવાજ નહિ પરંતુ ધંધો નિકળ્યો છે કે જે કન્યાવિક્રયને નામે ઓળખાય છે. તે કેટલાએ બહાનાં નીચે માંગવામાં આવે છે યા તો કેટલાક સિદ્ધા સિધે માંગી લે છે. દ્રવ્ય દેખી મોટા મુનીઓનાં મન ચલિત થાય છે તો પામર પ્રાણીઓનું તો પૂછવુંજ શું ? પણ મનુષ્યને જ્ઞાનેન્દ્રિય છે. વિચાર શક્તિ છે. લક્ષ્મી ચંચળ છે. તે કોઇની થઇ નથી ને થવાની પણ નથી, તો તેવા ક્ષણિક આનંદની ખાતર કોઈ આત્માના આનંદનો નાહકનો નાશ શાને ? તે પૈસાથી તું સુખ ન ન માણ. તે જે દ્વારે આવ્યા તેજ દ્વારે વહી જવાના, તેથી તું કંઇ ઉદ્ધાર કરી શકીશ નહિ તો પરઆત્મ ઘાતનું પાપ શાને ?

કેળવણી એ ઉન્નતિમાં મોટો ભાગ ભજવે છે. તો હે સમાજ ! તું ત્હારા પુત્ર પુત્રીને કેળવ, અજ્ઞાનવશાત્ અથવા ખોટી મર્યાદામાં રહી તું તેમને જડ ન બનાવ. કેટલાક નોકરી ન મળવાનું બ્હાનું કહાડી તથા થોડું ભણેલા સારો પગાર લાવે છે તેમ કહી પોતાના પુત્રોને ભણાવતા નથી પણ તે વખત વીતી ગયો. જ્યારે ભણેલાનો ભાવ પૂછાતો નથી તો અભણની તો સ્થિતિજ શું. જે વખતના અભણો સારો વેતન લાવે છે તે વખતના ભણેલાઓ કેવી સ્થિતિમાં છે

તેનો કદી વિચાર કર્યો છે? ભણેલ હશે તો કોઇ પ્રકારે પોતાનું ગુજરાન ચલાવશે. અભણ શું કરશે, છેવટે નીચ ધંધો.

સ્ત્રી કેળવણી ઉપર નાખવામાં આવતો એક દોષ એ છે કે તેથી તેઓ અવળે માર્ગે વળે છે. તેઓ ગૃહકાર્યમાં સંપૂર્ણ ધ્યાન આપતાં નથી, પરંતુ તે તદ્દન અઘટિતજ છે. ભણેલી તેટલી દોષિત અને અભણેલ તેટલીજ અદોષિત માનવાને કંઇ કારણ નથી. જો તું ધારતો હોય કે ભણેલ કુછંદે વળે છે તો નક્કી માનજે કે અભણ તેથી પણ વધારે દુષ્કૃત્યો કરતી હશે.

કજીઓ ને કંકાસ તે અભણના સદાના મિત્રો થઇ રહે છે. અદેખાઇ સર્વત્ર પોતાનું સામ્રાજ્ય તેના ઉપર ફેલાવી દે છે. તે પોતે સુખી થતી નથી તેમજ તેના સંબંધીઓને સુખી થવા દેતી નથી. તો એવી અજ્ઞાનતા શાને! હે વાંચકવૃંદ! તેનો તું વિચાર કર.

નારીનું સ્વર્ગ.

શોભા સહુ સૌભાગ્યની સંસારમાં છે નારને,
પ્રાણાંન્ત શીલને સાચવી, હ્રદયે વિચારે નાથને.
પતિ પ્રેમમાં રસ બસ રહી, સુકાન ગૃહનું કર ગ્રહે,
મોહન કહે સુખ ભોગવી, તે નાર સ્વર્ગે સંચરે.

* * * *

હું તો નિહાળું આત્મને.!

રહેનાર છું સ્વરૂપમાં હું, શુદ્ધ જેવા રૂપથી,
નહિ રોગ કે નહિ મર્ણ હોવે, મર્ણ છે આ દેહથી.
જેથી ન ચિંતા થાયછે વળી, દુઃખ પણ નવ થાયછે,
આનંદ ને આનંદથી, હું તો નિહાળું આત્મને.

લેખક.

મોહનલાલ મથુરાદાસ, શાહ.

કાણીસાકર,–કમ્પાલા
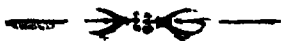
સમાજની દશા.

(લેઃ–રતીલાલ કેશવલાલ શાહ–ભરૂચ.)

વ્હાલા સમાજ બંધુઓ !

આપણા સમાજની આધુનીક દશા તરફ દષ્ટિપાત કરતાં મનમાં કંઇ કંઇ વિચારો ઉદ્દભવે છે, અને હ્રદય ગળગળીત થઇ જાય છે કે હે જૈન સમાજ ! ત્હારી આ દશા કયાંથી? પ્રાચીન સમયનું ત્હારૂં તેજ, ત્હારૂં ગૌરવ, ત્હારી પ્રતિષ્ઠા......એ બધું કયાં હણાઇ ગયું ? કયાં ગયા પ્રાચીન સમયના ત્હારા વિદ્વાન અને ધાર્મિક સાધુઓ ? કયાં ગયા ત્હારા ધર્મને નામે મરી ફીટનારા, જૈનધર્મનો ડંકો ગજવનારા, અને પ્રજાનું કલ્યાણ દીલમાં ઇચ્છિનારા વીર **જૈન રાજ્ય શાસકો ?** કયાં ગયા ત્હારા દયાળુ, અને દાનશીલ જૈન શ્રાવકો અને શ્રાવિકાઓ ? દયાહીન કાળના મ્હોમા સર્વ સ્વાહા થઇ ગયું, અને હે સમાજ! ત્હારા તરફ પાછા ફરી લેશ માત્ર પણ દષ્ટિ કરી નહિ તે દયાહીન કાળે! ત્હારાં વીરરત્નો કયાં છુપાઇ ગયાં, અને ત્હારી આધુનિક પ્રજા આવી નમાલી, અધર્માચરણી, દયાહીન અને ખોટે રસ્તે અનુસરનારી ઉત્પન્ન થઇ શા કારણથી ?

કારણો મોજુદ છે. તેને બહુ દૂર વિચારવા જવું પડે એમ નથી, કેમકે અત્યારનું સામાજીક તેમજ રાજકીય બંધારણજ એવું છે કે તે આપોઆપ કારણો દર્શાવી શકે છે. અને તે બધાનું મૂળ કારણ આપણો સમાજજ છે. હે સમાજ! ત્હને કેટલો કહેવો નિષ્ઠુર ? હજુ કયાં લગી ટકી રહેશે એ નિષ્ઠુરતા ?

આ બધાનું પ્રથમ કારણ **આપણું સામાજીક બંધારણ** છે. હાલના સમયને અનુસરીને સમાજના બંધારણમાં જે જે અગત્યના ફેરફારો કરવા જોઇએ તે બંધારણો હજુ ગાડરીયા પ્રવાહની માફક ચાલુજ રહ્યાં છે, અને તેમાં

જરૂરી સુધારા દાખલ કરવાની આપણી ઉંઘ હજુ ઉડી નથી, અને તે કારણે હાલમાં સમાજમાં કેટલીક પેટા જ્ઞાતિઓ વિગેરે પડી જઇ કેટલાય ફાંટા પડી ગયા છે, અને પરિણામે અમુક જથામાં બિચારા યુવકોની સંખ્યા વધી ગઇ છે, જ્યારે બીજા જથામાં કન્યાઓનો વધારો થઇ ગયો છે. અત્યારના સમયે સર્વેએ ભેગા મલી જઇ **અંતર જાતિય વિવાહ**ની પદ્ધતિને અનુસરવું એજ ઉન્નતિના પંથ પ્રતિ પગલાં પ્રસારવા જેવું છે.

બીજું કારણ આપણો બાળલગ્ન તથા વૃદ્ધ વિવાહરૂપી સડો છે, અને તેને લઇનેજ કેટલાય ઉછરતા યુવાનોને આપણો સમાજ અકાળે ગુમાવે છે, કેટલીક યુવતિઓ અકાળે વૈધવ્યને પ્રાપ્ત થાય છે. કેટલીય જીંદગીઓ બરબાદ થાય છે, અને કુરસ્તે દોરાય છે. આ બધી બદીનું કારણ આપણાં બાળલગ્નો અને વૃદ્ધવિવાહોજ છે, અને તેને તો મૂળમાંથીજ નાશ કરવાને માટે આપણે પગ ઉપર સ્થિત થવાની ખાસ જરૂર છે. હાલમાં સમાજના સુભાગ્યે અમુક અંશે બાળલગ્નો નહિ જેવા નાબુદ થયાં છે, પણ તે સડો તો જડમૂલથીજ ઉખેડવો એ સમાજના દરેક શિક્ષિત વ્યક્તિનું, કર્તવ્ય ન હોય તો બીજા કોનું હોઇ શકે?

આપણી છેક આવી હીનદશા હોવાનું બીજું કારણ આપણા સમાજમાં અમુક અપવાદો બાદ કરતાં દરેક વિદ્યામાં પ્રવીણ વિદ્વાનો ઓછા છે. અમુક યુવાનો તો થોડું ઘણું ભણ્યા, નહિ ભણ્યા અને પોતાનો વિદ્યાભ્યાસ બંધ કરી સંસાર લાલસામાં નિમગ્ન રહે છે, અને એ રીતે પોતાની ભવિષ્યની જીંદગાનીની બરબાદી કરે છે.

વલી દેશકાળાનુસાર વિદ્યાભ્યાસ પ્રતિ જ્યાં લક્ષ ઓછું હોય ત્યાં ધાર્મિક વિદ્યાભ્યાસ અને ધાર્મિક તત્વોનું મનન, અને આચરણ તો ક્યાંથીજ સંભવી શકે? એ રીતે ધાર્મિક જ્ઞાનના અભાવને લીધે કેટલાય મનુષ્યો પોતે સુભાગ્યે પ્રાપ્ત થયેલ દુર્લભ માનવ જન્મને વૃથા ગુમાવે છે કે જેવી રીતે અણસમજુ માણસ પોતે અનાયાસે મેળવેલ અમુલ્ય રત્નને પાષાણ સમજીને ફેંકી દે છે. ધર્મ તેજ આપણો હંમેશનો સુખદુઃખનો સાથી અને આત્માનું કલ્યાણ કરનારો છે. આ કારણે આપણા સમાજમાં વિદ્યાલયો અને **જૈન કોલેજની** ખાસ આવશ્યકતા છે, અને તે માટે સમાજના ધનિકોની મદદની ખાસ જરૂર છે.

આપણી અધોગતિનું ચોથું કારણ **સ્ત્રી શિક્ષાનો** અભાવ છે. આપણી પુત્રીઓ કે જે ભવિષ્યનાં સંતાનોની માતાઓ છે, અને જેના થકીજ આપણી ઉન્નતિ છે, તેમની કેળવણી પ્રતિ દુર્લક્ષ આપવામાં આવે છે અને તેમને સામાજીક તેમજ ધાર્મિક શિક્ષણ પુરૂં આપવામાં આવતું નથી, અને તે કારણે આપણી સ્ત્રીઓની આવી હીનદશા છે, અને ઠેરઠેર કલહ કંકાસો સાંભળવામાં આવે છે. સ્વર્ગસ્થ મહિલા-રત્ન શ્રી. મગનબ્હેન, તથા શ્રીમતિ મહિલારત્ન લલિતાબ્હેન જેવી સુધારાની ધગશવાળી બ્હેનોની સમાજને ખાસ આવશ્યકતા છે, તેમાં શ્રી. મગન બ્હેનની ખોટ તો પુરાય એમ નથીજ.

આપણા સમાજમાં બીજા સમાજો પેઠે સંગઠનનો ખાસ અભાવ છે. અને ઠેર ઠેર જૈન ભાઇઓમાં કુસંપ જોવામાં આવે છે. **"બે હાથ વગર તાળી પડી શકે નહીં."** તે સૂત્રાનુસાર આપણા સમાજમાં સંગઠનની ખાસ આવશ્યકતા છે. અને એ માટે આપણી પરિષદો, સભાઓ, મંડળો તથા યુવક સંઘો વિગેરેએ ખાસ પ્રયત્ન આદરવાની જરૂર છે, કે જે દ્વારા ઉંઘે રસ્તે દોરાતા નિદ્રાધીન આપણા બંધુઓને આપણે સુરસ્તે દોરી શકીએ.

ઉપલાં મુખ્ય કારણો શિવાય બીજાં અનેક કારણો—ગાડરીયા પ્રવાહની માફક ચાલતા આવેલા કુરિવાજો, જાતિબંધન વિગેરે—આપણી હીનદશાનાં છે, પરંતુ આ લેખ લંબઇ જવાની બ્હીકે તેનું વિવેચન અત્રે આપી શકાયું નથી.

વ્હાલા સમાજ બંધુ ' અંતમાં આપણા સમાજની આવી હીન દશામાંથી મુકત કરી તેને સુરસ્તે દોરવાનો પ્રયત્ન આપણે યુવકોએજ કરવાનો છે, કેમકે યુવકોજ ભવિષ્યના આગેવાન સુધારકો થવાના છે. આપણો યૌવનકાળ એ માનવ જીવનનો વસંત કાળ છે, અને એ કાળમાં યુવકમાં મહત્વાકાંક્ષાઓનાં પુષ્પો પ્રગટે, કલ્પનાઓની કુંપળો ફુટે, અને ભવિષ્યની જીંદગાનીના આદર્શનાં બીજ રોપાય ! યૈવનમાં વીજળી જેવી ચપળતા છે, યૌવન નવજીવન સીંચી શકે છે, યૌવન એ ચૈતન્યનું સતત ઝરણું છે. અને તે ઝરણાનું શીતળ જલ સમાજની સળગતી આગને શાંત કરી શકવાને સમર્થ છે. માટે હે યુવક બંધુઓ ! તમે સમાજનાં બંધનોની લેશ માત્ર પણ પરવાહ ન કરતાં જ્યાં સુધી તમારા લક્ષ્યને ન પહોંચો ત્યાં સુધી પ્રગતિના રાજમાર્ગ પ્રતિ તમારી કુચ આગળ ચાલુજ રાખજો, અરે તમારા માર્ગમાં કંટકરૂપે આવતી અનેક આપત્તિઓમાંથી તમારો માર્ગ મોકળો કરી, અખુટ ધીરજ અને શાંત સ્વભાવ ધારણ કરી, તમારા ધ્યેયને પ્રાપ્ત કરી, તમારૂં જીવન સાર્થક કરજો, ॐ શાંતિ ! શાંતિ ॐ શાંતિ !!!

ગુજરાતી જૈન પુસ્તકો.

સમાજ સેવા કોણ-કેવી રીતે કરી શકે?

(શા. મોતીલાલ ત્રીકમદાસ માલવી-બાકરોલ.)

જે સત્યનિષ્ઠ, પ્રમાણિક અને કર્ત્તવ્ય પરાયણ હશે તેજ દેશ સેવા, જ્ઞાતિ સેવા, અને સમાજ સેવા, સારી રીતે બજાવવાને લાયક ગણાય છે, તે કેટલીક સેવા બજાવી પણ શકશે, સ્વદેશ, જ્ઞાતિ, કે સમાજની સેવા સુધારણા કરવા ઇચ્છનારે પ્રથમ સ્વ આત્મ સુધારણા કરી લેવા અવશ્ય લક્ષ આપવું જોઇએ, આત્મ સુધારણા કરી શકનારજ ખરેખર અન્ય જનોની સુધારણા કરવા શકિતવાન બની શકે છે.

આત્મ સુધારણા:—એટલે દોષ કલંકથી દૂર રહી સદ્‌ગુણ ધારવા પોતાની બધી ઇન્દ્રિઓને કાબુમાં રાખવી એટલે ઉન્માર્ગે જતાં અટકાવવી અને સન્માર્ગે જોડવી, તે આત્મ સુધારણા. ક્રોધ અભિમાન, માયા, લોભ, રાગ, દ્વેષ, અને મોહાદિક વિકારોને કબજે કરી તેમને નિર્મૂલ કરવા. ઉદારતા, ક્ષમા, નમ્રતા, સરળતા, સંતોષ, અને સંયમાદિક સદ્‌ગુણોને સારી રીતે સેવવા તે આત્મ સુધારણા. વિચાર વાણી અને ક્રિયાને પવિત્ર બનાવવા તે આત્મ સુધારણા, દયા, સત્ય, પ્રમાણિકતા અને શીલાદિક વ્રતોને સમજ પૂર્વક આદરી તેનું અખંડ પાલન પ્રમાદ રહિત કરવું તે આત્મ સુધારણા. સૌનું શ્રેય કલ્યાણુજ ઇચ્છવું, ચિન્તવવું, અને બની શકે તેટલું તે નિસ્વાર્થપણે કર્યા કરવું. ઉમદા અને ઉચ્ચ વિચારો દ્વારા આપણું વર્ત્તન ઘડાય છે, કોઇ પણ મલિન અને ખરાબ વિચારને પેદા થતાંજ ભયથી અટકાવવા સારૂ ઉચ્ચ વિચારોનું મનન અને સેવન કરતા રહેવું જોઇએ. દ્રઢ, મજબુત નિરોગી શરીરવાળા મનુષ્ય એવા ઉચ્ચ આશયો અને ઉચ્ચ વિચારો સેવી શકે છે, કાળજીપૂર્વક મન પર સંયમ

મેળવી બ્રહ્મચર્ય વડે સ્વવીર્યનું સંરક્ષણ કરના-રનુંજ શરીર મજબુત હોઇ શકે છે. પરન્તુ જેઓ સ્વચ્છંદ પણે કંઇક પ્રકારના અપલક્ષણો સેવે છે. તેઓ નાહક સ્વ વીર્યનું સત્યાનાશ વાળી શરીર પાયમાલ કરે છે અને પછી તે સ્વ અને પરહિત કરવા તદ્દન નાલાયક બને છે. તેથી સ્વવીર્યરક્ષા વૃદ્ધિ, અને તેનો વિવેકથી સદુપયોગ કરવો ખાસ ઉપયોગી છે. જે જે કારણોથી સ્વવીર્યનો વિનાશ થવા પામતો હોય તે કારણો તજી જે જે કારણોથી સ્વવીર્ય રક્ષાદિક થાય તેમ કરવું જોઇએ. દ્રઢ સંયમ, ઇન્દ્રિય નિગ્રહ અને કષાય વિજ્યાદિક વડેજ અહિંસા ધર્મનું ઉપાસન અને આરાધન કરી શકાય છે. બ્રહ્મચર્યનું સંરક્ષણ અને પોષણ થાય તેવીજ તપશ્ચર્યા કરવી હિતકારી છે. એવી તપશ્ચર્યા વડે સંયમની પણ વૃદ્ધિ થઇ શકે છે. બ્રહ્મચર્યનું અખંડ પાલન કરવા ઇચ્છનારને વિકાર ઉપજાવે તેવા સ્ત્રી સ્થાનથી અલગ રહેવું જોઇએ. અને વિકાર ઉપજાવી દુર્ગુણને રસ્તે દોરી જાય એવી વિષય કથાદિક અને વાર્તાઓથી દૂર રહેવું જોઇએ. બ્રહ્મચર્યને ખલેલ પહોંચે તેમ તેનો ભંગ થાય એવા આસન, શય્યાદિકને તજી દેવાં જોઇએ. વિકાર ઉપજાવે તેવી કામક્રિડા સેવાતી હોય, ત્યાં નજદીકમાં વસવું, સુવું કે બેસવું કે ત્યાં અભ્યાસ નહિ કરવો જોઇએ. વિકાર ઉપજાવે તેવી પૂર્વે થયેલી કામક્રીડા સંભારવી નહિ જોઇએ. વિકાર ઉપજાવે એવી નિરસ વસ્તુ પણ પ્રમાણથી અધિક વાપરવી કે ખાવી પીવી નહિ જોઇએ. તેમ વિકાર ઉપજાવે તેવી જાતની શરીર શોભા કરવી નહિ જોઇએ. ઉપરના નવ નિયમોનું પાલન—બ્રહ્મચર્યનું સંરક્ષણ કરવા ઇચ્છનારે—તથા સ્વદેશ, જ્ઞાતિ, કે સમાજની સેવા કરવા ઇચ્છનારે અવસ્ય કરવુંજ જોઇએ. અસ્તુ !

(લેઃ—નાગરદાસ નરોતમદાસ સંઘવી-આમોદ)

પંચ અને નાણાંવહીવટ—

પંચોના બંધારણ સાથે સમાજનો ઘાડો સંબંધ છે. પંચોનું મુખ્ય અંગ સમાજમાં અગ્રગણ્ય ગણાતા ગૃહસ્થોનું બનેલું હોય છે. ઘણે ભાગે પંચ બોલાવવાનો અધિકાર અમુક શેઠ કે પટેલના હાથમાં હોય છે. આ પદ્ધતિ જો કે જુની હોવાથી, એ છોડી શકાતી નથી; પરંતુ એમાં દોષ કાળે કરીને પેસી ગયા છે. પંચોના નાણાંનો વહિવટ અને બીજો સામાન્ય વહિવટ એક હસ્તુ હોવાથી એમાં ભારે ઘોંટાળો થવા સંભવ છે નાણું એવી વસ્તુ છે, કે તેની જો એક બીજાના હાથમાં ફેરબદલી ન થાય તો, તેને હમેશ રાખનારને કોઇક વખત જોખમમાં આણી મુકે છે. હરેક માણસની સ્થિતિ હમેશ સારી રહેતી નથી. તેમજ સારી સ્થિતિના ગૃહસ્થો બીજાઓની અદેખાઇને પાત્ર પણ બને છે. તેથી કરીને નાણાંનો વહીવટ અને પંચ બોલાવવા વગેરેનો વહીવટ જુદાજુદા હસ્તક વારા ફરતી રાખવાની પ્રથા દરેક પંચોમાં દાખલ કરી દેવી જોઇએ. પંચ બબ્બે ત્રણ ત્રણ વર્ષે હિસાબ તપાસનારાઓ જેને નીમે તેમણે હીસાબ ચોખ્ખા કરી જાહેરમાં મુકી દેવા જોઇએ.

આ રીતે જો પંચના શેઠીઆઓના હાથમાંથી નાણાંનો ભાર ઓછો કરવામાં આવશે ત્યારેજ, પંચોમાં ન્યાયનું ધોરણ સાચ અને સચવાતું થશે. નાણાંની વ્યવસ્થાના ગુંચવાડાને લીધે તેમને પોતાનો પક્ષ સબળ રાખવાનો પ્રયત્ન કરવો પડે છે. એમ પક્ષ સબળ રાખવાના કાર્યમાં હરેક રીતે પક્ષપાત થવાનો સંભવ હોય છે.

મંદિરો અને ધર્માદા સંસ્થાઓના નાણાંનો એકત્ર વહિવટ ચલાવવામાં આવે, એ વધારે ઇચ્છવા યોગ્ય છે, કારણ કે મંદિરોના બ્હાના નીચે એકઠા થયેલા ધનનો ઘણા વખત દુરૂપયોગ થાય છે. કાંતો નિરર્થક વસ્તુ વસાવવામાં અથવા બાંધકામ કરાવવામાં તેનો ઉપયોગ કરી નાખવાની ફરજ પડે છે, અથવા તો એ રકમોનો ઉપયોગ લાંબે વખતે થતો હોવાથી વધી વધીને એટલી મોટી થઇ જાય છે કે, તેના હિસાબ સમજવામાં ઘણી વખત મુશ્કેલીઓ ઉભી થઇ જાય છે. બન્ને ખાતાનાં દ્રવ્ય, દેવ દ્રવ્ય છે, એમ માની તેના સદુપયોગ તરફ માત્ર દષ્ટિ રાખવી ઘટે છે. જ્યાં જ્યાં પંચોમાં ઝગડા છે, તે બધા ઘણે ભાગે અંદરથી નાણાંના વહીવટને લીધે ઉપસ્થિત થયેલા છે, બહાર તકરારો જુદા બ્હાના નીચે ચાલે છે; અને તેમાં દીવસે દીવસે એટલો બધો કશ વધી જાય છે, કે, તેમાંથી પક્ષો બંધાય છે બન્ને પક્ષો સામસામી ચીલાં મુકતાં નથી. ખોટાં ખરાં તહોમતો, ના હોય ત્યાંથી ઉપસ્થિત કરી એક બીજા ઉપર મુકવામાં આવે છે. બન્ને પક્ષો આમ કરી એક બીજાને નમાવવાની બાજી ગોઠવે છે. પરિણામે ઝગડા વધે છે. તોડ કાઢવાનું કામ મુશ્કેલ લાગે છે. ધર્મ ન્યાય અને નીતિ બધી વસ્તુ વિસરી જઇ એક બીજાના કટ્ટા દુશ્મન તરીકે કામ કરતાં અચકાતા નથી. વ્રતોનાં ઉદ્યાપન, મંદિરોની પૂંજાઓ, વરાઓ અને લહાણીઓ આ બધાં સ્વામી વાત્સલ્ય જેવા **સમ્યગ્ દર્શન**ના અંગરૂપ ધર્મના કાર્યો, અધર્મ પ્રચાર કરવાનું કામ કરે છે. નજરે જોતાં હોય છતાં ડાહ્યા માણસો આમાં સામેલ થાય છે; અને પોતાનો વિનાશ વ્હોરી લે છે.

પંચમાં માન અપમાનની ખોટી પ્રથા.

પંચના કામમાં માન, અપમાનની ભાવના પણ એટલીજ ખરાબ છે. પંચોના આગેવાન પોતાને સેવક માનીને કામ લેનારા હોવા જોઇએ તેને બદલે તેઓ પોતાને માલીક અથવા ઉપરી અધિકારી ગણે છે. પોતે બોલે તેજ પ્રમાણ ગણવામાં આવે એવી એમની મનોદશા બંધાઇ જાય છે. સભામાં એમને માટે સદા ઉંચું આસન હોવુંજ જોઇએ. એ જ્યાં જાય ત્યાં[illegible] પંચનું કામ ચાલે, આવી ખોટા મનની ભાવનાઓ એટલી બધી જડ કરી બેઠી હોય છે. [illegible]પરિણામે એવા કદાગ્રહી શેઠીઆનાં કાંતો [illegible] થાય છે, કાંતો નાણાંની સ્થિતિમાં હલકા પડી જાય છે. અથવા બીજી રીતે ભારે કલેશમાં આવી પડે છે.

પંચમાં કાયદાનું બંધારણ.

આપણા જૈન સમાજના બધાજ પંચોમાં ઉપર જણાવ્યા પ્રમાણેનાં લક્ષણો મોજુદ છે, અને તેને લઇને આપણી સારી સારી યોજનાઓ પણ મારી જાય છે. અનેક સુધારાઓ પંચોમાં પસાર થાય છે ખરા; પરંતુ ઘણા ભાગે તેના અનુવર્તનમાં જોઇએ તેટલો સંતોષ મળતો નથી. દુનિયાભરમાં સુધારાનો પવન વાય છે, તેવે વખતે આપણી પંચોની સંસ્થાઓને આપણે સુધારીએ નહિ તો આપણે આગળ ચાલી શકવાના નથી. જ્યારે જ્યારે ઝઘડા ઉભા થાય છે ત્યારે ત્યારે, શાસન પ્રણાલીકા સાચવવા માટે કાયદાના બંધારણ (Low & order) નો હાઉ આગળ ધરવામાં આવે છે. આ બ્હાના નીચે, કેટલાએક વખતે અણઘટીત સજાઓ ગુન્હેગાર માટે જાહેર કરવામાં આવે છે. આ સજાઓ, કેટલીએક વખત એટલી બેહુદી હોય છે કે તેનું પરિણામ ગુન્હેગારને સુધારવાને બદલે બગાડવામાં વધારે મદદ કરે છે. અમેરિકા વગેરે સુધરેલા દેશોની જેલોની માફક આપણી સજાઓ ગુન્હેગાર ફરીથી ગુન્હો કરવા ન લલચાય એવા પ્રકારનો તેના વર્તનમાં સુધારો કરે એવો આશય હોવો જોઇએ. સમાજનો ગુન્હેગાર આપણો સંબંધી છે, એવો પણ પ્રસંગ આવે કે જ્યારે આપણે તેને આપણો નજીકમાં નજીકનો સબંધી બનાવવાની ફરજ પડે, કદાચ ન પડે એમ હોય તો

પણ તે આપણા બંધુ તો છેજ. આવી સ્નેહની ભાવનાથી જ્યમ બાળક ઉપર પ્રિતિથી સંમિશ્રીત સજાઓ કરવામાં આવે છે તેવી વ્યવહારૂ સજાઓ ફરમાવવી જોઇએ. સજાઓ એવી હોવી જોઇએ કે તે સ્હેલાઇથી અમલમાં મુકી શકે. ન્યાયપૂર્વક કરેલી સજાઓ જરૂર ફળદાયી છે, જ્યારે એથી ઉલટી ભાવનાથી કરેલી સજાઓ ઝેર, વૈરનો પ્રચાર કરે છે. તેનો પક્ષ બંધાય છે અને તેથી આખા સમાજનું અનેક રીતે અહિત થાય છે.

વ્યવહાર બંધ કરવાની સજા.

પંચોમાં માત્ર એકજ સજા કરવાની હોય છે, અને વ્યવહાર બહારની અથવા તો, નાનો મ્હોટો દંડ તે દંડ ન ભરે તો છેવટ, વાત તો આવે છે વ્યવહાર બંધ કરવા ઉપર. આ નિતિ કલેશ ઉત્પન્ન કરનારી થઇ પડી છે. સાંભળવા પ્રમાણે ગાયકવાડ સરકારની ધારાસભામાં હમણાંજ એક કાયદો પસાર થયો છે તેની મતલબ એવી છે કે આવા અન્યાય પુર્વક થતા પંચોના જુલમને થતા અટકાવવા અને તેને ફોજદારી ગુન્હો ગણી એ ધોરણે કામ લેનારા પંચોને યોગ્ય સજા કરવી. જુના કાળથી ચાલતી પૃથા તેમજ આપણી અંગત સત્તા ઉપર આ એક સહાજીક હુમલો હોવાથી આપણને (......) રૂચી કરતો નહિ થાય પરંતુ એ નિબંધ પંચોના વહિવટ સુધારવાને માટે જરૂરનો છે. એ કાયદાનો અમલ સારો નહિ થાય તો, આપણા પંચોના બંધારણનો નાશ કરવો પડશે. સમજુ યુવાન વર્ગ એની સાથે બળવો ઉઠાવવા ટપટપી રહ્યો છે, અને નજીકના ભવિષ્યમાં આપણી બળ બુદ્ધિને અવળે રસ્તે લઇ જનારી ધાતકના આપણો ધાત કરીને નાશ થઇ જશે.

વય અને રોટી વ્હેવાર ત્યાં બેટી વ્યવહાર.

બધા સુધરેલા દેશોમાં આપણા પંચો જેવી સંસ્થાનો નાશ થયો છે, સામાન્ય વરાવાજન, કરવા અને યોગ્ય સ્થાને કન્યા આપવી લેવી, એ બન્ને બાબતોમાં પંચોએ ઉદાર નીતિ અખત્યાર કરવી જોઇએ. મરી ગયલાં મા બાપ કે ભાઇ ભાંડુ પાછળ મિષ્ટાંત્ર જમવાં એ દેખીતી રીતે અણઘટતું છે, પરંતુ અંતીમ ક્રિયાના ધાર્મિક બ્હાના નિચે એ રીવાજ ભારે જડ ઘાલી બેઠો છે. મરનારની પાછળ વરા ન કરવા એવો સુધારો આપણા ઘણા પંચોએ કર્યો છે, તેના અમલથી ઘણું સારૂં પરિણામ આવ્યું. છે. એ વાત દરેક જણ સ્વીકારે છે, તેવીજ રીતે વૃદ્ધ મરણ પાછળ પણ ગરીબ માણસને ખેંચાઇને પોતાની મોંઘી બચત રકમ ખરચી નાખવી પડે છે. અથવા દેવું કરવું પડે છે. એ રીવાજ સદંતર બંધ કરવા જેવો છે. યોગ્ય પૈસાદાર ગૃહસ્થોને જો પૈસા ખરચવા હોય તો બીજી ઘણી દિશાઓ છે. પ્રેત ભોજનનું નામ બદલી બીજી અનેક રીતે જમણવાર કરી શકે છે. અથવા તો સમાજને મદદગાર થાય એવી રીતે પોતાના ધનનો સદ્‌ઉપયોગ કરી શકે છે.

કન્યા લેવા દેવાના સંબંધે જેની સાથે ખાનપાનનો સંબંધ છે, તે વર્ગમાંથી કન્યા લાવવાનો ઠરાવ ઘણા પંચોમાં છે, જ્યારે દેવાનો ઠરાવ કરતાં ઘણાઓને એવો ડર લાગે છે કે પોતાના વાડાની કન્યાઓ બીજા વાડામાં ખેંચાઇ જશે, અને છોકરાઓ કુંવારા રહેશે.

આ દષ્ટિ યુક્તિ યુક્ત નથી. જ્યાં રોટી વ્યવહાર હોય ત્યાં બેટી વ્યવહાર કરવાથી નાના વાડા મટી જઈ વિશાળ મેદાન થશે. વિશાળ મેદાનમાં ગંદકી હોય તો પણ ઓછી માલુમ પડે છે, તેમ એથી વર કન્યાઓની છુટ થશે, અને હાલ જેમાં કન્યાની તંગી હોય છે તે વાડાના યુવાન છોકરા કુંવારા રહે છે. તેને બદલે, જે તે રીતે યોગ્ય વર કન્યાના સંબંધ જોડાવામાં સુલભતા જણાશે. પૈસાદાર માણસો મનમાન્યા પૈસા ખર્ચી દેશ પરદેશથી કન્યાઓ લાવે છે, એમાં સમાજને એવડું નુક-

શાન થાય છે. એક તો સમાજમાંથી દહોડા નાણાંની રકમ જાય છે, અને કેટલીક વખત અયોગ્ય ઉમરના માણસ પણ એ રીતે યુવાન કન્યાઓ સાથે લગ્ન કરતા હોવાથી, તેનાં દૂષણ સમાજને ભોગવવાં પડે છે.

પંચોના બંધારણ વિશાળ કરો.

પાણીને જેમ વિશાળ મેદાનમાં વહેતું કરીશું, તેમ તે વધુ સ્વચ્છ રહે છે; અને જો તેને એક ખાડામાં સંઘરી રાખીશું તો થોડા વખતમાં ગંદુ થઇ જઇ ખરાબ હવા ફેલાવવાનું કામ કરશે. આપણા સમાજનું પાણી પણ બળદાયી રાખવું હોય તો એને વિશાળ સ્થાનમાં ફેલાવવાની તક આપો, કુંઠીત દ્રષ્ટિ રાખી, નજીવા સ્વાર્થિ વિચાર છોડી દો.

કેટલાક પંચોમાં જ્યાં પક્ષો પડી ગયા હોય તે એમ વિચાર કરે કે, કદાચ પંચોનાં બંધારણમાં સુધારો થશે અને જો નાનાં પંચો મટીને એક વિશાળ મહોટા બંધારણ વાળું પંચ થશે, તો ગુન્હેગારને સજા કરવાની તેમની નેમ ચુકી જવાશે, એ વિચાર ભુલ ભરેલા છે. **જ્ઞાનાવરણીય** કર્મના આવરણથી આપણી દષ્ટિમાં વિકાર પેસી ગયો છે. તેમાં વિકાશ થવા માટે પોતાના અંતરાત્મા ઉપર આધાર રાખો. સારાનું પરિણામ હમેશ સારૂં, એમ વિચારી જે સારૂં છે તેનું ગ્રહણ કરો. આપણું માન ઓછું થશે, આપણા સમાજમાં આપણું ચલણ મટી જશે, પક્ષોનું બળ નબળું થશે, એવા એવા અણઘટતા વિચારો છોડી દઇ પ્રગતિના પંથે વળો, એમાંજ આપણું શ્રેય છે; "વાડ કારીંગડું ગળી જાય" એ કહેવત પ્રમાણે આપણા પંચો રૂપી વાડો, આપણું ભક્ષણ કરવા બેઠી છે, તેમાંથી બચવા માટે ઉદાર નીતિ ધારણ કરી. જ્ઞાતિઓને ગંગાનો પ્રવાહ બનાવો. સમજુને અપનાવો. પ્રભુનો ડર રાખી, પ્રભૂને નામે અવળી ક્રિયા કરતાં પહેલાં, અંતરાત્માની સલાહ લ્યો. *અહિંસા પરમો ધર્મ:* ના શ્રેષ્ટ તત્વ જ્ઞાનમાં માનનારાઓ, ડગલે પગલે પોતાના બંધુઓ પ્રત્યે જાણે અજાણ્યે હિંસાનો પ્રયોગ કરતાં અચકાય નહિ તો આપણો ધર્મ કેમ ટકશે ? **દશ લક્ષણ** ધર્મ માનનારા ઉત્તમ **આર્જવ** અને ઉત્તમ **માર્દવ** ધર્મો વિસરી જઇ એ ધર્મ પાળવાના દશમે દીવસે ધમધમા કરવા મંડી પડે એથી કેમ કરી ઉન્નાત થશે ? ધર્મ પાળવા હોય તો વ્યવહારને પ્રથમ સુધારો. ધર્મ રૂપી દવાથી શરિરને નિરોગી કરવાને બદલે, આપણે વધારે રોગી થતા જઇએ છીએ તેનો વિચાર કરી આપણા પંચોની ઉત્તમ સંસ્થાઓને ન્યાયનાં મંદિર બનાવો. એમાં પ્રવેશ કર્યા પછી, ખોટા કાવાદાવા અને બંધારણનાં બ્હાનાં વિસરી પ્રેમ અને શાંતિ એ, ન્યાયાલયનાં મુખ્ય દ્વાર બનશે, તોજ આપણી હયાતિ ટકશે, નહિતો પશ્ચિમનો જડવાદ આપણે નાશ કરવા મથી રહ્યો છે. કાં,તો, તેમાં કે પછી શ્રી કૃષ્ણ જેવા બુદ્ધિશાળી નેતાના અનુયાયી યાદવો પોતાના ભાઇઓનાં પોતપોતાને હાથે ગળાં કાપી નાશ પામ્યા તેમ આપણે પણ નાશ પામીશું.

નૂતન વર્ષે !

નવિન આ વર્ષના ટાણે, ધરીએ ધ્યાન મહાવીરનું,
વરસના આ પ્રથમ દિને, ધરીએ ધ્યાન મહાવીરનું.
મળેલા આ સુભગ ટાણે, ધરો તમ ધ્યાન મહાવીરનું,
ઉદય જેથી થશે સઘળે, ધરો તમ ધ્યાન મહાવીરનું.
ગએલા વર્ષના પડઘા, રહયા છે વાગી અંતરમાં,
વસેલા વિશ્વના પ્રેમે, રહી છે જ્યોત અંતરમાં.
જૈનના પુત્ર પુત્રીનું, રહ્યું છે ધ્યાન ઇશ્વરમાં,
જૈનના જ્ઞાતૃ પુરૂષોનું, રહ્યું છે ધ્યાન મહાવીરમાં.
વરસના દિન આ પ્રથમે, પૂજીને વીરનાં સુત્રો,
જૈન હે ભ્રાતૃ મારા હો, તમે છો વીરના પુત્રો.
કથેલી વીરની વાણી, કરો હે માન્ય મમ વીરો,
સુણીને શીખ **મોહન**ની નવિન આ વર્ષમાં ફરજો.

મોહનલાલ એમ. શાહ–કંપાલા.

ગુજરાતની દિ. જૈન :–
–: શિક્ષા-સંસ્થાઓ.

("જૈન જ્યોતિ" શિક્ષણાંક ઉપરથી ઉદ્ધૃત.)

ગુજરાત અને કાઠિયાવાડમાં દિગંબર જૈનોની સંખ્યા શ્વેતાંબર જૈન ભાઇઓના પ્રમાણથી ઘણી ન્યુન છે. એટલે કે શ્વે. જૈનોની વસ્તી જ્યારે આશરે લાખ સવાલાખની હશે ત્યારે દિગંબર જૈનો આશરે ૮–૧૦ હજારજ હશે તેમાં શ્વે. જૈનોની અનેક જાતિઓ જેવી કે ઓસવાળ, પોરવાડ, શ્રીમાળી વગેરે છે ત્યારે દિગંબર જૈનોમાં હુમડ, નૃસિંહપુરા, મેવાડા, રાયકવાળ, ખંડેલવાળ, અગ્રવાળ, પદ્માવતી પરવાર, પરવાર ગોલાપૂર્વ, ગોલાલારે વગેરે વધુ જાતિઓની સંખ્યા નાની નાની વસ્તીના પ્રમાણમાં જણાય છે. અને શિક્ષા સંસ્થાઓના સંબંધમાં વિચાર કરીએ તો શ્વેતાંબર જૈન ભાઇઓમાં ગામે ગામ ને શહેરેશહેર અનેક પાઠશાળા, બોર્ડિંગ, વિદ્યાલય, શ્રાવકાશ્રમ, જૈન હાઇસ્કુલ વગેરે નજરે પડે છે તથા શ્વે. જૈન મુનિઓદ્વારા પણ શ્રાવકોમાં નિત્ય વ્યાખ્યાનદ્વારા અનેક પ્રકારનો ઉપદેશ અપાયાજ કરે છે જ્યારે ગુજરાતના દિગંબર જૈનોની શિક્ષા સંબંધી સ્થિતિ તપાસીશું તો માલમ પડશે કે ગુજરાતમાં માત્ર સુરત, મુંબઈ, અંકલેશ્વર, ભાવનગર, વડોદરા, કલોલ, અમદાવાદ, ઉજેડિયા, લાકરોડા, કરમસદ, ઇડર, જાંબુડી, સોનાસણ, સોજીત્રા, પ્રાંતિજ વગેરે ગણત્રીના સ્થાનોમાંજ રાત્રિની દિ. જૈન પાઠશાળાઓ ચાલે છે, તેમાં માત્ર અમદાવાદ, મુંબાઈ, ઇડર અને પ્રાંતિજ એટલેજ સ્થળે બોર્ડિંગો છે તેમજ મુંબાઇ, સોજીત્રા અને જાંબુડીમાં શ્રાવિકાશ્રમ છે, જેમાં માત્ર અમદાવાદ બોર્ડિંગ, હી. ગુ. જૈન બોર્ડિંગ (મુંબાઇ) અને રતનબ્હેન રૂક્ષ્મણીબાઇ શ્રાવિકાશ્રમ મુંબઇની સ્થિતિ સંતોષકારક ગણી શકાય, બાકી તે ઉપરાંત બીજી પાઠશાળાઓ, બોર્ડિંગો અને શ્રાવિકાશ્રમોની સ્થિતિ જોઇએ છિયે તો માલમ પડે છે કે તેનો અત્યંત અલ્પ પ્રમાણમાંજ લાભ લેવાય છે એટલે કે જ્યાં ૧૦૦–૫૦ વિદ્યાર્થી પાઠશાળાનો લાભ લેવાવાળા હોય છે. ત્યાં તેની ચાર આની વિદ્યાર્થી પણ તેનો લાભ લેતા નથી. સોજીત્રા અને જાંબુડીના શ્રાવિકાશ્રમોની સ્થિતિ પણ એવીજ કે એથી પણ નીચેની કોટીએ છે. વળી આખા ગુજરાતના દિગંબર જૈનો તરફ નજર ફેરવતાં જણાય છે કે તેમાં સંસ્કૃત અને ધર્મશાસ્ત્રનો જાણકાર એક સાધારણ પંડિત પણ નથી જણાતો તો પછી ન્યાયાચાર્ય, ન્યાયતીર્થ, કાવ્યતીર્થ, સાહિત્ય રત્ન, શાસ્ત્રી તો કયાંથીજ મળી શકે અને તેથીજ ગુજરાતમાં પાઠશાળા ને અધ્યાપક કે સુપ્રિન્ટેન્ડેન્ટ બોર્ડિંગ માટે–તથા ધર્મશિક્ષણ માટે હિંદુસ્તાની દિ. જૈન પંડિતોનેજ બોલાવીને રાખવા પડે છે જે ગુજરાતના દિગંબર જૈનોને સંસ્કૃતને ધાર્મિક કેળવણીના સંબંધમાં કેટલું નીચું જોવા જેવું છે ?

ગુજરાતમાં એક પણ સ્થળે એવું દિ. જૈન બ્રહ્મચર્યાશ્રમ કે વિદ્યાલય નથી કે જ્યાં અમુક વર્ષો સુધી વિદ્યાર્થી રહી વ્યવહારિક, ધાર્મિક, સંગીત, વ્યાયામ ઔદ્યોગિક વગેરેની વિદ્યા પ્રાપ્ત કરી ઉત્તમ પંડિત, બ્રહ્મચારી કે ઉત્તમ વ્યવસાયી થઇ શકે.

વ્યવહારિક અને ધાર્મિક શિક્ષાની સાથે ઔદ્યોગિક શિક્ષાની ઓછી અગત્ય નથી કેમકે ઉંચું અંગ્રેજી શિક્ષણ લઇ તૈયાર થતા ડોકટરો વકીલો ને સોલીસીટરો બેરિસ્ટરો હવે ઉભરાવા લાગ્યા છે. ને બી. એ. કે મેટ્રીક થયેલાઓને નોકરીના ફાંફાં પડે છે ત્યારે વડોદરાના કળાભવન જેવા એક જૈન ઉદ્યોગ ભવનની આવશ્યકતા કંઇ ઓછી નથી અને જો ગુજરાતના સમગ્ર જૈનો તરફથી એક જૈન ઉદ્યોગ ભવન મુંબાઈ, સુરત કે અમદાવાદ જેવા મોટા

श्रीयुत् जयचंद हीराचंद गांधी, सिविल इंजिनीयर–भावनगर।

(भावनगर स्टेटसे स्कोलरशीप लेकर इंग्लैंड जानेवाले व वहां 'सिविल इंजिनीयर' की परीक्षा पास करके अभी ही लौटकर भावनगर स्टेटमें उच्च पदपर नियुक्त गुजरातके दशाहूमड़ दि० जैनबंधु)

Jain Vijaya Press, Surat.
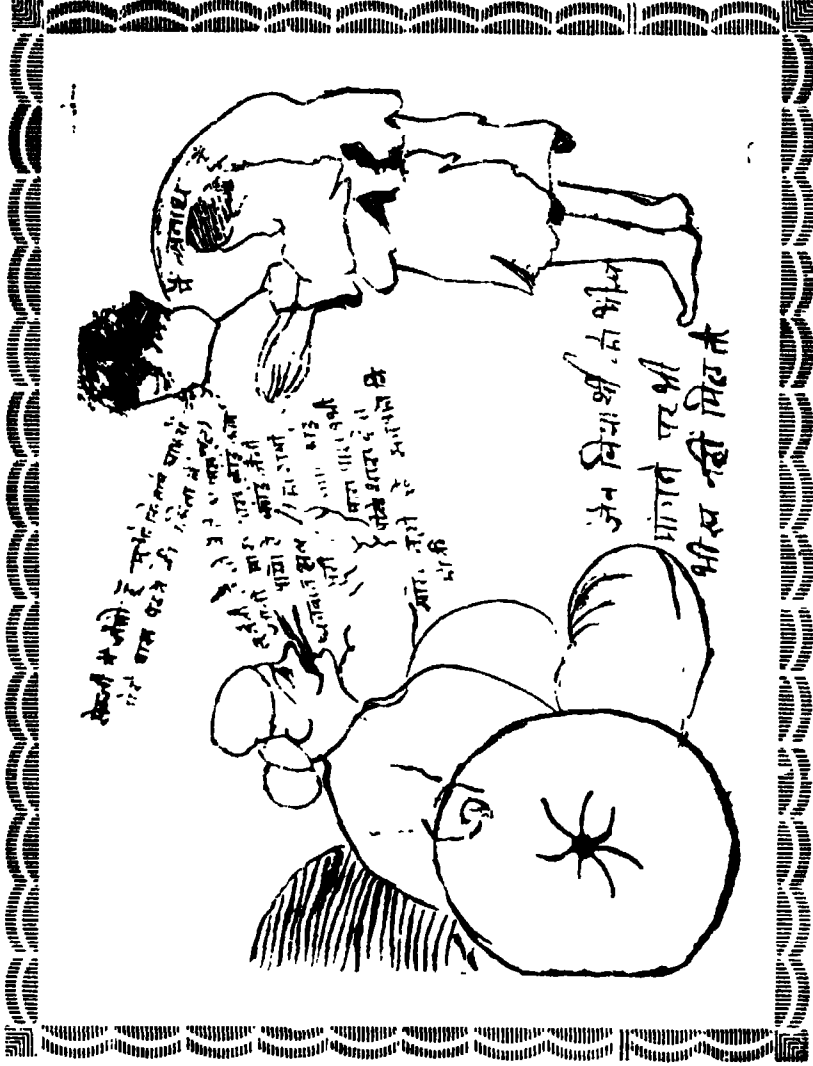
[जो श्रीमान अपनी यशःकीर्ति और वाहवाहीके लिये हजारों रुपया लुटा देते हैं उनके दरवाजे पर सजातीय गरीब विद्यार्थी पुस्तकोंके लिये भिक्षा मांगने जाते हैं मगर दो चार उल्टी सीधी सुनकर निराश हो वापिस लौट जाते हैं।]

Jain Vijaya Press, Surat.

શહેરમાં ઉઘાડવામાં આવે તો ગુજરાતના જૈનો ઔદ્યોગિક શિક્ષામાં ઘણુાજ આગળ વધી શકશે.

વળી વ્યવહારિક શિક્ષા સાથે ધાર્મિક ઉચ્ચ શિક્ષાની આવશ્યકતા કંઈ ઓછી નથી તો એ માટે જો ગુજરાતમાં મુંબાઇ કે અમદાવાદમાં એક જૈન કોલેજ સ્થાપવામાં આવે તો તે બની શકે તેવું છે, પણ જ્યાં સુધી જૈન કોલેજ ન સ્થપાય ત્યાંસુધી જ્યાં જ્યાં કોલેજો હોય ત્યાં ત્યાં જૈન બોર્ડિંગની તો અવશ્ય જરૂર છે. મુંબાઇ અને અમદાવાદમાં એવી બોર્ડિંગ છે પણ વડોદરા અને સુરતમાં આવી બોર્ડિંગની જરૂર પ્રત્યક્ષ માલમ પડે છે, તો ગુજરાતના દિ. જૈન શ્રીમાનોને સુરત તેમજ વડોદરામાં બનતી તાકીદે બોર્ડિંગો ખોલવાની હવે ખાસ જરૂર છે.

પણ એકલી બોર્ડિંગો કે રાત્રિ પાઠશાળાઓથી પણ સંતોષ પામવાનો નથી. કેમકે એ તો ન છૂટકાના ઉપાયો છે, પણ દરેક પ્રકારની ઉત્તમ કેળવણી આપી શકાય તે માટે ગુજરાતમાં એક શાંત સ્થળે દિ. જૈન ગુરૂકુળની આવશ્યકતા છે કે જેવા આશ્રમો આર્ય સમાજો તરફથી પણ ગુજરાતમાં અનેક સ્થળે ચાલી રહેલા છે. આવું આશ્રમ સ્થપાય તો તેમાંજ અમુક વર્ષો સુધી વિદ્યાર્થી રાતદિન નિયમીત રીતે રહી વ્યવહારિક, ધાર્મિક, વ્યાયામ, સંગીત, ઉદ્યોગિક વગેરે દરેક શિક્ષા પ્રાપ્ત કરી શકે અને એથીજ ગુજરાતમાં આપણે ઉચ્ચ વિદ્વાન ઉત્પન્ન કરી શકીશું.

એક સમય એવો હતો કે જ્યારે માબાપો પોતાના છોકરાંને પોતાની નજર સામેથી બહાર ગામ બોર્ડિંગોમાં પણ ભણવાને મોકલવા તૈયાર નહોતા ને તે માટે સ્વર્ગીય દાનવીર શેઠ માણેકચંદ હીરાચંદને અત્યંત પરિશ્રમો કરવા પડેલા ત્યારેજ અમદાવાદની પ્રે. મો. દિ. જૈન બોર્ડિંગ ચાલુ થઇ શકેલ પણ હવે સમય બદલાયો છે. ને માબાપો પણ વિદ્યાર્થીઓને બોર્ડિંગમાં રાખીને ભણાવવાના લાભો સમજવા લાગ્યા છે. જેથીજ બોર્ડિંગોમાં હવે એટલા વિદ્યાર્થીઓ દાખલ થવા આવે છે કે તેમને માટે પૂરતી સગવડ ન હોવાથી ના કહેવી પડે છે. આથી એમ તો હવે સ્પષ્ટ માલમ પડે છે કે ગુજરાતમાં એક દિ. જૈન ગુરૂકુળ ખોલવામાં આવે તો હવે તેમાં પણ ધીમે ધીમે જોઇતા વિદ્યાર્થીઓ મળી શકે ખરા. ગુરૂકુળો સ્થાપન કરી આજે આર્ય સમાજીઓ કેટલું ઉત્તમ કાર્ય કરી રહ્યા છે કે જે જોઈ જૈનોએ શરમાવા જેવું છે.

શ્વેતાંબર જૈનોમાં સાધુઓની સંખ્યા પણ વિશેષ છે ને તે વળી વધતીજ જાય છે ને સાધુઓમાં સંસ્કૃત પ્રાકૃત ભાષા અને ધાર્મિક જ્ઞાન ઉત્તમ પ્રકારે અપાલુંજ રહે છે ને તેઓ શ્રાવકોને વ્યાખ્યાનો દ્વારા ઉત્તમ ઉપદેશ નિત્ય આપતાજ રહે છે. ત્યારે આ દિશા તરફ દિગંબર જૈનોની સ્થિતિ અત્યંત શોચનીય છે. કેમકે દિ. જૈનોમાં નિર્ગ્રન્થ (નગ્ન) મુનિ તો ગણ્યાજ છે ને બ્રહ્મચારીઓ પણ ગણ્યા ગાંઠયા છે તેમાં ગુજરાતમાં તો સાધારણ જ્ઞાનવાળા એક બે બ્રહ્મચારી શિવાય એક પણ ત્યાગી દિ. જૈન સમાજમાં નથી, આથી ગુજરાતના દિગંબર જૈનોને ઉપદેશ મળવાનું સાધન માત્ર હિંદુસ્થાનના પંડિતોને બોલવીને રાખે તોજ પ્રાપ્ત થઇ શકે છે એટલે કે જ્યાં જ્યાં પાઠશાળા હોય છે ત્યાં ત્યાંના પંડિતો દ્વારાજ શાસ્ત્ર વંચાય છે ને ઉપદેશનો લાભ મળી શકે છે. આથીજ જો ગુજરાતમાં સંસ્કૃત અને ધાર્મિક ઉચ્ચ શિક્ષા આપી શકાય એવું વિદ્યાલય કે બ્રહ્મચર્યાશ્રમ ખોલવામાં આવે તો સ્થાને સ્થાને ગુજરાતી દિ. જૈન પંડિતો ઉત્પન્ન કરી શકાય. આશા છે કે ગુજરાતના દિગંબર જૈન ભાઇઓ આ તરફ લક્ષ આપશેજ.

આ ઉપરાંત વિધવાઓની સ્થિતિ સુધારવા માટે ને ગુજરાતમાં સ્ત્રી અધ્યાપિકાઓ તૈયાર કરવા માટે હાલ જે સોજીત્રા અને જાંબુડીમાં

શ્રાવિકાશ્રમો ચાલે છે તેનો લાભ વિધવા બ્હેનો સારા પ્રમાણમાં લે તો ભવિષ્યમાં એ દિશામાં પણ ઉન્નતિ થઇ શકે. એક સમયે મુંબાઇનું શ્રાવિકાશ્રમ અમદાવાદમાંજ ખોલવામાં આવેલું પણ ત્યાં ગુજરાતની શ્રાવિકાઓએ જોઇએ તેવો લાભ ન લીધો તેથી પછી એ મુંબાઇ લઇ જવામાં આવેલું અને ત્યાં એ આશ્રમનો લાભ હિન્દી મરાઠી અને થોડી ગુજરાતી બ્હેનોએ ઉત્તમ રીતે લાભ લઇ રહેલાં છે, પણ હવે સમય બદલાયો છે ને લોકોના વિચારો ફેરવાયા છે, તો હવે તો અમદાવાદ જેવા શહેરમાં પણ એક સારૂં શ્રાવિકાશ્રમ ખોલવામાં આવે તો સહેલાઇથી ચાલી શકે ખરૂં.

—સંપાદક "દિગંબર જૈન."

દોહરા.

અસ્થિર આ સંસારમાં, અસ્થિર સૌનું ચિત્ત છે,
અસ્થિર બનેલા દેહથી, અસ્થિર સૌ સંબંધ છે.

ચંચળ બનેલા ચિત્તથી, ચિતા જળે ચિંતાતણી,
ચિંતા વિનાના પ્રાણીઓ, શાંતિ ગૃહે હિંમત થકી.

કર્યો જો દુષ્ટનો વિશ્વાસ, તહાં તો મોત સોંપડશે,
ધર્યો જો નીચમાં ઇતબાર, તહાં સૌ નાશ તો કરશે.

ઉધારી એ ઉપાધિ છે, ઉપાધિ છે ઉધારીથી,
જશે સૌ સંપત્તિ ચાલી, પછી રહેશેજ સૌ ખાલી.

પુસ્તકને સૌ વાંચજો, કરી ગ્રહણ કંઇ સાર,
નીતિમય નાયક બનો, કરી અવગુણનો નાશ.

સત્ય ગ્રહો હૃદયે સદા, ધરો નહિ મન પાપ,
પુન્ય થકી જશ વાધશે, વાધી સુખ અમાપ.

શીતળ સત્યની છાંયડી, અસત્ય આતશ ઝાળ,
સત્ય ગ્રહે સુખ સાંપડે, જુઠ થકી દુઃખ ઝાડ.

વણ વિચાર્યું જે કરે, પુઠ થકી પસતાય,
એ નીતિના સૂત્રથી, ભલભલા મુંઝાય.

મોહનલાલ એમ. શાહ—કમ્પાલા.

પ્રાચીન અર્વાચીન—
—જૈન સમાજ.

લેખકઃ—અંબાલાલ હાથીચંદ શાહ.
પ્રાંતિજ બોર્ડિંગ.

જૈન શાસનોદ્ધારક—જૈન ધર્મની વિજય પતાકા ભારતના ભવ્ય દુર્ગોપર ફરકાવનાર વીર પ્રભુના નિર્વાણને આજે પચીસમો સૈકો જાય છે. વીર વિભુના વખતની જૈનોની જાહોજલાલી —જૈનોની જગ વિખ્યાતિ—જૈનત્વનો વિસ્તાર— જૈનત્વ પ્રત્યે જનતાનું માન અદ્વિતિય અનુપમ અને અકથ્યજ હતું. ગ્રીસ, સ્વીડન, નોર્વે, જાપાન, સિલોન, સારો ભારત અને યુરોપીય અન્ય દેશોમાં જૈનત્વની પ્રચારણા પૂર વેગમાં હતી, એમ કહેવાને અસંખ્ય કારણો ગ્રંથકારોની ગ્રંથાવલિઓમાં મોજુદ છે. વાણિજ્યમાં પ્રથમ પદની પ્રાપ્તિ કરનાર અને સંપૂર્ણ સુવિખ્યાતિ પામનાર એકજ જનતા હતી, અને એ વણિક યા તો જૈન સમાજ. જૈનો ધીર, વીર ગુણવાન, સમૃદ્ધિશાળી, અને ગૌરવશાળી હતા અને એમ હોવાનું પાટણની પ્રભુતા, ગુજરાતનો નાથ, ગુર્જરેશ્વર કુમારપાળ નામક ગ્રંથો અને અન્ય અનેકાનેક પુસ્તકો સાક્ષી પુરતાં પોકારી રહ્યાં છે. જનોના ધર્મગ્રંથો, આચાર્યોના ઇતિહાસો અને વીરવિભુની વાણી ખરેખર ભારતને ને ઉપરોક્ત અન્ય દેશોને એક સમયે જૈનત્વમાં મ્હાલતા, જૈનત્વને પાળતા યાતો જૈનત્વને માનતા બતાવવા સકારણ સશંક્ત છે

એ વિભુના વખતમાં જૈનધર્મ સાર્વ ધર્મ હતો અને એમની ઉકત્યનુસાર આજેય છે. કિંતુ આજના આચાર્યો અને આજના જૈનો જૈન ધર્મ વણિકો યા જૈનોએ રજીસ્ટર ટ્રેડ માર્ક કરાવ્યો હોય એમ એમના આચરણ અને ઉક્તિથી ભાસે છે. યદિ એમ ન હોત તો "જિન" નામક પદવી આ ધર્મને આચાર્યો અને પૂર્વે થઇ ગયેલા તીર્થંકરો નજ અર્પત,

એ સમયે ભારત વર્ષમાં અને અન્ય પ્રદેશોમાં જૈન ધર્મની પ્રચારણા પૂર વેગથી હતી; એ એટલી હદ સુધી કે આ જમાનાના જૈનો તો એની મનોકલ્પના પણ કરી શકે તેમ નથી, અને કદાચ ગ્રંથોને આધારે થાય તોય અશ્રદ્ધાળુ આત્માઓને તો સમજવી મુશ્કેલ થઇ પડે. આટલી હદ સુધી હતી કે આ જમાનામાં જૈન ધર્મની જાહોજલાલી ખુદ રાજાઓ પણ પાછલા જીવનમાં જિનદિક્ષા ધારણ કરી અચળ સુખ પામવા ચાલ્યા ગયા છે એમ પુસ્તકો પ્રમાણ આપે છે. હા! પણ એ દિવસ આવ્યો ને પાણીના રેલાની પેરે વહી ગયો!!

રે! આજે ક્યાં છે જૈનત્વના જાણકાર? ક્યાં એ મહાવીરની મુખોક્તિદ્વારા મળેલો જૈનત્વનો મુદ્રાલેખ અહિંસા? ક્યાં છે એ અહિંસાના આદર્શ પુજારી? ક્યાં ગઇ એ જૈનત્વની જાહોજલાલી? કાઢ્યું છે સરવૈયું કોઇએ કે કેટલા છે આજે જૈનત્વના સાચા સૈનિકો અને કેટલા છે કેશરનો ભાલપ્રદેશે પીળો ચાંલ્લો કરનાર જૈનો. જ્યારે માતૃભૂમિમાંજ જન્મ પામીને આછુ આછુ અને અધોગતિના સાગરમાં ડુબતું જણાય છે એ જૈનત્વ, ત્યારે અન્ય પ્રદેશમાં તો એનો અંશમાત્ર પણ હોયજ ક્યાંથી અને એ સંભવે પણ શાનું! વાણિજ્યમાં પ્રથમપદ હતું તે ક્યાં છે? અખિલ ભારત વર્ષનો વ્યાપાર એકલે હાથે ખેડનાર ક્યાં છે એ જૈનો! હાય!! આજ તો ઉલટીજ ગંગા વહી રહી છે!!

નથી એ સમશેરનું શૂર સમજાવનાર જૈનો— નથી એ જૈન આલમપરથી ભિરૂતાનું કાળુ કલંક ભૂસી નાખનાર **ભામાશા** કે નથી એ પાટણની પ્રભુતામાં સિદ્ધરાજને સહાયક થયેલા ધીરવીર અને રાજનિષ્ઠ જૈનીઓ. નથી જૈનત્વને જગતમાં વિસ્તારનાર એ સમયના જૈન સાધુઓ કે નથી વીરવિભુની ઉક્તિદ્વારા થયેલા અહિંસાના અનુયીઓ. નથી એ જમાનાના જ્વલંત લખાણો લખનાર જૈનાચાર્યો!!

આ બધું પરિવર્તન, આ બધો ધર્મવિપ્લવ વીર વિભુના વખતથી તે આજ સુધી આછી નજર ફેરવતાં આછુ આછુ આંખોને પલકારે દેખાય છે ને પાછું સીનેમાના પડદાની પેરે ચાલ્યું જાય છે આ દશ્ય અવલોકતાંને વાર આ ઉલટો જીવન કાળ—આ પરિવર્તન ચક્ષુ સમક્ષ આવતાંને વાર દરેક જૈન વ્યક્તિનું હૃદય ઉંડાણ દ્રવી જાય છે. રે! રોમાંચ ખડો થાય છે.

"આ બધું કોને શીર? આનો કોણ જવાબદાર!" હાજર જવાબી જવાબ પણ વાળી દે કે "જૈનત્વ પર કાળ—ચક્રનો ધસારો" **અણસમજુ** અને પ્રમાદી પ્રજા સમજી લે આને ખરો આક્ષેપ. હા ખરો હું પ માનું પણ કેટલેક અંશે. સંપૂર્ણ જવાબદારી એને શીર નહિ હોં. **કાળચક્રને** એકલાને શીર આવો અને આવડો આક્ષેપ ફેંકવાની નીતિ ન્યાયી ન કહેવાય. અન્ય ભલે ફેંકે કિંતુ હું તો નહીંજ.

જૈનત્વના એ વિભાગ કરનાર **જૈનો** કે **કાળચક્ર**? જૈન ધર્મમાંથી ભિન્ન ભિન્ન સમાજોમાં પલટાવનાર જૈનો કે કાળચક્ર? જૈનત્વને ભિન્ન ભિન્ન જાતિઓ અને ભિન્ન ભિન્ન સમાજમાં પલટાવનાર જૈનો કે કાળચક્ર? ન્યાયી નીતિથી તો જૈનોજ. આમ જૈનત્વને પરમાણુંઓમાં પલટાવનાર જૈનો કે કાળચક્ર. પછી કાળચક્રનો દોષ પ્રથમ પદે ને બધી જવાબદારી એને શીર એ વદનાર વક્તાઓના સિદ્ધાંતો તો જમીનદોસ્તજ થાય. રે પરમાણુઓના પણ અણુઓ થતાં થોડાજ વર્ષો વીતે અને પોતાના કુહાડાના ઘાવ કેવું વિપરીત પરિણામ લાવે છે.—પોતાના નયન સમક્ષ કેવો ચિતાર રજુ કરે છે એ વિચારવું તો જૈન બંધુઓનેજ રહ્યું, એ ઘાવ તો જૈનત્વને જડમૂળથી ઉખેડશે.—રે નષ્ટભ્રષ્ટ કરશે.

જૈન ધર્મ પર આજે જૈનીઓ બીજો ઘાવ ક્યારનાય મારતા ચાલ્યા આવે છે. તીર્થસ્થાનો અને ધર્માલયોના ઝગડા એજ એ ઘાવ. એ ઘાવે તો એવું વિરાટ સ્વરૂપ ધારણ કીધું છે કે ભલભલાં વજ્રમયી હૃદયો પણ સાંભળતાંને વાર પીંગળી

જ્યાંની ધાસ્તિ રહે છે. હા પીંગળી પણ જાય એમાં કંઇ અત્યુક્તિ નથી. એ જિન ચૈત્યોને સારૂં એ તીર્થ સ્થાનોને સારૂં આજે શ્વેતાંબર જૈનો અને દિગંબર જૈનો વચ્ચેના ઝઘડા પરાકષ્ટાએ પહોંચ્યા છે.

એ જૈન ધર્મના ભિન્ન ભિન્ન સમાજોમાં—ભિન્ન ભિન્ન પંથોમાં આજે કેટલી ને કેવી બદીઓ બંધન રૂપ થઇ ગઈ છે, એ કાંઇ ઓછી જૈનત્વની પ્રચારક છે? એ તો જૈનત્વને જડમૂલથી ઉખેડવા ઉપસ્થિત થએલ વિધ્વંસક છે બીજી જાતિની બદીઓ તો હું ક્યાંથી કહું! કિન્તુ મારા સામાજની તો કહીશ. બીજાની ખોડ ખાંપણું કાઢવા તો ક્યાંથી શક્તિમાન હોઉં કિન્તુ મારા સમાજની તો કહેવા તો કંઇક શકિત હોય અને છે. મારા સમાજની બદીઓ કહું તો બાળ લગ્ન તો બધાયનો પ્રથમ વિધ્વંશક અને એ નરાધમનું બળ અસીમ. એણે આજ લગી મારા સમાજનાં હજારો બાળોનાં બલિદાનો લઇ એમને બીજી દુનિયાના મહેમાન કરી દીધા છે. રે કર્યે જાય છે. નુર શુર વિહીન માય કાંગલી પ્રજા ઉત્પન્ન કરવામાં ફરજીઆતને પ્રથમ ફાળો પોતેજ આપે છે. પછી ક્યાંથી રહે એ પ્રાચીન જૈનત્વ? ક્યાંથી હોય એવી જાહોજલાલી?

વિધવાઓની—રે બાળ વિધવાઓની વસ્તી તો દિન પર દિન વૃદ્ધિ પામતી જાય છે શુક્લ પક્ષના શશિની જેમ અને એ બધું બાળ લગ્નને બળેજ. નથી એ ધર્મ ભગિનીઓને પુરતુ માન, કે નથી પુરતુ જ્ઞાન, નથી તેમને ધર્મને પંથે વાળનાર કોઇ ધર્મવીર. આમાંય બાળ વિધવાઓની સંખ્યા વૃદ્ધ અને સામાન્ય વયની તો જવલ્લેજ. જીવનની કૌમાર્ય વયમાંજ જ્યાં વૈધવ્યની મહાન વેદી હોય તેમને સારૂ ત્યાં તો જૈનત્વનો ચળકાટ અને ઝળકાટ છે ઝાંઝવાંના જળ સમાનજ. ધીર, વીર, રણવીર, અને ધર્મવીર ભવિષ્યની ભારતી પ્રજાની જનતાઓજ જ્યાં અંધકારમય અને અંધારે અથડાતી હોય, એ નર રત્નોની ઉત્પાદક માતાઓ જ્યાં જ્ઞાન દાન હીન હોય, જ્યાં તેમની પ્રતિ સન્માનનો શબ્દ ન હોય ત્યાં તે વળી સંભવે જૈનત્વની જાહોજલાલી?

પિતાઓજ જ્યાં પોતાની બાળાને જ્ઞાનની ખીણમાં અને સાહિત્યના ઉંડાણમાં જતાં આવરણ રૂપ થાય ત્યાં શેની સંભવે તેમને ઉરે સરસ્વતિની સરિતાની ઝર્ણીઓ? ક્યાંથી સંભવે સુરતા વિરતા કે ગુણજ્ઞતા. ખર્ચે છે હજારોના ધન કીર્તિના કળશ ચઢાવવા, (!) ને ખર્ચે છે લાખોનાં દ્રવ્ય માનવના દેહની છેલ્લી ગતિ—મૃત્યુના સમરાંગણમાં. એ ન્યાતવરામાં એ ચલિત કીર્તિના જંગમાં થાય છે હજારોનો ધુમાડો ને કીર્તિના આશાવંતોને મળે છે. ફળ પ્રાપ્તિમાં શુન્ય. પરદેશમાં જવાનો કોઇ વિચાર સરખોય કરે તો ધુતકારી કાઢે એને મારા સમાજ બાંધવો, અને વાતોને વંટોળે છિન્ન ભિન્ન કરે છે એની એ સુકીર્તિને.

આ ઉપરોક્ત બદીઓ જૈનત્વને આબાદીને આંગણે ખેંચે કે બરબાદીના બારણામાં ઢકેલે એ તો વિચારવાનું રહ્યું પ્યારા વાંચક ગણેને. હું તો બરબાદીના બારણામાંજ કહીશ. અને જ્ઞાની બાંધવો તો એજ મત આપશે.

હજારો જૈન ચૈત્યો આજે હયાતિમાં છે. પુરાણાંજ પચાવાને કેટલા જૈન બાંધવો કમર કસી સજ્જ થાય છે ત્યાં મારા અંધ શ્રદ્ધાળુ બંધુઓ નવી ઇમારતો—નવાં નવાં જીનાલયો બંધાવે છે. પુરાણાં પાળી શકવાની તો શક્તિ નથી તો આ વૃદ્ધિ પામતા નૂતન દેવાલયો તો અધમ દશાને પામે તેમાં આશ્ચર્ય શું? આજના સાધુઓ જૈનોને જૈનત્વનું ખરૂં ભાન કરાવવાને બદલે પાખંડોની પ્રતિચ્છાયા પાથરે છે એ જૈનીઓ પર આમ આ જૈનત્વ પર ચોથો ઘાવ.

આમ મારા સમાજમાંજ ઉપરોક્ત બદીઓ ઘર કરી બેઠી છે તો જૈન ધર્મના એ પેટા સમાજોમાં શુ નહિ હોય. જરૂર હશેજ. હું ન જાણું કિન્તુ અનુમાન તો કરી શકું અને કદાચ ન હોય તો તો પેટા **વિભાગ** પડેજ શાના ? રે નાનકડા નાનકડા પંથ હોયજ શાના ? આ બધું એ બદિઓને પરિણામે છે. એ બદીઓએ આણેલી ભાગા ભાગ અને વિભાગા વિભાગ પાડવાની જાગૃતિ છે ! આવા અનેકાનેક ઘાવને પરિણામે એ ઘાવનેજ બળે જૈનત્વ આજે અધોદશામાં સડે છે—રે ! આબાદીને બદલે બરબાદી છે. કાળચક્રનો એમાં એવડો દોષ નથી. નથી એની ભુલ. એ તો છે વિખવાદના વંટોળમાં ગોથાં ખાતા જૈન બાંધવોનો. જે ધર્મપર જે જનતાપર આટલા આટલા ને આવડા આવડા ઘાવ વાગે, રે ! વાગ્યા હોય તેની તે શીદને હોય જાહોજલાલી ? શેની હોય ઉન્નતિ.

આટ આટલુ ઉરમાં ધારી, નયન નીચે કાઢી ગયા પછી દરેક વ્યક્તિ ઇચ્છે, દરેકનું હૃદય પ્રશ્નોની પરંપરા કરવા તલસે અને પ્રશ્ન થાયજ કે " પૂર્વની જાહોજલાલીની પુનઃ સંસ્થાપના થાય કેમ, એ જૈનત્વ જગતમાં ઝળકાવાય કેમ ? રે ! એ પ્રશ્નના જવાબો તો નજરે પડે છે **"દિગંબર જૈન"** પત્રનાં પાનાઓમાં અને એ લખાણોથી ભરપુર ભર્યાં છે અન્ય જૈન પત્રો. પછી પુનઃ પુનઃ વિવરણ કરવું એ તો કઠોર હૃદયોને અર્થેજ હોય. અણસમજુ અને હીણુ નજરાઓને સારૂજ હોય. હું તો નથી જોતો એની આવશ્યકતા. એ લખાણોનું—એ અસ્ખલિત વાગ્ ધારાઓનું એક વખત પુનઃ સંભારણું કરી જજો અને તરતજ એ પૂર્વની જાહોજલાલી ને પરાપૂર્વથી જગવિખ્યાતિના મુખ્ય ઉપાયો જડશેજ. તોય કહું. આ ઉપરોક્ત ચાર અને અને અન્ય અવ્યક્ત ઘાવને દૂર કરો, એ બદીઓને નષ્ટ ભ્રષ્ટ કરો. સર્વ સંમિલિત થાઓ. જૈનત્વને પ્રાણાર્પણ કરતાં પણ ઝળકાવવા કમર કસો તો દૂર નથી એ જૈન ધર્મીઓની અકથ્ય, અને અદ્વિતિય જાહોજલાલી રે ! જગવિખ્યાતિ, રે !—નથી દૂર એ જૈનોન્નતિ કિન્તુ ઉપાયો યોજાય તો હો, નહિ તો નહિ, એ તો પછી—**પત્થર પર પાણીજ.**

ત્યારે સમાજ સુધરશે.

સુકાનીઓ જે સમાજના તે નૂતન સુકાનો ધરસે,
શૌર્ય પ્રેમથી સેવા કરવા પ્રાણાર્પણ કરશે;
સાચા સમાજ સેવક બનશે,
ત્યારે સમાજ સુધરશે. (૧)

બાળ લગ્ને દફનાવીને બાળ ઉરે બળ ભરશે,
જ્ઞાન દાનનું પાન કરાવી ધીરતા વીરતા ધરશે;
જ્યારે નિપુણ નરો અવતરશે,
ત્યારે સમાજ સુધરશે. (૨)

નર રત્નોની ખાણ સ્વરૂપી જનેતાઓ ભણશે,
જ્ઞાનવાન ધીર વીર જનેતા ધીર વીર બાળો જણશે;
વધતી વિધવાઓ ઘટશે,
ત્યારે સમાજ સુધરશે. (૩)

પલટી ઘડીઓ પેખી બંધન સમાજનાં ટળશે,
જૈનની જનતા તન મન ધનથી જવ ભેળી મળશે;
લગ્નનાં ક્ષેત્રો વ્હોળાં કરશે,
ત્યારે સમાજ સુધરશે. (૪)

યુવક સંઘની—ગગન ભેદીને પ્રચંડ ઘોષણા થાશે,
સકળ સંઘ સંમેલન થાતાં વાગ યુધ્ધો મંડાશે;
અનેરી ઐક્યની આશા ફળશે,
ત્યારે સમાજ સુધરશે. (૫)

અંબાલાલ હાથીચંદ શાહ.

પાશ્ચાત્ય વિદ્યા અને— —જૈન સમાજ.

(લેખકઃ—જયંતિલાલ ઠાકોરદાસ મોદી. બી. એસ. સી. એન્જી.—સુરત.)

ભારતવર્ષનો કોઇ પણ સમાજ, ભલે તે જૈન સમાજ હોય કે ઇતર સમાજ હોય, છતાં તેને પાશ્ચાત્ય વિદ્યા–મુખ્યત્વે અંગ્રેજી વિદ્યા–વગર આધુનિક સમયમાં ચાલતું નથી. "येन केन प्रकारेण" તે વિદ્યાનો આશરો લે છે. વ્યવહારમાં તો તેનો ઉપયોગ ડગલે ને પગલે કરવો પડે છે, અને હવે એટલે સુધી વાત આવી છે કે અર્વાચીન જમાનાના ઉગતા યુવકને જો એ વિદ્યા, એ ભાષાથી પરાંગમુખ રહેવું પડે તો તે અકળાય છે, મુઝાય છે, શરમાય છે.

એ ભાષાનો સ્વાદ જૈન સમાજના ઘણી વ્યકિતઓએ ચાખ્યો છે, ચાખે છે અને ચાખશે. એમાંના કેટલાંકોએ તેનો ઉપયોગ જૈન સમાજ તેમજ જૈનધર્મની સેવામાં પણ કર્યો છે, એ પ્રશંસનીય છે, અનુકરણીય છે. આધુનિક જમાનામાં જ્યાં એ આંગ્લ ભાષાનો ઉપયોગ વિધ વિધ ધર્માવલંબીઓએ પોતપોતાના ધર્મનો ફેલાવો કરવામાં, તેનું રક્ષણ કરવામાં, તેના હકો સાચવવામાં અગર તેની પ્રતિષ્ઠા જાળવવામાં કરે છે, તો જૈનસમાજમાં આગ્લ ભાષા શીખતી હરેક વ્યકિત પોતાના હંમેશના વ્યવહારમાંથી અમુક વખતનો ભોગ પોતાના ધર્મને માટે આપે એ કંઇ વધારો પડતું નથી. અલબત તે કરવાને માટે અન્ય અન્ય દ્રષ્ટિએ આંગ્લ ભાષાની સાથે જૈનધર્મનું જ્ઞાન પ્રાપ્ત કરવું પડશે. એ કંઇ અશકય નથી. એની જરૂરીઆત, હાલના તાજા બનેલાં પૂજ્ય મુનિશ્રી જયસાગરજીના ઉપસર્ગ નિવારણના બનાવથી કેટલી છે તે હરેક વ્યક્તિ સમજી શકે છે. જો લખનો નિવાસી શ્રી. પંડિત અજીતપ્રસાદજી જૈન એડવોકેટે સુગમતાથી વિદ્-ર્માવિલંબીઓને જૈનધર્મની દિગંબર મુનિ અવસ્થાનો ખ્યાલ ન આપ્યો હત તો તે "ઉપસર્ગ નિવારણ" ના વિષયનો ઉકેલ ઘણી વિષમતાને પામતે. બીજું આજે દરેક ધર્મની કિંમત બહારની વ્યક્તિઓના પ્રભાવ પરથી અંકાય છે, માટે જનધર્મનો પણ જો પ્રભાવ પાડવો હોય તો શિક્ષિત દેશોની સમક્ષ તેઓનીજ ભાષામાં જૈનધર્મને બાહર લાવવાની જરૂર છે. શ્રી. બાબુ ચંપતરાયજી જૈન બેરીસ્ટર આ પ્રકારે હાલમાં અમેરિકામાં જૈન ધર્મનો કેવો ફેલાવો કરે છે, તેનો "જૈન મિત્ર"માં આવતા બૈરિસ્ટર સાહેબના પત્ર વાંચવાથી માલમ પડે છે.

આટલું જાણ્યા છતાં અંગ્રેજી ભાષાનો અભ્યાસી કેવી રીતે જૈનધર્મ પ્રત્યે પોતાની ફરજ અદા કરે એ પ્રશ્ન તેને મુઝવે છે, છતાં પણ જો વિચાર કરવામાં આવે તો તેનો ઉકેલ કરવો ધારવા જેટલો કઠણ નથી જેમકે બી. એ. તેમજ એમ. એ.ની સાથે ઇતિહાસ અને અર્થશાસ્ત્રના વિષય લેનારા, ભારતવર્ષની તેમજ વિદેશની સંશોધક સભાઓના (Institution of Historical Research) સભાસદ થઇને ભારતવર્ષના પ્રખ્યાત ઇતિહાસકાર સર જદુનાથ સરકાર જેવાની મદદ લઇને જૈન ઇતિહાસનું સારી રીતે સંશોધન કરી શકે છે. આ કંઇ જેવો તેવો જૈનધર્મને ફાયદો નથી, દાખલા તરીકે કેટલાંક ઇતિહાસકારો ભગવાન મહાવીરને જૈનધર્મના સ્થાપન કર્તા સમજે છે. અને પોતાના ઇતિહાસમાંજ પણ એ પ્રમાણે લખે છે. આ ઇતિહાસ જ્યારે જૈનર્ધાવલંબીઓ શીખે છે, ત્યારે તેઓના પર ખોટી છાપ પડે છે એટલુંજ નહિ પણ ઇતર જનતાપર પણ તેને માટે ખોટો ખ્યાલ આવે છે. અને જ્યારે જૈનધર્મના જ્ઞાતા તે વાંચે ત્યારે અત્યંત દુઃખ થાય છે.

હમણાંજ ઇતિહાસકારો માનવા લાગ્યા છે કે

ભગવાન મહાવીરના પહેલા ભગવાન પાર્શ્વનાથ થઇ ગયા છે. એ વિષેનો ખ્યાલ બનારસ હિંદુ યુનીવરસીટીના ઇતિહાસના પ્રોફેસર બેરીસ્ટર પુતાંબેકરે, જૈન એસોશીયન બનારસ હિંદુ યુનીવરસીટીના આસરા હેઠળ ઉજવાયલી મહાવીર જયંતિના વખતે આપ્યો હતો અને કહ્યું હતું કે એવો એવો વખત આવશે કે જ્યારે જૈનના ૨૪ તિર્થંકરો માનવા પડશે. આવી અનેક પ્રકારની પ્રવૃત્તિમાં ઇતિહાસના વેત્તા જો પોતાના શિક્ષણનો ઉપયોગ કરે તો જરૂર જૈનધર્મને લાભ થાય. તેવીજ રીતે વકીલ, એડવોકેટ, બેરીસ્ટર, સોલીસીટર વગેરે પણ જૈન કાયદામાં સંશોધન કરી શકે.

જૈન ન્યાયના વિષયમાં જો **ન્યાયતીર્થો** આંગ્લ ભાષાના અભ્યાસી બને તો પોતાના વ્યહવારમાં એટલુંજ નહિ પણ પોતાના ધર્મની પ્રાચીનતા તથા હકો સિદ્ધ કરવામાં યુક્તિ પ્રયુક્તિનો સારો ઉપયોગ કરી શકે. અને હાલમાં કોલેજમાં તેમજ નિશાળોમાં શિખતા વિદ્યાર્થીઓ જેઓ પોતાને ઘણી વાર જૈનો કહેતાં શરમાય છે તેઓ પણ જૈનધર્મની મહત્તાનો ખ્યાલ બીજાને આપી શકે. આ ન્યાયનાં પુસ્તકો સંસ્કૃતમાં હોવાથી બી. એ. કે એમ. એ. માં મુખ્ય વિષય સંસ્કૃત લેનારા તો તેનાથી કંઇ ઓરજ પ્રકાશ પાડી શકે છે. આના ઉપરથી ફક્ત કળા (ARTS) ના અભ્યાસી જન ધર્મની પ્રભાવના કરી શકે એટલુંજ નહિ પણ વિજ્ઞાન (Science) ના અભ્યાસી પણ કરી શકે છે. કેમકે આ જમાનો વિજ્ઞાનનો છે અને જનધર્મનો અભ્યાસ વિજ્ઞાની દ્દષ્ટિથી સમજવો સુગમ છે. વિજ્ઞાનનું જ્ઞાન લેનારા વિદ્યાર્થી જેવા કે—બી. એસ. સી.; એમ. એસ. સી; એન્જીનીયર, ડાકટર; વગેરે પોત પોતાના વિષયોની મદદથી પોતપોતાના વિષયની સંશોધક સભાના સભાસદ થઇને તે વિષયમાં પારંગતોની સહાયતા લઇને જૈન સિદ્ધાંતો જો દુનિયાની સમક્ષ રજુ કરે તો જૈન ધર્મને ઘણો લાભ થાય.

દ્દષ્ટાંત તરીકે જૈનો આજ કેટલાંકો **વર્ષથી** જાણતા હતાં કે વનસ્પતિમાં જીવ છે **અને એની જગતને જાણ નહોતી અગર કબુલ કરતું ન હતું,** પણ જ્યારે સર **જગદીશચંદ્ર બોઝ** જેવા એક મહાન વિજ્ઞાનીએ સાબીત કરી બતાવ્યું ત્યારે સર્વે તેને માન્ય કરે છે. આવાં આવાં વિષયો તરફ વિજ્ઞાનના અભ્યાસીઓની પ્રવૃત્તિ કરવામાં આવે તો જૈનધર્મની ઉન્નતિ થાય એટલુંજ નહિ પણ જૈન સમાજની પણ ઉન્નતિ છે

આ ઉપરાંત **જૈન સાહિત્ય** કે જે આજે ભંડારોમાં છે તેનું ભાષાંતર જો અન્ય ભાષાઓમાં કરવામાં આવે તો તેની મહીમા ઘણી છે. આ વિષયમાં જૈન સમાજમાંથી કંઇક પ્રયત્ન થયો છે કે જેનાથી આજે ઇગ્લંડ તેમજ અમેરીકામાં જૈનધર્મનું જ્ઞાન લેવાઇ રહ્યું છે. છતાં એટલાંથી કંઇ બસ નથી. પણ જૈન સમાજમાં પ્રાશ્ચાત્ય વિદ્યાની સાથે જૈન ધર્મના પ્રખર જ્ઞાતા ઉદ્દભવિત થવાની જરૂર છે. અને તે માટે બોર્ડિંગોમાં રહીને શિક્ષણ લેનારા વિદ્યાર્થીઓને ફરજીઆત ધર્મ શિક્ષણ આધુનિક ઢબથી પદ્ધતિસર આપવામાં આવે અને તેની ઉપયોગિતા સમજાવવામાં આવે તો બીજા પાંચ વર્ષની અંદર જૈન સમાજમાં જૈન ધર્મને સમજનાર પ્રખર વિદ્વાનો કે જેની ખોટ આજે જણાય છે તવા નીકળશે. આથી જે જે પાશ્ચાત્ય વિદ્યાના અભ્યાસી હોય તેઓ જૈન ધર્મનો અભ્યાસી શરૂ કરી યથા તથા હાલની સ્થિતિમાં જૈન ધર્મની ઉન્નતિ માટે પ્રયત્ન કરે તો તે પ્રશંસાને પાત્ર છે.

સત્યમૂર્તિ-પ્રભાવતી !

લેખકઃ—મોહનલાલ મ. શાહ-કંપાલા.

પૂર્વે ભરતક્ષેત્રમાં કાંચનપુર નામના નગરમાં એક શેઠ રહેતો હતો, તેનું નામ **હેલોક** કરીને હતું. અને તેની સ્ત્રી **હેલીથી હાલક** નામનો એક પુત્ર હતો.

હેલોક શેઠ મીઠા બોલો હોઇ, ખોટાં ત્રાજવાં, અને ખોટા માપથી વ્યાપાર કરતો હતો. તેમજ એક ચીજમાં બીજી ભળતી ચીજ મેળવી વેચતો. વળી ચોરીનો માલ પણ ખરીદતો હતો. એમ કરી, તેણે ઘણું ધન એકઠું કર્યું હતું.

હાલક જુવાન થતાં તેને સારંગપુર શહેરના મણીધર શેઠની પ્રભાવતી નામની સુગુણા પુત્રીથી પરણાવ્યો, પ્રભાવતી ધર્મજ્ઞ અને શ્રાવિકાના ઉત્તમ ગુણોથી યુક્ત હોઇ, વ્યવહારિક અને ધાર્મિક શિક્ષણ પણ તેણે બાળપણામાંજ મેળવ્યું હતું. તેનામાં ઉત્તમ શ્રાવિકા અને સતી સ્ત્રીનામાં જેટલા ગુણ જોઇએ, તે બધા વિદ્યમાન હતા.

પ્રભાવતીનો બાપ ઉત્તમ શ્રાવક હોઇ, ન્યાય પૂર્વક જીવન નિર્વાહ ચલાવતો હતો, જેથી, તેના ન્યાયી ગુણો પ્રભાવતીનામાં ઉતર્યા હતા.

યથાવસરે પ્રભાવતી સાસરે આવી, સાસરાના ઘરના રીત રિવાજોથી વાકેફ થઇ. શેઠની દુકાન અને ઘર એકજ મકાનમાં હોવાથી વ્યાપારની ઘણી ખરી બાબતો પ્રભાવતી ધ્યાનમાં લેવા લાગી. એટલે કે-બાપ દિકરાને થતી વાતચીત તરફ તે હંમેશ બારીકાઇથી લક્ષ દેતી.

હેલોક શેઠ કોઇને છેતરતો હોય, ને તેમાં પુત્રની મદદની જરૂર :પડે ત્યારે તે, પુત્રને જુદા જુદા બનાવટી નામોથી સંબોધતો. તેણે હાલકનાં પંચપોકર, ત્રિપોકાર, હૃદયપોકાર વિગેરે નામ લોકોને છેતરવા માટે રાખ્યાં હતાં.

શેઠજીની એ ખટપટ ધીરે ધીરે ગામના લોકો જાણી ગયા. અને તેમના વ્યાપારમાં કમી દેખાવા લાગી, જેથી હેલોક અને હાલક દિલગીર થયા.

પિતા-પુત્રની ઉદાસી ચતુર પ્રભાવતી કળી ગઇ, તેણે એક વખત અવસર મળતાં પોતાના પતિને પૂછયું-નાથ, આપને પિતાજી જુદાજુદા નામથી કેમ બોલાવે છે? હાલકે કહ્યું—વ્હાલી! એ હમારા વ્યાપારની સંકેત ધ્વનિ છે.

પ્રભાવતીએ વ્યાપારની હકીકત જાણવા ફરી પૂછયું,-તો વહાલા! હાલ કેટલાક દિવસથી આપ બંન્ને ઉદાસ જેવા કેમ લાગો છો! નથી તમે પહેલાંની માફક બોલતા! કે નથી પુરૂં જમતા! શું મારો કંઇ દોષ થયો છે તે મારી સાથે હસીને વાત કરતા નથી!

હાલકે દિલગીર થઇ કહ્યું,-પ્રિયે! એવું કાંઇ છેજ નહિ. પણ પહેલાં આપણો વ્યાપાર વધુ ઉન્નતિ પર હતો, ત્યારે હમે આનંદિત રહેતા, પણ હવે હમારા ખટપટ લોકો જાણી ગયા છે, જેથી આપણા વ્યાપારમાં ભંગાણુ પડયું છે, તેથીજ જીવ ઉદાસ રહે છે.

પ્રભાવતીએ કહ્યું,-નાથ! તો તેનું કારણ શોધી, તેનું નિવારણ કરવું જોઇએ, કે જેથી જીવને ઉચાટ થાય નહિ.

હાલક બોલ્યો, પ્રિયા? પણ અમારી ઓછા વત્તા તોલની વાત હવે લોકો જાણી ગયા છે, જેથી હવે લોકો હમારા પર વિશ્વાસ કરતા નથી, તો પછી કારણ શોધવાનું કયાં રહ્યું!

પ્રભાવતી બોલી,-વહાલા! આપ એવો ધૂતવાનો ધંધો ત્યાગ કરો! કેમકે અન્યાયથી આ લોકમાં ઇજ્જતનો નાશ છે. અન્યાયનું ધન, ન તો ઉપયોગમાં આવે છે. યા ન તો ધર્મ કાર્યમાં કામ લાગે છે, માટે ન્યાયથીજ વ્યાપાર કરી ધન ઉપાર્જન કરવું જોઇએ!

૭ મહિના સુધી દગો–ફટકો ત્યાગ કરી, સત્યતા પૂર્વક વ્યાપાર કરો !

જો આપને લાભ ન જણાય તો પછી તમારી અસલ રીત ધારણ કરજો ! પણ હું નથી ધારતી કે આપને સત્યમય વ્યાપારમાં લાભ ન થાય !

શેઠજીએ પ્રભાવતીના વચનને માન્ય કરી, પોતાની રીતભાત, વ્યાપારાદિમાં ન્યાયનો પ્રવેશ કરાવ્યો. ખોટાં માપ ખોટાં ત્રાજવાં, ઘરના એક ખુણામાં સંતાડી દીધાં. અને ખરાં બનાવી વ્યાપાર કરવા લાગ્યા.

જે લોકો શેઠની દુકાન છોડી ચાલ્યા ગયા હતા, જે લોકો તેમના અન્યાય સામે ફિટકાર કરતા હતા, જે જરા પણ તેમની દુકાને જતા નહોતા, તેજ લોકોને શેઠની સત્યતાએ શેઠને ત્યાં બોલાવ્યા. લોકો હર્ષ ભેર તેમનો માલ લેવા લાગ્યા. ટુંકમાં શેઠનો વ્યાપાર હતો તેથી બમણો થયો, બજારમાં તેમની વાહવાહ બોલાવા લાગી, તેમના નામ પર લાખોની હુંડીઓ દેશાવરમાં સીકરાવા લાગી.

૭ મહિના પછી શેઠે હિસાબ કર્યો, તો તેમણે પાંચ શેર સોનું ખરીદી શકાય તેટલી રકમ પેદા કરી. શેઠે આ બધો પ્રતાપ પ્રભાવતીનો માની, તે રકમનું સોનું ખરીદી પ્રભાવતીને આપ્યું, ને તેની ઘણી પ્રશંસા કરી.

પ્રભાવતીએ કહ્યું–પિતાજી ! આ સોનું આપણા સત્યમય વ્યાપારનું છે, માટે તેની પરીક્ષા કરો !

શેઠજીએ સોનાની પાંચશેરી બનાવરાવીને તેને એક ચામડામાં મઢી લીધી. ને તેના ઉપર પોતાનું નામ લખી, બજારના ચોકમાં ફેંકી દીધી. ત્રણ દિવસ તે ત્યાં પડી રહી, પણ કોઇએ તેને ઉપાડી નહિ, પછી તેણે ત્યાંથી ઉપાડી, એક મોટા તળાવમાં નાંખી, જ્યાં તેને એક મોટી માછલી ગળી ગઇ.

માછીએ નાંખેલી જાળમાં તે માછલી પકડાઇ ગઈ, અને માછીએ માછલીને ચીરવા માંડી, ચીરતાંજ તેને એક પોટલી મળી કે–જેના પર હેલોક શેઠનું નામ લખેલું હતું. શેઠનું નામ વાંચીને તરતજ માછી તે પોટલી લઇ હેલોક શેઠની દુકાન પર ગયો ને શેઠને બધી વાત જણાવી શેઠે તેને બક્ષીસ આપી પોટલી ખરીદી લીધી.

સત્યની પ્રતીત પર શેઠને ઘણોજ વિશ્વાસ બેઠો ને બનેલા આ સાચા બનાવથી તેમને ઘણોજ આનંદ થયો. પુત્રવધુના વચન પર વધુ વિશ્વાસ બેઠો અને ન્યાયમાં વધુ તત્પર રહી, ધર્મ ધ્યાન કરવા લાગ્યા.

શેઠજીની આબરૂ જગત ભરમાં ફેલાઇ ગઇ, બધા લોકો તેનું દ્રવ્ય ન્યાયી છે, એમ માની, તેમની સાથેજ લેણુ દેણુ કરવા લાગ્યા. વહાણુવાળા પણ શેઠના દ્રવ્યને વહાણુ પર પહેલું સ્થાન આપવા લાગ્યા. વળી શેઠજીના નામથી અધિક લાભ થાય છે, એમ વિચાર કરી, વહાણુ ચલાવતી વખતે હેલોક–હેલોક એમ ઉચ્ચાર કરવા લાગ્યા, જેનો અપભ્રંશ હેલોઉ–હેલઉ શબ્દ હજી પણ જુના વહાણવટીઓ ઉચ્ચારે છે.

એવી રીતે ન્યાય યુક્ત વ્યાપારથી આ લોકમાં પ્રતિષ્ઠા અને ધન બધું મેળવાય છે. માટે દરેક જણે ન્યાય યુક્ત વ્યાપાર કરી, જીવન નિર્વાહ ચલાવવો જોઇએ. કહ્યું છે, કે—

सुधीरर्थी जने यत्नं कुर्वान्न्यायपरायणः।
न्याय एवा न पायोयऽमुपाय संपदापदम् ॥

ભાવાર્થ—ન્યાયમાં તત્પર રહી, બુદ્ધિશાળી મનુષ્યે ધન ઉપાર્જન કરવા પ્રયત્ન કરવા જોઇએ ! ન્યાયજ સંપત્તિ મેળવવાનો વિઘ્ન રહિત ઉપાય છે. સજ્જન પુરૂષોએ નિર્ધન રહેવું સારૂં છે, પણ બુરાં કૃત્યોથી ધનવાન થવું સારૂં નથી. ન્યાય વૃત્તિજ આ લોકમાં સુખી કરી, પુન્યોપાર્જન કરાવી, પરલોકમાં સુખી કરે છે, માટે સમજુ મનુષ્યોએ વ્યાપારાદિમાં છળ પ્રપંચનો ત્યાગ કરી, સત્યથી વ્યાપાર–રોજગાર કરી, ધન ઉપાર્જન કરવું જોઇએ ! સત્યનોજ જય થાય છે, એ ભુલવું જોઇતું નથી. શાંતિઃ શાંતિઃ

જૈન સમાજની ઉન્નતિના ઉપાયો.

ગુજરાતના દિગંબર જૈનોમાં સંગઠન કાર્ય.

લે:–શ્રી. છોટાલાલ ઘેલાભાઈ ગાંધી–અંકલેશ્વર.

અહિંસા ધર્મ. જૈન સમાજે **અહિંસા પરમો ધર્મનો** સિદ્ધાંત સ્વીકાર્યો અને ઉન્નતિના ઉપાય તરીકે અહિંસા પ્રથમ સ્થાન ભોગવે છે. કારણ કે प्रमत्तयोगात् प्राणव्यपरोपणम् हिंसा એટલે ગ્રહસ્થીને માટે જીવન ટકાવવા સિવાયની અર્થાત્ એશ આરામ ભોગવવા મન વચન કાયાથી કાર્ય કરવામાં પોતાના કે બીજાના પ્રાણનું વ્યપરોપણ થાય તે હિંસા મનાઇ છે. રત્નકંડ શ્રાવકાચાર પણ संकल्पात कृत० ના શ્લોકથી કહે છે કે જીવનની જરૂરીયાત સિવાય સંકલ્પથી જીવને હાનિ કરે તે હિંસા. એટલે જીવન ટકાવવા પુરતુંજ કાર્ય ગૃહસ્થીને માટે અહિંસામય ગણાય પણ એશ આરામ માટે પૈસા સંગ્રહી રાખવા કે માન બડાઇ માટે, આદિ પ્રમત્તયોગથી સંઘરો કરાય નહિં. અને કરેલો હોય તો તે બીજાના હકનો હોવાથી બીજાના ભલા માટે વાપરવો જોઇએ, ત્યાગ ધર્મ સેવવો જોઇએ. ગૃહસ્થી જીવન માટે હિંસા કરે તે ધર્મધ્યાનથી ફના કરે. એમાંથી એ તાત્પર્ય નીકળે છે કે સમાજમાં તમામને જીવવાનો હક છે. તમામ મનુષ્ય એક સરખી ઉન્નતિએ પહોંચે અને વધુ ઉન્નતિએ પહોંચેલ મનુષ્યની ફરજ છે કે કે ત્યાગ ધર્મ આદરી, દાન કરવાની પ્રથા સેવે. એટલે સમાજની ઉન્નતિનો બીજો ઉપાય દાન-ધર્મ છે.

દાન ધર્મ. જે જે ઉન્નતિના ઉપાય રૂપે સંસ્થા ચાલતી હોય તેને દાન આપી નભાવવી એ આવશ્યક ઠરે છે. ગૃહસ્થી ન હોય તેવા વિધુર કે વિધવા ત્યાગધર્મને અંગીકાર કરે. સાધુ આર્જીકા થાય અગર સમાજના ભલા માટે કામ કરે. આ જમાનામાં સાધુ આર્જીકા બની તેના આચાર વિચાર નહિં પાળી શકાય એવા લાગે તો એ બ્રહ્મચારીથી લઇ એલક સુધીની પ્રતિમાઓ પૈકી એક પ્રમાણેનું વર્તન જરૂર રાખી શકે. અને તેટલે દરજ્જે નહિં પહોંચી શકે તો ઉદાસીન આશ્રમો એવા સ્ત્રી અને પુરૂષોને માટે જુદા હોઈ શકે છે. વિધવા કે વિધુર ગૃહસ્થીના ઘરમાં રહે અને તે ઘરમાં સગા સંબંધીને વિષયસુખ ભોગવતાં અનુભવે છતાં તે વિધવા કે વિધુર પોતાના મનને સંયમમાં રાખી શકે એ ઘણે ભાગે અસંભવિત નથી લાગતું? માણસને કામેચ્છા થાય તેથીએ પાપ થાય છે, તો પછી વિધવા કે વિધુર ત્યાગી નહિં બને તેઓને માટે ઉદાસીન આશ્રમો સ્થપાય તોજ સમાજમાંથી સડો અટકે અને ઉદાસીન આશ્રમો સમાજને ઉન્નતિના માર્ગ તરફ વધુ લઇ જાય.

આશ્રમોની જરૂર. સમાજની ઉન્નતિની શરૂઆત બાળકોથી થવી જોઇએ. વારસાનો હક છોકરાને પ્રથમ હોવાથી છોકરાને માટે કેળવણી આદીની વ્યવસ્થા સૌ કોઇ સ્વાર્થી કરે છે, પરંતુ કન્યા પારકું ધન માની છોકરા કરતાં કન્યાને ઘણા માબાપો નીચી દ્રષ્ટીએ જુએ છે અને શહેરીઓ કન્યાને કેળવવા તરફ કદાચ ધ્યાન આપે પણ ગામડાના માબાપોને ગામમાં ખાસ કન્યાશાળા નહિં હોય એટલે "ઘરનો પૂંજો કાઢવા" કે "નાના ભાઇ બ્હેનને રમાડવા" ના

બ્હાના હેઠળ કન્યાને કેળવવાને માબાપ ઇચ્છા ધરાવતા નથી અને પરિણામે એવું બને છે કે સુધરેલા વિચારના વરને યોગ્ય કન્યા મળતી નથી અને શહેરી છોકરીને યોગ્ય વર મળતો નથી. સંસાર બગડે છે, એટલે આ રેલ્વે અને તારના જમાનામાં આખા ગુજરાતમાં ગમે તે ગામે ૨૪ કલાકમાં પહોંચી શકાય કે વાતો કરી શકાય છે તો ગામડામાં રહેનાર સમાજે પણ પોતાના સંતાન એક સરખી રીતે કેળવાય તે માટે ગોઠવણુ સ્વીકારવી જોઇએ. છોકરા માટે કોલેજ, કલા ભૂવન આદિમાં ભણાવવા તેઓ ગોઠવણુ કરે છે અને બાળકો માટે પોતાને ગામે અનુકુળતા નહીં હોય એટલે શ્રાવિકાશ્રમ જેવી સંસ્થામાં બાળિકાઓ મોકલવી એ માબાપની શું ફરજ નથી? જે પ્રજાને પોતાની ઉન્નતિ કરવી હોય તેણે પહેલાં માતાને જ્ઞાન આપવું જોઇએ એમ અનુભવે જોયું છે–નેપોલીઅન કહે છે. એટલે સમાજે પ્રથમ સ્ત્રીઓને કેળવવાનું કામ હાથ ધરવું જોઇએ છે. શહેરોમાં તો મોટી સ્ત્રીઓને કેળવવા માટે સંસ્થાઓ ખોલાયલી હોય છે, અને ગામડાવાળા માટે શ્રાવિકાશ્રમો તૈયાર હોય છે કે ખોલવા જોઇએ પરંતુ આપણા ભાઇઓ સ્વાર્થી દૃષ્ટિથી રસોડામાંજ સ્ત્રીઓને રાખે છે અગર તો સંતાન ઉત્પન્ન કરનાર મશીન તરીકેનીજ ગણના કરે છે, પછી ફળ કેવાં આવે છે તેની દરકાર કરે નહિં અને સમાજ અધોગતિએ જાય છે, માટે આશ્રમોમાં કન્યા, સધવા કે વિધવાને મોકલવા જોઇએ, એ વાત સમજાવવા ગામડામાં લગભગ પંદર દિવસ આ સેવક ફર્યો હતો અને તેનો હેવાલ "દિગંબર જૈન"માં આવી ગયો છે.

જૈન સમાજમાં ભેદો. અહિંસા ધર્મ પાળનાર જૈન સમાજ સાચી રીતે અહિંસા ધર્મ સેવતો હોત તો તેમાં ભેદ અને ભેદના ભેદ નહિ હોત. આજે તો એ જૈન સમાજમાં દિગંબર, શ્વેતાંબર એવા મૂળ બે પંથ પડયા છે. એ પંથમાંએ વીસ પંથી, તેરા પંથી, તારણ પંથી, એવા દિગંબરમાં ભેદ થયા છે. શ્વેતાંબરમાં મૂર્તિપૂજક અને સ્થાનકવાસી એવા ભેદ થયા છે. વળી એ પેટા પંથોમાં ગુજરાતમાં હુમડ, મેવાડા, નરસિંહપુરા, રાયકવાળ આદિ અનેક કોમો દિગંબર જૈનમાં અને શ્વેતામ્બર ભાઇઓમાં ઓશવાળ, પોરવાડ, શ્રીમાળી આદિ અનેક કોમો છે. તેમાંએ વળી કન્યાની આપ લે માટે એક કોમમાં એ અનેક ભેદો !!! આ બધા ભેદો સાબીત કરે છે કે સાચો અહિંસા ધર્મ જૈન સમાજ પાળતો નથી–સમજતો નથી.

જે જમાનામાં મહાત્મા ગાંધી જેવા અહિંસા ધર્મ વિશ્વ ધર્મ બનાવવા મથે છે તે જમાનામાં અહિંસા ધર્મનો ધ્વજ લઇને ફરનાર માંહો માંહે ભેદ રાખે! અરે તીર્થના ઝઘડાઓ માટે કોર્ટે ચઢે? અરે એકજ કોમની પંચમાં પણ લડવાઢ કરે, અનેક તડ પાડે અને નજીવી બાબતો પર મતામતી કરી દ્વેષ ઉત્પન્ન કરે? બેટી વ્યવહાર ખરો પણ રોટી વ્યવહાર બંધ? અરે કેટલીક પંચના તડમાં કન્યાની આપલે ચાલુ રાખી પછી વહુ દીકરીને પીએર સાસરામાં મોકલવાની મના કરવામાં આવે અને તે નિર્મલ હૃદયની બ્હેનો આંખમાંથી આંસુ વહેવાડે તોએ કઠોર હૃદયના વડીલો અહિંસાનો ઝુંડો પકડનાર કહેવડાવે છતાં જરાએ મીટ મુકે નહિં. આવી સ્થિતિ ગુજરાતના દિ. જૈન સમાજને શું નીચું નથી જોવડાવતી?

ગમે એટલા પાણી ગાળીએ કે નાના જીવને બચાવવા પ્રયાસ કરીએ પણ પંચેંદ્રી સંજ્ઞી જીવની હિંસા તરફ ધ્યાન નહીં આપીએ તો આપણા જૈનપણાને મહાન કલંક નથી?

સંપ જ્યાં જંપ. સંપ ત્યાં જંપ એમ સૌ કોઇ વાતો કરે છે, પણ અમલમાં મુકતાં અચકાય છે. ખરી રીતે જૈન સમાજની દરેક વ્યકિતએ પોતાના ઘરથીજ શરૂઆત કરવી

જોઇએ. પોતાના પંચના તડાં દૂર કરવા ભોગ આપવો પડે તો તે આપવો. પોતાનીજ કોમ ગુજરાતના ગમે તે ખુણામાં હોય તેની સાથે સંગઠન કરે પછી જુદી જુદી કોમોનું સંમેલન (કોન્ફરન્સ) કરી ભેગી મળે. જુના જમાનાની કોન્ફરન્સો ગમે તે વ્યકિત થઇ ભલામણના ઠરાવ કરી ઉઠી જતી, એટલે આવા વાચાળ મંડળથી કંઇ થતું નહીં. વૃદ્ધનો વિરોધ થતો અને સુધારા અટકતા. હવે જમાનો કાર્યનો આવ્યો છે. દરેક પંચમાં સમજુ હોય છે. કેટલાક કદાચ અણસમજુ હોય તેને પણ સમજાવવાનો પ્રયાસ કરવો જોઇએ છે. માર્ગ લાંબો છે તોએ પ્રયાશથી સૌ સારૂં ફળ આવે છે. દરેક પંચના વસ્તિના પ્રમાણમાં સેંકડે બે થી ચાર ટકા જેટલા પ્રતિનીધી માંગી તે પ્રતિનીધિઓ એકત્ર મલે અને કામ કરનાર મંડળ સ્થાપે તેવા મંડળમાં દરેક પંચને અનુકુળ થાય તેવા પંચના બંધારણનો ખરડો રજુ થાય. લગ્નના રીત રીવાજની સમાનતા માટે ખરડો રજુ થાય, જુદી જુદી પંચ વચ્ચેની તકરારોનો નીવેડો કરવા જુદા જુદા પંચમાં સમાધાનીથી એક સંપી કરવા સમિતિ નીમવા આદિના ભલામણ રૂપે ઠરાવ થાય. તે ઠરાવો દરેક પંચ વિચારે, પોતાથી બને તેટલે દરેકજે બીજાના લાભ ખાતર મત મતાંતર છોડે અને તે ઠરાવ અંગીકાર કરે અગર તે ઠરાવમાં ન છુટકે સુધારો વધારો પડે તે સૂચવી જ્યારે બંધારણ પૂર્વકનું મંડળ મળે ત્યારે તેમાં તે રજુ કરી સંપ ત્યાં જંપનું ધ્યેય સાચવી એકત્ર થવાનીજ ભાવના પ્રેરાય તે માટે જૈન સમાજનો દરેક વ્યતિ કામ કરી શકે છે.

પ્રચાર કાર્ય. દાખલા તરીકે દિગંબરમાં વિશા મેવાડા અંકલેશ્વર અને સોજીત્રા વગાના જુદા હતા. સોજીત્રા વગામાં બાળ વિવાહની રીત ચાલે છે, કન્યા કેળવણી કમ અપાય છે પણાં તદન નજીવા છતાંએ અંકલેશ્વરના મેવાડા તેમની સાથે ભળ્યા. હવે મેવાડા સાથે સુરત મુંબઇના વીશા હુમડ, ગુજરાતના રાયકવાળ અને કેટલાક નરસિંહપુરા ને દશા હુમડ આદિ સર્વ કોમો એકત્ર થાય તે માટે પ્રયાશ ચાલુ થયો છે. અને એ પ્રચાર કાર્યમાં સુપ્રસિદ્ધ સમાજ સેવક ભાઈ મુલચંદ કસનદાસ કાપડિયા, છગનલાલ ઉત્તમચંદ સરૈયા, નાગરદાસ નરોતમદાસ, મોતીચંદ તાસવાળા આદિ મને સાથ આપી રહ્યા છે.

વીશા હુમડ, રાયકવાળ અને કેટલાક નરસિંહપુરા ભાઇઓ તો પરસ્પર કન્યાની આપ લે કરવા તૈયારી બતાવી અંકલેશ્વર આવ્યા. અંકલેશ્વરના પંચે સંમતિ આપી. વળી આમોદ, સોજીત્રા, વસો, બોચાસણ, રૂદેલ, બોરસદ, કરમસદ, બાકરોળ, વડોદરા આદિ સ્થાને પંચ મેળવી તેમની સંમતિ પણ મેળવઇ એટલે મેવાડાના મોટા ભાગના ગામની સંમતિ મેળવઇ. પછી અમદાવાદ, કલોલ અને ઝહેરમાં જઇ નરસીંહપુરા ભાઇઓના પંચ મેળવાયા. એમાં અમુક કારણસર ભારે રસાકશીવાલાં તડ છે છતાં સંમતિ આપી. કલોલ ગામે તો યુવકોએ તડ તુટે નહિં ત્યાંસુધી કોઇપણ તડમાં જમવા જવું નહિં એટલો બધો સત્યાગ્રહ ચાલુ કર્યો છે, અને તે ગામે પણ બીજા ગામોની માફક બંનેતડના પંચો એકત્ર મળી ઠરાવ કર્યો છે. નમુના તરીકે એ ઠરાવની નકલ રજુ કરૂં તોએ અસ્થાને નહિં ગણાય-"શ્રી કલોલ દિગંબર જૈન નરસિંહપુરા પંચ સમસ્ત આજરોજ (તા. ૧-૧૧-૩૩) ઠરાવ કરે છે કે ગુજરાતના દિગંબર જૈનોમાં ઐકયતા સ્થાપવા તથા સંગઠન કરવા તથા આર્થિક ધાર્મિક તથા સામાજીક ઉન્નતિ કરવા સારૂ શ્રી ગુજરાત દિગંબર જૈન મંડળ સ્થાપવા તથા પેટા જ્ઞાતિઓમાં રોટી બેટી વ્યવહાર કરવા માટે સુરત મુકામે ગુજરાત દિ○ જૈન કોન્ફરન્સ મેળવવા જે પ્રયત્ન થઇ રહ્યો છે, તેને અમો અનુમોદન આપીએ છીએ અને તે વખતે વિચા-

રણા કરવા સારૂ નીચેના પ્રતિનીધીઓની પસંદગી કરી મોકલવા અમે સર્વે સંમત છીએ. (પંચના ઓજ્ભાદાર ૨૧ પ્રતિનીધીના નામો આપ્યા છે) ઉપર પ્રમાણે પંચ તરફથી પ્રતિનીધીઓ સર્વાનુમતે પસંદ કરવામાં આવ્યા છે, જાહેર, નરસીંહપુર ગામે તો ખૂબ ઝેહેર વરસે છે. મંદીર માટે લડયા, મંદીરમાં મારામારી કરી પૂજા થતી પરસ્પર અટકાવી એવા અધમ કર્તવ્ય ધર્મ-(કે અધર્મ ?) મતમતાંતર સાચવવા કરનાર બે તડો પણ ૨૦ વર્ષ પછી સભામાં તો સાથે બેઠા અને ઉપર મુજબ ઠરાવ કરે છે. આશા છે કે કોન્ફરન્સ મળે તે પહેલાં હજી બાકી રહેલ પોત પોતાના મતમતાંતર છોડી દઇ સાચા જૈન તરીકે તેઓ પોતાને જાહેર કરશે. જો તેમ નહીં કરે તો બન્ને પક્ષને નામોશી છે, એમના જાતિભાઇ કલોલવાસીઓ પર વધુ આધાર છે અને તેઓ છેવટે બન્ને પક્ષને ઠેકાણે આણશેજ.

સંગઠનની આશા. આ ઉપરથી સમજાશે કે ગુજરાતની પાંચ કોમો પૈકી ચાર કોમ રાંયકવાલ, વીશાહુમ્મડ, વીશા મેવાડા અને નરસિંહપુરા ભાઇઓ તો એક મતના થયા છે. હવે દશા હુમડ ભાઇઓ બાકી છે. ને તે માટે પ્રાંતિજ જવાનો પ્રોગ્રામ છે ને તે પછી છડર અને દાહોદ પણ જવાના છિયે ને એક દિવસ મુંબાઈ જવા પણ વિચાર છે. એટલે સુરતમાં પોષ માસમાં સાચા પ્રતિનીધીત્વવાળું સંમેલન (ગુજરાત દિ૦ જૈન કોન્ફરંસ) થશે, એવો પૂર્ણ સંભવ છે. આવી રીતે દરેક પ્રાંત વાર સંમેલન થાય, અમલી ઠરાવ થાય અને એક રૂપ બને તથા શ્વેતાંબર જૈનો સાથેના ઝઘડા પણ માંહોમાંહે પતાવી દઇ બધા જૈનો જૈન ધર્મને વિશ્વ વ્યાપી બનાવવાને સાથે મળી પ્રચાર કાર્ય કરે અને માંહોમાંહે એક્તા સ્થાપિત કરે તોજ જૈન ધર્મની ઉન્નતિ કરી શકાય.

જ્યારે જૈનો પોતાના સમાજના સડા ઉપરના

જૈન સમાજના શ્રીમાનોનું કર્ત્તવ્ય!

(લે:-મોહનલાલ મથુરાદાસ શાહ-કંપાલા.)

સમાજને સુરક્ષિત રાખવો, તે શ્રીમાનોનું ખાસ કર્તવ્ય છે. આ વાકય એક સોનેરી વાકય માફક દરેક જણને કબુલ કરવું પડશે.

વર્તમાન કાળમાં જૈન સમાજ એવી અસ્તવ્યસ્ત સ્થિતિમાં મુકાઇ ગયો છે, કે તેને કોઇ નિયત ગતિપર મુકવાની ખાસ જરૂર છે. જૈન સમાજને જમાના અનુસાર સુધારવાની જરૂર છે જે માટે આપણા શ્રીમાનોનું શું કર્ત્તવ્ય છે, તેજ આપણે આ સ્થળે વિચારવાનું છે. એટલે બીજાઓના કર્ત્તવ્યનો વિચાર કરવો છોડી દઇ, આપણે શ્રીમાનોના કર્ત્તવ્ય ઉપરજ વિચાર કરીએ.

જૈન સમાજને સુધારવાના ઉપાયોમાં આપણને નીચે મુજબ ચાર ભાગ પાડવા પડશે.-

શાસ્ત્ર સંગઠન; જ્ઞાતિ સંગઠન, સંસ્થા સંગઠન, અને ભાષા સંગઠન, આ ચાર બાબતોનો વિચાર કરી, તેને સુધારવાની વર્તમાન કાળે જૈન સમાજને જરૂર છે. અને તેનો દ્રઢ અમલ કરવા માટે જૈન સમાજના શ્રીમાનોએ લક્ષ આપવાની જરૂર છે.

હવે આપણા શ્રીમાનો સમાજ ઉન્નતિ કેવી રીતે કરી શકે તે વિચારીએ.

શાસ્ત્ર સંગઠન.—આ બાબત જ્ઞાનની છે, પણ તેને અંગે અનેક બાબતો વિચારવાની હોય, તેનો માટે ઘણા સારા પ્રમાણમાં દ્રવ્ય ખરચવાની આવશ્યક્તા છે.

અગર બીજા ઉપાયોથી દૂર કરશે, ત્યારે જરૂર જૈનધર્મ મહાત્મા ગાંધી જેવાની સહાયથી વિશ્વ ધર્મ બનનાર છે. અને બોલાશે—"જૈન ધર્મની જય" અહિંસા ધર્મની જય" "સાચા સમાજની જય." તથાસ્તુ.

આપણા હજારો અમુલ્ય ગ્રંથ, ઇડર નાગોર જેવા ભંડારોમાં સડે છે, સેંકડો ગ્રંથો જુની ભાષાઓમાંજ નાશ પામે છે, અનેક ગ્રંથો ભાષાંતરને અભાવે જીજ્ઞાસુના લાભમાં આવી શકતા નથી, અનેક ગ્રંથો ઉત્તેજનના અભાવે લેખકો કે-પ્રકાશકોના કબાટોમાં સડે છે, અને પુણ્યવાન પ્રકાશકો બીજી કૃતિ પ્રસિદ્ધ કરતાં અચકાય છે. જેથી જૈન ગ્રંથોનું પ્રકાશન કાર્ય બંધ પડે છે. આવા ટાઇમે જૈન સમાજના શ્રીમાનોનું કર્તવ્ય છે, કે-તેઓ પોતાનો ઉદાર હાથ જૈન ગ્રંથો છાપવા, છપાવવા, ભાષાંતર કરવા સાચવવા અને ફ્રી પ્રચાર કરવાના કામમાં લંબાવે !

જ્ઞાતિ સંગઠન—એકત્ર બળ થયા સિવાય કોઇ સમાજ ઉન્નતિને રસ્તે જઇ શકતો નથી. એ નીતિ સૂત્રને હૃદયમાં ધારણ કરી, જૈન સમાજના શ્રીમાનો જૈન સમાજ એવા એક નવિન જ્ઞાતિ તંત્રની સ્થાપના કરી, જે જે જૈન હોય તેમને એકત્ર કરી, જ્યાં રોટી વહેવાર ત્યાં બેટી વહેવાર દાખલ કરે, તો જૈન સમાજને ઉન્નત થતાં વાર લાગે નહિ.

એકજ પિતાના સંતાનો-એકજ પ્રભુનાં બાળકો-એકજ દેવની આરાધના કરનારા સેવકો, ખાવા-પીવામાં અને કન્યા લેવા દેવામાં એક બીજાથી અભડાઇ જાય, એ કયા ન્યાય શાસ્ત્રનો સિદ્ધાંત છે ! સ્વાર્થ વશ જૈન સમાજના શ્રીમાનો ઇતર સમાજથી કન્યા લાવનારા શું આ બાબતનો વિચાર નજ કરી શકે ?

જ્ઞાતિઓના સંગઠનમાં જેટલું કામ શ્રીમાનો કરી શકે, તેટલું કોઇપણ વ્યકિત કરી શકવાની નથી. શ્રીમાનો દ્રવ્યના બળથી, અનેક ઉપનાતોને પોતાના પક્ષમાં ખેંચી શકે છે, પોતાના સમાજને સમૃદ્ધ કરી શકે છે. જ્ઞાતિની વિધવાઓ અને બેકારોને રસ્તે વળગાડવાના કામમાં પોતાના દ્રવ્યનો ઉપયોગ કરી, જ્ઞાતિને સુધારાને રસ્તે લઇ શકે છે. બારમાની નાતો અને લહેણી વહેંચવી બંધ કરી, તે દ્રવ્યથી જ્ઞાતિની વિધવાઓ અને ગરીબ કુટુંબોનું પોષણ કરી શકે !

હજારો રૂપીઆ નવિન પ્રતિષ્ઠા મહોત્સવ અને મંદિર નિર્માણમાં બંધ કરી, તે દ્રવ્યથી જ્ઞાતિને સુધારાને રસ્તે લાવી શકે !

જ્યાંસુધી શ્રીમાનો પોતાના દ્રવ્યનો ઉપયોગ જ્ઞાતિ હિતાર્થે નહિ કરે, ત્યાંસુધી જ્ઞાતિ સંગઠનની આશા રાખવી અસ્થાને છે.

સંસ્થા સંગઠન— જૈન સમાજની દરેક સંસ્થાઓ, પછી તે કોન્ફરન્સ હોય કે સભા પાઠશાળા હોય કે શાળા કન્યાશાળા હોય કે શ્રવિકા શાળા કે ગ્રામ્યપંચ હોય, જ્ઞાતિ જનરલ પંચ, પણ બધાને એકજ ધુંસરી નીચે સંગઠન કરવાની જરૂર છે. જૈન સમાજના શ્રીમાનો આ કામ ઉપાડી લઇ, પોતાના દ્રવ્યનો ઉપયોગ કરતી વખતે અને સખાવતો કરતી વખતે જરૂર આ બાબત પર વિચાર કરે, તો જૈન સમાજ એક સમૃદ્ધશાળી સમાજ બની શકે.

જૈન સમાજના શ્રીમાનો આ બાબત જરૂર વિચારે.

ભાષા સંગઠનઃ—શ્રી જિનેંદ્રદેવ પ્રાણી માત્રને ઉપદેશ કરવા પોતાની ભાષા અર્ધમાગધી વાપરતા, તેવીજ રીતે ત્યાર પછીના કાળમાં આપણા આચાર્યોએ જૈન સૂત્રો સંસ્કૃત ભાષામાં સંગ્રહિત કર્યાં, તેનું ખરૂં કારણ ભાષા સંગઠનથી જૈન સમાજને એકજ ઝંડા નીચે એકત્ર કરવાનું હતું, એ આપણે ભુલવું જોઇતું નથી. જૈન શ્રીમાનોએ સમાજને એકત્ર કરવાના કામમાં હિંદી ભાષાને પોતાની ખાસ ભાષા બનાવવાની જરૂર છે. રાષ્ટ્રીય મહાસભા હાલ હિંદી રાષ્ટ્ર ભાષા કરવા આંદોલન કરી રહી છે, તેવા ટાઇમે જૈન શ્રીમાનોને હિંદી ભાષાનો પ્રચાર જૈન સમાજને ઘેર ઘેર કરવાની જરૂર છે. ભાષા સંગઠનમાં જૈનશાળા, પાઠશાળા, કોલેજ, હાઇસ્કુલ જેવા સંસ્થાઓ ખોલવાનું પણ ભુલવું જોઇતું નથી.

જૈન સમાજના શ્રીમાનો, પોતાની લક્ષ્મીનો ઉપયોગ, ઉપરનાં કાર્યોમાં કરવા કમર કસે તો હાલજ જૈન સમાજ ઉન્નત થાય.

જ્યાં સુધી જૈન સમાજના શ્રીમાનો સામાજીક સુધારાની સાથે, ધાર્મિક સુધારામાં પણ ભાગ નહિ લે, ત્યાં સુધી જૈન સમાજની ઉન્નતિ ન ભૂતો ન ભવિષ્યતિ માની લેવાની છે.

કહ્યું છે, કેઃ—

કર્તવ્ય છે શ્રીમાનકા, આજે જગત ઉદ્ધારકા,
કર્ત્તવ્ય છે શ્રીમાનકા, આજે ધર્મ સંભાળના;
જ્ઞાતિતણા ઉદ્ધારકા, કર્ત્તવ્ય છે આજે ખરે,
શ્રીમાન જે જૈનો તણા, વાતોજ માહરી સાંભળે.

અંતે હું મારા સર્વે શ્રીમાન બંધુઓને વિનંતી કરૂં છું કેઃ—

પોતાની બધી સખાવતો હવેથી જૈન સમાજની પુનઃરચનાના કામમાં અને જૈન સમાજના ઉદ્ધારના કામમાં કરે!

નવિન મંદિરો અને મોટા રથોત્સવોની હાલ સમાજને જરૂર નથી. સોનાનાં ઉપકરણો અને સોના રૂપાની પ્રતિમાઓની હાલનાં જૈન મંદિરોમાં આવશ્યક્તા નથી, પણ જૈન સમાજની વિધવાઓ અને ગરીબ-બેકાર માણસોને રસ્તે વળગાડવાની જરૂર છે. શાંતિઃ શાંતિઃ

મૂર્તિ.
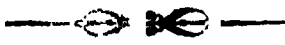
રાગ ભૈરવી—તાલ ત્રીતાલ.

(લેઃ—અંધકવિઃ કાંતીલાલ વિ. શાહ—મુંબાઇ.)

મમ હૃદયમાં વ્યકતી વસી રહી,
નિહાળું તોયે તે નજરે ન પડતી;
ઘડીમાં હસાવતી ઘડીમાં રમાડતી,
ઘડી પળમાં તે હેત કરતી;
ઘડીમાં મૂર્તિ મુજને રડાવતી—૧.
અદૃશ્ય વ્યકતી ઝબકારા કરતી,
ઘડી ઘડીમાં તે ચક્કર ફરતી,
મનહર મીઠી વાણી તે કરતી—૨.
મુજમાં વસી રહી જગમાં પ્રસરી રહી,
નામ મોટું તેહનું ધરાવી રહી,
સૌને એ તારૂણી મોહબાણુ મારી રહી—૩.

સમાજમાં પંચનું કર્તવ્ય.

લેઃ—શ્રી. છોટાલાલ ઘે. ગાંધી—અંકલેશ્વર.

नमः श्री वर्द्धमानाय निर्धूतकलिलात्मने।
सालेोकानां त्रिलोकानाम् यद्विद्या दर्पणायते॥

અહીં કર્મ મલરહિત શ્રી મહાવીર સ્વામીને મંગળાચરણમાં નમસ્કાર સૂચવાય છે, પણ એ શ્લોક એવું પણ સૂચવે છે કે (પેટમાં) મેલ રાખ્યા વગરના (વર્દ્ધમાન) પ્રગતિમાન આત્માને નમસ્કાર હો, એની વિદ્યા અલોક સાથે ત્રણ લોકમાં દર્પણની માફક ઝળકે—એ કેવળજ્ઞાની થશે—મોક્ષે જશે. આપણા સમાજના હાલના પંચ પ્રગતિમાન થતા નથી એટલે દરજ્જે મોક્ષે જતાં અટકાય છે. હાલના પંચની સ્થિતિ જોશો તો માલમ પડશે કે ફક્ત જમણવારની પરવાનગી આપનાર કે કન્યા બાબત અમુક વાંધા જોનાર એ મંડળ છે. પંચ મળ્યું હોય તેમાં ૯૯ માણસની હા હોય ને તે બાબત એક માણસ મોટા ઘાંટાથી વિરોધ કરે તો પંચનું તે કામ ઉડી જાય અને એ રીતે ગમે તેવા સારા કામ એમાં મંજુર થઇ શકતાં નથી. પંચ ત્યાં પરમેશ્વરને બદલે બળીયાના બે ભાગ એ સિદ્ધાંત પંચમાં સાબીત થાય છે. ન્યાયને બદલે આંતરિક વેર કેળવાય છે, અર્થાત્ પંચનું ખરૂં કર્તવ્ય લોપાઇ ગયું છે.

પશુ પક્ષીના સમાજ કુદરતી નિયમોને આધિન થઈ સમય આવે ત્યારે સંસાર ભોગવે છે, કોઇ રાત્રે વિચરે છે તો કોઇ સાંજ પડે કે તરત શાંત માળામાં ભરાય છે કે અમુક સ્થાનકે બેસી જાય છે. મનુષ્ય બુદ્ધિ અને વિદ્યામાં આગળ હોવાથી એક સરખું વર્તન રાખવા, માંહો માંહે રાગદ્વેષ ન વધે તે માટે નિયમ ઘડવા એ વિગેરે શુભ હેતુથી બંધારણ બાંધી તેને ધર્મનું નામ આપી સમાજ રૂપે વર્ત્યાં. એ સમાજમાં જર જમીન અને જોરૂ એ ત્રણ તકરાર ઘણે ભાગે આવે એટલે જર અને જમીન માટે

વારસા હકના અનુક્રમ નક્કી થયા અને જોરૂ (સ્ત્રી) માટે પણ નિયમ ઘડાયા કે એક ગોત્રમાં લગ્ન નહીં થાય. ઘણી સ્ત્રી લગભગ ૨૦ થી ૩૦ વર્ષ દરમ્યાનમાં સુવાવડ કે ક્ષય રોગથી મરે છે (જુઓ વસ્તિ પત્રક) એટલે પુરૂષ બીજી સ્ત્રી કરી શકે છે, પણ સ્ત્રી ફરીથી લગન કરી શકતી નથી. અને સ્ત્રી પુરૂષનું જોડું એક વખત વચનથી બંધાયા પછી ઉચ્ચ આશયના સમાજમાં દંપતિ તો કદી છુટા છેડા નહિં કરે અને આનંદ પૂર્વક જીવન ગાળે છે.

પંચનું પ્રથમ કર્તવ્ય તો વસ્તિ ગણત્રીનું છે. વસ્તિની ગણત્રી કરી પોતાની પંચમાં કેટલા કુંઆરા છોકરા પાંચ વરસની અંદરના. ૫ થી ૧૦ અને ૧૦ થી ૧૫–૧૫ થી ૨૦ અને ૨૦ થી ૨૫ તથા ૨૫ થી ૩૫ એમ સંખ્યા કાઢવી જોઇએ. તેમજ છોકરી કેટલી કુંવારી છે તે સંખ્યા કાઢવી જોઇએ. પાંચ વરસ સુધીના છોકરાની સંખ્યા બાદ કરવી જોઇએ કારણ તેટલો આંતરો તો વર કન્યા વચ્ચે હોવોજ જોઇએ. ૫ થી ૨૫ વર્ષની ઉમર સુધીના છોકરાની સંખ્યા જેટલીજ છોકરી હોય તો તો ઠીક નહિં તો અર્થાત્ જો છોકરી કમ હોય તો તો જરૂર પંચે સૌથી પહેલો એક ઠરાવ કરવો જોઇએ કે દશ વર્ષની અંદરની કન્યાનો વિવાહ (સગપણ) કરવું નહિ અને જેટલા છોકરાની સંખ્યા છોકરીની સંખ્યા કરતાં વધે તેટલા છોકરાની સંખ્યા પ્રમાણે વધુ વર્ષનો આંતરો કન્યા વચ્ચે રખાય તોજ પંચમાં આગળ ઉપર ફાયદો થાય. (આવો પ્રસંગ અંકલેશ્વરમાં ૩૦ વર્ષ પર હતો અને સ્વર્ગસ્થ શેઠ માણેકચંદ હીરાચંદે એ ઠરાવ સૂચવ્યો હતો અને તેથી મોટી ઉમરના લાયક છોકરા મંડાયા હતા અને આજે અંકલેશ્વરમાં કન્યાનું પ્રમાણ પણ ઠીક ઠીક મળી આવ્યું છે) ૨૫ કે ૩૦ વર્ષની ઉમરના અવિવાહિત કે વિધુર માણસોને બહારથી કન્યા લાવવા પ્રોત્સાહન આપવું જોઇએ જો તેમ નહિં હોય તો—અને એ સાચા બ્રહ્મચારી ન બને તો–જરૂર ન્યાતમાં સડો પેસે—એની સાથેજ ત્યાગ ધર્મ આગળ વધારવા–સમાજની ઉન્નતિને ખાતર વિધવાઓને આશ્રમમાં મોકલી આપવી એ બહુ જરૂરનું છે. શ્રીમગનબ્હેન, કંકુબ્હેન, લલીતાબ્હેન, પ્રભાવતિબ્હેન આદી નાનપણમાં વિધવા થયેલ બ્હેનોએ આશ્રમ ચલાવ્યાં એઓએ હિન્દુસ્તાનમાં નવ આશ્રમો અને અનેક પાઠશાળાઓ માર્ફત સ્ત્રી ઉન્નતિના પગલાં લીધાં છે, તે મોજુદ છે. અને એવી ઉન્નતિ વગર સમાજ કદિ ઉન્નતિપર આવશે નહીં.

આપણા સમાજમાં સમાન આચરણ અગર ઉદ્યોગ અગર તો સહ આગમન આદિ કારણોને લઇને પેટા સમાજ પડયા ને પેટા સમાજે નિયમો ઘડી પંચ રૂપે વર્તન કર્યું. અર્થાત સમાન આચરણ રાખનાર જન સમુહનું પંચ (બ્રાહ્મણ) એક ઉદ્યોગ પર જીવન નિભાવનારનું પંચ (વૈશ્ય, ક્ષત્રિ, લુહાર, સુથાર આદિ) અગર એક પ્રાંતમાંથી જે સાથે આવ્યા અને અમુક સ્થાને રહયા તે જનસમુહનું પંચ (મેવાડા) એમ જુદે જુદે કારણે પંચ બંધાયા. રેલ્વેનો જમાનો નહિં એટલે ટુંકા ક્ષેત્રના પંચ બંધાયા. તેવા એક ગામના અનેક પંચનું માહાજન ગણાય. અને તે મહાજન પ્રાચીન કાળમાં તે ગામની આર્થિક સમાજીક ધાર્મિક ને રાજકીય તમામ વ્યવસ્થા જાળવતી. કોઇ માણસ એ પંચ કે મહાજનથી વિરૂદ્ધ ચાલે તેને ગામમાં દીવો દેવતા પાણી આદિની સવળતા મળતી નહીં અને તેથી દરેક મનુષ્યને પરસ્પર પ્રેમ રાખી રહેવુંજ પડતું. આ રેલ્વે અને રાજ્યના કાયદાના જમાનામાં એ મહાજનની સત્તા રહી નહીં. દીવાસળી ઠેર ઠેર મળે અને પાણીનો બહિષ્કાર પણ થઇ શકે નહીં. મહાજનના બંધારણ ટુટયા પંચ તો નામના રહયા, ગામ પંચાયત, મ્યુનીસીપાલીટી કે લોકલ બોર્ડ મહાજનના

ઘણુાએ કર્તવ્ય હાથ કર્યાં. એટલે મહાજનને પણ હાલ કંઇ કરવાનું રહેતું નથી. કદાચ કોઇ ગામમાં મહાજન હોય તો તે પણ ફકત જમવા જમાડવાના રીત રીવાજ પુરતુંજ હોય છે. રાષ્ટ્રીય ભાવનાના જમાનામાં જમવા જમાડવાની રીતમાં અનેક ટૂટ પડી છે. બ્રાહ્મણો, વૈશ્ય, ક્ષત્રિ આદિ પરસ્પર સાથે બેસી જમવા લાગ્યા છે. અને મોટા શહેરમાં હોટેલે તો જમવાની આભડ છેટની મર્યાદા છેક છોડી છે. ત્યારે હવે મહાજન કે પંચને જમવા જમાડવામાં બહિષ્કાર કરવાની સત્તાનો ઉપયોગ કરતાં ઘણી વખત નીચું જોવું પડે એવા ઠરાવ કરવા પડે છે. અને તે ઠરાવના અમલ પણ લાંબો કાળ નીભતા નથી. ત્યારે મહાજનના બંધારણ તો નહિં ટકે. પણ જો કોઇ યુક્તિથી સમાજ ચલાવવા ઇચ્છે તો પંચના બંધારણ ચાલી શકે એમ છે. કારણ કન્યાની આપ લે પંચના હાથમાં છે. કદાચ કોઇ સ્વતંત્ર થઇ એક પંચનો સખસ બીજા પંચમાં કન્યાની આપ લે વગર બંધારણે કરે તો તેના છોકરાંને કન્યા મળશે કે કેમ તે નિશ્ચિત નથી. અને કન્યાની આપ લે માટે અમુક વાડા કરી મંડળો–પંચો બંધારણ નહિં બાંધે તો તે પંચના ગરીબ છોકરા તો જરૂર અવિવાહિત રહે કારણ કે સામાન્ય રીતે કન્યાના વડીલ હમેશ પૈસાદાર કુટુંબના લાયક છોકરાનેજ પોતાની કન્યા આપવા ઇચ્છે અને સૌ કોઇને સારા રૂપની હોશીઆર કન્યા જોઇએ એટલે કદાચ સામાન્ય કન્યા રખડે. અને પંચના બંધારણનહિં હોય તેવે પ્રસંગે જાતિ ભેદ જોયા વગર બહાર કન્યા નંખાયજ અને પરિણામે પોતાના પંચના મનુષ્યોની સામાન્ય સ્થિતિ હોય ત્યાં વધારે અવિવાહિત છોકરા રહી જાય. એનો અર્થ એ નથી કે નાની નાની પંચોએ પણ એવાં નાના સમુહ કાયમ રાખી સગપણમાં સગાઇ કરવી ? નાના પંચોમાં તો નાના ખાબોચીયાંની માફક કુસંપ ઝઘડા રૂપ એવી દુર્ગંધો છે કે ત્યાં પંચ જેવી વસ્તુ રહી નથી. ત્યારે એકજ ઉપાય છે અને તે ઉપાય એ છે કે એક પ્રાંતમાં (ભાષાવાર) સમાન વર્તનવાળા યા તો સમાન ધર્મવાળા પંચો એકમેક સાથે બંધારણથી જોડાય. એવા જોડાણ માટે સામાન્ય કોન્ફરન્સ મળે અને ઠરાવ કરે તેથી કામ નહિં ચાલે. પ્રથમ તો દરેક પચે પોતાના બંધારણ તાજા કરવા જોઇએ. અને બંધારણવાળા પંચો પ્રતિનીધિ મોકલે તેવા પ્રતિનીધીઓ મળી તે કોમનું પ્રાંતિક પંચ યા મંડળ બને, તેનું બંધારણ પાકું થાય અને તેની કમીટી નિયમિત કામ કરે.

ત્યારે પ્રથમ તો પંચનું બંધારણ નવેસર થવું જોઇએ. લોકલ બોર્ડ, મ્યુનીસીપાલીટી,–ગામ પંચાયતની મીટીંગોમાં અડધા કરતાં એક વધુમત જે બાબત મંજુર કરે તેનો અમલજ થાય છે, અનેક જાતના સભ્યોની ચુંટણીમાં એક મત વધુ આવે કે તે સભ્ય ચુંટાય છે. ત્યારે પંચોમાં ૯૯ મત એક બાજુ હોવા છતાં એક મત કંઇ કારણે સામો થાય કે તરત પંચ કામ કરતું બંધ થાય, અગર તડ પડે છે. હા, એટલું વિચારવા જેવું છે કે પંચના હાથમાં કંઇ રાજ-કીય સત્તા નહિં અને તેથી જનસમુહના હૃદયની ભાવનાપર ઠરાવનો અમલ રહ્યો તેથી જે ઠરાવ-ને બહુ કટોકટીની બહુ મતિ મળી હોય તે ઠરાવ અમલમાં નહિં મુકાય. પંચે તો કોઇ સાચી લઘુમતિને પણ માન આપવું પડે છે, અને તેથી પંચોમાં ઠરાવ કરતી વખતે મત ગણત્રી કરવાનો પ્રસંગ નહિં આવે એવી સમજુતી ડાહ્યા પુરૂષ કરે છતાં મત ગણત્રી કરવી પડે તો હાજર સભ્યોના ૪/૫ કે છેવટ ૩/૪ ભાગનો ટેકો હોય તેવાજ ઠરાવ મંજુર કરવા ઘટે છે. વળી હાલમાં પંચમાં શેઠાઇ માટે તકરાર થાય છે અગર તો કેટલાકને પોતાને વહિવટ કરવાનો ઉમંગ હોય છે, તેથી પણ પંચમાં ફુટ હોય છે, તો સામાન્ય રીતે બંધારણનો ખરડોજ રજુ કરવા યોગ્ય ધારૂં છું.

એ ખરડામાં દરેક ગામ પંચ પોતાને અનુકુળ સુધારા વધારા કરી શકે છે, પણ જો દરેક ગામાત જ્ઞાતિ પંચ આ કે આવા બંધારણ કબુલ રાખે અને તે ગામાત પંચની વસ્તિના પ્રમાણમાં મોટી પંચ પ્રતિનીધી મળે તે પ્રતિનીધીઓનું મોટું પંચ બને. અને તેવા મોટા પંચ પોતાના પ્રતિનીધી પ્રમાણસર મોકલી આખા પ્રાતનું પંચ કે મંડળ સ્થાપે તો તો એવા મંડળની મર્યાદા નહિં છોડવા દરેક પંચને ફરજ પડે અને વ્યવસ્થિત ચાલે.

કોઇ મોટી વસ્તિનું જ્ઞાતિ પંચ હોય તેને ભલે પ્રાંતપંચ માટે ઉણપ નહિં લાગતી હોય તોએ સંગઠનથી અનેક પ્રકારે ઉન્નતિ સંધાય છે તેથી તેવા મોટા પંચે પણ કંઇ ભોગ આપવો પડે તો તે આપીને પણ એવા સંગઠનમાં જોડાવું જોઇએ. એવા બહોળા સંગઠન રાષ્ટ્રીય ભાવના પ્રેરે છે અને અંતે સદ્વર્તન ને આચરણવાળા સંગઠનો એક રાષ્ટ્ર દીપાવશે. આ યુગના સંગઠનોનો-અયોગ્ય નીતિ આચરણવાળા સમાજનો સામનો કરી શકશે અને પોતાના સદ્ વર્તન, આચરણ-ધર્મ ટકાવી શકશે.

પંચનું બંધારણ.

૧-ગામમાં રહેતા દિગંબર જૈન લેણાવાળાઓના અને હવે પછી પંચનો અમુક કર આપી પંચની પરવાનગીથી દાખલ થનાર લેણાવાળાઓના કુંટુંબોનું......ગામનું દિગંબર જૈન પંચ સમસ્ત ગણાશે.

૨-લેણાવાળાના કુંટુંબમાં ૨૧ વર્ષની ઉમર ઉપરાંતનો લેણા દીઠ એક એવા આગેવાનોનું મંડળ એકત્ર મળે તે તે ગામનું દિગંબર જૈન પંચ ગણાશે અને તે પંચ દિ. જૈન પંચ સમસ્તનું પ્રતિનીધી ગણાશે.

૩-પંચે અત્યાર પહેલાં ઠરાવેલ અને હવે પછી ઠરાવે તે ઠરાવો મુજબ સામાજીક ધાર્મિક વર્તન રાખી સમાજની ઉન્નતિ અર્થે બંધારણ પંચ સમસ્ત જાળવશે.

૪-જેટલા લેણાવાળા હોય તેમાં સર્વને વહિવટનો પ્રસંગ મળે એ હેતુથી બે ત્રણ કે પાંચ વર્ષ માટે વિભાગ પાડી સમિતિ સ્થાપવી અને તે સમિતિને પંચ સેવા સમિતિ નામ આપવું. દાખલા તરીકે અંકલેશ્વરમાં ૩૫ લેણા પૈકી ૨૫ લેણા વાળાને ત્યાં ૨૧ ઉપરની ઉમરવાળા છે, તો પાંચ પાંચ માણસની સમીતિ નિયત કરવામાં આવી છે. અને તે પણ એવી રીતે કે ચુંટણીની જરૂર રાખી નથી પણ મકાન હોય તે અનુક્રમે ૧ લા ૬ ઠા, ૧૧મા ૧૬મા ૨૧મા મકાનવાળાનો ટુકડી એક વર્ષ માટે, બીજા વર્ષ માટે, ૨જા, ૭માં, ૧૨માં એમ દરેક છઠા મકાનવાળો દરેકમાં આવે એટલે કોઇને બોલવાનું કારણ રહેતું નથી. અમુક સેવા સમિતિ પૈકી જેના નામની પહેલી ચિઠ્ઠી ઉંચકાય તે સેવા સમિતિ પહેલે વર્ષે કામ કરે અને તેની પછીના સમિતિ બીજે વર્ષે કામ કરે (ભાદરવો મહિનો ધર્મ સાધનનો હોવાથી તે પહેલાંજ સમિતિ પોતાનો હવાલો હિસાબ બીજી સમિતિને સોંપી દે તો ભાદરવામાં સારી રીતે ધર્મ સાધન થઇ શકે તેથી) શ્રાવણ વદ ૧૪ સુધીમાં એવી સેવા સમિતિએ બીજી સેવા સમિતિને હવાલો હિસાબ તથા ચોપડાનો આપી દેવો,

૫-સેવા સમિતિના ⅔ સભ્યો સમિતિમાંથી જેને પસંદ કરે તે સમિતિનો મુખ્ય સેવક ગણાય અને પંચના રાચરચિલા-હિસાબના ચોપડા આદિ માટે તે જોખમદાર ગણાય. જો ⅔ સભ્યો એક મત નહિં થાય તો સેવા સમિતિ પૈકી કોઇને પંચ મુખ્ય સેવક ચુંટશે.

૬-પંચ સેવા સમિતિનું કર્તવ્ય નીચે પ્રમાણે-

અ પંચ સમસ્તનો હિસાબ સેવા સમિતિ રાખશે અને વર્ષ આખરે સરૈયું કાઢી રજુ કરશે.

આ પંચના ઠરાવ અમલમાં મુકાયલા જોશે અને અમલમાં નહિં મુકાય તો તેના વિરોધના કારણ દર્શાવી પંચ મેળવશે.

इ અમુક હદ (ઠરાવવામાં આવે ત્યાં) સુધી ખર્ચ કરે. વધુ માટે પંચની પરવાનગી મેળવી ખર્ચ કરે.

ई પંચ સંબંધી કામ માટે સેવા સમિતિ પંચ બોલાવે અગર બીજા કોઇ કંઇ (ઠેરવેલ રકમ) આપી પંચ મેળવાવે તો તે મેળવશે.

उ મકાન ભાડા ચિઠ્ઠી કે કોર્ટ કચેરીના પંચ તરફના કામ સેવા સમિતિ કરશે.

ऊ પંચ સમસ્તનું જે કાંઇ કામ હશે તે તેના તરફથી કરશે પણ કોઇનો વ્યવહાર બંધ કરવો કે કોઇનું નોતરૂં કાપવા કે કોઇને સજા કરવાનું કામ પંચને હસ્તક હોવાથી એ કામ સેવા સમિતિ કરી શકશે નહિં પરંતુ પંચ મેળવી નિર્ણય થાય તેનો અમલ સેવા સમિતિ કરશે.

ऋ પ્રત્યેક શ્રા. વ. ૦)) સુધીમાં આખા વર્ષનો હિસાબ તેમજ કામકાજનો હેવાલ પંચ બોલાવી તેમાં રજુ કરે અને મંજુરી મેળવે.

પણ એવું ઠરાવે છે કે જે પંચ સેવા સમિતિના ૧/૨ સભ્યો ઉપર દર્શાવેલ કે બીજા કામોમાં એક મત નહિં થાય તો તેવે પ્રસંગે પંચનો નિર્ણય માંગવો અને તેના નિર્ણય પ્રમાણે કામ કરે. સેવા સમિતિના સભ્યોમાં પંચ સંબંધીના કામકાજમાં મત ભેદ પડતાં જરૂર જણાય તો એક સભ્ય પણ પંચ બોલાવી શકશે. એ સમિતિના સર્વ સભ્યો એક મત થયા હોય તે કામ જરૂર કરે અને તે કામનો વિરોધ ત્રણ માસ પર્યંત પંચનો કોઇપણ સભ્ય કરી શકશે નહિં. ત્રણ માસ વિત્યાબાદ વિરોધી સખસ પંચ બોલાવી નિર્ણય માંગે.

(૭) પંચનું બંધારણ.

(અ) લેણા દીઠ એક એવા (૨૧ વર્ષ ઉપરના) આગેવાનો જેટલા હોય તેના ૨/૩ શખસો હાજર હોય તો પંચ માનવામાં આવે.

(આ) પંચમાં હાજર રહેલ હોય તે શખસો પૈકી ૧/૨ કે વધુ ભાગના શખશો જે બાબત હાથ ધરવા ના કહે તે બાબત પંચમાં લેવી નહીં.

(ઇ) કોઇના વ્યવહાર બંધ કે લેણા નોતરા કાપવાની બાબતમાં હાજર સભ્યોના ૧/૨ કે વધુ ભાગની સંમતિ જોઇએ.

(ઈ) કોઇ બાબતમાં નિર્ણય લાવતાં વિચિત્ર અડચણ આવે તેવે પ્રસંગે એક લવાદ સમિતિ તે કામ પુરતી નીમવી અને તે સમિતિ ૩/૪ થી વધુ મતે કે સર્વાનુમતે નિર્ણય લાવે તે પંચ કબુલ રાખે. જો ૩/૪ સભ્યો એકમત નહિં થાય તો લવાદ સમિતિ ફરીથી ચુંટવામાં આવે.

(ઉ) પંચના ઠરાવ પંચની ચોપડીમાં લખાય અને તે નીચે મુખ્ય સેવક તથા અસલ શેઠ હોય તેની સહી લેવામાં આવે.

(ઊ) પંચમા હાજર રહેલ શખસો પૈકી ૩/૪ થી વધુ ભાગના શખસો એકમત થાય તે ઠરાવ મંજુર ગણાય.

(ઋ) સર્વાનુમતે થયેલા અગર હાજરના ૪/૫ ભાગના સભ્યોના સંમતિથી થયેલ ઠરાવની વિરૂદ્ધમાં તમામ લેણાદારના ૧/૪ ભાગના શખશોની લેખી અરજી આવે તોજ તે ઠરાવ માટે પંચ ફરી વિચાર કરશે નહિં તો એવા ઠરાવ માટે પંચ ફરી વિચાર કરશે નહિં, પણ ઉપરની અરજી ઠરાવ થયા પછી એક મહિનાની અંદર આવવી જોઇએ.

(આ) પંચ તરફના પ્રતિનીધી ઉપરની કોઇ મોટી પંચ કે સંસ્થા માટે તેના નિયમને આધીન રહી મોકલશે.

(એ) મત ગણત્રી કરવામાં અગવડ આવે તો તેવે પ્રસંગે પંચના અસલ શેઠ હોય તેના તે નહીં હોય તો મુખ્ય સેવકના બે મત ગણાશે.

(૮) પંચનું કર્તવ્ય.

(અ) પંચ સમસ્તના ઉન્નતિના ઉપાય પંચ હાથ ધરશે.

(આ) પંચ સેવા સમિતિએ કરેલ ખર્ચ અને કામોના હેવાલ જોઇ મંજુર કરશે.

(ઇ) આજ દીન પહેલાં થયેલ ઠરાવનું તારણ (જે પાછળથી નોંધવામાં આવે તે) નો અને નવા ઠરાવ થાય તેનો અમલ થતો જોશે અને તેનો ભંગ કરનારને યોગ્ય લાગે તેવી શિક્ષા કરશે.

(ઈ) લેણુદારોની વચ્ચેની કાંઇ તકરારનો નિવેડો કરવા તેમના તરફથી લેખી અરજ આપવામાં આવે ને પંચનો નિર્ણય છેવટ સુધી કબુલ રાખવા લેખી ખાત્રી આપે તો પંચ તેનો નિર્ણય આપવા તે કામ હાથ ધરશે.

(ઉ) પંચ સમસ્તની લેણી પડતી રકમ મેળવવા માટે શક્તિ અને સત્તા હોય તેટલે દરજ્જે ઉપાય લેશે.

(ઊ) પંચ સમસ્તના બંધારણ વિરૂદ્ધ ચાલનારને દંડ કરવા, વ્હેવહાર બહાર કરવા, તેનું લેણું બંધ કરવા સુધીની તમામ સત્તા પંચને છે પરંતુ તેવી બાબતમાં પંચમાં હાજર રહેલ સભાસદના ⅔થી વધુ સભાસોએ સંમતિ આપેલી હોવી જોઇએ.

(ઋ) મોટા પંચ કે એવી સંસ્થાનું કંઇ કામકાજ આવે તે પર નિર્ણય કરશે. અને તે પંચ કે સંસ્થાની સાથે તેમના રીવાજ પ્રમાણે બનતા સુધી ચાલવા પ્રયાશ કરશે. અગર તેમના રીવાજમાં બનતો સુધારો વધારો કરી અંતે સમાન રીવાજ કરવા પ્રયાશ કરશે.

(એ) પંચ સેવા સમિતિ હિસાબના ચોપડા, શીલક, વાસણ, રાચ રચીલાં, ભાડા ચીઠ્ઠી, દસ્તાવેજ આદિનો હવાલો લે ત્યારથી તે જાળવવાની જોખમદારી તેમની છે. તેની યોગ્ય વ્યવસ્થા માંહો માંહે તે કરી લે. છતાં સેવા સમિતિના સભ્યો મતભેદ રાખે અને પંચને તેથી નુકશાન થાય એવું પંચને સમજાશે તો તે વર્ષ દરમ્યાનમાં ગમે ત્યારે તે સમિતિ પાસેથી સર્વ વસ્તુ અને કામનો હવાલો લઇને તેમની પછીની સેવા સમિતિને સોંપશે. તે નવી આવનાર સમિતિ તે વર્ષના બાકીના વધુ સમય માટે કામ કરશે.

(ઐ) આ નિયમાવળીના ઠરાવમાં સુધારો વધારો હવે પછી પંચ કરી શકશે કે આખો નિયમ પણ કાઢી નાંખી શકશે. અગર નવો નિયમ દાખલ કરી શકશે પણ ⅔ થી વધુ મતથી મંજુર થયેલ નિયમ ૭ માસ સુધી કોઇ બદલી શકશે નહિં.

× × ×

(૯) પંચ સમસ્તના અત્યાર સુધીના મંજુર થયેલ ઠરાવો જોઇ તપાસી તે વિષયવાર ગોઠવી સાર રૂપ તારણ તૈયાર કરવું તેને માટે એક સમીતિ (અમુક ગ્રહસ્થોની) નીમવામાં આવે કે અને એ સમિતિએ એ તારણમાં બે ભાગ પાડવા (૧) આગલા હેવાલ રૂપ ઠરાવના (૨) પંચ સમસ્ત માટે નિયમ પાળવાના એમ બે ભાગના ઠરાવોમાંથી નિયમ પાળવા બાબતના ઠરાવો પૈકી જે ઠરાવમાં કાંઇ ફેરફાર કરવા યોગ્ય લાગે તે માટે સમિતિએ પોતાનો અભિપ્રાય પંચમાં રજુ કરવો. અને બાકીના જેમને તેમ ઠરાવ રૂપે કાયમ રાખવા.

(૧૦) ઉપરના પંચના કર્તવ્યમાં અનેક બાબતો ઉમેરી શકાય છે પણ દરેક પંચ પોતપોતાને અનુકુળ આવે અને બીજા પંચ સાથે જેમ બને તેમ એક વિચારના થવા ઉદાર દીલથી નિયમો ઘડે તોજ આખા સમાજની ઉન્નતિ થશે. સ્વાર્થથી એક બાજુ ખેંચવામાં કોઇનું ભલું થતું નથી. યજ્ઞમાં જે આહુતી આપે છે તેનેજ પુણ્ય પ્રતાપે આગળ ફાયદો થાય છે માટે પંચના કર્તવ્ય ઉદાર દીલે હાથ ધરવા સર્વને વિનંતિ છે.

कैसे हित होवे री समाज ?

सबका हितकारी जो अपार।
सब श्रेष्ठ रूप संस्कृति भंडार॥
सद् ज्ञान अतुल जिसका न पार।
क्या रहा बंधुओ पास आज ?
कैसे हित होवे री समाज ?

सुखको जो करती छिन्न भिन्न।
सबको जो करती भिन्न भिन्न॥
रहते जिससे सब खिन्न खिन्न।
क्या किया फूटका कुछ इलाज ?
कैसे हित होवे री समाज ?

सुख संपतिका है जो भण्डार।
सब कार्य सिद्धिका एक द्वार॥
मन प्रमुदितताका पुष्पहार।
क्या दिया निमन्त्रण ऐक्य राज ?
कैसे हित होवे री समाज ?

संतत विलासिताके प्रभाव।
कम वयमें बच्चोंका विवाह॥
परिणाम दुखद वह वृद्ध ब्याह।
क्या किया जरा इनपर लिहाज ?
कैसे हित होवे री समाज ?

शिल्पादि कलाओंसे विहीन।
भोजन कपड़ों बिन रहें दीन॥
होतीं जातीं पर धर्म लीन।
क्या दिया ध्यान विधवा समाज ?
कैसे हित होवे री समाज ?

उत्कृष्ट अधम सबको समान।
भव उदधि तारवे नौ महान्॥
थी अबतक जिसकी महा शान।
क्या उस वृषवरकी रखी लाज ?
कैसे हित होवे री समाज ?

जात्युन्नतिताका एक हेतु।
गुणगरिमा सागर-अतुल सेतु॥
प्रसरित दिगन्त जिन धर्मकेतु।
साहित्य नष्टसम हुआ आज ?
कैसे हित होवे री समाज ?

जनतार्थ प्राणदान-प्रवीण।
सद्धर्म धुरंधरता धुरीण॥
विद्याव्यसनी नहिं कलाक्षीण।
क्या दिखते एवं युवक आज ?
कैसे हित होवे री समाज ?

रचयिता:—'विद्यार्थी,' राजकुमार जैन, स्या. म. वि. काशी।

दिगंबर जैन

दिगंबर जैनका समाज अंक।

दि—लमें कुछ सोचा न पहिले, अब रहा हूं हाथ मल।
ग—गमें खाता हूं गोते, किस तरह जाऊँ निकल॥
ब—न करके जबतक वीर वह, मुझको नहीं अपनायगा।
र—खकर शरणमें पार, दुःखोंसे मुझे न हटायगा॥

× × ×

जै—जय प्रभो जय जय प्रभो, करता रहूंगा नाथ मैं।
न—हिं पार जबतक होऊँगा, तबतक न छोडूं साथ मैं॥
का—मोंको दे करके तिलांजलि, अब तो भगवन् तारिये।
स—ब दुःखसे मुझको छुड़ा, अब नाथ इधर निहारिये॥

× × ×

मा—या तुम्हारी का प्रभो, पाता न कोई पार है।
ज—ब कोई भी आता शरण, तब होत बेड़ा पार है॥
अं—तिम है मेरी प्रार्थना, भगवन् दया कर दीजिये।
क—हता "हरिश्चंद्र" जोड़कर, अब तो शरणमें लीजिये॥

× × ×

अ—पनाइये इस अङ्कको, जिन प्रेमियो क्या ध्यान है।
प—ढ़िये इसे चितको लगा, तब ही तुम्हारा मान है॥
ना—म इसका है दिगंबर और अंक समाज है।
ओ—प्रेमियो लो देख लो, सौभाग्य आया आज है॥

हरिश्चन्द्र जैन-सासनी (अलीगढ़)।

का समाज अंक

"जैनविजय" प्रिन्टिंग प्रेस, खपाटिया चकला—सूरतमें मूलचंद किसनदास कापड़ियाने मुद्रित किया
और "दिगम्बर जैन" ऑफिस, चन्दावाड़ी—सूरतसे उन्होंने ही प्रकट किया।

ગુજરાત દિગંબર જૈન પ્રાન્તિક સભાનું માસિકપત્ર—

— संपादक अने प्रकाशक —

मूलचन्द किसनदास कापडिया–सूरत.

वर्ष २७ | वीर संवत २४६० पौष–माघ. | अंक ३–४

विषय सूची.

उपहारोंके पोस्टेज सहित वार्षिक मूल्य २।) व समाजअंक मू० ।।।)

पावागढ़ क्षेत्र—का वार्षिक मेला माघ सुदी १३-१४ को होगा। सुदी १३ को प्रबन्धकारणीकी मीटिंग भी होगी।

सूर्यप्रकाश परीक्षा—प्रकट होगई है। पृ० १७९ हैं। दो आने पोस्टेज भेजकर तुर्त ही मुफ्त मगा लीजिये। जौंहरीमल शर्राफ बडादरीबा-देहली।

भा० भारत० दि० जैन युवक संघ—की स्थापना इटारसी परिषदमें हुई है। संघकी ओरसे जैन युवक ट्रेक्टमाला भी प्रतिमाह प्रकट होगी। मंत्री बा० चंद्रसेन जैन वैद्य-इटावा हैं।

जीवदया सभा आगरा—का वार्षिक अधिवेशन ता० २७-२८ जनवरीको पेंडतमें होगा। पेंडत शिकोहाबाद स्टेशनसे १८ मीलपर है। मोटर जाती है।

थूबौनजी—का मेला माघ सुदी १० से फा० व० १० तक होगा। साथमें बुन्देलखंड प्रांतिक सभा और परवार सभा भी शायद हो।

जैन महिला आश्रम देहली—की संचालिका पं० रामदेवीबाई इटारसी परिषदमें पधारी थीं। वहां आपको आश्रमके लिये ७११) की सहायता मिली थी।

मुलतान—से पं० अजितकुमारजी शास्त्री आदि २९-३० भाइयोंका यात्रा संघ निकला है। यह संघ लाहौर, अमृतसर, सहारनपुर, देहली, मथुरा, आगरा होकर आगे बढ़ा है। सब स्थानोंपर शास्त्र सभा व व्याख्यानसभा होती हैं।

श्री गिरनारजी—पर सहसावनमें दोनों डेरियोंमें पूजन करनेका व धर्मशालामें ठहरनेका अपनेको कायमका हक मिल गया तथा प्रथम टोंककी अपनी धर्मशालामें दिवाल बनानेका भी हुक्म हो गया है। पांच वर्षोंसे ये दोनों केस चलते थे उनमें दिगम्बरोंकी ही जीत हुई है।

डॉ० लक्ष्मीचंद्रजी जैन प्रोफेसरको—भारतीय बेंक सम्बन्धी खोजके कारण लंडन यूनीवर्सिटीसे डी० एस० सी० की उपाधि मिली है।

शोक—आगराके प्रतिष्ठित अगुए सेठ पदमचंदजीका स्वर्गवास होगया! आप बड़े दानी थे।

मूडबिद्रि—में वीर वाणी विलास जैन सिद्धांत भवनका उद्घाटन सेठ रावजी सखाराम दोशी सोलापुरके हस्तसे गत मासमें होगया। उस समय सेठ रावजीभाईको मानपत्र व पं० लोकनाथजी शास्त्रीको "सरस्वती भूषण"की पदवी दीगई तथा भवनकी इमारतका अधूरा काम पूरा करनेके लिये २१००) चंदा हुआ उसमें १००१) सेठ रावजीभाईने व ५०१) शेठ वीरचंद कोदरजी फलटनने दिये हैं। यहांके "महाधवल" ग्रन्थकी प्रतिलिपि बाहर देनेके लिये भट्टारकजी व सज्जनोंसे सम्मति सेठ रावजीभाईके अनुरोधसे मिल गई है।

गुजरात-से ऋषभ ब्र०आश्रम चौरासी (मथुरा) को पं० मनोहरलालजी शास्त्री प्रचारकके प्रयत्नसे ४०९॥) की सहायता मिली है।

झूठा आक्षेप-श्वेतांबर जैन पत्रोंमें प्रकट हुआ है कि केशरियाजीकी चढ़ी हुई केशर बेचनेमें दि० जैन मेम्बरोंने भी सम्मति दी है। यह आक्षेप बिलकुल असत्य व निंद्य है। अभीतक कमेटीमें इस विषयमें कोई बात तय नहीं हुई है। श्वेतांबर लोग चाहे जैसे गपगोले केशरियाजीके विषयमें फेंका ही करते हैं।

परतापगढ—में संघपति सेठ घासीलाल पूनमचंदजीकी ओरसे पंचकल्याणक प्रतिष्ठा फाल्गुन सुदी १ से १२ तक होगी। उस समय यहां दोनों आचार्य संघ भी पधारेंगे।

मुनि श्री जयसागरजी—हैदराबाद स्टेटमें बेरोकटोक विहार कर रहे हैं।

सुरतमां मळेली गुजरात दिगम्बर जैन परिषद् समये लेवायलो ग्रूप फोटो ता० १-१-३४.

शेठ ताराचंदजी झवेरी प्रमुख. शेठ छगनलाल सैंया स्वागत प्रमुख, शेठ छोटालाल गांधी स्वा. उपप्रमुख, श्री० मूलचंदजी कापडिया मंत्री वगेरे.

ગુજરાત દિગંબર જૈન પ્રાન્તિક સભાનું મુખ્ય માસિકપત્ર

वर्ष २७ वां
अंक १-४

वीरसं०२४६०
पौष-माघ
सं०१९९०.

प्रासंगिकैः सामयिकैः सुवृत्तैर्लेखैर्विनोदैः कविता-कलाभिः ।
सद्धर्मसाहित्यसमाजवृद्धयै "दिगम्बरो जैन" उदेत्यपूर्वः ॥

सम्पादकीय वक्तव्य ।

देवगढमें मेला । जैसे जैनबिद्री मूडबिद्रीमें हमारे अनेक प्राचीन जैन स्मारक, मूर्ति व शिलालेख हैं इसी प्रकार या इससे भी अधिक महत्वशाली शिलालेख, मूर्तियां व दि०जैन स्मारक देवगढ़ पहाड़पर हैं जो सरकारके कब्जेसे आज हमारे कब्जेमें आ गया है। यह स्थान ललितपुर (झांसी)के पास जाखलौन स्टेशनसे ७ मीलपर एक छोटे पहाड़पर है जो अतीव मनोज्ञ व दर्शन करने योग्य है। ललितपुरके भाइयोंके प्रयत्नसे इस क्षेत्रका उद्धार होरहा है तथा इसकी विशेष उन्नतिके लिये यहां बड़ा भारी मेला ता० १-२-३ फर्वरीको होनेवाला है। जिसमें मेलेके साथ२ अनेक कार्य होनेवाले हैं। अत: इस मेलेमें देवगढ़ अवश्य२ जाकर यात्राका, सभाओंका व आसपासकी यात्राओंका लाभ लेना चाहिये।

* * *

तीर्थक्षेत्र कमेटीका अधिवेशन । २९-३० वर्ष पहिले हमारे तीर्थोंकी अस्त-व्यस्त व्यवस्था सुधारनेके लिये स्वर्गीय दानवीर सेठ माणिकचन्दजी आदिके प्रयत्नसे बम्बईमें **भारत० दि० जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी** स्थापित हुई थी, जो आजतक अपना कार्य बराबर कर रही है। व इसने हमारे अनेक तीर्थोंकी सुव्यवस्था की है। तथा अन्योंकी रुकावटोंसे अनेक क्षेत्रोंकी रक्षा हरएक प्रकारसे कैसी की है व कर रही है सो दिगम्बर जैन समाजसे छिपा नहीं है। इसी तीर्थक्षेत्र व कमेटीका अंतिम अधिवेशन श्री गोम्मटस्वामी मस्तकाभिषेकके मेलेपर करीब ८ वर्षपर हुआ था उसके बाद कोई अधिवेशन नहीं हुआ था। अत: देवगढ़के मेलेकी प्रबंध कमेटीने इसके लिये आमंत्रण दिया था जो स्वीकार हो जानेसे तीर्थक्षेत्र कमेटीका अधिवेशन अपूर्व समारोहके साथ ता० १-२-३ फर्वरीको देवगढ़में होगा। तथा इसके सभापतिपदके लिये भी श्री विद्यावारिधि बैरिस्टर चम्पतरायजी साहब नियुक्त होगये हैं तथा इस मौकेपर वहांपर पं० अजितप्रसादजी, सर सेठ हुकुमचंदजी आदि अनेक तीर्थभक्त श्रीमान व विद्वान पधारेंगे। अत: तीर्थक्षेत्र कमेटीके इस अधिवेशनके लिये भी देवगढ अवश्य पधारिये।

* * *

महिला परिषद् । करीब २९ वर्ष पहले श्री सम्मेदशिखरजीमें प्रतिष्ठाके समय स्व० जैन महिलारत्न श्रीमती मगनबहिन, कंकूबहिन व ललिताबहिनके प्रयत्नसे भारतवर्षीय दि०जैन महिलापरिषदकी स्थापना हुई थी जो आजतक अपना कार्य सुचारु रीतिसे चला रही है तथा इसकी तरफसे "जैन महिला-

दर्श " मासिक १२ वर्षसे सूरतसे पं० चंदाबाई-जीके संपादकत्वमें स्त्रियोंके ही लेखोंसे विभूषित उत्तमतया प्रगट होरहा है, इसी महिला परिषदका अधिवेशन भी आमंत्रण मिलनेसे देवगढ़के मेलेमें होगा। इसकी सभानेत्रीके लिये श्रीमती शांतिबाई पुत्रवधू श्री० श्रीमंत सेठ पूरनसाहजी सिवनी नियुक्त हुई हैं। अतः महिला परिषदका यह अधिवेशन भी शानदार होगा। अतः देवगढके मेलेमें महिलायें भी अवश्य २ पधारें।

* * *

देवगढ़ मेलेके अनेक लाभ। देवगढ़के मेलेमें और भी अनेक सभा व कन्या-पाठशालाओंके अधिवेशन होंगे। तथा मेलेके बाद इसके आसपासके ८-१० सिद्धक्षेत्र व अतिशयक्षेत्रोंकी यात्राका लाभ भी मिल सकेगा। इसलिये एक पंथ व अनेक कार्य करनेके लिये देवगढ़के मेलेमें अवश्य २ पधारिये। इस क्षेत्रका इतिहास व इसके स्मारकके अनेक चित्र हम 'दिगम्बर जैन' के २९ वें वर्षके विशेषांकमें प्रगट कर चुके हैं उसको निकाल कर एकवार फिर पढ़ जाइये, तो पाठकोंको देवगढ जैसे प्राचीन क्षेत्रकी महत्वता प्रगट होजायगी व देवगढ जानेका मन अवश्य होजायगा। आशा है कि इस निवेदन पर हमारे पाठक अवश्य ध्यान देंगे।

* * *

सुरतनी परिषद. "समाज अंक" मां जणाववा प्रमाणे सुरतमां गुजरात दि. जैन परिषद अत्यत उत्साह अने अपूर्व सफळता पूर्वक मळी हती जेनो विगतवार हेवाल आ अंकमां पाने १४९ थी १६२ सुधी आपेलो छे जे वांचवाथी वांचकोने जणाशे के सुरतमां आ परिषद मळवाथी गुजरातना दिगंबर जैनोमां एक नवुंज चेतन आव्युं छे. सुरतमां कंइ मेळो, प्रतिष्ठा, सभा, रथयात्रा के कंइ बीजो प्रसंग नहोतो छतां पण सुरतमां आखा गुजरातना दिगंबर जैनो तरफथी प्रतिनिधि रूपे आशरे ३०० भाइओए आवी परिषदनो उत्तम रीते लाभ लई गुजरातमां एक आवी स्थायी संस्थानी जरूर छे एम साबीती करी आपी छे अने ते साथेज अत्रे गुजरात दिगंबर जैन प्रांतिक सभानी स्थापना पण थइ चुकी छे ए जाणी गुजरात तो शुं पण आखा हिंदुस्तानना जैनो हर्षना उद्गारो काढी रह्या छे.

× × ×

परिषदना प्रमुखो. सुरतमां भरायली परिषदनी स्वागत कमेटीना प्रमुख **शेठ छगनलाल उत्तमचंद सरैयानुं** तेमज परिषदना सुयोग्य प्रमुख श्रीमान **शेठ ताराचंद नवलचंद झवेरी** मुंबइना प्रमुख तरीकेनां सचित्र भाषणो पण आ अंक साथे वेंचवामां आव्यां छे ते दरेक वांचकने आद्यंत सुधी वांची जवाने तथा ते उपर गंभीरपणे विचार करवाने दरेक वांचकने भलामण करीए छीए. आ बंने प्रमुखोना भाषणोना विचारो प्रमाणेनुं कार्य जो गुजरातना दि. जैनोमां थाय तो गुजरातां ऐक्य ने उन्नति थतां वार लागवानी नथी ए निःशंसय छे पण ए माटे वातो करीने बेसी रही शकाशे नहि पण तन मन धनथी ए माटे प्रयत्न करीशुं त्यारेज ए कार्य थइ शकशे.

× × ×

परिषदना ठरावो. सुरतनी परिषदे घणा ठरावो कर्या छे तेनो अमल करवाने आ अंकमांज "पंचोने नम्र विनंति" नामे लेख लखायलो छे जे अक्षरशः वांची जवा तथा ते प्रमाणे कामगीरी करवाने पण गुजरातनी दरेक दि. जैन पंचने आग्रह पूर्वक भलामण करीए छीए. बधा ठरावोमां मात्र **ज्ञाति झगडा** निवारण कमेटी, लग्न ने विवाहनी हद, पंचनुं व्यवस्थित बंधारण, **पेटा ज्ञातिओमां परस्पर कन्या आप ले करवाना द्वार** खुल्लां मुकवाना ठरावोनो जो पुरेपुरो अमल थाय

તો ગુજરાતમાં ઐકય, સંગઠન ને ઉન્નતિ થતાં વાર લાગશે નહિ પણ એ માટે દરેક જ્ઞાતિએ ઉદારતા બતાવવી પડશે ને ખંત રાખીને નિષ્પક્ષ-પણે કાર્ય કરવું પડશે જે માટેનો સમય હવે આવી પુગ્યો છે તો દરેક નાની મોટી પંચોએ પોતાની પંચ મેળવી સુરત પરિષદના ઠરાવો પર વિચાર કરી પોતાનો નિર્ણય દિગંબર જૈન-માં પ્રગટ કરવો જોઇયે. અમારી ધારણા પ્રમાણે ગુજરાતની દરેક પંચોમાંથી ચુંટાઇનેજ પ્રતિનિધિયો સુરત પરિષદમાં આવ્યા હતા ને તેમણેજ વિચાર પૂર્વક જે ઠરાવો કર્યા છે તે દરેક પંચને પસંદ તો પડશેજ, પણ તેનો અમલ ચાલુ કરવાનો માર્ગ હવે ખુલ્લો કરવાની જરૂર દરેક પંચની છે ને તે દરેક પંચે મળી એ માર્ગ ખુલ્લો કરી દેવો જોઇએ કે જેથી ગુજરાતની બધી પેટા જ્ઞાતિઓનું સંગઠન થઇ શકે.

× × ×

ગુજરાત દિ. જૈન પ્રાંતિક સભાની સ્થાપના. સુરતની પરિષદે ગુજરાત દિ. જૈન પ્રાંતિક સભાની સ્થાપના કરી તેની નિયમાવળી પણ તૈયાર કરી દીધી છે. તેમજ એની મેનેજીંગ કમેટી પણ નીમાઇ છે. ને આ સભાનું બંધારણ ને નીયમો પણ આ અંક સાથે પ્રગટ કારવામાં આવ્યા છે, તે પુરેપુરા વાંચી જવાથી સભાનો ઉદ્દેશ ને બંધારણ બરાબર રીતે સમજવામાં આવશે અને તે પછી આ સભાના વંશ પરંપરાના, જીંદગી પર્યંતના કે ચાલુ સભાસદ થવા ગુજરાતના દરેક દિગંબર જૈન ભાઇને ભલામણ કરીએ છિયે કે જેથી આ સભાનું કામ સુચારૂ રૂપે ચાલુ રહી શકે.

× × ×

“દિગંબર જૈન” વિનામૂલ્ય ગુજરાત દિ૦ જૈન પ્રાંતિક સભા તરફથી એક માસિક પત્ર કાઢવાની વાત પણ એજ નિયમોમાં છે તેથી તેનો પણ જલ્દી અમલ થાય એ હેતુથી પ્રમુખ શેઠ તારાચંદભાઇ, છોટાલાલભાઇ ગાંધી, શેઠ ઠાકોરદાસ ભગવાનદાસ ઝવેરી વગેરેની સુચનાથીજ આ અંકથીજ આ “દિગંબર જૈન” પત્રને હાલ તુરત ગુજરાત પ્રાંતિક દિ૦ જૈન સભાનું મુખપત્ર બનાવવામાં આવે છે અને એમાં હવે ગુજરાતી ભાષાના લેખો વધુજ આવશે તેમજ દીવાળી પછી એને બિલ્કુલ ગુજરાતી ભાષામાંજ પ્રકટ કરવાનો પ્રયત્ન કરવામાં આવશે. “દિગંબર જૈન” ૨૬ વર્ષ અગાઉ અમદાવાદની શેઠ પ્રે૦ મો૦ દિ૦ જૈન બોર્ડિંગ તરફથી ચાલુ કરવામાં આવ્યું હતું જે આજે પાછું ગુજરાત દિ. જૈન પ્રાંતિક સભાના મુખપત્ર રૂપે પ્રકટ થાય છે, એ જાણી દરેક ગુજરાતના ભાઇને આનંદ થશેજ. તથા આ પત્ર હવે સભાના સભાસદને વિના મૂલ્યે મળનાર છે એટલે રૂ૦ ૫૦૧), ૧૦૧), ૫) કે ૨) વાળા સભાસદને દિગંબર જૈન પત્ર મફત મળશે. (માત્ર પ્રતિષ્ઠિત સભાસદ પાસેજ અડધું મૂલ્ય માત્ર રૂ।. ૧। લેવાશે) આથી હવે ગુજરાતમાં “દિગંબર જૈન” ની ગ્રાહક સંખ્યા ગ્રાહક રૂપે કે સભાસદ રૂપે મોટી સંખ્યામાં થવાની જરૂર છે કે જેથી પૃષ્ટ સંખ્યા પણ વધારી શકાય. હવે ‘દિગંબર જૈન’ માં ગુજરાત સંબંધી લેખો તથા સમાચારોને વિશેષ સ્થાન મળશે માટે જ્ઞાતિ, ધર્મ તથા સમાજ હિત સબંધી લેખો તેમજ વખતો વખત બનતા સમાચારો સમય પર મોકલવાને દરેકને આગ્રહ કરીએ છિયે.

× × ×

પંચનું બંધારણ ને વસ્તિ પત્રક. દરેક પંચનું વ્યવસ્થિત બંધારણ કરવાને તેમજ દરેક સ્થાનનું વસ્તિપત્રક તૈયાર કરવા માટેનો ખરડો ને ફારમ પણ આ અંકને છેડે જોડવામાં આવ્યા છે જેથી હવે દરેક પંચે પોતાનું બંધારણ વ્યવસ્થિત કરવા માટે એકઠા મળી વિચાર કરવો જોઇએ કે જેથી અવ્યવસ્થિત મળતી પંચો સમયપર મળી શકે, હિસાબો પણ બહાર પડી શકે તથા પંચના ઝગડાઓ પણ પતાવી શકાશે.

इटारसीमें भारत० दि० जैन परिषद्।

भा० दि० जैन परिषदका दशवां अधिवेशन इटारसीमें ता० २९-३० दिसम्बरको अतीव समारोहके साथ हुआ था जिसके लिये महिनोंसे बड़ी२ तैयारियां कीगई थीं। स्वागत समापति पं० मूलचंदजी तिवारी थे व मंत्री पं० सुंदरलालजी जैन वैद्यरत्न थे।

ता० २७-२८ को मनरंग कृत चौवीस जिन पूजनपाठ हुआ था। दोनों दिन शास्त्रसभा भी हुई थी। ता० २८ की दुपहरको सभापति बेरिस्टर बा० जमनाप्रसादजी सबजज आदि पधारे थे। अपूर्व स्वागत हुआ था। रात्रिको बा० उग्रसेनजी वकीलके सभापतित्वमें आम सभा हुई थी जिसमें पं० तुलसीरामजीने अहिंसातत्वपर कहा फिर बा० रतनलालजी वकील मंत्री परिषदने जैन धर्मकी प्राचीनतापर कहाथा, पं० रामदेवी व विद्यावतीदेवी नागपुरने स्त्रीशिक्षा व स्त्रियोंपर होते हुए अत्याचारोंपर हृदयभेदक वर्णन किया। यहां सभामें स्त्रियोंके आगे चिकें लगाई गई थीं। सभापतिजीने जोशभरे शब्दोंमें कहा कि यदि स्त्रियां चाहती हों तो वे स्वयं चिकोंको हटा सकती हैं। तुर्त ही स्त्रियोंने चिकें हटा दीं। सभामें अपूर्व जोश फैला। फिर स्त्रीशिक्षापर बा० नानकचन्दजी एडवोकेट, पं० तुलसीरामजी, बा० कुलवंतराय आदिके भाषण हुए थे। अंतमें चन्द्रसेनजीके उत्तेजक भजन हुए थे।

ता० २९ की सुबह बेरिष्टर चम्पतरायजी सा० बम्बईसे पधारे। १००० भाई लेने गये थे। आज सनावद, खंडवा, हरदा, धरणगांव, होशंगाबाद, बासोदा, बीना, सागर, दमोह, नरसिंहपुर, गोटेगांव, कटनी, जबलपुर, भोपाल, भेलसा, महू, सिहौर, दिल्ही, अजमेर, आगरा, इटावा, कानपुर, रोहतक, फिरोजपुर, नागपुर, अमरावती, वर्धा आदि शहरोंसे अनेक पंडित व श्रीमान् आपहुंचे थे। पंडितोंमें पं० क्षेमंकरजी, पं० कमलकुमारजी, पं० बंशीधरजी (बीना), पं० जगमोहनलालजी, पं० विद्याकुमारजी, पं० गोविंदरायजी, पं० बाबूरामजी, पं० अभयकुमारजी, पं० आनंदीलालजी, पं० तुलसीरामजी, पं० लोकमणिजी, पं० वसंतलालजी आदि थे व श्रीमानोंमें सिंघई पन्नालालजी, बा० कस्तूरचन्दजी, बा० कन्छेदीलालजी, सिं० कपूरचंदजी, बा० अमोलकचन्दजी, सेठ मोतीलालजी आदि थे। श्री० ब्र० सीतलप्रसादजी भी उपस्थित थे। मंडप १५०० आदमियोंके योग्य बना था जो खचाखच भर गया था। स्त्रियोंके स्थानपर आज परदा नहीं था। करीब १२। बजे परिषदका कार्य आरम्भ हुआ था। मंगलाचरण व गानके बाद स्वागत चेयरमेन तिवारीजीका व्याख्यान हुआ।

फिर सभापतिजीका चुनाव हुआ जिसमें बेरिष्टर चम्पतरायजी साहब, उग्रसेनजी, कस्तूरचन्दजी आदिके खास व्याख्यान हुए थे। फिर बेरिष्टर जमनाप्रसादजीका जोशभरा व्याख्यान हुआ था। जिसमें आपने उन्नतिकी घुड़दौड़, जैन कालेज, जैन बोर्डिंगोंमें ऐक्यकी आवश्यकता, जैन साहित्यका प्रकाशन, जैन कलाभवनकी आवश्यकता, विदेशमें धर्म प्रचार, दिगम्बर मुनि, अंतर्जातीय विवाह, बाल-वृद्धविवाह व कन्याविक्रय निषेध आदि विषयोंपर उत्तम प्रकाश डाला था। इसके बाद सहानुभूतिके आये हुए तार व पत्र महामंत्रीजीने सुनाये थे। जिनमें सर सेठ हुकमचन्दजी, सेठ हरनारायणजी, पं० चन्दाबाईजी; पं० अजितप्रसादजी, पं० माणिकचंदजी न्यायाचार्य, पं० दीपचंदजी वर्णी, विनोदीराम बालचंद आदिके तार मुख्य थे। फिर श्री० पं० हीरालालजी अमरावतीने जैन साहित्य प्रचारपर व्याख्यान देकर अपभ्रंश भाषाके जैन ग्रन्थोंकी उपयोगिता व उसके प्रचारकी आवश्यकता बताई। फिर रिपोर्ट आदि होकर

९ बजे प्रथम बैठक समाप्त हुई थी। रात्रिको ७से दो बजे तक सब्जेक्ट कमेटी शांतिपूर्वक हुई थी।

ता० ३०को परिषदकी दूसरी बैठक हुई थी। उसके पहिले सुबह ही एक जलसा हुआ जिसमें सेठ लक्ष्मीचन्द भेलसा जिन्होंने ११०००) जैन साहित्य प्रचारके लिये दान कर दिये हैं उनको "श्रीमंतसेठ"की पदवी दी गई। उस समय पं० तुलसीरामजी, पं० जगनमोहनजी, बा० चेतनदासजी आदिके व्याख्यान हुये, उनमें सबने आजकल नवीन २ प्रतिष्ठाओंकी आवश्यक्ता नहीं है परन्तु प्राचीन जैन साहित्यकी प्रतिष्ठाकी आवश्यक्ता है यह सिद्ध किया था। एक और सभा हुई थी जिसमें जैन महिलाश्रम देहलीके लिये ७००) की सहायता मिली, जिसमें ५०१) सेठ लक्ष्मीचंदजी भेलसाने प्रदान किये थे।

दूसरी बैठक १॥ बजेसे ५ बजे तक हुई थी जिसमें निम्नलिखित प्रस्ताव पास हुए थे—

१-सिं० गोकुलचंदजी वकील, पं० अर्हदासजी, कवि न्यामतसिंहजी, बाबू नवलकिशोरजी, सेठ पदमचन्दजी आदिकी मृत्युपर शोक।

२-गोपालदास चवरे कारंजाने २५०००) व सेठ लक्ष्मीचन्दजी भेलसाने ११०००) जैन साहित्य प्रचारके लिये दिये हैं उनको धन्यवाद।

३-सतनामें रीवा राज्यमें विमानोत्सव पर जो शर्तें हैं वे हटा ली जावें।

४-अंतर्जातीय विवाहकी तरक्की करनेके लिये विवाह संयोजक कमेटी नियत की जावे जिसके मंत्री बा० चन्द्रसेनजी जैन वैद्य इटावा रहें।

५-जर्मन सरकार व लंडन रॉयल सोसायटीको जीवदयाके कार्यके लिये धन्यवाद।

६-चिकागो (अमेरिका) में सर्व धर्म परिषदमें भाग लेकर व लंडनमें ऋषभ जैन लायब्रेरी द्वारा जैनधर्म प्रचारका उत्तम कार्य करनेवाले बेरिष्टर चंपतरायजी सा० को धन्यवाद।

७-१८ वर्षसे कम उम्रकी कन्याओंका विवाह ४५ वर्षसे ऊपरवाले वृद्धोंके साथ होना घातक है, अतः ऐसा कानून धारासभाओंमें बननेका प्रयत्न किया जावे।

८-मध्यप्रांत, मालवा, खानदेश, बरार व बुन्देलखण्ड ऐसे कुरीतियां हटानेको अलग २ समितियां नियुक्त की गई।

९-आगामी सालके लिये २४००) का बजट पास हुआ।

१०-अनावश्यक खर्च हटानेके लिये जातियोंमें नुक्ता व लान बांटना बंद किया जाय, जन्म मुंडन आदिमें बिरादरीका जीमन न हो, बारात कन्यावालोंके यहां २ दिनसे अधिक न रहे, स्वदेशी शुद्ध वस्त्रोंका लेनदेन धार्मिक व विवाह आदि कार्योंमें हो व कन्या व पुत्रके बदलेमें कोई धन ठहराकर न लिया जावे।

११-जैन कालेज होनेका समर्थन। इस कार्यमें सहायता करनेके लिये ९ वकीलों व पंडितोंकी कमिटी नियुक्त हुई जिसमें प्रो० हीरालालजी मुख्य संयोजक हुए हैं।

१२-लड़के लड़कियोंको धार्मिक शिक्षा देनेके लिये हरएक स्थानपर पाठशालाएं स्थापित होनी चाहिये जिनकी परीक्षा परिषद बोर्ड लेती रहेगी।

१३-महावीर जयंती, व अनंत चतुर्दशीकी आम छुट्टीके लिये प्रयत्न किया जावे।

१४-जैन ध्वज कैसा हो इसका निश्चय करनेके लिये प्रो० हीरालालजी, पं० तुलसीरामजी व पं० जगन्मोहनलालजी शास्त्रीकी नियुक्ति।

१५-कहीं२ चौसके परवार व विनैकावालोंको मंदिरोंमें दर्शन पूजन नहीं करने देते व बोर्डिंगोंमें

भर्ती नहीं करते यह उचित नहीं है। समस्त जैन मात्रके लिये जैन मंदिर व जैन शिक्षा संस्थाओंके द्वार खुले ही रहने चाहिये।

१६–त्रिवर्णाचार, चर्चासागर, दानविचार, सूर्यप्रकाश आदि भ्रष्ट व अप्रमाणिक ग्रन्थोंपर घृणा व ऐसे साहित्यसे समाज सावधान रहें। तथा जिन विद्वानोंने साहित्य रक्षार्थ इनकी समीक्षाएँ लिखी हैं उनको धन्यवाद।

१७–किसी भी स्त्री पुरुषका कैसे भी अपराधके लिये मंदिर बंद न किया जावे। दण्ड, प्रायश्चित्त व अंतमें जाति बहिष्कार ही बस है।

१८–बा० राजेंद्रकुमारजी बिजनौर परिषदके सहायक मंत्री नियुक्त हुये।

१९–'वीर' पत्रका संचालन भविष्यमें किस प्रकार हो इसका विचार उत्तरीय प्रचार समिति करें।

परिषदमें अपील होनेपर करीब १९००)की सहायता मिली थी जिसमें मुख्य रकमें ये हैं–२९१) श्रीमन्त सेठ लक्ष्मीचन्दजी भेलसा, १११) बेरिष्टर चम्पतरायजी साहब, १११) बेरिष्टर जमनाप्रसादजी साहब, १११) बा० लालचन्दजी एडवोकेट आदि। सारांश यह है कि परिषदका दशवां अधिवेशन इटारसीमें अतीव सफलतापूर्वक हुआ था और अब इसके प्रस्तावोंका अमल करना दि० जैन समाजका फर्ज होजाता है।

राय साहब–बा० तनसुखरायजी श्रावगी पांड्या गोहाटी (आसाम) को राय साहबकी उपाधि मिली है।

दक्षिण म० दि० जैन सभा–का २६वां अधिवेशन श्री स्तवनिधि क्षेत्रके मेलेपर माघ वदी १४–०)) को होगया। साथमें महिला परिषद भी हुई थी तथा मराठी जैन साहित्य संमेलन श्री० तात्या नेमिनाथ पांगलके सभापतित्वमें हुआ था।

પરિષદ પછીનું પ્રચારકાર્ય.

સુરતમાં મળેલી ગુજરાત દિ. જૈન પરિષદે કરેલા ઠરાવોનો પ્રચાર કરવા મહામંત્રી છોટાલાલ ભાઇ, મંત્રી મુળચંદભાઇ ને એક સભ્ય ભાઇ-છગનલાલ સરૈયા પોષ વદ ૬ રવિવારે વ્યારા ગયા હતા. અત્રે શેઠ રતીલાલને ઘેર નૃસિંગપુરા ને રાંયકવાળનું પંચ રાત્રે ૮ થી ૧૨ સુધી મેળવ્યું જેમાં અત્રેનું મંદિર જે શીવલાલ શેઠની રૂા. ૬૨૦૦૦) ની મદદથી નવેસરથી બંધાયેલું તેનું અધુરૂં કામ પુરૂં કરવાં ભાઇ તલકચંદ અને શેઠ બહેચરદાસે ઘણી મહેનત કરી બાકીનું કામ પુરૂ કરવા ટીપ કરાવી દહેરાસરનું કામ પુરૂં કરાવેલું છતાં નૃસિંહપુરા અને રાયકવાળમાં મંદિરના વહીવટ વગેરે સબંધી વૈમનસ્ય હોવાથી મંદિરની પ્રતિષ્ઠા થતી નહોતી તે માટે પંચમાં વાટાઘાટ થતાં અંતે નકી કરાવ્યું કે પ્રતિષ્ઠા થાય ત્યાર પછી મંદીરનો વહીવટ દિ. જૈન પંચ તરફથી શેઠ રતીલાલ શીવલાલ અને શેઠ પાનાચંદ ગુલાબચંદ બંને મળી કરે ને ચોપડા રતીલાલ શેઠ રાખે તથા ધર્મશાળાની ભાડા ચીઠી બંનેના નામની કરાવવી ને તે શેઠ પાનાચંદ રાખે. મંદિરમાં રંગ રોગાન વગેરેનું કામ કરાવવાનું શેઠ બહેચરદાસ ને તલકચંદભાઇ ચાલુ રાખે ને રાયકવાળ તથા નૃસિંહપુરા બંનેમાં પંચને નામે ટીપ કરી પ્રતિષ્ઠાનું કામ જેમ બને તેમ જલદીથી કરવું.

એવી સમજુતથી સર્વને આનંદ થયો છે. પરિષદના ઠરાવનો અમલ કરવાની વાત કરતાં પ્રાંતિક સભાની સાધારણ સભાના સભાસદ થવા સુચના કરતાં નીચેના ગ્રહસ્થો સભાસદ થયા અને પરિષદના તમામ ઠરાવોને સર્વએ ટેકો આપ્યો હતો. એટલુંજ નહિં પણ વ્યારા તો ગાયકવાડી રાજ્યનું હોવાથી ત્યાંના કાયદા મુજબ પંચના ઠરાવ વગરજ પંચમાં ઠરાવ કબુલજ છે એમ કહ્યું.

दिगंबर जैन — सुरतमां मळेली गुजरात दिगम्बर जैन परिषद् समये लेवायलो ग्रुप फोटो ता० ९-१-३४.

૧૦૧) શેઠ રતીલાલ શીવલાલ લાઇફસભાસદ
૧૦૧) શેઠ બહેચરદાસ ખુશાલદાસ ,,
૧૦૧) શેઠ કંચનલાલ ડાહ્યાભાઇ ,,
૨૫) શેઠ પાનાચંદ ગુલાબચંદ સાધારણ સભાસદ
૨) શેઠ નરોતમદાસ જગજીવનદાસ પ્રતિનીધી
૨) શા. ગોકલદાસ મોતીચંદ ,,
૨) શા. તલકચંદ દલીચંદ ,,
૨) શા. કેશવલાલ ધનાલાલ ,,

વ્યારામાં ફક્ત બાર ઘર છે છતાં ઉપર મુજબ આઠ સભાસદ થયા હતા. એ પછી મંત્રી મુલચંદભાઇને સોમવારે મળશકે સુરત જવું પડયું અને ગાંધીને સરૈયા સોમવારે સાંજે **બુહારી** પહોંચ્યા. બુહારીમાં ૨૩ વર્ષ પહેલાં નૃસિંહપરા ભાઇઓમાં દેરાસરના રૂપીયા માટે બે પક્ષ પડયા હતા, તેમાંથી થોડાક ભાઇઓ વગેસગે બીજા પક્ષમાં સામેલ થયા હતા. પરંતુ સ્વ. અસલ શેઠ ડાહ્યાભાઇના ચી. ભાઇ રાયચંદ અને તેમના કાકી હરકોર બ્હેનજ અલગ રહેલા હતા. એ ઝઘડાનો નિવેડો બુહારીમાં કરવાનો હતો. ભાઇ રાયચંદને બુહારી ગામ છોડવું પડયું છે. અને તેથી એ રાયચંદભાઇને લઇને ઝઘડા નિકાલ કમીટીના સભ્ય ભાઇ નાગરદાસને બોલાવ્યા હતા, પણ તેઓ કારણવશાત્ આવી શકયા નહોતા. બુહારીના આગેવાન નિકાલ માટે ઉદાર ભાવથી આતુર હતા. અને બાઇ હરકોરની પંચને અરજ મળતાં તેમની પાસેથી ગોરના ડાપાના નીકલતા રૂપીયા તથા ધારાના લઇ વ્યવહાર ચાલુ કરવા તેઓએ ઇંતેજારી બતાવી પણ ભાઇ રાયચંદ બુહારીથી નહીં આવેલા હોવાથી એક મહિનાની મુદતમાં રાયચંદને મળી ઝઘડો પતાવવા નિર્ણય થયો છે. અત્રે ગુ. પ્રાંતિક સભાના સભાસદ નીચે મુજબ થયા.

૫) ઠાકોરલાલ મોતીચંદ સાધારણ સભાસદ
૫) જમનાદાસ ડાહ્યાભાઇ ,,
૫) ચુનીલાલ ખીમચંદ ,,
૫) મણીલાલ તારાચંદ ,,
૨) ચીમનલાલ ખીમચંદ પ્રતિનીધી

અત્રે માત્ર નૃસિંહપુરાનાજ ઘર છે. એઓએ પેટા જ્ઞાતિઓમાં વિવાહ સંબંધ જોડવા માટે ઇચ્છા અને ઇંતેજારી બતાવી હતી. પરિષદના બીજા ઠરાવને પણ અનુમોદન આપ્યું હતું. મંગળવારે સાંજે ગાડા રસ્તે નીકળી રાત્રે **મહુવા** પહોંચ્યા. મહુવામાં ભાઇ કાન્તીલાલ ઇચ્છાચંદે પંચ મેળવ્યું. પરિષદના ઠરાવો અને તેને અમલમાં મુકવા બાબત ભાઇ ગાંધી અને સરૈયાએ વિવેચન કર્યું અને નીચેના સભાસદ નોંધાયા.

૫) અમરતલાલ જગજીવનદાસ સભાસદ
૫) શેઠ રતીલાલ જગજીવનદાશ ,,
૫) શેઠ મૂલચંદ જગજીવનદાશ ,,
૫) શેઠ કાંતિલાલ ઇચ્છાચંદ ,,
૫) શેઠ પ્રેમચંદ ગુલાબચંદ ,,
૫) શેઠ ભગુચંદ લખમીચંદ ,,
૫) શેઠ મંછારામ જેચંદ ,,
૨) શા. ડાહ્યાભાઇ જગજીવનદાશ પ્રતિનીધી
૨) શા. મગનલાલ છગનલાલ ,,
૨) શા. કાંતિલાલ રતનચંદ ,,

મહુવાના નૃસિંહપુરા અને રાયકવાળભાઇઓએ પરિષદની કાર્યવાહી માટે સંતોષ બતાવ્યો અને ઠરાવોનો અમલ જેમ બને તેમ જલ્દી થાય તેવી ઇચ્છા બતાવી એટલુંજ નહિં પણ જે જે કામ સોંપવામાં આવે તે કરવા બનતી મદદ આપવા તૈયારી બતાવી. તેઓએ અંતરજાતિય વિવાહ સબંધ ગુજરાતના દિગંબર જૈનોની કોઇ પણ કોમ ઇચ્છા બતાવે તેની સાથે જોડાવા પૂર્ણ ઇન્તેજારી બતાવી અને આગેવાન ભાઇઓએ તો પરિષદના સબંધના ઠરાવને ગાયકવાડ રાજ્યના કાયદાથી ખોટો ઠરાવ્યો અને કહ્યું કે તે કાયદા મુજબ તો કોઇપણ ન્યાતમાં કોઇ કન્યા આપે તે માટે પ્રતિબંધ નહિ રાખવાનું હોવાથી પંચોની પરવાનગી કે ઠરાવની પણ જરૂર રહેતી નથી. એ રાજ્યની દિ. જૈન પ્રજા તો પેટા જ્ઞાતિમાં કન્યાની આપ લે કરવાના ઠરાવનો વિરોધ કરી શકેજ નહિં એટલે પરિષદના ઠરાવ પમા ઠેલ્લો

ભાગ "એ દૃષ્ટિએ ગુજરાતી દિગંબર જૈનોની...માં માંહોમાંહે ખૂલ્લા મુકે" એ શબ્દોજ કાઢી નાંખવા જોઇતા હતા અને તે સ્થાને "જે પેટા જ્ઞાતિમાં કન્યાની આપલે બાબતમાં પ્રાતબંધ હોય તે દૂર કરવા" એવા શબ્દો ઉમેરવા સૂચના કરી હતી, પણ મહામંત્રીએ દિગંબર જૈનોમાં ઐકયતા સાચવી આપણી સર્વની સ્થિતિ ઉચ્ચ અને સમાન થાય તે હેતુથી હાલના ઠરાવની ઉપયોગીતા બતાવી હતી.

ઉપર દર્શાવ્યા મુજબ ત્રણે ગામમાં પરિષદના ઠરાવોને પૂર્ણ સહાનુભૂતિ મળી છે અને આશા છે કે ગુજરાતના કોઇ પણ પંચ ઠરાવોની વિરૂદ્ધ જશે નહિં, પરંતુ જેમ બને તેમ એ ઠરાવોનો અમલ થાય તે માટે મોટા પંચ જલ્દીથી મેળવી પરસ્પર વિવાહ સંબંધ જોડી સાચો અમલ કરી બતાવશે.

છો. ઘે. ગાંધી
મહામંત્રી ગુ. દિ. જૈન પ્રાં. સભા, અંકલેશ્વર

સુરત પરિષદનો ફોટો—જે આ અંકમાં પ્રગટ કર્યો છે તે જાડા આર્ટ કાગળ ઉપર (કાચમાં મઢાવવા લાયક) માત્ર એક આને સુરતથી મળી શકશે.

ભૂલ શુદ્ધિ—આ અંકમાં પાનું ૧૫૯ કોલમ ૧ લું ત્રીજી લીટીમાં રૂ૦ ૬૦૧) ને બદલે ૫૦૧) વાંચવા તથા રૂ૦ ૧૦૧) શા૦ જયંતીલાલ છગનલાલ ગજીવાલાની રકમ વધારી લેવી.

સુરતના નરસિંહપુરા—ભાઇઓનું પંચ પરિષદ પછી બે દિવસ સુધી મળ્યું હતું જેમાં દહેરાસરનો વહિવટ ચલાવવા શેઠ કાંતીલાલ હરગોવનદાસ, છગનલાલ ઉ. સરૈયા, શેઠ બાલુભાઇ નેમચંદ, ચીમનલાલ વજેચંદ, ચીમનલાલ છગનલાલ ને મણીલાલ તારાચંદ એમ પાંચની કમીટી નીમાઇ છે, જેમાં પ્રમુખ શા. કાંતીલાલ ને મંત્રી ચીમનલાલ છગનલાલ નીમાયા છે. આજ પ્રમાણે બધી ન્યાતોમાં પંચ તથા દહેરાસરોના વહિવટ માટે કમેટીઓ નીમાવી જોઇએ.

जैन समाचारावलि।

श्री सम्मेदशिखरजी तेरापंथी कोठी—में फाल्गुन सुदी १ से ६ तक अनेक वेदीप्रतिष्ठाएं व पंचकल्याणक प्रतिष्ठा होगी। साथमें नवीन प्रमुखद्वार व धर्मशालाका उद्घाटन होगा व खंडेलवाल दि० जैन महासभाका १४ वां अधिवेशन भी होगा।

પરિષદની સ્વાગત કમીટીની છેલ્લી મીટિંગ—નવાપરામાં સરૈયા સદનમાં તા. ૧૧ જાનેવારીને ગુરૂવારે રાત્રે ચેરમેન ભાઇ છગનલાલ સરૈયાના પ્રમુખપદે મળી હતી જેમાં મંત્રી મુલચંદભાઇ કાપડિયાએ ઉપજ ખરચનો હિસાબ રજુ કર્યો હતો જેથી જણાયું કે કુલ્લે ૬૦) સભાસદ ફી ૪૩૩) ટીપના ને રૂ. ૧૦॥ પ્રેક્ષક ફી મળી રૂ૦ ૫૦૩॥ ની આવક થયેલ ને ૪૪૮॥≈॥ ખરચ થયેલો એટલે રૂ૦ ૫૪॥૦। વધારો પડયો તે ગુજરાત દિ૦ જૈન પ્રાં૦ સભાને ભેટ આપવાનો ઠરાવ થયો તથા સુરતની વીશા હુમડ પંચે એક દિવસનો બધો ભોજન ખર્ચ ઉપાડી લીધેલો તેનો ખાસ ઉપકાર મનાયો. વળી કાપડિયાજી, જીવરાજ ગાંધી, જયંતીલાલ ચુડાવાળા ને પ્રમુખે ઘટતાં વિવેચનો કરી બધી કમીટીઓનો તથા પરિષદનું કાર્ય ઉપાડનાર ત્રણે ભાઇયોનો ઉપકાર માન્યો હતો. અને હારતોરા અપાયા પછી સરૈયાજી તરફથી સભાસદોનો ફ્રુટ, દુધ વગેરેથી સત્કાર થયો હતો. ને પાંચ રૂ. વાળા ૬ સભાસદો પ્રાંતિક સભાના નોંધાયા હતા,

અમદાવાદમાં—કાલુપુર ચોખા બજારમાં દીવાળીબાઇ દિ૦ જૈન ધર્મશાળા ગાંધી જીવાભાઇ વહાલચંદને હાથે માહા સુદ ૬ ની સવારે ખુલનાર હતી. સુદ પાંચમ ૧ ટંક ને સુદ ૬ બે ટંક ભોજનની સગવડ હતી.

ઉજેડિયા—માં એનકોરબાઇ જૈન પાઠશાળાનું નિરીક્ષણ કરીને શેઠ માણેકચંદ છગનલાલ તથા ગુજરાત દિ. જૈન યુવક મંડળે ઉત્તમ સંમતિ આપી છે.

સુરતમાં ગુજરાત દિ. જૈન પરિષદ.

અપૂર્વ ઉત્સાહ, અત્યંત સફળતા અને ગુજરાત દિગંબર જૈન પ્રાંતિક સભાની સ્થાપના.

આશરે ૩૦૦૦) નું ફંડ અને "દિગંબર જૈન" માસિક સભાનું પત્ર થશે.

જ્ઞાતિ ઝઘડા નિવારક કમેટી, ને પંચ બંધારણ કમેટીની નીમણુંક તેમજ લગ્નની હદના ને અંતર્જાતીય (પેટા જ્ઞાતિઓમાં) વિવાહ કરવાના થયેલા ઠરાવો.

અગાઉ જણાવવા પ્રમાણે ગુજરાતના દિગંબર જૈનોનું સંગઠન કરવા તથા તેમની ધાર્મિક આર્થિક ને સામાજીક ઉન્નતિ કરવાના હેતુથી સુરત મુકામે એક ગુજરાત દિગંબર જૈન પરિષદ બોલાવવાની હિલચાલ શ્રી. શેઠ છોટાલાલ ઘેલાભાઇ ગાંધી, શ્રી. મુળચંદ કસનદાસ કાપડિયા, છગનલાલ ઉત્તમચંદ સરૈયા, નરોતમદાસ જગજીવનદાસ બ્યારા, વગેરેએ કરી હતી જેને આખા ગુજરાતે સંમતિ આપવાથી આ પરિષદ પોષ સુદ ૧૫ ને વદ ૧ ને દિને સુરતમાં મેળવવા માટે નક્કી થવા પછી એ માટે આ ભાઇઓએ સુરતના દિગંબર જૈનોની સહાનુભૂતિ મેળવવા પછી સુરતના અને આસપાસના દિગંબર જૈનોની બે સભાઓ ૨૬ ભાઇઓની સહીથી ફુલવાડીમાં શા. મોતીચંદ સાકેરચંદ તાસવાળાના પ્રમુખપણા નીચે તા. ૧૬ ને ૧૯ ડીસેંબરે મળી હતી જેમાં સ્વાગત કમીટીની નીમણુંક થઈ તે દિને તથા ૨૭-૨૮ મીએ સ્વાગત કમીટીની સભાઓ શેઠ છોટાલાલ ઘેલાભાઇ ગાંધી અને શા. છગનલાલ ઉત્તમચંદ સરૈયાના પ્રમુખપણા નીચે મળી હતી જેમાં સ્વાગત કમીટીના પ્રમુખ તરીકે શા. છગનલાલ ઉત્તમચંદ સરૈયા, ઉપપ્રમુખ શા. છોટાલાલ ઘેલાભાઇ ગાંધી, કોષાધ્યક્ષ શા. જયંતીલાલ છગનલાલ, જનરલ સેક્રેટરી શા. મુલચંદ કસનદાસ કાપડીઆ તથા મંત્રીઓ તરીકે શા. જીવરાજ ગુલાબચંદ ગાંધી, બી. એ; જયંતીલાલ સાકેરચંદ ચુડાવાલા, શા. મગનલાલ પાનાચંદ ઝવેરી, શા. નરોતમદાસ જગજીવનદાસ અને શા. ખીમચંદ સવઇચંદ નીમાયા હતા. વળી એ સાથેજ પત્ર વ્યવહાર કમીટી, ઉતારા કમીટી, વોલંટીયર કમીટી, ભોજન કમીટી વગેરે નીમાઇ હતી જેમાં જનરલ સેક્રેટરી તથા મંત્રીઓ ઉપરાંત ગોપાળભાઇ શાહ, ચીમનલાલ શાહ, શેઠ મોતીચદ સાકેરચંદ તાસવાળા, જયંતીલાલ છગનલાલ ગજીવાળા, કાંતીલાલ હરગોવનદાસ, જયંતીલાલ રતીલાલ રેશમવાળા (વોલંટીયર કેપ્ટન), પં. પરમેષ્ઠીદાસજી ન્યાયતીર્થ, શા. ફુલચંદ છગનલાલ, શા. અમરચંદ ઉત્તમચંદ, શા. ભાઇચંદ પ્રેમચંદ, ચીમનલાલ છગનલાલ, અભેચંદ ગોકળદાસ, ચંપકલાલ કેશવલાલ

વગેરે નીમાયા હતા. તેમજ પ્રથમ દીવસનો કુલ ભોજન ખર્ચ સુરતની વીશાહુમડ પંચે ઉપાડી લેવા માંગણી કરેલી તે આભાર સાથે સ્વીકારમાં આવી હતી.

આ મંત્રીઓ તથા કોષાધ્યક્ષના પ્રયાસથી સ્વાગત કમીટીમાં નીચે મુજબ રકમો ભરાઇ હતી ને સ્વાગત કમેટીમાં ૧) ભરી કુલ્લે ૬૦ સભાસદો સુરત ને આસપાસના દિ. જૈનોમાંથી નોંધાયા હતા.

१०१) શા. મોતીચંદ સાકેરચંદ તાસવાલા
१०१) ,, છગનલાલ ઉત્તમચંદ સરૈયા
७५) ,, જયંતીલાલ છગનલાલ ગજીવાલા
५१) ,, મુલચંદ કસનદાસ કાપડિયા
२५) ,, કસનદાસ પુનેમચંદ કાપડિયા
२५) ,, ત્રીભોવનદાસ બીજલાલ
२१) ,, છોટાલાલ ઘેલાભાઈ ગાંધી અંકલેશ્વર
३५) ,, કાંતીલાલ હરગોવનદાસ
११) ,, નરોતમદાસ જગજીવનદાસ વ્યારા
५) ,, ભાઇચંદ પ્રેમચંદ
५) ,, જીવરાજ ગુલાબચંદ ગાંધી બી. એ

४५५)

આ પ્રમાણે સ્વાગતનું કાર્ય સ્વાગત કમીટીએ ઉપાડી લીધું હતું અને સર્વેને ઉતરવા માટે ચંદાવાડી ઉપરાંત શેઠ લુરીયાભાઇનો "જીવન નિવાસ" અને સર પરશોતદાસની આલીશાન વાડીઓ કંઇપણ બદલા વગર મળી હતી (જે માટે એ બંને વાડીના વ્યવસ્થાપકોની સ્વાગત કમીટી અત્યંત આભારી થઇ છે)

પરિષદ માટે 'આર્ય સમાજ' હૉલ લેવામાં આવ્યો હતો જેને વાવટા, તોરણો, કમાનો, સુશોભિત જરી કામના બોર્ડો, પરિષદના ઉદ્દેશાત્મક વાકયો વગેરેથી અતીવ સુશોભિત કરવામાં આવ્યો હતો.

તા. ૩૧ની સવાર સુધીમાં આશરે ૩૦૦ પ્રતિનિધિઓ આખા ગુજરાતના વીસા મેવાડા, વીશાહુમડ, દશા હુમડ, નૃસિંહપુરા અને રાયકવાળ જ્ઞાતિના સુરત આવી પહોંચ્યા હતા, જેના ગામનાં નામો નીચે મુજબ છે—

મુંબાઇ, સુરત, અંકલેશ્વર, આમોદ, પીપલાવ, ઇસિણાવ, ઉંટેલા, કરમસદ, ધાયજ, છાણી, જલાલપુર, દાવોલ, નાર, પેટલાદ, પંડોલી, બાકરોલ, ઓચાસણ, બોરસદ, ભોજ, મહેળાવ, માજલપુર, રૂદેલ, વડુ, વડોદરા, વલાસણ, વેડચ, ભરૂચ, સોજીત્રા, છાણી, ઇડર સાયમા, કરમસદ, ઓરાણ, પાંતિજ, ઉજેડિયા, સાંબલી, રાનકુવા, જાંબુડી, અલવા, લાકરોડા, જાદર, જામલા, સાણોદા, વદરાડ, કુકડીયા, કુકેરી, માંડવી, મહુવા, કેરવાડા, કાનમ, બુહારી, ઝંહેર, નરસીપુર, વ્યારા, ડબકા. કલોલ, અમદાવાદ, નરોડા, વાંઝ, અસલાલી, સુદાસણા, પરીયેજ, ભાવનગર, વગેરે વગેરે.

પ્રમુખની પધરામણી.

પ્રમુખ પદ માટે નક્કી કરાયલા પ્રમુખ શેઠ તારાચંદ નવલચંદ ઝવેરી મુંબાઇ (કે જેઓ સ્વર્ગીય દાનવીર જૈન કુળભૂષણ શેઠ માણેકચંદ જે. પી. ના સુયોગ્ય ભત્રીજા થાય છે, તેઓ સાહેબ) તા. ૩૦ મી સવારે સુરત સ્ટેશને આવી પહોંચ્યા હતા, જેમનો આશરે ૧૦૦ ભાઇ બ્હેનોએ ઉત્તમ સત્કાર કર્યો હતો, અને મોટરોમાં સરઘસ રૂપે ચંદાવાડીમાં લાવવામાં આવ્યા હતા. દરમ્યાનમાં સ્વાગત સભાપતિ શ્રી. છગનલાલ ઉત્તમચંદ સરૈયાએ, જનરલ સેક્રેટરી મુળચંદ કસનદાસ કાપડિયાએ, શેઠ છોટાલાલ ઘેલાભાઇ ગાંધી તરફથી, વીસાહુમડ પંચ તરફથી શા. મગનલાલ પાનાચંદે નૃસિંગપુરા પંચ તરફથી પ્રેમચંદ હરગોવનદાસે ત્રીભોવનદાસ ડાહ્યાભાઇ ટોપીવાલા, સરૈયા બ્રધર્સ જૈની, ને કાંતીલાલ હરગોવનદાસે હાર તોરાથી સત્કાર કર્યો હતો અને આ પ્રસંગે સુરતના દિગંબર જૈન ભાઇઓનો ઉત્સાહ સમાતો નહોતો. પ્રમુખ સાહેબની સાથે ખાસ કરીને શેઠ ઠાકોરદાસ ભગવાનદાસ

ઝવેરી, શ્રી. મોહનલાલ કાળીદાસ સોલીસીટર, શા. શાંતીલાલ હરજીવનદાસ સોલીસીટર ને મનસુખલાલ ચોકસી સોલીસીટર ખાસ પધાર્યા હતા.

ભોજન વ્યવસ્થા.

ચંદાવાડીમાં તા. ૩૧મીએ વીશા હુમડ પંચ સુરત તરફથી તેમજ તા. ૧લીએ પરિષદ સ્વાગત કમીટી તરફથી ભોજનની વ્યવસ્થા થઇ હતી જેમાં ઝહેર નરસિંહપુરના મગનલાલ હરજીવનદાસના ઝગડા માટે ઝહેર, કલોલ, આમોદ વગેરેના નસિંહપુરા ભાઇઓ તરફથી સાથે ન બેસવાની ઘણીજ ખેંચતાણો થઇ હતી પણ અંતમાં પ્રમુખ સાહેબ, મોતીચંદ તાસવાલા, દલપતભાઇ જેચંદભાઇ વગેરેના અથાગ પ્રયત્નથી સમાધાની થઇ હતી ને સર્વે સાથે બેસીને જમ્યા હતા. અને હવે એ બંને પક્ષો ઉદારતા દર્શાવશે તો ઝહેર નરસિંહપુરનો ઝઘડો હવે પુરેપુરો પતી જશે એમ પૂર્ણ સંભવ છે. ભોજનની વ્યવસ્થામાં શા. અમરચંદ ઉત્તમચંદ, તથા ભાઇચંદ પ્રેમચંદે કામ ધંધો મુકી ભારે જહેમત ઉઠાવી હતી.

પરિષદની પ્રથમ બેઠક.

તા. ૩૧મી ડીસેંબર રવિવાર ને પોષ શુદ ૧૫ ની બપોરે ૩ વાગતે પરિષદની પ્રથમ બેઠક આર્ય સમાજ હોલમાં શરૂ થઇ હતી જેમાં મુંબાઇથી ખાસ પધારેલા શેઠ અમરચંદ ચુનીલાલ જરીવાલા, શેઠ ભાઇચંદ રૂપચંદ, શેઠ લલ્લુભાઇ લખમીચંદ ચોકસી સાહિત્યરત્ન પં. દરબારીલાલજી ન્યાયતીર્થ, જૈન મહિલારત્ન શ્રીમતી લલિતા બ્હેન, શ્રીમતી ધર્મપ્રચારિકા નાની બ્હેન સંઘવી, શા. ગમનલાલ ખુશાલચંદ સુતરવાલા, શેઠ ભગવાનદાસ ઝવેરદાસ, શેઠ મંગળદાસ નાથાભાઇ, શેઠ જીવણલાલ વખારિયા, શેઠ સોભાગચંદ જેઠાભાઈ વગેરે ખાસ નજરે પડતા હતા. સ્વાગતના સભ્યો, પ્રતિનિધી, વીઝીટર, પ્રેસ રિપોર્ટર તથા સ્ત્રી વર્ગ માટે ખાસ જુદી જુદી બેઠકો રખાઇ હતી જેની વ્યવસ્થા માટે જયંતીલાલ ગજીવાલા, જયંતીલાલ ચુડાવાલાને, જયંતીલાલ રેશમવાલાએ, ખાસ મહેનત ઉઠાવીને વ્યવસ્થા સુંદર રીતે રાખી હતી.

કાર્યનો પ્રારંભ થતાં સહિત્યરત્ન પં. દરબારીલાલજી ન્યાયતીર્થે નમઃ શ્રી વર્દ્ધમાનાયથી માંડીને મંગલાચરણ વિવેચન પૂર્વક કર્યું હતું. જે પછી બાળિકા સમાજ સુરતની બાળિકાઓએ વાજાં સાથે સ્વાગત ગાયન ગાયું હતું. એ પછી શ્રી. મુલચંદ કસનદાસ કાપડીયાએ આ પરિષદની આવશ્યકતા અને એનો ઉદ્દભવ કેવી રીતે થયો તે પર અસરકારક વિવેચન કર્યું હતું. બાદ સ્વાગત પ્રમુખ **શેઠ છગનલાલ ઉતમચંદ સરૈયાએ** સ્વાગતનું ભાષણ બુલંદ અવાજે વાંચી સંભળાવ્યું જે આખું ભાષણ તેમના ચિત્રસાથે આ અંકમાં વ્હેચવામાં આવ્યું છે.

એ પછી પ્રમુખપદ માટે શા. મોહનલાલ કાળીદાસ સોલીસીટરે શ્રીમાન શેઠ તારાચંદ નવલચંદ ઝવેરી માટે વિવેચન પૂર્વક દરખાસ્ત મુકી હતી જેને શા. ગમનલાલ ખુશાલચંદ સુતરવાળા, લલ્લુભાઇ લક્ષ્મીચંદ ચોકસી, શાંતીલાલ હરજીવનદાસ શાહ સોલીસીટર, શેઠ ભગવાનદાસ ઝવેરદાસ, જીવણલાલ ગોપાળદાસ વખારિયા, નાગરદાસ નરોતમદાસ, કેવળભાઇ રાવજી ને જીવરાજ ગુલાબચંદ ગાંધી બી. એ. એ ટેકો આપ્યો હતો, જે પછી શેઠ તારાચંદ નવલચંદ ઝવેરીએ તાળીઓના હર્ષનાદ વચ્ચે પ્રમુખસ્થાન સ્વીકારતાંની સાથે સ્વાગત પ્રમુખ શેઠ સરૈયાએ પ્રમુખને હારતોરા અર્પણ કર્યા હતા.

એ પછી નવીનતલાલ ખુશાલચંદે પ્રમુખના સ્વાગતનું ગીત ગાયું હતું. બાદ પ્રમુખ સાહેબે પોતાનું ભાષણ અપાર શાંતિ વચ્ચે ઉત્તમ રીતે વાંચી સંભળાવી શ્રોતાઓના મન હરી લીધા હતા. ભાષણ દરમ્યાન અપૂર્વ શાંતિ હતી અને વચ્ચે વચ્ચે તાળીઓના હર્ષનાદ થતા હતા.

એ પછી નીચે મુજબ બે ઠરાવો થયા હતા.

ઠરાવ ૧ લો.

આ પરિષદ ઠરાવ કરે છે અને નીચેના ગૃહસ્થોની એક કમીટી નીમે છે તેમણે ગુજરાત દિગંબર જૈન પરિષદના બંધારણનો સ્વાગત સમિતિએ મંજુર કરેલો ખરડો તપાસી આ પરિષદને પોતાના અભિપ્રાય સાથે રજુ કરવો.

પ્રમુખ સાહેબ, મોહનલાલ કાળીદાસ સોલીસીટર, શાંતિલાલ હરજીવનદાસ સોલીસીટર, માસ્તર જીવરાજ ગુલાબચંદ ગાંધી બી. એ.; છોટાલાલ ઘેલાભાઇ ગાંધી, શા. મનસુખલાલ સોલીસીટર, કાળીદાસ જેશીંગભાઈ, જીવણલાલ ગોપાળદાસ વખારીયા (કલોલ), ગમનલાલ ખુશાલચંદ સુતરવાળા, જયંતીલાલ સાકરચંદ ચુડાવાલા ને ચીમનલાલ નરસહદાસ વકીલ-અમદાવાદ.

દરખાસ્ત—છોટાલાલ ઘેલાભાઇ ગાંધી અંકલેશ્વર.
ટેકો—મુળચંદ કસનદાસ કાપડિયા,-સુરત.

ઠરાવ બીજો.

આ પરિષદ પ્રાથમિક હોવાથી વિષય વિચારીણી (સબજેકટ કમીટી) ના સભ્યોની સંખ્યા માટે કોઇ નિયમ નથી તેથી સ્વાગત સમિતિની ભલામણ મુજબ સ્વાગત સમિતિના સભ્યો અને પ્રતિનિધિઓની જે સંખ્યા આવી છે, તેના કોમવાર ચોથા હિસ્સાના સભ્યો તેમજ પ્રમુખ શ્રી અને તેમના તરફના ૫ સભ્યો અને સ્વાગત સમિતિના પ્રમુખ તેમજ ઉપ પ્રમુખ મળી જે સંખ્યા થાય તેટલા સભ્યોની વિષય વિચારિણી સમિતિ નક્કી કરે છે, અને તે પ્રમાણે સબજેકટ કમીટી બને છે.

પરિષદમાં આવેલા પ્રતિનિધિ ભાઇઓમાંથી પુરા ચાર પ્રતિનિધિએ ૧ મુજબ સભ્યનું નામ લખી તેની નીચે તેને ચુંટનાર પ્રતિનિધિઓની સહીયો તેમના પ્રતિનિધિ નંબર સાથે લખી સાંજે ૬।। પહેલાં મંત્રીને ચંદાવાડીમાં આપવું. તે પછી આવનાર તેમજ નંબરમાં ભુલ કરનાર સભ્યનું નામ સ્વીકારવામાં આવશે નહિ. એટલે દરેક કોમે અનુક્રમે હાજર પ્રતિનિધિયોમાંથી ચોથા ભાગના નામો ચુંટીને એક કલાકમાં મહામંત્રીને ચંદાવાડીમાં આપવા. અને સબજેકટ કમીટી ચંદાવાડીમાં સાંજના ળા વાગતે મળશે.

દરખાસ્ત— શા. જીવરાજ ગુલાબચંદ ગાંધી બી. એ. સુરત.
ટેકો—શા. નાગરદાસ નરોતમદાસ સંઘવી આમોદ.
,, શા. છોટાલાલ ઘેલાભાઇ ગાંધી—અંકલેશ્વર

આ બે ઠરાવો થવા પછી પરિષદની પ્રથમ બેઠકનું કામ સાંજે ૫ વાગતે પૂર્ણ થયું હતું.

સબજેકટ કમીટી.

ઠરાવ પ્રમાણે જનરલ સેક્રેટરી પાસે નીચે મુજબના નામો સબજેકટ કમેટીના સભાસદો તરીકે આવી ગયા હતા.

૧ શેઠ તારાચંદ નવલચંદ ઝવેરી મુંબાઇ
૨ ફુલચંદ છગનલાલ સુરત
૩ ડાહ્યાભાઇ ઘેલાભાઇ ,,
૪ ચંદ્રવદન છગનલાલ ,,
૫ મૂળચંદ કસનદાસ કાપડિયા ,,
૬ ચીમનલાલ દીપચંદ ,,
૭ જયન્તિલાલ રતિલાલ રેશમવાલા ,,
૮ ગમનલાલ ખુશાલચંદ સુતરવાલા ,,
૯ પંડિત પરમેષ્ઠીદાસજી ન્યાયતીર્થ ,,
૧૦ જયન્તિલાલ સાકરચંદ ચુડાવાલા ,,
૧૧ જીવરાજ ગુલાબચંદ ગાંધી બી. એ. સુરત
૧૨ પ્રેમચંદ હરગોવનદાસ ,,
૧૩ જયન્તિલાલ ઠાકોરદાસ મોદી ,,
૧૪ નરોતમદાસ જગજીવનદાસ વ્યારા
૧૫ જયંતિલાલ છગનલાલ ગજીવાલા સુરત
૧૬ છોટાલાલ ઘેલાભાઇ ગાંધી અંકલેશ્વર
૧૭ શેઠ ભગવાનદાસ ઝવેરદાસ સોજીત્રા
૧૮ નગીનલાલ ફુલચંદ પાદરા
૧૯ શંકરલાલ જેચંદભાઈ પાદરા
૨૦ અંબાલાલ ત્રીભોવનદાસ ભોજ

૨૧ અંબાલાલ લલ્લુભાઇ
૨૨ વકીલ મોહનલાલ ચુનીલાલ પેટલાદ
૨૩ નવનીતલાલ ઠાકોરદાસ મોદી સુરત
૨૪ ગમનલાલ વજેચંદ ચુડાવાલા
૨૫ નાથુભાઇ નેમચંદ ચોકશી અંકલેશ્વર
૨૬ જનકલાલ નાથુભાઇ ,,
૨૭ ભુરાભાઇ મુળચંદ ,,
૨૮ દેવચંદ ફુલચંદ માંજલપુર
૨૯ વસ્તુપાળ શંકરલાલ આમોદ
૩૦ રતિલાલ નરોતમદાસ વ્યારા
૩૧ ચુનીલાલ ધરમચંદ આમોદ
૩૨ નાગરદાસ નરોતમદાસ આમોદ
૩૩ ઉદેચંદ બહેચરદાસ
૩૪ ફુલચંદ રઘનાથદાસ પેટલાદ
૩૫ તલકચંદ જેલાભાઇ તાસવાલા સુરત
૩૬ અમરચંદ ચુનીલાલ જરીવાલા મુંબાઇ
૩૭ મણીલાલ ચુનીલાલ
૩૮ ગાંધી કેશવલાલ ખુશાલચંદ
૩૯ લલ્લુભાઇ પદમશી
૪૦ કાળીદાસ જેસંગભાઇ બીનકીશોરદાસ બોરસદ
૪૧ હેમેન્દ્રલાલ નેમચંદ સુરત
૪૨ નવનીતલાલ ખુશાલચંદ સુરત
૪૩ ધનસુખલાલ પ્રેમચંદ ,,
૪૪ મણીલાલ તારાચંદ
૪૫ ઉગરચંદ અમથાલાલ નરસીંહપુર
૪૬ બાલુભાઇ નેમચંદ મુંબાઇ
૪૭ ચુનીલાલ શીવલાલ કુડસદ
૪૮ કેવળદાસ રાવજી ઇડર
૪૯ ખીમચંદ કીલાભાઇ કરમસદ
૫૦ મણીલાલ ચુનીલાલ મહેલાવ
૫૧ મુલચંદ જેચંદ સુદાસણા
૫૨ કાલીદાસ જેશીંગભાઇ બીનભૈજી બોરસદ
૫૩ શેઠ મુળચંદ હરીલાલ સોજીત્રા
૫૪ ઠાકોરભાઇ ભગવાનદાસ ઝવેરી, મુંબાઇ
૫૫ મોહનલાલ કાલીદાસ સોલીસીટર
૫૬ શાન્તીલાલ હરજીવનદાસ ,, મુંબાઇ
૫૭ ચીમનલાલ નરસીંહદાસ વકીલ અમદાવાદ
૫૮ મનસુખલાલ સોલીસીટર મુંબાઇ
૫૯ જમનાદાસ પ્રભુદાસ ઝહેર
૬૦ જીવણલાલ ગોપાલદાસ વખારિયા કલોલ
૬૧ ચંદુલાલ તારાચંદ
૬૨ ફુલચંદ છગનલાલ
૬૩ સોભાગચંદ જેઠાભાઇ આમોદ
૬૪ હરીલાલ વીમળશી નરોડા
૫૫ કેશવલાલ કસ્તુરચંદ
૬૬ ચીમનલાલ કેવળદાસ
૬૭ નાથાલાલ મોતીલાલ
૬૮ મંગળદાસ નાથાભાઇ વેડચ
૬૯ નાથાભાઇ પરશોતમ
૭૦ જીવણલાલ હલોચંદ ઓચાસણ
૭૧ ફુલચંદ હરીભાઇ
૭૨ સેવકલાલ દલપતભાઇ
૭૩ મુળચંદ નાનચંદ
૭૪ તલકચંદ દલીચંદ
૭૫ ભીખાભાઇ બહેચરદાસ

સબ જેકટ (વિષય વિચારીણી) કમીટી ચંદાવાડીના હોલમાં રાત્રે ૯ ૨ાા વાગતા સુધી શાંતિ પૂર્વક મળી હતી, જેમાં વાદવિવાદ પૂર્વક લગભગ ૧૩ ઠરાવો પરિષદમાં રજુ કરવા માટે સર્વાનુમતે કે વધુમતે મંજુર થયા હતા. આ કમેટીમાં અનેક વકીલ સોલીસીટરોની હાજરી વચ્ચે થયેલી ઉત્તમ કારવાઇથી ગુજરાતના દિ. જૈનોને ઘણું જાણવાનું શીખવાનું ને નિયમીત કાયદા પૂર્વક કાર્ય કરવાનો પરિચય મળ્યો હતો જેની મુક્ત કંઠે પ્રશંસા થતી હતી.

પરિષદની બીજી બેઠક.

પરિષદની બીજી બેઠક તા. ૧ જાનેવારી સવારે ૯ વાગતે શરૂ થતાં શ્રીમતી જૈન માહિલારત્ન લલિતાબ્હેને મંગલાચરણ કર્યું હતું જે પછી જનરલ સેક્રેટરી શ્રી મુળચંદ કસનદાસ કાપ-

ડયાએ પરિષદ માટે આવેલા સંદેશાઓ વાંચી સંભળાવ્યા હતા જેનાં નામો નીચે મુજબ છે.–

૧	શેઠ વ્રજલાલ કેવળદાસ	ભાવનગર
૨	પં. છોટેલાલ પરવાર	અમદાવાદ
૩	શા. જીવરાજ ઉગરચંદ ગાંધી	સોનાસણ
૪	શા. ચુનીલાલ નાનચંદ	નનાનપુર
૫	શા. પં. દીપચંદજી વર્ણી	દાહોદ
૬	શા. અંબાલાલ ત્રીભોવનદાસ શાહ	ભોજ
૭	શા. કાળીદાસ નાનચંદ મીઠાવાલા	ઇડર
૮	શા. પં. સુંદરલાલજી	ઉજેડીયા
૯	શા. કેશવલાલ ત્રીભોવનદાસ	વડોદરા
૧૦	શા. ત્રીભોવનદાસ વલ્લભદાસ	કાણીસા
૧૧	શા. હેમચંદ પીતાંબરદાસ	કપડવંજ
૧૨	શા. સાકેરચંદ જગજીવનદાસ	નરોડા
૧૩	શા. ચીમનલાલ જીવાભાઈ	કરમસદ
૧૪	શા. દોશી મોતીચંદ પદમસી	ઉજેડિયા
૧૫	શા. રતીલાલ કેશવલાલ શાહ	ભરૂચ
૧૬	શા. રતીલાલ મગનલાલ દેશાઇ વકીલ	વડોદરા

વગેરે વગેરે. ઉપલા સંદેશાઓ પૈકી શેઠ વ્રજલાલભાઇ કેવળદાસનો લાંબો સંદેશો અત્યંત લાગણી પૂર્વક ને પરિષદના કાર્યને અતીવ ઉત્તેજક હોવાથી તેનો ખાસ ભાગ નીચે પ્રકટ કરીયે છિયે.

સરવે મુરબ્બી શ્રી. મુલચંદ કશનદાસ કાપડીયા ત્થા શ્રીયુત સ્નેહી છોટાલાલભાઇ વગેરે મું. સુરત. આપ રૂબરૂ મુંબઇ આવ્યા બાદ મુબઇનો સાથ સારો જાણી ખુશી થયો છું. આ સાથે અત્રેનું પ્રતિનિધી ફાર્મ બીડયું છે જે બંન્ને જણ મુંબઇ ગયેલ છે ને ત્યાં આવશે. મારે આવવાનું ખાસ છે. હું મારી ફરજ સમજુ છું ને પ્રથમ પાયા ચણવામાં મહેનત સૌએ કરવી પડે તેમાં આપના પ્રેમ આગ્રહ અંગે મારૂં મન વળગી રહયું છે પણ કુદરતનો ક્રમ જુદો છે. સારાને સો વીઘ્ન રૂપ તેમ મારા ઘર આગળ બૈરાને નીમોનીયા થયેલ છે જેથી હું લાચાર બન્યો છું ને મારી ઉમેદ મારા મનમાં રહા જેવું છે જેથી હું આવી શકીશ નહીં તે માટે મને બહુજ દીલગીરી થાય છે. આપ ભાઇઓએ જે શ્રમ ઉઠાવી કામ હાથ લીધું છે તેમાં સફળ નીવડો તેમ પરમાત્મા પ્રત્યે પ્રાર્થના છે. જરૂર નીસ્વાર્થ આત્મ ભોગ ને પરોપકાર વૃતિથી ઉપાડેલ કામ મુશ્કેલીઓ વેઠતાં છતાં સફળજ નીવડે છે માટે જે ઉમેદથી કામ ઉપાડયું છે તેમાં પાછા હઠશો નહીં તેની મને ખાત્રી છે. આ પરીષદની સ્થાપના કહો, એકત્ર સંગઠન ગુજરાત દિગમ્બર જૈનોનું ઉન્નતિનું મુહુર્ત કહો કે ગમે તે કહો પણ જરૂર આ ગુજરાત સમસ્તનું ગૌરવ વધારનાર ઐતિહાસીક સોનેરી દીવસ નોંધાશે માટે મત કેળવી એક સંપીથી આ કાર્ય આગળ ધપે તેમ સુંદર ઉકેલ બાહોશ નાવીકો મળી લાવશો એવી આશા રાખું છું. હાલ વરસોથી આવું એકપણ સંગીન કાર્ય ગુજરાતના દીગમ્બર જૈનો માટે થયું નથી તેવું આ ઉપાડેલ છે. જેમાં દશા, વીશા, નરસીંહપુરા મેવાડા કે રાયકવાલ કોઇ જાતનો ભેદ ભાવ ન રહેતાં દિગમ્બર જૈન ધર્મનોજ વિજય કેમ થાય, સામાજીક ધાર્મિક દ્રષ્ટિથી કેમ ઉન્નતી થાય ને પરસ્પર ભેદભાવ મટી ઐકય સંપ વધી રોટી વહેવાર બેટી વહેવાર દીગંબર જૈનોમાં થાય તે માટે શુદ્ધ અંતઃકરણથી પ્રચાર થવો જુવે. વધુમાં આ પરીષદના સુકાની શ્રીમાન શેઠ તારાચંદજી જેઓ દાનવીરના પ્રસિદ્ધ કુટુંબી ને જેઓના કુટુંબ તરફથી દિગંબર સમાજ માટે સર્વસ્વનો ભોગ અપાઇ આપણા ઉપર મહાન ઉપકાર થયેલ છે જેથી તેમની આગેવાની હેઠળ જરૂર ગુજરાતનું સારૂં પરિણામ આવશે, તેમ હું ઇચ્છું છું. સુરતના કહો કે ગુજરાતના કહો દશા હુમડભાઇઓ જો સંકુચીત દ્રષ્ટીથી જોઇ આનો હેતુ ન સમજતા હોય તો સમજાવા પ્રયત્ન કરશોજી. લખવા જતાં વધુ લખી આપનો અમુલ્ય મહેનતનો ટાઇમ ને કેટલીક તૈયારીની મહેનત કરવામાં સહાયભુત થવા બદલ કંટાળા રૂપ થવા

નથી ઇચ્છતો પણ અનેક રીતે આપને પરમા-ત્મા જશ-સફળતા આપે એમ ઇચ્છું છું.

લી૦ **વ્રજલાલ કેવળદાસ**ના સવિનય પ્રણામ.

આ ઉપરાંત આપનો બીજો સંદેશો તથા ઉન્નતિ યા અવનતિ નામે લેખ પણ મળ્યો હતો જે નીચે મુજબ છે:—

"ગુજરાત દિગમ્બર જૈન પરિષદ સુરત મુકામે મળી શ્રીમાન શેઠ તારાચંદ નવલચંદ ઝવેરીના પ્રમુખપણા હેઠળ ધાર્મિક, સામાજીક, આર્થિક ઉંન્નતિના ઉપાયો યોજે તેમાં મ્હારી સહમતી ધરાવું છું ને પરિષદની સફળતા ઇચ્છું છું કે ગુજરાતના હીત માટે આ સંસ્થા ભવિષ્યમાં સમાજની ઉન્નતી માટે એક મહાન ઉપયોગી થઇ પડશે. એજ."

લી. **વ્રજલાલ કેવળદાસ**(ભાવનગર)ના યથા.

ઉન્નતિ યા અવનતિ.

સુરતમાં ગુજરાત દિગમ્બર જૈન પરિષદ મળનાર છે ને સામાજીક આર્થીક ધાર્મીક ઉન્નતિ કરવા સારૂ યોજના રૂપ પ્રયાસો કરી ગુજરાતના દિગમ્બર જૈનમાં ઐકય વધી કાંઇપણ માર્ગદર્શક સાધનોના મુદ્દા નકી કરવા સારૂ અને ગુજરાતના દિગમ્બર જૈનની ઉન્નતિનું એક પણ સાધન જે હૈયાત નહોતું તે એક પરિષદ રૂપે એકત્ર સૌ બંધુ મળી વિચારની આપ લે કરી એક મહાન સંસ્થાનો પાયો નાખવાનું જ્યારે મુહુર્ત થાય છે ત્યારે જરૂર અંતઃકરણ આનંદથી ઉભરાય છે કે આ પણ સુવર્ણ અવસર ગુજ-રાતના સમસ્ત દિગમ્બર બંધુઓ માટે સોનેરી અક્ષરે ઇતિહાસ લેખાશે.

હવે બંધુઓ, આ અવસરે આપણી શું ફરજ છે કે **જ્ઞાતિ પ્રથાનો મૃત્યુ ઘંટ, આપણા** સમાજમાં જ્ઞાતિઓ અને તેની પણ પેટા જ્ઞાતિઓ અને તેના પણ પેટા વિભાગ છે અને તેના વિભાગમાંય ગોળ અને એકડા યા તડ પક્ષ જેવા વાડાઓ બાંધી ક્ષેત્ર એકદમ સંકુચિત કરી નાખ્યું છે તેથી વર કન્યાની યોગ્ય પસંદગી માટે ખૂબ તકલીફ વેઠવી પડે છે અને એ ગોળ એકડાના બંધન એટલા બધા કડક ને જલદ હોય છે કે અનેક માબાપોને મરજી વીરૂદ્ધ પણ પોતાના બાળકોને ગોળમાજ પરણાવવા પડે છે. પછી વર કે કન્યા યોગ્ય મળો કે ન મળો તેની પરવા ઓછી કરાય છે છતાં એ કોઇ એ વાડામાંથી છટકવા પ્રયાસ કરે તો જ્ઞાતિ અગ્રેસરો તરફથી જ્ઞાતિ બહિષ્કાર જેવા કડવા ફળ ભોગવવા પડે છે મનુષ્યની સ્વતંત્રતા હણાય છે અને ઘણે ઠેકાણે યોગ્યાયોગ્યનો વિચાર સરખોએ કર્યા સીવાય લગ્નના લ્હાવા લુંટાય છે. પરિણામે ઘણાના જીવન વેડફાય છે વા જીવતર ધુળમાં મેળવાય છે.

વ્હાલા બંધુઓ, ટુંકમાં સમજો તો એકજ ધર્મ એકજ માર્ગના અનુયાયીમાં હવે ફાંટા શેના સંભવે? અરે હતાજ કયારે તેનો તો જરા ઉંડા ઉતરી વીચાર કરો? માટે હવે ઉંઘવાનો વખત નથી. અભિમાન રાખી ખોટા ઓઠા હેઠળ ફાંકો પણ રાખી અવળા અવનિતીના માર્ગો ગ્રહણ કરવાનો સમય પણ નથી કે અમને શું છે. અમારા વાડામાં અમારે કન્યાની વધુ છત છે, એકત્ર થશું તો કન્યા બીજા વાડાવાળા લઇ જશે તેમ બીજા વાડાવાળો માને કે અમો સબળ અને શ્રીમંત છીએ જેથી એકત્ર થવાની શું પરવા છે આવા મિથ્યા અભિમાન રાખી વીશા દશા, નૃશંગપુરા, મેવાડા, રાયકવાલ આદિ કહેવાતા મૂળ તો દિગમ્બરજ જેથી કોઇ જાતનો ભેદ રાખ્યા વગર પરસ્પર એક સંપીથી સમગ્ર એકજ ગોળ સ્થાપી પરસ્પર પ્રેમથી જેવો રોટી વહેવાર છે તેવોજ બેટી વહેવાર સ્થાપવો જુવે.

બંધુઓ, દિગમ્બર કોમની ઘટતી જતી થાય છે, અરે ચોમેરથી પડતીનાજ વાદળો દેખાય છે, અંધકારમાં કાંઇ માર્ગ નજરે પડતો નથી, તેવા સમયે આ સુવર્ણ માર્ગ સંગઠનનો યોજવા તક

મળી છે તો હાથથી જવા ન દેવી. સ્થળ સમય અને સંજોગ બધું કુદરતે અનુકુળ પરોપકારી બંધુઓના પ્રયાસથી સાંપડયું છે તેમાં વળી જેના નાવિક ગુજરાતનુ હિત હૈયડે ધરાવનાર દાનવીર પરોપકારી જૈન કુલ ભુષણ સ્વર્ગીય શેઠ માણેકચંદજીના ભત્રીજા શ્રીમાન શેઠ તારાચંદ નવલચંદ જવેરી આપણને મળ્યા છે. આપણા ગુજરાત ઉપર જેમનો ઉપકાર ન ભુલી શકાય તેવો છે. તેના યથ ઠીંચીત્ ૠણ બદલ આ શુભ પ્રસંગને વધાવી લઇ સમાજની ઉન્નતિના ઉપાયો યોજવા સૌ એક સંપીથી એકમત થશો.

વળી જે સ્થળેથી બ્રીટીશ સલ્તન્તની કોઠી નખાઇ આ હીંદુસ્થાનમાં જમાવટ થઇ છે તે સ્થળેથી તેવીજ રીતે ગુજરાત દિગમ્બર જૈન સમાજની ઐક્ય પરિષદ સ્થપાઇ ચીર સ્થાઇ સ્મરણ રીતે કાયમ રહે અને સમાજના વાડા કુશંપ તોડી ધાર્મીક સામાજીક આર્થીક ઉન્નતિ કેમ વધે તેવો માર્ગ ગ્રહણ કરવાનો સુરત દિગંબર જૈન બંધુઓ એક સંપથી ગુજરાત માટે કરી બતાવશે એવી આ સમય માટે જરૂર હું આશા રાખુ છું એજ. સેવા અભિલાષી સેવક પરિષદની સફળતા ઇચ્છતો.

શા. વ્રજલાલ કેવળદાસ સુતરીયા.
ભાવનગર, તા. ૩૦-૧૨-૩૩

સંદેશાઓ વંચાવા પછી નીચે મુજબ ઠરાવો શાંતિથી ને ઘટતાં વિવેચનો પૂર્વક પસાર થયા હતા:—

ઠરાવ ૩ જો—જ્ઞાતિ ઝઘડા નિકાલ કમીટી.

ગુજરાતની દિગંબર જૈન નાતિઓમાં જ્યાં જ્યાં સામાજીક ઝઘડાઓ હોય ત્યાં ત્યાંના પંચોને આ પરિષદ વિનંતિ કરે છે કે તેવા ઝઘડાઓનો સલાહસંપથી નીકાલ કરવો. એવા નીકાલ તે તે પંચો પાસે કરાવવા બનતો પ્રયાસ કરવા નીચેના ગૃહસ્થોની કમીટી નીમવામાં આવે છે. સદરહુ કમીટીને એ કાર્ય માટે યોગ્ય લાગે તેવા સદ્ગૃહસ્થોને ઉમેરવાની સત્તા આપે છે.

કમીટીના નામો—શેઠ તારાચંદ નવલચંદ ઝવેરી (મુંબાઇ), કાલીદાસ જેશીંગ બીન કીશોરદાસ (બોરસદ), શેઠ ભગવાનદાસ ઝવેરદાસ (સોજીત્રા), શા. જીવણલાલ ગોપાળદાસ વખારિયા (કલોલ), શા. નાગરદાસ નરોતમદાસ સંઘવી આમોદ, શેઠ વૃજલાલભાઇ કેવળદાસ ભાવનગર છોટાલાલ ઘેલાભાઇ ગાંધી અને મુળચંદભાઇ કાપડિયા.

ઠરાવ મુકનાર—**શા૦ મનસુખલાલ બહેચરદાસ ચોકશી સોલીસીટર-મુંબઇ.**
ટેકો આપનાર—**શા૦ નાગરદાસ નરોતમદાસ**

ઠરાવ ૪ થો—વિવાહ (સગપણ) અને લગ્નની હદ.

આ પરિષદ નીચેની બાબતોને સંમતિ આપે છે અને એ બાબતો પસાર કરવા દરેક પંચને ભલામણ કરે છે.

(૧) દશ વર્ષની ઉમર પુરી થતા સુધી કન્યાની સગાઇ કરવી નહીં.

(૨) કન્યા કરતાં વરની ઉમર ઓછામાં ઓછી ૪ વર્ષ વધુ હોવી જોઇએ.

(૩) વૃદ્ધ વિવાહ થતા અટકાવવા માટે વર કન્યા વચ્ચે ૨૪ વર્ષથી વધુ અંતર રાખવો નહીં.

ઠરાવ મુકનાર—**શા. મુળચંદ કરસનદાસ કાપડિયા.**
ટેકો આપનાર—**શા. જનકલાલ નાથુભાઇ અંકલેશ્વર.**

આ ઠરાવ પર શા. નવનીતલાલ ખુશાલચંદ મોદી સુરત, શા. મંગલદાસ નાથાભાઇ વેડચ વગેરેએ જુદી જુદી રીતે વિરોધ કર્યો હતો ને વાદાનુવાદ પછી શાંતિથી આ ઠરાવ માત્ર બે વિરૂદ્ધ મતે પાસ થયો હતો.

ઠરાવ ૫ મો-પેટા જ્ઞાતિઓમાં લગ્ન.

આ પરિષદ ગુજરાતી દિગંબર જૈનોની પેટા જ્ઞાતિઓ અરસ પરસ કન્યાની આપ લે કરે તેને ધાર્મિક તથા સામાજીક દ્રષ્ટિએ યોગ્ય અને આવશ્યક ગણે છે, અને તેવાં લગ્નોને ઉત્તેજન આપવા ભલામણ કરે છે. એ દ્રષ્ટિએ ગુજરાતી દિગંબર જૈનોની પેટા જ્ઞાતિઓમાં જે જે પંચો આ ઠરાવને સંમત થાય તેઓ અરસપરસ કન્યા આપ લે કરવાનાં દ્વાર માંહો માંહે ખુલ્લાં મુકે.

ઠરાવ મુકનાર—**શા૦ શાંતીલાલ હરજીવનદાસ**
ટેકો આપનાર—**શેઠ ભગવાનદાસ ઝવેરદાસ,**
,, **પં. દરબારીલાલજી ન્યાયતીર્થ**
,, **શા૦ ગમનલાલ ખુશાલચંદ**
,, **નરોતમદાસ જગજીવનદાસ**

આ ઠરાવ પર છુટથી ઘણાં વિવેચનો થયાં હતાં. એક બે ભાઇએ ઠરાવનો વિરોધ પણ કર્યો હતો છતાં છેવટે હર્ષનાદ વચ્ચે આ ઠરાવ માત્ર એક વિરૂદ્ધ મતે પાસ થયો હતો.

ઠરાવ ૬ ઠો-પંચનું બંધારણ.

આ પરિષદ ઠરાવ કરે છે કે નીચેના ગૃહસ્થોની એક કમેટી .પંચોના બંધારણનો ખરડો તૈયાર કરે અને આ પરિષદની બીજી બેઠક પહેલાં પ્રમુખને રજુ કરે.

કમીટીનાં નામો—૧-શેઠ કાળીદાસ જેશીંગભાઇ બીન ફીશોરદાસ-બોરસદ, ૨-શેઠ ભગવાનદાસ ઝવેરદાસ સોજીત્રા, ૩-શા. મોહનલાલ કાળીદાસ સોલીસીટર, ૪-શેઠ છોટાલાલ ઘેલાભાઇ ગાંધી અંકલેશ્વર, ૫-શેઠ તલકચંદ જેલાભાઇ તાસવાળા સુરત, ૬-શા. ચીમનલાલ નરસઇદાસ વકીલ અમદાવાદ, ૭-શેઠ જમનાદાસ પરભુદાસ ઝહેર. ૮-મોહનલાલ મગનલાલ બોરાણુ.

ઠરાવ મુકનાર—**છોટાલાલ ઘેલાભાઇ ગાંધી.**
ટેકો આપનાર—**શેઠ બાલુભાઈ નેમચંદ,**
,, **શા. ભુરાભાઇ મુળચંદ,**

ઠરાવ ૭ મો—વસ્તી પત્રક.

આ પરિષદ દરેક પંચને ભલામણ કરે છે કે પોતપોતાની કોમનું વસ્તી પત્રક તૈયાર નહિ હોય તો તૈયાર કરે અને મંત્રીને મોકલી આપે.

પ્રમુખ તરફથી.

ઠરાવ ૮ મો.

આ પરિષદ ઠરાવ કરે છે કે ગુજરાતમાં વસતા દિગંબર જૈનોને જીવન નિર્વાહના સાધનો મેળવવામાં પડતી મુશ્કેલી દુર કરવા માટે હાલના સંજોગો ધ્યાનમાં લેતા એક એવી ગુજરાત માધ્યમિક સંસ્થા સ્થાપન કરવી કે જે જીવન નિર્વાહના સાધનોથી વિમુખ હોય તેવી વ્યકિતઓના નામોની નોંધ કરી તેઓને મદદ કરવાને ઉપાયો યોજી શકે અને તેને માટે નીચેના ગૃહસ્થોની એક કમીટી નીમવી.

૧—શા૦ ગમનલાલ ખુશાલચંદ સુતરવાલા.
૨—શેઠ ઠાકોરદાસ ભગવાનદાસ ઝવેરી, મુંબાઇ.
૩—શા૦ જીવરાજ ગુલાબચંદ ગાંધી બી. એ.
૪—શા. શાંતીલાલ હરજીવનદાસ સોલીસીટર-મુંબાઇ.
૫—શા૦ મુલચંદ કરસનદાસ કાપડીયા—સુરત.

પ્રમુખસ્થાનેથી.

ઠરાવ ૯ મો—સ્વદેશી વસ્તુઓ.

આ પરિષદ ઠરાવ કરે છે કે સર્વે સામાજીક અને ધાર્મિક પ્રસંગોએ ખાદી તથા સ્વદેશી વસ્તુઓ વાપરવાની સર્વે "દિગંબર જૈનોને" વિનંતિ છે. **પ્રમુખસ્થાનેથી.**

ઠરાવ ૧૦ મો—શ્રાવિકાશ્રમોને ઉત્તેજન.

આ પરિષદ સર્વ પ્રતિનિધીઓ મારફત દરેક પંચને આગ્રહ પૂર્વક વિનંતિ કરે છે કે બ્હેનો માટે ગુજરાતના દિગંબર જૈનોમાં એક સરખી સંસ્કૃતિ લાવનાર એકજ ઉપાય સ્ત્રી કેળવણી છે અને એનું એક સાધન શ્રાવિકાશ્રમ છે ને એવા આશ્રમો મુંબાઇ, સોજીત્રા અને જાંબુડીમાં છે છતાં તેનો લાભ ગુજરાતી કન્યા સધવા કે વિધવા બ્હેનો નહીં જેવોજ લે છે માટે પોતાની આશ્રિત

બ્હેનોને વીતરાગભાવનાને અર્થે-ખાસ કરીને વિધવા બ્હેનોને જરૂર આ શ્રાવિકાશ્રમમાં મોકલે.
ઠરાવ મુકનાર—**શ્રીમતી લલિતાબ્હેન; મુંબાઈ**
ટેકો આપનાર—**શ્રી નાની બ્હેન સંઘવી.**

આ ઠરાવ પર વિધવા બ્હેનોનાં દુઃખોનું વિવેચન કરતાં શ્રીમતી લલિતાબ્હેને એવું હૃદયભેદક ભાષણ આપ્યું હતું કે શ્રોતાઓની આંખોમાં આંસુ આવી ગયા હતાં ને જ્યારે આપે એક પાંચ વર્ષની વિધવાની કથા સંભળાવી હતી ત્યારે તો સભામાં અત્યંત ક્ષોભ છવાઇ ગયો હતો. અંતમાં લલિતાબ્હેને દેવગઢ ક્ષેત્રમાં માહા વદ ૧ પર મળનારી ભારત દિ૦ જૈન મહિલા પરિષદના અધીવેશનની સર્વેને સુચના કરી હતી.

આ ઠરાવ પર જુદા રૂપે શા. શાંતીલાલ હરજીવનદાસ સોલીસીટરે વિરોધ કર્યો હતો પણ પ્રમુખ સાહેબના ખુલાસાથી આપે આપનો વિરોધ ખેંચી લીધો હતો અને આ ઠરાવ સર્વાનુમતે પાસ થયો હતો.

ઠરાવ ૧૧ મો—પાઠશાળાઓ.

આ પરિષદ દરેક ગામની પંચને ભલામણ કરે છે કે ગુજરાતમાં જ્યાં જ્યાં પાઠશાળાઓ બંધ પડી છે તે ચાલુ કરવી તથા જ્યાં જ્યાં ન હોય ત્યાં ચાલુ કરવા પૂર્ણ પ્રયત્ન કરવો.
ઠરાવ મુકનાર—**જનકલાલ નાથુભાઈ અંકલેશ્વર.**
ટેકો આપનાર—**છગનલાલ ઉત્તમચંદ સરૈયા**

ઠરાવ ૧૨ મો—ગુજરાત દિ. જૈન પ્રાંતિક સભા અને તેના ઉદ્દેશ ને નિયમો.

આ ઠરાવ ઘણો લાંબો છે જે આ અંકમાં આખો પ્રકટ કરવામાં આવ્યો છે, જે પૂર્ણ ધ્યાનથી વાંચી જવા તથા સભાના સભાસદ થવા દરેકને ભલામણ કરીએ છિયે પણ એના સારાંશ રૂપે એટલું તો અત્રે જણાવીએ છિયે કે-

(૧) આ પરિષદનું નામ હવે ગુજરાત દિ. જૈન પ્રાંતિક સભા રહેશે. (૨) એનો ઉદ્દેશ ગુજરાતના દિ. જૈનોનું સંગઠન કરવાનો તથા તેમની ધાર્મિક, આર્થિક, સામાજીક, શારીરિક, માનસિક ઉન્નતિ કરવાનો તથા બની શકે તે બાબતોમાં સમસ્ત જૈન સમાજમાં એકતા સ્થાપન કરવાનો છે તથા ખાસ ઉદ્દેશ પંચોના ઝઘડા પતાવવાનો તથા ગુજરાતી દિ. જૈન પેટા જ્ઞાતિઓમાં લગ્ન સંબંધ (અંતર્જાતીય વિવાહ) ચાલુ કરાવવાનો છે તથા એક માસિક પત્ર પ્રકટ કરવાનો છે. (જે માટે "દિગંબર જૈન" માસિક હવે એ સભાનું માસિક થાય છે.) (૩) ચુંટાયલા પ્રતિનિધીની મેમ્બર ફી વાર્ષિક રૂ. ૨) ને સાધારણ સભાસદની વાર્ષિક ફી. રૂ. ૫) છે. માનદ સભાસદ પણ લેવાશે તથા ૧૦૧) આપનાર લાઇફ (જીંદગી પર્યંતના) મેમ્બર અને ૫૦૧) આપનાર પેટ્રન એટલે વંશપરંપરાના સભાસદ ગણાશે. (૪) સભાનું માસિક પત્ર દિગંબર જૈન માનદ સભાસદોને અડધા મુલ્યથી તથા બાકીના સભાસદોને વિના મૂલ્યે મોકલવામાં આવશે.

આ ઠરાવ શા. મોહનલાલ કાળીદાસ સોલીસીટરે મુકયો હતો ને તેને શા. કાળીદાસ જેશીંગ બીનકિશોરદાસ, ગમનલાલ ખુશાલચંદ સુતરવાલા ને છોટાલાલ ઘેલાભાઇ ગાંધીએ ટેકો આપ્યા પછી એ ઠરાવ સર્વાનુમતે પસાર થયો હતો.

ઠરાવ ૧૩ મો—પરિષદ નિભાવ ફંડ.

આ પરિષદના ઉદ્દેશોનો પ્રચાર કરવા માટે તથા એના નીભાવ માટે એક સાધારણ ફંડની જરૂર છે.
ઠરાવ મુકનાર—**મૂલચંદ કસનદાસ કાપડીઆ**
ટેકો આપનાર—**શા. નાગરદાસ નરોતમદાસ**

આ ઠરાવ ઉપર કાપડિયાજીએ એવું અસરકારક વિવેચન કર્યું હતું કે જેથી તરતજ નીચે મુજબ રકમો લાઇફ મેમ્બર ને મેમ્બર તરીકે ભરાઇ હતી.

૫૦૧) શેઠ તારાચંદ નવલચંદ ઝવેરી મુબાઇ
૧૦૧) ,, મોહનલાલ કાલીદાસ સોલીસીટર ,,
૧૦૧) ,, મૂલચંદ કસનદાસ કાપડિયા સુરત
૧૦૧) ,, વસ્તૂપાલ શંકરલાલ આમોદ

१०१) શા. મોતીચંદ સાકેરચંદ તાસવાલા સુરત
१०१) ,, રસીકલાલ હરજીવદાસ આમોદ
१०१) ,, મનસુખલાલ બ્હેચરદાસ સોલી૦ મુંબઇ
१०१) ,, ચીમનલાલ કેવળદાસ કરમસદ
१०१) ,, ભાઇચંદ રૂપચંદ (ફલટનવાળા) મુંબાઇ
१०१) ,, અંબાલાલ ત્રિભોવનદાસ ભોજ
१०१) ,, ઠાકોરદાસ ભગવાનદાસ ઝવેરી મુંબાઇ
१०१) ,, મહાસુખભાઇ દામોદરદાસ અમદાવાદ
१०१) ,, ભોગીલાલ ઉગરચંદ અમદાવાદ
१०१) ,, મગનલાલ હરજીવનદાસ સુણુદા
१०१) ,, છોટાલાલ ઘેલાભાઇ ગાંધી અંકલેશ્વર
१०१) ,, છગનલાલ ઉત્તમચન્દ સરૈયા સુરત.
१०१) ,, સોભાગચન્દ કાળીદાસ ડબકા
१०१) ,, નાગરદાસ નરોત્તમદાસ સંઘવી આમોદ
१०१) ,, હીરાલાલ છગનલાલ વખારીયા કલોલ
१०१) ,, લલ્લુભાઇ લક્ષ્મીચન્દ ચોકસી મુંબાઈ

ઉપલા ભાઇયોએ લાઇફ મેમ્બર થવા ઇચ્છા દર્શાવી હતી તથા નીચે મુજબ સભાસદોના નામો નોંધાયા હતા ને વધુ નોંધાતા જાય છે.

५) નાગરદાસ નરોતમદાસ આમોદ
२) મણીલાલ ઇશ્વરલાલ કલોલ
२) ફુલચંદ છગનલાલ ,,
२) રતીલાલ નરોતમદાસ આમોદ
२) ચંદુલાલ જમનાદાસ કલોલ
२) સોભાગચંદ હેમચંદ વાગરા
२) ઉદેચંદ બહેચરદાસ આમોદ
२) અમરતલાલ કેશવલાલ દાલીયાપોળ વડોદરા
२) છોટાલાલ મગનલાલ ડભોઇપોળ ,,
२) વ્રજલાલ છોટાલાલ વાડી વડોદરા
२) રતીલાલ માણેકલાલ દાલીયા પોલ વડોદરા
२) હીંમતલાલ જગજીવનદાસ ,, ,,
२) દેવચંદ ફુલચંદ માજલપુર (,,)
२) હીરાલાલ નાથુભાઈ ચોકશી ભરૂચ
२) ઠાકોરલાલ હરજીવનદાસ આમોદ
२) હીરાલાલ મોતીલાલ વડુ
५) ગાંધી લીલાચંદ ફતેચંદ જાદર (ઇડર)
२) સાકેરચંદ પાનાચંદ જાદર (ઇડર)
२) નટવરલાલ હરીલાલ દાળીયાપોળ વડોદરા
५) ચંદુલાલ તારાચંદ વખારીયા કલોલ
२) વ્રજલાલ છગનલાલ ડબકા
५) દોશી સુચલંદ જેચંદ સુદાસણા
५) મુલચંદ શીવલાલ છાણી
२) મગનલાલ રતનજી સુણદાવાળા
२) ભુરાભાઇ મુલચંદ જંબુસર
२) દોશી મગનલાલ કોદર સાબલી
२) દલુચંદ લખમીચંદ
२) મોતીલાલ માણેકચંદ
२) મુળચંદ અમથાભાઇ
२) દલુચંદ ખુશાલચંદ
२) કસ્તુરચંદ મોતીચંદ
२) પાનાચંદ અમથાભાઇ
२) માણેકચંદ ધરમચંદ
२) હીરાચંદ નેમચંદ
२) તલકચંદ ગુલાબચંદ કુકડીયા
२) ગાંધી કુબેરદાસ પદમશી સદલજ

ઠરાવ १४ મો—ગુજરાત દિ. જૈન પ્રાંતિક સભાની વ્યવસ્થાપક સમિતિ.

આ સભાનું કાર્ય ચલાવવાને માટે નીચેના ગૃહસ્થોની એક વ્યવસ્થાપક (મેનેજીંગ) કમીટી બીજી ચુંટણી ન થાય ત્યાં સુધીને માટે નીમવામાં આવે છે.

વ્યવસ્થાપક સમિતિના નામો

१–શેટ તારાચન્દ નવલચંદ ઝવેરી, પ્રમુખ અને અને કોષાધ્યક્ષ, મુંબાઇ
२–શેઠ મુલચન્દ હરીલાલ સોજિત્રા ઉપપ્રમુખ
३– ,, ભગવાનદાસ ઝવેરદાસ ,, ,,
४–વ્રજલાલ કેવળદાસ ભાવનગર ,,
५–સોભાગચન્દ જેઠાભાઇ આમોદ ,,
६–છોટાલાલ ઘેલાભાઇ ગાંધી અંકલેશ્વર મહામંત્રી
७–મૂલચન્દ કસનદાસ કાપડિયા સુરત મંત્રી અને સંપાદક "દિગંબર જૈન."
८–મોહનલાલ કાલીદાસ સોલી૦ ખાર. સભાસદ

૯–મનસુખલાલ ન્હેચરદાસ „ સભાસદ
૧૦–દલપતભાઇ પાનાચન્દ વેડચ „
૧૧–કાલીદાસ જેસીંગભાઇ બીનકિ૦ બોરસદ „
૧૨–પ્રેમચન્દ દેવચન્દ ધાયજ „
૧૩–વસ્તુપાલ શંકરલાલ ચોકસી આમોદ „
૧૪–ત્રિભુવનદાસ વલ્લભદાસ કાણીસા „
૧૫–મંગલદાસ નાથાભાઇ વેડચ „
૧૬–ગમનલાલ ખુશાલચન્દ સુતરવાળા સુરત „
૧૭–માણેકચન્દ છગનલાલ ખાનપુર „
૧૮–કાલીદાસ નાનચન્દ મીઠાવાલા ઇડર „
૧૯–મોહનલાલ મગનલાલ ઓરાણુ „
૨૦–ચુનીલાલ નાનચંદ અલવા સાદરા „
૨૧–સુરજમલ જેચંદ ગાંધી દાહોદ „
૨૨–જીવરાજ ગુલાબચંદ ગાંધી બી૦ એ૦ સુરત
૨૩–જીવણલાલ ગોપાલદાસ વખારીયા કલોલ
૨૪–નાગરદાસ નરોતમદાસ સંઘવી આમોદ
૨૫–છગનલાલ ઉત્તમચંદ સરૈયા સુરત
૨૬–મણીલાલ ઇશ્વરલાલ વકીલ કલોલ
૨૭–ફુલચંદ છગનલાલ શાહ સુરત
૨૮–કેવળદાસ રાવજીભાઇ ઇડર
૨૯–નરોતમદાસ જગજીવનદાસ વ્યારા
૩૦–ચાંદમલજી મનીરામ ગોરધનવાલા અમદાવાદ
૩૧–પં૦ છોટેલાલજી પરવાર અમદાવાદ
૩૨–શા ઠાકોરદાસ ભગવાનદાસ ઝવેરી મુંબઇ

એ પછી સ્વાગત કમીટીનો આભાર માનવાની દરખાસ્ત શા. શાંતીલાલ હરજીવનદાસ સોલીસીટરે મુકી હતી જેને શા. કાળીદાસ જેશીંગભાઇ બીનકીશોરદાસ ને મોહનલાલે ટેકો આપવા પછી તાળીઓના અવાજ વચ્ચે તે પસાર થઇ હતી, આ દરખાસ્તમાં ખાસ કરીને આ પરિષદની યોજના કરવાવાળા શેઠ છોટાલાલ ઘેલાભાઇ ગાંધી અંકલેશ્વર, શેઠ મુળચંદ કસનદાસ કાપડિયા સુરત અને શા. છગનલાલ ઉત્તમચંદ સરૈયાનો તો ખાસ આભાર માનવામાં આવ્યો હતો એ પછી પ્રમુખ સાહેબનો આભાર માનવાની દરખાસ્ત શા. મોહનલાલ સોલીસીટરે મુકી હતી જેને ગમનલાલ ખુશાલચંદ સુતરવાળાને ચીમનલાલ નરસઇદાસ વકીલે ટેકો આપ્યો હતો તે પછી ભાઇ છગનલાલ ઉત્તમચંદ સરૈયાએ શા. મુળચંદ કરસનદાસ કાપડીયાના ટેકા સાથે પ્રતિનિધિઓ, ભોજન કમેટી, ઉતારા કમેટી, પત્ર વ્યવહાર કમીટી, વોલંટિયર કમીટી વગેરેનો આભાર માની ઉતારા માટે કંઇપણ બદલા વગર મળેલ 'જીવન નિવાસ' અને સર પરશોતમદાસની આલીશાન વાડીઓના વ્યવસ્થાપકોનો ખાસ આભાર માનવામાં આવ્યો હતો જે પછી પ્રમુખ સાહેબ ને સ્વાગત સભાપતિએ હારતોરા અર્પણ કર્યાં હતાં. પ્રમુખ સાહેબે છેવટે ટુંકમાં અસરકારક વિવેચન કરી સર્વનો આભાર માની અત્રે થયેલા ઠરાવો પર પોત પોતાની પંચોમાં એનો તાકીદે અમલ કરવાની તથા આ સભાને ચિરસ્થાયી બનાવવા એના મેમ્બરો થવાની સર્વેને હાકલ કરી હતી અને હર્ષનાદ વચ્ચે પા વાગતે પરિષદનું કાર્ય વિસર્જન કર્યું હતું. જે પછી આખી સભાનો મોટો ગ્રુપ ફોટો લેવામાં આવ્યો હતો.

રાત્રે ૭ થી ૮॥ દિગંબર જૈન યુવક સંઘની તરફથી એના પ્રમુખ શા. જીવરાજ ગુલાબચંદ ગાંધી બી. એ. ને ઘેર ખાસ ખાસ પ્રતિનિધીઓને નોતરવામાં આવ્યા હતા જ્યાં સ્વાગત થઇ પારષદના ઠરાવો પર ચર્ચા થઇ હતી.

પછી રાત્રે ૮॥થી ૧૦॥ સુધી આર્યસમાજના હોલમાં બાળિકા સમાજ સુરતના ગરબા અને કસરતના પ્રયોગો થયા હતા જેથી પ્રસન્ન થઇ માણેકબ્હેન તથા એક ભાઇએ ૧) ૧) એ છોકરીઓને ભેટ આપ્યો હતો તથા ૪૧) એ સમાજને મદદ આપવામાં આવી હતી.

આ પ્રકારે સુરતમાં ગુજરાત દિ. જૈન પરિષદનું કાર્ય ધાર્યા કરતાં પણ અતીવ સફળતાપૂર્વક થયું હતું અને **ગુજરાત દિગંબર જૈન પ્રાંતિક સભા**ની સ્થાપના થઇ ગઇ છે.

ગુજરાતી દિ. જૈન પંચોને નમ્ર વિનંતિ.

ગુજરાતી દિ. જૈન પંચ, સંઘ, પક્ષ કે મંડળને ધારા ધોરણ અને ઠરાવની નકલ મોકલવામાં આવે છે અને આગ્રહ પૂર્વક નમ્ર વિનંતિ કરીએ છીએ કે સુરતમાં જે જે ઠરાવો કર્યા છે તેનો અમલ પોતાની જ્ઞાતિ, પંચ કે મંડળમાં જેમ બને તેમ વહેલો થાય તે માટે દરેક ઉપાય અજમાવે. ઓરાણ પ્રાંતિજનું ચોકલું માહ મહીને મળશે, મેવાડા ભાઇઓ મહા મહિને પાવાગઢ સ્થાને પંચ મેળવે અને નરસિંહપુરા ભાઇઓ સાત ગામના વિભાગનું સમસ્ત પંચ મેળવે તેમજ વીશાહુમડ, રાયકવાળ અને બીજા ભાઇ તે પહેલાં પંચ મેળવી પરિષદના ઠરાવોને પૂર્ણ સંમતિ આપે તો આપણું કામ બહુજ જલ્દીથી અમલમાં આવે એમ છે. દરેક ગામ પંચ પક્ષ કે મંડળ પોતાની ઉપરી સમસ્ત પંચ મેળવવા વિનય ને ઉદાર ભાવ રાખે અને જે જે ઉપાયો અને ઠરાવો કરે તે "દિગંબર જૈન" ના સંપાદકને સુરત ખબર આપશે તો તે આભાર સાથે સ્વીકારાશે.

દરેક પેટા જ્ઞાતિના દરેક ગામને પંચ કહેવાશે, એવા ગામ પંચો મળીને જે પંચ થાય તે સંભા ચોખલા કે વિભાગ પંચ કહેવાશે અને એવા સંભા, ચોખલા કે વિભાગી પંચો મળીને જે પંચ થાય તે સમસ્ત પંચ ગણાશે. દાખલા તરીકે સુરત વિભાગ નૃસિંહપરા પંચમાં વ્યારા બુહારીના ગામ પંચો, આમોદ વિભાગ નરસિંહપુરા પંચમાં આમોદ, વિરજઇ. વાગરા, કેરવાડા, ડભકા આદિ ગામ પંચો આવી જાય છે. તેજ પ્રમાણે કલોલ, ઝહેર, નરોડા, મખીઆવ અને અમદાવાદ વિભાગી પંચોમાં સમાતા દરેક ગામ પંચો આવી જાય અને સુરત, આમોદ અને કલોલાદિ, વિભાગી પંચો મળી ગુજરાત નરસિંહપુરા સમસ્ત પંચ થાય છે. એવીજ રીતે સુરત, ભાવનગર, દાહોદ, ઓરણ, પ્રાંતિજ, રાયદેશ, સત્તર જીલ્લાના વિભાગી દશા હુમડ પંચો મળીને ગુજરાત દશાહુમડ સમસ્ત પંચ બને છે. તેજ રીતે સુરત, સંતરામપુર, ઇડર આદિ વિભાગી પંચ મળી વિશા હુમડ સમસ્ત પંચ થાય છે અને ધારા ધોરણના નિયમ ૮ મા દર્શાવેલ સૂચના મુજબ ગુજરાત બહારના ગુજરાતમાં આવી વસેલ ખંડેલવાળ, અગ્રવાલ આદિ દિગંબર જૈનોના પંચ કે મંડળ હોય તે સાધારણ પંચ તરીકે ગણવામાં આવશે. જો બે કે વધુ પેટા જ્ઞાતિ મળી જાય તો તેને સંઘ કહેવામાં આવશે.

(૧) દરેક ગામ પંચ વિભાગી કે સંભા પંચ અને સમસ્ત પંચ તેમજ સાધારણ પંચ અને મંડળ કે સંઘ અને તેમના કાર્યકર્તાઓને વિનંતી કરવામાં આવે છે કે પોતાના પંચ અને કાર્યકર્તા કે શેઠનું નામ સરનામા સાથે મહામંત્રીને અંકલેશ્વર મોકલી આપે કે તેથી મહામંત્રીને તેમની સાથે પત્રવ્યવહારમાં સુગમતા થાય.

(૨) ઠરાવ ૧ અને ૩ મુજબ ગુજરાત દિ. જૈન પ્રાંતિક સભાના ઉદ્દેશ અને ધારા ધોરણ મંજુર થયા છે તેમાં દર્શાવેલ નિયમ ૮ પ્રમાણે ચુંટી કાઢેલા સભાસદ પોતાને ત્યાંની વસ્તિના સેંકડે ચાર ટકાના પ્રમાણમાં જે સંખ્યા થાય તેટલા પ્રત્યેક રૂ. ૨) આપી સભાના સભાસદ બને, બીજા સભાસદોએ વાર્ષિક રૂ. ૫) આપી સાધારણ સભાસદ જેમ બને તેમ વેલાસર બનવું અને નામો લવાજમ સાથે સુરત મોકલી આપવા, જેઓએ રૂ. ૨) કે ૫) લવાજમ આપ્યા હશે અગર મોકલ્યા હશે તેમનેજ "દિગંબર જૈન" માસીક મફત મોકલાશે.

(૩) ધારા ધોરણ નિયમ નંબર ૮ (૪) અને (૫) મુજબ રૂ. ૧૦૧) અને તેથી વધુ ભરનાર

જીવન પર્યંતના સભાસદ બનાવી તેમજ રૂ. ૫૦૧) અને વધુ ભરનાર વંશપરાના સભાસદ બનાવી તેઓના અમર નામ પ્રાંતિક સભા સાથે જોડવા દરેક પ્રયાસ કરશોજી અને તેમને પણ "દિગંબર જૈન" માસીક જીવન પર્યંત મફત મોકલાશે. વળી એઓને નિયમ ૧૬ પ્રમાણે બનતી સાધારણ સભાના કાયમના સભાસદ તરીકે તમામ હક રહેશે.

(૪) દરેક વિભાગી સંભા કે ચોખલાના પંચ પોતાના પંચમાં જેને કાર્યવાહક કમીટી નીમે; તેના નામ કંઇપણ લવાજમ લીધા વગર પ્રાંતિક સભાએ (૧૬) મુજબ પોતાની સાધારણ સભામાં દાખલ કરવાના છે. એટલે હાલ ઓરણ પ્રાંતિજના ચોખલાના પંચની કાર્યવાહક કમીટીના ૪૦ સભ્યો બીન લવાજમે ગુ. દિ. જૈન પ્રાંતિક સભામાં દાખલ થાય છે. અને એવીજ રીતે સુરત, સોજીત્રા, અંકલેશ્વર, દાહોદ, છડર, રાયદેશ, કલોલાદિ પાંચ ગામ કે સાત ગામ વીગેરે વિભાગના તમામ પેટા જ્ઞાતિઓએ કે તેવા ગુજરાત બહારના ગામોએ પોતાના પંચ મેળવી પંચના બંધારણ કરીને અગર બંધારણ કર્યા વગર પણ કાર્યવાહક કમીટી નીમવી જોઇએ અને તેના નામો મહામંત્રીને મળેથી તેઓને વગર લવાજમે ગુ. દિ. જૈન પ્રાંતિક સભાની સાધારણ સભામાં દાખલ કરવામાં આવશે.

એવા સભાસદને પ્રતિષ્ઠિત સભાસદનું નામ આપવામાં આવ્યું છે અને તેઓમાંથી જેઓ "દિગંબર જૈન" નું અરધું લવાજમ રૂ. ૧-૨-૦ મનીઓર્ડરથી મોકલશે (વી. પી. થઇ શકશે નહીં) તેને દર માસે દિગંબર જૈન મળશે. અત્યાર પહેલાં છપાયલો 'દિગંબર જૈન સમાજ અંક મંગાવનાર રૂ. ૦-૬-૦ વધુ મોકલશે તો શિલીકમાં હશે ત્યાં સુધી તે પણ મોકલવામાં આવશે.

(૫) 'દિગંબર જૈન' આ પ્રાંતિક સભાનું માસિક થવાથી હવે તે ગુજરાતને ખાસ ઉપયોગી નીવડશે. એમાં દરેક ગામ અને પેટા જ્ઞાતિની હકીકત આવશે એટલે આશા છે કે સૌ કોઇને દિગંબર જૈનના ગ્રાહક થશે. અને દરેક સ્થાનથી 'દિગંબર જૈન' માટે સમાચાર અને પરિષદના ઉદ્દેશ સાચવી લેખો પણ મોકલશોજી.

(૬) ઠરાવ નં. ૪ પેટા જ્ઞાતિમા જ્યાં જ્યાં ઝઘડા હોય તેનો સલાહ સંપથી માંહો માંહે નિકાલ કરવા પરિષદ પંચોને વિનંતી કરે છે. તે પ્રમાણે આવતી હોળી પહેલા ઝઘડા પતાવી દઇ આપણા અંદર અંદરના રાગદ્વેષને હોળીમાં આહુતી રૂપે ભસ્મ કરી દેવા સર્વને વિનંતિ છે. જે જે ગામોએ એવા ઝઘડા હોય અને તે માંહોમાંહે પતે એમ નહિ લાગતા હોય તો અંકલેશ્વર મહામંત્રીને ખબર આપવામાં આવશે તો સેવક આપને ત્યાં આવવા સમય આપશે અને બનતો પ્રયાશ કરશે. મહામંત્રીને જરૂર લાગશે તોજ ઝઘડા નિકાલ કમીટીના સભ્યોને તે સ્થાને પધારવા વિનંતિ કરશે અને તેમને તસ્દી આપશે.

(૭) ઠરાવ ૫ મો—બહુજ અગત્યનો છે અને તે માટે દરેક પંચો યોગ્ય ઠરાવ કરે ને દિગંબર જૈનમાં છપાવવા મોકલે અને તેની નકલ સમસ્ત પંચને પણ મોકલે. હમો માનીએ છીએ કે ગામ પંચો એ ઠરાવ કરે, પછી કદાચ સંભા પંચ કે સમસ્ત પંચની ચર્ચા ઉપરથી પોતાનો મત ફેરવવો એ પડે, માટે દરેક ગામ પંચ આ ઠરાવ પોતાની પંચમાં મંજુર કરાવી લખી મોકલશે. વળી આ ઠરાવનો અમલ કરતાં પહેલાં આપણા રીત રીવાજો એક સમાન થાય એ પણ ઇચ્છવા જોગ છે. દરેક સંસ્કાર જૈન શાસ્ત્ર પ્રમાણે હોય પણ દરેક પેટા જ્ઞાતિના આગેવાન અગર ઉત્સાહી યુવાન કે વૃદ્ધ હિતેચ્છુને વિનંતિ છે કે પોતાની જ્ઞાતિના જન્મથી કે મરણ પર્યંતના કેટલાક વધુ પડતા સ્થાનિક રીત રીવાજ લખે અને પોતે સર્વને અનુકુળ બનાવવા શું સુધારો કરવા ઇચ્છે છે તે પણ લખી આખો લેખ

મહામંત્રીને એક માસમાં મોકલવા તરદી લે અને સેવકને આભારી કરે. આવા લેખ આવશે તે ઉપરથી મહામંત્રી અને મંત્રી એક સામાન્ય ખરડો તૈયાર કરશે અને તે ખરડો વ્યવસ્થાપક કમીટીને મોકલશે પછી તે પંચને વિચાર માટે મોકલશે. શહેરોમાં પલ્લાં બહુજ વધારે છે તેથી આ જમાનાને અનુસરી ઓછામાં ઓછું પલ્લું, પહેરામણી, અને લગનના કપડાં કેટલાં હોવા જોઇએ તે વિષેના લેખો પણ મોકલે.

(૮) ઠરાવ ૬ ઠો—સગપણ અને તેની હદ બાબત છે અને તે આ જમાનાને તદન અનુસરતો છે. ૧૪ વર્ષની અંદરની કન્યાના લગ્ન તો કાયદા પ્રમાણે થનારજ નથી તો શા માટે પહેલાથી સગપણ કરી કન્યા પર અવળા સંસ્કાર પાડવા દઇએ ? આ બાબત તો દરેક ગામ પંચ પણ ઠરાવ કરી શકે છે અને કોઇ વ્યકિત પણ દૃઢ મનથી ઠરાવ કરી શકે છે. અને એથી સર્વને વિનંતિ કરીએ છીએ કે જેઓ આ ઠરાવનો અમલ વ્યકિતગત અગર પંચમાં કે મંડળમાં ઠરાવથી સ્વીકારે તેઓએ તરત હમોને જણાવવું કે તેઓને વિષે 'દિગંબર જૈન'માં સમાચાર અપાશે અને તેમને ધન્યવાદ આપવામાં આવશે.

(૯) ઠરાવ ૭ મો—પંચોના બંધારણ બાબતનો છે, "દિગંબર જૈન" ના કાર્તક માગસિરના અંકના પૃ. ૧૩૮-૧૩૯ અને ૧૪૦ માં એક સામાન્ય ખરડો છપાઈ બહાર પડી ચુકયો છે. તે સુરત નરસિંહપુરા અને અંકલેશ્વર મેવાડા પંચે તો તે ઘણે અંશે સ્વીકાર્યો છે. તે ખરડામાં સુધારો વધારો સુચવવા અગર તદન નવો ખરડો બનાવી એક માસમાં મોકલવા દરેક પંચના આગેવાન કે ઉત્સાહીને આગ્રહપૂર્વક વિનંતિ છે. ફેબ્રુઆરીની તા. ૧૫મી સુધીમાં આવેલ સુધારા વધારા કે નવા ખરડા ઉપર વિચાર ચલાવી એક ખરડો તૈયાર થશે તે ખરડો અને આવેલા ખરડા પર વિચાર કરવા બંધારણ કમીટી બોલાવવામાં આવશે. આશા રાખીશું કે બંધારણ કમીટીના સભ્યો પહેલાથીજ ઉમદા ખરડો તૈયાર કરી મોકલે તો માર્ગ ટુંકો થાય.

(૧૦) ઠરાવ ૮ મો-વસ્તિ પત્રક કરવા બાબતનો છે ને તેમ સૌ કોઈ હિતકારક સમજે છે. અને દરેક પેટા જ્ઞાતિ તરફથી એવાં પત્રક તૈયાર પણ કરવા માંડયાં છે પણ તે છપાઇને બહાર પડયાં નથી. પ્રાંતિક સભાને ખાસ ઉપયોગી બાબત તો આ સાથેના ફારમમાં જણાવી છે તે દરેક ગામ મંડળ કે પક્ષે પોતાના ગામ પુરતી તો લખીજ મોકલવી અને આખી જ્ઞાતિ કે પેટા જ્ઞાતિએ પોતાને યોગ્ય લાગે તેવી રીતે વસ્તિ પત્રક છપાવવા પણ દરેક જ્ઞાતિ ને પંચ કે મંડળને વિનંતિ કે પોતે છપાવેલ વસ્તિ પત્રકની બે નકલ મહામંત્રીને મોકલે.

(૧૧) ઠરાવ ૯ મો-શ્રાવિકાશ્રમોને ઉત્તેજનાર્થે છે. સોજીત્રા તેમજ જાંબૂડીમાં ઉત્સાહી ધર્મ પ્રચારિકા બ્હેનો છે. સોજીત્રા આશ્રમમાં રહેનાર બ્હેનને માટે માસિક ખર્ચ ફક્ત રૂ. ૩) છે, તેમજ જાંબુડીમાં પણ બહુ ઓછે ખર્ચે રહી શકાય છે. તો સર્વને વિનંતિ છે કે કન્યા, સધવા કે વિધવા બ્હેનોને થોડા વખત માટે પણ આશ્રમમાં મોકલે. અને ઉત્તમ સ્ત્રી કેળવણી અપાવે.

(૧૨) જીવનનિર્વાહના સાધન મેળવવામાં પડતી મુશ્કેલી દૂર કરવા નિમાયેલ કમિટી ઘણા દિગંબર જૈન ભાઇ અને બ્હેનને આશીર્વાદ રૂપ ગણાશે. પત્રવ્યવહાર એ કમીટીના મંત્રી ભાઇ જીવરાજ ગુલાબચંદ ગાંધી બી. એ. હરીપરા ભવાનીના વડ પાસે-સુરત, એ સરનામે કરવો.

(૧૩) સ્વદેશી વસ્તુ પ્રચાર માટે દેશનેતા અને પત્રો ઘણું કહી ગયા છે અને કહેતા ફરે છે. આચરણ એ સૌથી પહેલી જરૂરી વસ્તુ છે. સ્વદેશીની વાત હજારોગણી કર્યા કરો પણ તેને બદલે એક ચીજ સ્વદેશી લ્યો તે દેશને ફાયદો

કરી છે. નવરાશના વખતમાં રેંટીયા પર બેસી કાંતવાથી અને ખાદી પહેરવાથી પોતાની અને હિન્દની આબાદી કરી શકશો.

(૧૪) દરેક ગામ પંચના આગેવાન કે ઉત્સાહી પોતાને ત્યાં પાઠશાળા ચલાવે. અને "દિગંબર જૈન"માં તેના સમાચાર આપવામાં આવશે. બોરસદમાં હિંમતલાલ વકીલ અને બીજા સ્વયંસેવક બની પાઠશાળા ચલાવે છે, તેવા ઉત્સાહી નવજુવાનો પોતે પાઠશાળા ચલાવે તો નવા વિચાર સાથે સાચો ધર્મ દરેક બાળકમાં પ્રવેશશે અને સાચા ઉદ્ધારક એ બાલક બનશે. શું થોડો વખત નહિં આપો ? સ્વયંસેવક નહિં બનો ? સ્વયંસેવકો ઉત્સાહથી પોતે જે કામ કરવા ઇચ્છા હોય તે દર્શાવી હમોને લખે. જ્યાં પાઠશાળા માટે સાધનનો અભાવ હોય તોપણ હમોને સૂચવે. છેવટમાં હમો મંત્રી અને મહામંત્રી ગમે તેટલું લખીશું કે કહીશું તેમાં ઉન્નતિ નથી પણ તે વિચારી તેના ઉદ્ધાર–ઉન્નતિના માર્ગ તો આપ સર્વેના હાથમાં છે, માટે ઉપરની વિનંતિ સ્વીકારી અગર તેમાં વધારો કરવા યોગ્ય હોય તે હમોને સૂચવી **કાર્ય કરો, કાર્ય કરો, કાર્ય કરો.** વાતુડા બની કોઇના વખાણ કર્યા કરશો તેમાં કંઈ સાર્થક નથી. આપને ફરી વિનંતિ કરીએ છીએ કે થયેલા ઠરાવોને અમલમાં મુકાવવા બની શકે તેટલો તનતોડ પ્રયાસ કરશોજી. એજ **વિનંતિ.**

લી० સેવકો,

છોટાલાલ ઘેલાભાઇ ગાંધી મહામંત્રી,
મેવાડા ફળીયા, **અંકલેશ્વર.**

મૂળચંદ કસનદાસ કાપડીયા મંત્રી,
ગુજરાત દિ. જૈન પ્રાંતિક સભા, ચંદાવાડી–**સુરત.**

સુચના—હિસાબી કામ (મેમ્બર ફી) તેમજ "દિગંબર જૈન" માસિક માટેના લેખ તથા લવાજમ માટે સુરત મંત્રીને લખવું તથા સંસ્થા (સભાના)ના બાકીના કામો માટેનો પત્રવ્યવહાર અંકલેશ્વર મહામંત્રી સાથે રાખવો.

ગુજરાત દિ. જૈન કોન્ફરન્સ.

કાળીદાસ નાનચંદ મીઠાવાલા, ઇડરનો સંદેશો.

આ કોન્ફરન્સનો હેતુ ગુજરાતમાં દિગમ્બર જૈનોનું સંગઠન (સંપ) કરવાનો તથા આપણા સમાજની ધાર્મિક તેમજ આર્થિક ઉન્નતિ થાય તે છે.

આ જમાનામાં દરેક ઠેકાણે નાની નાની જ્ઞાતિઓમાં પણ સમાજને લગતા સુધારા થવા માંડ્યા છે. અને તે જ્ઞાતિઓનું સંગઠન થવા લાગ્યું છે. આપણી દિગમ્બર કોમમાં પણ દક્ષિણ જેવા ભાગમાં પરિષદો જેવું છે, પરંતુ ગુજરાતની અંદર દિગમ્બરોના જાગૃતી માટે કંઈ થયેલ નથી તેથી જો આવી કોન્ફરન્સ (સભા) થાય તે ઘણુંજ ઇચ્છવા જોગ છે.

આપણા ભારત વર્ષને પરતંત્રતાની ધુંસરીમાં બાંધી રાખનાર તે આપણી પેટા જ્ઞાતઓજ છે. નાના નાના વાડાથી નુકશાન ઘણુંજ થયેલ છે. આવી નાની વાડોને દુર કરવાની જરૂર છે પણ આ બધું ક્યારે થાય તો જવાબ એજ કે આપણામાં એક્કાની જરૂર છે.

સુતરનો એક તાંતણો તુટી જાય છે પણ વધુ તાંતણા ભેગા થાય તો તે દોરડાને તોડવું મુશ્કેલ બને છે. જડ વસ્તુ જેવી કે બાજી તેમાં પણ એકકો દરેકને જીતી જાય છે, તે ઉપરથી આપણે જાણીએ છીએ કે સંપ ત્યાંજ જપ છે.

પાણી જેમ વિશાળ જગ્યામાં વહે છે, તેમ વધુ ચોકખું રહે છે. ખાડામાં રહેલ પાણી ગંદુ થઇ જાય છે. આપણું પાણી રાખવું હોયતો સમાજને વિશાળ બનાવો. સ્વાર્થના વિચાર છોડી સંપીલા થઇશું તોજ આપણું શ્રેય છે. કુસંપથી કેવાં ફળ આવે છે તે ઇતિહાસના વાંચનથી આપણને માલુમ પડે છે.

આવી કોન્ફરન્સોથી આપણને ઘણુંજ શીખવાનું મળે છે. એક બીજાના રીત રિવાજો જાણવાથી આપણે ઘણી રીતે સુધરી શકીશું, નવું જાણવાનું મળશે માટે ઉઠો, જાગો અને સંપીલા બનીને કોન્ફરન્સને સાથ આપો. આપણે બધા શ્રી વીર પ્રભુનાં એકજ બાળકો છીએ એ ધ્યાનમાં લઇ કામ કરો. આપણે એકત્ર થઇશું તોજ ઉન્નતિ છે. એકજ ધ્વજા નીચે ઉભા રહીશું તોજ આપણો શ્રેય છે. છેવટમાં એકજ શબ્દ (સંગઠન કરો).

આ અંકનો વધારો.

ૐ

ગુજરાત દિગંબર જૈન પ્રાંતિક સભા.

ઉદ્દેશ અને ધારા ધોરણ.

જે તા. ૧-૧-૩૪ વીર સં. ૨૪૬૦ પોષ વદ ૧ સોમવારે ગુજરાત દિ. જૈન પરિષદ-સુરતની બેઠકમાં મંજુર થયેલા છે.

ગુજરાત દિગંબર જૈન પ્રાંતિક સભાની આવશ્યકતા.

મુંબઈ ઇલાકાના દક્ષિણ વિભાગમાં "દક્ષિણ મહારાષ્ટ્ર દિગંબર જૈન સભા" સ્થપાયાને લગભગ ૩૦ વર્ષ થયા છતાં ઉત્તર વિભાગના-ખાસ ગુજરાતના દિગંબર જૈન માટે એક સંસ્થા પ્રાંતિક સભાની ગરજ સારે એવી નથી; વળી સામાજીક અને આર્થિક કારણોએ ગુજરાતના દિગંબર જૈનોમાં ચાલતાં પંચો-સંઘો આદિમાં અનેક પક્ષ-તડ પડી જવાથી દિગંબર જૈન સમાજ એકંદર રીતે ઘણીજ અવનત દશાએ પહોંચતી જાય છે; એટલે ગુજરાતની દિગંબર જૈન સમાજમાં સંગઠન કરવા ધાર્મિક, આર્થિક, સામાજીક આદિ ઉન્નતિને અર્થે ઉપાય યોજવા અને બની શકે તે બાબતમાં આખા જૈન સમાજમાં એકતા સ્થાપવા તેમજ અહિંસા ધર્મ વિશ્વ ધર્મ બને તેવા ઉપાય યોજવાના હેતુથી એક સંસ્થા એવી સ્થાપવી જરૂરની જણાય છે કે એમાં ગુજરાતમાં રહેતા તમામ દિગંબર જૈનોનું, ગુજરાત બહાર રહેતા ગુજરાતી દિગંબર જૈનોનું તેમજ ગુજરાતની આજુબાજુમાં તેમના સંબંધમાં રહેતા દિગંબર જૈનોનું પણ પ્રતિનિધિત્વ રહે, એવું બંધારણ ઘડી "ગુજરાત દિગંબર જૈન પ્રાંતિક સભા" સ્થાપવા આ પ્રાથમિક પારષદ ઠરાવે છે.

ઉદ્દેશ અને ધારા ધોરણ.

૧—**નામ**—આ સંસ્થાનું નામ **'ગુજરાત દિગંબર જૈન પ્રાંતિક સભા'** રાખવામાં આવે છે.

૨—**હદ**—ગુજરાતમાં વસતા તમામ દિગંબર જૈનો, ગુજરાત બહાર વસતા ગુજરાતી દિગંબર જૈનો અને ગુજરાત આજુબાજુના ગુજરાતી દિગંબર જૈન સાથે સંબંધ ધરાવતા દિગંબર જૈનોનો પણ પ્રાંતિક સભામાં સમાવેશ થાય છે. અને એ બધા જૈનોને ગુજરાતી દિગંબર જૈનો તરીકે હવે પછી ઓળખવામાં આવશે.

૩—**ઉદ્દેશ**—આ સંસ્થાનો ઉદ્દેશ ગુજરાતી દિગંબર જૈન સમાજમાં સંગઠન કરવાનો તેમની ધાર્મિક, આર્થિક વ્યવહારિક શારીરિક માનસિક અને સામાજીક આદિ ઉન્નતિ કરવાનો, અને બની શકે એવી બાબતોમાં આખા જૈન સમાજમાં એકતા સ્થાપવાનો છે; અને ખાસ કરીને—

क જૈન ધર્માનુયાયીઓમાં બની શકે તેટલી બાબતમાં એકતા કરવી.

ख ગુ. દિ. જૈનોમાં પરસ્પરના ઝઘડાનો પંચાયત દ્વારા નિકાલ કરાવવા. તથા જ્યાં પંચ સંઘના બંધારણ અવ્યવસ્થિત હોય તે વ્યવસ્થિત કરવાં.

ग ગુજરાતી દિગંબર જૈનોમાં પરસ્પર વિવાહ સંબંધ જોડવા.

घ સામાજીક રીત રીવાજોમાં સમયાનુકુળ સુધારા કરવા, વ્યર્થવ્યય રોકવા, કુરીવાજો દૂર કરવા, અને બની શકે તેટલે દરજ્જે લગ્નાદિ રીત રીવાજ—એક સમાન બનાવવા.

ङ વ્યાપાર ઉદ્યોગ અને વ્યાપારિક શીક્ષણનો પ્રચાર કરવો, શારિરીક શક્તિના વિકાસ માટે વ્યાયમશાળાઓ તથા અખાડાઓ સ્થાપન કરવા.

च અનાથાલયો, શ્રાવિકાશ્રમો, બોર્ડીંગો, ઔષધાલયો આદિ સંસ્થાઓ સ્થાપવી અથવા તેને મદદ આપવી. તેમજ સેવા કરવાને સ્વયંસેવક મંડળો સ્થાપવા.

छ આ સભાના ઉદ્દેશના પ્રચારાર્થે એક સાપ્તાહિક, પાક્ષિક કે માસિક પત્ર પ્રકાશિત કરવું.

૪—**પ્રાં. સભાની સમિતિઓ**—આ પ્રાંતિક સભાનું કામકાજ એક સાધારણ સભા અને તેની પેટા સમિતિઓ—વ્યવસ્થાપક સમિતિ, જાતિય સમિતિ, તેમજ કેળવણી સમિતિ આદિ વિષયવાર સમિતિઓ દ્વારા કરવામાં આવશે.

૫—**સંસ્થાનું વર્ષ**—આ સંસ્થાના સમસ્ત કાર્યોનું વર્ષ વીર સંવત્ મુજબ કારતક શુદ ૧ થી આસો વદ ૦)) સુધી ગણાશે. પ્રથમ વર્ષ તા. ૧-૧-૩૪ પોષ વદ ૧ થી આસો વદ ૦)) સુધીનું ગણાશે.

૬—**આ સંસ્થાનો અર્થ**-સમસ્ત સભાસદ અને પ્રતિનીધીઓના સમુહને પ્રાંતિક સભા કહેવાશે.

૭—**આ સંસ્થાના** સભાસદ અને પ્રતીનીધી મળી ઓછામાં ઓછા ૧૦૧ ની સંખ્યા હોવી જોઇએ. અને કમમાં કમ ૩૧ સભાસદ કે પ્રતિનીધિ હાજર થયે સંસ્થાના અધિવેશનનું કામ થઇ શકશે

૮—**સભાસદ અને પ્રતિનિધિ**-આ સંસ્થાના સભાસદ અને પ્રતિનીધિ નીચે પ્રમાણે રહેશે.—

(૧) ચુંટી કાઢેલા પ્રતિનીધી
(૨) પ્રતિષ્ઠિત સભાસદ
(૩) સાધારણુ સભાસદ
(૪) જીંદગી પર્યંત સભાસદ
(૫) વંશ પરંપરાના સભાસદ

(૧) ચુંટી કાઢેલા પ્રતિનીધી ભિન્ન ભિન્ન ગામના કોઇપણુ ગુજરાતી દિગંબર જૈન કોમના પ્રત્યેક પંચ-સંઘ-પક્ષ કે મંડળ દ્વારા દર પચ્ચિશ સુધીની જન સંખ્યા માટે એક પ્રતિનીધીના ૫૦-સુધીની જ સંખ્યા માટે બે પ્રતિનીધી એમ સેંકડે ૪ ટકાના હિસાબે ચુંટાયલા કે નિમાયલા પ્રાતનીધીઓ (જેઓ દરેક પાસે પહેલાથી વાર્ષિક લવાજમ રૂા. ૨) બે લેવામાં આવે) એવા પ્રતિનીધી માટેની મનાઇ અગર બીજી ફેરફારીની સૂચના મહામંત્રીને નહિ મળે ત્યાં સુધી અને તે લવાજમ આપ્યા જાય તો સંસ્થાના ચુંટી કાઢેલા પ્રતિનિધી ગણાશે.

(૨) પ્રતિષ્ઠિત સભાસદ—(अ) મોટા સંભા કે આખી જ્ઞાતિ (જેવા કે દશા હુમડ વિશા હુમડ મેવાડા, નરશિંહપુરા રાયકવાળ આદિ*) ની કાર્ય વાહક સમિતિના સભ્ય હોય તે અને (ब) બીજાં પ્રતિષ્ઠિત સભ્ય જે મહત્વ પૂર્ણ સમાજ સેવા કે બીજાું ઉપયોગી કાર્ય કરે તેવાને, (क) વ્યવસ્થાપક સમીતી પસંદ કરે તેવાને કોઇપણુ લવાજમ વગર તેમને માટે મોકલનાર તરફથી મનાઇ થાય અગર ફેરફારીની સૂચના મહામંત્રીને નહિં મળે ત્યાં સુધી પ્રતિષ્ઠિત સભાસદ ગણાશે.

* **સુચના**—ગુજરાત બહારના દિગંબર જૈનો ગુજરાતના કોઇ ગામમાં કે શહેરમાં રહેતા હોય તેમનું કોઇ સાધારણુ પંચ-સંઘ કે મંડળ સ્થપાયું હોય તેનો પણુ આમાં સમાવેશ થાય છે.

(૩) સાધારણુ સભાસદ—ગુજરાતી દિગંબર જૈન પૈકી કોઇપણુ પુરૂષ કે સ્ત્રી વાર્ષિક લવાજમ ઓછામાં ઓછા રૂ. ૫) પારષદના મંત્રીને પહોંચાડે અને પરિષદના નિયમ પ્રમાણેના પત્રક પર હસ્તાક્ષર કરી પત્રક રવાના કરે તે મહામંત્રી મંજુર રાખે તો સાધારણુ સભાસદ ગણાશે.

(૪) જીંદગી પર્યંત સભાસદ—જેઓ ઓછામાં ઓછા રૂા. ૧૦૧) એકી વખતે પરિષદને આપે તે જીંદગી પર્યંત સભાસદ ગણાશે.

(૫) વંશ પરંપરા સભાસદ—જેઓ ઓછામાં ઓછા રૂા. ૫૦૧) એકી વખતે પરિષદને આપે તેઓ વંશ પરંપરાના સભાસદ ગણાશે.

સૂચના—પ્રતિષ્ઠિત સિવાયના તમામ સભ્યોને પ્રાંતિક સભા તરફથી નીકળતું માસિક મફત મળશે. પ્રતિષ્ઠિત સભાસદને તેમજ દરેક પંચ-પક્ષ સંઘ કે મંડળ જે બંધારણ પૂર્વક હશે તેને અડધા લવાજમથી પ્રાંતિકસભાનું પત્ર મળશે.

૯—સભાસદ તથા પ્રતિનિધિ માટે અયોગ્યતા—નીચે જણાવેલી વ્યક્તિઓ પ્રાંતિક સભાના સભાસદ કે પ્રતીનિધિ હોઇ શકશે નહીં.

(૧) ૧૮ વર્ષની અંદરની ઉમરવાળા.
(૨) સંસ્થાના ઉદ્દેશ કે નિયમ વિરૂદ્ધ આચરણ કરે તે.

૧૦—સંસ્થાનું અધિવેશન—જો તેને કોઇ સ્થાન તરફથી આમંત્રણ થયું હોય તો પ્રતિ વર્ષ થયા કરશે. અને તેવે પ્રસંગે અધિવેશનનો તમામ ખર્ચનો બંદોબસ્ત આમંત્રણ આપનાર શહેર કે સ્થાને કરવો જોઇએ. પણ અનુકુળતાએ વ્યવસ્થાપક સમિતિ તેને સહાયતા આપી શકશે. ખાસ અધિવેશન પણ એ પ્રમાણે ભરી શકાશે.

(૧) જો અધિવેશન ભરવા માટે આમંત્રણ કયાંયથી પણ નહિં મળે તો અનુકુળ સમયમાં યોગ્ય સ્થાન પર વ્યવસ્થાપક સમિતિની મંજુરીથી મંત્રીઓ ત્રણ વરસમાં ઓછામાં ઓછું એક વખત તો આધવેશન પરિષદના ખર્ચે ભરશે.

(૨) આમંત્રિત અધિવેશન માટે ત્યાંની સ્વાગત સમિતિ બીજા જીલ્લાના કોઇ યોગ્ય દિગંબર જૈન ગૃહસ્થને સભાપતિ તરીકે વ્યવસ્થાપક સમિતિના મહામંત્રીની સંમતિથી પસંદ કરશે. ખાસ અધિવેશન માટે વ્યવસ્થાપક સમિતિ સભાપતિ પસંદ કરશે.

૧૧—વિષય વિચારીણી સમિતિ—વિષય વિચારીણી સમિતિ (સબ્જેકટ કમીટી) માં વંશપરંપરાના સભ્યો, જીંદગી પર્યંતના સભ્યો, વ્યવસ્થાપક સમિતિના સભ્યો, તમામ મંત્રીઓ, આગલા અધિવેશનના સભાપતિઓ ચાલુ આધવેશનના સભાપતિ તથા સત્કાર સમિતિના સભાપતિ તેમના હોદ્દાની રૂએ સભાસદ ગણાશે. ચાલુ અધિવેશનના સભાપતિ પાંચ વધુ સભ્યો નીમી શકશે. તે ઉપરાંત ચાલુ અધિવેશનની સત્કાર સમિતિ પોતામાંથી દશ સભ્યો નીમી શકશે અને પ્રતીનીધીઓમાંથી ચુંટાયલા વીસ તથા હાજર રહેલા પ્રતીષ્ઠીત અને સાધારણ સભાસદોમાંથી દશ દશ સભ્યો વિષય વિચારીણી સમિતિમાં આવશે. પ્રતિનિધિ પ્રત્યેક જાતિના વસ્તિના પ્રમાણમાં લેવાશે.

૧૨—અધિવેશનની સૂચના—અધિવેશનની સૂચના એક મહિના પહેલા આપવામાં આવશે.

૧૩—અધિવેશનનું કામકાજ—દરેક અધિવેશનની પહેલી બેઠકમાં સ્વાગત સમિતિએ નક્કી કરેલા કાર્યક્રમ પ્રમાણે કામકાજ કરવામાં આવશે અને વિષય વિચારણી સમિતિ નક્કી કરવામાં આવશે. વિષય વિચારીણી સમિતિએ નક્કી કર્યાં પ્રમાણે કામકાજ અધિવેશનની બાકીની બેઠકોમાં કરવામાં આવશે.

૧૪—ઓફીસ ક્યાં રહે-પરિષદની ઓફીસ મહામંત્રી નક્કી કરે તે સ્થાને રહે પણ ખાસ જરૂર જણાએ વ્યવસ્થાપક સમિતિ થોડા સમય માટે ઓફીસનું સ્થાન ફેરવી શકશે.

૧૫—સભાપતિની સત્તા-અધિવેશનના સભાપતિ બીજું આધવેશન થાય ત્યાં સુધી સાધારણ સભા અને વ્યવસ્થાપક સમિતિના પ્રમુખ રહેશે. અને તેઓને તમામ સમિતિઓનું કાર્ય તપાસવાનો હક્ક રહેશે એટલુંજ નહીં પણ સંસ્થાના ધ્યેયથી વિરૂદ્ધ જાય એવી બાબત જે કોઇ સમિતિ હાથ ધરશે તો તેને અટકાવશે. જો તે બાબત માટે કોઇપણ સમિતિનો આગ્રહ હશે તો તે બાબત વ્યવસ્થાપક સમિતિમાં મુકવામાં આવશે અને તેના નિર્ણયને તે સમિતિ સ્વીકારશે.

૧૬—સાધારણ સભા—સાધારણ સભા વંશપરંપરાના સભાસદ જીંદગી પર્યંતના સભાસદ તથા પ્રતિષ્ઠિત સભાસદો ઉપરાંત સાધારણ સભાસદમાંથી ૨૦ અને પ્રતિનિધિમાંથી ૪૦ (દરેક કોમની વસ્તિના પ્રમાણમાં) સભાપતિ, ઉપ સભાપતિ, મહામંત્રી, મંત્રીઓ ખજાનચી અને વ્યવસ્થાક સમિતિના તમામ સભ્યોની એક સાધારણ સભા બનશે. તેનું કોરમ કુલ સંખ્યાના ⅕ અગર ૨૫ એ બેમાંથી જે ઓછી સંખ્યા હોય તેટલાનું રહેશે. સાધારણ સભા અને પ્રતિનિધિઓની ચુંટણી દર વાર્ષિક કે ત્રિવાર્ષિક આધવેશન સમયે થશે.

૧૭—સાધારણ સભાનું અધિવેશન—સાધારણ સભાનું આધવેશન પ્રત્યક્ષ અગર પરોક્ષ (પત્ર વ્યવહારથી) પણ કમમાં કમ વર્ષમાં એક વખત જરૂર થશે. એ અધિવેશન (૧) સભાપતિ અને મંત્રીની સંમતિથી. (૨) બે જુદા પંચના સભ્યોની અરજી પરથી કે (૩) વ્યવસ્થાપક કમીટીના ઠરાવથી ગમે ત્યારે બોલાવી શકાશે.

૧૮—બજેટની મંજુરી—બજેટની મંજુરીનો આધકાર સાધારણ સભાને રહેશે.

૧૯—કાર્યકર્તા-સાધારણ સભા દરેક સામાન્ય અધીવેશન વખતે પોતાના સભ્યોમાંથી નીચે મુજબ કાર્યકર્તાઓ ચુંટશે. (૧) સભાપતિ (૨) ઉપસભાપતિ એક યા વધુ (૩) મહામંત્રી (૪) સહાયક મંત્રી એક યા વધુ (૫) તથા જુદી જુદી સમીતીઓના મંત્રી અને ખજાનચી સંજોગોવશાત અધીવેશન ન ભરાય તો પણ ત્રણ વર્ષે સાધારણ સભાના કાર્યકર્તાઓની નવી ચુંટણી કરવામાં આવશે.

૨૦—ગેરહાજરોથી અયોગ્યતા—સાધારણ સભાના કોઈપણ સભ્ય એકી સાથે ત્રણ સભાઓમાં ખાસ રજા કે કારણ વગર હાજરી નહીં આપે કે પરોક્ષ પ્રત્યુત્તર નહિ આપે તે આપોઆપ સભામાથી અલગ થયા બરોબર છે. અને તેની જગ્યાએ બીજા સભાસદને સાધારણ સભા નીમી લેશે.

૨૧—હિસાબ–સાધારણ સભા અને સમિતિઓના હિશાબ તપાસવા બે ઓડીટસ સાધારણ સભા નીમશે. અને તેમણે કરેલી હીસાબ બાબતની તપશીલ તથા હીસાબનું તારણ સાધારણ સભામાં રજુ કરવામાં આવે.

૨૨—વ્યવસ્થાપક સમિતિ–સાધારણ સભાના તમામ કાર્યકર્તા તેમજ મોટા પંચ કે સભા–કે મંડળના ૫૦૦ સુધીની વસ્તિ કે જન સંખ્યાએ એકને હિસાબે જેટલા સભ્ય થાય તે સર્વની એક વ્યવસ્થાપક સમિતિ થશે.

૨૩—વ્યવસ્થાપક સમિતિનું કાર્ય–વ્યવસ્થાપક સમિતિ બીજી દરેક સમિતિના તેમજ દરેક પંચ, પક્ષ, સંઘ કે મંડળના કામકાજમાં મદદ કરશે અને તેમની ગુંચવણનો ઉકેલ કરશે.

૨૪—વ્યવસ્થાપક સમિતિની બેઠક–વ્યવસ્થાપક સમિતિની બેઠક એક વર્ષમાં કમમાં કમ બે વખત મળશે. એ બેઠક પ્રત્યક્ષજ હોઇ શકે.

૨૫—કોરમ–વ્યવસ્થાપક સમિતિનો સભ્ય એકી સાથે ત્રણ બેઠકમાં ગેરહાજર રહેશે તે આપોઆપ અલગ થશે. અલગ થનારની જગ્યાએ કામચલાઉ નીમણુંક વ્યવસ્થાપક કરી શકશે.

૨૬—વ્યવસ્થાપક સમિતિના કુલ સભ્યના ⅓ યા ૫ પૈકી જે ઓછી સંખ્યા હોય તેટલી સંખ્યાનું કોરમ ગણાશે.

૨૭—સંસ્થાની સભા–કે સમિતિની બેઠકમાં સભાપતિ સામાન્ય રીતના સભા કે મીટીંગના કાનુનુ મુજબ કામ લેશે. મત ગણત્રી કરતાં બે બાજુના મત એક સરખા થાય તો સભાપતિ વધારાનો એક મત આપી શકશે.

૨૮—સભાસદ માટે–સભાપતિનાં અધિકાર અને કર્તવ્ય.

(૧) કાર્યકર્તાઓને નિયમ વિરૂદ્ધ કામ કરતાં અટકાવવા.

(૨) કાર્યકર્તાના કામ પર વખતો વખત દેખરેખ રાખવી.

(૩) બજેટથી આધક ખર્ચ રૂ. ૧૦૦) સુધી ખરચવા મંજુરી આપવી. વધુને માટે વ્યવસ્થાપક સમિતિને પુછવું.

૨૯—મહામંત્રી–મહામંત્રીના આધકાર અને કર્તવ્ય.

(૧) સભા અને સમિતિઓના મંત્રીઓના કામ પર દેખરેખ રાખવી.

(૨) સભાસદોની નોંધ રાખવી.

(૩) નિયમ મુજબ નાલાયક ઠરતા સભાસદ ને બાદ કરી તેની જગાએ બીજાને નીમવો.

(૪) કાર્યકર્તા પાસથી આખા વર્ષના કાર્યનો હેવાલ મેળવવો.

(૫) દર વર્ષે હિસાબ તૈયાર કરી સભામાં રજુ કરવો અને પ્રકાશિત કરવો.

(૬) વાર્ષિક અધિવેશનનો બંદોબસ્ત કરવો તેની સૂચના કમમાંકમ એક મહિના પહેલા આપવી અને તેમાં રજુ કરવાના ઠરાવ એકત્ર કરવા.

(૭) સભાએ મંજુર કરેલ ઠરાવોનો પ્રચાર કરવો.

(૮) કાર્યકર્તાના ઉચિત અનુચિત કારભારની સૂચના સભાપતિને આપવી.

(૯) દરેક પંચ પક્ષ–સંઘ–મંડળ અને સમિતિના મંત્રીને કાર્યકર્તા સાથે પત્ર વ્યવહાર કરવો.

(૧૦) હિસાબ તથા ચોપડા રાખવા.

(૧૧) બજેટ મુજબ ખર્ચ માટે રૂપીયાની મંજુરી આપવી અર્થાત મહામંત્રી ને સત્તા છે કે પોતાના હાથ નીચેના મંત્રીઓના કોઈ બીલનો કોઇ હિસ્સો કે આખું બીલ વ્યાજબી નહિં લાગે તો તે નામંજુર કરી શકે છે. એમના નિર્ણય પર અસંતોષ હોય તો તે મંત્રી નામંજુર થયેલ રકમ માટે સભાપતિ ને અપીલ કરે, ત્યાંથી બીજી અપીલ વ્યવસ્થાપક સમિતિને તે કરી શકે. તેનો નિર્ણય છેવટનો ગણાશે.

(૧૨) પગારદાર કાર્યકર્તા નીમવા, બર તરફ કરવા જામીનગીરી લેવા વીગેરે નિયમાનુસાર કામ કરવું.

(૧૩) બજેટથી રૂ. ૫૦) થી વધુ સભાપતિની મંજુરી વગર ખરચી શકે નહિં.

(૧૪) પોતાના હાથ નીચેના મંત્રીના બજેટમાં વધઘટની જરૂર હોય તો કુલ બજેટની અંદર કરવી.

(૧૫) સંસ્થા તરફથી કોર્ટ કચેરીના કામો કે કોઇને જવાબ દેવાના કામો કરવા અને વકીલ મુખત્યાર નક્કી કરવા.

(૧૬) મહામંત્રીના કોઇ પણ કાર્ય અગર ચુકાદા ઉપર નારાજ થનાર સખસની અરજી આવતાં તે અરજી નિકાલ માટે વ્યવસ્થાપક સમિતિ સમક્ષ મુકશે.

૩૦—મંત્રી–મંત્રી માટે અધિકાર અને કર્તવ્ય.

(૧) બીલ પાસ કરવા શીવાયના મહામંત્રીના સર્વ અધિકાર સહાયક મંત્રીને રહેશે પરંતુ મહામંત્રી કોઇકાર્ય અનુચિત જોશે તો એને રોકી શકશે. દરેક મંત્રી પાસથી માસિક હિસાબ અને બીલ મંગાવી તેનાપર પોતાનો અભિપ્ર આપી મહામંત્રી પાસે પાસ કરવા મોકલશે અને તે મંજુર થઇ આવેથી પૈસા આપશે. રોજના રોકડ મેળ, પોસ્ટ રજીસ્ટર સહી કરશે. મંત્રીને અભાવે એના સર્વ અધિકાર અને કર્તવ્ય મહામંત્રીને સોંપાયલા સમજવા.

૩૧—પેટા સમીતીઓના મંત્રીઓના અધિકાર અને કર્તવ્ય.

(૧) દરેક મંત્રી પોતાની સમીતી બાબતનું કામ કરશે.

(૨) હિસાબ અને હેવાલ દર માસે સુદ ૧૦ પહેલાં મંત્રીને મોકલવો.

(૩) વાર્ષિક રીપોર્ટ અને હેવાલ કારતક સુદ ૧૫ પહેલાં મંત્રીને મોકલવો.

(૪) સમય મળે તેમ પોતાની સમીતિના ઠરાવ પર આંદોલન કરવા બહારગામ જશે.

(૫) પોતાના કામ માટે અડચણ આવે તેવે પ્રસંગે સહાયક મંત્રીની સલાહ લેશે.

(૬) જો પોતે મંત્રીથી અસંતુષ્ટ થાય તો મહામંત્રી છેવટની સલાહ આપશે.

૩૨—કોષાધ્યક્ષ-ખજાનચી માટે અધિકાર અને કર્તવ્ય.

(૧) આવક અને ખર્ચની એક નકલ દર મહિનાની શુદ ૧૦ સુધીમાં મહામંત્રીને મોકલે.

(૨) રૂા. ૨૦૦) સુધીની રકમ પોતાની પાસે રાખી બાકીની રકમ વધેલી હોય તો તે મહામંત્રીની સલાહ પ્રમાણે ભરોસા પાત્ર જગ્યાએ કે બેન્કમાં બન્નેના નામથી મુકે.

(૩) મહામંત્રીની સહીવાળા બીલ માટે કાર્યકર્તાને રૂપીઆ આપે.

૩૩—કાર્યકર્તા ક્યારે કામ છોડી શકે-સભાનો કોઇપણ કાર્યકર્તા પોતાનું કામ છોડવા માંગે તો તેણે એક મહીના પહેલાં તેની ખબર મંત્રીને આપવી. પગારદાર કાર્યકર્તાની નીમણુંક દંડ કે દૂર કરવાના અધિકાર મહામંત્રીને રહેશે.

સુચના—હિસાબી કામ તેમજ 'દિગંબર જૈન' માસિક માટેના લેખ માટે સુરત મંત્રીને લખવું તથા સંસ્થા (સભા)ના બાકીના કામો માટેનો પત્ર વ્યવહાર અંકલેશ્વર મહામંત્રી સાથે રાખવો—

છોટાલાલ ઘેલાભાઈ ગાંધી, મહામંત્રી,
અંકલેશ્વર (જીલ્લે ભરૂચ)

મુલચંદ કસનદાસ કાપડિયા, મંત્રી,
ગુજરાત દિગંબર જૈન પ્રાંતિક સભા, ચંદાવાડી-સુરત.

"જૈન વિજય" પ્રિંટિંગ પ્રેસ—સુરતમાં મુળચંદ કસનદાસ કાપડિયાએ છાપ્યું.

जैन समाजकी अवनति व अभ्युदयके उपाय।

(लेखक-श्री० किशनलाल जैन पटवा "विशारद" कुकडेश्वर)

यह संसार परिवर्तनशील है। उन्नति अवनति ह्रास, वृद्धि, हानि, लाभ, दुख, सुख, उत्थान, पतन, अनिष्ठ, अभीष्ठ; नाश, अभ्युदय, बलहीन, बलवान, अधोगति, ऊर्ध्वगति। इत्यादि परिवर्तन इस कालचक्रके साथ अनादिसे होता चला आया है। हमारा जैन समाज भी इस अटल नियमके फेरमें पड़कर पूर्ण अधोगति गामी बन चुका है। प्राचीनकालमें जिस समाज एवं धर्मकी सानी भारतमें दूसरा समाज व धर्म ही नहीं था। जिस समाजने अपने नैतिक बल द्वारा-अपनी उच्च कर्तव्य शीलता द्वारा सर्वोच्च स्थान पाया था। जिस समाजकी गौरव-पताका सबसे ऊंची फहरा रही थी। जिस पवित्र समाजकी जाहोजलाली प्राचीन इतिहासोंमें स्वर्णाक्षरोंसे अंकित है। जिसकी परम पवित्र सौरभ मृगमद जरित कस्तूरीकी भांति दिग्दिगंत व्यापी थी। जिसकी कार्य-दक्षता, कर्तव्य-परायणता, उच्च-सिद्धांतिक नैतिकता आदि उच्च गुणोंपर मुग्ध हो, जैनेतर विद्वानोंने मुक्त-कण्ठसे प्रशंसा की। आज वही पवित्र समाज रूढ़ियोंका गुलाम व अंधश्रद्धाओंका कीर्नहास बन रहा है।

अब इस समाजका पुनः उद्धार कैसे हो, इस पवित्र पौधेकी जड़ोंको किन २ कीटाणुओंने क्षति पहुंचा इसकी अभिवृद्धको रोका कीटाणुओंको दूर हटा उसकी तहमें किन २ उत्तम खाद्योंके देनेकी अतीव आवश्यक्ता है। इन्हीं बातों पै अनुसंधान कर हितैषी विचारोंको कार्यरूपमें परिणत कर देना हमारे व समाजके लिये अत्यन्त श्रेयस्कर है। पूर्वजोंकी ऐश्वर्यता धर्मपरायणता एवं अपूर्व गौरवता आदिका स्मरण कर, प्राचीन कीर्ति, कौमुदीको भिनि २ परिमलसे परिवेष्ठित इतिहासके पन्ने उलट उस परागकी मस्त सुगन्धसे प्राचीनकालकी जैन जातिका स्वप्नवत् चित्रावलोकन कर बेशुद्ध हो हाथपर हाथ बैठ रहनेसे कुछ काम नहीं चलनेका। यह समय बीसवीं शताब्दिका है। इस समय प्रत्येक धर्म, प्रत्येक जाति, प्रत्येक समाज संसारके सामने सबसे आगे बढ़ने,-अपनेको सबसे अच्छा सिद्ध करनेको तुले हुए हैं।

पाठक महानुभावो! यहां हमे यह विचार करना है कि विशेष प्रकार किन २ कारणोंसे हमारे आदर्श जैन समाजका इतना गहरा पतन हुआ है। उन्हें शीघ्रातिशीघ्र समाजसे विलगाकर पुनः इस समाजको उन्नतिके शिखरपर स्थापित किया जाय। इस समाजको आदर्शताके पवित्र सिंहासनसे गिरानेवाले मुख्यतः अविद्या, आपसी फूट, अंध-श्रद्धा, रूढ़िप्रियतादि दुर्गुण हैं। इन्हींके पंजेमें फंसनेसे इस समाजका इतना ह्रास हुआ है।

जिस समाजमें ज्ञान सूर्य पूर्ण रश्मियोंसे आलोकित था। जिस समाजके तीर्थंकरों, धर्माचार्योंने ज्ञानकी चरम सीमा (केवल ज्ञान)

तककी खोजमें जीवनकी बाजी लगा, अनेक कठिन परीषहोंको सहनकर कैवल्य प्राप्त किया था, दुनियांका कोई भी पुरुष इस हद्तक पहुंचनेमें अपनेको भाग्यशाली नहीं बना सका, क्या उसी जैन समाजके इस प्रकार अविद्याके गर्तमें गिरे रहना लज्जास्पद नहीं है? ओह! आपसी फूटके मशीनगनने तो पूर्वजोपार्जित ऐक्यता व विश्व--मैत्रीके विशाल दुर्गको ढह दिया। दिगम्बर, श्वेताम्बर, स्थानकवासी, तेरापंथी आपस ही आपसमें इस प्रकार क्रिटीसाईज बने हुए हैं कि एक ही पिताकी संतान होते हुए प्रत्येक बातमें एकसे एकको नीचा दिखानेकी कोशिस करते पाये जाते हैं। प्रत्येक फिरका अपनी ढपली अपना राग आलाप रहा है।

पूर्व समयमें जिस समाजकी सिर्फ एक जिनेन्द्रदेव, वीतराग प्रभु व पवित्र जैन धर्म पर ही अटल श्रद्धा थी, आज अंधश्रद्धावश अन्य देवी-देवता व अन्य धर्मके उपासक बने बैठे हैं। रूढ़ीप्रियताकी भी हद होगई है। पूर्व कालमें जिस समाजमें सदसद्वर्तनी शक्ति मौजूद थी, आज अभाग्योदयसे रूढ़ियोंका दास बना बैठा है, रूढ़ि साम्राज्यने अपना जाल इस प्रकार फैलाया है—अपनी पोलिटिकल चालमें इस प्रकार फंसाया है कि जिससे इस समाज शरीरका अर्थरूपी रक्त रूढ़ि साम्राज्यकी बलि वेदीपर चढ़ चुका है।

यह समाज रूढ़िप्रियतामें फंसकर अपने मूल उद्देश्योंसे कोसों दूर निकल गया है। द्रव्यका भी रूढ़ियोंके पदाब्जोंमें दुरुपयोग हुआ। प्रकृतिका यह अटल नियम है कि शारीरिक पुष्टिके लिये रक्तवृद्धिकी अनिवार्य आवश्यक्ता है। जहां शुद्ध रक्त बनना बन्द हुआ, बदलेमें दूषित रक्तका संचार हुआ कि शरीर रोग ग्रसित हुआ। इसी प्रकार हमारे जैन समाजरूपी शरीरमें द्रव्यका सदुपयोग रूपी रक्त बनना तो एक समयसे बंदसा होगया है, विपरीत सम्पत्तिके दुरुपयोगरूपी दूषित रक्तने उसे और अशक्त व रोगागार बना दिया।

बन्धुओ! समाजके अन्दर घुसी हुई अविद्याको समुद्र पार करो। भारतकी समस्त जैन प्रजाको विद्याध्ययनके लिये उत्तेजित करो। आप देख रहे हैं कि आज विद्याहीके बल असभ्य जातियां सभ्य शिरोमणि बन, नये २ आविष्कारोंका पुल बांध रही हैं। संसारके विद्वान जैन धर्मकी प्रशंसा करते हैं। यह आपके पूर्वजोंके विद्याध्ययन हीका शुभ परिणाम है। आज उसी विद्या-धनकी पूर्व संचित समृद्धिहीके बल आपका सिर संसारमें ऊंचा है। अस्तु, प्रत्येक प्रांतमें जैन हाईस्कूल, जैन कालेज व भारतमें एक दो जैन युनिवर्सिटीका स्थापित होना, जैन धर्मोन्नति व जैन संस्कृतिकी रक्षामें अत्यन्त हितकर है। आज दूसरे हाईस्कूलों व कालेजोंमें पढ़नेवाले स्टुडन्ट जैन संस्कृति व जैन आचार-विचारको बिलकुल त्यागे हुए हैं। कई जैन बंधु इन्हीं कारणोंसे विधर्मी होरहे हैं। और इसीसे हमारी संख्या घटती जारही है। अतः अब हमारे शिशु हमारे जैनाश्रम, जैनगुरुकुल ही में शिक्षा ग्रहणकर, धराशायी धवलपताकाको पुनः फहरावें।

द्वितीय आपसी फूटको समाजमें रखना,

समाज हितैषी तो नहीं चाहेंगे। चाहे, पुरानी लकीरके फकीर मूर्खताके गर्तमें पड़े आपसी वैमनस्यकी आगको सुलगाते रहें। किंतु वर्तमान समयको पहिचाननेवाले, गांधीवादकी बयारसे विश्वमैत्रीके परिस्फुटित पुष्पकी पखुरियोंको निरखनेवाले क्या वृद्ध, क्या युवा ? सब ही मनुष्य मात्रसे गलेमें गलबहां डाल मिलना चाह रहा है। समय उन्हें आव्हान कर रहा है। समाजकी पवित्र गोदमें वे लाड़िले हिल मिलकर खेलना चाह रहे हैं। मेरी तीनों फिरकोंके आबाल, वृद्ध पुरुषोंसे विनय है कि हमारी आपसी फूटसे क्रोधित हो, प्रकृति नटीने हमें खूब तमाचे दिये हैं। हमने आपसी वैमनस्यसे खूब खोया है। बंधुओं! अब भी शेष रहे हुएको बचा लेना ही बुद्धिमानोंका काम है। हमारा (जैन समाजका) इसीमें भला है। इसीमें हित है। इसीमें श्रेय है।

अब रही अंधश्रद्धा व रूढ़ी प्रियता, अंधश्रद्धासे हमारे मूल धर्म सम्यकत्वका नाश होता है। अन्य देवी देवता व इत्तर कारणोंसे हम शुद्ध आंतरिक मनसे जिनेन्द्रदेवका स्मरण, पूजन, भजन नहीं कर सक्ते, ईश्वर भजन विना प्राप्त मानव भव व्यर्थ ही नष्ट हो जाता है। अस्तु, जैन धर्म व जिनेन्द्रदेव पर दृढ़ श्रद्धा रखना ही प्राप्त मानव भवको सार्थक करनेका अमूल्य साधन है। रूढ़ियों जैसे बाल विवाह, वृद्ध विवाह, कन्या विक्रय, विजातीय विवाह बंद आदि रूढ़ियोंसे इस आदर्श समाजको कितनी क्षति पहुंची है यह स्पष्ट ही प्रत्यक्ष है। इन कारणोंसे हमारी संतानें अल्पायु व कमजोर होने लगी है। कन्या विक्रय जैसी खराब प्रथाने तो सारे समाज ही को कलङ्कित कर डाला है। इस पैशाचिक प्रथाने जैन समाजको इतना नीचा दिखाया है कि कहते नहीं बनता। वृद्ध विवाहको कतई बंद करना व जैन धर्मानुयायीयोंके आपसमें विवाह सम्बन्ध चालू करना, कन्या विक्रय जैसी घातक प्रथाको रोकना है। बाल विवाह तो बन्द होना नितांत अवश्यक है ही। आज समाजमें विधवाओंकी अधिक संख्याका होना इसहीका दुष्परिणामका फल है।

प्यारे महानुभावो ! जैन समाजकी उन्नतिके लिये, समाजमें विद्याका प्रचार, आपसी फूट, अंध श्रद्धा, व रूढ़ियोंका नाश अत्यन्त आवश्यक है। विद्याके प्रचारसे जैन जनता विद्वान होकर अपने कर्तव्यको समझ उन्नतिके प्रथमें सहायक होगी ! जैन संस्कृतिसे विस्मृत प्रजा पुनः जैन सूर्योदयके आलोकमें अपने कर्तव्य मार्गको निर्धारित करलेगी। विद्या प्रचारसे जब जैन जनताको अपनी सच्ची कर्तव्य दिशाका ज्ञान होजावेगा तो वे आपसी फूट, अंधश्रद्धा, रूढ़ियोंकी गुलामीमें फंसे रहना कभी पसंद न करेंगे। आज समाजमें जितनी भी उन्नति दिखाई देरही है यह सब विद्वानोंकी ही कृपाका फल है। सोई हुई जैन समाजको उन्होंने जागृत किया है। सर्व प्रथम हमें जैन संस्कृतिको लिए हुए शिक्षण शालाओंकी योजना कर हमारे शिशुओंको विद्वान बनाना चाहिये।

इस डायन फूटसे हमारी बहुत क्षति हुई है। अतः अब तीनों फिरकोंकी एक कान्फ्रेन्स द्वारा ऐसा

मार्ग निर्धारित करना चाहिये कि जिससे हमारे मन मुटाव धूल । जायं समाजके पांवोंमें अंधश्रद्धा व रूढ़ियोंकी जो बेड़ी पड़ी है हमें चाहिये कि हम उसे शीघ्रातिशीघ्र हटादें। अगर हम इन जंजीरोंको अब भी नहीं काटेंगे तो अवश्य ही हमारा भविष्य अंधकार मय है। अतः हमें अपने हितके लिये, समाजके हितके लिये इन रूढ़ियोंको सदाके लिये दफना देना ही श्रेयस्कर है। रूढ़ियोंसे हमारी बहुत क्षति हुई है। अब तो इन्हें निभाथा नहीं जाता। ओ ! समाजके प्यारे नवयुवको ! शीघ्राति शीघ्र इन रूढ़ियोंको समाजसे निकाल बाहिर करो। कुछ दयालु बुजुर्गोंको रूढ़ियोंका गुलाम बना रहना अति प्रिय है। उन्हें रूढ़ियोंके आघात प्रत्याघातका दिग्दर्शन करा समझा अपने पक्षमें लेना ही समीचीन है। बंधुओ ! जुट जाओ, समाजके हितके लिये जुट जाओ, पुनः जगतको दिखलादो कि जैन युवकोंके अंदर पूर्वजोंका रक्त है, पूर्वजोंकी गौरवशाली वैभवताका मद है। दुनियाँ तुम्हारे तरफ अनिमेष नयनोंसे देख रही है। क्या, अब भी तुम कर्तव्यहीन बने मक्खियाँ उड़ाते बैठे रहोगे? अभ्युदयके अरुणोदयमें तुम्हारी विजय है।

बंधुओ ! उठो ब्रह्ममुहूर्तका समय है। भविष्यकी ओटमें विजय लक्ष्मी बनमाला लिये मुस्करा रही है। समाजका पवित्र सिंहासन अंधश्रद्धासे रूढ़ि भक्तोंने अपवित्र कर दिया है उसे प्रेमामृतके अभिषेकद्वारा पवित्र कर पुनः उस प्राचीन आदर्शता, नैतिकताको सिंहासनारूढ़ करो।

—❧—

सन्तान सुधारके सरल उपाय।

(ले०-पं० श्रीधरलाल शास्त्री-नलखेड़ा)

सन्तानके सद्गुणी और दुर्गुणी होनेमें माता पिताको कारण समझना चाहिये। क्योंकि उनके भले और बुरे व्यवहारोंका संस्कार सन्तानके ऊपर असर करता है।

जिस प्रकार बीजसे वृक्ष उत्पन्न होता है उसी प्रकार "माताके रज और पिताके वीर्यमे" संतान होती है। जो श्रेष्ठ सन्तान चाहें उन्हें सबसे प्रथम अपने ही शरीरको निरोग सुदृढ़ और बलवान बनाना चाहिये। क्योंकि स्त्री-पुरुषोंके सरोग शरीरकी सातों धातुएं दूषित होजाती हैं। मुख्य रूपसे क्षय, मृगी, प्रमेह आदि कष्टसाध्य रोगियोंको सम्भोग ही नहीं करना चाहिये। सरोगी स्त्री पुरुषोंका रज वीर्य सरोगी ही सन्तानको उत्पन्न करता है इसी कारण हम निर्बल कुरूप सन्तान भी देखते हैं।

मेरी समझमें रोगी पुरुषको विवाह ही नहीं करना चाहिये। और अगर होगया हो तो रोगके शांत (निर्मूल) नाश न होने तक सम्भोग भी न करना चाहिये। तथा परस्परमें मित्र तुल्य व्यवहार रखना चाहिये। इसके लिये ही हम "वीर्यके प्रकार और उसके प्रभाव" इस विषय पर स्वतंत्र लेख लिखेंगे।

अभी इस अंकमें साधारण उपाय दिखाये हैं। मैं तो यह दावेके साथ कहता हूं कि "माता पिता जैसा पुत्र चाहें वैसा ही पैदा (उत्पन्न) कर सकते हैं।

स्त्री पुरुषको समुचित ब्रह्मचर्यसे रहना चाहिये। एक माहमें एक वारसे अधिक संभोग कभी नहीं करना चाहिये।

इसके विषयमें एकवार ग्रीसके महात्मा 'साक्रेटीज़' से उनके शिष्यने पूंछा कि—

प्रश्न—मनुष्यको अपने जीवनमें कितनी वार संभोग करना चाहिये ?

उत्तर—जीवनमें केवल एकवार।

प्रश्न—अगर इतनेमें संतुष्ट न हो तो ?

उत्तर—जीवनमें दो वार।

प्रश्न—अगर इतनेमें संतुष्ट न हो तो ?

उत्तर—एक वर्षमें एकवार।

प्रश्न—अगर इसपर भी तृप्ति न हो तो ?

उत्तर—एक माहमें एकवार।

प्रश्न—अगर इतने पर भी इच्छा हो तो—

उत्तर—पहले कफनके लिये कपड़ा, जलानेको लकड़ियां मंगाले बाद मनमाना संभोग करे।

पाठक ध्यान दें। ब्रह्मचर्यकी गर्मीसे वीर्य पककर सुदृढ़ और बलिष्ठ होजाता है। और फिर वीर्यके अनुसार ही संतान पैदा होती है।

सिंह अपने जीवनमें केवल एकवार ही संभोग करता है। उसकी संतान नियमसे शूर वीर होती है।

सिंहगमन सुपुरुषवचन, कदली फलें न वार।
तिरिया तैल हमीर दृढ़, चढ़ै न दूजी वार॥

मासिक रजो निःसरणके बाद संभोग संतान उत्पन्न करनेके लिये सर्वोत्तम समय है।

बालकोंका वीर्य कच्चा होता है इसलिये इससे कभी भी बलवान संतान पैदा नहीं होसकती। बल्कि बालविवाहसे ही समाजमें संतानकी दुर्बलता कुरूपपना आदि २ भयङ्कर रोग पैदा होते हैं। इसी तरह बालविवाह, वृद्धविवाह, अनमेलविवाह आदिने भी समाजको रसातल पहुंचा दिया है। अभिमन्युके विषयमें यहांतक आर्यजनोंका कहना है कि "यदि अभिमन्यु युद्धके पहले वीर्यपात (संभोग) न करता तो कुरुक्षेत्रके युद्धमें उसे कोई भी नहीं मार सक्ता था।"

आजकल छोटे २ बच्चोंकी सगाइयां करके उन्हें भयंकर रोगोंकी शिकार बनाया जाता है। शोक है कि यह दुष्कार्य हमारे शुभ चिन्तकोंसे उत्पन्न होता है। जैसा पुत्र पैदा करना चाहे वैसे ही गुण मातापिताको धारण करना आवश्यक हो जाते हैं। अगर माता किसी गुणको धारण कर रही है और पिताकी ओरसे बाधा या हीनता हो रही है तो ऐसी दशामें सन्तान उत्पन्न करनेमें पूर्ण सफलता न होगी।

अगर संगीतज्ञ सुन्दर पुत्र चाहे तो स्वतः मातापिताको संगीत प्रिय होना चाहिये। तथा गर्भमें संगीतका संस्कार हो ऐसे उपाय करने चाहिये।

वीर सन्तानके लिये महावीर, बाहूबली, महाराणा प्रताप, छत्रपति शिवाजी, अर्जुन आदि वीर पुरुषोंके चित्र दर्शन और उनके वीरतामय कार्योंकी कथा प्रेमसे सुनना व सुनाना चाहिये।

वीरत्वके भाव हृदयमें रहनेसे गर्भस्थ संतान पर भी असर होता है। दृढ़ संकल्प, उत्साह, प्रसन्नता, ओज, धैर्य आदि वीरत्वके लिये आवश्यक भाव हैं। जैसे अर्जुनने सुभद्राके गर्भस्थ (अभिमन्यु) पर वीरपनेके भाव भरे थे।

एक धर्मात्मा पुत्र पैदा करनेके लिये क्षमा, मार्दव, आर्जव, सत्य, शौच, संयम, ब्रह्मचर्य, शील (जितेन्द्रिय) पनेके भाव भरना आवश्यक होजाते हैं। जैसे श्री कुन्दकुन्द मुनिराजकी माताने गर्भमें ही सात्विक और धार्मिक भावोंद्वारा मुनिचर्याका पाठ पढ़ाया था। फलस्वरूप ऐसा ही पुत्र पैदा हुआ और संसारके पापकलंक धोनेमें समर्थ हुआ। इसीप्रकार मंत्रवादी पुत्रके लिये नाना आश्चर्य-कारिणी विद्याओंका पाठ गर्भाधानमें ही सिखाया जाता है। चित्रकारी व्याकरण, न्याय, काव्य, स्वरभौम व्यंजन आदि विद्याधारी पुत्रके लिये उसके अनुसार ही गर्भमें संस्कारार्थ उनके भाव और उस२ विद्यामें निपुण धनञ्जय कवि श्री० पूज्यपाद स्वामी, श्रीमानतुंगाचार्य. श्री उमास्वामी श्रीवादिराज, पाणिनी आदिके जीवन चरित्र सुनाने चाहिये। तथा उस विद्या द्वारा क्या २ चमत्कार उन्होंने राजा महाराजाओंकी सभामें करके संसारको अपने गुणोंपर मुग्ध किया था, आदि बातोंपर माताका वार२ लक्ष्य होनेसे गर्भ-स्थ बालपर भी वही असर होता है।

इसलिये "जैसा पुत्र पैदा करना चाहें वैसा ही संस्कार डालना चाहिये।" क्योंकि माता—पिताकी एकाग्रतामय विचारोंकी शक्तिका गर्भपर प्रतिबिम्ब पड़ता है। "कुछ ही वर्षो पहले अमे-रिकाके वाशिंगटन नामक शहरमें एक अमेरिकन विद्वानने एक "विचार निरीक्षक" यंत्रकी रचना की थी। इस यंत्रमें मोमके समान नरम पदार्थकी बनाई हुई एक लाट लगी थी, यंत्रसे चार या पांच फीट दूर खड़े रहकर कोई विचार किया जाय तो उस विचारका प्रतिबिम्ब यंत्रकी लाटपर तुरन्त पड़ जाता है तथा उस प्रतिबिम्बको देख-कर एक साधारण मनुष्य भी उन विचारोंको बतला सक्ता है।"

इस कथनसे स्पष्ट है कि पुनीत विचार शुद्ध व्यवहार आदिमें जितने गहरे भावोंका असर होगा उतना ही गर्भस्थ बालकपर गहरा प्रभाव होगा। मिशिन प्रसूतिगृह (क्रिश्चियनोंकी ओरसे खोले गये जच्चाखानों) में कुछ महिलायें इसी कार्यपर नियुक्त की जाती हैं कि "वे गर्भवती स्त्रियोंको" बाइबिल (ईसाइयोंकी धर्म पुस्तक) सुनावें। लेकिन हमारी जैन समाजमें पहले पर्याप्त जच्चाखाने ही नहीं हैं। जिनके अभावसे बहुतसी हानियां होजाती हैं। अगर है भी तो उनमें धार्मिक ग्रन्थ नहीं सुनाये जाते हैं। और यथेष्ट पुत्र उत्पन्न करनेके कोई अन्य साधन नहीं मिलते हैं। ऐसी दशामें साधारण स्थितिके गृहस्थ तो अपनी वासनाओंको पूर्ण नहीं कर पाते। धनाढ्योंको आरामसे ही फुरसत नहीं। इसी कारण धीर वीर प्रिय देशहितैषी सज्जन इने गिने ही देखे जाते हैं।

गर्भवती माताको देश, धर्म, जाति, रीति नीतिका ध्यान होना चाहिये और अपने पति-देवका चित्र भी समक्ष हो तो अच्छा है।

एक समय इंग्लिस्थानके एक सदग्रहस्थने अपने कमरेमें एक रूपवती वालिकाका चित्र लगा दिया। उसके उसीके आकार पुत्री पैदा हुई। एक दिन उसके मित्र आये और उन्होंने जब ५ वर्षकी कन्या देखी तब फोटो भी देखी

और कहा कि इस कन्याका यह चित्र किस कुशल चित्रकारने खींचा है, उसने उत्तर दिया कि "मित्रवर" इस कन्याका यह चित्र नहीं है। किन्तु इस चित्रसे इसकी माता शिल्पकारिणीने इस चित्रानुसार पुत्री रची है।

प्रिय पाठको! इस विषयके अनेक उदाहरण हैं। मैं लेखके विस्तारके भयसे संकोच कर रहा हूं। इसलिये संतानके सुधारका प्रथम ही सर्वोत्तम सुधारका सदुपाय गर्भमें ही उत्तम संस्कार है। हमारी माता बहिने बच्चोंको कुत्ता आया, बिल्ली आई, हौआ आया, आदि भयकारक शब्द कहकर सुलातीं हैं जिससे उनके सरल कोमल-हृदय मूर्च्छित होजाते हैं और बच्चे सोजाते हैं। बात बातमें पल पलमें उनके हृदयमें भय कूट २ कर भरा जाता है। फलस्वरूप आगे बच्चा उत्साह सम्पन्न न होकर निरुत्साही रहता है।

इंग्लेण्डमें बच्चोंके हृदयका विघात नहीं किया जाता है। एक समय एक अंगरेजका लड़का सांपके पीछे लकड़ी लेकर मारनेको भाग रहा था, सांप आगे भाग रहा था। यह देख उसके पिताने लड़केको नहीं रोका और लड़केके पीछे २ रहा. जब सांप अदृश्य होगया तो लड़का अपनेको सफल समझता हुआ खुशीसे वापिस चला आया।

बचपनमें जो शुभ या अशुभ संस्कार जम जाते हैं वे ही मनुष्यके जीवनको उन्नति या अवनतिशील बना देते हैं। इसलिये बच्चोंके सामने मैथुन हँसी या मजाक करना भी नितान्त अनुचित है। चाहे दो ही वर्षका अबोध बालक हो; किन्तु इस कृत्यका असर उसकी आत्मापर भी पड़ता है।

बच्चोंके सामने अपशब्द (गालियोंका प्रयोग) भी वर्जनीय है वरना बच्चा भी गाली देना आपसे ही सीखेगा। जिस तरह परिग्रहका संचय और द्रव्यकी संभाल बच्चा अपने माता पितासे सीखता है उसी प्रकार झूंठ, चोरी आदि भी अपने हितचिंतकोंकी क्रियाओंसे सीखता है।

उनके सामने प्रेममय सद्व्यवहार आदर्शका काम देता है। यह समय चूकने पर युवावस्था सम्पन्न बालकपर कुछ भी असर नहीं होता।

जिस प्रकार कच्चा वांस जिधर नावाना चाहें उधर नम सक्ता है और पकने पर नवानेकी कोशिश की जाती है सो वांस टूट जाता है नव नहीं सकता है।

उसी प्रकार बाल अवस्थाके संस्कारोंसे बच्चा नव सक्ता है और अगर युवावस्थामें उद्दण्ड होनेपर शुभ कार्योंकी ओर कोशिस की जाय तो पराङ्मुख होकर अलहदा होजाता है।

इसलिये सच्चे सुधारके सरल उपायोंका समय गर्भकाल और बाल्यावस्था है। पश्चात् हजारों रुपये खर्च करनेपर भी उतना काम नहीं होसकता। अतः सुशिक्षाका प्रभाव बचपनमें ही अति सरल है और परम लाभ दायक है।

समाजोन्नतिके उपाय।

(ले:-पं० खूबचंदजी जैन न्यायतीर्थ-चांपानेरी)

पाठकवृन्द ! यह बात निर्विवाद सिद्ध है कि जैन धर्मकी उन्नतिकी बुनियाद सर्व साधारण जनसे लेकर भारतीय अधिकारियोंतक इसके महत्वका अनुभव कराना है। क्यों कि आधुनिक परिस्थिति नये ढंगकी है कि जिस धर्मका ठीक निर्णय न जानसके तबतक उसको कोई महत्वशाली नहीं समझते हैं। इसी ध्येयको विधेय कर पूज्यत्रय वर्णीगणोंने जैन कालेज खोलनेका बीड़ा हाथमें लिया है कि इस कालेजसे निकले विद्यार्थी धर्मका स्वरूप आंग्ल भाषामें एवं साइन्सको भी धर्मरूपसे सिद्ध कर सर्व भारतीय जनोंमें धर्म प्रसार करें, जिससे कि सामर्थ्य बढ़े क्योंकि जब उच्च शासकोंको भी इस धर्मका रहस्य प्रतिभास होगा तब वे स्वयमेव न्यायप्रियतासे इसको स्वतंत्रता देंगे। तब ही जैनधर्मका प्रभाव कर उन्नति कर सकते हैं। अतएव प्यारे पाठकगण! जैनधर्मकी उन्नतिमें मूल कारण है तो जैन कॉलेज ही होगा। अतएव इसको अपनी चंचल लक्ष्मीको यथाशक्ति दान देकर सिंचन करें।

दूसरा कारण है कि व्यर्थव्ययको रोककर धार्मिक एवं सदुपयोग कार्योंमें करना चाहिए। व्यर्थव्यय जैसे विवाहादिमें अनुपयोगी खर्च ओली मुदरीके वक्त सैकड़ों रुपये खर्च कर देना, यह नेंग कोई धार्मिक रीति नहीं रखता है। इस नेगका रिवाज़ मिटाकर और पवित्र वैवाहिक संस्कार सुगमतानुसार जो कि रीति श्री सिंघई पन्नालालजी अमरावतीवालोंने जैनमित्र अंक ४५ में प्रकाशित की है, उसके अनुसार ही विवाह होना चाहिए।

दूसरा व्यर्थव्यय "नुक्ता करना है" अर्थात् मरणके १३ में दिन जो भोजन होता है वह नुक्ता है तथा मारवाड़में यथासम्भव जब कभी १०-२० वर्षमें भी उसके नामसे भोजन कराना उसे मोसर कहते हैं। इनमें व्यर्थ ही मानसे सैकड़ों रुपये खर्च कर देते हैं। जिससे कोई भी स्वार्थ या धर्मसिद्धि नहीं है।

पाठकगण ! इस बातको पूर्णरूपसे समझ सकते हैं कि कभी भी कहीं भी मृतक पुरुषोंके उत्सवसे धर्मोन्नति हुई है। प्रत्युत व्यर्थ खर्चकर निर्धन बन चिंता एवं पराधीन बना देता है। जिससे विचारा धनकी हाय२ में धर्मशून्य हो जीवन खो बैठता है। ऐसी दशामें धनिकजन एवं उदार पुरुष ! अपने पूर्वजोंकी ख्याति एवं सामर्थ्य करनेका उपाय है तो उनके नामसे ग्रन्थमाला खुलवाना एवं धर्मरक्षक मण्डलादि खुलवावे, जिससे उनकी स्मृतिके साथ २ आज कलके समयमें धर्मका मार्ग जाग्रत रहे और इससे इहलौकिक तथा पारलौकिक दोनोंमें सुखकी प्राप्ति हो।

अतएव प्रिय धर्मपरायण धर्म बंधुओ ! ऐसी रीतिको छोड़कर उच्च शिक्षा संबंधी कार्योंमें व्ययकर पुण्योपार्जन करो तभी जैन धर्मका प्रसार हो सकता है। अतः विद्वानगण, पक्षपाततोड़, कषायमोचन कर समाजकी उन्नतिका उपाय प्रदर्शित करें।

उसका विवाह!

लेखकः-
श्री० घनश्यामदास जैन,
हाईस्कूल-टीकमगढ़ ।

(१)

वह सहसा रो पड़ा, मैं भी रो पड़ा, रोये, खूब रोये, कबतक रोये ? कह नहीं सकता। हां तो जब हृदयका विषाद निकल गया तो वह भी रुक गया और मैं भी रुक गया। विचारोंका सोता कई प्रवाहोंमें बहने लगा। दोनों विचारमग्न थे, न वह बोला न मैं बोला। आखिर मैंने शान्ति भङ्ग करते हुये कहा, सुरेन्द्रबाबू इस तरह काम न चलेगा। अब जो कुछ निश्चित होचुका है वह अवश्य पूर्ण होगा। विशेष विषाद करनेसे हानिके सिवाय लाभकी आशा नहीं। सुरेन्द्र फिर रो पड़ा, मानो मैंने उसे उसके दुःखकी स्मृति फिरसे दिलादी। मैं वहांसे चल दिया, उस समय मुझमें कौन २ से भाव उत्पन्न होरहे थे, मैं नहीं कह सकता।

सुरेन्द्र मेरा एक परम मित्र है, आजकल कक्षा ६ में अंग्रेजी अध्ययन करता है। आयु लगभग १५ वर्षके होगी। सुरेन्द्रके घरमें तीन व्यक्ति और हैं, माता, पिता तथा एक छोटी बहिन। सुरेन्द्र सच्चा सुरेन्द्र था, उसके विचार पवित्र थे, यह पक्का धर्मप्रेमी तथा सुधारक था, वह सुन्दर था, हृष्टपुष्ट था, युवक था, यौवनकी मादकता उसके अंगप्रत्यंगसे फूट रही थी। लेकिन वह काफी न था। उसके विचार अंतिम थे, उसे समाजके नंगे चित्रका पूर्ण परिज्ञान था। वह समाजकी पूर्ण विनाशक रूढ़ियोंका दिग्दर्शन कर चुका था, अपने नाशक कारणोंका उसे ज्ञान था, वह सुधार करना चाहता था। अस्तु; उसने अपने विचार मुझे सुनाये। मैंने सुने, मैं अवाक् रह गया। एक १५ वर्षके युवकको समाजकी नस नसका ज्ञान। मैं कई बातोंमें उसका समर्थक होगया। हमारी मित्रता बढ़ गई, अत्यन्त बढ़ गई, हमारे विचार उसके विचार होगये और उसके विचार हमारे विचार होगये। मेरा विवाह होचुका था, कब हुआ और कैसे हुआ यह तो मैं नहीं जानता। हाँ, लोग अवश्य कहा करते थे कि तुम्हारा विवाह होचुका है। मैंने थोड़े दिन पीछे ही जान पाया कि मेरा विवाह होचुका है। अस्तु, जो हो, लेकिन इतना मैं अवश्य कहता हूं कि इस थोड़ेसे ही कालमें मुझे विवाहके सुखदुखका अनुभव अवश्य होगया था। विवाह क्षेत्रमें घोर परिवर्तनकी मेरी इच्छा होगयी थी। सुरेन्द्रका विवाह होनेवाला था, उसने मुझे विवाहके सुखदुखोंका अनुभव कहनेको कहा। मैंने पहिले तो बतानेसे इन्कार किया, लेकिन जब उसने और भी अधिक हठ की तो मैंने अपने अल्प कालके लम्बे अनुभवोंको सुनाया। उसे मेरे प्रति सच्ची सहानुभूति थी। वह रो पड़ा, साथमें मैं भी रोया और जब मैंने उसे उसके विवाहकी निश्चितिका ध्यान कराया तो वह और भी अधिक रोने लगा।

(२)

मैं सोके उठा ही था, लगभग ५ बजे होंगे, प्रातःकालीन सुन्दर तथा ठंड़ी२ वायु चल रही थी, मैं छतके एक किनारेसे दूसरे किनारे तक घूमने लगा उसी समय सुरेन्द्र आया, उसके मुखपर प्रसन्नता थी, लेकिन आंखे लाल थी। उस रात वह नहीं सोया था। उसने कहा "भैया आपने मुझे जो अपने विवाहके सच्चे अनुभव सुनाये हैं उसके लिये मैं आपका चिर-कृतज्ञ रहूंगा। मैंने आज रात्रिभर उनपर विचार किया है और उन्हींके आधारपर पिताजीको एक पत्र लिखा है आशा है कि वह मेरे विवाहके प्रस्तावको वापिस लेलें।" इतना कहकर वह मुझे अपना पत्र सुनाने लगा। पत्र इस प्रकार था—

पूज्यवर पिताजी,

सादर चरणस्पर्श !

मैं आपको आज यह पत्र लिखता हूं, इसे पढकर आपको मेरी धृष्टतापर आश्चर्य होगा। पर क्या करूँ, विवश हूं, जिसके लिये मैं यह पत्र लिखता हूं। वह मेरे जीवन मरणका प्रश्न है। अतः विवश होकर लिखना पड़ा। आशा है कि आप अवश्य क्षमा करेंगे। संसारमें मनुष्यके जीवनकी सबसे कठिन समस्या विवाहकी है। जीवनके समस्त सुख तथा दुःख विवाहपर ही निर्भर है, अतः यह उचित और कर्तव्यपूर्ण है कि ऐसी जीवन मरणकी कठिन समस्याको बड़े ही विचारपूर्वक हल किया जावे। इस समय मेरी अवस्था भी विवाह योग्य नहीं। अतः मैंने यह दृढ़ निश्चय किया है कि मैं अभी विवाह नहीं करूंगा। आशा है कि आप मेरी इस तुच्छ परन्तु जीवनको सुखी बनानेवाली प्रार्थनापर अवश्य ही ध्यान देंगे। चरणसेवक—सुरेन्द्र।

पत्र सुनकर हम दोनों स्तब्ध होगये, थोड़ी देर बाद सुरेन्द्रने शांति भंग करते हुये कहा—कहिये आपकी क्या राय है? मैं दुविधामें पड़ गया। सुरेन्द्र जारहा था सुधारकी ओर क्रांतिकी ओर, मैं उसके भेजनेमें सहायक होरहा था। लेकिन यह सोच करके कि इस कार्यसे सुरेन्द्रके मातापिताको कितना अधिक दुख होगा, मैं असमंजसमें पड़ जाता था। सुरेन्द्रने दृढ़ निश्चय कर लिया था, वह उठकर चल दिया। वह विचारमग्न था, क्षणर में अपने मुंहकी आकृतियां बदल रहा था।

मैंने उसे झपटकर पकड़नेका प्रयास किया लेकिन वह तीरकी भांति निकल गया। मैं विचार विभोर होगया। हायरी जैन समाज! तेरी यह दशा देखकर किसका हृदय आंसू न बहावेगा! ढाई हजार वर्ष पहिले तू भारतकी—भारतकी क्या—समस्त संसारकी अधिष्ठात्री थी, आज तेरी यह दशा!! तेरे वक्षस्थलपर कुरीतियोंका अविराम तांडव अब नहीं देखा जाता। क्या जैन वीर सोरहे हैं? हाय! क्या अब भी अपने अधःपतनको देखकर वह फूट तथा आलस्यको त्यागनेके लिये सज्जित नहीं हैं? होचुका, बहुत होचुका, अब भी उठ पड़ो अभी समय है। अभी जैन समाजकी अध-डूबी नैयाको उबार सकते हो, फिर पीछे पश्चाताप करोगे।

समाजके सर्वस्व! देखो, जरा दृष्टिपात करो, तुम्हारी समाज कैसी कैसी भयानक कुरीतियोंसे जकड़ी हुई है। तुम एक होकर उन रूढ़ियोंके

प्रति क्रांतिकर हो, भारतवासियोंको दिखादो कि जैन समाज भी अपना महत्व रखती है। सुरेन्द्रके मनमें यह अंकुर जम गया कि किसी भांति समाजकी इन भयानक कुरूढ़ियोंका नाश करना चाहिये। पाठकगण अभीतक न समझे होंगे कि सुरेन्द्रको विवाहके प्रति इतनी घृणा क्यों थी। सुनिये, एक तो वह बालविवाहका विरोधी था, दूसरे लड़कीकी अवस्था उससे एक वर्ष अधिक थी। ऐसी शादी वास्तवमें बरबादी थी। फिर सुरेन्द्र मुझसे न मिला। दोएक दिन बाद सुनाई दिया कि सुरेन्द्र घरसे भाग गया है। सब कहते थे कि थोडे दिन बाद आजायगा लेकिन मेरा हृदय कहता था कि वह तो सदाके लिये चला गया है।

(३)

जब सुरेन्द्रके पिताका पत्र लड़कीवालेके यहां पहुंचा तो वहां खलबली मच गई। विवाहकी सब तैयारियां होचुकी थीं, लड़कीका बाप अपने यहांके पंचोंको लेकर सुरेन्द्रके घर आया। झगड़ा होने लगा। देखनेवालोंकी भीड लगगई, यहांके पंचोंको भी बुलाया गया। सुरेन्द्रका पिता एक नारियल मंदिरको दे, एक विधान करे और दो जीमनवार दे, एक पक्की और एक कच्ची। बस, कुछ हुआ कि पंचोंके लड्डू पहिले तैयार हैं। लड्डू खिलानेवालेका चाहे सत्यानाश ही क्यों न होजाय। इनको तो अपने पेटपर हाथ फेरनेसे काम। अरे भला! जब यह मृत्यु भोज नहीं छोड़ते तो मात्र शोक भोज और खुशी भोज क्यों छोड़ने चले। हायरे जैनसमाज! तेरी इन कुरूढ़ियोंका कब अंत होगा? दो दिन बाद मुझे सुरेन्द्रका यह पत्र मिला:—

"माननीय हितैषी महोदय! आपने मुझे सन्मार्ग दिखाकर मेरा जो उपकार किया है उसके लिये मैं सदा आपका कृतज्ञ रहूंगा। समाजके इस अध:पतनको देखकर मेरा हृदय भर आया है और मैंने आजन्म अविवाहित रहकर समाजसेवा करनेका निश्चय कर लिया है। मैंने अपना नाम भी बदल लिया है। आप मेरे विषयमें कोई छानवीन न करें। मैं आपको पत्र देता रहूंगा।"

आपका—"**वही**"

पाठको! इसे केवल 'गल्प' न समझना, यह एक सत्य घटना है। सुरेन्द्र आज भी अन्य नामसे समाजकी पूर्ण सेवा कर रहा है। बन्धुओ! समाजको ऐसे त्यागियोंकी आवश्यक्ता है, ऐसे दृढ़ सेवकोंकी आवश्यक्ता है। जबतक बहुल संख्यामें ऐसे स्वार्थत्यागी समाजोद्धारक तैयार न हो जावेंगे तबतक उद्धार कठिन है। बन्धुओ, तैयार होजाओ और सुरेन्द्रकी भांति आत्मत्यागकर समाजोद्धारकी वेदीपर अपना बलिदान करदो।

हमारी वर्तमान दशा और धर्म प्रचार।

(लेखक-पं० नाथूराम जैन डोंगरीय न्यायतीर्थ।)

क्रांतिके वर्तमान युगमें जैन समाजकी कितनी पतित या उन्नत अवस्था होरही है। समाजके कर्णधार उसकी जीर्ण और डगमगाती हुई नौकाको किस अलक्ष्यकी ओर लेजा रहे हैं। वास्तविक धर्म और कर्तव्य उससे कितनी दूर चले गये? और अब हमें क्या करना चाहिये? आदि २ प्रश्नोंको हमें विभिन्न दृष्टिकोणोंसे विचार करनेकी आवश्यकता है, क्योंकि विभिन्न पहिलुओंपर दृष्टि-पातकर लेनेसे सामूहिक तौरपर विवेचन बहुत ही सरल रीतिसे होसकेगा!

हम सबसे पहिले अपनी समाजको तीन भागोंमें विभाजित करेंगे। पहिला दल स्थितिपाल-कोंका है जिसमें कम पढ़े लिखे श्रीमान् (धनिक-लोग) और धन हीन वृद्ध सज्जन, जो जान, मालको जन, मन आदि लिख पढ़कर अपना काम चला लेते हैं, सम्मिलित हैं। इस दलको कठपुतलीकी तरह नचाकर अपना उल्लू सीधा करनेवाले चार छह विद्वान भी हैं, जिन्हें लोग पण्डित पार्टी कहकर और अनेक चोखे खोटे पदोंसे विभूषित कर पुकारा करते हैं। ये महा-शय रूढ़ियोंपर धर्मकी सुनहरी छाप लगाकर अपनेको कृतकृत्य समझ रहे हैं, यहांतक कि किसी कुरूढ़िका विनाश होते देखकर धर्म डूबा२ का हो हल्ला मचाकर कुरूढ़ियोंपर डटे रहनेके लिये गजटोंमें लेख लिखते हैं, समय पाकर व्याख्यान भी देडालते हैं, जिससे कि लोग दब जाँय और हमारी धाक बैठ जाय।

हम विचार-विभिन्नताके विरोधी नहीं, क्योंकि सबके विचारोंकी एकता हो भी नहीं सकती, किंतु अपने थोथे मतके विरुद्ध विचार रखनेवाले और पत्रोंमें लेख लिखनेवाले किसी भी व्यक्तिके प्रति जो कषाययुक्त होकर असभ्यतापूर्ण कटाक्ष किये जाते हैं उन्हें हम ही क्या कोई भी विचारशील व्यक्ति बुरा कहेगा। इसी दलके हाथमें वर्तमानमें भा० दि० जैन महासभाकी वागडोर भी आगई है। जिसे अब लोग मनमानी महासभा' कहने लगे हैं क्योंकि समाजके प्रतिष्ठित एवं विचार-शील प्रायः सब व्यक्तियोंने उससे अपना सम्बंध तोड़ दिया है।

महासभाके कर्णधार आज अपने उद्देशके अनुसार आगमानुकूल सुधार भी नहीं करना चाहते जिसका होना तो परिस्थितिको देखकर बहुत जरूरी है।

एक अंतर्जातीय विवाहको ही लेलीजियेगा जो शास्त्रानुकूल होते हुए भी इस पार्टीके विरो-धका विषय बना हुआ है। इन सज्जनोंका मुख्य उद्देश तो अब यह हो गया है कि अपनी पार्टीमें गैर शामिल व्यक्ति जो कुछ भी बात कहे उसका

आंख मींचकर विरोध करना चाहे वह हदसे ज्यादा जरूरी और आगमानुकूल क्यों न हो। आज समाजके नवशिक्षित अंग्रेजीका अभ्यास करनेवाले हजारोंकी संख्यामें युवकगण धार्मिक ज्ञानसे शून्य होकर भ्रष्टाचारी और धर्मसे परान्मुख होने चले जा रहे हैं वे धर्मको ढोंग बताते हैं तब तो धर्म डूबता नहीं और जब समाजके प्रमुख विद्वान और श्रीमान् एक ऐसे कालेजकी व्यवस्था करनेके लिए तैयार हो रहे हैं कि जिसमें छात्र अनिवार्य धार्मिक शिक्षाके साथ २ अंग्रेजी संस्कृतादिकी सुयोग्य रीतिसे शिक्षा प्राप्त कर सकें, और फिर जैनधर्मका मर्म समझकर समाज और धर्मकी उन्नति और प्रचार करनेमें समर्थ हों, तब अकारण ही विरोधी प्रकृतिके अनुकूल उक्त सज्जन विरोध कर रहे हैं कि "हे धार्मिक समाज! जैन कालेज स्थापित होते ही धर्म रसातलको चला जायगा सो तू कालेजकी स्थापना मत होने दे।"

सारांश यह है कि यह स्थितिपालक दल स्वभावतः हठग्राही, पक्षपाती अपने आगे दूसरोंकी कुछ न सुननेवाला, आपसमें ही तू २ मैं २का बाजार गर्मकर स्वयं कुछ न करनेवाला है, और रूढ़ियोंका भक्त होनेके कारण सुधारका नाम सुनते ही चोंक पड़ता है।

दूसरा दल सुधारकोंका है और इसके दो भेद हैं। एकमें वे लोग हैं जो पाश्चात्य सभ्यताके रंगमें रंगकर धर्म कर्मको ताकमें रख देना चाहते हैं, जिन्हें जैन शास्त्रोंकी कुछ परवाह नहीं, स्वेच्छाचार ही जिनको पसंद है, अनेक धर्म विरोधी घृणित जैसे कार्योंसे धर्मकी उन्नति करना चाहते हैं। कोई२ तो यहांतक बढ़ गये हैं जो धर्मकी ओटमें अधर्मका प्रचार कर रहे हैं। पूज्य महर्षियोंके बनाए ग्रंथोंका अपनी कल्पित युक्तियोंके बलपर खंडन कर विद्वत्ताका श्राद्ध कर रहे हैं और सृजन कर रहे हैं ऐसे साहित्यका जो जैन धर्म और समाजके लिए खतरेसे खाली नहीं है। यह दल भी कम हठग्राही नहीं है जो अपनी बातोंका युक्तियों और प्रमाणोंसे खंडित होजानेपर भी उनपर दृढ़ बना है। यही नहीं एक कदम आगे ही (विनाशकी ओर) बढ़ा रहा है और अधर्मको धर्मका जामा पहना देना चाहता है। इसमें कुछ पंडित और बाबू दोनों शामिल हैं।

दूसरे सुधारक दलमें वे लोग हैं जो देशकालके अनुसार आगमानुकूल सुधार करना चाहते हैं। कुरुढ़ियोंका विरोध कर नवीन और उपयोगी बातोंको, जिनसे धर्म और समाजकी उन्नति होसकती हो, अपनाना चाहते हैं। इस दलके अन्तर्गत बहुतसे विद्वान श्रीमान एवं विचारशील युवक हैं।

तीसरा दल ऐसे महाशयोंका है जो न तो यह जानते हैं कि जैन धर्म क्या चीज़ है और न जिन्हें अपने कर्तव्यका ही ज्ञान है। तथा न समाजसे ही कोई मतलब है। ऐसे लोग प्रायः दिनभर व्यापारिक कार्योंमें फंसे रहते हैं, जिनका उद्देश परिश्रम करके पेट भरलेना मात्र है। संसारमें कहां क्या होरहा है, इसकी इन्हें कुछ परवाह नहीं। कुल रीतिको देखते हुये होसका तो मंदिरमें एक बार दर्शन और जबरदस्तीकी जाप देकर अपनी धार्मिक क्रिया समाप्त करदेते हैं,

कभी २ पुत्रोत्पत्ति, धन प्राप्ति और निरोगाकांक्षासे ये लोग पाखंडियोंके मायाजालमें फंसकर कुदेवों और कुगुरुओंकी सेवामें भी जा पहुंचते हैं। ऐसे लोग प्रायः ग्रामोंमें ही अधिकतासे पाये जाते हैं और अब शहरोंमें भी इनकी संख्या बढ़ी जारही है।

इन तीन भागोंमें विभक्त जैन समाजकी आपसी फूट और स्वार्थांगताके कारण जो दुरवस्था हो रही है वह किसी भी पाठकसे शायद छिपी न होगी।

धर्मप्रचार—

अब जैन समाजके धर्मप्रचार पर विचार कीजिये। वह इस कार्यके लिये क्या कर रही है? इसका उत्तर सीधासा है और वह है कुछ नहीं। सबसे पहिले इस विषय पर विचार करनेके लिए हमें विद्वत्समाज पर दृष्टिपात करना पड़ेगा। और फिर कहना पड़ेगा कि जैन समाजके विद्वान संसारकी अन्य समाजोंके विद्वानोंकी अपेक्षा सबसे अधिक अकर्मण्य हैं। बात यह है कि धनिक वर्ग तो अपने सपूतोंको प्रायः इतने ऊंचे दर्जेकी शिक्षा ही नहीं दिलाता जो वे उक्त कार्यके योग्य बन सकें। रहे गरीब, सो वे वेचारे अपनी आर्थिक कठिनाईके कारण पराधीन बने रहकर गुलामीमें ही जीवनलीला समाप्त कर रहे हैं। उन्हें इस कार्यके लिए समय ही कहां है? क्योंकि जो लोग संस्कृतमें धार्मिक विषयके विद्वान हैं वे तो प्रायः समाजमें अध्यापकोंकी तलाश करते हैं। और उन्हें संस्थाओंकी अव्यवस्थाके कारण प्रायः प्रति वर्ष दूसरी जगहके तलाश करनेकी चिंता लगी रहती है। जो स्थाई संस्थाओंमें कार्य करते हैं और जिन्हें वेतन भी भरपूर मिलता है उनकी इस ओर अभिरूचि नहीं है। तथा जो अंग्रेजीके विद्वान हैं वे प्रायः धार्मिक शिक्षासे शून्य हैं। जब समाजके विद्वानोंकी यह दशा है तो साधारण परिस्थितिके लोगोंकी तो बात ही क्या पूछना है?

किसी भी धर्म प्रचारका एक मुख्य अंग साहित्य हुआ करता है। जिस धर्मका जितना अधिक और सर्वांग पूर्ण साहित्य होगा लोगोंका चित्त भी स्वाभाविक उस ओर आकर्षित होगा। हमारे पूज्य आचार्योंने भी इसी दृष्टिसे अनेक विषयक ग्रन्थोंकी रचनाकर जैन साहित्यके भंडारको भर दिया था पर अभाग्यसे उनके बनाए बहुतसे ग्रन्थ तो नष्ट हो गये, बहुतसे आज भी अविवेकियोंकी कृपासे भण्डारोंमें पड़े सड़ रहे हैं और जो ऊपर भी हैं उनमें बहुतसे अप्रकाशित हैं। जो प्रकाशित भी हैं उन्हें सहसा अजैन सज्जन जिन्हें जैनधर्मका मर्म कुछ भी नहीं मालूम, उनके पारिभाषिक शब्दों और विषयकी कठिनतासे समझ नहीं सक्ते। अब आवश्यकता है ऐसे साहित्यकी जो नवीन ढंगसे रोचकरूपमें जैनधर्मका रहस्य सरलतापूर्वक अजैन भाइयोंको समझा सके। और ऐसे साहित्यका सृजन सिवाय विद्वानोंके अन्य किसीसे होना संभव नहीं है।

अतः समाजमें जितने विद्वान हैं वे यदि एक२ ही पुस्तक लिखें तो भी बहुत कुछ साहित्यकी सृष्टि होसकती है और साथ २ विद्वानोंके कर्तव्यका पालन भी। पर साहित्यकी रचना होजाने

मात्रसे कार्य नहीं होसकता। जबतक कि हजारों लाखोंकी संख्यामें उसे प्रकाशित कर अपने ही व्ययसे उसका अजैनोंमें प्रचार न किया जाय। और ऐसा करनेके लिये हमें धनकी नितान्त आवश्यकता है। हमारे श्रीमान प्रतिवर्ष हजारों रुपया धार्मिक प्रभावनाके लिये खर्च करते हैं और पूजा प्रतिष्ठा करवाकर रथ निकलवाकर मंदिर निर्माण करवाकर वा कलश चढ़वाकर अपने कर्तव्यकी इतिश्री: समझ लेते हैं। किन्तु इतना कर लेनेसे पूज्य आचार्य समंतभद्रस्वामीके निम्नलिखित शब्दोंमें सच्ची धर्म प्रभावना नहीं होती है। वे कहते हैं —

अज्ञानतिमिरव्याप्तिमपाकृत्य यथायथम्।
जिनशासनमाहात्म्य-प्रकाशः स्यात्प्रभावना॥

अर्थात्—जिस तरह भी होसके अज्ञान संबंधी अन्धकारको दूर करके जैन शासनके माहात्म्यका प्रकाश करना या जैन शासनके प्रकाशसे अज्ञानांधकारको नष्ट करना ही प्रभावना अंग है।

अब विचार कीजिये कि ? वेदी प्रतिष्ठा करवा देनेमे या रथ निकलवा देनेमे अथवा हजारों रुपया लगाकर बड़ी भारी जीमनवार करदेनेमे जीवका अज्ञान अन्धकार कहां नष्ट होरहा है? कितने अज्ञानी जैन धर्म धारण कर लेते हैं? उत्तर नकारात्मक है। सम्भवतः हमारे श्रीमान अनावश्यक वेदी प्रतिष्ठा और मंदिर निर्माणमें अधिक पुण्य समझते होंगे और धार्मिक पुस्तकोंका अपने व्ययसे अजैन और जैन समाजोंमें वितरण करनेमें कम, यह उनकी बड़ी भूल है। जब धर्म धारण करनेवाले ही न होंगे तब धर्म कहां रहेगा और मंदिर किसके काम आवेंगे? तथा वेदियोंकी क्या दशा होगी? सबसे पहिले अपने प्राचीन मंदिर और मूर्तियोंकी ही, जो उपलब्ध और बहुतसे भूगर्भमें छिपे पड़े हैं, रक्षा कर लीजियेगा फिर नवीन बनवाना। हमारा अभिप्राय किसीकी निंदा करनेका नहीं है किंतु हम यह दिखाना चाहते हैं कि लोग जिस ढंगसे धर्म प्रभावना करते हैं वह मार्ग वर्तमानमें वास्तविकमें अनावश्यक है। इसलिये श्रीमानोंको विचारपूर्वक धर्म प्रचारादि उपयोगी और आवश्यक कार्योंमें अपने धनका सदुपयोग करना चाहिये।

धर्म प्रचारका, साहित्य प्रचारके अतिरिक्त सबमे अच्छा और सरल मार्ग धार्मिक उपदेश है। प्राचीन समयमें जब हमारे पू० आचार्यवर्य अपने ओजस्वी और प्रभावशाली भाषण जनताके समक्ष देते थे, तब ग्राम और नगरके नगर जैन धर्म धारण कर लेते थे। पर आज दुर्भाग्यसे ऐसे ऋषियोंका अभाव सा होगया है। किन्तु इस कार्यको ईसाई और आर्यसमाजकी तरह जैन विद्वान् अवश्य कर सकते हैं। अफसोस है कि श्रीमान् पं० चम्पतरायजी बैरिस्टर, पं० राजेन्द्रकुमारजी अंबाला तथा अन्य दो चार इनेगिने विद्वानोंको छोड़कर जो जैन धर्म और समाजकी निस्वार्थ सेवा कर रहे हैं अन्य विद्वान् इस ओर लक्ष नहीं देते, यदि कहाजाय कि उनकी आजीविका स्थिर नहीं तो क्या समाज इसका प्रबन्ध नहीं कर सकती? इतनी संस्थाओं, सभा, सोसाइटियोंका अस्तित्व रहते हुए कोई संस्था ऐसी नहीं दिखती जो इस कामको आवश्यक समझ रही हो। कई

सभा और संस्थाओंके प्रचारक घूमा करते हैं पर वे तो चंदा उघाने और रटे हुए १, २ व्याख्यान जैन मंदिरोंमें दे डालनेकी मशीन मात्र हैं। जिन प्रचारकोंके आगमनका समाचार सुनकर १०, ५ व्यक्ति, जो रात्रिमें शास्त्र सभामें मंदिरजीमें उपस्थित होजाते हैं, वे भी कहीं २ प्राय: उस दिन पधारनेका कष्ट नहीं करते तब कहिये इनसे और क्या कार्य सध सकता है ? हमारे विचारसे ऊंचे दरजेके विद्वान् वक्ता नियुक्त कर धर्म प्रचारका कार्य शास्त्रार्थ संघ अंबाला और जैन मित्र मण्डल देहलीको अपने हाथमें लेना चाहिये जिससे भारत-वर्षके प्रत्येक प्रांतमें तथा विदेशोंमें भी धर्म प्रचार होसके। और जिन वक्ताओंका अजैन विद्वानोंपर वास्तविकमें जैन धर्मका प्रभाव जम सके। इनका उद्देश चंदा उघाना न होना चाहिये। समाज इनका कार्य देखकर आप ही सहायता करेगा।

इन उपायोंके सिवाय 'जैनमित्र', वीर, दिगंबर जैन जैसे समाचार पत्रोंके द्वारा भी धर्म-प्रचार होसकता है। किंतु जैन समाजके कलही समाचार पत्र जो विद्वेषाग्नि उगल रहे हैं तथा असभ्यता पूर्ण गंदे और भद्दे लेखोंसे अपने पन्ने काले कर समाजमें अशांति और फूटका बीज बोरहे हैं उनसे धर्म-प्रचारकी आशा करना ही व्यर्थ है। अब इस विषयपर अधिक न लिख हम अपने लेखको यहीं समाप्त करते हैं और आशा करते हैं कि समाजके विद्वान श्रीमानादि सज्जन उक्त बातोंपर विचार करेंगे।

—:o:—

जैनी कहानेवालो !

कर्तव्य अपना सोचो, जैनी कहानेवालो।
बिगड़ी दशा सुधारो, जैनी कहानेवालो ॥१॥
यह जैन बाग कैसा, एक दिन हराभरा था।
वीरान किया तुमने, जैनी कहानेवालो ॥२॥
आपसकी फूटमें तुम, बर्बाद हो चुके हो।
अब तो इसे मिटाओ, जैनी कहानेवालो ॥३॥
क्या ओसवालभाई, क्या अन्य जातिवाले।
सब ही को एक समझो, जैनी कहानेवालो ॥४॥
देखो कुरीति तुममें, घर कर गई हैं लाखों।
इसपर न तुमने सोचा, जैनी कहानेवालो ॥५॥
कुछ साठ बरसके भी, रुपयोंके बलसे देखो।
बनते हैं तुममें दूल्हा, जैनी कहानेवालो ॥६॥
नन्हेंसे बालकोंकी, शादी रचा रचाके।
तुम हर्ष मनाते हो, जैनी कहानेवालो ॥७॥
बेजोड़ शादियां भी, बेहद जो होती रहतीं !
क्या तुमने उन्हें रोका, जैनी कहानेवालो ॥८॥
छोटीसी भी गलतीसे, जातिसे अलग करना।
तुम धर्म समझते हो, जैनी कहानेवालो ॥९॥
आगम विहित 'शुद्धि'से, नव जैन बनानेकी।
रीतिको तुमने छोड़ा, जैनी कहानेवालो ॥१०॥
इस जैनधर्म ऊपर, मौरूसी हक़ तुम्हारा।
कायम रहेगा कबतक, जैनी कहानेवालो ॥११॥
विधवा अनाथ बच्चों, असहायकी रक्षामें।
क्या तुमने किया अबतक, जैनी कहानेवालो ॥१२
निज नामके भूखोंको, रथ आदि प्रतिष्ठामें।
लाखों रुपय गँवाये, जैनी कहानेवालो ॥१३॥
आगम प्रणीत हितकर, उपजाति विवाहोंको।
तुम पाप समझते हो, जैनी कहानेवालो ॥१४॥
तीर्थंकरोंकी जननी, इन देवियोंको तुमने।
पैरोंकी जूती समझा, जैनी कहानेवालो ॥१५॥

गोविंदराय जैन न्यायतीर्थ-भोपाल।

આ અંકનો વધારો.

દરેક પંચને વિચારવા યોગ્ય-

પંચના બંધારણનો ખરડો.

૧—ગામમાં રહેતા દિગંબર જૈન લેણાવાળા-ઓના કુંટુંબોનું......ગામનું દિગંબર જૈન પંચ ગણાશે.

૨—લેણાવાળાના કુંટુંબમાં ૨૧ વર્ષની ઉંમર ઉપરાંતનો લેણા દીઠ એક એવા આગેવાનોનું મંડળ એકત્ર મળે તે તે ગામનું દિગંબર જૈન પંચ ગણાશે.

૩—પંચે અત્યાર પહેલાં ઠરાવેલ અને હવે પછી ઠરાવે તે ઠરાવો મુજબ સામાજીક ધાર્મિક વર્તન રાખી સમાજની ઉન્નતિ અર્થે બંધારણ પંચ સમગ્ત જાળવશે

૪—જેટલા લેણાવાળા હોય તેમાં સર્વને વહિવટનો પ્રસંગ મળે એ હેતુથી બે ત્રણ કે પાંચ વર્ષ માટે વિભાગ પાડી સમિતિ સ્થાપવી અને તે સમિતિને પંચ સેવા સમિતિ નામ આપવું ને એવી સેવા સમિતિએ બીજી સેવા સમિતિ નીમાતાં તેને હિસાબ તથા ચોપડા વગેરે સોંપી દેવું.

૫—સેવા સમિતિના ૪/૫ સભ્યો સમિતિમાંથી જેને પસંદ કરે તે સમિતિનો મુખ્ય સેવક ગણાય અને પંચના રાચરચિલા–હિસાબના ચોપડા આદિ માટે તે જોખમદાર ગણાય. જો ૪/૫ સભ્યો એક મત નહિં થાય તો સેવા સમિતિ પૈકી કોઇને પંચ મૂખ્ય સેવક ચુંટશે.

૬—પંચ સેવા સમિતિનું કર્તવ્ય નીચે પ્રમાણે—

અ પંચ સમસ્તનો હિસાબ સેવા સમિતિ રાખશે અને વર્ષ આખરે સરવૈયું કાઢી રજુ કરશે.

આ પંચના ઠરાવ અમલમાં મુકાયલા જોશે અને અમલમાં નહિં મુકાય તો તેના વિરોધના કારણ દર્શાવી પંચ મેળવશે.

ઇ અમુક હદ સુધી ખર્ચ કરે વધુ માટે પંચની પરવાનગી મેળવી ખર્ચ કરે.

ઈ પંચ સબંધી કામ માટે સેવા સમિતિ પંચ બોલાવે અગર બીજા કોઇ પંચ મેળવાવે તો તે મેળવશે.

ઉ મકાન ભાડા ચિઠ્ઠી કે કોર્ટ કચેરીના પંચ તરફના કામ સેવા સમિતિ કરશે.

ઊ પંચ સમસ્તનું જે કાંઇ કામ હશે તે તેના તરફથી કરશે પણ કોઇનો વ્યવહાર બંધ કરવો કે કોઇને સજા કરવાનું કામ સેવા સમિતિ કરી શકશે નહિં પરંતુ તે પંચ મેળવી થઇ શકશે.

ઋ પ્રત્યેક શ્રા. વ ૦)) સુધીમાં હિસાબ વગેરે પંચ બોલાવી તેમાં રજુ કરી મંજુરી મેળવે.

(૭) પંચનું બંધારણ.

(અ) લેણા દીઠ એક એવા આગેવાનો જેટલા હોય તેના ૨/૩ શખસો હાજર હોય તો પંચ માનવામા આવે.

(આ) પંચમાં હાજર રહેલ હોય તે શખસો પૈકી ૪/૫ કે વધુ ભાગના શખશો જે બાબત હાથ ધરવા ના કહે તે બાબત પંચમાં લેવી નહીં.

(ઇ) કોઇના વ્યવહાર બંધ કે લેણા નોતરા કાપવાની બાબતમાં હાજર સભ્યોના ૪/૫ કે વધુ ભાગની સંમતિ જોઇએ.

(ઈ) કોઇ બાબતમા નિર્ણય લાવતાં વિચિત્ર અડચણ આવે તેવે પ્રસંગે એક લવાદ સમિતિ તે કામ પુરતી નીમવી અને તે સમિતિ ૩/૪ થી વધુ મતે કે સર્વાનુમતે નિર્ણય લાવે તે પંચ કબુલ રાખે. જો ૩/૪ સભ્યો એકમત નહિં થય તો લવાદ સમિતિ ફરીથી ચુંટવમાં આવે.

(ઉ) પંચના ઠરાવ પંચની ચોપડીમાં લખાય અને તે નીચે મુખ્ય સેવક તથા અસલ શેઠ હોય તેની સહી લેવામાં આવે.

(ઊ) પંચમાં હાજર રહેલ શખસો પૈકી ⅔ થી વધુ ભાગના શખસો એકમત થાય તે ઠરાવ મંજુર ગણાય.

(ઋ) પંચ તરફના પ્રતિનીધી, ઉપરની કોઇ મોટી પંચ કે સંસ્થા માટે તેના નિયમને આધીન થઈ મોકલશે.

(એ) મત ગણત્રી કરવામાં અગવડ આવે તો તેવે પ્રસંગે પંચના અસલ શેઠ હોય તેના ને તે નહીં હોય તો મૂખ્ય સેવકના બે મત ગણાશે.

(૮) પંચનું કર્તવ્ય.

(અ) પંચ સમસ્તના ઉન્નતિના ઉપાય પંચ હાથ ધરશે.

(આ) પંચ સેવા સમિતિએ કરેલ ખર્ચ અને કામોના હેવાલ જોઇ મંજુર કરશે.

(ઇ) આજ દીન પહેલાં થયેલ ઠરાવના તારણનો અને નવા ઠરાવ થાય તેનો અમલ થતો જોશે અને તેનો ભંગ કરનારને યોગ્ય લાગે તો શિક્ષા કરશે.

(ઈ) લેણાદારોની વચ્ચેની કાંઈ તકરારનો નિવેડો કરવા તેમના તરફથી લેખી અરજ આપવામાં આવે ને પંચનો નિર્ણય છેવટ સુધી કબુલ રાખવા લેખી ખાત્રી આપે તો પંચ તેનો નિર્ણય આપવા તે કામ હાથ ધરશે.

(ઉ) પંચ સમસ્તની લેણી પડતી રકમ મેળવવા માટે શક્તિ અને સત્તા હોય તેટલે દરજ્જે ઉપાય લેશે.

(ઊ) પંચ સમસ્તના બંધારણ વિરૂદ્ધ ચાલનારને દંડ કરવા વગેરેની તમામ સત્તા પંચને છે.

(ઋ) મોટા પંચ કે એવી સંસ્થાનું કાંઈ કામકાજ આવે તે પર નિર્ણય કરશે. અને તે પંચ કે સંસ્થાની સાથે તેમના રીવાજ પ્રમાણે બનતા સુધી ચાલવા પ્રયાસ કરશે.

(એ) પંચ સેવા સમિતિ હિસાબના ચોપડા. શીલક વગેરેનો હવાલો લે ત્યારથી તે જાળવવાની જોખમદારી તેમની છે. તેની યોગ્ય વ્યવસ્થા માંહો માંહે તે કરી લે. છતાં સેવા સમિતિના સભ્યો મતભેદ રાખે અને પંચને તેથી નુકશાન થાય એવું પંચને સમજાશે તો વર્ષ દરમ્યાન ગમે ત્યારે તે સમિતિ પાસેથી સર્વે ચાર્જ લઇને તેમની પછીની સેવા સમિતિને સોંપશે.

(ઐ) આ નિયમાવળીના ઠરાવમાં સુધારો વધારો હવે પછી પંચ કરી શકશે કે આખો નિયમ પણ કાઢી નાંખી શકશે અગર નવો નિયમ દાખલ કરી શકશે, પણ ⅔ થી વધુ મતથી મંજુર થયેલ નિયમ ૭ માસ સુધી કોઇ બદલી શકશે નહિં.

(૯) પંચ સમસ્તના અત્યાર સુધીના મંજુર થયેલ ઠરાવો જોઇ તપાસી તે વિષયવાર ગોઠવી સાર રૂપ તારણ તૈયાર કરવું તેને માટે એક સમીતિ (અમુક ગ્રહસ્થોની) નીમવામાં આવે છે અને એ સમિતિએ એ તારણમાં બે ભાગ પાડવા (૧) આમલા હેવાલ રૂપ ઠરાવના (૨) પંચ સમસ્ત માટે નિયમ પાળવા બાબતના ઠરાવો પૈકી જે ઠરાવમાં કાંઇ ફેરફાર કરવા યોગ્ય લાગે તે માટે સમિતિએ પોતાનો અભિપ્રાય પંચમાં રજુ કરવો. અને બાકીના જેમને તેમ ઠરાવ રૂપે કાયમ રાખવા.

(૧૦) ઉપરના પંચના કર્તવ્યમાં અનેક બાબતો ઉમેરી શકાય છે પણ દરેક પંચ પોતપોતાને અનુકુળ આવે અને બીજા પંચ સાથે જેમ બને તેમ એક વિચારના થવા ઉદાર દીલથી નિયમો ઘડે તોજ આખા સમાજની ઉન્નતિ થશે. સ્વાર્થથી એક બાજુ ખેંચવામાં કોઇનું ભલું થતું નથી. યજ્ઞમાં જે આહુતી આપે છે, તેનેજ પુણ્ય પ્રતાપે આગળ કાર્યો થાય છે માટે પંચના કર્તવ્ય ઉદાર દીલે હાથ ધરવા સર્વને વિનંતિ છે.

નોટ—આ ખરડા પર દરેક ભાઇ પોતપોતાના વિચારો મને જણાવશે તો આભારી થઇશ.

છોટાલાલ ઘેલાભાઇ ગાંધી, મહામંત્રી.
ગુજરાત દિ. જૈન પ્રા. સભા—અંકલેશ્વર.

ગુજરાતી દિગંબર જૈન વસ્તિપત્રક.

ગામનું નામ	પેટા જ્ઞાતિનું નામ	લેણા કેટલા ક ઘર કેટલા	કુલ પુરુષ	અવિવાહીત પુરુષ					વિવાહીત પુરુષ		કુલ સ્ત્રી	અવિવાહીત કન્યા		વિવાહીત સ્ત્રી		(આશ્રમ લાયક) વિધવા બ્હેનો			ગુજરાતી ભણેલા		મેટ્રીક ઉપર અંગ્રેજી ભણેલા
				પાંચ વર્ષની અંદરના	૫ થી ૨૫ વર્ષ સુધીના	૨૫થી ૪૦ વર્ષના અવિવાહીત	૨૫થી ૪૦ વર્ષના વિધુર	૪૦ ઉપરના બ્રહ્મચારી કે વિધુર	સગપણ થયેલા	પરણેલા		૧૦ વર્ષ અંદરની કન્યા	૧૧ ને તે ઉપરની કન્યા	સગપણ થયેલ કન્યા	પરણેલ સ્ત્રી	૧૪ વર્ષ અંદરની	૧૫ થી ૪૫ વર્ષ સુધીના	૪૫ અને તે ઉપરની	પુરુષ	સ્ત્રી	
૧	૨	૩	૪	૫	૬	૭	૮	૯	૧૦	૧૧	૧૨	૧૩	૧૪	૧૫	૧૬	૧૭	૧૮	૧૯	૨૦	૨૧	૨૨

સુચના— ૧) પરણેલ સ્ત્રી અને વિધવા બ્હેનોના ગણત્રી સાસરાના ગામમાં કરવી.

(૨) ગામના ઉત્સાહી ભાઇઓને વિનંતી કે પોતાના ગામનું વસ્તીપત્રક તૈયાર કરી તે ઉપરથી આ ફારમ ભરવું.

(૩) આ ફારમ ભરીને છોટાલાલ ઘેલાભાઇ ગાંધી, મહામંત્રી ગુજરાત દિ. જૈન પ્રાં. સભા, અંકલેશ્વરને સરનામે મોકલવું.

(૪) આ વિષયમાં વિશેષ પત્રવ્યવહારની જરૂર જણાય તો મહામંત્રીનેજ લખવું.

(૫) જો આખા ગુજરાતના ગામોના ફારમો ભરાઇ આવશે તો ગુજરાતી દિ. જૈનોનું એક ઉત્તમ વસ્તી—પત્રક આ પ્રકારે તૈયાર થઇ શકશે.

મુલચંદ કસનદાસ કાપડિયા, મંત્રી.

સુરત પરિષદના સંસ્મરણો.

ગુજરાતના દિગંબર જૈનોની તારીખ ૩૧ મી ડીસેંબર તથા ૧ લી જાન્યુઆરીએ સુરતમાં ભરાયલી પરિષદ્ ઘણે અંશે ફતેહમંદ થઇ છે. ગુજરાતના દિગંબર જૈનોનું આવું સંમેલન ઘણા વર્ષે ભરાયું છે. પ્રતિનિધિઓની સંખ્યા પણ સારી હતી.

પ્રતિનિધીઓ માટેની સ્વાગત સમિતિની વ્યવસ્થા કંઇક અધુરી ગણાય. સ્વાગત સમિતિએ ધાર્યા કરતાં પ્રતિનિધીઓની સંખ્યા વધી હશે, એમ છતાંય બીજે દિવસે કેટલીક ખામીઓ દૂર થઇ અને વ્યંવસ્થા ઉત્તમ થઇ. જમવાની વ્યવસ્થા ઘણીજ સારી હતી. દિગંબર જૈનોનું ગુજરાતમાં આવું સંમેલન ઘણા વર્ષથી ભરાયું નથી એટલે બધાજ બીન અનુભવી.

તારીખ ૩૧ મી ડીસેંબરે ૩ વાગે પરિષદની શરૂઆત થઇ. સ્વાગત ગીત ગવાયા બાદ સ્વાગત સમિતિના પ્રમુખ શ્રી. સરૈય એ પોતાનું ભાષણ વાંચ્યું. પછી પ્રમુખની વરણી થઇ. જુદા જુદા પ્રતિનિધીઓએ પ્રમુખની ચુંટણીની દરખાસ્તને ટેકો આપ્યો. પછી પ્રમુખે પોતાનું ભાષણ શરૂ કર્યું. બેઉ પ્રમુખના ભાષણ એકંદરે સારાં અને મુદ્દાસર હતાં. સમાજની ચાલુ સ્થિતિ અને તેને સુધારવાના ઉપાયો, તેમજ ખોટા રિવાજ દૂર કરો, એ બેઉ ભાષણોનો પ્રધાન સુર હતો.

પહેલે દિવસે ભાષણો પુરાં થયાં પછી વિષય વિચારીણી સમિતિ મળી. જેમ દરેક પરિષદ્‌માં ખાસ ચર્ચા વિષય વિચારીણી સમિતિમાંજ થાય છે તેમ અહીયાં પણ ખુબ રસમય ચર્ચા થઇ. રાત્રે નવ વાગે શરૂ થયેલું કામ મધ્યરાત્રે બે વાગે પુરૂં થયું. સમિતિએ પસાર કરેલા ઠરાવ વિશે આગળ લખું છું.

પ્રમુખ સાહેબ શેઠ શ્રી૦ તારાચંદનું સૌજન્ય, તથા કામ લેવાની કુનેહ વિષયવિચારીણી સમિતિમાં ખાસ ધ્યાન ખેંચતાં હતાં. તે ઉપરાંત શ્રીયુત શાંતિલાલના ઠરાવો તથા બીજાના ઠરાવો પરના એમના વિવેચનોમાંની પ્રણાલિકાવાદ ભંગ કરતી હદ બહારની વિચારસૃષ્ટિ ખાસ ધ્યાન ખેંચતી હતી!

કહેવું જોઇએ કે પરિષદ્‌ના કાર્યકર્તાઓએ પ્રમુખની ચુંટણી બહુજ સારા અને લાયક પુરૂષની કરી હતી. શેઠ શ્રી તારાચંદમાં શ્રી અને સરસ્વતીનો સારો સુયોગ છે. તે ઉપરાંત પ્રમુખ તરીકે બહુજ શાંતિથી દરેક પક્ષને સાંભળી ન્યાય આપવાની વૃત્તિ પ્રસંગોપાત જણાઇ આવતી. એમની સાદાઇ તથા મીલનસાર સ્વભાવ એ એમના આકર્ષક ગુણો છે.

પ્રમુખશ્રીથી બીજે નંબરે સૌ જુવાન તેમજ વૃદ્ધોનું પરિષદ્‌ની શરૂઆતથી તે પૂર્ણાહુતિ સુધી ધ્યાન ખેંચી રહેલી કોઇ વ્યક્તિ હોય તો તે શ્રી શાંતિલાલ સોલીસીટર! એમના આગળ પડતા વિચારોએ વૃદ્ધોમાં તેમજ જુવાનોમાં ખુબજ ખળભળાટ પેદા કર્યો છે. પરિષદ્‌માં તેમજ સબજેક્ટસ કમીટીમાં એમની વકીલ બુદ્ધિએ ઘણાને બોલતા રોકયા હતા. પરિષદ્‌ને બીજે દિવસે રાત્રે ભાઈ જીવરાજ ગાંધીને ત્યાં જુવાન મનોદશાનો અચ્છો ચિતાર એમણે રજુ કર્યો હતો. સત્ય, અહિંસા, બ્રહ્મચર્ય, અપરિગ્રહ વિગેરેમાં માનવા છતાં એમના વિચારોમાં સમાજવાદની છાયા વિશેષ પ્રમાણમાં છે.

પરિષદ્‌ના ઠરાવો અગત્યના કહી શકાય. ગુજરાતની દિગંબર જૈનોની જુદી જુદી જ્ઞાતિઓને અંરસ્પરસ કન્યા આપ લે કરવા ભલામણ કરતો ઠરાવ એ આ સંમેલનનો પ્રાણ છે. તે ઉપરાંત દશ વર્ષની નીચેની ઉમરની છોકરીઓનો વિવાહ (સગાઇ) નહીં કરવાનો તથા પાઠશાળાઓ ખોલવાનો, જ્ઞાતિની તકરારો દુર કરવાનો તથા સ્વદેશી વસ્તુ પ્રચારનો વિગેરે ઠરાવો મુખ્ય હતા.

આ પરિષદની ભૂમિકા તૈયાર કરવાનું તથા એને સાંગોપાંગ પાર ઉતારવાનું માન શ્રી. છોટાલાલ, શ્રી. સરૈયા તથા શ્રી. કાપડીઆની ત્રિપુટિને ઘટે છે. આખા ગુજરાતમાં આ વિચારોનો

પ્રચાર કરી એ ત્રિપુટી તથા નરોતમદાસને નાગરદાસે એ માસ ખુબ ભ્રમણ કરી, જુદી જુદી જ્ઞાતિઓને જાગ્રત કરી છે. વિષય વિચારીણી સમિતિમાં મધ્યરાત્રે પસાર થયલા ઠરાવ છપાઇને ઉગતા પ્રભાતે પ્રતિનિધિઓના હાથમાં આવી જતા તે મહેનત મહામંત્રીજી મુળચંદભાઇની !!

ભાઈશ્રી છોટુભાઇએ તો વારંવાર કારાવાસ સેવીને પોતાની જાતને ખુબ ખડતલ બનાવી છે. પરિષદમાં બીજે દિવસે નરસિંહપુરા ભાઇઓને ઐક્ય સાધવા એમણે કરેલી હૃદયસ્પર્શી અપીલ કદી નહિ ભૂલાય—!

ગુજરાતના દિગંબરો સુરતમાં બહુ વર્ષે મળ્યા. ઉત્સાહ પણ સારો દેખાડ્યો. સારા ઠરાવો કર્યા. ફંડ પણ સારૂં કર્યું. સંગઠન કરવા નિશ્ચય કર્યો. સંમેલનને વિજયી કરી મંત્રીઓની અવિશ્રાંત સેવાને સફળ કરી પરિષદમાં થએલા ઠરાવો કંઇક મૂર્તિમંત સ્વરૂપ લે એવી પ્રાર્થના દરેક પંચોના આગેવાનોને કરી અત્રે વિરમાશ.

"એક પ્રતિનિધી"

गजपंथाजी क्षेत्रपर–फाल्गुन सुदी ९ से १२ तक पंचकल्याणक व मानस्तंभ प्रतिष्ठा सेठ जीवराज गौतमचंद दोशी सोलापुर व ब्र० कंकुबाईजी की ओरसे होगी।

अंबादास चवरे दि० जैन ग्रंथमाला–कारंजासे प्रकट होती है जिसके संचालक प्रो० हीरालालजी अमरावती हैं। इस मालासे संस्कृत प्राकृत व अपभ्रंश भाषाके प्राचीन दि० जैन ग्रन्थ अंग्रेजी अनुवाद सहित प्रकट होते हैं। आजतक जसहर चरिउ (यशोधरचरित्र), सावयधम्म दोहा (श्रावक धर्म दोहा), पाहुड दोहा और करकंडु चरिउ (करकंडु स्वामी चरित्र) ये चार ग्रन्थ प्रकट होचुके हैं। इस ग्रन्थमालाकी नियमावली आदि इस पतेसे मगाइये–[illegible] अंबादास चवरे-कारंजा (बरार)

परिषदकी परीक्षाएं–ता० २१-२२-२३ जनवरीको सुबह १० से १ व दुपहरको १॥ से ४ बजे तक सर्वत्र होंगी।

युवकोंकी बहादुरी–आगरामें अलवरसे एक बरात आई थी। कन्यासे उम्रमें वरराजा चारगुने बड़े थे। अत: युवकोंने विवाहकी रात्रिको बरातवाले मकानका ताला बंद कर दिया व उधर कन्याकी जातिके ही १८ वर्षके युवकके साथ शादी करादी गई। सबेरा होते ही बूढे वरराजा व बराती अपनासा मुंह लेकर अलवर चले गये।

अहमदाबाद–में प्र० मो० दि० जैन बोर्डिंगमें छात्रमंडलका बृहत् अधिवेशन ता० २७-२८ दिसम्बरको बड़े प्रोग्रामके साथ हुआ था।

ललितपुर–में जैन स्पोर्ट्स क्लबकी स्थापना हुई है।

१००) इनाम–ऐतिहासिक प्रमाण सहित "पतितोद्धारक जैन धर्म" नामक पुस्तक (फुलस्केप १२५ पृष्ठको) ता० ३० सितम्बर ३४ तक जोर भाई लिख भेजेंगे उनमेंसे प्रथम नंबरको १००) इनाम मैं दूंगा। जांचके लिये ३ विद्वानोंकी कमीटी भी रहेगी। जुगलकिशोर मुख्तार–सरसावा

स्याद्वाद महाविद्यालय काशी–में ता० १७ दिसम्बरको "वर्णव्यवस्था जन्मना कर्मणा वा" इस विषयपर संस्कृतमें वादविवाद हुआ था जिसमें काशीकी अनेक संस्कृत १६ संस्थाओंके विद्यार्थीने भाग लिया था। अंतमें जन्मके पक्षमें भारतमहामंडलके छात्र अयोध्याप्रसादको व स्या० महाविद्यालयके छात्र श्यामलाल जैनको सर्वश्रेष्ठ होनेके कारण रजतपदक मिला था।

दोहदमें–नसियाजीमें सेठ पनालाल दुलीचंदजीकी ओरसे नवीन मंदिर निर्मापण हुआ है उसकी पंचकल्याणक प्रतिष्ठा पं० दीपचंदजी वर्णीके हस्तसे फाल्गुन वदी १०से फाल्गुन सुदी २ तक होगी।

"जैन विजय" प्रिन्टिंग प्रेस, खपाटिया चकला–सुरतमें मूलचन्द किसनदास कापडियाने मुद्रित किया और "दिगम्बर जैन" ऑफिस, चन्दावाडी–सुरतसे उन्होंने ही प्रकट किया।

ગુજરાત દિગંબર જૈન પ્રાન્તિક સભાનું માસિકપત્ર—

— संपादक अने प्रकाशक —

मूलचन्द किसनदास कापडिया-सूरत.

वर्ष २७	वीर संवत २४६० फाल्गुन.	अंक ५

विषय सूची.

उपहारोंके पोस्टेज सहित वार्षिक मूल्य २।) व. समाजअंक मू० ।।।)

ભ્રમણ પં. પીતાંબરદાસજી,

ઉપદેશક, જુબિલી બાગ ટ્રસ્ટ ફંડ-મુંબાઇ.

ઉપદેશકજીના ભ્રમણનો સપ્ટેમ્બરથી જાનેવારી સુધી ૫ માસનો રિપોર્ટ એના મંત્રી શેઠ ઠાકોરદાસ ભગવાનદાસ ઝવેરી તરફથી મળ્યો છે જેનો સારાંશ નીચે મુજબ છે—

નેકોડા—૨ સભા કરી. છ માસ માટે શાસ્ત્ર સભા નક્કી થઇ, પ્રતિજ્ઞાઓ લેવાઇ. મંદિરનો ખૂંટો પડી ગયો છે તે સુધારવો જોઇએ.

ગરોઠા—બે સભા કરી. કેટલાક નિયમ લેવાયા.

નનાનપુર—બે શાસ્ત્ર ને બે વ્યાખ્યાન સભા થઇ. ૨૨ જણે પ્રતિજ્ઞાઓ લીધી.

સલાલ—એક સભા થઇ શકી. ૫ બ્હેને સ્વાધ્યાયની પ્રતિજ્ઞા લીધી.

રખિયાળ—જૈન ધર્મ પર જાહેર ભાષણ આપ્યું. નિયમો લેવાયા.

પાટનાકુવા—બે સભા કરી. રોજ શાસ્ત્ર સભાનું નક્કી થયું. પાઠશાળા માટે ૧૫) માસિકના એક શિક્ષકની જરૂર છે.

અમદાવાદ—ખડાયતા બોર્ડિંગની બેઠકમાં સામેલ થયા ને વિદ્યાર્થી કર્તવ્ય પર ભાષણ આપ્યું

ગોધરા—હલવાઇ રણજીતલાલ કન્હૈયાલાલને જૈનધર્મમાં સ્થિર કર્યા, આ ૫૦ વર્ષની દુકાન હોવા છતાં ચૈત્યાલય પણ નથી.

દાહોદ—બા. રાજમલજી વકીલના પ્રમુખપણે જાહેર સભા કરી જૈન ધર્મની વ્યાપકતા પર ભાષણ આપ્યું. ૮૦૦ની સંખ્યા હતી.

રતલામ—પ્રયત્ન કરવા છતાં સભા ન થઇ શકી. પાઠશાળાની સ્થિતિ પણ શોચનીય છે.

મકસીજી યાત્રા કરી. વ્યવસ્થા ઠીક છે.

ભેલસા—સભા કરી વીતરાગના પર ભાષણ આપ્યું. પં. ગણેશપ્રસાદજી વર્ણી ને બ્ર. પ્રેમસાગરજીએ સમર્થન કર્યું. જૈન પાઠશાળા જોઇ. ધર્મ શિક્ષણ બધાં છોકરાં છોકરીઓને નથી અપાતું તે માટે સુચના કરી. શેઠ લખમીચંદજીએ ૧ લાખ રૂ. ખરચી ધર્મશાળા બનાવી છે તેમાં પાઠશાળા પણ છે.

સાગર—સતર્કસુધા. પાઠશાળા ઉત્તમ રીતે ચાલે છે.

વરોઠ—બે સભા કરી. પાઠશાળા બંધ છે તે ચાલુ થવી જોઇએ.

થાંદલા—બે સભા ને શાસ્ત્ર સભા કરી. અત્રે લોકો દરરોજ ન્હાતા નથી તે માટે સુચના કરી. પાઠશાળા જોઇ ને મીઠાઈ વેચી.

દેલવાડ—૧ સભા થઇ ને કેટલાક નિયમો લેવાયા.

અલવા—૧ સભા કરી. ભણવા યોગ્ય ૪૫ છોકરાં છે. છતાં પાઠશાળા નથી.

ભેલસા તરફ વિનૈકાવાલ ભાઇઓને પુરવાર, ગોલાલારે ભાઇ મંદિરમાં દર્શન કરવાની પણ મનાઇ કરે છે એ ઠીક નથી.

દશેરા—બે સભા કરી. ૧૮ છોકરાં ભણવા યોગ્ય છે, તેથી પાઠશાળાની જરૂર છે. ૭૦૦૦) મંદિરમાં છે માટે તેને સુધારવું જોઇએ.

ઓરાણ—૪ સભા થઇ. ગુંજવાવાળા તરફથી પાઠશાળા ચાલુ છે. પંચમાં ફુટ છે તે મટાડવા તથા પાઠશાળા કાયમ કરાવવા પ્રયત્ન કર્યો. જડાવબાઇની ૯૦૦૦) ની રકમ પણ પાઠશાળામાં લેવા પ્રયત્ન થવો જોઇએ,

લાકરોડા—૩-૩ સભા થઇ. નિયમો લેવાયા પાઠશાળા માટે ૯૦૦૦) નું ફંડ છે. ૨૦) માસિકના અધ્યાપકની જરૂર છે. શેઠ માણેકચંદ હીરાચંદ લાયબ્રેરી સારી ચાલે છે. (અપૂર્ણ)

स्वर्गवासी सेठ किसनदासजी पूनमचन्दजी कापड़िया-सूरत।

("दिगम्बर जैन" तथा "जैनमित्र" के सम्पादक श्री० मूलचन्दजी कापड़ियाके वयोवृद्ध धर्मवत्सल पिताजी, जिनका बीना कुछ बिमारीके चार माहसे शरीर क्षीण होते होते ८२ वर्षकी आयुमें स्वर्गवास होगया है।)

जन्म-विक्रम सं० १९०८ आश्विन वदी ८ स्वर्गवास-विक्रम सं० १९९० माघ सुदी १०
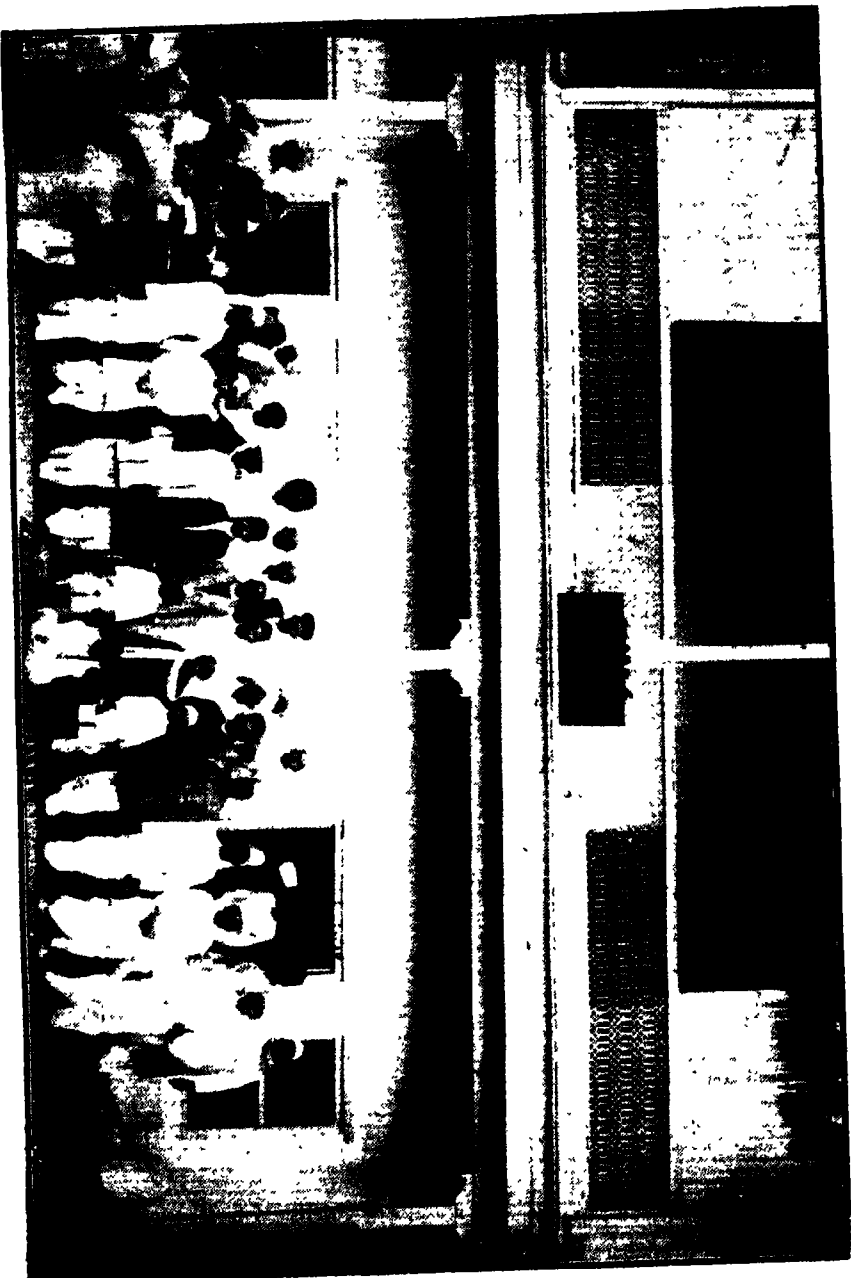
अहमदाबादमें दीवालीबाई दिगंबर जैन धर्मशालाका उद्घाटन। (ता० २१-१-३४)

(बीचमें उद्घाटनकर्ता सेठ जीवाभाई वहालचंद सोनासण बैठे हैं व आजूबाजू पं० छोटेलालजी सुप्रि०, चिम्मनलालजी वकील, मूलचन्दजी कापड़िया, मणीलाल चुन्नीलाल कोठारी आदि खडे हैं।)

जैनविजय प्रिन्टिंग प्रेस-सूरत.
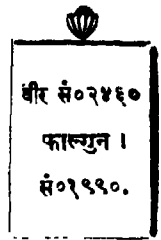
वर्ष २७ वां
अंक
९

दिगम्बर जैन

वीर सं० २४६०
फाल्गुन ।
सं० १९९०.

प्रासगिकैः सामयिकैः सुवृत्तैर्लेखैर्विनोदैः कविता-कलाभिः ।
सद्धर्मसाहित्यसमाजवृद्ध्यै "दिगम्बरो जैन" उदेत्यपूर्वः ॥

सम्पादकीय वक्तव्य ।

भूकम्प-प्रलय । हिन्दमें गत ता० १९ जनवरी दुपहरको दो बजे भूकम्प हुआ था जिसकी असर विहार प्रांतमें इतनी भारी हुई कि विहारमें एक प्रलय ही होगया है । मुजफरपुर व मुंगेर शहरका तो पूरा नाश होगया है तथा विहारके हमारे जैन तीर्थोंको भी कम ज्यादा नुकसान होगया है। इस भूकम्पसे विहार प्रांतमें करोड़ों रुपयाका नुकसान होगया । व ६-७ हजार आदमी तो मर गये व हजारों होस्पिटलमें पड़े हैं । अतः आज विहारकी दशा अतीव दयाजनक है और यहांके लिये एक करोड़की सहायताकी आवश्यक्ता है व तभी वहांका कुछ उद्धार होसकेगा । इसमें सरकार भी सहायता कर रही है तथा प्रजामें भी लाखोंका फण्ड होरहा है व होनेकी आवश्यकता है। हमारे जैन भाइयोंको भी इसी भूकम्प पीड़ित सहायक फण्डमें यथाशक्ति रकम भेजना चाहिये जो बा० राजेंद्रप्रसाद विहार बेंक पटनाके नामे भेजी जासकती है तथा विहारके दि० जैन तीर्थोंकी सहायतार्थ द्रव्य बा० निर्मलकुमारजी-आराको भेजना चाहिये ।

* * *

महावीर जयंती । परम पूज्य पुण्य पर्व-श्री महावीरजयंती आगामी चैत्र सुदी १३ को फिर आ रही है । उसको सर्वत्र सार्वजनिक रूपसे देहली, आगरा, इन्दौर, आदिकी तरह मनानेका विचार अभीसे करिये तभी ही यह कार्य सफल हो सकेगा व महावीर जयंतीकी आम छुट्टी जो सरकार मंजूर नहीं करती है उनको भी छुट्टी मंजूर करनी पड़ेगी। अतः स्थान २ पर आगामी महावीर जयंती अपूर्व ठाठवाठ व सार्वजनिक रूपसे मनानेका आन्दोलन अभीसे कीजिये व चैत्र सुदी १३ का सारा दिन काम धंधा बन्द करके धर्मध्यान व धर्मप्रचारमें बितानेका प्रबन्ध अभीसे कीजिये ।

* * *

ગુજરાત પ્રાંતિક સભા. ગુજરાત દિ. જૈન પ્રાંતિક સભાની સ્થાપના ને એના ઠરાવો તેમજ પંચને વિનંતિ, પંચના બંધારણનો ખરડો વગેરે બાબતો પર ગતાંકમાં પ્રકાશ પાડવાથી ગુજરાતના દિ. જૈનોમાં એ વાતની ચર્ચા ચાલી રહેલી છે ને જ્યાં ત્યાં એજ ચર્ચા જણાય છે પણ તેનું પરિણામ કંઇ માલમ પડતું નથી એ શોચનીય છે. હજુ પુરતા પ્રમાણમાં મેમ્બરો થયા નથી માટે દરેક પંચે પ્રયત્ન કરી સભાના સભાસદો નોંધી મોકલવા જોઇયે ૧૦૧)-૫) કે ૨) ભરી સભાસદ થઈ શકાય છે. પારપદના ઠરાવો પર વિચાર કરવા હજુ વીસા મેવાડા, વીસા હુમડ, દશા હુમડ, નૃસિંહપુરા ને રાંયકવાળના સમગ્ર પંચો હજુ મળ્યાંજ નથી જે માટે મહામંત્રી શેઠ છોટાલાલ ઘેલાભાઇ ગાંધીનો લગાતાર પત્રવ્યવહાર દરરોજ ચાલુજ છે. પંચોમાં ત્રણ કામ ખાસ કરવાનાં છે. એક તો પંચોનું રીતસરનું બંધારણ ઘડવાનું છે. બીજું

ગુજરાતની પરસ્પર જાતિયોઓમાં કન્યાની આપ લે કરવાનો માર્ગ ખુલ્લો કરવાનો છે તથા જ્યાં જ્યાં પંચોમાં ઝઘડા પડેલા હોય તે જાતે કે લવાદ કમીટી નીમી તે પતાવવાનું કામ મુખ્ય છે. ગુજરાતની વીસા મેવાડા ને રાયકવાળ પંચોમાં કંઇ ઝઘડો જણાતો નથી જ્યારે ઇડરની વીસા હુમડ પંચમાં ઝઘડો. સાદ સત્તરના દશા હુમડમાં ઝઘડો, સુરતની દશાહુમડ પંચમાં ઝઘડો રાયદેશના દશા હુમડ પંચમાં ઝઘડો છે, (જે પતાવવાની જરૂર છેજ) તથા નૃસિંહપરાના સાતે ગામોના પંચોમાં તથા સમગ્ર પંચમાં મહા ભારી એવો ઝઘડો પડેલો છે કે ગુજરાતમાં આજે નૃસિંહપુરા ભાઇઓ ઝઘડા માટે દાંતે મોઢે આવી રહ્યા છે. આથી નૃસિંહપુરા ભાઇઓને અમે નમ્ર ભાવે કહીશું કે આપ હવે સમયને વિચારો, ઉદારતા ને નમ્રતા બતાવો અને માંહોમાંહેના અંટસ દૂર કરી જ્ઞાતિ ઝઘડા મટાડી નૃસિંહપુરાના નામને દીપાવો. તમારે ત્યાં માત્ર મગનલાલ હરજીવનનોજ ઝઘડો નથી પણ અમદાવાદ, ઝહેર, નૃસિંહપુર, બુહારી, સુરત વગેરેમાં બીજા પણ ઘણા ઝઘડાઓ વર્ષોથી છે તે બધાનો નીકાલ લાવો તોજ નૃસિંહપુરા પંચમાં સંપ થઇ શકશે ને એ માટે પાંચ કે સાતે ગામના નૃસિંહપુરાની પંચ એક સ્થળે મળી વિચાર કરે તોજ કામ થઈ શકશે એમ અમારૂ માનવું છે. અમે ભાઇ છગનલાલ સરૈયાને એ વાત કરી તો તેમણે પણ એજ વાત કરી અને એમ પણ કહ્યું છે કે જો નૃસિંહપુરાનાં સાતે ગામનું પંચ મેળવવામાં આવે તો તે સુરતમાં બોલવવાની દરેક ગોઠવણ કરવા હું તૈયાર છું માટે હવે ઝહેર, નૃસિંહપુરા, કલોલ, નરોડા, મખિયાવ, અમદાવાદ, સુરત, બુહારી વગેરેના નૃસિંહપુરાના આગેવાન ભાઇઓ આ ચર્ચા ઉપાડી લે અને ભાઈ સરૈયા સાથે પત્ર વ્યવહાર કરી આખું પંચ સુરતમાં કે પછી બીજે પણ મેળવવા પ્રયત્ન કરે એજ અમારી આગ્રહ પૂર્વક સૂચના એ ભાઇઓને છે.

दक्षिण म० दि० जैन सभा—का ३६ वां अधिवेशन स्तवनिधि क्षेत्रपर माघ वदी ०)) पर तीन दिन तक हुआ था। जिसमें १४ प्रस्ताव पास हुए थे। मुख्य ये हैं—प्रगति पत्र चैत्रसे साप्ताहिक किया जावे। बड़ोदर सेतवाल जैनोंको भ० विशालकीर्तिजीने पावन करलिये उसपर धन्यवाद! दक्षिणके जैनोंकी आघ महसूल कम करनेकी सरकारसे विनति, निपाणीमें ऐक्य होनेपर हर्ष, सरकारी इतिहासकी पुस्तकोंमेंसे जैन सम्बन्धी भूलें निकलवानेको ९की कमेटी, ७४०९) बजट पास। सभापति भोजराजप्पाने १०००) सभाको दान किये थे। साथमें महिला परिषद भी हुई थी। जिसमें ८ प्रस्ताव हुये थे। मुख्य ये हैं—कोर्टोंमें स्त्री आरोपीपर केस चले तब १ स्त्री ज्यूरर हो, स्त्रीको संतति न हो तौभी कुटुम्बमेंसे वारसा हक्क मिलना चाहिये। एक पत्नी होते हुए दूसरी करनेकी प्रथाका निषेध, औद्योगिक शिक्षा दीजावे। व्यवहारमें स्वदेशी वस्तुको ही वर्ती जावे आदि।

ललितपुरमें दि० जैन सुकृत फण्ड—सेठ हरसुखजी और कापड़ियाजीके प्रयत्नसे ललितपुरमें दि० जैन पंचानकी सभा ता० ७ फर्वरीको श्री० सेठ वृद्धिचन्दजी सिवनीके सभापतित्वमें हुई थी जिसमें यहां बुन्देलखण्ड दि० जैन सुकृत फण्ड नामकी फर्म-दूकान खोलनेका निश्चित होकर उसके लिये ९ व्यवस्थापक भी नियुक्त होगये। इस फर्ममें तीर्थोंके व धर्मादाके रूपये व्याजपर लिये जांयगे व उसका सूद उपजाकर उसमेंसे जो नफा होगा उसका दानमें उपयोग किया जायगा। ऐसा सुकृत फण्ड मुसारीमें सेठ रोडमल मेघराजजीकी ओरसे बहुत अच्छी तरहसे चल रहा है।

ब्यावरमें—सेठ चम्पालालजी रानीवालेका अतीव वृद्धावस्थामें स्वर्गवास होगया। आप बड़े दानी व धर्मात्मा थे।

स्वर्गीय रायबहादुर श्री० सेठ टीकमचंदजी सोनी।

यह समाचार जैनसमाजमें बड़े शोकके साथ सुना जायगा कि अजमेरमें ता० ३ फरवरी १९३४ को दिनके ३॥ बजे अजमेरकी प्राचीन और सुप्रसिद्ध फर्म सेठ जवाहरमल गम्भीरमलके मालिक राय-बहादुर श्रीमान् सेठ टीकमचन्दजी सोनीका एका-एक हृदयकी गति बन्द होजानेसे शरीरांत होगया। जिन लोगोंने सेठ साहबको ३ तारीखके प्रातःकाल १० बजे तक सदाकी भांति नित्य नियम निबाहते हुए देखा था उन्हें कल्पना न थी कि आप अब हमारे केवल ५॥ घन्टेके ही मह-मान हैं। किन्तु कालकी गति वास्त-वमें बड़ी विचित्र है।

आपका शुभ जन्म सन् १८८२ ई० में हुआ था। आपका घराना बेंकर्स मंडल और व्यापारिक क्षेत्रमें प्रतिष्ठित रहनेके साथ साथ राज-भक्ति और धार्मिक दृष्टिसे भी सदासे प्रधान रहा है। यही कारण है जो आपके जीवनसे आपकी प्रतिष्ठा सम्मान तथा त्यागका वैसा ही परिचय मिलता है जैसा कि किसी भी त्यागी धनवानके जीवनसे मिलना चाहिये।

बचपनमें धार्मिक शिक्षाके साथ २ आपका केवल व्यापारिक शिक्षण हुआ था। किन्तु उसी बलपर हिन्दी, अंग्रेजीका यथेष्ट अध्ययन न होनेपर भी आपने अच्छी निपुणता प्राप्त कर ली थी। सन् १९१७ ई० में पिता (रा० ब० सेठ नेमी-चन्दजी) का स्वर्गवास हो जानेपर अपने बढ़े हुए कारोबारको आपने संभाला और उसे उत्तरो-त्तर उन्नत करके अन्त तक बड़ी दक्ष-तासे चलाया।

[स्वर्गीय रा० ब० सेठ टीकमचंदजी–अजमेर]

केवल विपुल-धन-राशि-सम्पन्न होजाने-वाला व्यक्ति सर्वसा-धारणकी दृष्टिमें उतना महत्त्व नहीं रखता जितना सेठ साहबकी भांति किसी भी आये हुए याचक अथवा सहायताके पात्रको निराशाके साथ वि-मुख न करनेवाला। धर्मभीरु, त्यागी, स-ज्जन, सरलताकी मूर्ति, निरभिमानी, परदुःख-कातर और भोले जैसे शब्दोंकी सृष्टि ऐसी ही उच्चात्माओंके कारण होती है। सेठ सा०ने अपने कर्तव्यकी इति इतनेपरसे ही न समझी, बल्कि, शिक्षा, समाजसेवा, राजभक्ति, देशभक्ति, धार्मिक उन्नति, युद्ध-समस्या, बाढ़ पीड़ितोंकी सहायता आदि अवसरोंपर उन्होंने खुले हाथों प्रचुर दान देकर भी अपनी कर्तव्यपरायणताका अद्भूत परि-

चय दिया। कई देशी राज्योंका उन्होंने बडे २ आर्थिक संकटोंमें सहयोग किया। इस प्रकार अनेकानेक सुकृत्योंद्वारा अपने त्यागी घरानेके प्रमाण-पत्रमें वे एक छाप अपनी ओरसे भी लगा गए।

आपकी प्रशंसनीय राजभक्तिके उपलक्षमें गवर्नमेंटने आपको सन् १९१८में रायबहादुरकी पदवीसे सम्मानित किया था। बड़े २ देशी राज्योंमें (जयपुर, जोधपुर, उदयपुर आदि) आप एक विश्वसनीय व्यक्ति समझे जाते थे। और वहांसे आपको ताजीम, सोना आदि प्रतिष्ठा प्राप्त थी, ऊंचेसे ऊंचे आला अफसरोंने आपसे मैत्री-संबंध स्थापित करके अपनेको गौरवान्वित समझा था। और जातीय महासभाओंने अपने नेतृत्वकी बागडोर आपके वरद हस्तोंमें सौंपकर अपनेको उपकृत माना था।

आपकी मातृभूमिकी सेवाका इससे अधिक प्रमाण और क्या मिलेगा कि आज अजमेरका प्राय: प्रत्येक जन उस मिलनसार और सरल प्रकृतिवाली स्वर्गीय आत्माके किसी प्रकार पुन: प्राप्त होजानेका आव्हान कर रहा है। वह स्पष्ट शब्दोंमें घोषित कररहा है कि हम किसी न किसी रूपमे आपके चिर-ऋणी बन चुके हैं।

आपको अपने नवयुवक पुत्र (कुँअर दुलीचंदजी) का, आदर्श पुत्र-वधू (सौभात्यवती श्रीमती ताराबाई) का और होनहार जामात्र (बाबू विमलचन्दजी सेठी) का वियोगजन्य असह्य दु:ख उठाना पडा।

इससे यद्यपि आपको आन्तरिक विरक्ति होगई थी किंतु आपने अपने बढे हुए धार्मिक ज्ञानके सहारे बड़ी शान्ति और धीरजके साथ सहन किया और व्याबहारिकतामें सब प्रकारका सांसारिक कार्यक्रम यथावत् ही रक्खा।

धर्मपर आपकी अटल श्रद्धा थी जिसका आपने अन्तिम क्षण तक उत्तम रूपसे पालन किया। तारीख ३ को सदाकी भांति ४ बजे प्रात:काल ही धर्मध्यान करके नसियां आये, स्नानादिसे निवृत्त होकर बड़ी तन्मयताके साथ पाठ-पूजन की। दूकानका कामकाज देखा और अपनी दौलतबागकी कोठी होते हुए स्टेशन गये। १० बजेके लगभग शहरकी हवेलीपर पधारे। बस उसी समय एकाकी हृदयमें और साथमें पेटमें भी वेदना आरम्भ हुई। अनुभवी चिकित्सक आये, उत्तमोत्तम औषधोपचार हुआ। किंतु सब व्यर्थ। अन्तिम समय तक भी आपने वही औषधि ली जो सदासे लेते आये थे। उसमें थोडा भी परिवर्तन करते ही उन्होंने उसे नहीं लिया और कहते रहे कि इस औषधोपचारका परिणाम शून्य ही होगा। आप लोग क्यों व्यर्थ श्रम करते हैं, अब तो बस मुझे अपने दोषोंके लिये क्षमा करते हुए सहर्ष बिदा दीजिये। इसके पश्चात् एक एक करके आप सब आत्मीय जनों और बालबच्चोंको बुलवाकर मिले-भेंटे। इस प्रकार अपनी हरी भरी फुलवारीको देखते हुए भगवानके चरणोंमें लौ लगाकर पूर्ण शांतिके साथ नश्वर शरीरका त्याग किया। इससे अनुमान किया जासकता है कि सेठ साहब कैसे पुण्यवान जीव थे।

२ लाख रुपयेसे निर्मित अजमेरके सोनीका जैन मंदिर नसियां जहां आपके "द्रव्यका सदुपयोग" का परिचय देता है वहां भारतके कला-प्रवीण शिल्पियोंकी उत्तम वस्तु-निर्माण कलाकी भी याद दिलाता है और देशके प्रधान दर्शनीय स्थानोंमें गणनीय होनेके कारण देशी और विदेशी यात्रियोंको भी अपनी ओर आकर्षित करता है। अमीर काबुल, लार्ड किचनर, लार्ड और लेडी इरविन,

तथा लार्ड विलिंग्डन तकने इसकी उत्कृष्टताकी भूरी २ प्रशंसा की है। इसकी नींव संवत १९२२ में रखी गई थी जिसका कार्य आज भी अपूर्ण ही चलरहा है। इसी प्रकार अजमेर नगरमें दो लाख रुपयेसे अपने पिताके स्मारक स्वरूप बनवाई हुई धर्मशाला तथा सम्मेदशिखरजी (पारसनाथ हिल) कुण्डलपुर और मंदारगिरि आदि तीर्थस्थानोंमें कराया हुआ आपका जीर्णोद्वार आदि आपके अपूर्व धार्मिक दान और त्यागके उदाहरण हैं। यहां हजार पांचसौकी बीसों रकमोंको छोड़कर हम मुख्य २ का उल्लेख करते हैं—

(१) श्री सम्मेदशिखरजीमें एक रथ ६०००) में बनवाकर भेट किया।

(२) विक्टोरिया हास्पिटल अजमेरको १९०००) दान किया।

(३) उपरोक्त हास्पिटलके ट्यूबरकल वार्डमें १७०००) लगाया।

(४) आबूके नरसिंग होमको ३८००) दिया।

(५) सनातन धर्म इन्टर कालेज ब्यावरको १३०००) रु० दिया।

(६) कलकत्तेके एक औषधालयमें आपने करीब १००००) का दान किया।

आपकी सहायतासे कई शिक्षा संस्थाएं लाभ उठा रही हैं। जिनमें अजमेरका महावीर विद्यालय तथा कन्या पाठशाला मुख्य हैं। जिनका वार्षिक व्यय लगभग ८०००) आपके निजसे होता है।

शिक्षा प्राप्त करनेवाले बालक यदि आपके सहयोगके सहारे विद्यादान प्राप्त करके अपने भावी सुखमय जीवनकी आशा बांधते थे तो भूखे, दीन और वृद्धजन तथा विधवाऐं आपकी सहायता प्राप्त कर २ के हार्दिक कृतज्ञता-ज्ञापन करते थे। रोगी और मरणासन्न प्राणी आपके औषधि दानसे नीरोगता एवम् जीवन प्राप्तकर करके आपको आंतरिक आशीष देते थे तो यात्रीगण विश्राम लाभ कर२के सन्तुष्ट होते थे। आज कराल कालने एकाएक परिवर्तनकी लहर चलादी। किन्तु उसमें भी सेठ सा० का आदर्श जीवन अपने एकमात्र होनहार सुपुत्र (कुँवर **भागचन्दजी साहब**) की सत्पात्रता प्रमाणित करता हुआ आश्वासनकी झलक दिखा रहा है। ईश्वर करें, कुँअर साहब-जैसी कि उनके शील-सौजन्यसे दृढ़ आशा है, ऐसे ही प्रमाणित हों।

अन्तमें हम सेठ साहबके शोक-सन्तप्त परिवारके साथ अपनी हार्दिक समवेदना प्रदर्शित करते हुए जगदाधारसे प्रार्थना करते हैं कि वह उसे इस अपार शोकको सहन कर सकनेकी क्षमता एवम् धैर्य प्रदान करें और कुंअर साहब (भागचन्दजी) का ध्यान संसारकी अनित्यताकी ओर ले जाना चाहते हैं जहां वे अपनी सुविज्ञताके सहारे एक दृष्टिपात करें और परमात्माकी इच्छामें सन्तोष मानकर कर्तव्य-क्षेत्रमें प्रवृत्त हों।

लक्ष्मीसहाय माथुर-अजमेर।

उदगीरमें शास्त्रार्थ—करनेके लिये आर्यसमाजियोंने मुनिश्री जयसागरजीको चेलेंज दी थी। अतः मुनिश्री तथा पं० राजेन्द्रकुमारजी अम्बाला व ब्र० कुं० दिग्विजयसिंहजी भी पधारे थे। ता० १३-१४ फर्वरीको वेद ईश्वरीय ज्ञान है व क्या ईश्वर जगत्कर्ता है इसपर शास्त्रार्थ होनेकी पूर्ण तैयारी होचुकी थी, परन्तु पुलीस (हैदराबाद)ने शांति भंगका कारण बताकर यह शास्त्रार्थ रुकवा दिया था। मुनिश्रीको उदगीरमें ही नहीं आनेकी सूचना भी पुलिसने निकाल दी थी वह तो मुनिश्रीके सत्याग्रहसे पुलिसको वापिस लेनी पड़ी थी। मुनिश्रीका ज्ञान बहुत बढ़ रहा है।

जैन समाचारावलि।

बिहार भूकम्प फंडमें-दि० जैनियोंकी ओरसे बहुत अच्छी सहायता भेजी जारही है।

गोहाटीमें-चन्दामलजी जैन म्यूनिसिपल मेम्बर चुने गये हैं।

जैन युवक-नामक ट्रेक्ट सीरीज जैनयुवक संघ हरदाकी ओरसे प्रकट होने लगी है जिसका होली नामक चौथा ट्रेक्ट प्राप्त हुआ है। लेखक पं० कमलकुमारजी शास्त्री व प्रकाशक बा० कुलवंतराय जैन ओवरसियर हैं। वार्षिक मूल्य सिर्फ १) है।

महावीर जयंती-इसवार देहलीमें ता० २५-२६-२७-२८ मार्च व आगरामें ता० २८-२९ मार्चको मनाई जायगी। बड़ी २ तैयारियाँ होरही हैं।

प्रतापगढ़-में संघपति सेठ घासीलालजीकी ओरसे पंचकल्याणक प्रतिष्ठोत्सव धूमधामसे होगया। १८००० जनता आई थी। महासभाके उपदेशकोंने वहां जाकर महासभाके विजाती विवाहविरोध पर व परिषद तथा गुजरात दि० जैन प्रां०सभाका विरोध करना चाहा था परन्तु वे असफल रहे थे।

दाहोद-में भी पंचकल्याणक प्रतिष्ठा होगई। ३३१) संस्थाओंको दान व २५) परिषद व परीक्षा बोर्डको दिये गये। यहां भी पं० मूलचंदजी उपदेशक महासभाने गुजरात प्रां० सभाका विरोध करना चाहा परन्तु ये बुरी तरह असफल हुये थे।

थूबोनजी-का मेला होगया। १५०० की संख्या थी। श्री० ललिताव्हेन व विद्यावतीजीके पधारनेसे कई स्त्री सभायें हुईं थीं व सेठ राजारामजी मगरौनीके सभापतित्वमें क्षेत्रकी सभा होकर क्षेत्रके सुधार संबन्धी ९ प्रस्ताव पास हुए थे व ६००) सहायता क्षेत्रको मिली थी।

अहिछेत्र-का वार्षिक मेला चैत्र वदी ८-९को होगा।

मल्हारगढ़-में तारनपंथी समाजका मेला व उत्सव निसईजीमें ता० ६ से १६ मार्च तक होगा। मुंगावली स्टेशनसे जाया जाता है।

रामपुर मनियारान-में जिला दि०जैन परिषद ता० २४ मार्चको होगी। २०से २५ मार्च तक वहां मेला भी है।

सोनागिरि क्षेत्रका मेला-ता० ३ से ६ मार्चको होनेवाला था, साथमें वीर विद्यालयका भी अधिवेशन था।

ब्र० सीतलप्रसादजी-ने अभी मदरास जाकर कर्नाटक प्रांतमें घूमकर मदरासकी जैन धर्मशालाका देन चुकवा दिया है। म्हैसूर व कर्नाटककी आपकी यात्राका जाननेयोग्य हाल जैनमित्रमें प्रगट होरहा है।

तीर्थक्षेत्र कमेटी के महामंत्री हरएक तीर्थके प्रबंधकोंको सूचित करते हैं कि वे देवगढ़के अधिवेशनके प्रस्तावानुसार अपने २ तीर्थक्षेत्रका विस्तृत इतिहास तैयार करें व हिसाबकी रिपोर्ट प्रतिवर्ष कमेटीको भेजते रहें।

करहल-में ता० १६से १८ श्री० चिरोंजाबाईजीने रत्नत्रय व दशलाक्षणी व्रतके उद्यापन कराये थे तब श्री. ब्र० सीतलप्रसादजी खास बुलाये गये थे अत: अनेक सभाऐं हुई थीं व ३००) दान भी हुआ था।

परिषद प्रचार समिति-की बैठक देहलीमें ता० १८ फर्वरीको हुई थी जिसमें 'वीर' पत्र, महावीर जयन्ती, रामपुर जिला परिषद आदिपर विचार हुआ था, तथा आगामी मीटिंग ता० २७ मार्चको मुजफ्फरनगरमें होगी। परिषदके कार्यकर्ताओंके कई भाषण भी देहलीमें हुए थे।

दि० जैन शास्त्रार्थ संघ-अम्बालाको ३५००) ला० शिब्बामलजी अम्बालाने प्रदान किये हैं। पहिले भी आपने ५०१) 'जैन दर्शन' पत्रके लिये दिये थे। धन्य!

देवगढका मेला–ता० १–२–३–४ फर्वरीको अपूर्व सफलतासे होगया। ५००० जनता थी। १०० स्वयंसेवक थे। प्रबंध उत्तम था। जंगलमें मंगल था। **भारत दि० जैन तीर्थक्षेत्र कमीटी**–का अधिवेशन श्री. बेरिस्टर चम्पतरायजीके सभापतित्वमें हुआ था। जिसमें पं० अजितप्रसादजी एडवोकेट, सेठ रतनचन्द चुन्नीलाल जगीवाले, सेठ हरसुखजी, पं० तुलसीरामजी, पं० मुन्नालालजी समगोरया, पं० गणेशप्रसादजी वर्णी, ब्र० दिग्विजयसिंहजी आदि उपस्थित थे। स्वागत सभापति सेठ गनपतलाल गुरहा–सागर थे। बेरिस्टर साहबका व्याख्यान मार्केका हुआ था। आपने प्रत्येक दि० जैनोंको फी घर १) तीर्थरक्षा फंडका अवश्य २ प्रति वर्ष देने पर खूब जोर दिया था। सभामें ९ प्रस्ताव पास हुये हैं जिसका सार इस प्रकार है—

१–सेठ सुखानंदजी, पं० धन्नालालजी, सेठ बनजी ठोलिया आदि १९ सभासदोंकी मृत्युपर शोक २–नवीन १७ सभासदोंकी नियुक्ति ३–देवगढ क्षत्रके लिये प्रयत्न करनेवाले ललितपुरके १८ महाशयोंको धन्यवाद ४–मुक्तागिरिका पहाड़ सेठ नत्थूसा पासुसा, मोती सघई ऋषभसिंघई व मोतीलालजी चंपालालजीने ४५०००)में खरीद लिया है उनको धन्यवाद, ५–तीर्थरक्षा फण्ड प्रति वर्ष फी घर १) अवश्य दिया जाय; ६–हरएक तीर्थके प्रबंधकर्ता अपने तीर्थका हिसाबमय विवरण तीर्थक्षेत्र कमीटीको अवश्य भेजें ७–सोनागिरजी भट्टारककी गद्दीके केसके सम्बन्धमें तीन प्रतिनिधि नियुक्त। ८-हरएक तीर्थका प्राचीन इतिहास लिखाया जावे। इस कार्यको प्रत्येक तीर्थके प्रबंधक अवश्य २ करावें। ९–आवश्यक खर्चके लिये अपील। इस समय करीब १२००) भरे गये। जिसमें ५०१) सेठ लखमीचन्दजी मेलसा, २५१) गणपतलालजी गुरहा, १०१) सेठ वृद्धिचन्दजी, ५१) रोडमल मेघराज, ५१) मूलचन्दजी कापड़िया, ५१) पं० मुन्नालालजी कागजी लखनऊ आदि थे।

फिर परमानंद वरयाको तीर्थसेवकका पद दिया गया। व अमेरिकाकी एक जैन धर्म प्रचारक महिला मिस मेत्रलानको धन्यवाद दिया गया व ऋषभ जैन लायब्रेरी–लंडनकी आनरेरी लायब्रेरियन मिस कोकसीको धन्यवाद व १५०) भेट देनेका स्वीकृत हुआ। व १५०) भी नगद प्राप्त होकर बेरिष्टर साहबको दिये गये।

यहां भा० दि० जैन महिला परिषदका अधिवेशन भी श्री० शांतिबाई सिवनीके सभापतित्वमें हुआ था। जिसमें अनेक स्त्रियोपयोगी प्रस्ताव पास हुये व १०१) प्रमुखाने दिये तथा ललिताब्हेन, नानीब्हेन, विमलाब्हेन व प्रभावतीब्हेन प्रत्येक १०१) देकर परिषदके स्थायी सभासद हुये। बुन्देलखण्ड प्रांतिक सभा व ललितपुर पाठशाला, कन्याशालाके अधिवेशन भी हुये थे तथा देवगढ़के क्षेत्रको जैनोंको वापिस दिलानेवाले मि०जोन्हस्टन साहब सब डि० ओफिसर ललितपुरको मानपत्र देकर पार्टी भी दी गई थी।

पं० इन्द्रलालजी शास्त्री–ने एक पत्र संपादक होते हुए भी अपने पुत्रका बाल व अनमेलविवाह कर वैश्यानृत्य भी कराया था! वाह पंडितजी!!

भूकंपसे–चंपानालाके ऊपरका व मुंगेरके मंदिरका नाश होगया है। प्रतिमा बची हैं।

पं० दीपचंदजी वर्णी–का स्वास्थ्य अहमदाबादमें अब ठीक हैं।

ऋषभजयंती उत्सव–पानीपतमें चैत्र वदी ८-९-१०को होगा जिसमें धर्म संमेलन होगा व इनामी लेखका भी प्रोग्राम है।

भूकम्प फण्डमें–कलकत्ताके दिगम्बर जैनोंने १३०००) दिये हैं।

पं० कन्हैयालाल शास्त्री–किशनगढ़को 'व्याख्यान भूषण' की पदवी भारतीय विद्वद् परिषदसे मिली है।

संस्कृत संजीवनी सभा–का उत्सव ता० ११ से १३ फर्वरीको जंवरीबाग इन्दौरमें हुआ था जिसमें छात्रोंके अनेक संवाद व डायलोग हुये थे। पं० जीवंधरजी शास्त्री सभापति थे।

देवगढ़–के मेलेमें इसकी कमेटीने देवगढ़का विस्तृत इतिहास तैयार करनेका प्रस्ताव पास किया है।

सोनागिर–के नाबालिक भट्टारकका झगड़ा अभी निवटा नहीं है, केस चल रहा है।

जीवदया सभा आगरा–का वार्षिक उत्सव पंडालमें होगया। उसमें १४ प्रस्ताव पास हुए हैं–खास ये हैं–प्रबंधका नया चुनाव, ४९००) बजट पास, आगामी सालमें ११ स्थानोंपर पशुबलि बंद की जाय, विरोधीके सन्तोषके लिये आगरामें खास अधिवेशन किया जावे, हिंसाबंदी कानूनपर जर्मन सरकारको धन्यवाद! भूकम्प फँडमें १००) दिये जांय, आगामी अधिवेशनके लिये काशीपुरका आमंत्रण स्वीकृत आदि। मंत्री पंडित बाबूरामजी बजाज ही कायम रहे हैं।

वीसा हुमड जैन युवक मंडले–मुंबईमां शिक्षा प्रचार माटे एज्युकेशन फंड स्थापन कर्युंछे जेमांथी स्कोलरशीप ने पुस्तको अपाशे.

दि० जैन युवक संघ सूरत–नी मीटींग ४ फेब्रुआरीए थई थी नवी चुंटणी थई छे जेमां प्रमुख, मंत्रीओ वगेरे हता तेज कायम रह्या छे.

भूकम्पसे–विहारके पावापुरी, कुंडलपुर, गुणावा, मंदारगिर, कमलदह, गुलजारबागके मंदिर व धर्मशालाओंको नुकसान हुआ है उनकी मरम्मतके लिये सहायता बा० निर्मलकुमार जैन रईस–आराके पास भेजनी चाहिये।

दक्षिण म० दि० जैन सभा–का ३९ वर्षका इतिहास 'सत्यवादी' मराठी पत्र कोल्हापुरने सचित्र प्रगट किया है इससे माछूम होता है कि सभाके पास स्थावर जंगम २४३९९०) की मिलकियत है व सभा आजतक ३२९०००) विद्यामें खर्च कर चुकी है।

क्षुल्लक नेमसागरजी—ગુજરાતમાં ભ્રમણ કરનાર છે.

વિજયનગર—ની હરીચંદ વસ્તા પાઠશાળાને કન્યાશાળાના મકાન માટે નાનચંદ હરીચંદનાં સ્વ. પુત્ર ડુંગરસી (કડિયાદરા)ના સ્મરણમાં ૧૦૦૦) મળ્યા હતા ને પાઠશાળાના ફંડમાં ૨૦૧) વધુ મળ્યા છે ને મકાન માટે ૫૦૦) વધુની જરૂર છે. માટે કોઇ ભાઇ ઓછામાં ઓછા ૨૦૦) આપશે તો તેમના નામની તખતી લગાડવામાં આવશે. **ખડકની** ૧૦ પાઠશાળાની પરીક્ષાઓ ચૈત્ર વદથી વૈશાખ સુદમાં થશે માટે જેમને સાથે આવવું હોય કે ઇનામ માટે રૂપીઆ આપવા હોય તેમણે અમોને લખવું. મોડાસીયા ફતેચંદ તારાચંદ મહામંત્રી–વિજયનગર.

સ્વર્ગવાસ—ભાવનગરમાં શેઠ વ્રજલાલ કેવળદાસ (છગન ધનજી) ના ધર્મપત્ની સૌ. દેવકોરબાઇનો ૩૫ વર્ષની યુવાન વયે ફાગણ સુદ ૬ સમાધિમરણ પૂર્વક સ્વર્ગવાસ થયો છે. (અંતના ચાર દિવસ તો અનશન લીધું હતું) એમના સ્મરણાર્થે ૧૧૦૧) કાઢવામાં આવ્યા છે જેની વ્યવસ્થા હવે પછી પ્રકટ થશે.

લાકરોડા–માં પાઠશાળા માટે અધ્યાપકની જરૂર છે, પગાર ૨૦) થી ૨૫) માસિક સુધી.

આવતા અંકે.

ગુજરાત દિ૦ જૈન પ્રાંતિક સભાના મહામંત્રી શેઠ છોટાલાલ ઘેલાભાઇ ગાંધી તરફથી સભાના પ્રચારકાર્ય સંબંધી મોટો લેખ ને એક સંવાદ હમણાંજ મળ્યા છે જે સ્થાનાભાવને લીધે આવતે અંકે છપાશે. આવતો અંક ચૈત્ર સુદમાં વહેલોજ પ્રકટ થશે.

દિગંબર જૈનનો આ અંકનો વધારો.

સ્વર્ગવાસી શેઠ કસનદાસ પુનેમચંદ કાપડિયા-સુરત.

રૂ. ૪૨૫૧) નું અનુકરણીય દાન.

આ પત્રના સંપાદક શ્રી. મૂળચંદભાઇના પિતાજી શેઠ કસનદાસ પુનેમચંદ કાપડિયાનો ૮૨ વર્ષની વૃદ્ધ વયે ગત માહા સુદ ૯ તા. ૨૪ જાનેવારીની રાત્રે ૧ વાગતે સારૂં કુટુંબ મુકીને ધર્મ ધ્યાન પૂર્વક સ્વર્ગવાસ થયો હતો. આપનો જીવન પરિચય જાણવા યોગ્ય હોવાથી અત્રે આપવો યોગ્ય થઇ પડશે.

શેઠ કસનદાસના પૂર્વજો હરચંદ રૂપચંદ મેવાડના ગંગરાડ ગામથી નોકરી માટે આશરે ૧૨૫ વર્ષ ઉપર સુરત આવ્યા હતા. અને અત્યંત ગરીબાવસ્થા હતી. એમના પુત્ર પુનેમચંદ થયા જે અફીણનો વ્યાપાર કરતા હતા. પુનેમચંદને બે પુત્રો કલ્યાણચંદ અને કસનદાસ થયા તેમાં કલ્યાણચંદને માત્ર એક પુત્રી કાશીબ્હેન (ફોઈ નંદકોરબાઇ) થઇ જે તીર્થક્ષેત્ર કમેટીના ભૂ૦ મહામંત્રી શેઠ ચુનીલાલ હેમચંદ જરીવાલાનાં દાનશીલ સૌ. ધર્મપત્ની છે ને આપનો પરિવાર સારો છે.
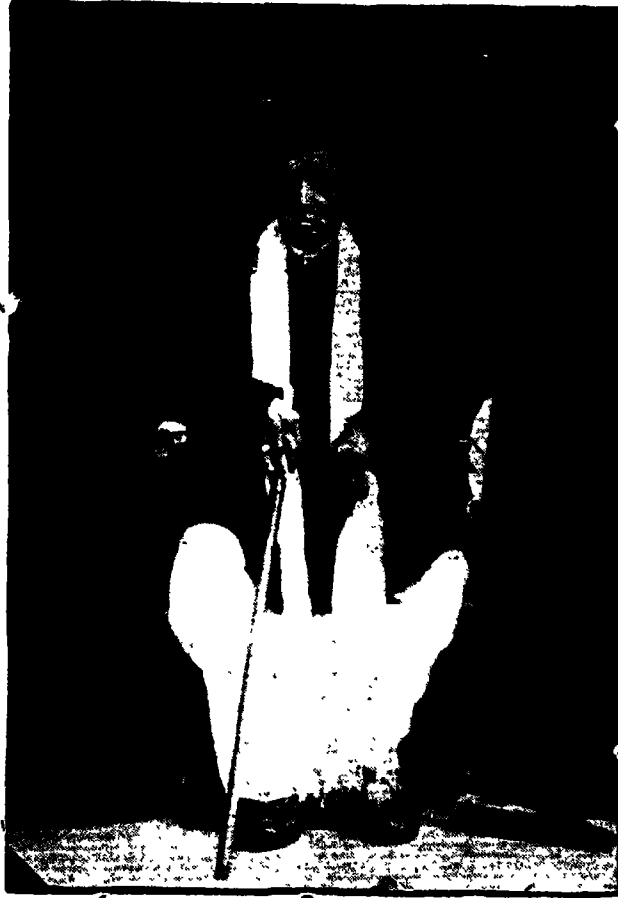
શેઠ કસનદાસનો જન્મ વિક્રમ સં. ૧૯૦૮ ભાદરવા વદ ૮ મે સુરતમાં થયો હતો. પિતાજીની સ્થિતિ અત્યંત સાધારણ હતી તથા પિતાજીનો સ્વર્ગવાસ એમની નાની વયમાંજ થઇ ગયો હતો, જેથી આપ પર કુટુંબનો ભાર આવી પડયો હતો. જેથી આપ ગુજરાતી ચાર ચોપડી સુધીજ શિક્ષણ લઇ શકયા હતા.

આપ પ્રથમ તો પિતાજીની અફીણની દુકાન ચલાવા લાગ્યા પણ તેમાં મન ન લાગવાથી તે દુકાન ઉઠાવી નાંખી ને સાચા મોતી વીંધવાનો હુન્નર શીખી મુંબઇ ગયા, ત્યાં કેટલોક સમય સારૂં કામ ચાલ્યું પણ ત્યાં કામની મંદીથી પછી સુરત પાછા આવવું પડયું. પછી સુરતમાં એક બે સ્થાને નોકરી કરી. પછી ટોપીની ને કાપડની દુકાન ભાગોળ પર કરી પરંતુ તેમાં પણ ભાગ્ય ન ચમકયું. એ દરમ્યાન આપ સુરતી પાઘડી બાંધવાનું કામ શીખ્યા ને ઘેર સુરતી પાઘડી પણ બાંધતા હતા. આ દરમ્યાન સુરતમાં આપના ઘરની પાસે વૈષ્ણવોનું મોટું મંદિર છે ત્યા સવાર સાંજ સેંકડો સ્ત્રી પુરૂષો દર્શને આવતાં જતાં ત્યાં ખોટા મોતી વગેરેની એક દુકાન હતી ત્યાં જઇને આપ બેસવા લાગ્યા ત્યારે મનમાં વિચાર ઉદ્‌ભવ થઇ આવ્યો કે અહિં સ્ત્રીઓના કામની કોઇ ચીજનો વ્યાપાર કરૂં તો કદાચ ફાયદો થાય. એમ વિચારી ત્યાં એક નાની ઓછા ભાડાની દુકાન લીધી ને તેમાં કાચની બંગડીયો વેચવાનું પ્રથમ શરૂ કર્યું ને તે પછી તે સાથે સ્ત્રી ઉપયોગી કાપડ પણ

રાખવા લાગ્યા. આપની પ્રમાણિકતા ને સરળ સ્વભાવથી આપનો આ વ્યાપાર ચમકી ઉઠયો એટલે બંગડીનું કામ બંધ કરી સુતરાઉ રેશમી ગરમ કાપડનો વ્યાપાર વધાર્યો. સુરતમાં બીયો જાતે ખરીદ કરવા આવે એવો પ્રથમ રિવાજ આપથીજ ચાલુ થયો હતો તે છતાં પણ આપની પ્રમાણિકતા ને સદ્વ્યવહારથી આપ પુરૂષોના પણ અમાનીતા નહિ થયા ને આપનો વ્યાપાર વધતોજ ચાલ્યો અને ઠીક સંપત્તિ મેળવી. આપના પછી એજ સ્થળે બીજી દુકાનો થવા લાગી ને આજે તો ત્યાં ૩૦-૪૦ દુકાનો કાપડ વગેરેની થઇ મોટો પ્રસિદ્ધ બજાર થઇ ગયો છે, અર્થાત સુરતમાં મોટા મંદિરના કાપડ બજારના સ્થાપક શેઠ કસનદાસજ હતા.

આપ અને આપની ધર્મપત્ની સૌ૦ હીરાકોરબાઇને ચાર પુત્રો—મગનલાલ, જીવણલાલ, મુલચંદ અને ઇશ્વરલાલ તેમજ પુત્રીઓ મણી બ્હેન ને નાની બ્હેન એમ ૬ સંતાન થયાં તેમાં મગનલાલનો ૨૪ વર્ષની વયે પ્લેગથી સ્વર્ગવાસ થયો હતો. ને જીવણલાલનો સ્વર્ગવાસ પણ ૪૯ વર્ષની વયે ૬ વર્ષ થયાં થઇ ગયો છે. ત્રીજા ભાઇ **મુલચંદભાઈ કાપડીયા** અને ચોથા ભાઇ ઇશ્વરલાલ હયાત છે. એ ચારે ભાઇ પિતાજી સાથે વ્યાપાર કરતા હતા. જેમાં મુલચંદભાઇએ અંગ્રેજી શિક્ષણ સાથે સંસ્કૃત કેળવણી મેળવી હતી અને દાનવીર સ્વર્ગીય શેઠ માણેકચંદજીનો આપ પર અતીવ પ્રેમ હતો જેથી આપે દુકાનના કામ ઉપરાંત એ શેઠે સ્થાપન કરેલી પાઠશાળામાં રાત્રે શિક્ષા લઇ ધર્મ ને સંસ્કૃતનું સારૂં જ્ઞાન મેળવ્યું અને વ્યાપારની સાથેજ રાત્રિ દિન પરિશ્રમ કરી શેઠ માણેકચંદજી ને બ્ર. શીતલપ્રસાદજીના ઉપદેશથી ગુજરાતમાં 'દિગંબર જૈન' નામે માસિક ૨૬ વર્ષ પર ચાલુ કર્યું હતું, જે આજે પણ ચાલુ છે તથા આજ તો આપ જૈન વિજય પ્રેસના માલેક, 'જૈન મિત્ર' ના સંપાદક, જૈન મહિલાદર્શના પ્રકાશક તથા દિગંબર જૈન પુસ્તકાલયના માલીક છે અને દિગંબર જૈન સમાજની આપ અનેક પ્રકારે અપૂર્વ સેવા કરી રહ્યા છે.

શેઠ કસનદાસ ૧૫ વર્ષથી દુકાનથી નિવૃત્ત થયા હતા. અને મૂલચંદભાઇ દુકાનથી છુટા પડી 'જૈન વિજય' પ્રેસ સ્વતંત્ર રૂપે ચલાવવા લાગ્યા હતા ને ભાઇ ઇશ્વરલાલે મુંબઇમાં મલમલની દુકાન કરી, જેથી ભાઇ જીવણલાલ એકલાજ દુકાન ચલાવવા લાગ્યા હતા પણ સંવત ૧૯૮૪ માં એમનો વિયોગ થઇ જવાથી પછી એ કાપડની દુકાન બંધ કરવી પડી હતી. શેઠ કસનદાસને કંઇ પણ રોગ થયો નહોતો પણ ચાર મહિનાથી શરીર શક્તિ ધીમે ધીમે ઘટતી ગઇ ને ખોરાક પણ ઘટતો ગયો હતો. આપ ખાસ કોઇ દવા લેતાજ નહોતા. વિલાયતી દવાનો તો આપને કેટલાંક વર્ષોથી ત્યાગજ હતો. શરીર કૃષ હોવા છતાં અંત સુધી આપ ચેતન અવસ્થામાં હતા (માત્ર કલાક અડધો કલાક અચેતન રહ્યા હતા) આપના સ્મરણમાં નીચે મુજબ અનુકરણીય દાન કરવામાં આવ્યું છે.

૨૦૦૦) સ્થાયી વિદ્યાદાન વગેરે માટે.
૨૦૦૦) સ્થાયી શાસ્ત્રદાન (મૂળચંદભાઇ તરફથી)
૫૧) ભૂકંપ પીડીત સહાયક ફંડ, પટના.

૨૦૦) સંસ્થાઓને નીચે મુજબ—૧૦) અશક્તાશ્રમ સુરત, ૧૦) રક્તપિતિયાશ્રમ સુરત, ૧૦) મહાજન અનાથ આશ્રમ સુરત, ૨૦) પાંજરાપોળ સુરત, ૧૦) દિ. જૈન પાઠશાળા સુરત, ૧૦) ફુલકોર કન્યાશાળા સુરત, ૧૦) દિ. જૈન શ્રાવિકાશાળા સુરત. ૧૦) દિ૦ જૈન યુવક સંઘ સુરત. ૧૦) સ્યા૦ મહાવિદ્યાલય કાશી, ૧૦) ઋષભ બ્રહ્મચર્યાશ્રમ મથુરા, ૧૦) બ્રહ્મચર્યાશ્રમ કુંથલગિરિ, ૧૦) વીર વિદ્યાલય પપૌરા, ૨૦) અનાથાલય-ઔષધાલય બડનગર, ૧૦) સોનાગિર વીર વિ૦, ૧૦) ઋષભદેવ વિદ્યાલય, ૧૦) અનાથ વિધવા સહાયક ફંડ આગ્રા, ૧૦) જૈન અનાથાલય દીલ્હી, ૧૦) પરિષદ પરીક્ષા બોર્ડ (ઇનામ માટે) આ પ્રકારે ૪૨૫૧) નું દાન થયું છે. શેઠ કસનદાસના પૂજ્ય આત્માને શાંતિ તથા શ્રી. મુળચંદભાઇ ને ઇશ્વરભાઇ આદિ કુટુંબીઓને ધૈર્ય પ્રાપ્ત થાઓ એજ મારી આંતરિક ભાવના છે.

ઇશ્વરલાલ કલ્યાણદાસ મહેતા,—મેનેજર.

સફળતા.

પરિષદ નિમિત્તે સુરત પ્રતિનિધીઓ મોકલવામાં, બધી કોમોની પંચોએ બહુ સારી કાળજી બતાવી હતી. આગેવાનો અને વિચારકોનો ઠીક સમૂહ ટોળે થયો હતો. પરિષદને સફળ બનાવવામાં બધા ભાઇઓએ, વિવિધ પ્રકારના વિરોધો રજુ કરતા હોવા છતાં, સરસ ટેકો આપ્યો છે. પ્રતિનિધીઓની સરભરા કરવામાં, સુરતના શ્રીમંત ભાઇઓએ પણ સુહૃદય ભાગ લીધો છે. જાતે પીરસીને જમાડવામાં અને હરેક પ્રકારની સગવડ દૂર કરવા જાતે પરીશ્રમ લેઇને વાત્સલ્ય અને પ્રભાવના અંગનો વ્યવહારમાં અમલ કરી બતાવ્યો છે, કરકસર અને ડહાપણથી બધો સમારંભ સંપૂર્ણ નિર્વિન્ધ પાર ઉતર્યો હતી.

આખા દીગમ્બર સમાજનું રક્ષણ કરવાને તૈયાર કરેલી પરિષદ રૂપી ઢાલની એક બાજુ તો આવી સુંદરતાથી સજ્જીત થયેલી માલુમ પડે છે. ઢાલનું અંદરનું પડખું ઘણે ભાગે પોલું હોય છે. આ પોલમાં હાથ રાખીનેજ શત્રુ સામે રક્ષણ મેળવવાનું હોય છે. કુસંપ અને ઇર્ષારૂપી ભારે શત્રુઓ સમાજનું અહિત કરી રહ્યા છે. બધા વર્ગોમાં જુદી જુદી રીતે ઇર્ષા અને ખોટા માનની લાગણીઓ હજી પુરેપુરી સમી ગઇ હોય એમ જણાતી નથી. સમયના ગાંભીર્યને લઇને ગૈરવી ભુલાવાના પ્રયત્નો સફળ થયા છે. તે વૈરની લાગણીઓનો નાશ કરવાને હરેક રીતે મદદ કરે તોજ કોન્ફરન્સના ઠરાવો અમલમાં મુકાય.

પંચના બંધારણોના રક્ષણના બ્હાના નિમિત્તે હજી કાંઇ કાંઇ તર્ક વિતર્કો વિચારવાન ભાઇયો—ઓના દીલમાં ઉઠી રહ્યા છે.

સમાધાનને ચ્હાનારા હૃદયોમાં જ્યારે શાન્તિથી એ બધા બળ કાઢવાની ગડભાંજ થાય છે, ત્યારે કલેષથી કલુષીત થયેલાં હૃદયો હજી પણ શાંત થતા નથી. બાળેલા દેવતાની માફક સ્હેજ સ્હેજમાં બળી ઉઠે છે.

આવી પરિસ્થિતિમાં ઠરાવોનો અમલ કરવાના કામનો ઉકેલ આણવાનું કામ ટોકરે ચઢે છે ને બધા સમજુ માણસો કાંઇપણ તર્ક કર્યા શીવાય માની લે કે, આપણે બધાઓએ એકઠા મળીને પસાર કરેલા પરિષદના ઠરાવો આપણું હીતજ કરવાના છે, સમાજમાંથી કળેશ કાઢવાનો અને આપણી ઉન્નતિ સાધવાનો બીજો કોઇ રસ્તો નથી, અને કદાચ હશે તો વિચાર કરવાને હજી ઘણી તક આપણને આસ્તેજ મળી શકે એમ છે. આમ નિશ્ચય કરીને જુના કળેશરૂપી કચરાને એક વખત જે તે રીતે ઉદારતાથી ફેંકી દેવા તત્પર થઇ જાઓ.

એક વખત રસ્તો ચોખ્ખો થયા પછી બધા જોઇ શકશે કે, આપણે કેટલા બધા આગળ વધી શકયા છીયે. ધર્મમાં અને વ્યવહારમાં આપણે ઉલટે રસ્તે ચઢી ગયા છીએ. સમજતા હોવા છતાં ધર્મને બદલે, અધર્મ આચરીએ છીયે. વિતરાગની ઉપાસના કરવાના બ્હાના નિચે સરાગ થઇ દહેરાસર માટે દ્રવ્ય મેળવવાના ઝઘડા લડી રહ્યા છીએ. સત્ય કહેવાના બ્હાના નીચે અનેક પ્રકારના હીત, મીત અને પ્રીય વચનો કહેવાને બદલે. અપરિચીત વિતંડાવાદ કરીને આપણા સગા ભાઇ, બ્હેનોનાં અંતર દુઃખાવી રહ્યા છીયે.

આપણા મંદીરોના ઝઘડાઓને આપણે જો ઉદારતા પુર્વક સમાવીએ નહિ તો જરૂર માનજો કે, આવતા જમાનાના યુવાનોની શ્રદ્ધા એ મંદીરો ઉપરથી ઉઠી જશે. આપણે ઝઘડામાં રચ્યાપચ્યા રહીશું એટલે જૈનધર્મના તત્વજ્ઞાનના ઉંચા આદર્શનો સ્વાદ આપણે કળી શકીશું નહિ—માત્ર બહારથી સામયિક. પૂંજા કરવાથી, જ્યાંસુધી તેની સારી અસર આપણા સામાન્ય વ્યવહારમાં નહિ જણાય, ત્યાંસુધી, ઉછરતા યુવાનોમાં શ્રદ્ધા ઉત્પન્ન નહિ કરી શકે. સમાજવાદ કહે છે, કે, મુડીવાળા-

એ મંદીરો અને ધર્મ ગુરૂઓને હાથમાં લીધા છે; અને તેના રક્ષણના બ્હાના નિચે ગરીબ અને સામાન્ય વર્ગને તે જાણે અજાણે પણ કચડે છે. આ, તોહમત ખોટું પાડવું હોય તો, ધર્મના ખરા તત્વજ્ઞાનને વ્યવહારીક આચરણમાં મુકો. પંચનાં બંધારણોનો ખોટો અર્થ ન કરો. બંધારણો સુખ સંપથી રહેવા માટે ધર્મના પાયા ઉપર રચાયાં છે. એનાથીજ સુખ અને સંપનો નાશ થાય તો પછી એ બંધારણો નિરર્થક થઇ જશે.

આજ પણ આપણે બંધારણોને સિથીલ થયેલા જોઇએ છીએ. યુવાન વર્ગ સુખ મેળવવાને ઉતાવળો બન્યો છે. વટાળની વાડ લગભગ છેદી નાખી છે. જાતિવાડ ડગમગી રહી છે. સમાજ સ્વાતંત્ર્યની કેળવણીએ યુવાનોના હૃદયમાં અનેક પ્રકારની ગરબડ મચાવી મુકી છે. એ બધી મુઝવણને સવેળા યોગ્ય રસ્તે વાળવા માટે સમાજના નાના વાડા તોડી મ્હોટા કરવાની અનિવાર્ય અગત્ય સ્વીકારીને આપણે પરિષદના ઠરાવો કર્યા છે. તેને જાળવી અમલમાં મુકવા માટે સવડ કરો નહિ તો, આપણો પરીશ્રમ નકામો જશે. પ્રાચીનકાળથી, સમાજના બંધારણો ટકાવવાને ઘણી છુટછાટ મુકવામાં આવી છે. મહાભારતની વાતો અને મોગલ શહેનશાહ અકબરના સમયનો ઇતિહાસ આપણને સ્પસ્ટ બતાવે છે કે, મુસ્કેલીઓનો અંત લાવવા માટે આંતરજાતિય લગ્નોને અને દેખીતી રીતે અધર્મ આચરણોને પણ ઉદારતા પુર્વક તે સમયની સમાજોએ નિભાવી લીધા છે. તેમ જો બન્યું ન હોય તો આજ આપણાં આવાં સુઘડ બંધારણો રહ્યાં ન હોત. દીર્ઘ દ્રષ્ટિથી જોશો તો જણાશે કે, આપણાં હાલનાં બંધારણોમાં જલદી સુધારો થાય તો હાલ પ્રવર્તતા કોઇપણ વાદ કરતાં આપણાં સમાજવાદનું બંધારણ ઉત્તમ પ્રકારનું છે, અમલમાં માત્ર ઉદારતા અને ડહાપણની જરૂર છે.

—નાગરદાસ.—

વડોદરા રાજ્ય જ્ઞાતિ ત્રાસ-નિવારણ નિબંધ.

(લેખકઃ-મોતીલાલ ત્રી. માલવી, બાકરોલ.)

મહાશયો ! જ્ઞાતિ ત્રાસ નિવારણ નિબંધ આપણી જ્ઞાતિની સત્તા ઉપર કાપ મૂકતો હોવાથી તથા વ્યકિતને રક્ષણ આપતો હોવાથી-ને આ રાજ્યની તમામ જ્ઞાતીઓને અને તેની સાથે સંબંધ ધરાવતી-આપણી દિગંબર જૈન જાતિ (૧) સોજીત્રા સમુહની વીશા મેવાડા જૈન જાતિ (૨) અંકલેશ્વર સમુહના વીશા મેવાડા જૈન જાતિ (૩) નૃસિંહપુરા, સંગપુરાની જૈન જાતિ, (૪) રાયકવાળ જૈન જાતિ, (૫) દશા-વીશા હુંમડની જૈન જાતિ-વણિક કોમને ખાસ ઉપયોગી હોવાથી અક્ષરશઃ નીચે મુજબ આપવામાં આવે છે, તો તેના ઉદ્દેશો ધ્યાનમાં લઇ તથા હમણાં થોડાજ સમય પર નાતાલના તહેવારોમાં સુરત ખાતે "ગુજરાત દિગંબર જૈન પરિષદ" મળી હતી, તેના કાર્યવાહકોના ઉદ્દેશો ધ્યાનમાં લઇ જે તે જ્ઞાતિના અગ્રેસરોએ જમાનાને અનુસરી કન્યા વ્યવહારનું ક્ષેત્ર ઉદારતાની સાથે વિશાળ કરવાને તાત્કાલીક ઉપાયો યોજી જ્ઞાતિ તંત્રમાં યોગ્ય સુધારો કરવાની જરૂર છે.

ઉદ્દેશ—હિંદુઓની કેટલીક જ્ઞાતિઓમાં અમુક સ્થળ સીમમાંજ લગ્ન થઇ શકે એવો પ્રતિબંધ મૂકનારા, એકવાર થયેલું સગપણ તોડી શકાય નહિ, એવો પ્રતિબંધ મૂકનારા, લગ્ન અગર મરણ પ્રસંગે, અગર બીજા કોઇ પ્રસંગે અનિચ્છાએ પણ ભોજનો કરવાંજ જોઇએ-એવા ખર્ચાળ, તથા પરદેશ ગમનની સ્વતંત્રતા ઉપર અંકુશ મૂકનારા રીત રિવાજ હોય છે, એવા રીત રિવાજનો ભંગ કરનારને બહિષ્કાર અથવા દંડની શિક્ષા કરવામાં આવે છે, તેથી તે જ્ઞાતિના લોકોની ભૌતિક અભિવૃદ્ધિ તથા પ્રગતિને અડચણ આવે છે અને લોકોને ત્રાસ થાય છે, આવી

અડચણ તથા ત્રાસ દૂર કરવા અર્થે કાયદો કરવો ઇષ્ટ જણાયાથી—શ્રીમંત સરકાર મહારાજ સયાજીરાવ ગાયકવાડ સેનાખાસખેલ શમશેર બહાદુર—જી–સી–એસ–આય, જી–સી–આઇ–ઇ. ફરજંદે–ખાસ–ઇ–દૌલતે ઇંગ્લિશિયા એમણે નીચે મુજબ ઠરાવ્યું છે.—

સંજ્ઞા—૧ આ નિબંધને "જ્ઞાતિ ત્રાસ નિવારણ નિબંધ કહેવો.

૨—લાગુપણું–આ નિબંધ આ આખા રાજ્યને લાગુ થશે.

૩—વ્યાખ્યા–વિષય અગર પૂર્વાપર સંબંધથી બાધ આવતા ન હોય તો–

(क) "જ્ઞાતિ" એ શબ્દમાં પેટા જ્ઞાતિ, તડ, સમૂહ, ગોળ તથા કન્યાની લેવડ દેવડ અમુક સ્થળ સીમામાંજ અગર અમુક સમુહમાંજ થઇ શકે એવો પ્રતિબંધ મુકનારા, નોંધાયલા અગર બિન નોંધાયલા, મંડળો અને સમાજોનો, સમાવેશ થાય છે.

(ख) "આગેવાન" એટલે જ્ઞાતિના શેઠ–પટેલ તથા જ્ઞાતિના પંચો એમ સમજવું, અને જેમાં એવા શેઠ કે પંચો ન હોય તે જ્ઞાતિમાં જે કૃત્ય બાબત ફરિયાદ કરવામા આવે તે કૃત્ય કરવામાં જે શખ્સે આગેવાની ભર્યો ભાગ લીધો હોય તેનો સમાવેશ થાય છે.

(ग) "બહિષ્કાર" એટલે–પંકિત વ્યવહાર, કન્યા વ્યવહાર, લ્હાણા વ્યવહાર, વિગેરે પ્રકારનો જ્ઞાતિ વ્યવહાર, બંધ કરવો, તે એમ સમજવું.

(घ) "ત્રાસદાયક" રીત રિવાજ એટલે જે રીત રિવાજ—

(अ) તેજ જ્ઞાતિમાં અમુક સ્થળ સીમમાંજ લગ્ન થઈ શકે એવો પ્રતિબંધ મુકનારો હોય, અથવા–

(आ) એકવાર થયેલું [illegible] (વિવાહ–વેવીશાળ) કોઇપણ કારણસર તોડી શકાય નહિ, એવો પ્રતિબંધ મુકનારો હોય, અથવા–

(इ) અનિચ્છાએ ખર્ચ કરવો પડે એવી ફરજ પાડનારો હોય, અથવા–

(ई) દેશ પર્યટન કરવાની સ્વતંત્રતા ઉપર અંકુશ મુકનારો હોય, તે રીત રિવાજ સમજવો.

(૪) ત્રાસદાયક રીતરિવાજ બંધનકારક નથી. કોઈ જ્ઞાતિમાં કોઇ ત્રાસદાયક રીત રિવાજ અસ્તિત્વમાં હશે તો તે રીતરિવાજ તે જ્ઞાતિના કોઇપણ સખસને બંધનકારક ગણાશે નહિ.

(૫) ત્રાસદાયક રીત રીવાજના ઉલંઘન માટે શિક્ષા કરવી નહિ. કોઇપણ સખ્સ પોતાની જ્ઞાતિના કોઇ ત્રાસદાયક રીત રિવાજનું ઉલંઘન કરે તો તે માટે તેને તે જ્ઞાતિના–

(क) આગેવાને, અગર.

(ख) બીજા કોઇ સખ્સે.

બહિષ્કારની, અગર દંડની, અગર દંડના સ્વરૂપની, શિક્ષા કરવી નહિ.

(૬) કલમ ૫ નું ઉલંઘન કરનારને શિક્ષા–

(૧) જે–

(क) આગેવાન, અગર–

(ख) બીજો કોઇ શખસ, પોતાની જ્ઞાતિના કોઇપણ સખસને–

(अ) લેખી અગર મોંઢાનો ઠરાવ કરીને, અગર–

(आ) બીજી રીતે

કલમ ૫ ના ઠરાવનું ઉલંઘન કરીને–

(૧) પ્રસંગ. બહિષ્કારની, અગર–

(૨) દંડની, અગર–

(૩) દંડના સ્વરૂપની–

પરિણામ.–શિક્ષા કરશે તે છ માસ સુધીની આસાન કેદની અગર રૂપિઆ ૧૦૦૦ એક હજાર સુધીના દંડની અગર બંને પ્રકારની શિક્ષાને પાત્ર થશે.

(૨) પ્રથમનો બહિષ્કાર બંધ પડશે. (क) કોઇ સખસનો કોઇ ત્રાસદાયક રિવાજનો ભંગ કરવા માટે–આ નિબંધ અમલમાં આવતા પહેલાં બહિષ્કાર કરવામાં આવ્યો હશે તો તે આ નિબંધ અમલમાં આવશે તે તારીખથી.

(૧) નિરર્થક ગણાશે, અને–

(૨) તેનો અમલ બંધ પડશે.

(ख) કોઈ આગેવાન અગર બીજો કોઇ સખસ રકમ (क) પ્રમાણે નિરર્થક થયેલો બહિષ્કાર–

(૧) ચાલુ છે એવું જ્ઞાપન કરશે, અગર–

(૨) જે સખસનો બહિષ્કાર કરવામાં આવ્યો હોય તે સખસ તરફ તે બહિષ્કાર ચાલુ છે એવી રીતે વર્તશે તો તેણે–

(अ) પેટા કલમ (૧) પ્રમાણે ગુન્હો કરેલો ગણાશે, અને–

(आ) તેમાં ઠરાવેલી શિક્ષાને તે પાત્ર થશે.

(૭) ઇન્સાફનો અધીકાર.

(૧) આ નિબંધ મુજબના ગુન્હાનો ઇન્સાફ પહેલા વર્ગની સાધારણ ફોજદારી ન્યાયાધીશીથીજ થઇ શકશે.

(૨) ગુન્હાનો પ્રકાર—આ નિબંધ મુજબનો ગુન્હો પકડ હુકમ વગર પકડી શકાય નહિ. તેવો, તેમજ જામીન લઇ શકાય તેવો છે, એમ સમજવું.

(૩) ફરિયાદીની મુદત—આ નિબંધ મુજબના ગુન્હાની ફરિયાદ ગુન્હાની ખબર મળ્યાની તારીખથી છ માસ પછી થઇ શકશે નહિ.

(૪) ફરિયાદ કરવાનો અધીકાર—આ નિબંધના ગુન્હાની ફરિયાદ જે શખ્સને જ્ઞાતિ તરફથી–દંડ અગર બહિષ્કારની શિક્ષા કરી હશે તે શખસજ કરી શકશે.

(૫) જ્ઞાતએ કરેલો દંડ પાછો અપાવવો–કલમ ૬ પ્રમાણે ગુન્હો સાબિત ઠરાવી શિક્ષા કરનાર ન્યાયાધીશીએ ફરિયાદી પાસેથી આરોપીએ જો કોઇ દંડ વસુલ લીધો હશે તો તે પાછો આપવાનો હુકમ કરવો.

(૬) ન્યાયાધીશી—દંડ તથા પાછી આપેલી રકમ વસુલ કરવાની રીત.

(क) કલમ ૬ પ્રમાણે દંડની શિક્ષા કરશે તે, તથા–

(ख) આ કલમની પેટા કલમ (૫) પ્રમાણે જે રકમ પાછી અપાવવાનો હુકમ કરશે તે.

જે તે વખતે અમલમાં હોય તે ફોજદારી કામ ચલાવવાની રીતના નિબંધમાં ઠરાવેલી રીતે વસુલ કરી શકશે.

(૮) ગુન્હો માંડી વાળી શકાશે નહિ.

(क) આ નિબંધ મુજબનો ગુન્હો માંડીવાળી શકાશે નહિ એવો ગણાશે તેમજ–

(ख) કોઇપણ વખતે ફરિયાદી ફરિયાદ પાછી ખેંચી લઇ શકશે નહિ.

બીજા કાયદા પ્રમાણે દાદ લેવા પ્રતિબંધ નથી.

(૯) જ્ઞાતિના આગેવાને અગર બીજા કોઇ શખસને જે તે વખતે અમલમાં હોય તેવા બીજા કોઇ કાયદા પ્રમાણે દાદ લેવાને–

(क) આ નિબંધના કોઇપણ ઠરાવથી અગર–

(ख) આ નિબંધ પ્રમાણે કામ ચલાવ્યાના કારણથી પ્રતિબંધ નડે છે એમ સમજવું નહિ.

તારીખ ૧૨ માહે ડિસેમ્બર સન ૧૯૩૩

પુ. વા. મ.

વિ. કૃ. ધુરંધર.

ન્યાયમંત્રી (વડોદરા રાજ્ય)

નોટ–સદર જ્ઞાતિ ત્રાસ નિવારક નિબંધ શ્રીમંત સરકાર સયાજીરાવ ગાયકવાડ, સેનાખાસખેલ શમશેર બહાદુર, જી. સી. એસ. આય, જી. સી. આય. ઇ. ફરજંદે–ખાસ–ઇ–દૌલતે–ઇંગ્લિશિયા, એમની મંજુરીથી સન ૧૯૩૩ ની નિબંધ ૫૫ મો તા. ૧૪ માહે ડીસેમ્બર સન ૧૯૩૩ ની વડોદરા રાજ્ય તરફથી પ્રગટ થતી આજ્ઞા પત્રિકામાં પ્રગટ થયેલો તે પરથી નોંધ લઇ જૈન સમાજના હિતાર્થે પ્રગટ કરવામાં આવ્યો છે, તો મારા જૈન ભાઇઓ તે સાદ્યંત વાંચી તેમાંથી સાર વસ્તુ ગ્રહણ કરી પોતાની જ્ઞાતિમાં જમાનાને અનુસરી યોગ્ય સુધારા દાખલ કરશે એવી શુભ આશા સહ વિરમતો–મો. ત્રી.

સમાજની ઘાતક રૂઢિઓ.

(હરીગીત છંદ)

૧

જૈની જનો જગમાં તમે આજે ગયા પાછળ પડી,
સંખ્યા તમારી સૌ થકી આજે ગઇ અવળી ગતિ,
નાંખો નજર નર નાંખશો જૈનો જુઓ ઝાંખાજ છે,
જૈની જનો જર જોરૂના આજે બન્યા લાંફાજ છે.

૨

જેના હતા વિર ધષ્ટ તે આજે બન્યા ગાફીલ છે,
પુરા હતા પરાક્રમી તેઓ બન્યા આસીલ છે.
મનુષ્યને પશુ પંખીથી જેનો હતો સૌ પ્રેમ તો,
તેઓ બન્યા આજે અહો તુચ્છકારના સૌ નેમ તો.

૩

અહિંસા તણો સિદ્ધાંત જેના દિલમાં વ્યાપો હતો,
વળી સત્યતા સંસારમાં જેના ગ્રહે જામ્યો હતો;
બુરૂં ન ઇચ્છે બાળનું બહુ દ્રવ્ય જેના ભાલમાં,
સત્પાત્રને દે દાન તેથી સ્વર્ગ જેના તાલમાં.

૪

વિર ભીમ ને હનુમંત અર્જુન, રામ કોઠી લક્ષ્મણો,
પ્રભુ પાર્શ્વ ને આદિજિને, ઝંડો જગે ધર્યો હતો,
સીતા અને સુલસા વળી, રાજુલ આદિ નાર જે,
જન્મી જગે જશ ખાટતી, એના બન્યા તે જૈન છે.

૫

આજે જુઓ દ્રષ્ટ કરી, બિંકણ દિસે તસ બાળ તો,
માયા અને જગજાલમા, ફસ્યા રહે સૌ લાલચો;
જાતી રહી સૌ સંપત્તિ, સુતો સદા ક્ષય થાય છે,
જૈનો તણી જશવેલ તે, એ રીતથી કોહાય છે.

૬

આજે જુઓ જગતે સહુ, સંપતતણા ગુલામ છે,
સુત સંતતિ વળી સંપની, કંઇએ નહિ પંચાત છે;
પિતા પછાડે પાળીને, પોતાતણી જે લાડકી,
વૃધ્ધો થકી પરણાવીને વિચ્છેદ કરતા બાળકી.

૭

બાળા બનેલી બારની કહો ? વૃદ્ધને શું કામની ?
શક્તિ નહિ પોષણ તણી–તેવા કને ત્યમ નારની !
વિધવા બને જલ્દી અને જશ જૈનનો ઝંખાવતી,
તેઓ તણા અશ્રુ થકી તમ ઉન્નતિ અટકાવતી.

૮

વળી બાળલગ્ને બાળનો જે ધાણ કાઢયો જગતમાં,
કહેવા કથું હું બ્યાન તો મળશે ન પુરો વખ્ત તો;
નાનાં અને નાદાન જે, નિની ન જાણે કામની,
સુખો ન જાણે શ્રેષ્ટ તે, ઉકાળશે શું નારની.

૯

વિધ્વંસ આ સમાજનો આ રીતથી થાતો હવે,
આંખો ઉઘાડો જૈનીઓ, તે ધ્યાનમાં ધારો તમે;
વળી બારમાની નાત જે, પેઠી તમારા અંગમાં,
ખાલી કરે જર જગતમાં, રહેવા ન દેતે ઢંગમાં.

૧૦

લહાણી કરો મુવા પછી, વાસણતણી તમ નાતમાં,
તેથી ન કારજ આપનું, સધાય કોદી ભાતમાં;
ખાલી જતું જર તે અને, તમ કામના મારી જતી,
વિદ્યા વિના તમ દ્રવ્યની, એવી થતી અવળી ગતી.

૧૧

નિર્માણ મંદિરનું કરી, ફુલાવ શું ? જૈનો તમે ?
નૂતન નથી કાંઇ કામનું, એ ખ્યાલમાં લાવો હવે!
શોભા નહીં સૌ દ્રવ્ય તો, એ રીતથી ચાલ્યું જતું,
વિચાર નવ વિદ્યા તણો, યુવાન દિલ ક્યાં રાચતું.

૧૨

એ અને એથી અધિક, કુચાલ પેઠા નાતમાં,
જૈનો તમે એકત્ર થઇ, ઉન્નત કરો સૌ ભ્રાન્તિમાં;
શ્રીમાન જે જૈનો તણા, ધીમાન દોસ્તી જો કરે,
સાથે મળે એ પક્ષ તો, જૈનો તણો ઝંડો ચઢે.

૧૩

જૈની જનો એ રીતથી, સુધારજો સમાજને,
સર્વે મળી એકત્ર થઇ, ઉન્નત કરો આ ધર્મને;
જે જે થયા એકત્ર તે, આજે બધા આગળ થયા,
મોહન કહે જૈનો તમે, શાને કરી બેસી રહ્યા.

મોહનલાલ શાહ કાણીસા–કમ્પાલા.,

આપણો ધર્મ.

(લેખક—રતીલાલ કેશવલાલ શાહ, ભરૂચ.)

આ અસાર સંસારમાં આપણો હમેશનો સુખ દુઃખનો સાથી, અને હર હંમેશ આપણી સાથે રહેનાર, અને પરલોકમાં પણ આપણી સાથે આવનાર આપણો ખરો સાથી 'ધર્મ' છે-તેજ આપણો ખરો બંધુ છે, આપણને સુગતિ અપાવનાર, અને આ પ્રરિભ્રમણ યુકત સંસાર-સાગરમાંથી પાર ઉતારનાર ધર્મ રૂપ નાવ છે, અને તેના વડેજ આપણે પાર ઉતરી શકીએ છીએ.

આપણા ધર્માચાર્યોએ ધર્મો દશ પ્રકારના કહેલ છે-ઉત્તમ ક્ષમા, ઉત્તમ માર્દવ, ઉત્તમ આર્જવ, ઉત્તમ સત્ય, ઉત્તમ શૌચ, ઉત્તમ સંયમ, ઉત્તમ તપ, ઉત્તમ ત્યાગ, ઉત્તમ આકિંચન્ય, ઉત્તમ બ્રહ્મચર્ય—એ પ્રમાણે દશ ધર્મોનું આપણે પુરેપુરી રીતે પાલન કરવું જોઇએ. દશ ધર્મોનું સ્વરૂપ સર્વે વાંચક વૃન્દ સારી રીતે સમજે છે, એટલે તેનું લંબાણ વિવેચન કરી પાઠકોનો સમય વૃથા લેવા માંગતો નથી.

શ્રી પુજ્ય સમંતભદ્રસ્વામિએ ધર્મનું સ્વરૂપ નીચે પ્રમાણે વર્ણવ્યું છે-

सदृष्टिज्ञानवृत्तानि धर्मं धर्मेश्वरा विदुः ।
यदीयप्रत्यनिकानि भवन्ति भवपद्धतिः ॥
(रत्नकरंड श्रावकाचार)

અર્થાત્ સમ્યગ્ દર્શન, સમ્યક્ જ્ઞાન, સમ્યક્ ચારિત્ર એ ધર્મનાં લક્ષણુ છે, અને તેથી વીરૂદ્ધ મિથ્યા દર્શન, મિથ્યા જ્ઞાન અને મિથ્યા ચારિત્ર એ ત્રણે સંસારને વધારનારાં છે. માટે આપણી ફરજ છે કે આપણે એ ત્રણે રત્નોનું શાસ્ત્રાજ્ઞા અનુસાર યથાશક્તિ પાલન કરવું જોઇએ.

ધર્મ એ શું છે? એ સવાલ જ્યાં સુધી આપણા હૃદયની અંદર પ્રવેશ કરતો નથી ત્યાં સુધી આપણે ધર્મની અગત્યતા સમજી શક્તા નથી, ધર્મ એજ આપણો સાચો મિત્ર છે. ધર્મ તે આપણને યૌવન અવસ્થાના અંધકારથી થયેલ ઉન્મત્તપણું જે સુર્યથી પણ ભેદી શકાતું નથી, રત્ન પ્રભાથી ભેદી શકાતું નથી, પ્રદીપ્ત પ્રકાશથી દૂર કરી શકાતું નથી–તેવું છે, તેને તેમજ ચપળ અને અચળ માયાના પ્રતાપે થયેલ અંધકારને દૂર કરી આપણી અંતર ચક્ષુને આવી ગયેલ પડળ કાઢી ગ્યોગ્ય શીખામણુનો ઉદ્દેશ આપી સન્માર્ગે ચઢાવનાર આપણો ખરો મિત્ર છે, અને ધર્મ તે ખરો શણુગાર છે. આપણને હાલમાં અસ્તતાનું ચક્ર લાગેલ છે, જેથી જોકે આપણે આ મનુષ્ય દેહ પામ્યા છીએ, તેમ છતાં પણ આપણા ધર્મથી વીમુખ રહ્યાં છીએ. આપણા સુવીચાર સંતાઈ ગયા છે, આપણી પ્રફુલ્લીત મનઃશક્તિનું ભાન આપણે ભુલી ગયા છીએ, અને આપણો ધર્મ આપણે છોડી દીધો છે.

આપણો ધર્મ શ્રેષ્ટ છે એ તો સ્વતઃસિદ્ધ પ્રખ્યાત વિદેશી વીરોથી આપણે જાણી શકેલા છીએ અને તે જગતમાન્ય વાત છે. તે ધર્મની ઉપર આસ્તા ન બેસે અને તેને આપણે આસ્તે સમાજના વહનમાં ખેંચાઇ જઇએ તે આપણા માટે ઘણીજ શરમની વાત છે. માટે ભાઇઓ, હજુ પણ ચેતો, અને તમારા ધર્મ ઉપર આસ્થા વધારી કંઇ સુગતિ તરફ પગલા માંડો.

બંધુઓ, તમારી યુવાવસ્થા ચાર દીવસનું ચાંદરડું છે, તે પછી વૃદ્ધાવસ્થા પોતાની સાથે એક વિચિત્ર મતિ કરાવનાર પોતાનાં મિત્રને લઇને દોડી આવે છે–તે આપણને બાઝશે ત્યારે આપણે હાથ નહિ રહે આપણી શુદ્ધિ કે બુદ્ધિ, અને નહિ રહે આપણને ઉઠવા કે બેસવાનું જોર. એવે વખતે આપણે આપણો ઉદ્ધાર કવી રીતે કરી શકવાના? ઉદ્ધાર કરવાનો ખરો વખત આપણે આપણા હાથેજ ગુમાવીએ છીએ. આપણા જેવા રંકને હાથ રત્ન રૂપી ધર્મ આવેલા છે તેને આપણે આપણા સ્વહસ્તે પત્થર તુલ્ય ગણી ફેંકી દઇએ

છીએ તે માટે તમોને અવશ્ય પાછળથી પસ્તાવો થવાનો !

ભાઇઓ, તમે એમ માનતા હશો કે કર્મ ધર્મનું પ્રાબલ્ય આપણે કયાં દેખીએ છીએ ?–પણ તે તો તમને જ્યારે ખરૂં ભાન આવશે, અને ખરૂ સ્વરૂપ સમજાશે ત્યારે તમારી ધ્યાનમા આપોઆપ આવશે, અને તમારાં અંતરપટના દ્વાર આપોઆપ ખુલી જશે. રાત દીવસ તમે મોજ મઝામાં અને કુઆચરણોમાં તમારા અમુલ્ય સમયની બરબાદી કરો છો, પણ એક કલાક માટે પણ ધર્મના કાર્યને માટે તમો તમારો સમય બીલકુલ બચાવી શકતા નથી તે કેટલી આશ્ચર્યની વાત છે.

જ્યારે જ્યારે કોઇને કહેવામાં આવે છે. કે જરા ધર્મનો અંકુર રાખ અને ધર્મ ઉપર દૃઢતા વધારી તેનાં અમૃત તુલ્ય ફળ ચાખ, ત્યારે તેના મોંમાંથી નીકલે છે કે "પારકી તાબેદારી અને કામની ધમાલમાંથી મને તો પુરી જમવાની પણ નવરાશ મળતી નથી તો ધર્મ કાર્ય કયાંથી કરૂં ? પણ ઓ ભાઇ ! નકી સમજશો કે ધર્મ તેજ તમારો ખરો બેલી છે, અને તમારા મરણ પછી તેજ સાથે આવનાર છે–પરમ પ્રિય મિત્રો, પ્રાણાધીક પત્નિ, જીવથી વહાલો પુત્ર, પુત્ર પ્રેમી પિતા, અને વાત્સલ્ય ભરપુર માતા તથા અન્ય સંબંધીઓ જ્યારે તન છોડીને ચાલ્યાં જાય છે ત્યારે ગયા પછી તેઓ મિત્ર, પિતા કે પુત્રનું શું થયું તેની સંભાળ લેવા પણ આવતા નથી. મોહીની જેમ વધારશો તેમ વધશે અને જેવો વસ્ત્ર રહિત આવ્યો હતો તેવોજ પાછો જઇશ. સાથે કંઇ આવવાનું નથી. જો ધર્મમાં પ્રીતિ પરોવીશ, અને ધર્મનાં આચરણો પાળીશ તો તે આચાર વિચાર તથા સારાં નરસાં કર્મો સાથેજ આવનાર છે. બાકી હવેલી, પૈસો, ઘરેણાં, સ્વજનો વિગેરે બધું અત્રેજ પડી રહેવાનું છે. માટે તેવી વસ્તુઓ કે જે પરલોકમાં આપણી સાથે આવવાની નથી તેની ઉપર મોહભાવ શા માટે રાખવો ?

વ્હાલા વાંચક ! પવન જેમ પોતાના સપાટાથી સ્વેચ્છાચાર પૂર્વક દરેક વસ્તુને ઘસડી જાય છે તેમ ધર્મ વિના ત્હારો ઉન્મત્ત યુવાનીનો મદ તને આડે માર્ગે દોરી જઇ તારા બુરા હાલ કરશે. લક્ષ્મી રૂપી મદ ત્હારી કીર્તિને કાજળ જેવો ડાઘ બેસાડશે, અને ત્હારા યુવાનીના મદને હિંડોળે ચઢાવી ત્હને હીંચકાવશે માટે સાવધ થા, અને ધર્મનું યથાશકિત પાલન કર, અને કામ, ક્રોધ, લોભ, મોહ, મત્સર આદિ દુર્ગુણોથી વિમુખ રહે.

અંતમાં મારી સર્વે બંધુઓને વિનંતી કે તમો તમારી ધર્મ ઉપર પ્રીતિ રાખી તેના તરફ તમો લક્ષ દોરી કંઇક પણ સન્માર્ગે ચઢશો.

સર્વે યુવક સંઘો અને મંડળોને પણ મારી નમ્ર વિનંતી છે કે તેઓ ફકત જ્ઞાતિ સુધારાના ઠરાવો પસાર નહિ કરતાં તે સાથે તમારા ધર્મનું અભિમાન રાખી તેનું યથાશકિત પાલન કરવાની તમારા મંડળના દરેક મેમ્બરને ફરજ પાડશો, અને તેને અંગેના ઠરાવો પસાર કરશો, અને આપણા બંધુઓને સન્માર્ગે દોરશો. અસ્તુ !

"પંચનું બંધારણ."

(લે–શા. ભુરાભાઇ મુલચંદ અંકલેસરીઆ)

દરેક ગામે દરેક જ્ઞાતીના સભ્યોએ પોત-પોતાની પંચો માન્ય કરેલી હોય છે. અને સ્વજ્ઞાતી સંબંધીનું કાર્ય પંચ મારફતે થયે જાય છે. પચોની કાર્ય કરવાની પદ્ધતિ જોતાં એમ કહ્યા વગર ચાલતું નથી કે પંચના બંધારણમાં ફેરફાર કરવો એ ઘણુંજ આવશ્યક છે. પંચોની કાર્ય કરવાની ચાલુ પ્રણાલીકા જોતાં આપણે કબુલ કરવું પડશે કે પંચોમાં વીખવાદ ઉભેલો હોય છે તેનું ગૌણ કારણ પંચોનું વ્યવસ્થાસરનું બંધારણ નથી તેજ છે. અને સામાજીક પ્રગતી ધપાવવાને માટે પંચોનું બંધારણ હોય એ ઘણુંજ જરૂરી છે.

પ્રત્યેક પંચની કાર્ય પદ્ધતી ભીન્ન ભીન્ન હોય છે. પણ સાધારણ રીતે પંચના અગ્રગણ્ય નેતા તરીકે "શેઠ" નીયત કરેલા હોય છે. અને પંચનું સાધારણ કામ શેઠને કરવું પડે છે. શેઠાઇ વંશપરાની અપાઇલી હોય છે અને એકજ કુટુંબના માણસને પંચનું રાજ્ય આપવામાં આવેલું હોય છે! જો શેઠ પોતાની ફરજ બરાબર સમજનાર તેમજ કાર્ય કુશળ અને ઉત્સાહી હોય તો તો પંચનું કાર્ય સડા વગર ચાલ્યે જાય છે, નહિ તો પંચમાં અનીષ્ટ પરીણામ ઉત્પન્ન થાય છે.

પંચ એકત્ર કરવું, તેને માટે સમય તથા સ્થાન નક્કી કરવું. પંચ સમક્ષ કામ રજુ કરવાં, આ બધું કામ શેઠને સોંપાયલું હોય છે. પરંતુ દુઃખની વાત એ છે કે પંચ કયારે એકત્ર કરવું. પંચમાં કઇ પદ્ધતીએ કાર્ય લેવું. અને કામોનો કેવી રીતે ઉકેલ કરવો તેના ધારા ધોરણો તેમને તૈયાર કરીને આપેલા જણાતા નથી. અને તેથી તેમને પણ કાર્ય કરવામાં ઘણી મુશ્કેલીઓ આવી પડે છે.

ધારા ધોરણોના અભાવે કાર્ય સરલતાથી થાય તે હેતુએ શેઠને અગ્રગણ્ય ગણાતા શખસોની સલાહ વારંવાર લેવી પડે છે, અને આમ થતું હોવાથી શેઠની જોડે અંગત સંબંધ ન હોય એવાઓની સીધી વાત પણ મારી જાય છે. પંચને એકત્ર કરવા માટે સ્થળ સમય વિગેરે નક્કી કર્યા પછી પણ કોરમ જેવી વસ્તુનો નીયમ ન હોવાથી કામ શરૂ કરવામાં શેઠને ઘણુંજ વિચારવું પડે છે. અગ્ર ગણ્ય પુરૂષોની હાજરી ન હોય તો વારા ફરતી માણસોની યાદ દાસ્તી કરીને તેઓને હાજરી આપવા માટે તેડા કરવા પડે છે! અને જાણે કે તેઓ વિના હાજર કરેલા કાર્ય કરી શકે એવા ન હોય તેમ પંચનું કામ થતું નથી. જો આવા અગ્રગણ્ય ગણાતા નેતાઓને સમયની અગર નક્કી કરેલા વખતે હાજરી આપવી જોઇએ એવી પવિત્ર ફરજનું ભાન ન હોય તો એવા માણસો પંચની પ્રગતી કેમ ધપાવશે એ વિચારવા જેવું છે. તેઓને આવા તેડા વગર પંચમાં હાજરી આપવાની ટેવ હોતી નથી. અને એવું માની બેઠેલા હોય છે કે આમ થવાથી તેઓની પ્રતિષ્ઠા તથા માન વધે છે. અને જો તેઓ ન હોય તો પંચની સ્થીતિ રંડાયલી જેવી હોય છે. જો શેઠ આવાઓને માટે તેડાગર ન મોકલે તો પછી તેઓ કરેલા કાર્યને ફેરવવા માટે પોતાની શકતીનો ઉપયોગ કરે છે. અને તેથી થતી ઉન્નતીને બાધ આવે છે. સાધારણ રીતે આવો અગ્રગણ્ય ગણાતો વર્ગ યુવકોનો હોતો નથી એ એક ખુશી થવાની વાત છે. જો આવી પદ્ધતી દુર કરાય તો યુવક વર્ગ ઉત્સાહી બનશે અને પંચના કાર્યમાં રસ લેતો થઇ ભાવી ઉજવલ બનાવશે.

પંચ એકત્ર થતાં કામકાજ કરવાની પદ્ધતી એવી અનિયમીત હોય છે કે મોટા અવાજે બોલનાર, ગુસ્સાના આવેશમાં આવી બરાડનાર સીધી અને સાદી વાતનો અવાજ પણ બીજાના કાનને પહોંચવા દેતો નથી. અને તેથી જક્કી થઇને પકડી રાખનારને સમજાવી શકાતું નથી, આમ હોવાથી

ઉગતો યુવક વર્ગ હતાશ બને છે. અને કોઇપણ જાતનો સુધારો દાખલ કરી શક્તા નથી. આ વર્ગને "તડ" નો બાઉ બતાવવામાં આવે છે અને કહેવામાં આવે છે કે જો તમો આવા સુધારા રજુ કરશો, તો અમો માન્ય કરશું નહિ અને જુદા વિરૂદ્ધ પડીશું. જ્યાં જ્યાં પંચોમાં તડો પડયાં હોય ત્યાં ત્યાં મૂદ તપાસવા માંડીશું તો સ્પષ્ટ જણાઇ આવશે કે કજીઆનું મૂળ રૂપ કંઇપણ અગત્યતા વિનાનું હોય છે, પણ ખરૂં કારણ આગળ પડતા માણસોની હઠ, ગર્વ, તેઓના અંગત દ્વેષ અને મોટાઇનુંજ પરિણામ છે. લઘુમતી હોવાથી પોતાની વાત થતી ન હોવાથી તે જતી કરવા જેવી ઉદાર ભાવના જો કેળવાઈ હોય અગર તે માટેનું બંધારણ હોય તો આવા ઝેરી તડોની ઉત્પત્તિ હોયજ નહિ.

ચાલુ પંચોની આવી સ્થીતિ હોવાથી ઉન્નત થયેલી કોમની હરોલમાં ઉભી રહેવાની લાયકાતવાળી સ્થિતી પ્રાપ્ત કરવા માટે દરેક પંચને બંધારણ કરવાની ખાસ જરૂરીઆત છેજ. બંધારણ કેવી રીતનું હોવું જોઇએ એ નક્કી કરવા ગુજરાત દિગંબર જૈન પરિષદે અગ્રગણ્ય સમજુ ડાહ્યા માણસોની કમીટી નીમી છે. આશા રાખવામાં આવે છે કે આ કમીટી ઘણોજ વિચાર કરી બંધારણનો ખરડો તૈયાર કરશે. અને ગુજરાતના તમામ દીગંબર જૈનોની પંચ પર મોકલી આપશે અને તે ખરડો મંજુર રાખી તમામ પંચોનો વહીવટ એક સરખો થશે. અંતમાં એવી ભાવના ભાવીએ કે ભવિષ્યનું પંચ એવા બંધારણવાળું હોય કે જેથી દિગંબર જૈન કોમની ઉન્નતી દરેક રીતે થાય. અને ઘર કરી બેઠેલા સડાઓ આપોઆપ નાશ પામી ઉન્નતિના કીરણો ચોમેર પ્રગટાવી દિગંબર જૈન ધર્મની ખ્યાતિ વધારે.

વિશામેવાડા બંધુઓ પ્રત્યે.

મુરબ્બીઓ, વડીલો યાને બંધુઓ,

આપણે સુરત પરિષદમાં મોટી સંખ્યામાં હાજરી આપી તથા પરિષદના ઠરાવોમાં સમ્મતી આપી પ્રગતી તેમજ ઐક્ય માટેનો આપણો ઉત્સાહ બતાવી આપ્યો. હવે આપણે એટલેથીજ અટકવાનું નથી. ઠરાવો કર્યા, ભેગા મળ્યા, પરંતુ જ્યાં સુધી તે ઠરાવોને આપણા પંચ તરફથી યોગ્ય સમ્મતી ન મળે, અને અમલમાં ન મુકાય ત્યાં સુધી ઉન્નતી તેમજ પ્રગતીની આશા રાખવી વ્યર્થ છે. ગુજરાતના દીગંબર જૈનોમાં આપણી કોમની સંખ્યા મોટા પ્રમાણમાં છે, એટલે આપણું પંચ જો પરિષદના ઠરાવોને યોગ્ય સમ્મતી આપી અમલમાં મુકી દાખલો બેસાડે તો ગુજરાતનાં બીજાં પંચો આપોઆપજ તેમ કરશે અને તેમ કરીને ગુજરાતના દિગંબર જૈનોની પ્રગતીમાં આપણો ફાળો અગત્યનો ગણાશે.

બીજું આપણી કોમની મોટા ભાગની વસ્તી વડોદરા રાજ્યમાં વસે છે, ખુદ શ્રીમંત મહારાજાએ 'જાતિ ત્રાસ નિવારણ' કાયદો વડોદરા રાજ્યને લાગુ કરી સામાજીક ઉન્નતિ માટેની તેઓશ્રીની તીવ્ર ઇચ્છા પ્રગટ કરી છે. એટલે તે કાયદો આપણી કોમનો મોટો ભાગ જે વડોદરા રાજ્યમાં રહે છે તેમને લાગુ પડયો છે. અને તેઓએ તે કાયદાને મને અથવા કમને માન આપવાનુંજ છે. તો તે કાયદાના સકંજામાં આવતા પહેલાંજ આપણે આપણા પંચના ઠરાવોમાં યોગ્ય સુધારા વધારા કરશું તો પંચમાં કાયદાની દખલ રહેશે નહી અને આપણે ગુજરાતના દીગંબર જૈનોમાં આપણી મોટી સંખ્યાની મોટાઇ જાળવી શકીશું.

હવે આપણે શું કરવું તે પ્રશ્ન ઉભો થાય છે. વૈશાખ માસમાં લગ્નગાળા પ્રસંગે સોજીત્રા મુકામે આપણે બધા ભેગા થવાના છીએ. ત્યાં

જેમ દર વખતે ભેગા થઇ જમણવાર તેમજ લગ્નના લ્હાવા લઇ, રાત્રે ચાર ચાર વાગ્યા સુધી પંચોમાં જઇ ઉજાગરા કરી બુમાબુમ કરી નહીં જેવુંજ કામ કરી છુટા પડીએ છીએ તેમ આ વખતે થવું ન જોઇએ. તેને માટે લગ્નગાળાની શરૂઆતમાંજ સમસ્ત પંચની બેઠક બોલાવી, ગયા લગ્નગાળા પ્રસંગે 'પંચને બંધારણની ખાસ જરૂર છે, એવો જે ઠરાવ કરેલો તેને અનુસરીને, ગુજરાત દિગંબર જૈન પ્રાંતિક સભાના મહામંત્રી શ્રીયુત રા. રા. છોટાલાલ ઘેલાભાઇએ બહાર પાડેલો પંચના બંધારણનો ખરડો આપણા સમસ્ત પંચની બેઠકમાં ચર્ચી યોગ્ય સુધારા વધારા સાથે પાસ કરી અમલમાં મુકી એક સુવ્યવસ્થીત પંચ તૈયાર કરવું. બાકીના દીવસોમાં નવીન પંચની બેઠકો બોલાવી, પરિષદના ઠરાવો ઉપર વાટાઘાટ કરી યોગ્ય સુધારા સાથે ઠરાવો પાસ કરવા જોઇએ અને આપણી કોમના રીત રીવાજોમાં પણ યોગ્ય સુધારા કરી પ્રગતી તેમજ ઉન્નતિનો માર્ગ મોકળો કરવો જોઇએ.

લગ્નગાળા જેવો ભેગા થવાનો આવતો પ્રસંગ નકામો નહી ગુમાવતાં કંઇક કામ કરી બતાવી જ્ઞાતીને ઉન્નતીને માર્ગે દોરે એવી પ્રાર્થના પંચના આગેવાનોને કરી અત્રે વિરમીશ.

ડો. વીરચંદ છગનલાલ શાહ—વસો.
(હાલ સોનગઢ)

"दिगंबर जैन" का समाज अंक।

जिसमें हिंदी, गुजराती, अंग्रेजी व संस्कृत भाषाके लेख व कविताओंका तथा १४ रंगबिरंगे १४ चित्रोंका संग्रह है व पृष्ठ सं० १४० है। सिर्फ ।।।)की टिकिट भेजकर मगाईये। वार्षिक मू० २) भेजनेवालोंको यह अंक मुफ्त मिलेगा।

मैनेजर दि० जैन पुस्तकालय-सूरत।
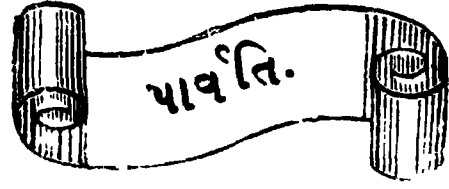
સવારના પહોરમાં ઘરનાં બારણાં ખુલ્લાંએ થયાં નથી. એક યુવાન બાળા ઝાડુ લઇને સ્ટેશન માસ્તરના મકાનનું આંગણું કાળજીપુર્વક સ્વચ્છ કરી રહી છે.

સ્ટેશનમાસ્તરને સવારમાં વહેલા ડયુટી ઉપર હાજર થઇ જવાનું હોવાથી નવલબેન વ્હેલાં ઉઠી બંધ બારણેજ પાણી વગેરે ગાળી કરીને ચા નાસ્તાની તૈયારી કરી રહ્યાં હતાં. ઘડીઆળમાં છ ના ટકોરા થયા. બાબુ, ત્હારા બાપાજીને જગાડ, જો છ વાગ્યા, પછી ધાડ કરશે. ચંપકલાલ માસ્તર હાંફળા ફાંફળા ઉઠી, દંત ધાવનથી પરવારી પાછલી ઓસરીનું બારણું ખુલ્લું કરી ચા નાસ્તાનો સત્કાર કરવા બેઠા હતા. સામે યુવાન ઝાડુ કાઢનારી પાર્વતિના ચહેરા ઉપરથી પરસેવાનાં બિંદુ ટપકી રહ્યાં હતાં.

ચંપકલાલે નાસ્તો કરતાં કરતાં પાર્વતિને બોલાવી. 'પાલી અહિં આવ.' લે, આ બે પુરી, સ્હેજ નાસ્તો કરી લે, તું બહુ વહેલી કામ કરવા આવે છે. ના બાબુજી, એ મારાથી ન લેવાય. બા, પરવારશે ત્યારે કાંઇ ટાઢું શીળું આપશે, હું તે લઇશ. એમ કહી એ એના કામમાં મચી રહી.

નવલબેન વચ્ચે બોલી ઉઠયાં, બળ્યું આવો ભટવાડા કરો છો? તમે તમારી મેળે પરવારીને જાઓ, ભંગીઆ, ઢેડાને તે હાથો હાથ કંઇ અપાતું હશે. આપણો વાણીયા બ્રાહ્મણનો અવતાર ફરી ફરી આવવાનો છે?

એમ કે? વાણીયા, બ્રાહ્મણ સુતાં સુતાં ખાય, અને ગરીબ ભુખ્યાં મહેનત કરનારાંને સ્હેજ ખાવાનું આપતાં અધર્મ થઇ જાય! મા, છોકરાનું

મેલું ઉઠાવે એટલે છોકરાં માને ભુખી રાખે, એના જેવી આ વાત ન કહેવાય ?

નવલ બ્હેને જુવાબ વાળયો, મારે તમારી એવી વાતો નથી સાંભળવી, આપણે તો બધાની સાથે રહેવું છે, સૌ કરતાં હોય તેમ કરીએ.

ચંપકલાલ માસ્તરે બહુ આગ્રહ કર્યો ત્યારે પાર્વતિ ઓટલાની બાજુએ આડી ફરી ઉભી રહી. નાના બાબુએ બે ચાર ગરમ પુરી તેના ખોળામાં નાખી તે લઇને તે રસ્તે પડી ગઇ.

* * *

પાર્વતિનો બાપ માધીયો એક વખત ઝાડુ વાળતો સ્ટેશન માસ્તરને સલામ કરી આગે ઉભો રહયો. કયમ અલ્યા માધા ! મઝામાં છે ના ' બાપુજીની મહેરબાની છે ત્યાંસુધી હમને શા દુઃખ ' એ તો ભાઇ સાહેબ પેલા પાદરી સાહેબ આવ્યા હતા તેમણે અમારા ફલીયાના નાનાં નાનાં છોકરાંને એકઠાં કરી પતાશાં વ્હેંચ્યાં, અમને બધાંને પણ બોલાવ્યા, એક ભાષણ કર્યું, અને પછી જતી વખતે હમારાં છોકરાને સાથે લઇ જવા આગ્રહ કર્યો ' મારી પાલીને પણ મેં તેમની સાથે મોકલી. એ કહેતા હતા કે એ છોકરા છોકરીઓને હમે ભણાવીશું, અને સારે ધંધે લગાડીશું. મારી છોકરી જુવાન એટલે મેં તો મોકલવાની બહુ ના કહી, પણ સાહેબ તો એને લઇ જવા ગાડાજ થઇ ગયેલા.

હમારામાંથી ખ્રિસ્તી થઇ ગયેલા માણસોએ મને બહુ સમજાવ્યો અને એ બુઢા પાદરીસાહેબના તો હું શું વખાણ કરૂં, હમારા કરતા એ વધારે હેત બતાવી બધા છોકરાં, જાણે એમનાંજ ન હોય એવાં કરી નાખ્યાં. પાલી પણ એમની સાથે ગઈ. બે વર્ષ થઇ ગયાં, બધું કામ મારે ને એની માને કરવું પડે છે. છોકરી બહુ ડાહી હતી. મહીને પંદર દીવસે લખનઉ જઇએ છીએ ત્યારે હમે બધાં મળી આવીએ છીએ. છોકરાંની તો જીંદગી બદલાઇ ગઇ. લુગડા પણ કેવાં ધોળાં ફગ, આખો દીવસ રમવાનું અને વખતસર ભણવા કરવાનું. એમની ઉપર સારાં સારાં માણસ દેખરેખ રાખે, ફરવા લઇ જાય...ભગવાનનું ભજન પણ દરરોજ કરે. પરમેશ્વર કેમ રાજી ન થાય ?

માસ્તરે કહ્યું–અલ્યા એ શું ! એ હવે તમને ઝાડુ કાઢવા નહિ લાગે. એ તો બધાં વિલાયત જશે, ત્યારે શું કરશો ? હશે ભાઇસાહેબ, હવે તો દુઃખમાં દહાડા પુરા કર્યા, છોકરાં સુખી થશે તોય સારૂં, હમારા ધંધામાં શાં સુખ છે ?

* * *

લખનઉ શહેર નજીકના એક નાના સ્ટેશન ઉપર ગાડી ઉભી હતી. સંપૂર્ણ યુરોપીઅન પહેરવેશમા સજેલી યુવતીએ ચંપકલાલ માસ્તરને ઘોંશભેર ગાર્ડ તરફ જતાં જતાં, ફર્સ્ટ કલાસના ડબ્બામાંથી ચંપક કાકા, ચંપક કાકા, કરી બોલાવતું હોય એમ લાગ્યું, પાછું ફરી નજર કરતાં, એમને કોઇ મડમ મજાક કરતી હોય એમ જણાયું, મેડમનો પટાવાળો ગાડીમાંથી ઉતરી ચંપકલાલ માસ્તરને પેલી બાઇ પાસે બોલાવી લાવ્યો. ચંપક કાકા, તમે મને ઓળખી નહિ ? પટાવાળો પોતાના ડબ્બામાં રજા લઇ જતો રહયો હતો.

હું તો તમારી પાલી ! ઓહ ! બ્હેન તમે માધીયાની દીકરી ? શું કહો છો ? કયાં જાઓ છો ?

પારવતીનું ઇંગ્લીશ નામ મીશ માર્ગરેટ રાખેલું હતું અને તે અલ્હાબાદ સ્કાઉટ રેલીના પ્રમુખ તરીકે જઇ રહી હતી. પોતે કેવી રીતે મીશનમાં દાખલ થઈ વગેરે વૃતાંત ટુંકમાં માસ્તરને કહી બતાવ્યું. મેટ્રીક કલાશ સુધીનો અભ્યાસ લખનઉની મીશન સ્કુલમાં એણે પુરો કર્યો.

એનો અંગ્રેજી ભાષા ઉપરનો કાબુ ત્યાંના શિક્ષક વર્ગને અજાયબ પમાડે એવો જણાયો. એને પુછવામાં આવ્યું કે એને જો લગ્ન કરી દેશમાંજ રહેવું હોય તો એ પ્રમાણે કરવાને એને રજા છે, અને જો પરદેશ વધુ અભ્યાસ

જાઈ જવાની ઇચ્છા હોય તો અમેરીકા મોકલવાની ત્યાંના પ્રીન્સીપાલે ઇચ્છા બતાવી. પાર્વતી ડાહી અને હિંમતવાળી હતી. એનો જન્મ સારા માબાપને પેટે થયો હતો. એક વિધવા માતાએ જન્મતાં વેંત કચરાના ઢગલામાં તજી દીધેલી પારવતી ઝાડુ વાળતા માધીયા ઢેડની નજરે પડી. એ ચુપચુપ તે છોકરીને ઘેર લઇ ગયો, અને પોતાની પત્નિને બોલાવી તેને સોંપી બધી બીના ઇતિ વાત કહી. માધીયાને કાંઇ સંતાન નહોતું. વાટે જતાં પોતાને આવું સ્વરૂપવાન બાળક મળ્યું જાણી પતિ પત્નિ પોતાનાં ધનભાગ્ય માનવા લાગ્યાં. પ્રભૂ કૃપાયે છોકરી મોટી થઇ, સ્વરૂપવાન ઉચ્ચ કુળની કન્યા ભંગીયાના ઘરમાં માબાપની પ્રીતિથી ઉછરી. માધીયાની પત્નિએ એનું સ્વરૂપ જોઇ એનું નામ "પાર્વતિ" પાડયું. મા,બાપની ઉંમર મ્હોટી હોવાથી પાર્વતિ દરરોજ સવારમાં વ્હેલી ઉઠી, સ્ટેશન માસ્તરનું યાર્ડમાં ઝાડુ કાઢી નાખતી, એની મા પાછળથી આવતી ને બાકીનું કામ પુરૂં કરતી. છોકરી નાજુક બાંધાની, અને સુંદર હોવાથી એના ઉપર બધાનો પ્રેમ થતો.

સ્ટેશન યાર્ડમાં પણ બધાં એના તરફ કુતુહલ વૃત્તિથી જોતા અને ભંગીયાના ઘરમાં આવી સુંદર કન્યા જોઇને પ્રકૃતિની અવર્ણનીય લીલાનાં વખાણ કરતાં. માધીયો અને એની વહુ પણ એને કામ કરતી જોઇને હરખઘેલાં થઇ જતાં. એમના ગરીબ ઘરમાં જે કોઇ સારામાં સારૂં ખાવાનું બની શકે તે એનો પક્ષપાત કરી એને ખવડાવતાં. વૃદ્ધ પાદરી પણ એની કાન્તિ જોઇને આકર્શાયો અને, કોઇપણુ રીતે એને મીશનમાં લઇ જઇ કેળવણી આપવી એમ નિશ્ચય કરી માધીયાને સારી મદદ કરવાનું વચન આપી લખનઉ શહેરના અમેરીકન મીશનમાં પારવતીને દાખલ કરી. બધાનો વિશ્વાસ બેસે અને ગામડાની છોકરીને ગમે, તેટલા માટે એના કુળીયાના બીજાં બેચાર છોકરાંને પણ સાથે મીશનમાં દાખલ કર્યાં.

શરૂઆતથી મેટ્રીક સુધીનો અભ્યાસ પુરો કર્યા પછી એને અમેરીકા મોકલવામાં આવી. ન્યુયોર્ક શહેરના ગ્રાંડ મીશન કોલેજમાં, એમ. એ. ની ડીગ્રી મેળવી, એ સ્વદેશ, મીશનના ખર્ચે પાછી ફરી. ત્યાંથીજ લખનઉ મીશન હાઇસ્કુલની લેડી સુપ્રીન્ટેન્ડન્ટ તરીકે એની નિમણુંક કરવામાં આવી હતી. લખનઉ આવી ચાર્જ તપાશી લીધાને બે વર્ષ થઇ ગયાં હતાં. અમેરીકામાં અભ્યાસ દરમ્યાન સ્કાઉટ્સના શિક્ષણમાં એ ખાસ લક્ષ આપતી હોવાથી એની પસંદગી અલ્હાબાદમાં ભરાનારી સ્કાઉટ રેલીના પ્રમુખ તરીકે કરવામાં આવી હતી, અને ત્યાં એ તા. ૩૦ મીએ ભરનારી મીટીંગમાં હાજરી આપવા જઇ રહી હતી.

આ બધું વૃતાંત મીસ માર્ગરેટના મુખેથી ચંપકલાલ સાંભળી રહ્યા હતા, એટલામાં ગાર્ડે સીટી કરી. ગાડી ઉપડવાનો ટાઇમ થઇ જવાથી, ચંપકલાલ સેઇકહેન્ડ કરી પાછા વળતાં એમના મહેમાન થવા આગ્રહપુર્વક વિનંતિ કરી, પોતાના કામે વળગ્યા.

ટ્રેન ધીમી ધીમી સ્ટેશન યાર્ડમાંથી પસાર થતી હતી. ગાર્ડ ૨૫–૩૦ વર્ષની ઉંમરનો યુવાન એંગ્લો ઇન્ડીઅન હતો. ચંપકલાલને ઓફીસ તરફ પાછા વળતાં ગાર્ડે બુમ પાડી. હલો–મી. ચંપકલાલ (Wait a while) જરા ઉભા રહો. ચંપકલાલ સલામ કરી ઉભા રહ્યા. ગાર્ડે કહ્યું–પેલી બાઇ તમારાં ઓળખીતાં જણાય છે. કયમ નહિ ? જરા એમના સાથે મને ઓળખાણ કરાવી ન આપો ?

અલ્હાબાદથી તા. ૧ એપ્રીલે સવારની ગાડીએ પાછા ફરતાં એ મારાં મહેમાન થવાનાં છે. હું આપના સંબંધી એમના સાથે વાતચીત કરીશ. ફરી ટ્રેને વ્હીશલ કરી, ગાર્ડના ડબો આવી

લાગ્યો એટલે ગાર્ડ સાહેબ સ્ટેશન માસ્તર સાથે હસતા હસતાં સેકહેન્ડ કરી, ટોપી ઉતારી સલામ ભરી, ટ્રેનને ઉતાવળી ચાલતી કરવાની શીગ્નલ આપી ડબામાં આનંદમાં મસગુલ થઇ બેસી ગયા.

* * *

બીજે દીવસે સવારે પાછી વળતી ટ્રેનમાં સ્ટેશન માસ્તરને ત્યાં બે કંડીઆ ફુટના ગાર્ડ તરફથી ભેટ આવી ગયા. ગાર્ડે મમતા ભરી મુલાકાત લેતાં મી. ચંપકલાલને વિનંતી કરી કે, એ બાઇ સાહેબને એ ચ્હાય છે, એમનો પ્રેમ મેળવવા જો એ ભાગ્યશાળી થશે તો તે ઉપકાર એ કદી નહિ ભુલે. સ્ટેશન માસ્તરે એ સંબંધી મીસ માર્ગરેટ સાથે આગ્રહપુર્વક વાત કરવાનું પ્રોમીશ આપી ગાર્ડ સાહેબનું મન સંતોષ્યું.

* * *

ફરૂખાબાદ સ્ટેશન ઉપર સવારના દશ વાગ્યાના અરસામા એક ફોર્ડ મોટરકાર તૈયાર ઉભી છે. સ્ટેશન માસ્તર મી. ચંપકલાલ આતુરતાથી ટ્રેન આવવાની રાહ જોઇ ઓફીશ બહાર હાર, તોરાની છાબડી તૈયાર કરાવી ઉભા છે. ટ્રેન આવી પહોંચી એટલે ફર્સ્ટ કલાસ ડબા આગળ જતા વેંત મીસ માર્ગરેટે મી. ચંપકલાલ તરફ આદરપુર્વક શીર નમાવ્યું. ડબામાંથી ઉતરી પ્લેટ ફોર્મપર આવ્યાં, ત્યાં એમનો સ્ટેશન માસ્તરના બાળકોએ હારતોરાથી સત્કાર કર્યો. મીસ માર્ગરેટે નાનાં ભાઇબેન સાથે પ્રથમ હસ્ત ધુજન કરી, પછી પોતાનો સત્કાર કરનાર સ્ટેશન માસ્તર સાહેબના મીત્રો પૈકી ગાર્ડ મી. હેરીશ જેઓ પણ અત્રે હાજર હતા તેમની ઓળખાણ આપતાં સ્ટેશન માસ્તરે પોતાના હૃદયની લાગણીપુર્વક તેમના સારા સ્વભાવ અને ઉંચા ખાનદાનની તારીફ કરી. બધા સાથે ઓળખાણ અને હસ્તધુનન (shake hand) થઇ ગયા પછી નાનાં ભાઇ બ્હેન સાથે ગેલ કરતી મીસ માર્ગરેટ, મી. ચંપકલાલ સાથે મોટરમાં સવાર થઈ. પાંચ મીનીટના રસ્તા ઉપરના એક સુંદર બંગલામાં મીસ માર્ગરેટનો ઉતારો હતો. નવલબેન પણ સત્કાર માટે હાજર હતાં. જાણે બધાં એક કુટુંબના હોય તે પ્રમાણે ખુબ હસીહસીને એક બીજાની ખબર અંતર પુછી. સ્ટેશન માસ્તર અને એમનાં પત્નિ પડોશના પોતાના મકાનમાં, મહેમાનને જમાડવાની તૈયારી કરવામાં પડયાં. બાસુદી, પુરી, ભજીયાં વગેરે દેશી પદ્ધતિની વિવિધ વાનીઓ તૈયાર કરવામાં આવી હતી.

મીસ માર્ગરેટ માટે ખુરશી ટેબલ ગોઠવ્યાં અને બાજુમાં પાટલા ઉપર સ્ટેશન માસ્તરે જમવાનું રાખ્યું હતું.

મીસ માર્ગરેટ જમવા આવ્યાં. પોતાને માટે ટેબલ ખુરશી ઉપર ગોઠવેલી રકાબી પ્યાલાં વગેરેને જોઇ એ હશી પડી. અરે આ બધું શાને માટે, નવલકાકી "હું તો તમારી પાર્વતિ" મારે માટે આટલી બધી ખટપટ તમારે ત્યાં ન હોય. પોતાના હાથેજ રકેબી, પ્યાલાં નીચે ઉતારી, માસ્તરની બાજુ ઉપર પાટલા ઉપર જમવા બેસવાનું પોતે પસંદ કર્યું. નવલબેન તો બિચારી વિચારમાં પડી ગઇ. બે પુરી આપવામાં આભડછેટ લાગશે તો લોકો આપણે માટે શું વિચાર કરશે, એ ભાવનાવાળી નવલબેન આમ એક વખત ઝાડુ કાઢનારી, પણ હાલ આદર્શ યુવાન મેમ સાહેબને ઉંચા પ્રકારના યુરોપીયન પહેરવેશમા જોઇ દીંગ થઇ ગઇ. મનમાં ને મનમાં સમી જઇ. મીસ માર્ગરેટને, પ્રિતિ પૂર્વક ભોજન કરાવ્યું. દેશી રીવાજ મુજબ પાન બીડાં લઇ બધાં બાલ બચ્ચાં સાથે ગમ્મત કરતાં બધાં વેરાયાં.

ગાર્ડ મી. હેરીસન સંબંધી, મીસ માર્ગરેટને પુછતાં, સ્પષ્ટ રીતે એણે જણાવી દીધું કે, હું એક શુદ્ધ યુરોપીઅન લોહીવાળા એક યુવાન જનરલ સાથે સ્નેહ સંબંધમાં આવી છું; અને

હમારાં લગ્ન આવતા મે માસમાં હૈદરાબાદ ખાતે થવાનાં છે. હું આશા રાખું છું કે તમે બધાં તે વખતે પધારી મને આનંદ આપશો.

* * *

તા. ૧૭ મેની સાંજે, મી. ચંપકલાલને મીસ માર્ગરેટ અને મી. રોબર્ટશનના લગ્ન પ્રસંગે તા. ૨૫મી એ સહકુટુંબ હૈદરાબાદ કેન્ટોન્મેન્ટમાં પધારવા આગ્રહ કરતો અરજન્ટ તાર મળ્યો. બીજે દીવસે સવારની પોસ્ટમાં રૂ. ૩૦૦) નો મનીઓર્ડર મુસાફરીના ખર્ચ માટે અને નાનાં ભાઇ બ્હેનને માટે સુંદર રમકડાંનું એક પાર્સલ પણ તેજ દીવસે, એમને મળ્યું. મી. ચંપકલાલે આભાર દર્શાવતો તાર મીસ માર્ગરેટ ઉપર કરી દીધો. નવલબેનની એકાએક બિમારીના સબબે મી. ચંપકલાલ જાતે તો લગ્ન પ્રસંગે હાજર ન થઇ શકયા. તા. ૨૬ ના સવારના ઇંગ્લીશ પેપરોમાં મ્હોટે અક્ષરે લખેલા હેડીંગ વાળું લખાણુ આવ્યું હતું. "લખનઉ અમેરીકન મીસન હાઇસ્કુલનાં લેડી સુપ્રીન્ટેન્ડન્ટ અને ચોથી હૈદ્રાબાદ બ્રીગેડીયરના કેપ્ટન મી. રોબર્ટશનનાં સ્નેહલગ્ન મોટી ધામધુમથી થઇ ગયાં છે. લશ્કર તરફથી તેમને દશ તોપનું માન આપવામાં આવ્યું હતું." વગેરે.

('વિશાળ ભારત' ના હિંદી લેખ ઉપરથી)

ગુજરાત દિગંબર જૈન પરિષદ સુરતનો ફોટો.

જાડા આર્ટ બોર્ડ પર છાપેલો મોટા આકારનો તૈયાર છે જેમાં આશરે ૧૦૦ ભાઇઓનું દ્રસ્ય છે. પ્રચાર માટે કિં. **માત્ર એક આનો** એક માટે દોઢ આનાની ટીકીટ મોકલી મંગાવો.

મેનેજર–

દિગંબર જૈન પુસ્તકાલય,–સુરત.

તારાતંબોલ નગર વિષેનો પ્રાચીન પત્ર.

શ્રી ॥એ६०॥ સંવત ૧૬૮૪ વરષે મહા સુદ ૧૩ દીવસે શ્રી સાહજીહાન રાજ બેઠાં ત્યારે પાછલી વાત માંડી છે: મુલતાનનો વાસી જાતે ખત્રી નાંમ ઠાકુર ગુલાખીદાસ: તેના મુખથી દુર દેશાંતરની પાછલી વાત લખીયે: દેખી આવ્યો તે વાત લખી છે. પ્રથમ શ્રી ગુજરાત મધ્યે શ્રી અમદાવાદ નગરથી ત્યાંથી ૩૦૦ કોસ આગ્રા છે. તીહાંથી ૩૦૦ કોસ ખંધાર છે, લાહોર છે. તીહાંથી ૩૦૦ કોસ મુલતાંન છે. તીહાથી ૩૦૦ કોસ ખંધાર છે. ત્યાંથી ૧૦૦ કોસ ઇસર્પનગર છે, તીહાં તીલંગો પાદસાહ રાજ કરે છે. તેહનો બજાર લાંબપણે બારે કોસ છે. તીહાંથી ૨૦૦ કોસ અસતંબોલ નગર છે. તે નગર છે. તે નગર ૨૬ કોસ લાંબો છે. તે મધે ચોવટો ૨૪ કોશ બજાર છે, ત્યાં રૂમી પાદશાહ રાજ્ય કરે છે. તે ચાર મહીને બહાર નિકળે છે. તે પાદશાહને ૨૪૦૦૦૦ ઘોડા છે, સવાલાખ હાથી છે. તેહના ત્રણુ લાખ ગુલામ છે. પાંચ લાખ દાસી છે. એક કરોડ અને પચ્ચીસ લાખ પાલા છે. તે નગરનો કીલ્લો લોઢાનો છે, કોટ છે, પાદશાહને કોટ તાંબાનો છે. તીહાં પાંચસે કોસ બબર દેશ છે. તીહાં ધોલો રેશમ માનસના રૂધીરમાં રંગાય છે. દેશ મોટો છે. પાંચસે કોસ લાંબો છે. તીહાંથી સાતસે કોસ **તારાતંબોલ** નગર છે તીહાં સુરચંદ નામે રાજા રાજ્ય કરે છે. તે નગર ઉડતાલીસ કોસ લાંબો છે. છત્રીસ કોસનો ચોવટો છે. રાજાના મહેલ રૂપા તથા સોનાના છે. ચાલીસ કોસના બજાર છે, એવડી લાંબપણુ છે. નગરને આસપાસ ચોક ફેર ત્રાંબાનો કોટ છે, રાજના કોટને આસપાસ કોટ સાત ધાતુનો છે. તીહાં રાજા જૈન ધર્મ પાલે છે. તીહાં શ્રી વીતરાગનો ભાખ્યો ધર્મ છે

તીહાં જનેશ્વરજીના દેહરા સાતસેઉ અને ઉપર આઠ છે. સિખર વદ્ધમાન છે. પંક્તિગત બજાર છે, દોનું તરફ છે. તે નગર મધ્યે મોટો ચોક છે. તે વચ્ચે દેવલ આદિનાથજીનું દેરૂ છે. એક કોસને વીસ્તારે છે, થંભ સોનાના છે. ઉપર કામ રૂપાનું છે. પ્રતીમા સોનાની છે. પ્રતીમાના કાઉસગીઆ છે. પ્રતિમા ૧૦૮ ધનુષ ઉંચી છે. પીઠ સોનાની છે. સિંઘાસણ જડાવનો છે, દેરા ઉપરે કલસ સોનાનું છે તે કલસ મણુ સાતસેનો છે, દેરાની આસપાસ ૭૨ ચૈત્યાલય છે, પ્રતિમા ત્રણ ચોવીસીની છે. તીહાં ત્રણ કાલ નિત્ય પૂજાય છે, એણી રીતે જૈનધર્મ વદ્ધમાન છે. તારાતં-બોલ પાસે સાધુનો (બો) નંદન વનમાં વિહાર કરે છે એવો વીતરાગનો ભાખ્યો ધર્મ પ્રવર્તમાન છે, સર્વ મળીને ગાઉની સંખ્યા ૫૬૫૦ જઇને આવ્યો તેહના મુખ થકી વાત સાંભળી લખી છે. ઇતિ પરદેશી કથા સંપૂર્ણ. *

* આ કાગળ શ્રી. હુકમમુનિજી (શ્વે.) ના પ્રાચીન શ્વેતાંબર જૈન જ્ઞાન ભંડાર સુરતમાંથી તેના વહિવટ કર્તા **શા. રતનચંદ ખીમચંદ કાપડિયા** પાસેથી મળી આવ્યો છે તેની આ અક્ષરશ: નકલ છે, તે વાંચવાથી પ્રાચીન ભારત વર્ષની જાહોજલાલી કેવી હતી, જેનું સ્પષ્ટ દિગ્દર્શન થાય છે.

અમદાવાદમાં દિવાળીબાઈ દિ. જૈન ધર્મશાળા.

અમદાવાદમાં સ્ટેશનની પાસે એક દિગંબર જૈન ધર્મશાળાની ઘણીજ જરૂર હતી, તે માટે ઘણાં વર્ષોથી પ્રયાસ થતો હતો જે હાલ સફળ થયો છે, અર્થાત્ સ્ટેશનપર કાલુપર ચોખા બજારમાં **સોનાસણવાળા દીવાળીબાઈ દિ. જૈન ધર્મશાળા** ગયા માહા સુદ ૬ ને રવિવારે સવારે ૧૦ વાગતે શેઠ જીવાભાઇ વહાલચંદ સોનાસણવાળાના હાથે મોટા મેળાવડા સન્મુખ ખુલ્લી મુકાઇ હતી, જે પ્રસંગે પં. છોટેલાલજી પરવારે પ્રથમ જૈન વિધિથી વાસ્તુવિધાન કરાવ્યું હતું જે પછી મંગળાચરણ થયું અને શેઠ ચુનીલાલ ઉગરચંદની દરખારત ને મોતીચંદ પદમસી તથા કેશવલાલ ગુલાબચંદના ટેકાથી શેઠ જીવાભાઇ વહાલચંદને પ્રમુખપદ અપાયું હતું. એ પછી કોઠારી મણીલાલ ચુનીલાલ મંત્રી, ધર્મશાળાએ કહ્યું કે આ ધર્મશાળા ૧૫૦૦૦) માં દશ વર્ષ થયાં લેવાઇ હતી પણ કુટુંબી ઝઘડાને લીધે ખોલી શકાઇ નહોતી તે આજે ખુલ્લી મુકાય છે. એમાં ૨૫૦૦) વધુ ખરચાયા છે વગેરે. એ બાદ શેઠ જીવાભાઇએ ધર્મશાળાનું બોર્ડ તથા શેઠ નાહલચંદ સાંકળચંદનો ફોટો બંને ખુલ્લા મુકયાં હતા. જે પછી શ્રી. હાથીભાઇ માણેકચંદ, શેઠ ચીમનલાલ નરસઇદાસ વકીલ, ચુનીલાલ ઉગરચંદ, પં. અક્ષયકુમાર અને પં. છોટેલાલજીએ ધર્મશાળાની આવશ્યક્તા અને ઉન્નતિપર વિવેચનો કર્યાં બાદ અમોએ આ ધર્મશાળાના ઉદ્‌ઘાટન પર હર્ષ પ્રકટ કરી જણાવ્યું કે આ અમદાવાદ જેવા મોટા વ્યાપારી શહેરમાં આ નાની ધર્મશાળાને વધારવાની ઘણી જરૂર છે જે માટે સહાયતા મળતી રહેવી જોઇએ. એ પછી સુરતમાં મળી ગયેલી ગુજરાત દિ. જૈન પરિષદ તથા તેમાં સ્થાપન થયલી ગુજરાત દિ. જૈન પ્રાંતિક સભાની ઉપયોગિતા અને પરિષદના ઠરાવો પર વિવેચન કર્યું હતું. એ પછી ધર્મશાળા માટે ટીપ થઇ હતી જેમાં પ્રમુખે રૂ. ૨૫૧) રોકડા, ૫૧) ના ગોદડાં તથા ૩ા મણ વાસણ આપવા સ્વીકાર્યું તથા આશરે ૨૦૦) બીજા ભરાયા હતા જેમાં ૫૧) વીજકોર બ્હેન નરસીદાસ, ૧૫) ચંચળબ્હેન સોનાસણ, ૧૧) રૂપચંદ ફુલચંદજી, ૧૧) ચાંદ_

મલ મોરીલાલજી, ૧૧) દેવચંદ પુલચંદ, ૧૧) નાનચંદ મલુકચંદ, ૧૧) સાકલચંદ અનુપચંદ, ૧૧) મુલચંદ કસનદાસ કાપડિયા, ૧૧) નાનચંદ સાકલચંદ, ૧૧) જ્હેચરદાસ પાનાચંદ, ૧૧) કોટડિયા સોમચંદ ઉગરચંદ, ૧૧) હેમચંદ અમુલખ, ૧૧) કેશવલાલ માણેકચંદ, ૧૧) મગનલાલ વેણીચંદ તથા ૫, થી ૨) સુધીની બીજી રકમો હતી. અંતમાં ૧૨ વાગતે હારતોરા પુલપાન લઇ સભા વિસર્જન થઇ હતી. આ સભામાં દશાહુમડના ચોખલાના ૬૦-૭૦ આગેવાન ભાઇયો તથા અમદાવાદના દિ. જૈન ભાઇયો મળી ૧૫૦-૨૦૦ ની હાજરી હતી. સર્વેને પાંચમે ૧ ટંક ને છઠે બે ટંક ભોજન શેઠ જીવાભાઇ વહાલચંદ તરફથી અપાયું હતું તથા બપોરે ગુજરાત પ્રાંતિક સભાના ઠરાવો પર આગેવાનો સાથે અમે ને ચીમનલાલ વકીલે ચર્ચા કરી હતી.

સાંજે ૫ વાગતે એ ધર્મશાળાના મકાનનો આગલો ફોટો લેવાયો હતો, જે આ અંકમાં પ્રકટ કરવામાં આવ્યો છે. ને રાત્રે પ્રે. મો. દિ. જૈન બોર્ડિંગમાં સભા થઇ હતી, જેમાં હાથીભાઇ માણેકચંદ તથા અમોએ ગુજરાતના દશાહુમડ ભાઇઓની સ્થિતિનું વર્ણન કર્યું હતું તથા ગુજરાત દિ. જૈન પ્રાંતિક સભાના સભાસદ થવા અપીલ કરી હતા. આ સમયે વધુ ભાઇ હાજર ન હતા તેથી ચાર મેમ્બર નોંધાયા હતા. એજ રાત્રે અમે સુરત પાછા ફર્યા હતા, અમદાવાદ જતી વખતે અમે અંકલેશ્વર પણ ઉતર્યા હતા જ્યાંની પંચે ટુંક સમયમાં પરિષદના ઠરાવો પર વિચાર કરવા પંચ બોલવવા કબુલ્યું છે તથા ચોખલાના પંચના આગેવાનોએ પણ ફાગણ માસમાં પંચ બોલવવાનું આશ્વાસન આપ્યું હતું.

પંચનું બંધારણ.

શ્રી વીશામેવાડા દીગમ્બર જન જ્ઞાતિનું બંધારણ સુવ્યવસ્થીત કરવા માટે વસો મુકામે યુવક સંઘની મીટીંગ મળેલી તે વખતે એક કમીટી નીમવામાં આવેલી તેમાંનો હું એક સભાસદ હોવાથી યોગ્ય લાગતી બંધારણ સંબંધીની યોજના જ્ઞાતી બંધુઓ સમક્ષ રજુ કરૂં છું.

નીચેની યોજનામાં સુધારો વધારો કરવાનો કોઇપણ વ્યક્તીને લાગે તો તેઓ સ્કીમ તૈયાર કરી પંચ સમક્ષ લાવે એવી મારી ખાસ વિનંતી છે. જો બંધારણ સારી રીતે ઘડી શકાય તોજ કામકાજ સહેલાઇથી ચાલી શકે.

બંધારણની યોજના નીચે મુજબની રાખવા મારી સુચના છે.

૧-દરેક ગામ દીઠ એક પ્રતિનીધી પંચમાં આવી શકે.

૨-જે ગામની જન સંખ્યા સો ઉપરાંતની હોય તેમાંથી દર સેંકડે બે પ્રતીનીધી પંચમાં તે ગામ મોકલી શકે.

૩-આ મુજબના ચુંટાયલા મંડળને એક સેક્રેટરી નીમવાની સત્તા રહેશે કે જે પ્રોસીડીંગ બુક એટલે (કામોનું લખાણ) તથા મીટીંગ વીગેરે બોલાવવી વીગેરેની કામગરી તે કરશે.

૪-ખજાનચી તરીકે જ્ઞાતીના શેઠજ રહેશે.

૫-દર ત્રણ વર્ષે કમીટીની નવી ચુંટણી કરવી ને બરખાસ્ત થતી કમીટીમાં આવેલો માણુસ તરતજ ફરી ઉમેદવારી કરી શકે નહીં જેથી બધાંને લાભ મળે.

૬-કોષાધ્યક્ષ તથા સેક્રેટરી બરાબર કામ ન કરે તો તે બદલવાનો અધીકાર કમીટીને રહેશે.

ઉપર મુજબની કમીટી નીમાયા બાદ જ્ઞાતી હીતાર્થે ઠરાવો કરી અમલમાં મુકાય તોજ કામ સુવ્યવસ્થીત થાય.

ચોકસી વસ્તુપાળ શંકરલાલ-આમોદ.

शिक्षाका अधःपतन।

(ले.-पं० लक्ष्मणप्रसाद जैन न्यायतीर्थ-रफीगंज)

१—शिक्षा ! आज तेरा महत्व सार्व सामूहिक जनस्वकंठगत ध्वनिसे आह्वानन करते हैं। परन्तु शिक्षा तूने अपने अगाध अंतःस्थलका मर्मस्थल नहीं बताया कि कितनी गाम्भीर्य रस धार है। केवल बाह्य मोहपटसे आसक्त एवं मोहीजनोंको आच्छादित किया, लेकिन बेचारोंको अबतक भी अपने अपरिचित रसातलकी वास्तविकताका आस्वादन नहीं कराया।

२—शिक्षा ! तुझमें ऐसा कौनसा महत्व या जादू है जिससे कि आज सारा मानव समाज तेरी सदुपासनामें दत्तचित्त होकर पुनः पुनः भ्रमरावर्तन करता हुआ सदैव लालायित रहता है। यहांतक कि तेरे नामपर हमारा समाज ही नहीं. बल्कि सारा विश्व हजारों व लाखों रुपयोंपर पानी फेर देता है. फिर भी मीनाक्षि ! तेरे असीम कृपा कटाक्षोंका विक्षेप नहीं मालूम किस सौम्याकृतिमें होता है।

३—क्या कहूं, तेरे आराधक तो एक टकटकी निगाहसे एकांतस्थलीमें भी भलीभांति आराधना किया करते हैं, पर तेरा मनोरंजन अवचनीय है।

४—सरस्वती ! क्या तेरी क्रीड़ास्थली सर्व शक्ति साम्राज्यस्पद एवं काम विजयी भगवान महावीर जैसे योगिराट, अथवा स्वामी समन्तभद्र जैसे योगीश्वरोंके मन मंदिरमें ही थी। लेकिन हा ! आज उन सर्व विजयी योगीश्वरोंका तो अभाव है, फिर........।

५—मानव समाज ! यह सत्य है, पर मेरी यही धारणा हो एसा नहीं, मैं केवल सत्य प्रेमकी अनन्या उपासिका एवं भिखारिणी हूं। जो उपासक जन सत्य-प्रेमकी अविरलधारसे आर्द्री भूत करता है बस उसीकी केवल मात्र सेविका, वही मेरा निवासस्थान, और उसीकी रंग मंचपर मेरी क्रीड़ास्थली है।

६—अतः अब यह भी मुझे कोई उपालम्भ नहीं देसक्ता कि धनवानोंके यहां शिक्षा सतीका आवागमन नष्टप्राय होचुका। क्योंकि वे धनोन्मत्त धनी धनकी कदरके सामने मेरी कदर करना तो दूर रही, पर सदुपासना भी नहीं जानते।

अतएव वे लोग स्वयं ही उस अमोघ काम बाणके सीमातीत सुखानुभवसे वंचित रह जाते हैं।

७—फलस्वरूप यह होता है कि—जाति एवं देशकी सर्व प्रकार तवाही करनेवाली, आज इन्द्रायण फलके समान, बालविवाह, वृद्धविवाह एवं अनमेलविवाहादि कुप्रथायें धड़ाधड़ जारी हैं। जिसको समूल नाश करनेके लिये आज जू तक नहीं रेंगती। साथमें भयंकर रोग तो धनकी गर्मीका और भी जोरोंसे बढ़ गया। सहस्र व लक्ष रु० की थैलीके सामने बाल, वृद्धका सवाल नहीं रहता।

८—जिससे आज हजारों एवं लाखोंकी तादादमें विधवाओंकी संख्या दिन दूनी रात्रि चौगुनी प्रमाण वृद्धिंगत होरही है। बेचारी सुकुमारवदना अल्प कालमें ही वैधव्य दुःखमय जीविनीसे यथा कथंचित काल यापन करती हैं।

९—हां गरीब समाज तो जरूर ही उच्च दृष्टिसे देखता है। साथमें उपभोगकी उपासनात्मक सामग्री भी खोजता है, पर यथेष्ट फलसे वह भी वंचित रह जाता है कारण एक मात्र शिक्षाकी उपासनाके भावको नहीं जानना है।

१०—जब हम प्राचीन भारतके शिक्षाकी आदर्शताको अर्वाचीन शिक्षाप्रणालीसे तुलनात्मक विचार करते हैं, तो हमें हमारी अकर्मण्यता एवं "शिक्षाका अधःपतन" क्यों? इसका साफ कारण प्रतीत होजाता है कि हमने अपनी "शिक्षा" को प्रत्येक कर्तव्यपरायणताका विस्तृत्व क्षेत्र न देकर, दूषित वातावरणके ही क्षेत्रमें संकुचित बनाया है।

११—जब कि हमने शिक्षाके आदर्शको ठुकराया तो शिक्षकोंका भी भाव मन्दा पड़ गया। अगर हमने अपनी शिक्षा सतीको योग्य निवास स्थान दिया होता तो आज विट्जारी एवं व्यभिचारी क्या नीची निगाहसे देखते? हिंसा, झूट, चोरी, मायाचारी, दंभता इत्यादि बातोंका सामना देखते, अथवा यह भृत्यजीवन सहते?

१२—अगर अब भी शिक्षालयोंकी दृष्टि शिक्षा-सुधार विषयक हुई तो निःसंदेह जीता-जागता भारत फिर कभी उन्नतिके शिखरारूढ़ होगा। तन, मन, धनकी बढ़ती होगी। ईर्षा एवं स्पर्धाका कृष्ण मुख होगा, यानी विद्वेषाग्नि शान्त होगी। प्राणी मात्र उस अहिंसा-धर्मका पुजारी बन जायगा। अन्तमें सुख एवं शांतिमय जीवन यात्रा समाप्त होगी। पर अभी यह विकट समस्या भविष्यके गर्भमें है।

१३—बस उपर्युक्त कारणोंसे ही भारतवर्षको वर्तमान परिस्थिति कैसी दारुण एवं धरातलशायी होरही है। दिन प्रतिदिन बेकारोंकी संख्या बढ़ रही है गरीब हाहाकार कर रहे हैं। अगर पेट भर खाना मिल भी गया तो शरीरपर कपड़े नहीं। ऐसी भयानक एवं विचारणीय अवस्थामें, जब कि देश सर्व प्रकारेण कष्टापन्न है, तो दूसरी ओर धनिकोंकी विलासता (ऐश-आराम) साथ ही साथ दोयज चन्द्रवत् बढ़ती ही जारही है। धर्म व समाज जीर्णशीर्ण ताज़वत् अंतिम रसातल दशाको पहुंच रहा है। फिर भी शिक्षा देवीकी क्रीड़ा गोदमें खुर्राटेकी नींद?...............

१४- फिर क्या था-शिक्षाने मोहनी मंत्रसे मंत्रित कर ही तो लिया। तब तो हमने भावी हिताहितका विचार ही न किया। केवल मात्र पुस्तकोंके कीड़ा बनकर शिक्षा प्राप्त करनेका उपाय सोचा, अवसर पाकर सतीत्वके रक्षार्थ-शिक्षादेवीने भी अर्द्धमृतक दशावत् छोड़कर प्रस्थान किया।

१५—जब हम कार्यक्षेत्रमें अवतीर्ण हुये, तब कहीं आंखें खुली और शिक्षाकी बदनीतिको ही कोसने लगे। साथमें बी० ए० अथवा शास्त्री-पदमें बट्टा न लगे इसका और भी ख्याल बढ़ा। बस, पूरे "अकर्मण्य बन बैठे" तराजू बांट लेकर नमक, दाल, तौलनेमें शर्म, विना कुली या नौकरके सामान उठानेमें पाप मानने लगे।

१६—महिला समाज तो आज शिक्षा सखीके

नाने तिलांजलि देकर हाथ ही धो बैठा। अनन्या हितकारिणी सती शिक्षाका नाम सुनकर कोसों दूर भागनेकी पड़ती है। जिनके लिये काला अक्षर महषी (भैंस) तुल्य प्रतीत होता है, जिससे गार्हस्थ धर्म चलना भी अतीव कठिन होगया है, रात्रिदिवस कलह एवं विसंवादने घर बना लिया है, एक समय मात्र भी जीवन दशा सुख एवं शांतिपूर्वक नहीं बीतती, यह सब सोचते हुये कहना पडेगा कि शिक्षाका अधःपतन।

१७—जब सर्वप्रकार अज्ञान लताका अंकुर भारत वसुंधरापर अंकुरित हुआ. व्यभिचारने अड्डा जमाया, तब लज्जावशात मुंह छिपानेके बहाने ही मानों ऊपरमें परदा पड गया !!! और परदेमें ही परदायत्वपना आगया, अर्थात् पापोंने छिपे रुस्तम भण्डा फोर किया। परदाकी ओटमें व्यभिचारी एवं कामोन्मत्त शूकरोंने शिकारकी। यानी नर पिशाचोंका अमानुषिक अत्याचार बढ़ गया।

१८—वाग्दायनी शिक्षा! इस हृदयहारिणी विरह-वेदनाका मैं स्वयमेव स्वागत करती हूं। मेरा यह विदीर्ण मानस इस प्रेममयी यंत्रणासे अब सदा आन्दोलित रहे। बस, यही एक अनन्यतम अभिलाषा है। प्यारी बहिन! क्या कहूं आपके सन्निकट न रहनेसे ही हम लोगोंकी गूढ़ाति गूढ़ प्रेम-वाटिकाके क्रीड़ारंगमें अब तिमिरसा छागया है। मानों तुमने अपना सर्वस्व हरण किया। आओ बहिन! पुनः क्रीड़ा—रंगस्थलीको हरा भरा करें।

१९—सरस्वती! मुझे यह नहीं कहलाना कि तुम्हारा क्या लेकर भागे। हृदयहारी! मेरा था ही क्या? अमूल्य जीवनके शृंगारकी कुंजिकाका आधिपत्य आपका ही था सो लेलिया। अब मुझे उसका कोई भी उपालंभ नहीं देना। मगर तुमने जो उसके बदले जड़तारूप शृंगार, महिला समाजके पैरोंसे चोटी तक प्रचलित किया, यह ठीक नहीं किया।

मनोहारी! क्या हम लोगोंको तबतकके लिये कैदरूप पैरोंमें बेड़ियां पहनाई? हम पुरुषार्थके नाते हाथ धो बैठी हैं। क्या इन कर पल्लवोंकी शोभा इन्हींसे सुयोग्य प्रतीत होती है? अगर सतीत्वकी रक्षा करें तो कैसे?

२०—पतिदेवको रात्रि दिवस मारे परेशानीके चैन नहीं। अब तो कहना ही क्या? स्त्री समाजमें इस शृंगार-मायावी, पिशाचनीका भयङ्कर रोग फैल गया है। अगर पांच सात सेर धातुका बोझ न हो तो बाहिर निकलना ही मुश्किल है। चाहे पतिदेव रात्रि दिवस परिश्रम करते करते जिन्दगी बशर करें। पर देवीजी तो यही चाहती हैं कि किसी तरह गहना बनें।

२१—बस गप्पाष्टकपुराण (?) का पाठ श्री जिनालयमें तो नियमसर होता ही है। धर्म-कर्म पर सफा हाथ फेरा जाता, वैराग्यस्थल रागस्थल बनाया जाता, मंत्रोंका भी उच्चारण "जिजी ये ककना भोतऊ नोने हैं, हमें सोऊ अपनी बिन्नाखों वनवाऊने" इत्यादि रूपमें होने लगता है। पाठ समाप्ति होकर घर आते ही, अगर पतिदेवके

मुखारविंदसे "नहीं" ऐसा निकल गया तो समझ लीजिये कि भूख हड़तालके साथ प्राणोंकी आहुतीमें कुछ ही न्यूनता रहती है।

२२—भारतीय ललनाओंका जब "शिक्षा"के प्रति अज़ब ढंग है तो क्या उनकी भावी संतान कर्मठ हो. धर्मधुराको धारण कर सकेगी?

क्या शृगालिनी शूराकृति-सिंहको पैदा कर सकेगी? उत्तम बीज भी विरस भूमिमें वपन करनेसे तत्सम फल सकेगा? नहीं। अतएव कहना पड़ेगा कि जबसे बच्चा गर्भमें आता है। तबसे माताके आहार-विहार, आचार-विचारका असर उस भावी संतानपर पड़ने लगता है। क्योंकि संस्कार निमित्त कारण नैमित्तिक पदार्थ विशेषसे संबन्ध रखता है, अगर वस्तु बाह्य निमित्त कारणोंसे सुसंस्कारित है, तो विशेष गुणोंमें भी परिवर्तन होगा। उदाहरणार्थ फोनोग्राफका प्लेट। न्याय भी यही कहता है कि "निमित्तापाये नैमित्तकस्यापायः।"

२३—यही कारण तो है कि गर्भिणी स्त्रीके लिये सुशील, वीर, एवं आदर्श पुरुषोंके चित्रपट (फोटो) दिखाये जाते हैं, ताकि भावी सन्तान भी होनहार कर्मण्य बनें। यहांतक कि शयनागारोंमें भी प्रायः वही उन्नत चित्रपट लगाये जाते हैं। यही बात शैशवकालमें भी लागू है। क्योंकि उन अबजात शिशुओंका जितना घनिष्ट संबंध मातासे है उतना पितासे नहीं। माता अगर सद्गुण संपन्ना है, तो वह संतान भी उसी मार्ग गत पाई जायगी।

२४--सखी शिक्षाकी यह काष्ठागत-आदर्शता सुन उसका संतप्त हृदय धधक उठा, उसके शान्त एवं कामी नेत्र, काली मेघ-घटाके समान अश्रुधाराके बहाने उमड़ आये, उसके निस्सार जीवनकी एक करुण कहानीका दृश्य सामने नाचने लगा, यौवन-प्रांगण (आंगन)में इन्दुकलावत् शिक्षाका आभास हो गया, मृग भ्रांतिवत् मनोवृत्ति विभक्त (चलायमान) होगई, वह किसी प्रकार भी अपने मनोगत भावोंको न संभाल सकी, बस उसका अन्तरात्मा कह ही तो उठा....।

२५--दयावती! ठीक शृंगार रोगका जहरीला कांटा शंकूवत् हृदयस्थलके सुधा-घटको विकृत करनेवाला है, इतनेपर भी मानव समाजने ऊपरसे परदा पटक दिया। अब मछलीके जालवत प्रीति-गलीके इस कांटेकी कसकीली चुभन जीर्ण-शीर्ण जीवनको भी तिलांजलि देगी।

हा! प्यारी बहिन, क्या पशुवत ही जीवनयात्रा समाप्त करनी होगी? हाय! ये अमूल्य जीवन कांचके समान दफनाऊंगी? हा! हा!! गजब सितम गजब!

२६—उसका कातर--स्वर कण्ठ तक भर आया मारे घबडाहटके अत्यन्त अधीर होगई। अविरल अश्रुधारा-प्रवाह प्रत्येक रोम-छिद्रोंको भिगोने लगा, मानों अव्यक्त लालसायें सर्व वेदनाएं अब सुधि अक्षरोंका चुम्बन कर आंखोंसे निकल पड़ीं। शृंगार-रसके प्रेम तूफानकी एक२ किकिरी खटकने लगी। उपाय केवल शिक्षाका ही सान्निध्य (सहवास) सूझने लगा।

विधवाकी स्मृति !

(ले०—श्री० पं० शुकदेवप्रसाद तिवारी, "निर्बल")

मध्यप्रदेशान्तर्गत होशंगाबाद जिलेमें देनवा नदीके पार मड़ई नामक ग्रामसे कुछ अंतरपर एक अति प्राचीन मंदिरके खंडहर हैं। जिस प्रकार अनेक मंदिर अनेक देवताओंके नामसे प्रसिद्ध होते हैं उसी प्रकार यह मंदिर "सतीका चबूतरा" या "झिरझिरी महल" के नामसे प्रख्यात है। इस मंदिरमें दो खंड हैं और प्रत्येक खंडके ऊपर अलग अलग गुम्बज हैं। एक खंडकी गुम्बज समयचक्रके प्रबल फेरफारसे नष्ट होगई है। दूसरे खंडमें दो भिन्न२ कमरे, एक संयुक्त दालान, एक आँगन और मंदिरसे उत्तरमें एक पत्थरसे पटा हुआ तालाव है जिसमें बड़े२ वृक्ष खड़े हुए हैं। मंदिरके पीछे एक मीठे पानीका सुन्दर झरना सदियोंसे कलकल नाद करता हुआ स्वर्गीय सतीका गान अनवरतरूपमें कर रहा है। मंदिरके साम्हने आंगनसे लगी हुई सतपुड़ा पर्वतकी उच्च श्रेणी है तथा चारोंओर सघन जंगल है।

× × ×

यह स्थान ऐसे घोर जंगलमें हैं जहां दिनको भी शेर, चीते, तेंदुआ आदिका भय है। इस जंगलमें २-२ अथवा ४-४ मीलके अंतर पर गोंड नामक जंगली जातिकी छोटी २ बस्तियां हैं। जिस समय हम इन गांवोंमें गये और वहांके वृद्ध पुरुषोंसे भेंट की उस समय हमें इस स्थानका बहुत कुछ प्राचीन ज्ञान प्राप्त हुआ। सुना कि मंदिरके साम्हने घुटने टेककर प्रणाम करती हुई कुछ युवकोंकी मूर्तियां भी थी जिन्हें निरक्षर उद्दण्ड लोगोंने इधर उधर तोड़ फोड़कर फेंक दी हैं। सतीकी स्मृतिमें नवशक्तियोंकी मूर्तियां भी एक खंडमें रखी हैं तथा शिवरात्रि पर अनेक स्त्री पुरुष यहां आ पूजा कर मनौती मनाते हैं। जिस समय उस वृद्धसे इस विधवाका विस्तृत विवरण पूछा गया। उस वृद्धका कण्ठ अवरुद्ध होगया और आंखोंमें अविरल अश्रुधारा वह निकली। कुछ शांत होनेपर जो कुछ उसने सुनाया उसे अपने शब्दोंमें हम पाठकोंकी भेंट करते हैं।

× × ×

जिस समय भारतवर्षमें लगभग १००० वर्ष पूर्व विदेशियोंके आक्रमण प्रारम्भ हुए थे उससमय इस मंदिरके निकट एक झोंपड़ी थी। जिसकी दीवालें मिट्टीकी थीं। पशुशालाकी लकड़ियां जला डाली गई थीं। झोपडीकी दीवालें भी कहीं २ से गिरने लगी थीं। ऐसी गिरी हुई जगहसे घरके भीतरका दारिद्र्य प्रत्यक्ष दिखाई देता था। खटियाका पता भी नहीं था। ओढने बिछानेको थोड़ेसे फूटे चिथड़े और बड़े भाग्यसे प्राप्त रूखे सूखे भोजनको बनानेके निमित्त मिट्टीकी एक

हांडी, खानेको मिट्टीकी थाली और पीनेको एक तूमा था। उस घरमें प्रकाश कभी देखनेको भी न मिल्ता था।

× × ×

घरमें एक वृद्धा सास और रमियां नामक युवती सुन्दर विधवा वहू थी। वृद्धाके पति और पुत्र बलात युद्धमें सैनिक बनाकर लेजाये गये थे और इस बारका उनका विछोह सदाका विछोह था, वे फिर कभी लौटकर न आये। सास और वहू दोनोंने २--४ वर्ष बाट जोही और आशा सूत्रमें बंधी रही, परन्तु अधिक समय तक कोई सूचना तक न मिलनेमें वे निराश होगई और कपालको ठोककर वैधव्य जीवन व्यतीत करना प्रारम्भ कर दिया।

× × ×

इनकी दीनता बहुत बढ़ी चढ़ी थी। रमिया और उसकी सास आसपासके जंगलोंसे लकड़ी इकट्ठी करती और बुढ़िया उन्हें सिरपर ले ८ मील अंतरपर बसे सुहागपुर नामक गांवमें आती और वेचकर कुछ अनाज खरीदकर लेआती। जितने समय सास बाहर रहती अभागी रमिया अपने फटे पुराने कपड़ोंमें सुन्दरताको छिपाये या तौ लकड़ी बटोरती या घरका काम धंदा करती अथवा झोंपड़ीके बाहर शहरसे आनेवाली रास्ताकी ओर टकटकी लगाये बैठी रहती। दोनोंमें परस्पर इतना प्रेम था कि कोई भी देखनेवाला उन्हें मां बेटी सरीखा प्रेम करते देखता। किसीने कभी आजकी सास वहू जैसा लड़ते झगड़ते नहीं देखा। दोमेंसे कोई एक कभी बीमार होजाती तो दूसरी उसको स्वस्थ करनेके निमित्त पागल हो उठती। जंगली जातियोंमें पुनर्विवाह कर लेनेका चलन है, परन्तु उस सुन्दर युवतीके मनमें कभी यह भावना आई भी न थी।

× × ×

दुर्भाग्यवश एक दिन मध्यप्रांतके जंगली हिस्सेके प्रधान जमींदार युवक शिकार खेलते हुए आ निकले। वृद्धा उन दिनों ५--६ दिनसे बीमार थी और रमियाँके पास लज्जा बचानेको पूरे वस्त्र नहीं थे कि जिन्हें पहिनकर वह लकड़ी बेचकर अपने व सासके पेटमें दो कौर अन्न भी डाले। अत: वे ४ दिनसे विना अन्न खाये ही थीं। दुखियोंके पास कोई श्रीमान केवल इसीलिये नहीं जाया करते कि कहीं वह कुछ मंगाने न लगे। यही कारण था कि उनके पास कोई सहानुभूतिके दो शब्द कहनेको भी नहीं जाता था। यद्यपि वे अपने कठिन परिश्रमसे कमाये हुए थोड़ेसे अन्नसे आधे पेट भोजन कर किसीका आश्रय ले पथभ्रष्ट नहीं होना चाहती थीं, तथापि इस समयकी भारी विपत्तिने उनको किसीकी सहायता लेनेको विवश कर दिया था। वैसे कई नवयुवक रमियाकी सुंदरतापर मोहित थे और उसे पथभ्रष्ट करनेको कभी२ उधर पहुंच प्रलोभन दिया करते थे, परन्तु वह पथभ्रष्ट होनेके पूर्व प्राण त्याग देनेको सदा उद्यत रहती थी।

× × ×

जमींदार नवयुवकका नाम फतहसिंह था और वह इन्हींकी जातिका था। इस युवकने देनवाके किनारे डेरा डाला। इसके नौकर शिकार

गाहकी खोजमें घूमते २ इस झोंपड़ीके पीछे वह-नेवाले नालेके किनारे आये। इसी समय रमिया जिसके अंग फटे चिथड़ोंमेंसे स्पष्ट दिखाई देरहे थे और सुन्दरता जिसके शरीरसे ऐसी विपत्तिमें भी फूटी पड़ती थीं, हाथमें तूमा लिये पानी भर-नेको नालेपर आई। मुखाकृतिसे स्पष्ट प्रतीत होता था कि रमियाके हृदयमें भयंकर वेदना है और वह बहुत दूर धुंधले प्रकाशमें दिखाई देती हुई अतीतकी स्मृतिमें तल्लीन है। उसके चहरेपर रूखापन, वालोंमें वर्षों कंधी न होनेसे मैलापन और उलझन, शरीरमें शिथिलता, वस्त्रोंसे दीनता और नेत्रोंमें कारुण्य स्पष्ट दिखाई देता था। वह आई, पानी भरा और चली गई। जमींदार युवकके नौकरोंने कुछ प्रश्नभी किये, परन्तु अपनी तल्लीनता और चिन्तामें रहनेसे उसने इनकी एक न सुनी।

× × ×

जमींदार युवक अपने डेरेमें बैठा था। फानूस जल रहे थे। एक वेश्या जो साथ थी उसका गाना होरहा था। बिलासिताकी सब सामग्री उपस्थित थी। नौकरोंने आकर आखेटके अनेक स्थान बतलाये और इसके साथ ही साथ रमि-यांकी सुंदरताका वर्णन किया। यह सुनते ही उसने शराबका प्याला दूर फेंक दिया, नाच गाना बंद कर दिया और उन नौकरोंको एकांतमें लेजा कुछ मंत्रणा करने लगा। कुछ समय पश्चात् अपने सभी साथियोंको सूचना दी कि दूसरे दिनका पड़ाव अमुक नालेके किनारे होगा। जमींदार युवक दुराचारी था और वह अभीतक सैकड़ों स्त्रियोंका सतीत्व धन बल अथवा पशुबलसे नष्ट कर चुका था। उसे अभिमान था कि जैसे हो वैसे उस सुंदरीको वशमें लाया जायगा।

× × ×

पूर्व दिशासे सूर्य उदय होरहे हैं। उधर रमियां और उसकी सासके उपवासका पांचवां दिन प्रारम्भ हुआ और इधर पापियोंके दलने उस असहाय अबलाके सतीत्वको नष्ट करनेकी तैयारी की। सारा सामान गाड़ियोंमें लदकर रवाना होगया और जमींदार युवक फतेहसिंहने अपने ४-५ साथियोंके साथ हाथीपर चढ़ उस ओर प्रस्थान किया। इसके मनमें बड़ा उल्लास और आनन्द था। बड़ी बड़ी आशाएं बांधते हुए आगे बढ़ा। नालेके तटपर पहुंचा। डेरा आदि पहिले ही लग चुके थे। उसने नौकरोंको, झौपडीमें कौन २ रहते हैं और स्थिति कैसी है, यह देखनेको भेजा। वे देखकर आये और जो कुछ उनने देखा उसका पूरा विवरण सुनाया। विवरण सुनकर फतेहसिं-हकी प्रसन्नताका पारावार न रहा। उसके मनमें पूर्ण विश्वास होगया कि थोड़ीसी सहानुभूति, प्रलोभन अथवा बलप्रयोगसे सब काम सहज ही बन जायगा।

× × ×

सास पीडित अवस्थामें फटे चिथड़ोंमें लिपटी भूमिपर पड़ी है और रमिया सासके पैर दाबती हुई अपने ससुर और पतिकी बातें सासमे कर करके आंसुओंकी धारा बहा रही है। रमियाके हृदयमें उस समय यह भाव था कि किसी प्रकार यदि थोड़ासा कुछ भी अन्न प्राप्त होजाय तो वह सासके मुंहमें डालदे जिससे कि

यदि वह मरे भी तो भूखी न मरे। परन्तु उसके पास सिवाय अपने पति द्वारा प्राप्त शिवलिंगके और रखा ही क्या था। अतः वह इसी धुनमें छटपटा रही थी। इतनेमें वह जमींदार युवक अपने उद्दण्ड साथियोंके साथ झोंपड़ीके द्वारपर आपहुंचा। रमियांने अपने शरीरपर ओढ़ा चिथरा भी सासके सिरमें बांध दिया था। केवल कमर तक एक फटा पुराना वस्त्र लपेटे हुई थी। इन लोगोंको अचानक अपने द्वारपर आये हुए देख लज्जावश सासकी सेवकाई छोड़ एक अंधेरे कौनेमें छिप गई। जमींदारकी दुष्ट आंखोंने उसके शरीरको देख लिया था। और इस क्षणिक दृष्टिने उसके शरीरमें कामाग्नि प्रज्वलित करदी थी। फतेहसिंहने अपने कंधेपर पड़े हुए एक कीमती शालको झोंपड़ीके भीतर उसी कौनेकी ओर फेंका जहां विधवा रमिया छिपी हुई थी और आदेश दिया कि वह उस वस्त्रको निःसंकोच ओढले। बेचारीको जमींदारके पापी-हृदयका तनिक भी पता न था। उसने अनुग्रह मानते हुए सासकी स्वीकृति ले उसे ओढ़ लिया। परन्तु दूसरे ही क्षण उसकी निर्मल आत्मामें भविष्यत विपत्तिका भी आभास प्रतिबिंबित हुआ और उसने शालको बाहर फेंक झोंपड़ीके द्वारपर टट्टी लगादी।

× × ×

जमींदार इस प्रथम प्रयत्नमें असफल हो डेरेपर लौटा और नौकरोंको कुछ अच्छी२ खाद्य सामग्री ले झोंपड़ीमें भेजा। इसवार झोंपड़ीका द्वार खुला हुआ था और रमिया पूर्ववत् अपनी सासकी सेवा करती हुई उस अपरिचित जमींदारकी धृष्टताका वर्णन कर रही थी। इस अंतिम अवस्थामें बीमारी और भूखसे इसप्रकार व्यथित थी कि जिससे उसने बहू द्वारा किये गये व्यवहारपर खेदजनक भाव प्रगट किया और स्पष्ट इच्छा प्रगट की कि यदि वह कुछ सहायता करे तो स्वीकार की जाय और संभव हो जमींदार चाहे तो अपने जीवनको भविष्यतमें सुखी बनानेको विवाह भी करले, कारण कि अब वह अधिक दिन जीवित रहकर गृहस्थीका कार्य न चला सकेगी। बहूने एक लम्बी श्वास ली और सासके हितार्थ अपने सतीत्वकी रक्षा करते हुए कार्यसाधनका विचार कर पीछेकी ओर देखा। नौकर जो सामान लाये थे वह स्वीकार कर लिया और शीघ्रतासे उसमेंसे कुछ तैयार भोजन केवल सासको खिलाया। रमिया तो उसे छूनेकी ही दोषी थी। उसने उस सामग्रीका तनिकसा भी अंश अपने उपयोगमें नहीं लाई।

× × ×

नौकरोंने जमींदारसे सामानका रमिया द्वारा स्वीकार किये जानेका सारा समाचार कहा। जमींदारने ५००) रुपया और दो मूल्यवान साड़ी पुनर्वार नौकर द्वारा झोंपड़ीमें भेजी। रमियाने सासको वह द्रव्यकी थैली और साड़ी दीं। सासने एक साड़ी अपने लिये रखली और अच्छी साड़ीं बहूको पहिननेको कहा। बहूने साड़ी पहिनी। सास प्रसन्न हुई। थोड़ी देरमें एक और नौकर आया और उसने जमींदारके आनेकी सूचना दी। जमींदार आया। वृद्धाने उसे चिथड़ोंपर पास बिठा अपनी बहती

बीती हुई सारी घटना बड़े दुःखके साथ कह सुनाई और यह भी कह दिया कि उसके मरनेके पश्चात् विधवा बहू रमियाँका इस संसारमें कोई नहीं है। जमींदारने आश्वासन देते हुए रमियाँको अपने साथ ले जानेकी बात कही। यद्यपि बुढ़ियाको बहूके वियोगकी आशंकाने बहुत ही व्यथित बना दिया तथापि बहूके सुखी होनेकी यादने उसकी व्यथाको कम कर दिया और उसने ओठोंपर प्रसन्नता ला स्वीकृति देदी।

× × ×

बुढ़िया कुछ स्वस्थ होगई परन्तु १२ घंटेसे हुए बहूके वियोगमे वह व्याकुल होउठी। प्रातः-काल हुआ। बुढ़ियाने उपस्थित सामग्रीमेंसे कुछ खाया और सिरहाने रुप्योंकी थैली देखने लगी। थैलि रात्रीमें ही जमींदारके ही कोई साथी उठा लेगये थे। बैठे२ बुढ़ियाने झौंपड़ीका कौना २ छान डाला परन्तु रुप्योंकी थैली न मिली।

उसके मनमें भारी विकलता उत्पन्न हुई और बहूके पहिननेके पुराने चिथड़ोंको छाती और आंखोंमे लगा २ खूब रोती और कहती, "हाय यह क्या होगया! सती रमियाँका जीवन मैंने नष्ट किया और द्रव्य भी जाता रहा।" अंतमें वह जैसे तैसे किये हुए भोजनके आधार पर उठी और एक रस्सी ले मकानकी मंगरीमें बांध गलेमें बांध ली और लटक गई। कुछ ही क्षणमें उसके प्राणपखेरू इस पंचतत्वके शरीरको छोड़ चल बसे।

× × ×

रमियां रात्रिमें जमींदारके डेरेमें आगई थी परन्तु न तो उसने कुछ खाया पिया और न फतेहसिंहसे ही भेंट की। फतहसिंहके मनमें रमियांके डेरेमें आजानेसे प्रसन्नता और धीरज होगई थी, इसलिये उसने भी उसे किसी प्रकार सताना उचित न समझा। प्रातःकाल जब फतेहसिंहके डेराके कूचकी तैयारी होचुकी रमियांने अपनी साससे अंतिम भेंट करनेकी इच्छा प्रगट की। जिस समय रमियां अपनी झौंपड़ीके भीतर घुसी, उसने सासके शबको लटके हुए पाया। यह देखते ही वह मूर्छित हो गिर पड़ी। कुछ समय बाद मूर्छा खुलनेपर उसने वे ही पुराने चिथड़े पहिन सासके शबके पास दूसरी रस्सी बांध गलेमें फंदा डाला और अपने निर्दोष होनेकी सपथ परमात्माके सम्मुख खाते हुए और कहते हुए कि उसे तो सतीत्वकी रक्षार्थ आज नहीं तो कल अवश्य मरना था तथा उसने ऊपरी मनसे जो जमींदारके साथ जानेकी स्वीकृत दी थी वह केवल सासके सुखके निमित्त था, टंग गई!

× × ×

जमीदारने १-२ घंटे बाट जोही। जब कुछ ठिकाना रमियाके लौटकर आनेका न पाया तो वह भी उस झौंपड़ीमें गया और मंगरीमें लटकती हुई दोनों लाशोंको देख सन्नाटेमें आगया। सबसे पहिले उसने वहां रुप्योंकी थैलीको देखा। वह कहीं न मिली। उसकी समझमें सारी घटना याद हो आई। उसके कानोंमें ऐसे शब्द सुनाई देने लगे मानो कोई कहता हो "अरे धनके मदमें मस्त दुराचारी! तूने हमारी इस टूटीफूटी कुटियाके सतीत्व मय कष्टपूर्ण परन्तु सुखी जीवनको नष्टभ्रष्ट कर दिया।" कुछ देर वह विक्षि-

स सा होगया और फिर शांत होनेपर उसने एक शिलाखण्डपर लिखा कि इस आदर्श विधवा स्मृतिमें यहां एक कुटिया बनाई जाय और जिनने इनका धन हरण किया है और सतीत्व नष्ट करनेके प्रयत्नमें जिनने उसका हाथ बटाया है वे इनसे क्षमा प्रार्थी हों तथा वह स्वयं अपने व्यभिचारयुक्त भावोंके प्रायश्चित्त स्वरूप प्राण विसर्जन करता है और घोषित करता है कि रमियां वास्तवमें अनुकरणीय सती है और अन्त-तक सतीत्वका उसने पालन किया। इसके पश्चात् फतेहसिंहने भी उन दोनोंके चरण छूकर तीसरी रस्सो बांध अपने प्राण विसर्जन करदिये!

× × ×

फतेसिंहके साथियोंको चिन्ता हुई और उन्होंने झोंपड़ीमें पहुंच यह बीभत्स दृश्य देखा एवं शिला-खंडके लेखको पढ़ा। जो वास्तविक अपराधी थे वे घुटने टेक कर क्षमा मांग "विधवाकी स्मृति" बनवानेमें लग गये।

आज वही "विधवाकी स्मृति" सरकारी जंगलमें भग्न दशामें पड़ी है और शिक्षित समुदायका उस ओर कुछ भी ध्यान नहीं है।

अनमोल-बोल।

(संकलयिता-पं० कमलकुमार जैन शास्त्री-हरदा)

१-अपने अभीष्टका सदैव चिन्तवन करो! उसे प्राप्त करनेका यही सबसे सरल तरीका है।

२-अपनी कमजोरियोंको दिखानेकी कोशिष मत करो। ऐसा करना भविष्यमें तुम्हारे लिये घातक सिद्ध होगा।

३-अपना विज्ञापन करनेके लिये लोग जितनी कोशिष करते हैं उसमे आधा भी अगर वे अप-नेमें योग्यता लानेकी कोशिष करें तो स्वयं ही उनका विज्ञापन होजाय।

४-केवल बाहरी हावभावसे ही दूसरेके आच-रणका अन्दाज मत लगाने लगो। कभी२ इससे भारी गल्ती होजानेकी आशंका रहती है।

५-रातमें सोने समय अवश्य सोचो कि दिन-भरमें जो कुछ तुमने किया है उसमें क्या उचित है और क्या अनुचित। ऐसा करनेपर उस दिन जो गल्ती हुई होगी, फिर दूसरे दिन उसके होनेकी संभावना न रहेगी।

६-एकाएक दयासे पिघल जाना भी मनु-ष्यकी एक खास कमजोरी है।

७-अगर सावधानीसे काम करो तो अधिकसे अधिक काम आसानीसे कर सकोगे।

८-क्या तुमने कभी सोचा है कि अबतक तुम्हारी उन्नति क्यों नहीं हुई? अगर नहीं सोचा तो जरा अपनी छातीपर हाथ रखकर गौर करो।

९.–जिसे तुम हट्टाकट्टा और मजबूत देखते हो समझो कि उसका आचरण भी वैसे ही हट्टा-कट्टा और मजबूत है।

१०–तुम्हारे नाक मुंह अच्छे हैं, रंगरूप अच्छे हैं लेकिन सिर्फ इसीलिये तुम हरगिज खूबसूरत नहीं कहे जासक्ते। खूबसूरत तो वह है जो खूबसूरत काम करता है।

११–जो हमेशासे तुम्हारी भलाई करता आया है वह अगर कभी तुम्हारी बुराई भी कर दे तो तुम्हारा क्या कर्तव्य है कि तुम सारी भलाईपर पानी फेरदो और उससे बदला लेनेकी कोशिश करने लगो? नहीं हर्गिज नहीं। यह तुम्हारी भयंकर भूल है।

१२–अपने शत्रुको प्यार करना सीखो। ऐसा करनेपर कुछ दिनों बाद देखोगे कि तुम्हारा जीवन बहुत सुखमय होगया।

१३–निष्पाप जीवनमें जो सुन्दरता है वह बिना अनुभवके नहीं मालूम होसकती।

१४–प्रेम एक सुन्दर वस्तु है।

१५–आत्म निवेदन–गुरु चरणोंमें आत्मसमर्पण कर देनेसे निश्चिन्तताका आनंद प्राप्त होता है।

१६–खूबी तो तब है जब मनुष्य अपनी कल्पनाको खुद ही कार्यान्वित करके दिखा दे।

१७–उपादानका यथार्थ ज्ञान प्रतिभाको प्रेरित करता है।

१८–मनुष्यका गुरु काम है।

१९–अपने आसपास मित्रोंको इकट्ठा कीजिये, खुशामदियों अथवा अंध-भक्तोंको नहीं।

२०–नीति नियमोंकी अपेक्षा प्रेम, दाक्षिण्य, दया और सहृदयता आदि स्निग्ध-भाव कहीं अधिक कीमती हैं।

२१–विस्मृति प्राण क्षीण होनेका लक्षण है। जिस समाजसे धर्मका लोप होजाता है, उसकी स्मृति अर्थशास्त्र ही बन जाती है।

२२–आज हमारे समाजको मंत्र द्रष्टा ऋषियोंकी जरूरत है, समाज व्यवस्थापक आचार्य तो अपने आप आ मिलेंगे।

२३–जो लड़का अपने समयका सदुपयोग करसकता हो उसका संपूर्ण विकास तभी होगा, जब आप उसे सम्पूर्ण स्वाधीनता दे देंगे।

२४–आप चाहे कितना ही प्रगतिका ढोल पीटते रहें परन्तु संसारसे जो विश्रांति चल बसी है वह जबतक लौट करके नहीं आवेगी तबतक समाजकी दशा दयनीय ही बनी रहेगी।

२५–संसार चक्र प्रचण्ड वेगसे दौडा जारहा है। परन्तु कहां? किसीको पता नहीं है कि कहां? क्योंकि ईश्वरपर श्रद्धा ही किसे है। मनुष्यको तो यही समाधान है कि जो सबका हाल होगा वही मेरा भी होगा।

२६–समाजकी शक्ति युवक है। युवकोंके भविष्यपर भी समाजका उत्थान या अधःपतन निर्भर है।

२७–सच्चे सैनिक (नवयुवक) समाजद्रोही नहीं होते। वरन वरवक्त समाज सुधारका पुनीत कार्यकर्ता ही रहता है।

होली। (लेखक–पं० पीताम्बरदासजी उपदेशक)

दुर्भाव तरुवर सम जलें ध्यानाग्निको प्रज्वलित करी,
मन, तन, वचन सुस्थिर करे निज आत्म शक्ति जगाधरी।
कार्माण योग नहीं जले उनके क्षपानेको चले,
ज्यों दंड, कपाट क्रिया करी शुभ, अशुभ कर्म सभी जले ॥ १ ॥

नख, केश, शेष लखे अमरपतिने उन्हें संग्रह करे,
कर्पूर सम वे भी उड़े कर कल्पना भू पर धरे।
आवाज दी परमात्माने अष्ट कर्म जला दिये,
त्रैलोकमें फैले उन्हें जगको दिखानेके लिये ॥ २ ॥

अतिशय सुगंध भरे मनोहर काष्ठ ले उस दृश्यका,
कुछ चित्र खींचा था प्रभावक ध्येय रख सर्वत्रका।
संग्रह किया ईन्धन बनाया शुभ, अशुभ वसु कर्मका,
रच यज्ञ शुभ स्तोत्र पद दे नाम होली पर्वका ॥ ३ ॥

कीर्तन किया बाजे बजा परमात्माने कर्मकी,
होली बना ध्यानाग्निकी, की सिद्धि हुई अपवर्गकी।
इससे अमर वसुकर्म करने नष्ट, अष्टम द्वीपको,
जाते वहां अर्चन करें नर जा न सकें उस द्वीपको ॥ ४ ॥

सुस्थापना करलें यहीं अर्चन करें परमात्मपद,
होने प्रगट संगीत गानेको चलें हर अष्ट मद।
वसुकर्मकी होली बना अष्टान्हिकाके अन्तमें,
कीर्तन करें गुण गान गा रम जांयगे अर्हन्तमें ॥ ५ ॥

सुस्मृति रखे जग इन्द्रने होली दिखादी विश्वको,
सूझे सुपथ भूले न जग अर्हन्तपद सर्वज्ञको।
हो प्राप्त दण्ड, कपाट करनेको समग्र त्रिलोकमें,
चेतन प्रदेश रुके नहीं सत्ता अवस्थित मोक्षमें ॥ ६ ॥

रम जांय पूर्व शरीरसे, हों न्यून कुछ सिद्धात्मा,
उनको न कर्म सता सकें बनते न वे बहिरात्मा।
पुनर्जन्म दाता कर्म ईन्धन सम लखा की होलिका,
उद्यान तरुवर सम जलानेको सजी दीप मालिका ॥ ७ ॥

शुभ दृश्य लख संगीत सुन उपदेश लें भव्यात्मा,
आमोद और प्रमोदमें हुई व्यक्त अन्तर आत्मा।
ढूंढे समग्र त्रिलोकमें फैलीं करमकी वर्गणा,
उनकी धेरें होली चतुरने कीं अनेकों कल्पना ॥ ८ ॥

हल हुई, अनंत सुगुण प्रगट हों काम, क्रोध, कपट चपल,
स्वयमेव होलीमें जलें सुम्मेरु सम चेतन अटल।
बन जायगा, ध्यानाग्निकी पंचाग्निमें अविरत जलें,
अणुव्रत महाव्रतको धरे होली जले देखन चलें ॥ ९ ॥

पर हाय! हा! सत्पथ प्रदर्शक नीति तज विद्या विना,
जगने अविद्याकी ग्रहण होली नियतकी उस दिना।
दुर्मुख किया ईंधन लिया पूछे विना रक्खा चुरा,
बैठे गधेपर देख लो मलमूत्र डलवाया बुरा ॥ १० ॥

कर २ प्रसव कु वचन निकाले दुर्जनोंने शर्म तज,
नर, नारियां एकत्र हो फेकें अनेकानेक रज।
कलरव करें पशु, पक्षि सम कुश श्वान वृत्ति धरे बना,
बोलें कवीर अवीरलें दुराचार दर्शक योजना ॥ ११ ॥

करते, करानेको सजे मन्मथ जगे उत्तेजना,
देने, नशे पीने पिलानेको चले तज तज घृणा।
सत्कर्म स्वच्छ सभी इकट्ठे कर चुके होली बना,
त्रण काष्ट सम उपहासकी ज्वाला लगा न करें मना ॥ १२ ॥

मन चले अधम करने ठठोलीं टोलियां तैयार कर,
विचरें नगरके बीचमें उगलें वचन सुन सुन जहर।
नर, नारि वृन्दोंको चढ़े शिशु, सुता अनसमझे, फंसे,
हा! हा! जमाता जननि सन्मुख जगत अंधा हो हंसे ॥ १३ ॥

दुर्नय जलें! दुर्मन जलें! दुर्जन न बन पावे जगत,
होली रची अज्ञान तमके नष्ट करनेको सशक्त।
तैयार हों! तैयार हों! दुर्विचारकी होली जला,
आदर्श जगके सामने रखदें न चढ़ पावे बला ॥ ४ ॥

हमारी वर्तमान दशा और सुधारके उपाय।

(ले० पं० उदयचंदजी लहरी-हरदा।)

जिस समय हम बाहर दृष्टि डालते हैं उस समय सर्वत्र उन्नतिके चिह्न दिखलाई पडते हैं। परन्तु जिस समय इस जैन जातिकी ओर ध्यान देते हैं उस समय अवनति ही अवनति दिखाई पडती है। इतिहासकारोंने लिखा है कि सारा भारत प्राचीनकालमें जैन धर्ममय ही था और सब जातियोंमें जैन धर्मकी ही प्रधानता थी परन्तु आज ऐसा समय आगया है कि हम जैन जातिको छोटीसी संख्यामें देख रहे हैं। समय परिवर्तनके कारण लोगोंका कहना था कि शिक्षाकी कमीसे इस जैन जातिका इतना ह्रास होगया है परन्तु करीब ३० वर्षमे देखनेमें आया है कि इस जातिमें पूर्वकी अपेक्षा कई गुनी शिक्षाकी व्यवस्था होगई है और बहुतसे सुशिक्षित व्यक्ति नजरोंमें आने लगे हैं। फिर भी इस जैन जातिकी इतनी हीन अवस्था क्यों?

एक समय था जब यह जैन जाति अपने तन, मन, धनसे एकताके साथ अपने उन्नति पथको ढूंढ़ती हुई कुशलताके सुमार्गपर चल रही थी। आज वही जैन जाति क्यों इतनी गिरी अवस्थाको प्राप्त होरही है? इसका कारण सिर्फ लोगोंकी पारस्परिक फूट ही नजर आती है। कुछ लोगोंकी स्वार्थता इसी वजहसे इस जैन जातिकी तीन तेरह होगई है। जिस समय यह जैन जाति एक सूत्रमें बंधी थी, उस समय पूर्ण एकताका राज्य था। मुझे बहुत कुछ याद है कि जिस समय कुण्डलपुरजीमें महासभाका अधिवेशन हुआ था, उस समय जैन समाजमें पूर्ण एकता थी। शायद किसीका किसी बातमें मतभेद हो किंतु धर्म कार्यमें किसीका मत भेद न था और सभी एकताके बन्धनमें गुंथे हुए थे, किंतु थोड़े ही दिन बाद इस जैन जातिकी इतनी गिरी अवस्था हो गई कि जो प्रत्येक व्यक्तिको नजर आने लगी है। यह उसी फूटका कारण है।

लोग इस विचारमें थे कि अपनी२ अन्तर जातिकी हम लोग उन्नति करेंगे परन्तु दशा ऐसी हुई कि—"आधी छोड़ एकको धावे, ऐसा डूबा थाह न पावे। यही दशा आज इस जैन जातिकी हुई। लोगोंने विचार किया था कि अपनी२ अंतरजातीय संस्थाएं कायम करके अपना अपना रास्ता साफ करते हुए उन्नति मार्गपर लग जांयगे, परन्तु दशा हुई बिलकुल विपरीत। देखिये जिस समय हम अवांतर जैन जातिने अपनी सभायें कायम की उस समय तो कुछ दिन जरूर लोगोंको उत्साह रहा कि हम लोग उन्नति करके अगाड़ी बढ़ जावेंगे, परन्तु खेद है कि उन्नतिकी अपेक्षा अवनति ही नजर दिखाई पड़ रही है। समाजके प्रमुख व विद्वानोंका सिद्धांत था कि प्रथक् मार्गसे जैन जातिकी अवस्था उन्नति मार्गपर पहुंच जावेगी परन्तु स्वार्थता वश प्रत्येक नेताने अपनी संस्थाओंमें फूट डाल करके समाजके प्रत्येक अंगको छिन्नभिन्न कर दिया। इसी वजहसे आज जैन जातिकी जो पतित अवस्था है उसको जैन समाजका प्रत्येक व्यक्ति

जानता है। लोग चाहे जितनी उन्नतिके साधन जुटावें परन्तु जबतक एकताके सूत्रमें नहीं बंध जावेंगे तबतक उनके साधन सब निष्फल हैं।

यद्यपि लोगोंने नये २ जाति उन्नतिके मार्ग निकाले हैं और निकाल रहे हैं तथा आगे भी निकालेंगे। परन्तु वे सब मार्ग बत ही सफल होंगे जब लोगोंके हृदयोंसे मनोमालिन्य निकल करके जैन धर्मकी छत्रछायामें एकता सूत्रमें बंध जावेंगे तभी जैन जातिकी सच्ची उन्नति नजर आवेगी। यद्यपि इस समय इस जैन जातिमें अनेक मुनि, अनेक विद्वान बड़े२ सेठ साहूकार बड़े२ महाविद्यालय, उदासीन आश्रम, श्राविकाश्रम, अनेक जैन पत्र प्रत्येक जातिकी अलग २ सभायें मौजूद है, परन्तु इन सबके होते हुए भी आज इस जैन जातिकी इतनी गिरी हुई अवस्था क्यों नजर आरही है? इसका एक मूल कारण अपनी२ खिचड़ी अलग २ पकानेके सिवाय और कुछ नहीं है। यहांपर "नौ वामन तेरह अंगीठी" की कहावत चरितार्थ होती है। जबतक यह दशा रहेगी तबतक जैन समाजका कोई भी व्यक्ति कितना ही उपाय क्यों न रचे जैन जातिकी उन्नति हरगिज नहीं कर सकता है। यदि भविष्यमें भी ऐसी ही अवस्था चलती रही तो सम्भव है कि १००—५० वर्षमें ही इस जैन जातिका नाम निशान केवल इतिहासमें रह जावेगा।

लोगोंकी स्वार्थताके कारण जैनसमाजकी जो दुर्दशा होरही है वह इस लेखनीसे नहीं लिखी जाती। लोग अपने स्वार्थ साधनेमें किसीकी बुराई भलाईपर कुछ भी ध्यान नहीं देते। जबसे लोगोंमें अहंपनेकी बू आई है तबसे लोगोंने धर्मको भी ठुकरा दिया है। इसी बजह धर्मकार्योंमें भी अनेक बाधायें आनेलगी हैं। लोगोंके विचार दिनपर दिन गिरते जाते हैं। एक दूसरेको नीचा दिखानेमें ही अपना बड़ापना मानते हैं तथा प्रत्येक कार्योंमें पूर्ण बाधा देना समाज-नेताओंका कर्तव्य होगया है। यदि कोई उन्नति मार्गपर लगना चाहे तो समाजके कोई २ सज्जन उन्हें लगने ही नहीं देते हैं। आज-कल नेताओंने आपसी फूटमें ही अपना कार्य सिद्ध होते माना है चाहे समाज रसातलको क्यों न चली जावे, चाहे हमारे, जैन अजैन क्यों न हो जावें, चाहे सैकड़ों घर बरबाद होकर नाश क्यों न होजावें। परन्तु हमारी समाजके नेताओंको इस बातकी जरा भी परवाह नहीं है। इसी फूटकी बजहसे एक पत्र दूसरे पत्रका विरोधी बन रहा है; एक पण्डित दूसरे पण्डितका, एक मुनि दूसरे मुनिका, एक नेता दूसरे नेताका विरोधी बनकर सारी जैन जातिको जर्जर कर रहा है।

यदि सुधार किया जाय तो जैन जातिकी गिरी हुई अवस्था अब भी उन्नत होसकती है। कहा है—"बीती ताहि विसारिके आगेकी सुधि लेहु" इस नीतिके अनुसार देश काल और धर्ममें परस्पर विरोध न करके समाज-सुधारके उपाय किये जावें तो आगे जैन जातिकी फिर भी उन्नति अवस्था प्राप्त होसकती है। सुधारके उपाय निम्न लिखित हैं—

(१) सारी जैन समाजके नेताओंको एकता परिषद करना चाहिये और अपने २ मतभेदोंको सुलझाना चाहिये। जिस समय प्रत्येकके भीतरी

मतभेद मिट जावेंगे उस अवस्थामें जैन जाति स्वयमेव उन्नतिरूपमें दिखने लगेगी। कारण यह है कि दो प्रतियोगीके मिल जानेसे एक नया विलक्षण पदार्थ तैयार होजाता है। इसीलिये इस एकता संगठनकी बहुत आवश्यकता है। इसपर प्रत्येक व्यक्तिको पूर्ण ध्यान देना चाहिये। जबतक यह न होगा तबतक किसी भी कार्यका सदुपयोग होना कठिन है।

(२) समाजमें जो २ व्यक्ति किसी कारणविशेषसे जातिसे पतित कर दिये जाते हैं उनके सुधारका उपाय होना बहुत जरूरी है. चाहे वह पुरुष हो या स्त्री या बालक। इससे प्रति वर्ष सैकड़ोंकी संख्यामें जैन जातिकी कमी होती जारही है।

(३) पहिले न्यायपूर्वक जो पंचायतें होती थी उन्हींके अनुसार अब फिरसे धर्मानुसार समयानुसार न्यायपूर्ण पंचायतें होनेकी पूर्ण आवश्यक्ता हैं। आजकल जितनी भी पंचायतें होती हैं उनमें वास्तविक न्याय होता ही नहीं है। इसलिये इसकी पूर्ण जरूरत है। इसके न होनेसे समाजके सभी प्रकारके बंधन टूट गये हैं और उन बंधनोंके टूटनेसे धर्मके सत्यानाशके साथ २ जातिका सत्यानाश होगया। इसलिये पंचायतोंकी बहुत जरूरत है।

(४) जैन जातिमें जो विद्वान तैयार किये जावें उन्हें स्वतंत्र आजीविकाके उपायका उपदेश जरूर दिया जावे। ताकि वे परतन्त्रताकी बेड़ीमें न पड़ करके अपने आप खड़े होनेका ढूंढ़ निकालें. साथ २ उन लोगोंको शिक्षा भी इस प्रकार दी जाना अत्यन्त जरूरी है कि ये लोग अपने धर्म मार्गमें ही लीन रहें, कारण कि आज कलके जितने शिक्षित पंडित बाबू हैं उनके आचार विचार, खान पान, रहन सहन, धर्म अधर्म आदिका विशेष विचार नहीं रहता है। प्रायः आजकल बहुतसे इस बातको ढकोसला मानने लगे हैं। इसलिये वर्तमान शिक्षाके इस प्रणालीके लानेकी बहुत आवश्यक्ता है जिसमें नवीन निकले हुए नवयुवक अपने समाजके सच्चे उपासक बन करके अपने समाजको फिरसे हरी भरी कर देवें।

(५) किसी गृहस्थ या त्यागीमें किसी प्रकारकी क्रियाओंमें मत भेद है तो उसे शास्त्रीय मार्ग दिखलाया जावे तथा उससे धर्म शास्त्रानुसार चलनेकी प्रार्थना की जावे, ताकि समाजको किसी प्रकारसे लांछित न होना पड़े और परस्परमें कोई विरोध न होवे। प्रत्येक गृहस्थ व त्यागीका कर्तव्य है कि यदि किसी प्रकारकी त्रुटि है तो उसे वह धर्मके नाते जरूर ही सुधार रूपमें लावे।

(६) वर्तमान समय देख करके व्यर्थ बरबादी न की जावे। इस समय कोर मेला आदि भरानेकी जरूरत नहीं है। कारण सर्वत्र आर्थिक कठिनाइयां नजर आरही हैं। इसलिये पैसोंको ऐसे ठोस कार्योंमें लगाना चाहिये जो कि जैन समाजकी जड़को मजबूत करें।

समाजके नेताओंसे नम्र निवेदन है कि इस दशाको जरूर ही सुधारनेका उपाय करें।

દવે કેમીકલ વર્કસ અને દવે ફાર્મસીની અનુભવસિદ્ધ દવાઓ

ગમે તેટલા વૈભવો અથવા ધન દોલત હોવા છતાં પણ જો શરીરમાં શક્તિ (વીર્ય) નહિ હોય તો તે સર્વ સુખ નકામું છે. ખરી શક્તિ આપનાર

દવેઝ નરવાઈન ટૉનીક પીલ્સ (રજીસ્ટર્ડ)

આ દવાથી શરીરમાં શક્તિ આવે છે. વીર્ય વધે છે, ફાટ, ચુસ, કળતર, અશક્તિ, હાંફ ચઢવો, કમરનો દુઃખાવો મટાડે છે, મગજને ઠંડક આપે છે, ને શરીરમાં શક્તિ ઉત્પન્ન કરેછે, ધાતુગત દોષો મટાડી ખરું પુરૂષત્વ બક્ષે છે. પેશાબે કે સ્વપ્ને કે કોઇપણ રસ્તેથી ધાતુનું જવું બંધ કરી ધાતુને ઘટ્ટ કરી વધારે છે, લોહી સુધારે છે, ખાધું પચાવી ભૂખ ઉઘાડે છે, બંધકોશ પેટના વાયુને મટાડી ખુલાસે દસ્ત લાવે છે. અમારી આ દવા એક વાર વાપરી જોવી. ઘણા માણસોએ તેનો લાભ મેળવી નવી જુવાની, નવું બળ અને નવા ઉત્સાહને મેળવ્યો છે. વીર્યને વધારી ઘટ્ટ કરવામાં, આ દવા શક્તિનો રાજા છે. કિ. રૂ.૧) ત્રણની કીંમત રૂ. ૨–૧૦–૦

દવેનું એગ્યુ એન્ડ મેલેરીયા મિક્ષ્ચર

તાવને માટે અકસીર ઇલાજ છે; ગમે તેવો તાવ એકજ દીવસમાં અટકે છે. તેથી મેલેરીયા, ટાઢીઓ ચોથીઓ, રોજનો કે એકાંતરીઓ ઇન્ફ્લ્યુએન્ઝા તાવ મટે છે. શક્તિ આવે છે. બરોળ મટે છે. બાટલી ૧ ની કીંમત રૂ. ૦–૧૨–૦ ત્રણના રૂ. ૨–૦–૦

ઘા તેલ

વાગવાથી કે પડી જવાથી ગમે તેવો ઘા પડયો હોય, લોહી બંધ ન થતું હોય અને અત્યંત વેદના થતી હોય તો આ તેલનો પાટો બાંધવાથી લોહી બંધ થઇ જલ્દી ભાંય આવી જાય છે. કીં. ૮ આના

અફીણ નાશક ગુટિકા.

અફીણીઓને આ દવા એક માસ ખાવાથી અફીણ છોડાવે છે. ફરી દવા કે અફીણ ખાવાની જરૂર રહેતી નથી. અફીણમાં પૈસા બરબાદ કરી શરીરને નુકશાન કરવું નહીં. અફીણ છોડવા ઇચ્છતા મનુષ્યોએ જરૂર આ દવા વાપરી અફીણ છોડવા ભલામણ છે. ડબી ૧ ની કી. રૂ. ૨

ઝીંઝુવાડાથી રામઅવતાર વખતરામ લખે છે કે આ દવાથી દશ વરસનું અફીણનું બંધારણ માત્ર પચીસ દીવસમાં છુટી ગયું છે, મેસરાડથી મુસાભાઇ ઇસપજી લખેછે કે તમારી દવાથી અફીણ છુટી ગયુંછે,

ઝાડા–મરડાની ગોળી

ઝાડો અને મરડો આ ગોળીઓથી મટે છે. ગમે તો લોહી, કે પરૂ, ઝાડે પડતું હશે કે પાતળા ઝાડા થતા હશે તોપણ આ દવાથી મટશે કીં. રૂ૦॥

દાદરનો મલમ.

ગમે તેવી લાલ કે કાળી જુની દાદર મટે છે. દાદર મટયા પછી ફરી થતી નથી. કીં ૪ આના. ડઝનના રૂ. ૨—૮—૦

ઉદરસ નીવારણ પીલ્સ

આ દવાથી ઉદરસ એકજ દીવસમાં મટે છે તેથી ખાંસી, ઉદરસ, કફ પડતો હોય, તે મટે છે. ઘણી દવા કરવાથી ન મટતું હોયતો જરૂર અમારી દવા વાપરી ખાત્રી કરો. ડબી ૧ ની કીં. રૂ ૧)

આનંદવટી (રજીસ્ટર્ડ)

આ દવાથી કકડીને ભુખ લાગે છે. ખાધેલું હજમ થઇ જાય છે અને નિયમસર દસ્ત સાફ લાવે છે. બંધકોષ ને ઝાડાની કબજીઅત મટાડે છે. પેટના ગડગડાટને મટાડે છે. ખાવા ઉપર રુચી થાય છે. અજીર્ણ મટાડે છે ખરાબ ઓડકાર આવતા નથી, અને મોંને સ્વાદિષ્ટ બનાવે છે. કીં. રૂ ૧

ખાંસીની ગોળીઓ

આ દવાની બબે ગોળી મોમાં રાખી રસ ઉતારવાથી ખાંસી મટેછે. ૦-૮-૦ ડઝન રૂ ૫-૦-૦

સર્વ જ્વરહર પીલ્સ

તાવની ગોળીઓ.

ગમે તેવો ન ઉતરતો તાવ, રોજીયો, એકાંતરીયો, ચોથીયો, ટાઢીઓ, જીર્ણજ્વર, વિષમજ્વર મલેરીઆ, ટાઇફોઇડ, ઇન્ફ્લ્યુએન્ઝા વીગેરે ગમે તેવો તાવ માત્ર ૨૪ કલાકમાંજ મટાડે છે કીંમત રૂ. ૧—૦

સાચા મોતીનો સુરમો.

આખમાં આજવાથી તેજ વધે અને ઝાંખ મટે છે.

દવેનું આઇ ડ્રૉપ્સ

દુખવા આવેલી આંખોને આ દવા એકજ દિવસમાં મટાડે છે. બાટલી ૧ ની કીં. રૂ. ૦॥

દવે કેમીકલ એન્ડ ફાર્માસ્યુટીકલ વર્કસ—અમદાવાદ અને કાલબાદેવી મુંબાઇ.

ભાગ્યોદય ઇલેકટ્રીક પ્રીન્ટીંગ પ્રેસ, ખાડીઆ—અમદાવાદ

શ્રી ભાગ્યોદય ઈ. પ્રીન્ટીંગ પ્રેસ અમદાવાદ.

અમારી બુંદેલખંડના તીર્થોની યાત્રા.

ગયા માસમાં અતિશય ક્ષેત્ર શ્રી. દેવગઢ (લલિતપુર) માં મોટા મેળો તથા આપણી તીર્થ-ક્ષેત્ર કમેટી, મહિલા પરિષદ વગેરેની બેઠકો હોવાથી અમે પણ ત્યાં ગયા હતા અને એ સાથે બુંદેલખંડના તીર્થોની યાત્રા કરવાનો પણ પ્રસંગ ૧૫ દિવસ સુધી મળ્યો હતો જેનો વિસ્તૃત હેવાલ જૈન મિત્ર અંક ૧૮ માં પ્રકટ કર્યો છે તેનો સાર નીચે મુજબ છે–

દેવગઢ—લલિતપુર કે જાખલૌન સ્ટેશનથી જવાય છે. અહિં ૮ દિવસ મેળો હતો. આ તીર્થમાં પહાડ પર સેંકડો ને શું પણ હજારો પ્રાચીન દિ. જૈન પ્રતિમાઓ તથા અનેક ભવ્ય ભગ્ન મંદિરો છે. દક્ષિણના મડબીદ્રીની માફક આ યાત્રા અવશ્ય કરવા યોગ્ય છે.

પવાજી - (અતિશય ક્ષેત્ર) લલિતપુરથી ૨૨ માઇલ છે. ભોંયરામાં શ્યામ ૬ પ્રાચીન પ્રતિમાજી સં. ૧૨૯૯ ને ૧૩૪૫ ની છે.

પપોરાજી—અતિશય ક્ષેત્ર લલિતપુરથી ૩૦ માઇલ છે. અત્ર પ્રાચીન ૭૫ દિ. જૈન મંદિર છે. વ્યવસ્થા ઉત્તમ છે. અહીં વીર વિદ્યાલય પણ સારૂં ચાલે છે. અત્રેથી શેઠ હરસુખજી રોડમલ મેઘરાજ, વગેરે અમારી સાથે થયા હતા.

લલિતપુર----અહીં ૨ આલીશાન મંદિરો સુંદર ૩૨ વેદીનાં છે. દિ. જૈન ૩૫૦ ઘર ને વસ્તી ૧૨૦૦ ની છે. ક્ષેત્રપાલમાં મંદિર ને ધર્મશાળા ઉત્તમ છે. અભિનંદસ્વામીની મૂળ પ્રતિમા સં. ૧૨૪૩ની છે. તેમની પાસે જમીન પર ક્ષેત્રપાલની મૂર્તિ છે. અર્થાત આ મંદિર અસલ વીસપંથીજ હતું એમ સ્પષ્ટ જણાય છે. પં. પરમેષ્ઠીદાસજીના ભાઇ મૂલચંદજી મુનીમ અને શેઠ પન્નાલાલજી ટડૈયાજીએ સારો સત્કાર કર્યો.

થુભૌનજી—અતિશય ક્ષેત્ર લલિતપુરથી ૩૦ માઇલ છે. અહિં ૧૮ પ્રાચીન મંદિર છે. દરેકમાં કાયોત્સર્ગ મોટી મોટી પ્રતિમાઓ છે. અહીં મેળો ભરાઇ રહયો હતો. લલિતાબ્હેન પણ આવેલાં હતાં.

ચંદેરી—લલિતપુરથી ૨૬ માઇલ છે. ચૌવીસીનું પ્રાચીન મંદિર અતીવ ઉત્તમ છે. જેમાં ચૌવીસ તીર્થંકરની ૨૪ પ્રતિમાઓ ૪૮ ઇંચ ઉંચા ને ૩૪ ઇંચ પહોળી તીર્થંકરના શરીરના રંગોનાજ આરસની અતીવ ભવ્ય છે. સં. ૧૮૯૩ની છે. મંદિરનો ગુમટ ને ચિત્રકામ જોવા યોગ્ય છે.

લલિતપુર—ફરીથી આવ્યા. અત્રે શેઠ હરસુખજીના પ્રયાસથી બુંદેલખંડ દિ. જૈન સુકૃત ફંડની સ્થાપના થઇ.

સાગર—અહિં ૧૪ મંદિર છે. સતર્ક સુધાર દિ. જૈન પાઠશાળા ઉત્તમ રીતે ચાલે છે. મોરાજી ધર્મશાળા ૧ લાખ રૂ. ની લાગતથી બની છે જેમાંજ આ વિદ્યાલય છે. સરસ્વતી ભંડાર જોવા જેવો છે. ૨૦૦૦) ખર્ચી નવો માનસ્તંભ બન્યો છે. અહીં શહેરની ચારે બાજુ ભવ્ય તળાવો છે પં. દામોદરદાસજીએ ઉત્તમ રીતે સત્કાર કર્યો.

ખજરાહા—(અતિશય ક્ષેત્ર) સાગરથી ૧૩૦ માઇલ છે. અહિં ૩૧ પ્રાચીન દિ. જૈન મંદિર છે. મોટા મંદિરમાં શ્રી શાંતિનાથની ૧૪ હાથ ઉંચી ખડ્ગાસન ભવ્ય પ્રતિમા છે જે સં. ૧૧૪૮ની છે. મંદિરની ચારે બાજુએ સેંકડો પ્રતિમાઓ ખંડિત પડેલી છે. અત્રે મંદિરના શિખરો, બારસાખો, થાંભલાઓ વગેરેની કોરણીનું કામ એટલું બારીક ને એટલું ઉત્તમ છે કે એવું બારીક કામ એવા પાષાણમાં આખા હિંદમાં કશે પણ નથી. કહે છે કે કોરણી વખતે એ પત્થર મીણ જેવો નરમ બની ગયો હતો !! અહીં વાર્ષિક મેળો થવાની જરૂર છે. પુજારી ફુલચંદ કહેતા હતા કે અહિં એકવાર ૯૦૦

મંદિર હતા ને ૧૩૦૦ ઘર પરવારોના હતા. મંદિરોના ખંડિયેરો ને ખંડિત મૂર્તિઓ પાર વગરની છે. વૈષ્ણવ મંદિરો પણ છે. છતરપુર સ્ટેટ તરફથી એક જૈન અજૈન મૂર્તિઓનું મ્યુઝીયમ પણ છે. અત્રેના સ્મારકોને કોઇ બગાડે તો તેને ૫૦૦૦) સુધી દંડ છે ને ૩ માસની સજા થાય છે. અહિં આજે પણ સુતારના પાંચ આના, મજુર બે આના ને મજુરણ ૧ાા આનો રોજમાં મળે છે. ઔરંગઝેબ બાદશાહે અત્રેની સેંકડો પ્રતિમાઓ ઇરાદા પૂર્વકજ ખંડિત કરેલી કે એમ સ્પષ્ટ જણાય છે. શાંતિનાથના ગભારામાં આરસ જડવા ૩૦૦) ની જરૂર છે તેમાં ૫૧) શેઠ હરસુખજીએ ને ૨૫) અમે આપવા કબુલ્યું. તથા રસીદ બુક ને વહી અમારે ખરચે મોકલી આપવા કબુલ્યું.

દ્રોણગિરિ—સિદ્ધક્ષેત્ર, ખજરાહાથી ૩૫ માઇલ છે ને સાગરથી ૩૦ માઇલ છે. અહિં પહાડ પર ૨૩ મંદિર છે. ૧૫૦૦) સં. સુધીની પ્રતિમાઓ છે. ગુરૂદત્ત દિ. જૈન પાઠશાળા ને બોર્ડિંગ પણ છે, જેમાં પં. ધર્મદાસ ન્યાયતીર્થ ૨૦) માસિકમાં ભણાવે છે!

નૈનાગિરિ—(રેશંદીગિરિ સિદ્ધક્ષેત્ર) દ્રોણગીરીથી ૪૨ માઇલ છે, અત્રે પણ દૌલતરામ વર્ણી પાઠશાળા ને બોર્ડિંગ છે. નીચે ૧૨ને પહાડ પર ૩૨ મંદિર છે. જલ મંદિર પણ છે. અત્રે અસ્વચ્છતા જોવામાં આવી જે માટે મનીમને તાકીદ કરી.

કુંડલપુર—(અતિશય ક્ષેત્ર) સાગરથી ૬૮ માઇલ ને દમોહથી ૩૦ માઇલ છે. અત્રે કુંડળાકાર પહાડ કુંડલ આકારેજ છે. કુલ ૨૫ મંદિર ને ૬૭ ચૈત્યાલય છે. જલમંદિર છે. મૂલ મંદિરમાં ૯ હાથ ઉંચી શ્રી મહાવીર સ્વામીની પ્રાચીન ભવ્ય પ્રતિમા છે. જેનો જીર્ણોદ્ધાર સં. ૧૭૫૮માં પં. નેમસાગરજીએ કરાવ્યો હતો એમ લેખ છે. આજુ બાજુ બે પ્રાચીન ખડગાસન પાર્શ્વનાથજીની પ્રતિમાઓ છે. તથા આજુ બાજુ અનેક પ્રાચીન પ્રતિમાઓ સાંગોપાંગ છે. કહે છે. કે ઔરંગજેબ બાદશાહે અત્રેની પ્રાતમાઓ ખંડીત કરવાનો પ્રયત્ન કરેલો તેમાં એ નિષ્ફળ નીવડેલો ને મખમાખી ને દુધની ધારાઓ છુટી હતી. સ્થાયી ફંડ ૬૦૦૦) છે ને આ તીર્થ ૧૫૦૦૦) માં ખરીદી લેવાયું છે. ૧૩૦૦ એકર જમીન છે. બીજાં ગામો પણ આ તીર્થનાં છે. ૧૧૦૦૦) રોકડ છે. ૧૨૦૦) વાર્ષિક ખર્ચ છે. દર વર્ષે નિયમથી ૨૦૦૦) જીર્ણોદ્ધારાર્થે ખરચાય છે. એટલે આ તીર્થ [illegible] નથી. અત્રે ઉદાસીનશ્રમ બંધ થયું હતું તે પાછું ચાલુ કરવામાં આવ્યું છે. અધીષ્ઠાતા બ્ર. નન્હેલાલજી છે. ૬ ત્યાગી છે. અત્રે રાત્રે ૧૦-૧૧ વાગતાને અમલે આવતા મોટરકારની પછવાડેથી અમારો બિસ્તરો પડી ગયો હતો જેથી ૩૦)-૩૫) નું નુકશાન થયું હતું.

દમોહ—કુંડલપુરથી દમોહ આવ્યા. અહિં ૫ મંદિર ને ૧૫૦ ઘર પરવારોના છે. ધર્મશાળા સારી છે. પાઠશાળા બે છે. પં. પરમાનંદજી શાસ્ત્રી ભણાવે છે.

કટારસી—પં. સુંદરલાલજી વૈદ્યને મળ્યા. અહિં બે ચૈત્યાલય છે

સોહાગપુર—પં. શુકદેવપ્રસાદજી તિવારી (નિર્મલ) ને મળ્યા આપ બ્રાહ્મણ હોવા છતાં જૈન ધર્મપર સારો પ્રેમ રાખે છે ને અમારા મિત્ર છે.

અમે ચિ. બાબુભાઇ સાથે તા. ૧૪ ફેબ્રુઆરીએ સાંજે સકુશળ સુરત આવી પહોંચ્યા હતાં.

આ સિવાય આ પ્રાન્તમાં અહારજી, બંધાજી, બુદ્ધિયંદેરી, પચરારી, ગોળાકોટ, સેરોનજી, મિયાંદાન વગેરે દિ. જૈન તીર્થો છે, પણ સમયાભાવથી અમે ત્યાં જઇ શકયા નહોતા. આથી અમે શિખરજીની યાત્રાએ જનારા ભાઇઓને આવતાં કે જતાં બુંદેલખંડનાં આ બધાં તીર્થોની યાત્રા કરવા ખાસ આગ્રહ કરીએ છિયે.

—સંપાદક.

जैन विजय" प्रिन्टिंग प्रेस, खपाटिया चकला-सूरतमें मूलचन्द किसनदास कापडियाने मुद्रित किया और "दिगम्बर जैन" ऑफिस, चन्दावाडी-सूरतसे उन्होंने ही प्रकट किया।

ગુજરાત દિગંબર જૈન પ્રાન્તિક સભાનું માસિકપત્ર—

- संपादक अने प्रकाशक —
मूलचन्द किसनदास कापडिया—सूरत.

वर्ष २७	वीर संवत २४६० फाल्गुन.	अंक ६

विषय सूची.

उपहारांक पोस्टेज सहित वार्षिक मूल्य २।) व समाजअंक मू० ।||)

मेला—काजमाबाद (अलीगढ़) में पं० मक्खनलालजी प्रचारक (देहली) की ओरसे वेदीप्रतिष्ठा व रथयात्राका मेला ता० ८ से ११ अप्रैल तक होगा।

मुनिवर्षी मुनींद्रसागर—ने अभी सागरमें डेरा डाला है। अभीतक सभी प्रवृत्तियें शास्त्रविरुद्ध हैं। अतः इस मंडलीसे सावधान रहें।

परिषद् परीक्षालय—का परीक्षाफल शीघ्र ही 'वीर' में प्रकट होगा। जिन्हें खास चाहियें वे ।) भेजकर वीर कार्यालय—मल्हीपुर (सहारनपुर) से मगा लेवें।

अन्तर्जातीय विवाह सहायक समिति—नामक संस्था कलकत्तेमें स्थापित होगई है। अतः जो युवक या कन्या अपना अन्तर्जातीयविवाह करना चाहें वे तथा जो पिता अपने पुत्र पुत्रियोंका अन्तर्जातीय विवाह करना चाहें वे वर कन्याके विवरण सहित इस पतेसे पत्रव्यवहार करें—जुगमंदिरदास जैन, अंतर्जातीयविवाह सहायक समिति २०१ हरीसनरोड—कलकत्ता।

ब्र० चांदमलजी (उदैपुर)—सख्त बीमार हैं।

श्री केशरियाजी (ऋषभदेव)—के सम्बन्धमें 'श्वेतांबर जैन' ने ।। कस्तूरभाई लालभाई (सभापति आनंदजी कल्याणजी पेढ़ी) अब अपने निजी अनुभवसे प्रकट करते हैं कि केशरियाजीको भोग नहीं लगता है, बेलपत्र नहीं चढ़ते हैं, मस्तकपर जलघट भी नहीं रखा जाता है तथा भंडारका द्रव्य उदेपुर राज्यमें उठा लेजानेकी बात भी गलत है। हम तो पहले ही प्रकट कर चुके हैं कि श्वे० जनपत्र समाजको भड़कानेके लिये ऐसे जूठे समाचार प्रकट कर रहे हैं, वही बात अब श्वे० जैन अगुए भी स्वीकार करते हैं।

श्वे० मुनि शांतिविजयजी—ने उदैपुरमें ऋषभदेव तीर्थ सम्बन्धी न्यायके लिये दूसरीवार उपवास किये थे। उदैपुरके महाराणाके फिर आश्वासन देनेपर छोड़ दिये व महाराजाने स्वहस्तसे आपको आहार दिया था। महाराणाने कहा है कि दिगंबर श्वेतांबर दोनों जैनोंको संतोष हो ऐसा ही फैसला दिया जायगा।

अतर्जातीय विवाह—राजेन्द्रकुमार लुहाड्या खंडेलवाल वर व बाबू कमलप्रसादजी जैसवालकी कन्याका अंतर्जातीय विवाह गत मासमें बड़ी शानके साथ जैन विधिसे कलकत्तामें हुआ था।

प्रतापगढ़में १ लाख रु०का दान—संघपति श्री० सेठ घासीलालजीने गतमासमें पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव कराया था तब वहां दो मुनिसंघ उपस्थित थे व संघपतिजीने तपकल्याणकके दिन १०००००) के दानका संकल्प करके उसमें परतापगढ़में श्राविकाश्रम खोलने व जीर्णोद्धार करनेका संकल्प किया है। प्रतापगढ़ नरेश उत्सवमें खुद पधारे व आपने प्रत्येक फाल्गुन सुदी ८-१४को अपने राज्यमें जीवहिंसा बतई न करनेका हमेशाके लिये फर्मान निकाल दिया है व संघपतिको 'सेठ' की पदवी दी है। जैनसमाजने सेठजीको 'समाजरत्न' पदसे सुशोभित किया।

माणिकचंद्र परीक्षालय-की परीक्षायें इस साल ता० २३ अप्रैल प्र० वैशाख सुदी ९ से ता० २९ अप्रैल प्र० वै० सुदी १३ तक होगी।

दिगम्बर जैन

वर्ष २७ वां अंक १

वीर सं० २४६० चैत्र। सं० १९९०.
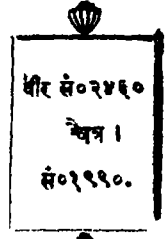
प्रासगिकैः सामयिकैः सुवृत्तैर्लेखैर्विनोदैः कविता-कलाभिः ।
सद्धर्मसाहित्यसमाजवृद्धयै "दिगम्बरो जैन" उदेत्यपूर्वः ॥

संपादकीय-वक्तव्य।

अक्षय-तृतीया।

वैशाख सुदी ३ का पवित्र दिवस अक्षय-तृतीयाके नामसे विख्यात है। आज लाखों वर्ष व्यतीत होगये तबसे यह पुण्य पर्व प्रतिवर्ष आदरपूर्वक याद किया जाता है। यही वह दिन है कि जब वर्षोपवासी श्री आदिनाथको राजा श्रेयांसने आहारदान दिया था। और अपार पुण्यका संचय किया था। आज तो हमारे पास उसका मात्र अंध अनुकरण ही रहा है। इतना ही नहीं किंतु हम उसे भूलने जारहे हैं। दानकी पद्धति कैसी होना चाहिये, दान किसे देना चाहिये, दानमें क्या देना चाहिये, वर्तमानमें किस सम्बन्धी दानकी विशेष आवश्यक्ता है इत्यादि बातोंका न तो समाजको विचार है, और न तदनुरूप कोई व्यवस्था ही होती है। इससे जो कुछ भी दान किया जाता है उसका यथोचित परिणाम दृष्टिगोचर नहीं होता।

अक्षयतृतीयाका पावन पर्व हमें दानकी याद दिलाता है। उस समय भगवानके लिये आहार देनेकी परम आवश्यक्ता थी। अतः राजा श्रेयांसने इक्षुरसका आहार दिया था किंतु हमें चारों प्रकारके दान देनेकी आवश्यक्ता है, उसमें भी सर्वोपरि आवश्यक्ता है ज्ञान दानकी। उस ओर जैन समाजका विशेष ध्यान होना चाहिये। द्रव्य, क्षेत्र, काल, भावका विचार किये विना मात्र अंध अनुकरण करना कभी भी श्रेयस्कर नहीं होसकता।

इसमें कोई सन्देह नहीं कि प्रतिवर्ष हमारी समाजमें लाखोंका दान होता है, मगर दानकी दिशा ठीक नहीं होनेसे उसका कोई शुभ परिणाम नहीं दिखाई देता। जिसने अपने घरसे बाहर निकलकर कुछ अवलोकन किया है, जो बाह्य परिस्थितिको जानता है और जो समयकी मांगको पहचानता है वह स्पष्ट कह देगा कि आज तमाम दानोंकी अपेक्षा सिद्धान्त प्रचारके लिये द्रव्यकी विशेष आवश्यक्ता है। जगतमें ज्ञानकी पिपासा बढ़ रही है। विवेकी लोग सत्यकी खोजमें हैं। उन्हें जहां भी सच्चा सिद्धान्त दृष्टिगत होता है वहींपर वे अटक जाते हैं और उस सत्य सिद्धान्तके प्रचारके लिये दिलोजानसे प्रयत्न करते हैं। यदि जैन समाज इस समय अपना द्रव्य जैन साहित्य प्रचारके लिये प्रदान करे तो जैन ग्रंथोंका विविध भाषाओंमें प्रचार होवे और उसे ज्ञात हो जाय कि सच्चे जवाहिरात कहां हैं?

। सद्भाग्यसे वह जमाना तो गया जब अंध-भक्त लोग जैन ग्रन्थ छपानेका भी विरोध करने लगे थे। अब तो जमाना बहुत आगे पहुंचा है। हमें अपने धर्मग्रन्थोंको छपाकर देशविदेशमें, हिन्दू-अहिन्दूमें, म्लेच्छ और शूद्रोंमें भी प्रचारित करना है। ताकि उन सबकी आंखें खुल जावें, और वे जैन धर्मके श्रद्धानी बनें। स्मरण रहे कि जैन धर्म या जैन सिद्धान्त किसीके हाथमें पहुंचने पर अपवित्र नहीं होजाता है, किन्तु उन अपवित्र आत्माओंको पवित्र कर देता है। इसलिये बन्धुओ! समयको देखकर अपनी दिशाको बदलो, और जैनसाहित्य—जैनसिद्धांतके प्रचारार्थ कटिबद्ध होजाओ। इसीमें कल्याण है।

ज्ञानप्रचारके साथ ही साथ अन्य तीन दानोंकी भी यथासाध्य आवश्यक्ता है। उनकी भी पूर्ति करना प्रत्येक धार्मिक व्यक्तिका कर्तव्य है। अभी विहार प्रान्त घोर संकटमें फंसा है। उसके लिये अन्नदानकी आवश्यक्ता है, औषधिदानकी जरूरत है और अभयदानकी आवश्यक्ता है। इस ओर प्रत्येक दानीका लक्ष्य होना चाहिये। आशा है कि अक्षयतृतीयाके शुभ अवसरपर समाजके दानी सज्जन यथाशक्ति द्रव्य निकालकर विहारपीड़ितोंकी मदद करेंगे, शास्त्रप्रचारके लिये दान देंगे, अपनी ओरसे ग्रंथ छपाकर वितरण करेंगे, और सिद्धान्तप्रचारमें मदद देंगे।

वास्तवमें दानके मार्ग अनेक हैं। उनको पहिचानकर विवेकसे विचार कर और आवश्यक्ताको समझकर उसी क्षेत्रमें अपने द्रव्यका सदुपयोग करना बुद्धिमानीका काम है। अक्षयतृतीया प्रतिवर्ष हमें दानका स्मरण कराती है। इस समय अवश्य ही कुछ न कुछ द्रव्य निकालकर अपनी कमाई हुई लक्ष्मीको सफल बनाइये।

× × ×

अन्तर्जातीय विवाह। यदि उलूक सूर्यको बुरा समझे, चोर पुलिसको कोसे और वेश्या धर्मोपदेशकोंकी निन्दा करे तो यह क्षम्य हो सकता है। मगर विद्वान, शास्त्रज्ञ और पण्डितमन्य पुरुष विजातीय या अन्तर्जातीय विवाहका निषेध करें यह कितनी अक्षम्य धृष्टता है। विद्वानों द्वारा, शास्त्रों द्वारा और समाजकी मांग द्वारा डंकेकी चोट यह सिद्ध होचुका है कि अंतर्जातीय विवाह योग्य है, शास्त्रसम्मत है और आवश्यक है, फिर भी हट, पक्षपात, दुराग्रह या विद्वेषवश उसे कोई निराधार ही खराब बताता रहे यह पहले दर्जेका दयनीय अज्ञान नहीं तो और क्या है?

विरोधियोंके पास न तो कोई प्रमाण हैं और न कोई युक्तियाँ, न शास्त्राधार है, न लोकाधार, फिर भी जगह व जगह तालियाँ ठोकते फिरना कहांकी बुद्धिमानी है! यह बात सत्य है कि विरोधी जीव भी अन्तरंगसे तो अन्तर्जातीयविवाहको पाप नहीं मानते हैं, मगर बाह्यमें दुराग्रहवश ही विरोध करते हैं। अथवा उनकी आंखोंके सामने यह भूत नाचने लगता है कि 'हम तो पण्डितपार्टीके हैं' अतः हमारा कर्तव्य तो अंतर्जातीयविवाहका विरोध ही है!' बस वे निराधार

ही गाल बजाया करते हैं या कमीर अपनी थोथी कलमसे भी कागज़ फाड़ा करते हैं। यह दयनीय हालत देखकर उन विरोधियोंपर भी दया आजाना स्वाभाविक है।

कुछ ही दिनकी बात है कि जैन गजटके अंक २३ में उसके सह सम्पादक पं० किशोरीलालजी शास्त्रीने 'विजातीयविवाहका ढिंढोरा' नामक एक लेख लिखा है। उसमें बिना आधार और बिना युक्तियोंके विजातीयविवाहका विरोध किया गया है। शास्त्रीजीने संभवतः यह लेख इसीलिये लिखा है कि वे जैन गजटके सह संपादक हैं! अन्यथा क्या आवश्यक्ता थी ऐसे थोथे लेख लिखनेकी? आप लिखते हैं कि—

"भविष्यमें भी हमारी समाज इस धर्म विध्वंसक (!) कुप्रथाको अनादरकी दृष्टिसे देखती रहेगी!" मगर लेखकको यह खबर नहीं है कि समाज जब आज विजातीय विवाहको धर्मसंगत स्वीकार कर रही है और उसका प्रतिदिन प्रचार बढ़ता जाता है तब आपका भविष्यज्ञान न जाने कहां चक्कर लगायगा! आपके विद्यागुरु न्यायालंकार पं० बंशीधरजी सिद्धान्तशास्त्री इन्दौर और व्याख्यान वाचस्पति पं० देवकीनन्दनजी शास्त्री आदि जिस विजातीय विवाहको डंकेकी चोट शास्त्रीय, धर्म संगत और समाजोपयोगी सिद्ध कर रहे हैं, तथा आपकी महासभाके प्लेटफार्मपर खुले आम सिंहगर्जना करके शास्त्रार्थके लिये चैलेंज भी देचुके हैं, उसे आप किस बुतेपर बुरा बता रहे हैं!

आप लिखते हैं कि 'ब्यावरकी महासभामें सभी विद्वानोंने विजातीय विवाहको अनुपयोगी और अधार्मिक स्वीकार किया था।' मगर आप यह क्यों भूल जाते हैं कि पं० देवकीनन्दनजी शास्त्री, पं० अजितकुमारजी शास्त्री, पं० शोभाचन्द्रजी भारिल्ल आदि प्रौढ़ विद्वानोंने बड़ी ही समर्थताके साथ विजातीयविवाहका समर्थन किया था। और ताल ठोककर महासभाकी स्टेजपर खड़े होकर सिंहगर्जना की थी, जब आपके मान्य सभी (!) पण्डितोंका हृदय कांपने लगा था और कुलियामें गुड़ फोड़नेको तैयार हुये थे! अस्तु।

इसे जाने दो, हमारे कहनेका तो तात्पर्य यही है कि समाजके स्वीकार करनेपर भी और विद्वानोंके द्वारा घोषित किये जानेपर भी कुछ दुराग्रही लोग अपने पक्षको कायम रखनेके लिये अच्छे बुरे प्रयत्न किया ही करते हैं! अभी कुछ ही समयकी बात है कि कलकत्तामें एक खण्डेलवाल नवयुवकने जैसवाल जैन कन्याके साथ धर्मानुकूल विवाह किया है। उसमें अनेक विवेकी जातीय सज्जन सम्मिलित थे। मगर खेद है कि एकपक्षी खण्डेलवाल पंचायतने उस वीर युवकके बहिष्कारका फतवा निकाल दिया है! उधर दूसरी खंडेलवाल पंचायतने उस वीर युवकको धन्यवाद देकर प्रोत्साहन दिया है। विरोधी पंचायतके अनुन्यायी फैसलेसे नाराज होकर उसके ५ मेम्बरोंने अपनी ही पंचायतके विरोधमें पर्चे निकाले हैं। तात्पर्य यह है कि कुछ विरोधी लोग अन्तर्जातीय विवाहके शास्त्रीय मार्गको दबाना चाहते हैं तब उत्साही वर्ग उसे अमलमें लारहा है। बा० राजेन्द्रकुमारजीके सत्साहसके लिये बधाई है।

× × ×

ગુજરાતમાં શિથિલતા.

ગુજરાતના દિગંબર જૈનોની ઉન્નતિ કરવા અર્થે સુરતમાં ગુજરાત દિ. જૈન પરિષદ મળી ગઇ ને તેમાં ગુજરાત દિ. જૈન પ્રાંતિક સભા સ્થાપન થઈ તથા તેણે અનેક ઠરાવો પાસ કર્યા છે ને ઉન્નતિના અનેક ઉપાયો દર્શાવ્યા છે, છતાં ગુજરાતના દિગંબર જૈનો પાછા ત્યાંના ત્યાંજ જણાય છે. કેમકે ગુજરાતમાં હજુ ઇડરના વીસા હુમડના ઝઘડા, સુરતના દશા હુમડ ને નરસિંહપુરાના ઝઘડા, તેમજ ઝહેર નરસીપુરનો નૃસિંહપુરાનો મોટો ઝઘડા એ વિગેરે ઝઘડાઓ હજી પત્યા નથી પણ મમત વધતાજ જાય છે એ અજબ જેવું છે. નરસિંહપુરામાં તો ઝઘડાની અવધિજ છે, જે કેરવાડાના એક લગ્નના સમાચાર આ અંકમાં ભાઇ નાગરદાસે પ્રકટ કર્યા છે, તેથી સ્પષ્ટ જણાય છે કે હજુ કેટલો બધો મમત છે? ને રાત્રે ૧૨ ને બે વાગતે રસોઇ થવાના ને જમવાના સમાચાર જાણી કોને દુઃખ ને અજાયબી નહિ થાય! એક ગામની તકરાર ગામેગામ શા માટે સળગાવી મુકી છે? અજબ જેવું છે કે નરસીંપુરવાલા મમત મુકતા નથી ને ઝહેરવાળા ઉદારતા દર્શાવતા નથી. જો બંને ગામવાળાને એસતીજ નથી આવતી તો બંને સલાહ સંપથી જુદા થઇ જુદું જુદું પંચ સ્થાપન કરી દહેરાનો પણ ઝઘડો શા માટે નથી પતાવી દેતા? એ ભાઇઓએ સમજવું જોઇએ કે આપણે ખાતર ગામે ગામ તડ ને ઝઘડા પડી રહયા છે માટે આપણે હવે તો કોઇપણ રીતે નીકાલ લાવી નાંખવો જોઇએ.

અંતરજાતીય વિવાહ ચાલુ કરવાની ભલામણનો ઠરાવ સુરતમાં એકજ વિરૂદ્ધ મતે પાસ થવા છતા હજુ કોઇપણ પંચે એ માટે મળી પોતાનો અભિપ્રાય દર્શાવ્યો નથી એ અજબ જેવું છે. મોઢે મોંઢે તો બધા હા ભણે છે, પણ પંચ મળી ઠરાવ થતો નથી ને એ કામ આગળ ચાલતું નથી તો પછી આપણે ઠરાવોનો અમલ ક્યારે કરીશું? આથી વીસા મેવાડા, દશાહુમડ. વીસા હુમડ, નરસિંહપુરા, રાયકવાળ વગેરે દરેક પંચે પોતપોતાના પંચો તાકીદે મેળવી અંતરજાતીય વિવાહના ઠરાવ પર પોતાનો મત દર્શાવવો જોઇએ ને જેમાં જેમાં ઝઘડા હોય તે પતાવી નાંખવા જોઇએ ને પંચોનું બંધારણ સુવ્યવસ્થિત કરવું જોઇએ નહિ તો પછી વખત એવો આવશે કે પંચોનાં બંધારણ શિથિલ થઇ જઇ કોઇ કોઇને પુછી શકવાનું નથી ને પંચની સત્તા ઉપર મોટો ફટકો પડશે.

ધાર્મિક કેળવણી ને સંસ્કૃતની કેળવણી માટે ગુજરાતની સ્થિતિ અત્યંત કફોડીજ છે. પાઠશાળાઓ હવે માત્ર નામનીજ ૫-૧૦ જગ્યાએ છે. સંસ્કૃત વિદ્યાલય તો ગુજરાતમાં એક પણ નથી જેથી ગુજરાતના દિ. જૈનોની ધાર્મિક પ્રગતિ જાણે અટકીજ ગઇ છે માટે પંચોનું સંગઠન કરી ન્યાતિ સુધારા કરીને ગામે ગામ પાઠશાળા સ્થાપન કરવાની તથા ગુજરાતમાં એક મધ્યસ્થ સ્થળે સંસ્કૃત વિદ્યાલય કે બ્રહ્મચર્યાશ્રમ ખોલવાની જરૂર કંઇ ઓછી નથી. પ્રાંતિક સભાના મહામંત્રીએ ટુંક સમયમાં ન્યાતિઓના રીત રીવાજ સરળ કરવા આગેવાનોની મીટીંગ અંકલેશ્વરમાં બોલાવી છે તેમાં આગેવાનોએ ભાગ લઇ રીત રીવાજનો સામાન્ય ખરડો તૈયાર કરવામા સાથ આપવો જોઇએ ને જેમ બને તેમ જલદીથી દરેક પંચે મળીને પરિષદના ઠરાવોનો અમલ કરવો જોઇએ.

આ દરમ્યાન જે જે ભાઇઓની ઇચ્છા અંતરજાતીય વિવાહ સંબંધ જોડવાની હોય તેમણે તે કામમાં પહેલ કરવા જોઇએ કે જેથી બીજાઓ તેમનું અનુકરણ કરી શકે. આગળ પગલું ભર્યા સિવાય પંચોની આંખ ઉઘડવાની નથી એ નિઃસંશય છે. હવે તો યુવાનોએ આગળ આવવું જોઇએ તોજ કંઇ પ્રગતિ થઇ શકશે.

આ બાબતમાં મહામંત્રી શ્રી. છોટાલાલભાઇનું નિવેદન પણ આજ અંકમાં પ્રકટ થયેલું છે, જે પર ખાસ લક્ષ આપવા દરેક પંચને અમો આગ્રહ પૂર્વક ભલામણ કરીએ છીએ.

प्राप्ति-स्वीकार ।

हम दुखी क्यों हैं ?—लेखक पं० जुगलकिशोरजी मुख्तार। प्रकाशक जैन मित्रमंडल देहली। पृ० ३२ मू० -) विषय नाममें ही प्रगट है। इसमें दुखी होनेके कारण धार्मिक पतन, आवश्यक्ताओंकी वृद्धि, आदर्शोंसे पतन आदि बताये हैं। प्रत्येक व्यक्तिको पढ़ना चाहिये।

मैं क्या चाहता हूं ?—ले० श्री० वासुदेवप्रसाद जैन, प्रकाशक पं० मंगलसेन जैन-मुजफ्फरनगर। पाकिट साइजके ३२ पृ०, मू० -)। इसमें गृहस्थोंकी उत्तम भावनायें, उपयोगी नियम, सम्यक्त्वकी भावनायें और शुद्ध विचारोंके उपाय बताये गये हैं। पुस्तक शान्तिकी देनेवाली है।

मिथ्यात निषेध या सच्ची श्रद्धा—लेखक ब्र० शीतलप्रसादजी. प्रकाशक जैन मित्रमंडल देहली, पृ० २४ मू० -) इस पुस्तकमें अनेक श्लोक देकर यह बताया गया है कि मिथ्यात्वके समान पाप नहीं और सम्यक्तके समान धर्म नहीं। तथा मिथ्यात्वसे छूटने और सम्यक्तके प्राप्त करनेका उपाय बताया गया है।

जैन वीरोंसे—लेखक श्री० राजेन्द्रकुमार जैन कुमरेश, प्रकाशक किशोरीलाल जैन मोर्ना-बिलसी (वदायूं) मूल्य 'वीर बनो'। इस ३२ पृष्ठकी पुस्तकमें नवयुवकोंको प्रोत्साहित करनेवाली १६ कवितायें हैं। युवकोंको अवश्य पढ़ना चाहिये।

सूर्यप्रकाश परीक्षा—लेखक पं० जुगलकिशोरजी मुख्तार, प्रकाशक ला० जौहरीमलजी जैन सर्राफ बड़ा दरीबा देहली। पृ० १६०, =) पोष्टेज भेजनेपर प्रकाशकसे मुफ्तमें मिलती है। इस पुस्तकमें जैन साहित्यके कलंक स्वरूप और जैन धर्मको बदनाम करनेवाले सूर्यप्रकाश नामक मिथ्या ग्रंथकी खूब ही धज्जी उड़ाई गई है। उसका जालीपना प्रगट करके बहुत ही मार्केकी परीक्षा की गई है। तथा क्षु० ज्ञानसागरजी (वर्तमानमें मुनि) के द्वारा किये गये निरंकुश अनुवादकी खासी पोल खोली गई है। मुख्तार सा० ग्रन्थ परीक्षामें सिद्धहस्त विद्वान हैं। इसीसे इस परीक्षा ग्रन्थका भी अंदाज लगाया जासक्ता है। इसे पढ़कर जाना जासक्ता है कि स्वार्थियोंने जैनागमको धर्म ग्रन्थोंके नामपर कितना मलिन बना डाला है।

निर्ग्रन्थ प्रवचन—अनुवादक और संग्राहक स्था० मुनि चौथमलजी महाराज। प्रकाशक जैनोदय पुस्तक प्रकाशक समिति--रतलाम। बढ़िया जिल्द, पृ० २५० मू० मात्र ॥) इसमें गीताके ढंगपर 'भगवानुवाच' आदि लिखकर भगवानके मुखसे गौतमको संबोधित करके धर्मोपदेश दिया गया है। ऐसा न करके आचार्योंका नाम देकर ही श्लोक या गाथाएं लिखी जातीं तो ठीक रहता। कहीं२ पर सांप्रदायिकता भी आगई है। फिर भी पुस्तक संग्राह्य, लाभप्रद एवं सुपाठ्य है। साधु और गृहस्थ दोनोंके लिये भी उपयोगी है।

रिपोर्ट जैनमित्र मण्डल देहली—वर्ष १६, १७, १८ सन् ३१ से ३३ तक। इसमें मंडल द्वारा प्रकाशित इसकी सूची, प्रचार कार्य, और आय व्ययका हिसाब दिया गया है। मंडल द्वारा जो सेवा होरही है वह वास्तवमें प्रशंसनीय है।

रिपोर्ट जैन महिलाश्रम देहली—सन् ३१

से ३३ तककी। रिपोर्टसे विदित है कि आश्रम १५ सालसे अच्छी सेवा कर रहा है। इसकी शाखारूप कन्या विद्यालयकी भी स्थापना की गई है। शिक्षा, परीक्षा, व्यायाम, व्यवहार, शिल्प, आदिका अच्छा ज्ञान आश्रममें कराया जाता है। इसमें सधवा विधवा तथा कुमारिकाएं भूषण और विदुषी तककी शिक्षा पाती हैं। परीक्षाएं पंजाब यूनि० और प्रयाग विद्यापीठसे होती हैं। अन्तमें आय व्ययका विवरण दिया गया है।

रिपोर्ट—फतेचंद जैन विद्यालय चिंचवड़ (पूना) पंचम षष्ठ वार्षिक विवरण। यहांपर धर्म, व्यवहार, व्यायाम, लौकिक और राष्ट्रीय शिक्षा दीजाती है। शिक्षण अंगरेजी और मराठीमें होता है। यह श्वे० समाजकी अच्छी संस्था मालूम होती है।

वार्षिक रिपोर्ट—सम्मेदशिखरजी दि० जैन बीसपंथी उपरैली बड़ी कोठी, मधुवन, वीर सं० २४५३ से ५८ तककी। पृ० १८३ इस कोठीका कार्य ट्रष्टियोंके आधीन होनेसे बाकायदा चलता है। यह कोठी धनिक है, करीब डेढलाख रुपयेका स्थायीफंड है। सहायता भी अच्छी मिलती रहती है। मैनेजर बीसपंथी कोठी मधुवन पो० पारसनाथ (हजारीबाग) को लिखनेसे यह बड़ी रिपोर्ट विना मूल्य मिल सकेगी।

पुरुषार्थ सिद्ध्युपाय टीका।

पं० उग्रसेन वकील एडवोकेट कृत। मूल श्लोक २२६ व उसपर सरल व विस्तृत टीका है। सहायता मिलनेसे मूल्य लागतसे भी अतीव कम सिर्फ बारह आने हैं। तुर्त मंगाइये।

मैनेजर—दिगम्बरजैनपुस्तकालय—सूरत।

भ्रमण पं. पीतांबरदासजी उपदेशक.

(गतांकथी चालु)

प्रांतिज—बोर्डिंगनी व्यवस्था सारी छे पण पाणीना नीकालनी ठीक व्यवस्था नथी.

वदराड—बे सभा करी. नियमो लेवाया. भणवा योग्य ३३ छोकरां छे.

अमदावाद—रुपाबाई स्मारक मंडळनो उत्सव हतो तेमां सामेल थयो. अनेक मेलावडा ने कसरतो थई. विद्यार्थीनो नाटक पण थयो. स्नेह संमेलन पण हतुं.

वडाली—अमीझरा पार्श्वनाथ मंदिर जोयुं. गभारामां एक दि. जैन मूर्ति १५ वर्षथी नथी तेने बदले श्वे. मुकाइ छे. व्यवस्था श्वे. जैन भाई करे छे. दि. जैन घर नथी रायदेश दशाहुमडनुं पंच मल्युं हतुं तेमां सुरत परिषदनो प्रचार कर्यो.

देरोल—त्रण सभा थई. प्रतिज्ञाओ लेवाई. हुमडमां पण केटलाक श्वे. धर्म पाळे छे.

कुंढियादरा—शास्त्र सभा चालु करावी. नियमो लेवाया.

चोरीवाड—३ सभा करी, नियमो लेवाया महिनामा ६ दिवस पूजन चालु कराव्युं.

धोडादर—त्रण सभा करी २२५नी संख्या होवा छतां धार्मिक कामोमां शिथिलता छे. पाठशाळा कन्याशाळा जोईने मेवो वेंच्यो.

नवागाम—बे शास्त्र सभा करी. घेरघेर जई नियमो लेवाडया. पाठशाळा, कन्याशाळा ठीक चाले छे.

छाणी—बे शास्त्र सभा करी. नियमो लेवा-डया. शेठ लल्लुभाई चोकशी पाठशाळा जोई. आ पाठशाळाने शेठे स्थायी करवी जोईए.

रुषभदेव (केशरीयाजी)—अत्रे दि. श्वे. दरेक पोत पोताना भाव प्रमाणे पुजा करी शके छे. पंडाओनुं जोर आधक छे. सभा करी.

નિયમો લેવાયા. વિદ્યાલયનું નિરીક્ષણ કર્યું. મેવો વેંચ્યો. દેખરેખ ઠીક રહેવી જોઇએ.

ગોરળ—બે સભા થઇ. નિયમો લેવાયા. અહીં સાંકુબાઇએ ૧૫ ઉપવાસ કર્યા હતા તેનો ઉત્સવ હતો.

ખડગ—પ્રાન્તમાં ૧૫ ગામમાં ૧૦૦-૧૦૦ દિ૦ જૈનોની વસ્તી છે છતાં નામ માત્રના જૈની માલમ પડે છે. રોજ સ્નાન કરવું, દર્શન ન કરવા, રાત્રે ભોજન કરવું, રસોડામાં ઘણુંજ અંધારું આ બધી વાત તો ખાસ છે. આ તરફ ઘણા ઉપદેશની જરૂર છે.

મુલેટી—ત્રણ સભા કરી, ૮ ભાઈ બ્હેનોએ નિયમ લીધા. ધર્મશાળાના જીર્ણોદ્ધારની જરૂર છે.

ભીલોડા—ચંદ્રપ્રભુનું બાવન જિનાલયનું ભવ્ય વિશાળ પ્રાચીન મંદિર છે પણ વસ્તી ૨૮ જૈનોનીજ છે. દર વર્ષે મેળો ભરાવવાની જરૂર છે. બે સભા કરી ઉપદેશ આપ્યો.

ટાકાટુકા—૧૨ ભાઇઓએ નિયમ કર્યા. પાઠશાળા છે પણ લાભ ઘણાજ ઓછા લે છે. પરીક્ષા લઇ મેવો વેંચ્યો.

મઉ—ઉપદેશ કર્યો. ૧૩ ભાઇ બ્હેનોએ નિયમ લીધા ભણવા યોગ્ય ૩૫ છોકરાં છે જેથી પાઠશાળાની જરૂર છે.

સુનાઇ—૧૬ ભાઇ બ્હેનોએ નિયમો લીધા કુબેરદાસે રોજ સાંજે શાસ્ત્ર વાંચવા કબુલ્યું.

પોસીના—૧૧ જણે નિયમ લીધા. ભણવા યોગ્ય ૧૮ છોકરાં છે. અત્રે પાર્શ્વનાથનું વિશાળ મંદિર છે જેને દિ શ્વે. બંને પૂજતા હતા પણ હવે શ્વે. જૈનોએ તે પર ચક્ષુ લગાડી દીધા છે તેથી દિગંબરી પૂજતા નથી.

ચિત્રોડા—૬ ભાઇઓ નિયમ લીધા. ૨૦ છોકરાં ભણવા યોગ્ય છે તેમને માસ્તર કેશવલાલે બાળબોધ જૈન ધર્મ શીખવવા કબુલ્યું.

કુકડીયા—૧ ઘર છે. ત્રણ ભાઇએ સ્વાધ્યાયનો નિયમ લીધો ને બે અજૈન સ્ત્રીઓએ માંસ ભક્ષણનો ને જુ માંકડની હિંસા કરવાનો ત્યાગ કર્યો.

ગુજરાતની સમગ્ર દિ૦ જૈન જ્ઞાતિના આગેવાનોને આમંત્રણ.

ગુજરાતના વીશા મેવાડા, નૃસિંહપુરા, વીસા હુમડ, દશાહુમડ, રાયકવાળ વગેરે પેટા જ્ઞાતિઓના આગેવાન બંધુઓને વિનંતિ કે સુરતની પરિષદમાં સ્થપાયેલ ગુજરાત દિ. જૈન પ્રાંતિક સભામાં વિવાહ સંબંધ જોડવાની ભલામણ કરનાર ઠરાવ થયો છે. અને તે માટે જુદી જુદી પંચ વેળાસર ચૈત્ર માસ પહેલાં પંચ મેળવી અનુમતિ આપે એવી વિનંતિ પણ કરવામાં આવી હતી. અને બીજી સભા તારંગે ભરવા મહામંત્રીએ વિચાર દર્શાવ્યો હતો, પરંતુ અમુક પંચ એવી સંમતિ આપે છે અને બીજી પંચો પોતાના આંતરિક ઝઘડા કે પંચ મેળવવાની બીન અનુકુળતાને લીધે પંચ મેળવી શકયા નહિં અને તેથી ચૈત્ર માસમાં તારંગા મુકામે પરિષદ ભરાય તેમ નથી એટલે પેટા જ્ઞાતિમા સંબંધ જોડવાની ઇચ્છાવાળા પંચ કે વ્યકિતઓને ખોટો વિલંબ થાય એ વ્યાજબી લાગતું નથી. તેટલા હેતુથી **જે પંચ અગર વ્યકિતને પેટા જ્ઞાતિમાં સંબંધ જોડવાની ઇચ્છા હોય (અગર ન હોય તો એ)** પ્રાંતિક સભાના કામમાં ઉતાવળ કરવાના હેતુથી **સામાન્ય રીત રીવાજ** (ખાસ

હિમતનગર—કડિયાદરાના ભાઇ પણ અત્રે પ્રસંગવશ આવેલ હતા. ઉપદેશ આપ્યો. નિયમો લેવાયા.

અત્રેથી સુરત થઇ મુંબઇ આવ્યા. ગુજરાતમાં વડી. પાપડ, સેવ, અથાણાં વર્ષ કે એથી પણ વધુ સમય સંઘરી રાખવાનો ને વાપરવાનો કુરિવાજ છે તે બંધ થવો જોઇએ કેમકે એ અભક્ષ્ય છે. લોકો કહે છે કે ઘેરઘેર એ રિવાજ છે, જમણમાં પણ વપરાય છે. તેથી અત્રે કેવી રીતે એ છોડી શકીએ તો પંચે મળીને આ પ્રથા તો બંધ કરવીજ જોઇએ.

મંત્રી, **ઠાકોરદાસ ભગવાનદાસ ઝવેરી.**

કરીને વિવાહ બાબતમાં) વિચારી એક ખરડો તૈયાર કરવા અને તે ખરડો **વ્યવસ્થાપક કમીટીમાં** રજુ કરવા નક્કી કર્યું છે. ને જે ખરડો વ્યવસ્થાપક કમીટી મંજુર કરે તે સુધારા વધારા સાથેનો રીત રીવાજનો ખરડો પ્રાંતિક સભાની બીજી બેઠક મળે ત્યાંસુધી કામચલાઉ ગણાશે. એ ખરડામાં મુખ્ય શરત એ રહેશે કે પ્રાં. સભા બીજી બેઠક મળે અને એ વિષે બીજો ઠરાવ મંજુર કરે ત્યાંસુધીને માટે એ ખરડો રહેશે. અને વળી જે કોમો એ પેટા જ્ઞાતિમાં વિવાહ સંબંધ જોડે તે દરેક જ્ઞાતિમાંથી બનતા સુધી સરખી સંખ્યામાં વર કન્યાના સંબંધ જોડાય તો ઠીક થશે. એટલે પરિષદ મળે ત્યાં સુધીમાં થયેલ વિવાહ સંબંધથી કોઇપણ પેટા જ્ઞાતિને નુકશાન જશે નહીં.

આથી દરેક પંચના રીત રીવાજ સમાન કરવામાં ઉતાવળ થાય તે હેતુથી એ ખરડો તૈયાર કરવા સર્વ પેટા જ્ઞાતિના આગેવાનોને નિમંત્રણ કરવામાં આવે છે કે તા. ૧૫-૪-૩૪ પ્ર. વૈશાખ શુદ ૨ને રવિવારે બપોરે **અંકલેશ્વર** પધારવા તસ્દી લેવી.

નિવેદક—

છોટાલાલ ઘેલાભાઈ ગાંધી, મહામંત્રી.
ગુજરાત દિ૦ જૈન પ્રાંતિક સભા.
મેવાડા ફળીયા, **અંકલેશ્વર.**

મુબાઇમાં—મહાવીર જયંતિની સભા હીરાબાગમાં રાત્રે ૮॥ થી ૧૦॥ સુધી શ્રી શાંતિલાલ સોલીસીટરના પ્રમુખ પણા નીચે મળી હતી જેમાં શ્રાવિકાશ્રમની બાળાઓના મંગળાચરણ બાદ પં. કમળકુમારજી શાસ્ત્રી, રાજમલજી, મંગળદાસ, જગમોહનદાસ, લલિતા બ્હેન, વગેરેએ મહાવીર જીવન પર ભાષણો કરવા પછી રાજમલજી અને પં. જગદીશચંદ્ર એમ. એ. નાં વિવેચનો પૂર્વક મહાવીર જયતીની જાહેર રજા પાળવા સરકારને વિનતિ રૂપ ઠરાવ પાસ થયો હતો.

जैन समाचारावलि।

સુરતમાં મહાવીર જયંતી ઉત્સવ—આર્ય સમાજ હોલમાં રાત્રે જાહેર રૂપે પ્રો. મોહનલાલ પાર્વતીશંકર દવે એમ. એ. ના પ્રમુખ પદે ઉજવાયો હતો જેમાં પં પરમેષ્ઠીદાસજી, પ્રો. જ્યોતિંદ્ર દવે, ડૉ. કે. બી. પટેલ અને શેઠ છોટાલાલ ઘેલાભાઇ ગાંધીના મહાવીર જીવન ઉપર અસરકારક વિવેચનો થયાં હતાં જે પછી ઉજમશી વકીલ, મુળચંદભાઇ કાપડિયા, સરૈયા અને રતનચંદ ખીમચંદના વિવેચનો પૂર્વક નીચેના ૩ ઠરાવો સર્વાનુમતે થયા હતા. (૧) મહાવીર જયંતીની જાહેર રજા પાળવાને સરકારને ફરીથી સુચના, (૨) સુરત શ્વે. જૈન સંઘે લાડવા શ્રીમાળી જ્ઞાતિને સંઘમાં દાખલ કરી તે માટે એ સંઘને અભિનંદન તથા (૩) જૈન કોમમાં કેશરિયાજી સંબંધી ફેલાયલો અસંતોષ જલ્દી દૂર કરવાને ઉદેપુરના મહારાણાને વિનંતી.

પ્રે. મો દિ. જૈન બોર્ડિંગ—અમદાવાદ ત્યાં મેનીન જાઇટીસ રોગ હોવાથી હાલ શહેર બહાર ગાંધી આશ્રમ, આનંદ ભુવન, સાબરમતી પર લઇ જવામાં આવી છે.

જ્ઞાતિમાંથી રાજીનામું—ભાવનગર નિવાસી પરમાનંદ કુંવરજી કાપડિયા વકીલ (મુંબાઇ) એ પોતાની જ્ઞાતિના સંકુચિત રીત રીવાજોથી કંટાળીને પોતાની જ્ઞાતિમાંથી રાજીનામું આપી દીધું છે ને પોતાનાં પુત્રપુત્રીઓનાં વિવાહ બીજી જ્ઞાતિના યોગ્ય સંતાનોથી કરવાનાં છે.

તારાતંબોળ—નગરનું વર્ણન ગતાંકમાં પૃ. ૨૦૨ પર આપેલું છે તેમાં પ્રારંભમાં સંવત ૧૯૮૪ છપાઇ ગયો છે તે સં. ૧૬૮૪ સમજવો.

આબુ તીર્થની પાસે—અંબાજી ને કુંભારીયામાં યાત્રાળુ પાસેથી પ્રવેશ ચાર્જ ૭ આના યાત્રી દીઠ લેવાતા હતા તે સુરતના વયોવૃદ્ધ ઝવેરી અમીચંદ મોતીચંદના પ્રયાસથી દાંતા સ્ટેટે કાઢી નાંખ્યા છે.

" પંચનું બંધારણ. "

વીશા મેવાડા ભાઇઓનું કર્તવ્ય."

સુજ્ઞ બંધુઓ !

આવતા વૈશાખ માસમાં આપણે સર્વે સોજીત્રા મુકામે લગ્નોત્સવ પ્રસંગે ભેગા મળનાર છીએ. તે સમયે આપણે સુરત પરિષદમાં નક્કી થયા મુજબ ત્યાં થયેલ ઠરાવો અમલમાં મુકવા માટે ચર્ચા કરી ચોક્કસ નિર્ણય ઉપર આવવાનું છે. તે ઠરાવોમાં એક અગત્યનો ઠરાવ પંચના બંધારણનો હોઇ તે સબંધી મારા વિચારો દરશાવીશ તો તે અસ્થાને નહિજ ગણાય.

આપણાં ગામોનાં પંચો કેવાં છે તે સૌ કોઇ સારી રીતે જાણે છે. આપણાં પંચ તે કંઇ વ્યવસ્થિત પંચ નથી, પણ બંધારણ વગરનાં અસલથી ચાલતી આવેલી રૂઢીઓ પ્રમાણેનાં પંચ છે—તેને નથી કાંઇ ઢંગ કે ધડો—તેમાં નથી કાર્યકુશળ અને ઉત્સાહી કાર્યકર્તાઓ. સૌ પોત પોતાને મોટા માને છે, અને દરેકની મરજી અનુસાર કાર્યો કર્યે જાય છે અને જેનો પક્ષ સબળ તેની તરફેણમાં દરેક કાર્ય પાર પડે છે, એટલેકે કોઇને કોઇ કાર્ય પંચ મારફતે કરાવવું હોય તો તેને સબળ પક્ષનો આશ્રો લેવો પડે છે.

આપણાં પંચોમાં બધા ભેગા મળીને જ્ઞાતિ સુધારાના ઠરાવો ઉપર લક્ષ નહિ આપતાં સામસામા ઝઘડાની વાતો થાય છે. અને મ્હેં ખબર મળ્યા મુજબ તો કોઇ કોઈ જગ્યાએ ગરમ વાતાવરણ પણ ઉપસ્થિત થઇ જાય છે. આપણા પંચોમાં મુખ્ય અગેવાન "શેઠ" ગણાય છે પણ તે "શેઠાઈ" વંશપરંપરાની હોય છે. એટલે બીજા ઉત્સાહી અને કાર્ય કુશળ ભાઇઓને તો કામ કરી બતાવવાનો પ્રસંગ પ્રાપ્ત થતો નથી, અને તેને લીધે અમુક પંચોના કારભાર વ્યવસ્થિત હોતા નથી.

આપણા પંચો ભેગાં મળવાના ટાઇમો પણ કફોડા હોય છે. કેટલાક ભાઇઓ તો રાતના ૧૧ વાગ્યા સુધી પંચમાં હાજરી આપે નહિ, અને પછી જ્યારે તેડાં મોકલવામાં આવે ત્યારે આવે છે, અને આવી રીતે બીજા ભાઇઓ જે વહેલા આવેલા હોય તેમને પણ શોષવું પડે છે. દરેક ભાઇએ પંચના નક્કી કરેલા સમયે હાજરી આપીને પોતાની ફરજનો વિચાર કરવો જોઇએ.

આપણા પંચોમાં કામ કરવાની પદ્ધતિ પણ અનિયમીત અને ઢંગધડા વગરની છે. આમ હોવાથી અમુક મુદ્દાનાં કાર્યો જે પંચે કરવાનાં હોય છે તે રહી જાય છે, અને નજીવાં કામોમાં સમયની બરબાદી થાય છે. માટે પંચમાં કરવાનાં દરેક કામોનો કાર્યક્રમ પહેલેથી ગોઠવાઇ જવો જોઇએ, અને તે પ્રમાણે દરેક કામ હાથ ઉપર લેવાવું જોઇએ.

ઉપર વર્ણવેલ દશા આપણાં પંચમાં એકજ જગ્યાએ નથી, પણ ઘણેજ ઠેકાણે છે. માટે તે સુધારીને સમયને અનુસરીને સુવ્યવસ્થિત બંધારણ ગોઠવવું એ આપણી ફરજ છે.

પંચના બંધારણનો ખરડો રા. રા. શ્રીયુત છોટાલાલ ઘેલાભાઇ ગાંધી તરફથી "આપણા દિગમ્બર જૈન" ના અંક ૩–૪ સાથે બહાર પાડવામાં આવેલ છે તે ખાસ વિચારવા યોગ્ય છે. અને તે પ્રમાણે દરેક ગામના પંચનું બંધારણ ઘડાએ તો ઘણુંજ અનુકુળ થઇ પડશે એવી મારી માન્યતા છે.

આપણી જ્ઞાતિના સોજીત્રાના મોટા પંચને માટે નીચે મુજબની યોજના રાખવા મારી નમ્ર વિનંતી છે:—

૧—દરેક ગામદીઠ તેની જન સંખ્યાના પ્રમાણમાં ૨૫) જન સંખ્યાએ એક પ્રતિનિધિ પંચમાં જે તે ગામના પંચ સમસ્તે ભેગા મળી ચુંટી કાઢવો.

૨–જે ગામની જન સંખ્યા ૨૫ કરતાં ઓછી હોવે તે ગામનો એક પ્રતિનિધિ આવી શકે.

૩–ઉપર મુજબ ચુંટાયલા પ્રતિનિધિઓનું મંડળ તે કાર્યવાહક કમીટી કહેવાશે, અને તેઓ પોતાનામાંથી એક સેક્રેટરી નીમી શકશે.

૪–સેક્રેટરી કમીટીનું દરેક કામકાજ નીહાળશે, અને મીટીંગોની પ્રોસીડીંગ બુક રાખશે અને કમીટીએ કરેલ કાર્યોનો રીપોર્ટ બહાર પાડશે, જેથી પંચના દરેક વ્યક્તિને તેની જાણ થાય.

૫–દરેક ગામના પંચ દીઠ ચુંટાયલા પ્રતિનિધિઓ પોતાના ગામના પંચ સંબંધી જે કાંઇ બાબત રજુ કરવી હશે તે કાર્યવાહક કમીટીમાં રજુ કરી શકશે.

૬–કમીટીનું દરેક કાર્ય વધુ મતે કરવામાં આવશે, પણ કમીટીના ઓછામાં ઓછાં ૩/૪ રૂબ્યોની બહાલી તે ઠરાવને માટે જોઇએ.

૭–ઉપર દર્શાવેલ કમીટીના મેમ્બરો ઓછામાં ઓછાં ત્રણ વર્ષ માટે કાયમ રહી શકશે, અને તે પછી નવી કમીટીની ચુંટણી કરવામાં આવશે.

૮–પંચમાં જે નાણાં જમા હોય તેની વ્યવસ્થા કરવા માટે એક પેટા કમીટીની નીમણુક કરવી.

ઉપર દર્શાવેલ બંધારણ મ્હને ઠીક લાગે છે, તેમ છતાં કોઇ ભાઇ તે ઉપર પોતાના વીચારો તેમાં સુધારો કરી શકે છે. આશા રાખું છું કે બંધુઓ આ બાબત ઉપર વીચાર કરી એક મત થઇ જરૂર કાંઇપણ કરી કરશે.

લી૦ સમાજ સેવક.

રતિલાલ કે શાહ–ભારૂચ.

"સાઠના જીલ્લામાં ઐકયતા"

અત્યંત હર્ષ સાથે જણાવવું પડે છે કે છેલ્લાં આઠ વરસથી દશા હુમડ ભાઇયોના સાઠના જીલ્લામાં જે તડ પડયાં હતાં તે એકત્ર થયાં છે; જે માટે દાંતાના મહારાણા શ્રી. ભવાનીસીંહજી સાહેબને ખાસ અભિનંદન ઘટે છે. ગયા મહા સુદ ૯ના રોજ નવાવાસમાં ધ્વજાદંડ મહોત્સવ હોવાથી તે શુભ પ્રસંગે આ જીલ્લાનાં સર્વે ભાઇઓને આમંત્રણ આપવામાં આવ્યું હતું. નવાવાસમાં દિગંબર જૈન મંદીર મસજીદની નજીકમાંજ હોવાથી ત્યાંના મુસલમાનો છેલ્લાં સાઠ વરસથી મંદિર ઉપર ધ્વજાદંડ ચઢાવવા દેતા ન હતા આ બાબત નવાવાસના પંચ મહાજને દાંતાના મહારાણાશ્રીની હજુરમાં ફરીયાદ કરી તેઓશ્રીની ખાસ પરવાનગી મેળવી હતી. આ પ્રસંગે મુસલમાનો તરફથી કંઇ રોકાણ ન થાય તે હેતુથી ના. દાંતા મહારાણાશ્રી પોલીસ ફોર્સ સાથે જાતે હાજર રહ્યા હતા અને મહા સુદ ૧૦ના રોજ ધ્વજાદંડ નિર્વિઘ્ને ફરકાવવામાં આવ્યો હતો, જે માટે નામદાર મહારાણાશ્રીનો જેટલો આભાર માનીએ તેટલો ઓછોજ છે.

વળી હમારા જીલ્લામાં પડેલ તડો એકત્ર કરવા માટે પણ ના. મહારાણાશ્રી છેલ્લા કેટલાક માસથી તક શોધતા હતા જે આ પ્રસંગે મળી. કારણ કે આ પ્રસંગે જીલ્લાના બન્ને પક્ષના ભાઇઓ ઉપસ્થિત હતા. ઘણા ભાઇઓ તો સમાધાની માટે ખાસ આતુરજ હતા એટલે જ્યારે ના. મહારાણાશ્રીએ તે માટે ઇશારો કર્યો ત્યારે બન્ને પક્ષોએ કેટલીક વાટાઘાટ બાદ લેખી કબુલાત આપી તેઓશ્રીને લવાદ તરીકે નીમ્યા. ના. મહારાણાશ્રીએ બન્ને પક્ષોની દલીલ અત્યંત ધૈર્ય અને શાંતિથી સાંભળી. તે બાદ બીજે દીવસે તેઓશ્રીએ લવાદ તરીકેનો પોતાનો ઠરાવ વાંચી સંભળાવ્યો હતો. આ ઠરાવ લંબાણમાં લખાયેલ

હોવાથી તેમાંથી કેટલાક ઉપયોગી ફકરા હું અત્રે ટાંકીશ.

પેરા (૨)......આ બધી તપાસને અંતે અમોને પુરી ખાત્રી થઇ કે સત્તર જીલ્લાના દશા હુંમડોની જ્ઞાતિમાં બે તડો પડવાનાં કારણ ખાસ મહત્વનાં ન હોઇ બીલકુલ ક્ષુલ્લક અને નજીવાંજ છે. જ્ઞાતિ જનોએ આવાં નજીવાં કારણોને "રાઇનો પર્વત" બનાવી નાહકનું મહત્વ આપી જ્ઞાતિમાં બે સામસામી તડ પાડી માંહોમાંહેનાં સમાજનાં બંધનો શિથિલ કરવાનું પાપ માથે વહોરવું જોઇતું નહોતું. પહેલેથીજ ડાહ્યા, વીચારશીલ અને સમજણા આગેવાનોની શીખામણથી જ્ઞાતિનું તંત્ર ચલાવવામાં આવ્યું હોત તો આજે જે પરિસ્થિતિ ઉત્પન્ન થવા પામી છે તે કદાપિ ન થાત. અમારે ઘણી દીલગીરી સાથે જણાવવું પડે છે કે હીંદુસ્તાનમાં ડાહી ગણાતી ઘણીક કોમની એક જ્ઞાતિએ કેટલાક ઉતાવળીયા તથા ધાંધલીયા લોકોની ખટપટના ભોગ થઇ જ્ઞાતિમાં નકામો વિખવાદ પેદા કરી તેના બે કકડા યાને તડ ઉભા કર્યા છે. અને તેમ કરી પોતાનાજ પગ પર કુહાડી મારી લેવા જેવુ આ કૃત્ય કર્યું છે.

પેરા (૩).........સમાજ શાસ્ત્ર અને ધર્મશાસ્ત્રની દ્રષ્ટિએ જોતા પણ તે અમોને તદ્દન ક્ષુલ્લક લાગે છે......

પેરા (૬)—સમાજ એટલે એક સંયુક્ત તંત્ર. તેને જાળવવા માટે સંધાણની નીતિનો અંગિકાર કર્યેજ છુટકો; નહિ કે ભંગાણની નીતિ. સમાજનું કોઇ અંગ ધીમું યા લુલું પડી જાય અથવા સડવાથી બગડી જાય તો તેનો યોગ્ય ઉપચાર કરી સુધારવુંજ જોઇએ. કાપીને અલગ કરી ફેંકી દેવાથી તો સમાજ ધીમે ધીમે નષ્ટ થવાની અણીએ આવી પહોંચે. સમાજ એટલે અસ્તિનો અખંડ વહેતો પ્રવાહ. તે પોતાના દરેક ઘટકને આત્મસાત બનાવી પોતાનામાં મેળવી લે નહિ કે ફેંકી દે.

મુદ્દાઓનો નિર્ણય.

પેરા (૭)—(૧) સત્તર જીલ્લાની દશા હુમડની જ્ઞાતિમાં જે બે તડ પડયાં છે તેનાં કારણો ખાસ મહત્વના નથી.

(૩) મુડાસણાના મી. જેચંદ જેઠાભાઇ દોશી તથા વડેરાબરના મી. જાદવજી ગુલાબચંદ કે જેમના અમુક પ્રકારના વ્યવહાર ઉપરથી જ્ઞાતિમાં બે તડ પડવા પામ્યાં છે તેમાંથી મી. જેચંદ જેઠાભાઇ દોશીએ પોતાની સ્વખુશીથી રૂ. ૪૫૧) ધર્માદા વાપરવાની શરતે આપવાની અરજ કરવાથી તેનો સ્વીકાર કરવામાં આવે છે અને તેવીજ રીતે મી. જાદવજી ગુલાબચંદે પોતાની રાજીખુશીથી રૂ. ૨૫૧) ધર્માદા કાર્યમાં વાપરવા આપ્યા છે, તેનો સ્વીકાર કરવામાં આવે છે.

(૮) સં. ૧૯૮૨ની સાલથી બન્ને તડોવાળાઓને થએલ આવક તથા ખર્ચની વ્યવસ્થા સત્તર જીલ્લાના મહાજને કરવાની છે.

મુ. કેંપ નવોવાસ, તા. ૨૫ માહે જાન્યુઆરી ૧૯૩૪

સહી. ભવાનસિંહજી મહારાણાશ્રી.

સ્વસ્થાન શ્રી દાંતા.

આ ઉપરથી વાંચક વર્ગને સ્પષ્ટ રીતે સમજાશે કે આ જ્ઞાતિમાં નજીવી બાબતને ખોટું મહત્વ આપી નાહકનો વીખવાદ ઉભો થયો હતો. ખરેખર ના. દાંતાના મહારાણા સાહેબે આ તડો એકત્ર કરવા માટે જે મુતસદ્દીગીરીથી અને કુનેહ ભરી રીતે કામ લીધું છે તેમજ કીંમતી સમયનો ભોગ આપી જે પરિશ્રમ ઉઠાવ્યો છે તે માટે તેઓશ્રીને કોટીવાર ધન્યવાદ ઘટે છે.

લી० મુળચંદ દોશી સેક્રેટરી,

શ્રી. સત્તર જીલ્લા દિગંબર જૈન યુવક મંડળ.

મુડાસણા.

ગુજરાતના દિ. જૈન—બંધુઓને હાકલ.

(લેખક—ડૉ૦ વીરચંદ છગનલાલ શાહ, વસો-હાલ સોનગઢ)

હાલ સારીએ આલમમાં આગળ ધસો, આગળ વધો, પ્રગતિ કરો એજ શબ્દોનો ધ્વનિ પડઘા પાડી રહ્યો છે. અને તેમાં આપણો દેશ, આપણો સમાજ અને આપણી કોમ પણ અપવાદ રૂપ નથી. તેના મંગળાચરણ રૂપ પરિષદો તેમજ યુવક મંડળો દ્વારા અનેક પ્રયત્નો થઇ રહ્યા છે, પરંતુ તેમાં પુરતી સફળતા નહી મળવાનાં અમુક કારણો છે. તેમાં પરસ્પર કુસંપ, કેળવણીનો અભાવ અને ઇર્ષા એ મુખ્ય કારણો છે. આ બધાં કારણોનો વિચાર કરતાં તેનું મૂળ જ્ઞાતિનું અવ્યવસ્થિત તંત્ર હોવાનું માલુમ પડે છે.

આપણાં ચાલુ પંચોમાં બંધારણ જેવું કંઇ હોતું નથી. અને તેને લઇને અમુક માણસો પાસે પટલાઇના નામે સત્તા આવી પડે છે. આવા પટેલીઆઓને બે ભાગમાં વહેંચી શકાય, એક તો કહેવાતા કુલીનો અને બીજા સ્વાર્થી ખટપટીયાઓ. એક ત્રીજો પૈસાદાર વર્ગ છે, જેનો તો પ્રસંગ આવે બધા સાથ આપે છે. ઉપરના કુલીનોનો સમુહ સામાન્ય વર્ગ ગણાય છે કે જે ઘણોજ વધારે હોવા છતા પણ તેના પર પટેલીઆઓ પોતાની સત્તા નિરંકુશ પણે ચલાવી શકે છે. એટલે જ્ઞાતિ બહાર મુકવાની, અમુક રૂપિયા દંડ કરવાની સત્તા પોતાની સ્વાર્થ વૃત્તિને લઇને અથવા કહેવાતી કુલીન શાહીના કારણે કે પૈસાના મદને લઇને જેઓની પાસે હોય તેઓ સામાન્ય વર્ગ કે જે તેમના કરતાં સાચો, સરળ, અને વિશેષ જાતિમાન હોવા છતાં, પટેલીઆઓના કાવાદાવામાં ફસાઇ મુંગે મોઢે સહન કરે છે, તેને હેરાન કરે છે. અને પોતે તો જે કરે તે સાચા અને જે રીતે વર્તે તે નીતિ એમ માની પુલાય છે, કેમકે એમને કોઇ પુછી શકતું નથી કારણ એઓએ લાગવગ અને ખટપટથી પોતાનો એક સમુહ પણ જમાવ્યો હોય છે. તેને લીધે તેઓ આપણા સામાન્ય વર્ગના માણસોને દબાવે છે આપણા સામાન્ય વર્ગને તેમના કાવાદાવાનો ખ્યાલ આવતો નથી એટલે પટેલીઆઓ વધારે ને વધારે ફાવતા જાય છે અને નીતિ અનીતિના નામે આપણને ખૂબ અને ખૂબ ડરાવતા-દબાવતા જાય છે. અને પોતાનો સ્વાર્થ સાધતા જાય છે.

પેલા કહેવાના કુલીનોને તો એમની તમામ આબરૂ, પ્રતિષ્ઠા અને મળતા માન સાથે કન્યાઓની સગવડ એ બધું જ્ઞાતિના મોટા ભાગને અકુલીન તેમજ સામાન્ય ગણાવીને દબાવી રાખવામાંજ સમાયેલ રહે છે. એટલેજ તેઓ આપણાં પ્રગતિના માર્ગોમાં સીધી અથવા આડકતરી રીતે વિઘ્નો નાંખી સંતોષ પામે છે.

માત્ર જન્મના અકસ્માતને કારણે જાતિનો એક માણસ કુલીન અને બીજો વધારે લાયકાતવાળો હોવા છતાં અમુક ગામમાં કે અમુક કુટુંબમાં જન્મવાના કારણે અકુલીન ગણાય તે ક્યાંનો ન્યાય, પરંતુ અનેક વર્ષો સુધી જ્ઞાતિમા સત્તા ભોગવી પ્રતિષ્ઠા પામી અને સહુને પજવનાર, થોડાં છતા ઘણી લાગવગ અને સત્તાવાળો અને ખટપટમાં પરિપૂર્ણ એવો કુલીન વર્ગ, સામાન્ય વર્ગના તે કુલીનશાહી તોડનારા પ્રગતિના પ્રયત્નોને પસંદ નજ કરે તે સ્વભાવિક છે; કેમકે તેઓએ આખી જ્ઞાતિને, પોતાની આંગળી પર નચાવી, પોતાનો સ્વાર્થ તેજ જ્ઞાતિનો સ્વાર્થ મનાવી પોતાનાં કાર્ય સિદ્ધ કર્યાં હોય છે, અને તેઓએ પોતાના આમંત્રણથી આખી જ્ઞાતિને બોલાવી અમુક વ્યક્તિ કે અમુકને પોતાના ખાનગી સંબંધને લઇ જ્ઞાતિ બહાર મુકાવી શકે અથવા જ્ઞાતિ બહાર હોય તો જ્ઞાતમાં લઇ શકે એવી સત્તાનો સ્વાદ જેણે ચાખ્યો છે તેઓ આપણા પ્રગતિના કાર્યમાં સાથ કઇ રીતે આપે કેમકે તેમ કરવાની તેમની તમામ સત્તા ઉપર કાપ મુકાય.

કેટલાક જુના વિચારના કુલીન વડીલો પોતાની વયનું તેમજ કુલીનશાહીનું અભિમાન લઇ આપણા ઉત્સાહને અપમાને છે. તેઓ બધી વિદ્યામાં પારંગત હોય, પોતાને થયેલો અનુભવજ સાચો હોય એમ માની આપણી સામાન્ય વર્ગની પ્રગતિ માટેની હોંશ અને ધગશને હમે છે, અવગણે છે અને તીરસ્કારે છે કેમકે તેઓ માને છે કે વૃદ્ધ તરીકે અને ખાસ કરીને કુલીન તરીકે તેમને એ હક આપો આપજ મળેલા છે અને આવી રીતે આપણા પ્રગતિ કાર્યમાં તેઓ અનેક રીતે વિઘ્નો નાખે છે.

'પણ બંધુઓ શું તમે તમારી જાતને ગુલામ રાખવા માગો છો? તમારી ભાવી પ્રજાને તે વિના કારણે કુલીનશાહીના ગુલામ બનાવવા માંગો છો ! તમારા નિર્દોષ બાળકોનાં હજી પણ કુલીનશાહીનાં યજ્ઞમાં વિના કારણે બલિદાન આપવા માંગો છો? જો તમારે તેમજ કરવું હોય તો કરો, પરંતુ યાદ રાખજો કે તેમ કરવાનો તમને જરા પણ હક નથી. તમો જોઇએ તો જાતે કુલીનોના ગુલામ રહો પણ તેથી તમારા નિર્દોષ બાળકોને ગુલામીનાં ધાણીમાં છુંદી નાંખવાનો તમને કંઇપણ અધિકાર પ્રાપ્ત થતો નથી. જો તમે આજે નહી માનો તો આવતી કાલે કુલીનશાહીના હાથે અન્યાય પામેલાં બાળકો આવતી કાલના યુવકો અને ભાવી પ્રજા પણ તમારી આ ગુલામી ભાવનાને જરા જેટલુંએ માન આપશે નહી, ના ના માન આપશે નહી એટલુંજ નહી પણ તમે એમને માટે જે ગુલામી રાખી છે તે માટે તમને દુશ્મન માનીને તમારા મૃત્યુ પછી પણ તમારાં નામ યાદ કરીને તમારો તિરસ્કાર કરશે.

માટે બંધુઓ, જ્ઞાતિઓનાં તંત્રને કોઇપણ ઉપાયે વ્યવસ્થિત કરી પ્રગતિ કાર્યમાં એકમત થઇ તમારે માટે તેમજ તમારી ભાવી પ્રજાને માટેનાં કુલીનશાહીનાં બંધનો તોડી ફગાવી દઇ નિશ્ચિંત બની જ્ઞાતિની તેમજ સમાજની ઉન્નતિ કરો.

શેહરોની ઉત્પત્તિનો

પ્રાચીન પત્ર.

સં. ૧૮૧૫ નાગોર વસ્યો
,, ૧૧૮૫ ફલોદઇ દેશ થયો
,, ૧૬૧૯ માળપુરો વસ્યો
,, ૧૦૮૮ વિમલવસી આબુ ઉપર દહેરાં કરાવ્યાંજી
,, ૧૨૨૩ આબુ સંઘ કાઢયો વસ્તુપાલ તેજપાલજી
,, ૧૨૧૩ જગડુસા થયો
, ૧૬૨૪ ચાત્રોડપલગે અકબરે
,, ૭૩૧ રાજા ભોજ જિનજેણી થયો
,, ૧૨૧૨ જેસલમેર વસ્યો
,, ૧૫૪૫ બીકાનેર વસ્યો
,, ૬૭૮ અનંગદેવે દલ્લીવાસો
,, ૧૩૭૫ અમદાવાદ વસ્યો
,, ૧૦૧૩ અકબસબાંધ ચાગાનેખ
,, ૨૦૨ અજમેર વસ્યો
,, ૧૪૯૫ કુંભેરાણે કુંભલમેખ
,, ૧૪૮૯ સોમદેવડે સીવરાઇવાસી
,, ૧૩૬૦ મલોર વસ્યો
,, ૧૬૧ ઉદેપુર વસ્યો
,, ૧૩૧૬ આગરા વસ્યો
,, ૧૧૨૮ મેડતો વસ્યો
,, ૭૮૨ કેશ્રોયેણામ તયો સવાલવ
,, ૧૫૩૫ જાડો નાડેળ વસ્યો
,, ૮૯ વૈશાખ સુદ ૧૧ દલાહરી વસ્યા
,, ૧૨૨૯ ચૈત્ર સુદી ૩ ચઉઆણે ચઉયાણ જીત્યા
,, ૧૨૪૮ ચઉહાણ હાયચિકતાવત જીત્યા
,, ૧૨૪૯ હિંદુથકી તરકે હલીલીધા
,, ૧૦૦૧ થારાદ વસ્યો
,, ૧૫૧૧ સંતલપુર વસ્યો.
,, ૧૨૧૧ ભુજનગર વસ્યો
,, ૧૧૦૭ નવેનગર વસ્યો
,, ૧૨૨૪ વીરમગામ વસ્યો
,, ૧૧૧૫ સુરત વસ્યો

સં. ૧૧૭૧ ખંભાત વસ્યો
„ ૯૫૧ ભરૂચ વસ્યો
„ ૯૨૧ ધોળ ધંધુકા વસ્યો
„ ૧૧૨૫ શેર વડોદરા વસ્યો
„ ૧૫૫૪ સમાચંદ્ર વસ્યો
„ ૪૦૭ પાલણપુર વસ્યો
„ ૩૦૩ મુકપુર વસ્યો
„ ૪૪૪ સંખેસરો થયો
ઉજ્જૈયની નગરી ચોથા આરાની છે
„ ૮૦૨ પાટણ વસ્યો વનરાજ ચાવડો
„ ૮૦૪ વડનાવસી
„ ૧૨૧૭ મેસાણા વસ્યો
„ ૧૧૫૫ સિદ્ધપુર વસ્યો
„ ૫૫૧ વડનગર વસ્યો
„ ૧૨૨૧ વીસલનગર વસ્યો
„ ૧૩૧૧ મોડાસાવાસી મંડલા કરાનાર
„ ૧૫૧ પાશુર વસ્યો
„ ૭૯૭ વણોદ વસ્યો-વણેલુ
„ ૧૮૬૩ અંવરેલીગઢ વસ્યો

સુરતમાં હુકમમુનિ મહારાજના શ્વેતાંબર જૈન ઉપાશ્રયના શાસ્ત્ર ભંડારમાંનાં એક પ્રાચીન શાસ્ત્ર ઉપરથી.-શા. રતનચંદ ખીમચંદ કાપડિયા.

બોધ વચનો.

સ્વતંત્રતા વિના ધર્મની રક્ષા અશક્ય છે.

માણસની ગૃહસ્થાઇ તેની ભાષામાં સમાયેલી છે.

આત્મા સ્વતંત્ર છે અને મૂળરૂપે સર્વ શક્તિમાન છે.

ખરી નિશાળ અનુભવ છે.

લખનારના પોતાના ચારિત્રની છાપ તેના લખાણમાં પડયા વગર રહે નહિ.

નિરાશા અને દુઃખથી દબાઈ ન જતાં સંસાર યુદ્ધમાં પ્રસન્ન મને સદા તત્પર રહેનાર ગૃહસ્થ સર્વ વીજયી નીવડે છે.

ભવિષ્યકાળ માટે તૈયારીઓ કરવી અને તૈયારીઓ બરાબર થાય તે માટે પોતાનો વર્તમાન અને ભૂતકાળ બરાબર તપાસવો એ ડાહ્યા પુરૂષોનું પ્રધાન લક્ષણ છે.

અમારો કાશ્મીરનો પ્રવાસ

(લેઃ-નાગરદાસ નરોતમદાસ સંઘવી, આમોદ)

[અમારી એક કંપનીએ બે વર્ષ ઉપર કાશ્મીરની મુસાફરી કરી હતી જેનું જાણવા યોગ્ય વર્ણન નીચે રજુ કરૂં છું જે દિગંબર જૈનના વાંચકોને ઉપયોગી થઇ પડશે.]

શ્રીનગર (કાશ્મીર)

રાવલપીંડી સ્ટેશનથી મોટર ગાડીમાં પ્રવેશ કરતાં લગભગ દશ પંદર માઇલનો રસ્તો સપાટ પ્રદેશમાંથી પસાર થાય છે. ચઢતી ચઢતી ટેકરીઓ ઉપર રહીને લગભગ સાત હજાર ફુટની ઉંચાઇએ મરી કેન્ટોન્મેન્ટ આવેલું છે. બધો રસ્તો પહાડી હોવા છતાં રસાલ હોવાથી જાતજાતની ઝાડીથી ભરપુર છે. ઠેકાણે ઠેકાણે પહાડોમાં વહેતાં પાણીનાં ઝરણાં ખેતીના કામકાજમાં બહુ ઉપયોગી થાય છે. જ્યાં, જ્યાં સ્હેજ પણ ખેતી કરવા જેવી જમીન મળી ત્યાં, ત્યાં પહાડી ખેડુતોએ ડાંગર અને મકાઇનાં ખેતી કરી છે. આ ખેતરોનો દેખાવ રસ્તા ઉપરથી મોટરમાં જતા જાણે ચઢતા ઉતરતા પગથીઆંવાળા બાગ બનાવ્યા હોય એવો દેખાય છે. પહાડની ટોચેથી છેક ખીણના ઉંડામાં ઉંડા ભાગ સુધીનો આ સુંદર દેખાવ અચુક ચિત્તાકર્ષક અને આનંદદાયી છે.

પહાડીમાં મ્હોટે ભાગે મુસલમાનોની વસ્તિ છે. રસ્તામાં, નાના નાના ગામ અને તેની સાથે ખાવાપીવાની વસ્તુઓ મળે એવી દુકાનો આવે છે. લગભગ બધાય હિંદુ મુસલમાન માંસાહારી છે. દુધની છુટ સારી છે. દરેક કંદોઇની દુકાને મીઠાઇ સાથે ગરમ દુધ વેચાતું મળે છે.

અહીંની ઉંચી પહાડી જગ્યામાં યુરોપીઅન લશ્કરી ઓફીસરના બંગલાઓ ઠેકાણે, ઠેકાણે બાંધેલા છે. હવાખાવા આવનાર ગૃહસ્થોના પણ ઘણાં બંગલાઓ છે. ગોરા લશ્કરની છાવણી પણ ત્યાંજ

છે. સ્વભાવીક ઠંડકવાળી અને રૂઆળ ઝાડવાળી જગ્યામાં યુરોપીઅન લોકો પોતાના દેશને અનુકુળ વાતાવરણ અહિં મેળવી શકે છે. અહીથી લગભગ ચાર પાંચ માઇલના વીસ્તારમાં એ લોકોનો વસવાટ છે.

મરી છોડવા પછી કોહલા નામના ગામ આગળ બ્રીટીશ હદ પુરી થાય છે અને કાશ્મીરના રાજ્યની હદ શરૂ થાય છે. મરી છોડયાને થોડા માઇલ ગયા પછી જેલમ નદિ, રસ્તાની નીચે વહેતી જણાય છે તેને ઓળંગીને જવાને કોહલા આગળ પુલ બાંધેલો છે તે સને ૧૯૨૮મા તુટી જવાથી અહિં આગળ મોટરોમાં ઉતરી બીજી મોટરોમાં બેસવું પડે છે. માલ ભરીને લઇ જતી મોટરોમાંથી માલ ખાલી કરી સામી બાજુ ઉભેલી મોટરોમાં ભરવામા આવે છે. દર માણસ દીઠ રૂ. ૦–૬–૦ લેખે ટોલ અહિં લેવામાં આવે છે. મજુરો પાસેથી પણ દરેક વખતે ભાર લઇને આવજા કરે તે વખતે દરેક વારે રૂા. ૦–૦–૩ પાઇ લેવામાં આવે છે. રાવળપીંડીથી શ્રીનગર જતા ઉતારૂઓનો ટોલ કાશ્મીર અને જમ્મુની સરકાર લે છે. અને પાછા વળતાં બ્રીટીશ સરકાર ટોલ વસુલ કરે છે, રાત રહેવા માટે રસ્તામાં ઘણે ઠેકાણે બંગલાઓ બાંધેલા છે. યુરોપીઅન લોકોની સગવડ સાચવવા માટે આ બંગલાઓ હોય છે. તેમાં બીજા ઉતારૂઓને પણ દરરોજના રૂ. ૦–૮–૦ થી રૂ. ૧–૮–૦ સુધીનું ભાડું લઇ રહેવા દેવામાં આવે છે. બંગલાના દરેક ઓરડામાં બે ખુરશી ટેબલ, એક આરામ ખુરશી, પાટી ભરેલો ખાટલો, અને એક મોટી શેત્રંજી અને ડ્રેસીંગ રૂમમાં ટેબલ અને એક મોટો આરસો તેની સાથે બાજુની નાની ઓરડીમાં પાણીની સગવડ તથા પ્રવી જવા માટે સ્ટુલ વગેરેની વ્યવસ્થા હોય છે.

કોહલા મુકયા પછી દુમેળ નામનું ગામ આવે છે. તે ગામ મ્હોટું છે. અહિંયાં કંચનગંગા તથા જેલમ એ, બે નદિઓનો સંગમ થતો હોવાથી એ ગામનું નામ દુમેલ પડયું છે. ગામમાં જવા માટે સંગમ આગલ નદિ ઉપર મજબુત લોખંડનો પુલ બંધાઇ રહયો છે. ત્યાંથી આગળ ચાલતાં ચબાર, બારામુલા વગેરે મ્હોટાં ગામ છે. એ બધે રસ્તે દેખાવ એક સરખો સુંદર છે. જ્યાં જુવો ત્યાં લીલી હરીયાળી ઝાડી અને ઠંડી, ઉંડી ખીણોના કીનારાના અડો-અડ રહીને મોટરગાડી પસાર થાય છે. રસ્તામાં નાના મોટા અસંખ્ય વાંક આવે છે. ડ્રાઇવરો ઘણા હુશીઆર અને કાબેલ ન હોય તો દરેક પળે ભય અને જોખમ ઝઝુમી રહેલું લાગે છે. જેલમ નદિ તો લગભગ શ્રીનગર સુધી સાથે ને સાથેજ પત્થરવાળી ખીણોમાં ખડખડ અવાજ કરતી વહે છે. રસ્તામાં ઝરણનાં પાણીને નળમાં ઉતારી જ્યાં ત્યાં રસ્તા ઉપર પાણી મળે એવી સવડ કરવામાં આવી છે. ઘોષા અને સફરજનની નાની નાની વાડીઓ ઘણા લોકો રાખે છે. તે ફળોની પેટીઓ ભરીને રાવળપીંડી મારફતે બહારગામ મોકલવામાં આવે છે.

બપોરના એક બે વાગે રાવળપીંડીથી ઉપડેલી મોટરકારને એક રાત રસ્તામાં ગાળવી પડે છે. રસ્તાની ભયંકરતાને લીધે સાત વાગ્યા પછી ભાર ભરેલી મોટર ચલાવવાની સખ્ત મનાઇ છે. પોલીસ ચોકીનો બંદોબસ્ત ઘણો સારો છે. જંગલી પ્રાણીઓનો ભય બીલકુલ નથી. આખા રસ્તે લગભગ પોષ, મહા માસના જેવી ઠંડી લાગે છે.

શ્રીનગર સપાટ જમીન ઉપર આવેલું છે. આગળ પાછળ ઉંચા ઉંચા પહાડો છે. શહેરમાં જેલમ નદીની નહેર એવી સરસ અને વાળવામાં આવી છે કે દરેક ભાગમાં એ નહેરનો લાભ મળે છે. બધા ભાગમાં એક બાજુએથી સામી બાજુ જવાને નાની હોડીઓ (શકારા)નો ઉપયોગ કરી શકાય છે. લગભગ બધા ભાગોમાં હોડીઓમાં

પાંચ સાત ઓરડાવાળાં ઘર બાંધવામાં આવેલાં છે. બધા ઓરડા યુરોપીઅન ફેશનમાં શણગારેલા હોય છે. દીવાનખાનું, સુવાનો, નાહવાનો, ખાવા કરવાનો વગેરે દરેક જુદા જુદા ઓરડાઓ દરેક પ્રકારનાં સાધન સાથે તૈયાર ભાડે મળે છે લગભગ બે ત્રણ હજાર એવાં મકાનો નદીઓ અને દાલ સરોવરમાં તરતાં ઠેકાણે ઠેકાણે નજરે પડે છે. દરેક મકાનનું ભાડું રોજ ઉપર ઠરાવવામાં આવે છે. સાથે સીકારાની સગવડ ફ્રી આપવામાં આવે છે.

દાલ સરોવરમાંથી નહેરમાં પાણી વાળવા માટે દરવાજો બાંધવામાં આવ્યો છે. તે દરવાજામાંથી જોઈતું પાણી લેવામાં આવે છે. પાણી વધી જાય તો, દરવાજા બંધ કરવામાં આવે છે. નહેરમાંથી દરવાજા બાંધી બીજા પણ નાના ફાંટામાં પાણી લેવામાં આવ્યાં છે. સામી પાર શહેરમાં જવા માટે કેટલીએક જગ્યા ઉપર પાકા પુલ પણ બાંધવામાં આવેલા છે. શહેરની પૂર્વ દિશાએ, દાલ સરોવર આવેલું છે. આગળ પાછળ આવેલા ઉંચા પહાડોના ઝરણાથી એ સરોવર હમેશ કુદરતી અને ભરાએલુંજ રહે છે. સરોવરમાં સુંદર કમળો થાય છે. કેટલેક ઠેકાણે પાણી ઉપર તરતા કુદરતી રેશાની જમીન બંધાએલી છે, તેના ઉપર સકરટેટી, તરબુચ વગેરે જાતના ફળ ઉછેરવામાં આવે છે. સરોવર વિશાળ અને નૌકા ગૃહોથી ભરપુર છે. દેશદેશના લોકો સહકુટુંબ નૌકાગૃહોમાં આવી રહે છે, અને મોજ ઉડાવે છે. ખાવું પીવું અને અહિં તહીં ફરવું એજ માત્ર કાર્ય—મસગુલ રહી; એક બે માસ ઓગષ્ટ અને સપ્ટેમ્બર અને ઉનાળામાં મે, જુન દરમ્યાન રહે છે. એ ચાર માસની અત્રે સીઝન ગણાઈ છે. દાલ સરોવરના કાંઠા ઉપર શહેરથી લગભગ પાંચ માઈલ દૂર મ્હોટા પહાડોના ખોળામાં નિષાદ નામનો બાગ આવેલો છે. જેમાં દર રવીવારે ફુવારા છોડવામાં આવે છે. સાત ચઢતા ઉતરતા ફુવારાના માળ ગોઠવવામાં આવ્યા છે. દરેક માળમાં ચઢતી ઉતરતી સંખ્યામાં ફુવારા ઉડે છે. હરવન નામના પહાડી ઝરાના પાણીથી ભરેલા તળાવમાંથી ઝપાટાબંધ પાણી આવે છે. જ્યાંથી શહેરને પાણી પુરૂં પાડવામાં આવે છે. આ પાણીનું વહેણ નિષાદ અને શાલીપેર બાગમાં વાળવામાં આવ્યું છે. ઉછાળા મારતું ધોધમાર આવતું પાણી બાગમાં ચણીને તૈયાર કરેલી નહેરને કુંડમાં થઈને બાગના મધ્ય ભાગમાંથી પસાર કરવામાં આવે છે આગળ પાછળ જાત જાતનાં રંગનાં સુંદર ફુલઝાડોની ક્યારીઓ બાંધવામાં આવી છે [illegible]માં રહીને નિયમીત [illegible] ફુવારા ઘણા રમણીય દેખાય છે. સંધ્યાકાળે આ રમણીય સ્થાનની મોજ ઉડાવવા સેંકડો યુરોપીઅન અને દેશી સ્ત્રી પુરૂષો, ટાંગા અને મોટરોમાં બેસી આવે છે. નૌકા ગૃહોમાં રહેતા ગૃહસ્થો સીકારામાં બેસીને ત્યાં આવે છે. બાગ[illegible] અંદર પ્રવેશ કરવાની ફી દર માણસ દીઠ રૂ. ૦—૪—૦ લેવામાં આવે છે ત્યાંથી બે માઈલના છેટે શાલમેર નામનો બાગ આવેલો છે. આ બાગ નિષાદ કરતાં ઘણો મ્હોટો અને વીશાળ દેખાય છે, આમાં પણ ફુવારાની રચના કાંઈક જુદાજ પ્રકારની છે ઉંચેથી જુદા જુદા આકાર પડથાર ઉપરથી પડતા પાણીના ધોધમાં જુદા જુદા આકારનાં કુંડાળાં જોવાથી ખુબ મઝા પડે છે. શાલમેર કરતાં નિષાદના ફુવારા ઉંચાઈમાં ઓછા ઉડે છે રમણીયતામાં નિષાદ કરતાં શાલમેર ચઢે એમ છે

ત્યાંથી બે માઈલ છેટે ઉપર જણાવેલ હરવનું પહાડી તળાવ છે તળાવ કુદરતી રીતે નિર્મળ અને ઉંડા પાણીથી ભરેલું છે.

શ્રીનગરથી ૫૦ માઈલને છેટે ગુલમર્ગનો પહાડ અને સાઠ માઈલને છેટે પહલગામ અને ત્યાંથી અંબર નાથના પહાડી રસ્તો ખાસ જોવા જેવી જગ્યાઓ છે, આ સ્થળો જોવા જવા માટે દરરોજ મોટર લોરીઓ જાય છે. અંબરનાથ ઉપર બરફ જામી ગએલો હોવાથી સપ્ટેમ્બર માસની આખરમાં ત્યાં જઈ શકાતું નથી.

(અપૂર્ણ.)

मनन करने योग्य।

[लेखक-श्रीयुत ताराचंद पांड्या।]

१-सच्चा ज्ञान सब धर्मोंकी कुञ्जी है, सत्य सब जगह विद्यमान है, किन्तु भिन्न२ स्वरूपोंमें सच्चा ज्ञान हमें उस सत्यको खोजनेकी दृष्टि देता है। संसारमें कोई वस्तु मिथ्या नहीं है, केवल हम ही उस वस्तुको मिथ्या दृष्टिकोणसे देखनेकी गलती करते हैं। सच्चा ज्ञान हमें प्रत्येक वस्तुको सच्चे दृष्टिकोणसे देखने योग्य बनाता है।

२-देवमें अन्ध विश्वास, गुरुमें अन्ध विश्वास, धर्म या मतमें अन्ध विश्वास, इनका नाश सत्यके मंदिरमें प्रवेश करनेका प्रथम सोपान है।

३-अपनी वास्तविकतासे च्युत होना ही पाप है; और जो हमें शान्ति, स्वाधीनता और हमारी अन्तर्प्रकृतिकी ओर लेजाता है वही धर्म है।

४-अपने सुखका अपनेसे विजातीय और स्वतंत्र वस्तुओंपर आश्रित होना ही 'इच्छा' है....दूसरे शब्दोंमें हम इसे 'दुख' कह सकते हैं। इच्छा हीनता, स्वाधीनता और शान्ति एक ही वस्तुके नाम हैं।

५-'अहिंसा' पूर्णता है-क्योंकि पूर्ण व्यक्ति ही अपने आपमें पूर्ण होनेसे न किसीको दुख देती है और न किसीसे दुखित ही होती है।

६-'त्याग' प्रेमका संकोचन नहीं अपितु विस्तार है। ओ झूठे प्रेमी! तू जिसे तेरा 'प्रेम' कहता है वह केवल कुछ वस्तुओंकी कुछ अवस्थाओंके प्रति एक क्षणजीवी आकर्षण है। 'प्रेम' के इस पक्षपातका त्याग कर फिर देख कि तेरा 'प्रेम' सब वस्तुओंको सब अवस्थाओंमें सदा आलिङ्गन करता है।

७-सच्चे प्रेमीके लिये सब वस्तुएं सुन्दर हैं, उसके लिये असौंदर्यका अस्तित्व कहीं है ही नहीं!

८-वस्तुओंसे नहीं बल्कि उनके सम्बंधमें तेरे ज्ञानसे तू प्रेम या घृणा करता है। अतः किसी वस्तुके प्रति प्रेमभाव या घृणाभाव प्रदर्शित करनेमें तू अपने पर ही प्रेम या घृणा प्रदर्शित करता है!

९-अपनी आत्मासे प्रेमकर और तू सारे विश्वसे प्रेम करेगा, क्योंकि तू स्वयं ही सारे विश्वका ज्ञान है।

१०-अपनी आत्मासे प्रेम कर, अपनेको पहिचान और जैसा तू है वैसा बन जा-यही पूर्णत्वको प्राप्त करनेका मार्ग है। जिस क्षण तू पूर्ण रूपसे अपने आपसे एक होजायगा उसी क्षण तू सर्वज्ञ है- मुक्त है, हां, साक्षात् प्रभु है।

ओ अहंकारी! केवल तू अपने वास्तविक 'अहं' को जानले और देख तेरे इस 'अभिमान' की महात्मागण प्रतिस्पर्धा करेंगे। ओ स्वार्थी मनुष्य! अपने सच्चे 'स्व' को जान और फिर देख कि तेरा यह 'स्वार्थ' ही 'निस्वार्थपन' का आदर्श बनजाता है।

११-शोक, द्वेष, वेदना, भय और इसी प्रकारकी अन्य बुराइयां तेरी ही कल्पनाकी सृष्टि है-तो फिर तू इनके लिये दूसरोंको क्यों दोष देता है?

१२-तू तेरे संसारका स्वयं सृष्टा, पालनकर्ता और संहर्ता है, और तेरा संसार क्या है? तेरी भावनाएं, तेरे विचार, तेरी इच्छाएं और बाह्य वस्तुओंके सम्बन्धकी तेरी कल्पनाएं।

१३-परिवर्तन और स्थिरता सत् है जो कि 'हरि, हर और ब्रह्मा' इन तीन रूपोंमें विदित होता है। 'हरि 'स्थैर्य' है, 'हर' पूर्व अवस्थाका नाश है और 'ब्रह्मा' नवीन अवस्थाका सर्जन है। ये तीनों साथ २ काम करते हैं और साथ २ अस्तित्व बनाये रखते हैं-अनन्त हैं, सर्व व्यापी हैं, सारे ब्रह्मांडका कारण अन्त और अस्तित्व हैं-स्वयं सारा ब्रह्माण्ड ही हैं।[1]

१-ईश्वरलाल 'रत्नाकर' द्वारा अनुवादित।

विज्ञान और जैन धर्मकी तुलना।

(लेखक-पं० महेन्द्रसिंह न्यायतीर्थ वैद्यभिषग् विशारद-बड़नगर)

जीवनका वायु और श्वासोच्छ्वाससे संबंध।

वैज्ञानिकोंका मत है कि "वायुका हमारे जीवनसे घनिष्ट सम्बंध है, क्योंकि वायुके विना हम श्वास (सांस) नहीं ले सकते और श्वासके बिना हमारा जीवन नहीं हो सकता। अत: स्पष्ट ज्ञात होता है कि वायुपरे हमारा जीवन निर्भर है। किन्तु स्वास्थ्यके लिये शुद्ध वायुकी विशेष आवश्यकता है। यहांतक कि स्वच्छ वायुके विना जीवित नहीं रह सकते। इसके लिये कलकत्ताकी कालकोटरीका स्पष्ट उदाहरण है। कलकत्तामें १९ फुट चौड़े और १८ फुट लम्बे एक छोटेसे कमरेमें रात्रिके समय १४९ मनुष्य बंद कर दिये गये थे। प्रात:काल किवाड़ खोलनेपर २३ मनुष्य जीवित निकले शेष १२२ मनुष्य मर चुके थे। किसी अन्य समय एक जहाज किसी कारणवश तूफानमें आगया। उसके कप्तानने मुसाफिरोंकी रक्षाके लिये १५० आदमियोंको जहाजकी एक कोठरीमें बंद कर दिया। तूफान समाप्त होनेपर कोठरीका दरवाजा खोला गया तो केवल ७० मनुष्य जीवित थे, बाकी ८० मनुष्य मर गये थे।

इन दोनों घटनाओंका कारण एक किस्मका पदार्थ है जो मनुष्यकी सांसमें पाया जाता है। वायुमें इसकी मात्रा अधिक होनेपर मनुष्य एकदम मर जाता है। इसको (Carbonic acid gas) कारबोनिक एसिड गैस कहते हैं। सामान्य वायुमें इसका परिणाम १०००० भाग। सामान्य वायुमें ४ भाग (Carbonic acid gas) कारबोनिक एसिड गैस होता है। लेकिन श्वासके द्वारा जो वायु निकाली जाती है उसमें इसका परिणाम १०००० भागमें ४४.० होता है। इससे मालूम होता है कि प्रश्वास वायु बहुत हानिकारक है।

वैज्ञानिकोंने अग्निके सिवाय पृथ्वी, जल और वायुको पुद्गल (Matter) माना है। इनमें पुद्गलपना सिद्ध करनेके लिये (रूप रस गंध स्पर्श और भारीपन) कारण बताये हैं। विषयान्तर होनेसे अन्य समयमें इसकी मीमांसा की जायगी।

जैनमत-में "वायुस्तावत् रूपादिमान् स्पर्शवत्वात् घटादिवत्" तत्वार्थराजवार्तिक पृष्ट नं० १९९ अ० ५ में लिखा है कि (भावार्थ) वायु भी रूपादि वाली हैं क्योंकि वायुका स्पर्श होता है-जैसे घटादिका रूप स्पर्शन इंद्रियसे स्पृष्ट (छुआ) जाता है, उसी प्रकार वायुका भी ज्ञान होता है। इस लिये उसके सहभावी रस, गंध आदि अवश्य हैं। इससे वायुको पुद्गलपनाकी सिद्धि होजाने पर उसके उपकारका वर्णन तत्वार्थसूत्रमें इस प्रकार किया है।

" शरीर वाङ्मन: प्राणापाना: पुद्गलानाम् "

भावार्थ-शरीर, मन, वचन और श्वास उच्छ्वास ये पुद्गलोंके उपकार हैं। जैन मतमें दश प्राण माने गये हैं जो कि जीवनके आधारभूत होते हुए बाह्य ज्ञापक हैं। जिन अभ्यंतर कारणोंसे जीव जीते हैं उन्हें प्राण बताया है। (गोमटसार जीवकांड)

वाहिर पाणेहिं जहां तहेव अभ्यंतरेहिं पाणेहिं।
पाणंति जेहिं जीवा पाणा ते होंति णिद्दिट्ठा ॥

भावार्थ-जिस प्रकार अभ्यंतर प्राणोंके कार्यभूत नेत्रोंका मूंदना, खोलना, वचन, उच्छ्वास

निःश्वास होते हैं, उसही प्रकार जिन अभ्यन्तर कारणोंसे जीव जीते हैं उन्हें प्राण कहते हैं। इस प्रसंगमें केवल श्वासोच्छ्वास पर विचार करते हैं। श्वासोच्छ्वासकी प्रत्येक प्राणीको आवश्यक्ता होती है। यहांतक कि जैन मतमें एकेन्द्रियके भी चार प्राण बतलाये हैं जिनमें श्वासोच्छ्वास भी है। इसलिये वे भी पवन आदिका ग्रहण करते हैं और छोडते हैं। यानि एकेन्द्रियसे लेकर पंचेन्द्रिय जीवोंके पर्यंत श्वासोच्छ्वास पाया जाता है और उसके रहने पर ही वैद्य डाक्टर आदि जीवनका ज्ञान करते हैं। इस प्रकार जीवनका वायुसे घनिष्ट सम्बन्ध सिद्ध हो जाता है।

दूसरा स्वच्छ वायु स्वास्थ्य वर्द्धक है किन्तु (Carbonic acidgas) कारबोनिक एसिड गेस यानी उच्छ्वास "कोष्ठ्यो वायुरुच्छ्वास लक्षणः" अर्थात् जो वायु भीतर खींचीथी उसके निकालनेको उच्छ्वास कहते हैं। यह वायु अवश्य भीतरके अशुचि रक्त आदि वस्तुके सम्बन्धसे अशुद्ध हो जाती है जो कि स्वास्थ्यके लिये हानिकारक है तथा पुद्गलके वीस गुणोंमें सुगंध दुर्गंध भी गुण पाये जाते हैं। अतः बाह्यकी वायुमें अशुद्ध वस्तुओंसे संसर्ग होनेपर वे स्वास्थ्यके लिये लाभदायक होती हैं। इसीलिये बगीचा जंगल स्वच्छ वायु जीवनके लिये हितकर होती है और बन्द मकानकी वायुसेवन, नजदीक शयन आदि हानिकारक बताये हैं।

तम्बाकूके दोष।

माया तमाकूकी अटल, संसार भरमें छारही।
सब लोग उसके भक्त हैं, विषवेलि बढती जारही॥
कोई इसे है खा रहा, कोई इसे है पी रहा।
सबके लिये क्या है अमृत इससे जगत है जीरहा॥१॥
छोटी बड़ी सब जातियां, इसके पडी हैं फन्दमें।
चढ़ती चिलम दिन रात है, पीते बडे आनन्दमें॥
इसमें "निकोटिन" नामका रहता गरल जो है बसा।
वह धूमके द्वारा हृदयको, पूरकर करता नशा॥२॥
अभ्यास इसका डालना, है हानिकारक भी महा।
दम और खांसी आदिका, सामान बढता जारहा॥
मन्दाग्नि है रहती सदा, मल शुद्ध होता है नहीं!
है फूलता जब पेट है, तब दर्द फिर खोता नहीं॥३॥
मरते अनेकों जीव हैं गुड और शीरामें पडे।
मिट्टी तथा गर्दा मिले, जो हानिकारक हैं बडे॥
जूंठी चिलम सब लोग हैं, पीते परस्पर प्रेमसे।
क्या धर्म बाकी रह गया, ऐसे निराले नेमसे॥४॥
खाना तमाकूका भला, कैसा बुरा अभ्यास है।
फिरते पसारे हाथ हैं, रहती नहीं जब पास है॥
बेचैन ऐसे होरहे, मिलती तमाकू जब नहीं।
मानों अखिल संसारमें, सुख और कोई है नहीं॥५॥
मुखमें तमाकू हैं भरे, बस थूकनेकी फिक्र है।
है नीरसे भरता बदन, सुनते जहाँ पर जिक्र है॥
रस पेटमें इसका गये, होने वमन लगती अहो।
ऐसी विषैली चीजको, क्यों आप खाते हैं कहो॥६॥
कुछ लोग सुँघनी रूपमें, हैं नासिकामें भर रहे।
चैतन्य अपने चित्तको, इस भांति सोचे कर रहे॥
है ज्योति नेत्रोंकी अहो? इससे जवानीमें गई।
हो "पायरिया" भी दंतमें है कोसमें एनक नई॥७॥
बरबाद अपने हो चुके, सन्तान भी बरबाद है।
हैं सीखते सब प्रेमसे, इसमें धरा क्या स्वाद है?॥
जबतक न संयमपर चलो, क्या देशका उद्धार है।
संयम हमारा धर्म है, यह एक उन्नतिद्वार है॥८॥

"वैद्य"

जैन समाज और बेकारी।

[ले०-श्री० बंशीलाल पाटनी-नांदगांव।]

आर्थिक परिस्थिति।

देश व समाजकी दरिद्रता या बेकारी आज सुज्ञ समाजके लिए एक विचार-प्राप्त विषय होगया है। किसी समय साहू या धनाढ्य माने जानेवाली जैन समाज जिस शीघ्रतासे बेकारीकी ओर झुक रही है, उसे देख यह शंका हो उठती है कि जैन समाजका नामोनिशान कहीं दुनियासे उठ न जाय। क्योंकि जैसे प्रायः धनहीन या दरिद्रताके कारण एक कुटुम्बका सर्वनाश होनेमें देर नहीं लगती, उसी प्रकार यदि धनहीन समाजका उसकी बेकारीके कारण कालान्तरमें किन्तु शीघ्र लोप होजाय तो इसमें कोई आश्चर्यकी बात नहीं। जैन समाजकी आर्थिक परिस्थितिका यदि सूक्ष्म अवलोकन किया जाय तो यह सहज ही पता लग सकता है कि हमारे कितने ही भाई बेकारीके कारण अर्धपेट भोजन कर अपना समय कितने कठिनताके साथ बिता रहे हैं।

यद्यपि हमको अभीतक वह अवस्था प्राप्त नहीं हुई है, जिससे कि हमको अन्य समाजका या किसी अन्यछत्रकी शरण लेनी पड़े। परन्तु यदि यही अवस्था कुछ काल तक और बनी रही या समय रहते बेकारीको हटानेका उपाय जोरशोरसे नहीं किया गया तो वह समय दूर नहीं है कि हम अपने ही भाइयोंको अन्य समाजके द्वारपर बिलखते हुए या भीख मांगते हुए पाएंगे।

लक्ष्मी पुत्रोंकी भरमार।

यह हर्षका विषय है कि अभी भी जैनसमाजमें लक्ष्मी-पुत्रोंकी कुछ कमी नहीं है। इन लक्ष्मी-पुत्रोंके कारण ही जैनधर्मका अस्तित्व आज टिका हुआ है। हर वर्ष कहीं न कहीं बड़ी २ प्रतिष्ठाएं, मेले ठेले, सभाएं इत्यादि कराकर जैनधर्मकी प्रभावना होती रहती है। परन्तु इतने मात्रसे यह नहीं माना जासकता कि जैन समाज सुखी है। लक्ष्मी-पुत्रोंके द्वारा लाखों रुपयेकी रेलछेल हरवर्ष हुआ करती है। परन्तु उन्हींके पड़ोसियोंकी भी क्या हालत है? वे लोग किस तरह दुःखमय अवस्थामें अपने जिन्दगीके दिन काट रहे हैं? इस ओर हमारे लक्ष्मी-पुत्रोंका ध्यान आकर्षित नहीं होता यह खेदकी बात है। किसी लेखकने लिखा है कि-'यदि हम अपना अस्तित्व, मान और प्रतिष्ठाके साथ कायम रखना चाहिते हैं तो हमें अपने पडोसियोंकी (दिनबन्धुओंकी) उन्नति अवनतिका ध्यान अवश्य रखना चाहिए।' कहना नहीं होगा कि जबतक उन दिनबन्धुओंकी सहायता धनाढ्योंकी संपत्तिसे नहीं हो पाती-तबतक धनवानोंकी धनाढ्यता कौड़ी कीमतकी भी नहीं। अर्थात् वह अधिक समय तक टिकनेकी पात्र नहीं।

बेकारोंके लिये आवश्यक्ता।

हमारी समाजमें बेकारिका साम्राज्य अधिकाधिक बढ़ता जारहा है। कई भाई दानोंके लिए तरसते फिरते फिरते हैं। उन्हें पेटभर खानेको नहीं मिलता। घरमें गृहिणी व बालबच्चे भूखों मरते हैं। दरिद्रताके कारण रोग और मृत्यु उनके घरके मेहमान हैं। इसका कारण आप कह सकते हैं-उनकी आलस्यता या मेहनतकी कमी है? नहीं! नहीं!! इसका कारण उनकी आलस्यता या मेहनतकी कमी नहीं है। कमी है केवल कामकी व पूंजीकी। हमारी समाजमें ऐसे

सैंकडो सुशिक्षित नव युवक या घराने मिलेंगे, जो कि सब प्रकारकी कला कुशलता, व्यवसाय चातुरी एवं योग्यता रखते हैं। परंतु फिर भी उन्हें दारिद्रयमें समय काटना पड़ता है। इसका कारण वे पूंजीके अभावमें अपनी योग्यता प्रगट नहीं कर सकते। भला, अपनी समाजमें ऐसे होनहार बेकार बन्धुओंके लिये अन्य समाजकी तरह ऐसा कोई फण्ड या मार्ग नहीं खुलाकर रखा है कि जिसमेंसे अपने व्यवसायके लिये उचित वापिसी मदद लेकर वे अपने कला कौशल्यके विकाशमें या व्यवसाय वृद्धिमें लगकर अपनी स्वतंत्र आजीविका कर सकें। इस विषयमें अन्य जातियोंकी उदारता अनुकरणीय है। हम भी समाजके पूंजी–पति जैसे– श्री० सर सेठ हुकुमचन्दजी इंदौर, श्री० सेठ भागचन्दजी अजमेर, श्रीमान् सेठ लालचन्दजी सेठी झालरापाटन, श्री० रा० ब० लाला हुलासरायजी सहारनपुर, श्री धर्मवीर सेठ रावजी सखाराम दोशी सोलापुर, श्री० सेठ चैनसुखजी गंभीरमलजी कलकत्ता आदि महानुभावोंसे सानुरोध निवेदन करेंगे कि वे भी हमारी जैन समाजमें शीघ्रही एक ऐसे विशाल 'बंधु-सहायक-फंड' की योजना करें, जिसके द्वारा हमारे असमर्थ भाइयोंको मदद की जासके, ताकि समाजमेंसे वेकारीका समूल उच्चाटन होजावे।

भाग्यके भरोसे न रहो।

अकसर करके हमारी समाजमें कई महाशय ऐसे हैं जो केवल भाग्यके भरोसे या ईश्वरेच्छापर विना व्यवसायके बैठे रहते हैं। उनकी पूंजीका लाभ न तो वे स्वयं उठाते हैं और न अपने बेकार दीन-बंधुओंकी सहायतार्थ ही लगाते हैं। वे मात्र 'Eat merry and enjoy' खाओ, पीओ और मजा उड़ाओके सिद्धांत! में मस्त होजाते हैं। इन लोगोंकी इस तरहकी वृत्ति समाजमें बेकारी-वृद्धिकी कारण पड़ती है व देश व समाजको अवनतिके गहरे खड्डेमें ढकेल देती है। ऐसे लोगोंको समयपर सावधान होकर व्यवसाय मार्गमें लगना जाहिये।

वाणिज्य वृद्धिकी आवश्यकता।

हमारी समाजके श्रीमान् लोग अपनेको बड़ा व्यापारी समझ खुशीमें खुर्राटें भरा करते हैं। वे नये नये धन्दे, कला, कारखाने खोलकर अपनी सर्वांगण उन्नति करना नहीं जानते। इस विषयमें समाज श्रीमानोंको विलायतवालोंका अनुकरण करना चाहिये। विलायतवाले अपने२ व्यापारमें शीघ्र ही उन्नति कर लेते हैं। इसका कारण वे जिस किसी कार्यको उठाते हैं, उसे पूर्ण उत्साहके साथ करते हैं। वे भाग्यके भरोसे बैठ रहना पसंद नहीं करते। न वे सबके सब किसी एक ही मार्गकी ओर नहीं दौड़ते। जैसा कि अकसर हमारे व्यापारी लोग किया करते हैं। हम लोग केवल वाणिज्यमें ही अपनेको लगा लेते हैं।

परिणाम यह होता है कि सबका एक ही मार्ग होनेसे कोई भी अपनी आर्थिक उन्नति नहीं कर पाता, क्योंकि हरएक दूसरेको गिरानेकी चेष्टा किया करता है। फल स्वरूप सबको ही अपने व्यवसायमें बेकारीका अनुभव होने लगता है। एतावता समाजके श्रीमानोंको चाहिए कि वे अपनी समाजमें नये २ धंधे २ कला कारखाने कंपनियो इत्यादि खोलकर समाजमें उद्योग कला व ऐश्वर्यकी वृद्धि करे। इस तरहका मार्ग स्वीकार करनेसे हम दो तरहसे फायदा उठा सकते हैं। अर्थात् खोले गये, नये २ व्यवसायोंमें हम अपने ही सुयोग्य बेकार भाइयोंको कामपर रख सकते हैं व हमारी आर्थिक उन्नति भी शीघ्रतासे हो सकती है। अब समाजके पूंजीपतियोंका मात्र वाणिज्य–व्यवसायमें बढतीकी आशा रखना व्यर्थ है। अब वह

समय गया जब कि वाणिज्य व्यवसाय हमारे ही हाथोंमें था। उस समय हम अपने सजातीय दीन बन्धुओंको वाणिज्य व्यवसायमें लगाकर भी अपनी उन्नति करलेते थे। किंतु अब वाणीज्य--व्यवसाय हमारे हाथोंसे प्रायः निकल गया है। अन्य जातियां अब वाणिज्य व्यवसायमें आगे बढ़रही है व उनने शिक्षित होनेके कारण कहीं हमसे बढ़कर सफलता प्राप्त की है अतः यदि वाणिज्य व्यवसायके अतिरिक्त उपरोक्त उपायका अवलंबन हमारे पूंजीपति करे तो शीघ्र ही बेकारीकी एक महान् त्रुटिकी पूर्तता होसकती है।

धनवानोंका कर्तव्य।

देशकी परिस्थितिने समाजको इतना बेकार बनादिया है कि व्यापारी भी अपनी बेकारीके विषयमें चिल्लाते नजर आते हैं। बेकार किन्तु किसी समय अच्छा व्यापारी होनेके कारण व समाजका मुख उज्वल रखनेके वास्ते न तो वह भीख ही मांगता है और न पेटभर ही खा सकता है। ऐसे एक नहीं सैंकडो उदाहरण पेश किये जासकते हैं। गरज यह कि यदि शीघ्र ही समाजके पूंजीपतियोंका एवं मुखियोंका इस ओर लक्ष्य आकृष्ट नहीं हुआ या उनने बेकारी हटानेके लिये झटीति प्रयत्न नहीं किया तो ये हमारे भाई दरिद्रताके कारण निर्लज्ज एवं निर्बुद्धि बन जावेंगे व धर्म कर्मको तिलांजलि देकर अन्य अनुचित उपायोंका आलम्बन कर पेटकी क्षुधा ज्वाला जिस किसी तरह शांत करनेमें कदापि आगा पीछा नहीं करेंगे।

राक्षसी व्यर्थव्यय।

जैन समाजकी व्यर्थ व्ययकी राक्षसी कुरीतियोंने तो समाजके कई घरोंका सफाया कर डाला है। बेकारीके कारणोंमें इन व्यर्थ व्ययकी कुरीतियोंने अपना पहला नंबर पटका है। गरज यह कि जितनी उत्तेजना बेकारीको इन कुरीतियोंके कारण मिली है, उतनी शायद ही किसी अन्य कारणके द्वारा हुई हो। हमें लज्जा मालूम होती है कि इन कुरीतियोंके सर्वोपरी कारण हमारे समाजके धुरीण कहलानेवाले श्रीमान् लोग ही हैं। उन लोगोंको जरा भी शर्म नहीं मालूम होती कि एक तरफ तो हमारा जातीय बंधु भीख मांग रहा है, और दूसरी तरफ हम बेखटके ऐश आराममें, ऐय्याशीमें, आतिशबाजीमें, रण्डियोंके नाच व तमाशे देखनेमें अपने धन व शक्तिका दुरुपयोग कर रहे हैं।

वे यह नहीं सोचते कि यदि आज हम अपने दीन बन्धुओंकी सहायतार्थ बेकारी-निवारणके लिए अपने धनका सदुपयोग नहीं करते हैं तो एक दिन हमको भी उसीकी तरह दर दरका भिखारी बनना पडेगा। अब यदि हम अपनी समाजको सुसंपन्न अवस्थामें देखना चाहते हैं तो हमारे श्रीमानोंको व मुखियाओंको चाहिए कि वे सत्यनाशिनी कुरीतियोंका समाजमेंसे जडमूलसे नाश कर दे।

व्यापारी वर्ग जैनोंको आशरा दे।

हमारी समाजमें यह प्रथा बहोत कमसी है कि श्रीमान् लोग अपने २ यहांकी पीढियों, दुकान, या कारखाने इत्यादिमें अपने ही सजातीय भाइयोंको नौकरीसे लगावें। उनकी आमदनीका अधिकांश भाग अन्य ज्ञातिके नौकरोंके घरोंमें चला जाता है। जब कि समाजके सुयोग्य बांधव नौकरीके अभावमें बेकार बैठ रहते हैं। लेखकने कई श्रीमानोंकी दूकानें देखी है। जिनमें शायद ही कोई स्थानीय या पर स्थानीय जैन बांधव कार्य कर्ता दिखलाई दे। परन्तु अजैन बांधवोंकी भरमारसी रहती है। यदि उनसे पूछा जाय ऐसा क्यों? तो वे कह बैठते हैं कि जैनियोंपर हमारा विश्वास नहीं या हम उनके कारण ऊपर आते नहीं। अफसोस!

जहां ऐसे २ हितचिंतक ! श्रीमान् समाजमें मौजूद हों तो हम नहीं कह सकते कि हम कहांतक अपने समाज या धर्मकी उन्नति कर सकते हैं। अत: जिन श्रीमानोंके ऐसे गलत खयाल हों तो उन्हें वे अपने हृदय-मंदिरसे निकाल दें। जैनियोंको ही रखनेकी भीष्म प्रतिज्ञा वे आजसे करलें तो नौकरीके अभावमें बेकार बन्धुओंकी सहायता भी सहज-साध्य होसकती है। क्या हमारे श्रीमान् इस ओर अपना लक्ष्य पहुंचाकर अपने दीन हीन गरीब भाइयोंकी रक्षा करनेमें तत्पर होसकेंगे।

संस्कृत शिक्षाके बादकी स्थिति–

बहुधा देखा गया है कि जितने भी उच्च २ संस्कृत विद्यालयोंसे छात्र पढ लिखकर निकलते हैं, उन्हें पहली चिंता यह हो उठती है कि अब हम अपना जीवन–निर्वाह कैसे करें ? बस ! फिर क्या है। जहां कहीं 'आवश्यक्ता' शीर्षक समाचार पढ़ते हैं, झटसे अर्जियां खरडना शुरू करते हैं। उनमेंसे किसी एक दोके सद्भाग्यसे कहीं किसी पाठशालामें या धर्मार्थ संस्थामें नौकरी मिलजाती है। बाकीके सब योंही ताके रहजाते हैं व अपने जिन्दगीके दिन उन्हें बेकारीमें काटना पड़ता है। गरज यह कि विद्यालयोंमें संस्कृत पठन पाठनके सिवा आर्थिक (औद्योगिक) शिक्षण नहीं दिया जाता जिसके द्वारा छात्र अपनी स्वतंत्र आजीविका कर आर्थिकोन्नतिके साथ २ जैन धर्मकी प्रभावना करसकें। ऐसे विद्यार्थी हर वर्ष बेकारोंकी संख्या-वृद्धि करनेमें कारण होते हैं। हर्ष है कि इंदौरके महाविद्यालयमें, श्री सेठ हुकमचंदजीके सद्प्रयत्नसे, वहां पढ़नेवाले छात्रोंके लिए औद्योगिक शिक्षणका भी प्रबन्ध किया गया है। आशा है अन्य विद्यालयोंके अधिष्ठातागण भी उक्त विद्यालयकी तरह अपने २ विद्यालयोंमें भी उचित रूपमें औद्योगिक शिक्षणका प्रबन्ध करेंगे।

आपत्तिका मूल बेकारी।

किसी लेखकने लिखा है कि–'दरिद्रतासे लज्जा उत्पन्न होती है। लज्जासे अपना अधिकार गिर जाता है। अधिकार गिरनेसे अपमान होता है। अपमानसे दु:ख और दु:खसे शोक उत्पन्न होता है। शोकसे बुद्धि हीन होती है और निर्बुद्धि नाशको प्राप्त होता है। इस प्रकार दरिद्रता या बेकारी ही सारी आपत्तियोंका मूल है।

उपरोक्त लेखकके कथनानुसार यह स्पष्ट है कि बेकारी समाजका नाश कर डालती है। अत: यदि हम ऐसी भीषण परिस्थितिसे बचना चाहते हैं; हमारे बेकार जातीय बांधवोंकी रक्षा करना हमें अभीष्ट हैं तो हमें चाहिए कि हम शीघ्रही उक्त कारणोंपर विचार करके समाजमेंसे बेकारीको हटानेका प्रयत्न करें।

बेकारी मिटानेके उपाय।

अत: यदि संक्षेपमें निम्न उपायोंका अवलंबन किया जावे तो बेकारी सहज ही दूर हो सकती है–

(१) हरएक विद्यालयोंमें उच्च धार्मिक व संस्कृत शिक्षणके साथ २ औद्योगिक शिक्षणका भी प्रबंध किया जावे।

(२) श्रीमानोंको अपने यहां पीढ़ियोंपर, दुकानोंमें, कारखानोंमें जैनोंको ही नौकरी देना चाहिये।

(३) जहांतक बने वहांतक प्रत्येक व्यवसाय कार्य जैनियोंके साथमें ही किया जावे।

(४) इसी प्रकार जैन व्यवसाय, पूंजी व मेहनतको ही उत्तेजना दी जावे। और—

(५) एक ऐसा विशाल "जैन बन्धु सहायक फण्ड" खोला जावे, जिसके द्वारा बेकार जैन बांधवोंको व्यवसाय खोलनेको मदद की जासके।

संतानोत्पत्ति।

(लेखक-अमृतलाल जैन-रोहतक।)

हिन्दुस्तानके दरिद्र होनेका मुख्य कारण दिन पर दिन मनुष्य संख्याकी बढ़ती है। इस अधिक संतानोत्पत्तिपर भारतवासियोंको कदाचित् अभिमान हो और वे समझते हों कि उनमें संतानोत्पत्तिकी शक्ति अधिक है पर यह भ्रमपूर्ण धारणा है। दरिद्र, कमजोर और भूखी मरनेवाली जातियां अज्ञानतावश भारतमें किस तरह विवाह शादियोंको कराते हैं और संतान उत्पत्तिमें लापरवाही रखते हैं यह प्रथा अन्यत्र नहीं।

हम प्रत्यक्ष देखते हैं कि घरमें बालबच्चोंके खाने पीनेका बिल्कुल प्रबंध नहीं होता। मां बाप एड़ीसे चोटी तक पसीना बहा अपना पेट काटकर भी बच्चोंके पालनेमें समर्थ नहीं होते हैं। फिर भी हर साल या दूसरे वर्ष बच्चा पैदा करते जाते हैं। इसको अपनी अज्ञानता न समझ विधाताकी देन समझते हैं। शिक्षित समाज भी अपनी आमदनी और बच्चोंके पालनेकी अयोग्यता जानते हुये भी बच्चे पैदा किये जाते हैं। संतान पालनके साधन गाय, भैंस रखना तो आमदनीके अभावमें कठिन है फिर संतान उत्पत्ति ही क्यों की जावे?

याद रखिये बच्चे मरनेके लिये नहीं पैदा होते, यदि वह पैदा होकर मर जाते हैं तो इसमें हमारा ही दोष है। यदि हम अपनी दुर्दशा जानते हुये भी संतान पैदा करें और वह मर जाय तो उनका खून हमारे सिर है। उनकी मृत्युके पापभागी हम ठहराये जायंगे। हमारी असावधानी और खुदगर्जीका फल है कि एक वर्षके नीचे आयुके बच्चे १००० में ९०० के करीब मर जाते हैं। या यों कहिये कि भारतमें ४०००००० लाख बच्चोंकी मृत्यु प्रति वर्ष होती है। यह दशा भारत जैसे गरम देशकी है, जहांकी आबहवा बच्चोंको जीवित रखनेके लिये माफिक है, जहां स्त्रियोंको बहुधा कारखानोंमें काम नहीं करना पड़ता है, जीवन संग्राम जहां कड़ा नहीं है और जहां बच्चोंको दाई नहीं बल्कि स्वमाता पालती है। इंग्लैंड, फ्रांस आदि देशोंमें जहां कड़ी सरदी पड़ती है और जहां माताओंको बच्चोंको छोड़कर बाहर काम करना पड़ता है, जहां किरायेकी दाइयाँ बच्चोंको पालती हैं फिर भी वहां बच्चे कम मरते हैं। अन्य देशोंमें मृत्यु संख्या दिनोंदिन कम होती जारही है पर भारतकी मृत्युसंख्या बढ़ती जाती है। ये अल्पजीवी बालक वृथा पैदा किये जाते हैं। अपने जन्मके पूर्व और पश्चात् मृत्यु तक माताकी शक्ति तथा धनको व्यर्थ चूसनेवाले होते हैं। ये माताको युवावस्थाके सुख और सौन्दर्यको नाश करनेके अतिरिक्त कोई आनंद नहीं देते हैं। ऐसे बच्चोंको जिनके पालनपोषणका हम प्रबंध नहीं कर सकते जिन्हें हम दीर्घायु और बलवान नहीं बना सकते, जिनकी योग्य शिक्षाका प्रबंध नहीं कर सकते, पैदा करना महा पाप है, घोर असभ्यता है।

भारत सरकारकी मर्दुमशुमारीकी रिपोर्ट इस अत्यंत अधिक जन्म और मृत्यु संख्याके बारेमें लिखती है कि जब भारतवासी शरीरशास्त्रके नियमोंको समझकर विचारपूर्वक विवाह और संतान उत्पत्ति करेंगे तब जन्म और मृत्युसंख्या आपसे आप कम हो जायगी। विवाहकी शय्यासे ऐयाशीको उठादो और काम शक्तिको अपना मालिक न बना रक्खो, शरीर शास्त्र और समयके मुताबिक सावधानीसे विचारपूर्वक इस शक्तिसे काम लो तो विवाहित जीवनकी मुसीबतें आपसे आप आधी हो

મહામંત્રીનું નિવેદન.

ગુજરાતના દિ. જૈન ભાઇઓ ને બ્હેનો,

જય મહાવીર.

સુરતની પરિષદનો અહેવાલ, સભાનું બંધારણ, તેના ઠરાવ, ગુ. દિ. જૈનપંચોને વિનંતિ, દરેક પંચને વિચારવા યોગ્ય પંચના બંધારણનો ખરડો અને વરિત પત્રકનું ખોખું એ તમામ કાગળનું જુથ દરેક ગામના દરેક દિ. જૈન પંચને મંત્રીજી તરફથી મોકલવામાં આવ્યા હતા. તે કેટલીક પંચના કાર્યકર્તાનેજ મળ્યા, કેટલેક ગામે ગમે તેને મલ્યા હશે, અને કેટલેક સ્થાનથી સાચા સરનામાના અભાવે પાછા ફર્યાં. દરેક ગામ અને પંચને પહેલીજ જાહેર વિનંતિ હતી કે "પોતાના પંચ અને કાર્યકર્તા કે શેઠનું નામ સરનામા સાથે મહામંત્રીને મોકલવું પણ એ તરફ ધ્યાન અપાયું નથી. સમાજની સુસ્તી આગેવાનોની સુસ્તિ પર આધાર રાખે છે. એટલે ફરી ઉત્સાહી નરોને વિનવું છું કે પોતાના ગામ અને આજુબાજુના ગામોમાં પણ પ્રચાર કરી દરેક ગામના દિ. જૈન પંચના આગેવાન અગર તો પત્ર વ્યવહાર માટે નિમેલા સદ્‌ગ્રહસ્થનું નામ સરનામું પુરું મહામંત્રીને અંકલેશ્વર મોકલી આપવા તસ્દી લે.

ગયા માસમાં દરેક પંચ સાથે પત્ર વ્યવહાર ચાલુ કર્યો. સરનામા પુરાં ખબર નહી એટલે સાણોદ, ખાનપુર, વલાસણ, ગોરા, કરોલ એ ગામોના એ પત્ર પાછા ફર્યાં છે, સેવક માને છે કે જુદા જુદા સંભા કે મોટા પંચના આગેવાન પોતાની પંચના માણસો જે જે ગામે રહે છે તે ગામ અને આગેવાનનાં નામ લખી મોકલે તો સરનામામાં ભૂલ થવાનો સંભવ રહેશે નહીં.

મોકલેલ પત્રના જવાબ કેટલાક તરફથી આવ્યા છે, ને પત્ર વ્યવહાર ખુબ થયો છે. મંત્રીજીનું દેવગઢ પધારવું, સેવકને ઘરે માંદગી અને તેમાં વળી નરશીંહપુરા કોમનો ઝગડો આ માસમાં પતી જશે એ માટે જોવાયલી રાહ એ વીગેરે કારણોને લીધે કોઇ ગામે પારષદના કામે હમે કોઇ જઇ શકયા નથી તે માટે દીલગીર છીએ.

જે ભારે પત્ર વ્યવહાર ચાલ્યો છે, એ બતાવે છે કે પ્રાંતિક સભાના કામ માટે ઘણાને ઉત્સાહ ને જીજ્ઞાસા સારી છે. **નરસિંહપુરા કોમના ઝઘડાના સમાધાન માટે ઇચ્છા જ્યાં ત્યાંથી દર્શાવાય છે,** તે વિશે દિગંબર જૈનમાં પણ છાપવા અમુક ભાઇઓનો આગ્રહ છે, પણ ઝીણી બાબતો લખી લેખ લંબાવવા કે બન્ને પક્ષને રસે ચઢાવવા કોઇ ઇચ્છે નહી! ઝહેર નરસિંહપુરના પંચ–પક્ષ જરા જરા

जायगी, पति-पत्नीमें प्रेम अधिक होगा और उनका सुख तथा आनंद बढ़ेगा, संतान कम पैदा होगी। संतानपर माता-पिताका अधिक प्रेम, अधिक समय और अधिक द्रव्य खर्च कर सकेंगे। इससे लड़की लड़के बलवान् दीर्घायु और प्रसन्नचित्त होंगे और ऐसा घर स्वर्ग जैसा आनंद दे सकेगा। स्त्रियां केवल भोगविलासके लिये ही नहीं बनाई गई हैं, जो पुरुष स्त्रियोंके शरीरको उनके सुख और दुखपर ध्यान न देकर अपने ही सुख और आरामके लिये खुदगर्जीसे काममें लाते हैं वे विवाहके अधिकारके बाहर जाते हैं, और विवाहशय्याको अपवित्र करते हैं। ऐसे कामी पुरुषोंके विवाहको व्यभिचार कहते हैं।

** जो देश तथा जो जाति विवाहकी शय्या केवल भोगविलासके लिये ही ठीक समझती है वह जीवित नहीं रह सकती है उसका विनाश निश्चय होगा। जितने बच्चोंका पालनपोषण शिक्षण हम भली-भांति कर सकते हों उतनी ही संतानोत्पत्ति हमें करनी चाहिये।

નમતું આપે તો તમામ ઝઘડાનું નિરાકરણ સ્હેજે આવી જાય એમ છે. સુરત મુકામે પ્રમુખશ્રી અને બીજાના પ્રયાસથી એક બાબતનું સમાધાન થયું. એક માસ તો સર્વએ સાથે બેસવાનો નિશ્ચય કર્યો. ભાઇશ્રી સરૈયા ઉપપ્રમુખશ્રીએ એક માસમાં આમોદવાળા શેઠ ચુનીલાલ ધરમચંદ તથા કલોલવાળા શા. અંબાલાલ એ બેને કરારમાં લખ્યા મુજબની ખાત્રી કરાવી આપવાની જોખમદારી લીધી. મહા સુદ ૭ પહેલાં જવાનું નક્કી થયું, પણ નજીકના સગામાં લગન તે દીવસે હોવાથી રોકાવું પડયું. અને પછી આમોદવાળા ભાઇ ચુનીલાલને પણ બીજા તરફથી પત્ર મળ્યો તેમાં "જે પંચની કન્યા હોય તે પંચની સહીવાળી મેઝર લાવવી" આમાં ખાત્રી કરવા જનાર જાણે ચિઠ્ઠીના ચાકર હોય એમ તેમને હુકમ થાય એ વ્યાજબી નથી અને એ સુરતના સમાધાનમાં પણ એવી બાબત નથી. આ પત્રથી ખાત્રી માટે જવામાં આડ આવી છે. ભાઈ સરૈયા સમાધાનની શરત મુજબ હજુએ જવા તૈયાર છે. અને સમાધાન કરનાર લગભગ તમામ કોમના દિગંબર ભાઇઓએ ભાઈ ચુનીલાલ અને અંબાલાલને ખાત્રી કરવાની સોંપી છે, તેઓએ ભાઇ સરૈયાએ લખી આપેલ લખાણની નકલ મંગાવી લઈ મીતિ નક્કી કરી ભાઇ સરૈયાને લખવાનું છે. ભાઇ નાગરદાસ તેમજ સેવક પૈકી કોઇની પણ મદદ જોઇએ તો તે આપવા તૈયાર છીએ, સાથે જવા પણ તૈયાર છિયે.

દીલગીરી સાથે લખવું પડે છે કે આ સમાધાનના પ્રયાશમાં સુણદાવાલા ભાઇ મગનલાલ તો અલગજ રહ્યા હતા. અને ભાઇ સરૈયા જેવા બન્ને પક્ષને સાંધવાને કાચા સુતર રૂપી પ્રેમની દોરી લંબાવી રહ્યા હોય તે દોરી પર ભાઇ સુણદાવાલા કુહાડા મારવા મંડે એ ઠીક નથી. કરોળીઓ પોતાના મ્હોંની રાળથી તાંતણો કાઢે તે પર દેડ ચઢી જઇ શકે છે. અર્થાત એમણે જરા નમનતાઇ બતાવી હોત અગર પોતે શાંત રહી આમોદ જેવા સ્થાને નહીં ગયા હોત તો તેથી કંઇપણ બગડવાનું નહોતું.

બીજી તરફથી આમોદવાલાનો પણ એવોજ દોષ એ છે કે આમોદવાલા સુરતના સમાધાન પ્રસંગે હાજર હતા. તેઓ પંચના પ્રતિનીધિ આગેવાન હતા. અને એ ખાત્રી એક માસમાં કરવાની હતી તે મુદત દરમ્યાન મજકુર મગનલાલ માટે સુરતની માફક કાંઇ વાંધો નહિં લીધો હોત તો કંઇ બુરૂં થવાનું નહોતું, પણ બન્ને પક્ષે હવે એ વાત રસે ચઢાવવી નહીં જોઇએ. બીગડેલી સુધારે છે તે પુણ્ય મેળવે છે. બગડેલાને વધુ બગાડે એ પાપ ભાગી છે. એ વાતની સમાધાની પૂર્ણ થાય એ ઘણા તરફથી ઇચ્છા દર્શાવવામાં આવી છે. સેવકને એટલી સમાધાનીથી સંતોષ નથી. કંઇ વર્ષોના ઝહેર નરસીંહપુરના ઝગડા કયારે મોટું ભંગાણ પડાવે તેનો ભરોસો નથી અને તે ઝગડાના મૂળમાં ગમે તેટલા વાંધા હોય પણ એ વગાના પાંચ ગામનું પંચ મેળવી બન્ને પક્ષના અમુક અમુક સમાધાન કરનારની એક સમિતિ નિમાય અને બન્ને પક્ષના મળી એક પ્રમુખને નીમે તેને સર્વ બાબતો નિકાલ માટે સોંપી દેવાય તો ઝટ નીકાલ આવે એવો છે.

એમાં ખાસ વાંધો નરસીંહપુરવાલા ભાઇનો એ છે કે "પાંચ ગામ પૈકીના નૃરશીંહપુરા ભાઇઓમાંથી સમાધાન કમીટીમાં સભ્ય નીમવા નહીં પણ પાંચ ગામ બહારના નરશીંહપુરા કે બીજા ગમે તે દિગંબર જૈનને નિમવા" આ વાત ઘણાને રૂચે એવી નથી કારણ પાંચ ગામના તમામ માણસો પક્ષપાતી નહી કહેવાય. બન્ને પક્ષનું પંચ મેળવતાં પહેલાં કોઇ કમીટી નીમવા બાબત કંઇ શરત કરવી એ પણ વ્યાજબી નથી. તેથી બન્ને પક્ષ જરા નરમાશ રાખી વેળાસર બધા ઝઘડાના નિકાલ માટે પ્રયાસ કરો એવી વિનંતી છે. ખાસ નરસિંહપુ-

રાવાળાને જાહેર વિનંતા કરૂં છું કે સમસ્ત પંચ મેળવવા પોતે ઇચ્છા રાખે છે કે કેમ તે એક માસ દરમ્યાન સેવકને જણાવે. જો બન્ને પક્ષ જ્યાંના ત્યાં રહેશે તો પછી ઝઘડા નિવારણ કમીટીના અભિપ્રાય લેવા વિચાર છે, પરંતુ આ સમય દરમ્યાન ખાત્રી કરનાર ભાઇઓ જરૂર પોતાનું કાર્ય કરે,

સુરત અને આમોદ વતનના નરસિંહપુરા ભાઇઓમાં પણ ખાસ બુહારી માટેની થોડીશી તકરાર છે. એ ભાઇઓ પણ જલ્દી પતાવી દે.

*   *   *

આખી કોમમાં ઐકયતા માટે પ્રશંસા પામેલ **વિશા મેવાડા** પંચના ગામો તરફથી અનેક કાગળ આવ્યા છે. કામ માટે પ્રશંસા કરે છે, વસ્તિ પત્રક ભરી મોકલે છે, તો કોઇ કહે છે કે પંચની સંમતિ વગર વસ્તિ પત્રક પણ લેખીત નહિં મોકલાય ! સુરત પરિષદના ઠરાવો તો સોજીત્રામા પંચ મળે ત્યાં વિચારાશે. કોઇક સારી આશા આપે છે. પણ પોતાના ગામના પંચનો ઠરાવો બાબત અભિપ્રાય કોઇએ મોકલતા નથી; એ પોતાના મોટા પંચનું અને આગેવાનનું સન્માન સાચવવાની તેમની ઉત્તમ ધગશ બતાવે છે, પણ **"પંચોને વિનંતિ"** માં ચોખ્ખું સેવકે લખ્યું છે કે "કદાચ સભા પંચ કે સમસ્ત પંચની ચર્ચા ઉપરથી પોતાનો મત ફેરવવોએ પડે" અર્થાત્ પોતાના ગામના પંચનો અભિપ્રાય જાહેર કરવામાં પોતે કાંઇ બંધાઇ જતા નથી અને દરેકને અભિપ્રાય દર્શાવવાની તક મળે તો મોટું પંચ મળે તેમાં જલ્દીથી ઠરાવ પર આવી શકાય અને તે મોટાનું કે મોટી પંચનું ખરૂ સન્માન તો તે વખતે, પોતે લઘુમતિમાં હોય તો, પોતાનો વિચાર જતો કરી એકત્ર મતે ઠરાવ કરવામાં મદદ કરે, એ સાચુ સન્માન અને સ્વાર્થ ત્યાગ છે. આખા હિંન્દુસ્થાનમાં કે કોઇપણ દેશમા કોઇપણ બીના બને છે તે માટે વ્યક્તિગત કે પંચના અભિપ્રાય દર્શાવવામાં તો આવે છે. એમ નથી કરવામાં આવતું અને પોતાનું મુખ બંધ હોય તો તેને લીધે ઘણે પ્રસંગે પંચ મળે ત્યારે જરા ગમે તેમની વાત કરી ઉઠી જવાનો પ્રસંગ આવે છે અને તેથી પંચપર કલંક મુકાય છે કે **"પંચ મળે પણ કંઇ કરતું નથી,"** પોતાનાજ પંચને પોતાનાજ માણસો પાછળથી આમ વખોડે તે કરતાં પહેલાંથી સામાન્ય અભિપ્રાય દર્શાવવાની તક લેવી સારી છે.

સુરતમા પરિષદ મળી તેમાં **વિશા હુમડ** ભાઇનો પૂર્ણ ઉત્સાહ અને સાથ હતો તેઓ હવે જલ્દીથી પોતાનું પંચ મેળવી ઠરાવો માટે અભિપ્રાય આપે !

નાની કોમ પ્રથમ પગલું ભરે તેમાં તેને કંઇ હિણપદ નથી, સૂરોજ **પહેલ** કરે છે. **અંકલેશ્વરના મેવાડા** નાની સંખ્યામાં હતા તે સોજીત્રા સાથે મળવા ગયા'તા ને ? ઇડર **વિભાગના વિશાહુમડનો** ઝઘડો પતાવવા નિમંત્રણ આવ્યું છે.

મહુવા, વ્યારાના રાયકવાળ ભાઇઓ તેમજ બીજાને પરિષદના ઠરાવ જરા હલવા લાગ્યા છે. કારણ ગાયકવાડી રાજ્યમાં પર કોમમા કન્યા આપે તેનો વિરોધ કરનાર દંડાય એવો કાયદો છે. આપણે પ્રેમથી પરસ્પર મળવું છે. અને એઓ તો બીજી પંચ ઠરાવ કરે એટલીજ રાહ જુએ છે. મારી સમસ્ત **રાયકવાળ પંચને વિનંતિ** છે કે તેમનું સમસ્ત પંચ બોલાવાય અને કંઇ રીત રીવાજ સામાન્ય ઘડી પરિષદના ઠરાવોનું અનુમોદન અપાય તો વધુ સારૂં થાય અને પરિષદની મુરાદ જલ્દી બર આવે—

દશા હુમડ ભાઇઓ—સુરત, સત્તર ગામ, રાયદેશ, ઇડર, દાહોદ, ઓરણ પ્રાંતિજ ને દાહોદ વિભાગોમાં વહેંચાયલી છે. સુરતમાં તો સરસ યુવક સંઘ છે. વૃદ્ધો પણ સમજુ છે. ફકત

બંધારણની બારીકીમાં ઉતરવામાં પંચનું કામ ગોર ,પાસે લાંબો કાળ રહે એ કોઇ વ્યાજબી ગણે નહિ. સુરતના શહેરીઓ વખતની કીંમત જરૂર આંકી જાણે છે.

સાઠના ગામોના દશાહુમડ ભાઇઓમાં બે તડ હતાં તે એકત્ર થઇ ગયાં છે તે જાણી સૌ ખુશ થશો. **ઓરણ પ્રાંતિજ વિભાગનું ચોખલું** મળવાનું હતું તે મલ્યું નથી. બંધારણ પૂર્વકનું પંચ મોકું કરે એ ઠીક નહીં. **રાયદેશના** ગામ છુટા છવાયા છે પણ ભાઇ કાળીદાસ ન્હાનચંદ મીઠાવાલા તેમજ બીજા સારો મોભ્ભો ધરાવે છે અને તે પંચ એકત્ર કરવા બનતું કરશે એવી આશા છે.

ઇડર વિભાગ અને તારંગા વગામાં મુંબઇવાલા શેઠ લલ્લુભાઇ પ્રયાસ કરશે એવી આશા રખાય છે.

દાહોદ—(દોહદ) એ હદ પર છે. તેમને અનુકુળ પ્રાંતિક સભાનું બંધારણ ઘડાયું છે, પણ તે વગાના બ્રહ્મચારી શ્રી. દીપચંદજી વર્ણી માંદા પડયા છે. પ્રભુ એમને જલદી આરામ આપે એટલે દાહોદ વગામાં પરિષદ માટે કંઇ ભ્રમણા હશે તે દૂર થશે. **ભાવનગરમાં** પ્રાંતિક સભાના ઉપપ્રમુખ શ્રી. શેઠ વ્રજલાલ કેવળદાસના પત્નિ ૩૫ વયની નાની ઉમરે બે પુત્રી અને એક પુત્ર પાછળ મુકી ધર્મ ધ્યાન પૂર્વક ચાર દીવસ અનશન કરી સમાધી મરણ કર્યું અને લાંબી માંદગીમાંથી મુક્ત થયા, પ્રભુ એમને શાંતિ બક્ષો અને શેઠ વ્રજલાલને સંસાર તરફનો લાગેલો ઘા સહન કરવાની તાકાત આપો એવી પ્રાર્થના છે.

ગુજરાતમાં બીજા દિગંબર જૈનો પાલેજ, મીયાગામ, વડોદરા, પેટલાદ, અમદાવાદ આદિ સ્થાને છે તેઓ પણ પરિષદનો લાભ લઇ શકે છે. એ સર્વને સેવકની નમ્ર વિનંતિ છે કે અમદાવાદની માફક એક મંડળ સ્થાપે અને પોતાને યોગ્ય લાગે તેવી સૂચના તેઓ કરી શકે છે.

ફસલનો સમય અને હિમને લીધે ઘણા બીજા કાર્યમાં રોકાયા છે. છતાં એકંદર પત્ર વ્યવહારથી પરિષદનું કામ સારી રીતે આગળ વધશે એમાં જરાએ શંકા નથી પ્રભુ સૌને સંપ માટે પ્રેરણા કરો.

લી० સેવક.

છોટાલાલ ઘેલાભાઈ ગાંધી.

મહામંત્રી, ગુ. દિ. જૈન પ્રાંતિક સભા.

અંકલેશ્વર.
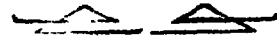
મિત્રોમાં વાર્તાલાપ.

કાંતિચંદ્ર—મિત્રો, સુરતમાં ગુજરાત દિ. જૈન પરિષદમાં ઠરાવો થયા પણ કંઇ અમલી કામ તો થયું નહિ! હું તો પરિષદ મેળવવાનીજ વિરૂદ્ધમાં હતો પણ શું કરે, બધાનો સાથ મેળવવાના હેતુથી મેં વિરોધ કર્યો નહિ. હું તો માનું છું કે દરેક પેટા કોમમાંથી બબ્બે ત્રણ ત્રણ કન્યાની આપ લે કરી દીધી કે થયું. અમલી કામ થયાં કે બેડો પાર.

ગંભીરમલ—ભાઇ, આપના વિચારને અનુમતિ આપનાર તો હશે પણ અમલ કરનાર સાથી કયાં છે? અને એવા સાથી હોય . તો બેસી શું રહ્યા છો?

ઉત્સુકદાસ—અરે! તૈયાર છીએ, કંઇ કરી પણ બતાવ્યું. પણ જરાક અનુભવે દેખાયું કે પંચો મળીને ઠરાવ થયા પછી કંઇ થાય તો સારૂં પરિણામ આવે.

સાહિત્યચંદ્ર—હા, "દિગંબર જૈન" માં વાંચ્યું છે કે મંત્રી ને મહામંત્રીએ પંચો સાથે અનેક પત્ર વ્યવહાર કર્યો છે. પણ મને લાગે છે કે પંચો મળીને કદી ઠરાવ કરશે નહિ. જુના પંચો મગનું નામ મરી કહીને પણ પોતાનો અભિપ્રાય કયારે ખુલ્લે દીલે આપે છે? આખા

પંચમાં અમુકને વિરોધી હોયજ એટલે અમુક વૃદ્ધો પણ સુધારાની તરફેણમાં હોય તેઓ પણ શાંતિથી જોયા કરે પછી પંચ શેનું મળે? અને જો પેટા કોમોમાં પરસ્પર કન્યાની આપ લે હવે થાય તો કોઇ બોલવાનું નથી. જુઓની સોજીત્રા વગાના મેવાડા ભાઇઓ કેવા સંપીલા છે? પોતાની પેટા જ્ઞાતિમાંથી વિવાહ તોડીને પણ બીજી પેટા જ્ઞાતિમાં કન્યા અપાઇ છતાં કંઇ બોલ્યા છે? બધીએ પંચ જમાનાને અનુસરીને ઉદાર થશે. નાના નાના ઝગડા ને વાંધા સાંધા પતાવવા જતાં વર્ષો વહી જાય પણ પંચ કંઇ કરી શકે નહિં અને પરિષદનો ખર્ચ વ્યર્થ જાય. સાહિત્યનો પ્રચાર ચાલુ રાખો અને સાથે સાથે અમલી કામ પણ ચાલુ રાખો. ગંભીરમલ તો વિચારમા ને વિચારમાં દિવસો નકામા કઢાવે છે. મને તો ક્રાંતિદાસનું બોલવું સોએ ટકા સાચું લાગે છે.

ગંભીરમલ—ભાઇ. ઉતાવળા નહીં થાઓ. હાલ જ્યાં ત્યાં મંદી છે અને તેમાં જરાતરા મોસમ આવી હોય તેવે વખતે સૌ કોઇ પોતપોતાના ધંધામાં પડયા હોય. વળી દૂર દૂર ગામડામાંથી આવે સમયે બોલાવી પંચના માણસને હેરાન કરવા પણ આગેવાન યોગ્ય નહિ ગણે એટલે ચોમાસું આવતાં પંચો મળશે. મહામંત્રી કહેતા હતા કે સહાનુભુતિના ઘણા પત્ર આવેલા છે, તો જરા થોભીએ તો શું બગડવાનું હતું? ઘણા વરસોના ચાલુ રીવાજ એકદમ ફેરવવા મથનાર કંઇ વધુ ભંગાણ પડાવશે!

ક્રાંતિલાલ—અરે લોઢું તપ્યું હોય ત્યારે ટીપવાથી કંઇ ભાંગતું નથી. બહુ નીચા બહુ ખરડાય છે. હાથમાં હોય તે ગુમાવ્યા પછી શું કરશો? પંચોને ભલામણુના ઠરાવ થયા છે. શ્રીમંત ગાયકવાડ સરકારના રાજ્યમાં તો કાયદો છે કે પેટા કામમાં કન્યા આપનારને સજા કે દંડ કરનાર પંચ કે આગેવાનને દંડવા ત્યારે આપણી કઇ પેટા કોમવાલા એ રાજ્યમાં નથી? અને કદાચ અમુક કન્યાની આપ લે કરે તેમાં ક્યાં એમ છે કે અમુક પેટા કોમે કન્યા આપવા કરવી અને તે કોમમાં કન્યા નહિ આવે? આ અંકલેશ્વરવાલાએ સોજીત્રાવાલાને કન્યા આપી અને મેલવતા નથી તેમ તો આપણે નહિં કરીએ. આપણે તો હાલ તો સરખી સંખ્યામાં વર કન્યા દરેક પેટા કોમમાં મંડાય એવી ગોઠવણ કરીએ અને તેમ થાય તો પછી કોઇ પંચને નુકશાન નથી અને કોઇને બોલવાનું રહેશે નહીં. હાલમાં મોસમ છે તો પંચો મોસમ પછી મળશે. તેમાં અમલી કામને શું વાંધો છે? ગંભીરમલજ ખોટી અટકાયત નાંખે છે.

સાહિત્યચંદ—હા-હા. એ વાત તો ખરી. સાહિત્યના પ્રચાર સાથે બે ચાર વિવાહના જોડાણ થયાં હોય તો તે વાત પણ પ્રચારના કામમાં ને અમલી કામમા વધુ વેગ લાવશે. અતિશય ગંભીરતા કોઇ વખત ભારે નુકશાન કરે માટે ગંભીરમલ તો જાણે બધા પંચ મળી જશે! તે પછીજ અમલી કામની વાત કરે તે ઠીક નથી,

ગંભીરમલ—ભાઇ બધા પંચ મળે અને અમલી કામ એકદમ થશે એમ હું માનતો નથી પણ જે બે પંચ પરસ્પર પેટા જ્ઞાતિમાં વિવાહ સંબંધ જોડવા તૈયાર હોય તેમણે કંઇ રીત રીવાજ નક્કી કરવા જોઇએ. શું પહેલું રાખે? જાનૈયા કેટલા આવે? લગ્ન વિધિ શી હોવી જોઇએ? એ બધું નક્કી થાય ત્યારેજ ચોક્કશ વિચાર અમલમાં મુકાય કની? ગમે તે માણસ ગમે તેમ રીત રીવાજ રાખે તો પછી સમાજ વ્યવસ્થા બરોબર રહેશે નહિ. પહેલાં તો નરસિંહપુરા કોમમાંજ ઝઘડો છે તે કેમ પતાવવા મંત્રી મહામંત્રીઓ પ્રયાસ નથી કરતા? મોટા આધકાર પર બેઠા તો ત્યાં જઇને ધામો નાંખે! ક્રાંતિલાલ પણ કંઇ શાંતિ અપાય તેવા ઉપાય લે તો પછી એની મેળે બધું વ્યવસ્થિત થશે. ઉતાવળે આંબા પાકે નહીં. સમજ્યા કેની?

ઉત્સુકદાસ—તમે લોકોએ પરિષદમાં રીત રીવાજની સામ્યતા માટે ઠરાવ કેમ નહિ

આપશે ? રીત રીવાજમાં શું કરવાનું છે ? જૈન વિધિના લગ્ન સર્વને અનુકુળ છે. પલ્લાંનો આંકડો આ જમાનામાં શું કરવા જોઇએ ? પાંચ સાત માણસ બે તરફના એકત્ર થયા કે વિધી વિધાન બરોબર થાય પછી શું ?

કાંતિદાસ—નહિં, નહિં, સ્ત્રીઓ માટે પલ્લાં તો ઠીક હોવાજ જોઇએ. સ્ત્રી ધન બી નહિં અને વારસો પણ નહિ ? જૈનોમાં તો વિધવાને પણ વારસા હક છે, પણ હિન્દુના રીવાજમાં આપણા રીવાજો ડૂબી ગયા છે. જો સ્ત્રી ધન ઠીક નહીં રખાય તો પછી વિધવા વિવાહને ઉત્તેજન મળશે.

ગંભીરમલ—જુઓ, પલ્લાની બાબતમાં પેટા કોમોમાં બહુ તફાવત છે. શહેરવાલાને જરા શહેરી રીત રીવાજે રહેવાનું એટલે તેઓ વધું પલ્લું રખાવવા મથે, પણ ગામડામાં તો તેમ ચાલે એમ નથી. પલ્લું વધુ હોય તો ગરીબો મંડાતા રહી જાયને ?

કાંતિદાસ—તમે એમ કહેતા હોય તો મારો સખત વિરોધ છે. જ્યાં પલ્લાં ઓછાં છે ત્યાંજ ગરીબ ઘરો મંડાયા નથી. કુળવાન ઘર ગરીબ ભલે હોય તો એ તવંગરને ત્યાં કન્યાના માબાપ કન્યા આપવા ઇચ્છે છે. અને તેમ અનેક પુરાવા અત્યારની લગભગ તમામ પેટા જ્ઞાતિમા છે. છોકરો વિદ્વાન સંસ્કૃતિવાળો હોય તો પછી કદાચ ગરીબ ઘર હોય તેની પરવાહ નહા. બાકી ગામડામાં તો અનેક ગરીબોનાજ ઘર મંડાયા નથી. જો પલ્લું ઠીક હોય તો તો તેટલી મુડી સ્ત્રી ધન તરીકે હોય પછી ઘર ગમે તેટલું ગરીબ હોય તો તેજ સ્ત્રી ધનથી પતિને સુખ આપી શકે છે. અરે પણ ગામડામાં પણ પલ્લાં ક્યાં ઓછાં છે ? એક મેવાડા ભાઇ શીવાય બધામાં પલ્લાં વધુ છે. ૩૦ તોલા સોનું અને અમુક તોલા ચાંદી ! એ કંઇ ઓછું કેહવાય ? એ રીવાજ છેસ્તો ! એટલે ગંભીરમલ ખોટી વાતો ઉપાડે છે. પલ્લાંનો વાંધો તો અમલી કામ કરવા ઇચ્છનાર સાથે બેઠા કે તરત નિકાલ આવી જશે, નકામો વખત શું કામ ગુમાવો છો ?

ગંભીરમલ—મેવાડા ભાઇઓમાં તો પલ્લું હદપારનું ઓછું છે. લુગડાં પણ પીયરથી આપે તે ખરાં ખરાં, નહીંતો અનેક ઠીંગડા મારીને લાજ ઢાંકવી પડે છે, અને પછી જો કોઇ વિધવા થાય તો તેને ભરણ પોષણ જુદું આપવું પડે અને વિધવા બીજે કોઇ સ્થાને રહે તો કુલીનતા જાય ! એટલે થઈ રહ્યું; ઘરમાંજ એક ઘરના રખવાળ તરીકે રહે અને સુખે દુઃખે દીવસ કાઢે છે, તો પછી એ ભાઇઓ કંઇ જમાનાને અનુસરી વિચાર કરે તે માટે પણ સમય તો જોઇએ ને ? સમઝાવટથી તેમને પણ પલ્લું વધારવા વિચારો આવશેજ. માટે થોભો.

કાંતિદાશ—તમારે તો જ્યાં ત્યાં દોસ કરવો છે. એઓમાં પણ શું લગ્ન પછી હોંસની જણસો કરતા નથી ? ઘણા ઘરમાં સ્ત્રીઓ સારી રીતે ઓઢે પહેરે છે તે શું પીઅર તરફથી પૈસો આવે છે?

ગંભીરમલ—એ તો જે પૈસાદારને ત્યાં કન્યા જાય ત્યાં બધુંએ જમાનાને અનુસરીને થાય છે. અરે સ્ત્રીને નામે બેન્કમાં નાણું પણ ત્યાં મુકાય છે. અને તેથીજ. પલ્લું ઓછું હોવાને લીધે ગરીબને ત્યાં કન્યા આપતા અચકાય છે અને ખાનદાન ગણાતા તવંગરને ત્યાં ભયો ભયો થાય છે. માટેજ પલ્લું વધારવા પહેલી કોશીશ થવી જોઇએ.

ઉત્સુકદાશ—અરે, એ કોમમાં તો તમે કંઇ કરી શકવાના નથી. જુઓને પેલી વિષય વિચારણી સભામાં એક કાકા તો નાની ઉમરમાંજ વિવાહ સંબંધ જોડાય, એમ કહેતા હતા અને જરાએ સુધારો થવા દેવા તૈયાર નહોતા તે કોમમાં બધો સુધારો થાય પછી અમલી કામ થાય એ તો આકાશ પુષ્પવત્ વાત છે.

ગંભીરમલ—આ અંક્લેશ્વરવાલા તેમની સાથે જોડાયા છે તેમાં શરત રાખી છે. તેઓ તેમની પંચ સાથે તેમના રીત રીવાજ મુજબ વર્તશે. પણ પોતાની કોમમાં પોતાના રીત રીવાજ પ્રમાણે ચાલે એટલે એમનામાં પલ્લું શા. ૮૦૧)

નું છે તે કાયમ છે અને તે પંચનાની સાથે તેમના રીવાજ પ્રમાણે ચાલે છે. અને વળી એઓમાં પણ યુવક સંઘ છે તો જલદીથી જમાનાને અનુસરી સુધારા કરે એવા છે. જરા થોભો.

સાહિત્યચંદ્ર—જુઓ, પંચોને વિચારવા યોગ્ય તક મળે અને રીતરીવાજ પર જરા ચર્ચા થાય તે હેતુથી પહેલા આગેવાનો મળે અને અમુક રીત રીવાજ નક્કી કરે, પછી તે ખરડા બહાર પડાય એવી ગોઠવણ મંત્રી મહામંત્રીને મળીને કરો તેમાં શું બગડવાનું છે?

ક્રાંતિદાસ—હાંક ચાલો. એમ કરવાનું મંત્રી ને મહામંત્રીને સૂચવો અને જેમ બને તેમ જલદીથી વ્યવસ્થાપક કમીટી બોલાવે. વ્યવસ્થાપક કમીટીમાં બધીએ પેટા કોમના માણસો છે. એટલે કામ જલદી આટોપાય શાબાશ, સાહિત્યચંદ્ર!

ગંભીરમલ—ભાઇ તમે બધાજ એક વિચાર પર આવો છો તો પછી મારે તમારી પાછળ પાછળ ચાલવુંજ રહ્યું. પણ એ બાબત મંત્રી મહામંત્રીને સમજાવી એવી રીતે ગોઠવણ કરશો કે કોઇ પંચ કે વ્યકિતને પાછળથી કહેવાનું નહિં રહે. અરે પંચના જુના વિચારવાળા સુસ્ત રહી જાણી જોઇને પંચની મર્યાદા હાથમાંથી ગુમાવવાના છે. આ વિમાન, તાર, ટેલીફોનના જમાનામાં પણ રગશીયા ગાડામાં બેસી આગળ વધવાની વાત ધરડાઓ કરશે તો કંઇ ભુખે બેસવું પડવાનું છે. આપણે શું કરીએ! એ બાજુમાં જેનું જોર વધુ તે આગળ વધે.

ક્રાંતિદાસ—તમે તો ગંભીરમલ દોદ ડાહ્યા છો. જાહેર રીતે આગેવાનને બોલાવાય પછી જે સુસ્તિ રાખે કે બેદરકાર રહે અને પછી બીજા પર દોષ મુકે તે વ્યાજબી છે!

ગંભીરમલ—મારૂં કહેવું એમ નથી પણ સાવચેતી રાખી પદ્ધતિસર કામ કરવામાં જરા મોડું થાય તેની ફીકર નહિં સમજ્યા કેની? વારૂ ચાલો કંઇ બહુ મોડું થયું નથી. જયજિનેંદ્ર.

જૈન હિતેષીના જયજિનેંદ્ર.

ઝઘડો કે સમાધાન?

"કેળવાએલા અને ઘડાયલા ગૃહસ્થો એમ માને છે, કે, હમે જે કહીયે અને કરીએ તે થાય, અને જો તેમ ન થાય તો ચહાય તેવી હલકી યોજનાઓ રચી, એમની ધારણાથી વિરૂધ વર્તનારને દાવો પાડયા સિવાય રહિએ નહિ." આવી મનોવૃત્તિ અત્યારે આપણા આખા સમાજમાં વર્તિ રહી છે, અને તેને પરિણામે આખા દિગમ્બર સમાજમાં જ્યાં ત્યાં હલકા પ્રકારના ઝઘડા ઘર કરીને બેઠા છે. કોણ કોને સમજાવે! બધાજ ડહાપણની વાતો કરે અને વર્તનમાં તેમ વિરૂધ આચરણ કરે, સ્નેહ પ્રિતિ વધારવા અથવા સહધર્મિઓને આનંદ આપવા સ્વામિ વાતસલ્ય કરે, તો કોઇ ઇર્ષા ભાવથી એમ કહે કે નાત જમાડી તેમાં શું! કશી વ્યવસ્થા ન મળે. શાકમાં તેલ મરચાનું ઠેકાણુંજ નહિ. કોઈ કંઇક નિમિત્ત કાઢી અભિષેક, પૂજા કે પ્રતિષ્ઠા વિધી કરે, બધેજ કરનારાઓ માનની ભુખથી વધારેમાં વધારે માન મેળવવા ખટપટ કરે, સામે પક્ષ તેનું છીદ્રણું શોધી કાઢી કરનારને હલકો પાડવાનો પ્રયત્ન કરે—આવી ખેંચતાણથી ઠેકાણે ઠેકાણે ઝઘડા ઉભા થઇ ગયા છે. જે ધર્મ વીતરાગપણું શિખવવાનો દાવો કરે, તે ધર્મના અનુયાયી ઝીણાં ઝીણાં કારણો ઉપસ્થિત કરી, નજીવા સ્વાર્થને માટે લડયાજ કરે છે.

મંદીરો સમરાવવામાં, તે મંદીરો પણ જાય ત્યાંસુધી કોઇ કોઇનો મમત ન છોડે. જ્યાં ત્યાંથી ટીપ કરી કદાચ મહા મહેનતે એકાદ મંદીર તૈયાર કરવામાં આવે, ત્યારે તેમાં પ્રતિષ્ઠા કરાવવામાં ઝઘડો, કેટલાં એ દહેરાસરોમાં પ્રતિષ્ઠા વિધી કરાવવામા અજ્ઞાન ધર્માચાર્યોએ ઉભો

કરેલો, જમણુ વગેરેનો અણુઘટતાં બોજો સહન કરવાની સમાજની કમ તાકાતના અભાવે, પ્રતિમાજીને વર્ષોના વર્ષો સુધી અણુઘટતે સ્થાને રાખી મુકવામાં આવે છે. પ્રભુની પ્રતિષ્ઠા વિધિને જે સ્થાન આપવું જોઇએ તે ન અપાતાં આગળ પાછળના દેખાવ સારા કરવા તરફ વધુ પડતો વિચાર કરવામાં આવે છે. અને તેને અંગે થતા ખર્ચના બોજાથી ડરી જઇને પ્રતિષ્ઠાઓનું કામ ઝોલે ચઢે છે. કદાચ તે કામ કરવું પડે તો કેટલાંએક ફળદ્રુપ ભેજાવાળા આગેવાન ગણાતા ગૃહસ્થો, ન હોય ત્યાંથી વ્યવહાર તોડવા જોડવાનો, સાથે બેસવા ઉઠવાનો સામાજીક ઝઘડો ઉભો કરી દે છે.

જ્યમ મંદીરોનું તેમજ સામાજીક ન્યાતવરાનું. લગ્ન, મરણ, શ્રીમંત વગેરે બધાજ વ્યવહારીક પ્રસંગોએ ઝઘડા ઉભા કરવાની મનોવૃત્તિ એટલી બધી પ્રબળ થઇ ગઇ છે, કે એ બધાનું સમાધાન કેવી રીતે થાય તે હવે સમજાતું નથી.

કેટલાએક વિચારવાન મિત્રોનું એમ ધારવું હતું કે, વિચારોની આપ લે કરવામાં આવશે તો આ ઝઘડો કરવાની મનોવૃત્તિનો નાશ થશે. ગામે ગામ ફરી બધાનું સમાધાન થાય અને માન સચવાય એવી રીતે ટોળે થવા સુરત મુકામે ગોઠવણ કરી. કોન્ફરન્સ ભરાઇ, વિચારની પુરેપુરી આપ લે થઇ. જુની ખચરાના વખતથી ચાલતી આવેલી રીસામણાં, મનામણાં કરી સાથે બેસી જમવા વગેરેની બધી ચાલબાજી પુરેપુરી રમાયા પછી મહા મહેનતે સમાધાનીના કરારો લખાયા, તે સમયે આ કરારો તો નિમિત્ત માત્ર હતાં. અન્યોન્ય પક્ષોમાં દીલસોજી ઉત્પન્ન કરી જે, તે રીતે ઝઘડાઓનો અંત આણવાનો હેતુ તેમાં રહેલો હતો.

બીજા ભાઇઓના ઝઘડા તો શાંત પડયા, પરંતુ નૃસિંહપુરા ભાઇઓનો ઝઘડો હજી પણ નરમ પડયો નથી. બન્ને પક્ષો તરફથી હજીપણ આપણા ડાહ્યા આગેવાન ગણાતા ભાઇઓ હલકી રીતે માન મરતબો સાચવવાના અડડા જમાવે જાય છે. ગયા માહ માસમાં કેરવાડા મુકામે એ સંબંધી અજબ કીસ્સો બની ગયો છે. ડબકાવાળા ભાઇઓનું માનવું હતું કે સુરત મુકામે સમાધાન થયું છે અને હવે ઝઘડો રહ્યો નથી એમ માની સુંણદાવાળા મગનલાલને ત્યાં તેમણે કંકોતરી લખી. તેમને ત્યાંથી એક ભાઇ કેરવાડે લગ્ન પ્રસંગે આવ્યા. કહાનમના પંચે તેમની સાથે જમવા બેસવામાં વાંધો લીધો. લગ્ન જેવા ઉત્સવ પ્રસંગે કલેશ અને કંકાશનાં બીજ રોપાયાં. લગ્ન અવસરનો આનંદ વિસરી જઇને બન્ને પક્ષોમાં રાતના બાર વાગ્યા સુધી જમવાની ખટપટના વાદવિવાદ ચાલ્યા. કોઇ રીતે સમાધાન ન થયું. 'ઉંદર બિલાડી જેવો સોદો; કોણ કોની સાથે જમે! વરપક્ષવાળાએ જાનીવાસે રાતના બાર, એક વાગે, જે તે રીતે રસોઇ તૈયાર કરી, પંદર ગાઉથી ગાડામાં બેસી ખરી ટાઢમાં મુસાફરી કરી થાકી ગયેલા ભાઇઓને જમાડયાં. કન્યાપક્ષવાળાએ ઉત્સાહ પુર્વક તૈયાર કરેલી રશોઈ સામગ્રી ઉકરડે નાખી દીધી! નહિ તો જ્યાં ત્યાં વહેંચી દીધી! કોઇ કોઇના મનને ચેન પડયું નહિ. મળસકે ચાર પાંચ વાગે ચાલતી આવેલી પ્રણાલીકા મુજબ વર કન્યાના હસ્ત મેલાપ કરાવી દેવામાં આવ્યા. વર કન્યાના બન્ને પક્ષોના સંબંધીઓમાં કઇ વખતે નવો વાંધો ઉઠશે અને કલેશ થશે, તેને માટે ડગલે ડગલે આશંકા હતી; પરંતુ જે, તે રીતે એ કાર્ય તો સમાપ્ત થયું. એક બીજાના વડીલ વર્ગે લગ્નના પ્રસંગે પણ સક્રીય ભાગ ન લીધો.

આખા દીવસની ગાલ્લાની અથડામણ, આખી રાતનો ઉજાગરો અને કલેશ. બીજે દીવસે સવારથી પાછું એને એ પારાયણ. બપોરના બે વાગ્યા સુધી કથા કહી કરી વર પક્ષવાળાએ આગલી રાતની માફક જાનીવાસે બપોરે ત્રણ

श्री

अम्बादास चवरे दिगम्बर जैन ग्रन्थमाला

अपर नाम

कारंजा जैन सीरीज.

संस्थापक व प्रकाशक

गोपाल अम्बादास चवरे,

मर्चेंट एन्ड बेंकर कारंजा, बरार.

सम्पादक

हीरालाल जैन, एम. ए., एल एल. बी.,

संस्कृत अध्यापक, किंग एडवर्ड कालेज, अमरावती.

ओर से—

गोपाल अम्बादास चवरे,

मर्चेंट एण्ड बैंकर, कारंजा (अकोला, बरार)

संस्थापक, श्री अम्बादास चवरे दिगम्बर जैन ग्रंथमाला

(कारंजा जैन सीरीज़).

मान्यवर,

आपको विदित ही है कि जैनियों का संस्कृत और प्राकृत साहित्य अत्यन्त प्राचीन, विस्तृत और महत्वपूर्ण है। किन्तु खेद है कि इस साहित्य का अधिकांश भाग अभीतक विद्वत्समाज से छिपा हुआ अप्रकाशित पड़ा है। हमारे ही ग्राम कारंजा के भण्डारों में सैकड़ों ग्रंथ ऐसे हैं जिनका अभीतक विद्वत्समाज को कुछ परिचय नहीं है। जो कुछ थोड़े बहुत ग्रंथ प्रकाशित हुए हैं उनमें ऐसे बहुत ही कम हैं जिनका सम्पादन भाषा व विषय की दृष्टि से संतोषजनक व मुद्रणकला की दृष्टि से सुन्दर हुआ हो। इसलिये इस उत्तम साहित्य का पठन पाठन नहीं बढ़ा और पुरातत्व की खोज में उन ग्रंथों से विशेष सहायता नहीं मिली।

इसी दुरवस्था को ध्यान में रखकर हमने श्री अम्बादास चवरे दिगम्बर जैन ग्रंथमाला, अपरनाम कारंजा जैन सीरीज, की स्थापना की है। जिसके सम्पादक श्रीयुक्त प्रोफेसर हीरालालजी जैन एम्. ए., एल. एल., बी., हैं। इस ग्रंथमाला का प्रारम्भ अपभ्रंश ग्रंथों के प्रकाशन से किया गया है। अपभ्रंश भाषा बड़ी महत्वपूर्ण है क्योंकि वह प्राकृत भाषा का अन्तिम रूप है, और प्रचलित हिन्दी, मराठी, गुजराती, राजस्थानी आदि भाषाओं की जननी है। इस भाषा के ग्रंथ अभीतक बहुत ही कम प्रकाश में आये हैं। विद्वत्समाज इन ग्रंथों के लिये लालायित है। जैन भण्डारों में इस भाषा के अनेक ग्रंथरत्न सुरक्षित हैं। इनके प्रकाशन से जैन साहित्य का बहुत महत्व बढेगा ऐसी आशा है। इनका महत्व आप इसी बात से समझ जावेंगे कि इस ग्रंथमाला द्वारा प्रकाशित ग्रंथ अनेक भारतीय व जर्मनी, फ्रांस आदि विदेशीय विश्वविद्यालयों की उच्च कक्षाओं के कोर्स में नियुक्त हो चुके हैं। प्रत्येक ग्रंथ उच्च कोटि के विद्वानों द्वारा, वैज्ञानिक शैली से सम्पादित कराकर, सुन्दर रूप में प्रकाशित किया जाता है जिससे इन

ग्रंथों का देश व विदेश में आदर हो सके, वे विश्वविद्यालयों की उच्च कक्षाओं में पाठ्य पुस्तकें नियुक्त की जा सकें तथा उनके द्वारा विद्वान् लोग पुरातत्व की खोज कर सकें। इन ग्रंथों का महत्व प्रकाशित ग्रंथों तथा उनपर आये हुए अनेक विद्वानों व पत्र पत्रिकाओं के मतों को देखने से ही विदित हो सकता है।

इस ग्रंथमाला के संचालन के लिये हमने हमारे पिताजी अम्बादास चवरे की स्मृति में बीस हजार २००००) रुप्या का ध्रुव फंड प्रदान किया है। इस फंड की आय में से अभी प्रकाशन कार्य हो रहा है। किन्तु प्रकाशनीय साहित्य के विस्तार को देखते हुए इस फंड की आय यथेष्ट नहीं है। इस लिये हम धर्म और साहित्य प्रेमी भाइयों से ग्रंथमाला को अधिक सफल बनाने में हस्तावलम्ब प्रदान करने की प्रार्थना करते हैं। प्रत्येक सज्जन अपनी शक्ति और श्रद्धा के अनुसार ग्रंथमाला का संरक्षक, सहायक या ग्राहक बन सकता है जिसके नियम निम्न प्रकार होंगेः—

१. एकसौ पच्चीस १२५) रुप्या जमा करनेवाला सज्जन ग्रंथमाला का संरक्षक, पचपन ५५) रुप्या जमा करने वाला सहायक, व पांच ५) रुप्या फीस देने वाला ग्राहक समझा जावेगा। संरक्षकों व सहायकों के नाम ग्रंथों व समाचार पत्रों में प्रकाशित किये जांयगे।

२. संरक्षकों को ग्रंथमाला के पूर्व प्रकाशित ग्रंथ आधी कीमत पर व आगे प्रकाशित होनेवाले ग्रंथ विना मूल्य भेंट किये जावेंगे। सहायकों को प्रत्येक ग्रंथ आधी कीमत पर व ग्राहकों को पौनी कीमत पर दिया जावेगा। एक से अधिक प्रतियां संरक्षकों, सहायकों व ग्राहकों को पौनी कीमत में मिल सकेंगी।

३. संरक्षकों व सहायकों द्वारा जमा किये गये रुप्ये में से ग्राहक फीस का पांच रुप्या निकाल कर शेष रुप्या गवर्न्मेंट सिक्यूरिटीज में लगा दिया जावेगा और उसकी आमदनी तथा ग्राहक फीस का रुप्या ग्रंथमाला के कार्य में खर्च किया जावेगा।

४. संरक्षक व सहायक अपना जमा किया रुप्या, पांच रुप्या ग्राहक फीस काटकर, जमा करने से एक वर्ष पश्चात्, एक माह पूर्व सूचना देकर, जब चाहे तब वापिस ले सकता है। जमा वापिस लेने पर उन सज्जन का नाम संरक्षक व सहायक श्रेणी से निकाल लिया जावेगा तथा ग्राहक श्रेणी में रख दिया जावेगा।

अन्य जिस सम्बन्ध में सन्देह हो उस सम्बन्ध में पाठक हमसे सीधा पत्रव्यवहार कर सकते हैं। यदि यथेष्ट सहायता मिली तो ग्रंथमाला का क्षेत्र बढ़ाकर जैन साहित्य के अनेक विषयों के ग्रंथ ऐसी ही उत्तम रीति से प्रकाशित कराने का प्रयत्न किया जायगा। शीघ्र ही फार्म भर कर हमारे या ग्रंथमाला के सेक्रेटरी के पास भेज दीजिये।

निवेदक
गोपाल अम्बादास चवरे, कारंजा
सभापति व कोषाध्यक्ष, कारंजा जैन सीरीज.

कारंजा जैन सीरीज का कार्यकारी मंडल

१ श्री. गोपालसा अम्बादास चवरे, कारंजा, अध्यक्ष व कोषाध्यक्ष.
२ ,, प्रोफेसर हीरालाल जैन, एम. ए., एल एल बी, किंग एडवर्ड कालेज, अमरावती, मंत्री व सम्पादक.
३ ,, सिद्धान्त शास्त्री पं. देवकीनन्दनजी, ब्रह्मचर्याश्रम, कारंजा, उपमंत्री.
४ ,, मोतीलाल ओंकारसा चवरे कारंजा, सदस्य.
५ ,, सिं. वंशीलाल पन्नालालजी, उमरावती, ,,
६ ,, मनोहर बापूजी महाजन, वकील, अकोला, ,,
७ ,, पं. नाथूरामजी प्रेमी, बम्बई, ,,
८ ,, पं. जुगलकिशोरजी मुख्तार, सरसावा. ,,

कारंजा जैन सीरीज के ग्रंथ

१. जसहरचरिउ

इसमें महाकवि पुष्पदंत रचित यशोधर महाराज का जीवनचरित्र सुन्दर अपभ्रंश कविता में है। सम्पादन, भूमिका, शब्दकोष व टिप्पणियों सहित, फर्ग्यूशन कालेज पूना, के संस्कृत प्राकृत के प्रोफेसर व अनेक अर्धमागधी ग्रंथों के सम्पादक, डा. परशुराम लक्ष्मण वैद्य एम. ए., डी. लिट्. ने किया है। यह ग्रंथ अलाहाबाद यूनिवार्सिटी की एम. ए. परीक्षा के लिये स्वीकृत हो चुका है व जर्मनी की हेमवर्ग यूनीवार्सिटी में भी पढाया जा रहा है। मूल्य ६)

कुछ सम्मतियां

महा महोपाध्याय डा. गंगानाथ झा, एम. ए., डी. लिट्, व्हाइस चांसलर, अलाहाबाद यूनीवर्सिटी.

'आपने इतनी बढिया ग्रंथमाला प्रारम्भ की है यह देखकर मुझे बडी प्रसन्नता हुई। ग्रंथ की छपाई सफाई व सम्पादन बहुत ठीक हुआ है। इस उत्तम सम्पादन के लिये, तथा ग्रंथमाला का ऐसा अच्छा कार्य चालू रखने की प्रतिज्ञा के लिये बधाई है'।

डा. प्रसन्नकुमार आचार्य, एम. ए., पी. एच. डी., डी. लिट्., आइ. ई. एस. संस्कृत प्रोफेसर, अलाहाबाद यूनीवार्सिटी.

'कारंजा जैन सीरीज को प्रारम्भ करने में आपने बडी कुशलता दर्शाई है। आपकी इस दूरदर्शी व पाण्डित्यपूर्ण दृष्टि, असाधारण व्यवस्थात्मक योग्यता तथा श्रेष्ठ विद्वानों के सम्पादकत्व में ग्रंथ प्रकाशन के लिये बधाई है'।

डा. बाबूराम सक्सेना, एम. ए., डी. लिट्., संस्कृत, पाली व प्राकृत अध्यापक, अलाहाबाद यूनीवार्सिटी.

'जसहरचरिउ देखकर चित्त प्रसन्न हुआ। इसी प्रकार के संस्करण निकालकर ही हम भारतीयों का गौरव विदेशीय विद्वानों में होगा। पुस्तक की छपाई सफाई उत्तम और चित्ताकर्षक है।'

डा. डब्लू शुब्रिंग, संस्कृत प्राकृत अध्यापक, हेमबर्ग यूनीवर्सिटी, जर्मनी.

'जसहरचरिउ के प्रकाशन से हमारे अपभ्रंश भाषा व साहित्य के ज्ञान को

बहुत अच्छा विस्तार मिला है। पुस्तक का सम्पादन समालोचनात्मक विवेक द्वारा हुआ है और प्रेस में से आप उसे बडी सावधानी से छपाने में सफल हुए हैं। मैं इसकी समालोचना किसी प्राच्य पत्रिका में भेजूंगा। इस पुस्तक को मैं क्लास के पठन पाठन व अध्ययन के भी उपयोग में लूंगा'।

डा. पंजाबराव देशमुख, एम. ए., पी. एच. डी., बार एट-ला,
मिनिस्टर फार एजुकेशन, सी. पी.

'मुझे यह देखकर बडी खुशी है कि बरार भी भारत के प्राचीन साहित्य के प्रकाशन में भाग ले रहा है। यह सचमुच बडे भाग्य की बात है कि आपने इस ग्रंथ का सम्पादन डा. परशुराम लक्ष्मण वैद्य जैसे लब्ध-प्रतिष्ठ विद्वान् द्वारा कराया है। इस उपयोगी ग्रंथ को प्रकाश में लाने, तथा उसे ऐसी उत्तम रीति से छपाने के लिये बधाई है। आपके इस अतिप्रशंसनीय कार्य में मैं हरप्रकार की सफलता चाहता हूं चवरे कुटुम्ब शिक्षा व ज्ञान के प्रसार में जो धन की अति उदारता दिखा रहा है उसकी प्रशंसा किये विना मुझ से नहीं रहा जाता'।

रायबहादुर हीरालाल बी. ए., एम. आर. ए. एस., रिटायर्ड डिप्युटी कमिश्नर, प्रेसीडेन्ट
अखिल भारतवर्षीय ओरियंटल कानफरेंस, षष्ठम अधिवेशन.

'ग्रंथ का सम्पादन समालोचनात्मक दृष्टि से बडी योग्यता पूर्वक किया गया है। भूमिका बडी विशद है। पाठकों की सुविधा के लिये कोई बात उठा नहीं रक्खी। शब्दकोश डा. हल्ट्ज द्वारा सम्पादित मेघदूत के कोश के समान उत्तम है। ग्रंथ बडी सावधानी से तैयार किया गया है, जिसके लिये डा. वैद्य यश के भाजन हैं। अप-भ्रंश के रुचियों को ग्रंथ विशेष रूप से प्रिय होगा और वे आगे प्रकाशित होने वाले ग्रंथों की राह बड़ी उत्सुकता से देखेंगे।'

डा. आर. एल. टर्नर, प्रोफेसर, स्कूल आफ ओरिएंटल स्टडीज, लन्दन.

'अपभ्रंश ग्रंथों को छपा डालने की बड़ी भारी आवश्यकता है'।

डा. ई. जे. रेपसन, प्रोफेसर, केम्ब्रिज यूनीवर्सिटी.

'जैन साहित्य के इस सर्वोत्कृष्ट, चित्तग्राही शाखा के ग्रंथों को प्रकाशित करने का जो आपने कार्य प्रारम्भ किया है उसकी मै हृदय से सफलता चाहता हूं'।

नागरी प्रचारिणी पत्रिका, काशी.

'जसहरचरिउ भाषा-विज्ञानियों के लिये बडे महत्व का है क्योंकि वह उस बोली में लिखा गया है जो वर्तमान हिन्दी, मराठी, गुजराती आदि का स्रोत है। प्रोफेसर वैद्य ने इस पुस्तक का संशोधन बड़ी योग्यता के साथ किया है और पाठकों के सुभीते के लिये आदि में अंग्रेजी भाषा में एक विद्वतापूर्ण भूमिका और अंत में शब्दानुक्रमणिका तथा अंग्रेजी टिप्पण लगा दिया है, जिससे अपभ्रंश न जानने वाला भी प्रयत्न करे तो मूल का अर्थ सरलता से निकाल सकता है और उसके रहस्य को भली भांति समझ सकता है। श्रीयुक्त वैद्य ने अपना काम बड़ी सावधानी और परिश्रम से किया है इसलिये वे प्रशंसा के पात्र हैं। इस ग्रंथमाला के प्रधान सम्पादक प्रोफेसर हीरालाल जैन हैं जिन्होंने इस ग्रंथ को सुसंपादित और सुचारु रूप में प्रकाशित करवाया है इसके लिये वे अभिनन्दनीय हैं। विशेष प्रशंसा की बात तो यह है कि कारंजा भण्डारों का जब उन्होंने अवलोकन किया और उनके महत्व को जाना तब उनके प्रकाशन का जो दृढ संकल्प किया उसे उन्होंने पूरा कर दिखाया। कारंजा का चवरे वंश भी धन्यवाद का पात्र है जिसने एक छोटे ग्राम में बीस सहस्र का दान देकर साहित्य-सेवा का अनुकरणीय आदर्श सम्यक् रूप से उपस्थित कर दिया 'सम्मइ लब्भइ अचलु सोक्खु'।

हिन्दुस्थानी पत्रिका, यू. पी.

'यह पुस्तक अत्यंत उपादेय है। जैन लोग अपने धर्मग्रंथ की दृष्टि से इसका आदर करेंगे, साधारण जनता में रोचक कथानक और कवि की प्रतिभा की परख के लिये इसकी मांग होगी, पर इनके अतिरिक्त एक और श्रेणी के विद्यार्थी हैं जो इनका इन दोनों से अधिक स्वागत करेंगे। यह हैं भाषा विज्ञान के अध्ययन करने वाले। ....प्रस्तुत ग्रंथ प्रकाशित करके प्रकाशक तथा सम्पादकों ने इस उपाय में पूर्ण रूपसे सहायता की है और एक क्षति को पूरा करने का प्रयत्न किया है। ग्रंथ की छपाई सफाई सुन्दर, शुद्ध तथा चित्ताकर्षक है। इसमें तीन चित्र भी हैं–सेठ चवरे पिता-पुत्र के तथा उनके गुरु श्री १०५ भट्टारक वीरसेनजी स्वामी का। **ऐसी सर्वांग पूर्ण, सुन्दर, उपादेय और जन हितकारी पुस्तक निकालने के लिये प्रकाशक और सम्पादक धन्यवाद के पात्र हैं। ऐसी पुस्तकें अपने देश में निकलती देखकर प्रत्येक भारतीय को**

गर्व और उत्साह होना चाहिये । ग्रंथमाला के अन्य पुष्पों की सुगन्ध के लिये जनता उत्सुकता से लालायित रहेगी '।

श्रीयुक्त कामताप्रसादजी एम. आर. ए. एस, सम्पादक, वीर.

' यशोधर चरित का सम्पादन बड़े अच्छे ढंग पर हुआ है। जैनों में यह सीरीज़ ' पाली टेस्ट सोसायटी ' का काम देगी ऐसी आशा है। इसके लिये मैं आपको हार्दिक धन्यवाद और बधाई भेंट करता हूं। चवरे महाशय का उद्योग सराहनीय है।'

श्रीयुक्त मुनि जिनविजयजी.

' आपका यह उपक्रम बहुत ही स्तुत्य और महत्व का है। इससे जैन साहित्य की कीर्ति तो प्रसिद्ध होगी ही, भारतवर्ष के भाषा साहित्य के विकासक्रम के ज्ञान में इससे बड़ी अपूर्व वृद्धि होगी। चाहे हमारे समाज के और देश के लोग इस कार्य के महत्व को न समझें, पाश्चात्य देशों के विद्वान् इसका पूर्ण आदर करेंगे और महत्व भी समझेंगे '।

इंडियन हिस्टॉरिकल कार्टरली, कलकत्ता.

' कारंजा जैन सीरीज़, अपरनाम अम्बादास चवरे जैन ग्रंथमाला, नामक नई प्रकाशक संस्था का हम हृदय से स्वागत करते हैं। यह ग्रंथमाला सेठ गोपाल अम्बादासजी चवरे की उदार दानशीलता का परिणाम है। उन्होंने अपने पिता की स्मृति में इसकी स्थापना की है। शोक की बात है कि अच्छी व्यवस्था व सहकारी कार्य के अभाव के कारण इस प्रकार के अनेक प्रयत्न पहले असफल हो चुके हैं यद्यपि अभीतक महत्वपूर्ण और विशाल जैन साहित्य का बहुत ही थोड़ा भाग प्रकाश में आया है। हमें आशा है कि चवरे महाशय अपनी इस प्रशंसनीय संस्था को चिरस्थायी बनाने का प्रयत्न करेंगे।

कई विद्वानों के सुप्रयत्न से अपभ्रंशभाषा के कुछ ग्रंथ वैज्ञानिक शैली से सम्पादित होकर प्रकाशित हो चुके हैं। इन ग्रंथों का आर्य भाषाओं के इतिहास में अमित महत्व है। हमें हर्ष है कि जसहरचरिउ के प्रकाशन से एक और ग्रंथ उक्त श्रेणी में सम्मिलित होगया '।

२. सावयधम्म दोहा

यह देवसेन आचार्य रचित श्रावकाचार का ग्रंथ है। अपभ्रंश के सुन्दर दोहों की कविता बड़ी उपदेशमय और हृदयग्राही है। प्रत्येक पृष्ठ के सामने अविकल हिन्दी अनुवाद दिया गया है। भूमिका में ग्रंथकर्ता व ग्रंथ के नाम, प्रचार, टीकाटिप्पणी, परम्परा व ग्रंथ के व्याकरण का सविस्तर परिचय कराया गया है। परिशिष्ट में अधिक दोहे सानुवाद हैं। पूरा शब्दकोश भी है और विशदार्थ टिप्पणी भी है। फिर दोहों की वर्णानुक्रमणी भी है। ग्रंथ दोहा छन्द का अति प्राचीन उदाहरण है। सम्पादक हीरालाल जैन, एम. ए. एल. एल. बी., प्रोफेसर, किंग एडवर्ड कालेज, अमरावती हैं। यह ग्रंथ नागपुर यूनिवार्सिटी की एफ. ए. परीक्षा के लिये स्वीकृत हो चुका है। मूल्य २॥)

कुछ सम्मतियां

डा. सुनीतिकुमार चटर्जी, एम. ए., डी. लिट्, भारतीय भाषा शास्त्र के प्रोफेसर,
कलकत्ता यूनिवर्सिटी.

'सावयधम्म दोहा' बड़ा ही उत्तम प्रकाशित हुआ है। सम्पादन की सफाई प्रशंसनीय है। साम्हने के पृष्ठ पर हिन्दी अनुवाद देने का विचार बड़ा अच्छा रहा। वह बहुत उपयोगी सिद्ध होगा। आपका अनुवाद मुझे विशेषरूप से उपयोगी जंचा। वह संस्कृत छाया का काम भी देता है। अपभ्रंश ग्रंथ आधुनिक आर्य भाषाओं के उच्चतम पाठ्यक्रमों में रखे जाना चाहिये और आपके सम्पादन किये हुए जैसे ग्रंथ इस बहुत समय की कमी को पूरा करेंगे। आप पुरानी तथा नई आर्य भाषाओं के क्षेत्र में उच्चतम श्रेणी का आवश्यक कार्य कर रहे हैं। इसके लिये विषय के मर्मज्ञ आपके बहुत कृतज्ञ होंगे'।

डा. बाबूराम सक्सेना, एम ए, डी. लिट्, संस्कृत, पाली व प्राकृत के अध्यापक,
अलाहाबाद यूनीवर्सिटी.

'सावयधम्म दोहा का सम्पादन सर्वांग सम्पूर्ण और उच्च कोटि का है। इसके लिये आपको बधाई है।

डा. जार्ल चारपेंटियर, पी. एच. डी, संस्कृत और तुलनात्मक भाषाशास्त्र के अध्यापक,
उपसला यूनीवर्सिटी, जर्मनी.

'आपका सम्पादित सावयधम्मदोहा निस्संदेह बहुतही अच्छा है। इसके लिये आपको धन्यवाद है'।

डा. जूले ब्लाक, प्रोफेसर पेरिस यूनीवर्सिटी, फ्रांस.

' सावयधम्म दोहा की भूमिका, संशोधन सामग्री तथा ग्रंथकर्ता के सम्बन्ध में जितनी विशद उतनी ही उपयोगी है। इस ग्रंथ को मैं यथा अवकाश अपने विद्यार्थियों के साथ प्राकृत की कक्षा में पढूंगा ऐसा निश्चय है '।

डॉ. रेपसन, प्रोफेसर, केम्ब्रिज यूनीवर्सिटी, इंग्लैंड.

' सावयधम्म दोहा का उत्कृष्ट शब्दकोश, तथा भूमिका में दिया हुआ विशद और संक्षिप्त व्याकरण प्राकृत के विद्यार्थियों को इस भाषा की कठिनाई अच्छी तरह और समझकर हलकरने में सहायक होंगे। मैं ने मूलग्रंथ के कुछ अंशों को पढा है। मैं आपके सम्पादन की प्रशंसा करता हूं '।

डॉ. आर. एल टर्नर, प्रोफेसर, स्कूल ऑफ ओरिएटल स्टडीज, लंदन.

' सावयधम्म दोहा में आपने हिन्दी अनुवाद भी दिया है यह देखकर मुझे बडी प्रसन्नता हुई। मैं इस ग्रंथ का परिचय जरनल ऑफ दि रायल एशियाटिक सोसायटी में लिखने के विचार में हूं '।

डॉ. परशुराम लक्ष्मण वैद्य, एम्. ए., डी. लिट्, संस्कृत प्राकृत प्रोफेसर, पूना.

' मैं इस ग्रंथ के सम्पादन कार्य की मुक्त कण्ठ से प्रशंसा करता हूं।'

डॉ. डब्ल्यू शूब्रिंग, संस्कृत प्राकृत अध्यापक, हेमवर्ग यूनीवर्सिटी जर्मनी.

' सावयधम्म दोहा आप के अपभ्रंश साहित्य में सफलता पूर्वक कार्य करने का नया उदाहरण है। मैं आपको धन्यवाद देता हूं और ग्रंथ के भीतरी तथा बाहरी सद्गुणों पर अपना सन्तोष प्रकट करता हूं। यह ग्रंथ नये कारंजा जैन सीरीज की उत्तम कार्यवाही का नमूना है'।

प्रो. ए. एन् उपाध्ये, एम्. ए., संस्कृत तथा अर्धमागधी के अध्यापक,
राजाराम कॉलेज, कोल्हापूर.

' इस सावयधम्म दोहा के सुन्दर संस्करण के लिये आपको हार्दिक बधाई है। मैं ने आपकी भूमिका को पढ डाला है और यह देखकर मुझे हर्ष है कि आपने बहुतसी सामग्री विद्वत्तापूर्वक एकत्रित की है। आपके हिन्दी अनुवाद देने के प्रकार से अपभ्रंश साहित्य के अध्ययन में बडा सुभीता होगा। मुझे विशेष प्रसन्नता इस बात की है कि आपके अनुवाद तथा शब्दकोश में हिन्दी का पर्यायवाची शब्द अपभ्रंश से

यथाशक्य मिलता जुलता ही है। इससे आधुनिक हिन्दी विद्यार्थियों को पता चल जावेगा कि वे अपनी मूल मातृभाषा से कैसे दूर जा रहे हैं और वर्तमान भारतीय भाषायें दिन प्रति दिन कैसी संस्कृत-प्रचुर होती जा रही हैं।

मुझे इस ग्रंथ के स्वागत करने में एक वैयक्तिक हर्ष और सन्तोष है। जब मैं ने इस ग्रंथ के सम्बन्ध में 'भण्डारकर एनल्स' में लेख लिखा था तब मेरे पास इसकी केवल एक अपूर्ण और अशुद्ध प्रति थी; किन्तु आपने कोई आधे दर्जन पुरानी पोथियों का मिलान किया है और पाठकों के सन्मुख सावधानी पूर्वक तैयार किया हुआ पाठ रक्खा है। मुझे बडी खुशी है कि आप यह विशाल कार्य कर रहे हैं'।

प्रो. सरस्वती प्रसाद चतुर्वेदी, एम्. ए., संस्कृत अध्यापक, मारिस कॉलेज, नागपूर.

'यह पुस्तक आपकी भारतीय भाषा शास्त्र में गवेषणा करने की पूर्ण तैयारी का प्रचुर प्रमाण है। जहांतक हमें अभी ज्ञान है अपभ्रंश साहित्य अभीतक प्रायः सर्वथा अप्रकाशित है। इस दिशा में आपके परिश्रम द्वारा संस्कृत से लगाकर वर्त-मान आर्य भाषाओं के क्रम-विकाश के ज्ञान में जिस कमी का अनुभव बहुत काल से हो रहा है उसकी पूर्ति हो जायगी। मैं उस समय को अपनी दूरदृष्टि द्वारा अच्छी तरह देख रहा हूं जब आगन्तुक पीढी आप जैसे, मृत अपभ्रंश साहित्य क खोजियों की ओर कृतज्ञता पूर्वक देखेगी। ग्रंथ के इस महत्व का मैं सबसे अधिक मूल्य समझता हूं। किन्तु ग्रंथ की एक एक पंक्ति में जो सांप्रदायिक-संकीर्णता रहित उदार, नैतिक उपदेश भरा हुआ है उसका भी मुझे पूरा ध्यान है। उसकी अति उपदेश पूर्ण उक्तिओं को पढकर मुझे बौद्ध धर्म के उत्कृष्ट नैतिक साहित्यांश धम्मपद का ध्यान आता है। इस चित्तग्राही ग्रंथ के ऐसे सर्वांग पूर्ण, सुव्यवस्थित संस्करण को निकालने के लिये आपको मेरी हार्दिक बधाई है'।

श्रीयुक्त कामताप्रसादजी जैन, सम्पादक 'वीर'

'सावयधम्म दोहा पढकर बड़ा ही आनन्द मिला। कहीं कहीं तो कवि महोदय ने ऐसी साहित्यिक मधुरिमा बखेर दी है कि उसका पान करते जी नहीं भरता। **सम्पादन भी आपने आदर्श रीति पर किया है। इस ढंग का हिन्दी में सम्पादित हुआ ग्रंथ यही एक है।** इसके लिये हार्दिक बधाई और साधुवाद स्वीकार कीजिये'।

उपर्युक्त सम्मतियों के खण्डों के अतिरिक्त उक्त दोनों ग्रंथों की बड़ी बड़ी विदेशी पत्रिकाओं जैसे इंग्लैंड के जरनल आफ दि रायल एशियाटिक सोसायटी, फ्रांस की 'सोसायटी एशियाटिक डे पेरे' आदि तथा भारतीय माधुरी, गङ्गा आदि व जैन पत्र पत्रिकाओं जैसे 'वीर' 'जैन मित्र', 'जैन जगत्' आदि में छोटी बड़ी समालोचनाएं निकल चुकी हैं।

ग्रंथ जो हाल ही छपकर तैयार हुए है

३. पाहुडदोहा

यह रामसिंह मुनि कृत जैन आत्मध्यान का उपदेशक ग्रंथ है। इसके अपभ्रंश दोहे सावयधम्म दोहों के समान सरल, सुन्दर, भावपूर्ण और हृदय मोहक हैं। सम्पादन सावयधम्म दोहा के समानही अविकल हिन्दी अनुवाद आदि सामग्री सहित हुआ है। मूल्य २॥)

४. करकंडचरिउ

इसमें मुनि कनकामर विरचित करकण्डु महाराज का चरित्र सुन्दर अपभ्रंश कविता में है। करकण्डु महाराज बौद्ध, श्वेताम्बर व दिगम्बर तीनों पंथों में माने गये हैं। वे पार्श्वनाथ स्वामी के तीर्थ में हुए हैं। ग्रंथ में विस्तृत भूमिका, पूरा अंग्रेजी अनुवाद, शब्दकोश और टिप्पणी दी गई हैं। दो परिशिष्टों में बौद्धों के पाली व श्वेताम्बर समाज के प्राकृत ग्रंथों से करकण्डु की कथाएं सानुवाद उद्धृत की गई हैं। ग्रंथ में करकण्डु महाराज द्वारा तेरापुर में गुफामंदिर (लयन) बनवाने का वर्णन है। भूमिका में इन का विशद स्पष्टीकरण है और चित्रों सहित बतलाया गया है कि ये गुफाएं अबतक वर्तमान हैं और उनमें पार्श्वनाथ स्वामी की मूर्ति अबतक विराजमान है। भूमिका में ग्रंथ के आधार पर दक्षिण के शिलाहार राजवंश की उत्पत्ति व इतिहास पर भी प्रकाश डाला गया है। सम्पादक प्रोफेसर हीरालाल जैन हैं। यह ग्रंथ नागपूर विश्वविद्यालय की बी. ए. परीक्षा के लिये स्वीकृत हो चुका है। मूल्य ६)

आगे प्रकाशित होने वाले ग्रंथ.

५. महापुराण--पुष्पदन्त कृत। यह अपभ्रंश का बडा भारी ग्रंथ १०२ संधियों अर्थात् परिच्छेदों में समाप्त हुआ है। इसके आदिपुराण व उत्तरपुराण दो

खण्ड हैं जिनमें ऋषभ भगवान् से लगाकर चौबीसों तीर्थकरों के जीवन-चरित्र वर्णित हैं। पुष्पदन्त की कविता कैसी उत्तम होती है यह उनके प्रकाशित 'जसहर चरिउ' व णायकुमार-चरिउ' को देखने से ही ज्ञात हो सकता है। प्रस्तुत ग्रंथ कविता की दृष्टि से और भी पुष्ट और परिपक्व है। ग्रंथ तीन या चार खण्डों में प्रकाशित किया जायगा। इसका सम्पादन पूना के प्रसिद्ध विद्वान् श्रीयुत् डॉ. वैद्य तथा जर्मनी के डॉ. आल्सडार्फ द्वारा होकर तैयार है। शीघ्र ही छपना प्रारम्भ होगा।

६. **अपभ्रंश कथासंग्रह**—इसमें अनेक छोटी छोटी मनोहर व्रत कथाओं का संग्रह किया गया है। इसका भी सम्पादन प्रोफेसर हीरालालजी द्वारा तैयार है।

७. **सुदंसण चरिउ**--(सुदर्शन चरित) । यह भोज नरेश के समय के एक कवि नयनन्दि द्वारा रचा गया है। इसकी कथा की रोचकता व कविता की मोहकता दोनों प्रशंसनीय हैं। सम्पादन प्रोफेसर हीरालालजी द्वारा प्रायः पूर्ण हो चुका है।

८. **पउम चरिउ** (पद्म चरित) स्वयंभूदेव कृत। यह भी महापुराण के सदृश बड़ा विस्तीर्ण है। महाकवि पुष्पदंत ने भी स्वयंभूदेव का उल्लेख किया है। उपलब्ध अपभ्रंश साहित्य भर में यह ग्रंथ सबसे प्राचीन सिद्ध होता है। इसमें रामायण की कथा है। इसका सम्पादन चालू है।

६. **हरिवंश पुराण**—यह भी उपर्युक्त स्वयंभूदेव की रचना है और ग्रंथ भी भारी है। इसमें महाभारत की कथा वर्णित है। सम्पादन हो रहा है।

इनके अतिरिक्त अनेक छोटे बड़े अपभ्रंश काव्य तैयार हो रहे हैं जो धारावाही रूप में शीघ्र प्रकाशित होंगे।

अब यदि आप इस ग्रंथमाला के महत्व को समझ गये हों तो शीघ्र फार्म भरकर भेज दीजिये।

श्री

अम्बादास चवरे दिगम्बर जैन ग्रन्थमाला

(प्रार्थना पत्र)

संरक्षक नं०

सहायक नं०

ग्राहक नं०

श्रीयुक्त मंत्रीजी, कारंजा जैन सीरीज,

मैंने उक्त ग्रंथमाला के नियम पढ़ लिये और माला के ध्येय को समझ लिया।

मैं ग्रंथमाला का संरक्षक / सहायक / ग्राहक होना चाहता हूं। एतदर्थ मैं नियमानुसार

रु. ______________

चेक / मनिऑर्डर / हाथोंहाथ से भेज रहा हूं।

ता. ______________

____

प्रेषक (हस्ताक्षर)

नाम उपाधि सहित ______________

पूरा पता ______________

(स्पष्टाक्षरों में) ______________

____

ત્રણ વાગે અને રાતના દશ અગ્યાર વાગે જાન જમાડી. કન્યા પક્ષ વાળાએ તૈયાર કરાવેલ અગ્યાર મણ બરફીચુરમું અને બીજી રસોઇ બીજે દીવસે પણ બગડી ! ત્રીજે દીવસે સવારે જાન વિદાય થઇ કોઇ કોઇને સન્મન નિમિત્તે આવજો, જજો કહેવાનું પણ બની શક્યું નહિ ! એક પોતાનાજ જાત ભાઇને સાથે બેસાડી ન જમવા દેવા માટે આટલું દુઃખ સહન કરીને, જે સમાજ ધર્મ અને વ્યવહાર બન્નેને જતાં કરે છે, તેનું શ્રેય કેવી રીતે થાય ! 'ચોવીહાર'તો દુર રહ્યા પણ રાત્રે બાર બે વાગે રસોઇ બના-વડાવી જમે છે, એથી વિશેષ અધોગતિ શું હોઈ શકે !

ખાનગી બોલાચાલી અને એક બીજાનાં મન દુઃખાય એવી કહાણીઓ તો આવા જાહેર લેખમાં હું લખું તો મારી બેઅદબી ગણાય. આ લખતાં લખતાં મારૂં હૃદય ભરાઇ આવે છે કે, આ તે બે હજાર વર્ષથી પાળતા આવેલા 'અહિંસાવાદી' જૈન ભાઇઓનો ધર્મ !!! મન. વચન, કાયાથી નાના જંતુને પણ જે દુઃખ ન થાય તેટલા માટે વર્તો કરે, તે ભાઇઓ વચન રૂપી કુહાડાથી એક બીજા ભાઇનાં હૃદય ચીરતાં ગેહુંજે પાછી પાની ન કરે ! હલકામાં હલકી કોટીના અજ્ઞાન માણસો ઝઘડા કરે ત્યાં પણ જે તે રીતે સમાધાન થાય છે. આ તો કોઇ રીતે સમાધાનજ નહિ. એકને જમાડે તો બીજો નાસી જાય અને જમવા જમાડવાના વાંકે લગ્ન જેવી ધર્મ વિધિનો અને તે અંગે થતા મહાન ઉત્સવનો નાશ થાય. પરિણામે કોન્ફરન્સે સમાધાન કરવા માટે કરેલો મહાભારત પ્રયાસ નિરર્થક ગયો ! સાંભળવા પ્રમાણે નરસીંપુરવાળા ભાઇઓ પણ હજી પણ એવી બેહુદી દલીલો જાહેરમા મૂકે છે, કે તેને પરિણામે આ કલેશ વધતો જાય છે. કહાનમ વિભાગના નૃસિંહપુરા ભાઇઓમાં તો એક ઝઘડો નવો વધ્યો છે. અવસરો અટકશે, તે તો જાણે વણ માંગ્યો સુધારો દાખલ થવા જેવું થશે; પરંતુ પ્રસંગે પ્રસંગે જો કલેશનાં પરિણામ ઓછાં કરવામાં નહિ આવે તો જરૂર સામાજીક બંધારણો તૂટી જશે.

આ તો હમારો કહાનમ વિભાગ, જેમાં ઘણા કેળવાએલા અને સમજુ આગેવાનો છે તેનો કીસ્સો છે. ત્યારે બીજા વિભાગોમાં કેવાં કેવાં દુઃખ અને કલેશ થતાં હશે, તે તો નજરે જોનારા જાણે. ભવિષ્યમાં આવાં પાપ વધારે વખત કરવાં ન પડે તે માટે ફરીથી વિચાર કરવા સમાજના સમજુ ગ્રહસ્થો એક સ્થાને એકઠા મળી અને દીલસોજી રાખી, બન્ને પક્ષ સમતોલપણું મય-ળાય એવો તોડ કાઢે અથવા તો સુરત મુકામે થયેલા કરારને અમલમા મૂકવાનો રસ્તો શોધી કાઢે એ ખાસ જરૂરનું કામ છે. આવાજ ઝઘડા બીજા જથ્થાઓમાં પણ છે. તે ભાઇઓ પણ જરૂર પડે તો આપણી સભાએ સ્થાપન કરેલી સમાધાન સમિતિની મદદ લે, અને જે તે રીતે ઝઘડા પતાવે તેમાંજ આપણું શ્રેય છે.

આ લેખ લખવાનો હેતુ કોઇપણ પક્ષનું મન દુઃખવવાનો નથી. કોઇપણ રીતે પક્ષાપક્ષ મટે અને કલેશનો નાશ થાય એવી રીતનો રસ્તો કાઢવા માત્રનો આ મારો નમ્ર પ્રયાસ છે.

—નાગરદાસ.

ઇડરમાં મહાવીર જયંતિ—ગાંધી છ. શે. દિ. જૈન બોર્ડિંગ વિદ્યાર્થી મંડલ તરફથી ઉજવવામાં આવી હતી. સવારમાં પ્રભાતફેરી ને પંચામૃત અભિષેક સાથે પૂજન પ્રાર્થના આદિ રાખવામાં આવ્યાં હતાં. બપોરે વરઘોડો કાઢવામાં આવ્યો હતો. જેમાં દિગમ્બર શ્વેતામ્બર શ્રાવકોએ ભાગ લીધો હતો. સાંજે સભા ભરવામાં આવી હતી. પ્રમુખ મે. રેવન્યુ કમિશ્નર સાહેબ હતા. સંવાદ, રાસ, ગરબા, ગાયન વિ. નો પણ કાર્યક્રમ હતો. મે. પ્રમુખ સાહેબે જણાવ્યું હતું કે પોતે જૈનેતર હોવા છતાય ભગવાન મહાવીરને અતિવ પૂજ્યભાવથી માને છે, મોચણી સાહેબ તથા છોટાલાલ ગાંધીએ પણ વિવેચન કર્યાં ને જયંતીની રજાનો ઠરાવ થયો હતો.

बुंदेलखंड दि० जैन सुकृत फंड (बैंक)—ललितपुरके नियम व उद्देश्य प्रकट हुए हैं जिससे मालूम होता है कि इसमें मंदिर, तीर्थ, संस्था, दान आदिका द्रव्य जमा रखकर उसपर ।) से ॥) तक सूद दिया जायगा व इस बैंकसे रुपये-उधार द्रव्य ॥) से १) तकके सूदसे दिया जायगा। प्रबंधक पांच हैं. जिनमें व्यवस्थापक सेठ सुखलालजी टड़ैया—ललितपुर हैं।

गजपंथाजी—में ब्र० सेठ जीवराज गौतमचंद दोशीकी ओरसे पंचकल्याणक प्रतिष्ठा व ब्र० कंकूबाईकी ओरसे मानस्तम्भ प्रतिष्ठा भी होगई। व्यवस्था अतीव उत्तम थी। नित्य भोजनका प्रबंध संघपतिकी ओरसे था। श्रीमान् स्त्री पुरुषोंने स्वयंसेवकका कार्य किया था। अनेक कीर्तन भी हुए थे। मेला बहुत अच्छा भरा था।

श्वे० जैन कान्फरंस व श्वे० जैन युवक संघ—के अधिवेशन बम्बईमें ता० ५-६-७ मईको होंगे।

श्वे० जैन साधु संमेलन—अहमदाबादमें २५ दिनसे होरहा है। ५००—७०० साधु साध्वी इकट्ठे हुए हैं। बिना सभापतिके काम पुरानी पंचोंकी गतिसे होरहा है। बालदीक्षा विषयका कोई अंतिम निर्णय अभीतक नहीं हुआ है।

दि० जैनोंका—एक डेप्युटेशन गत मासमें नामदार महाराणा उदैपुर, रेसीडेंट आदिको श्री० सर सेठ हुकमचंदजीके सभापतित्वमें मिला था तब श्री० महाराणाने दि० जैनोंको भी पूर्ण न्याय करनेका आश्वासन दिया है। देखें अब कब केशरियाजी प्रकरणका निबटेरा होता है।

स्व० सेठ टीकमचंदजीके—स्मरणार्थ श्री० सेठ भागचंदजीने ५००००) का दान करनेका संकल्प किया है। आशा है सेठजी इसकी व्यवस्था शीघ्र ही करेंगे।

शिखरजीमें—ईसरी स्टेशनके पास एक उदासीनाश्रम खोलनेकी योजना होरही है। उसके लिये ५१००) बांकीपुर नि० सूर्यमलजी वसंतीलालजीने दिये हैं व कलकत्तेके भाई इसके लिये कोशिश कर रहे हैं।

સોજીત્રા સંભામાં એકયતા—સોજીત્રા સંભામાંજ નાના મોટા એમ બે વાડા કન્યાની આપલે માટે પડી ગયા છે, તેના અનિષ્ટ પરિણામ, ઉચા કુળ ને નીચા કુળના કહેવાતા ભેદથી મોટા વાડાવાળાએ નાના વાડાની કરેલી પાયમાલી, નાના વાડાને તે પરથી કરવું પડેલું જુદું બંધારણ એ વિગેરે વિષે એક લેખ શા. ચુનીલાલ જીવાભાઈ દાવોલ તરફથી લેખ મળ્યો છે. કેટલીક વખત સ્વાર્થ દ્રષ્ટિથી કોઈ જુના જમાનામાં અમુક કુળ પર સાચા જુઠા આરોપ મુકાયા હોય તેથી તેની પેઢીઓ-ગત વંશજોને પણ ઉતારી પાડવા એ ઠીક નથી. ત્યારે બીજી તરફથી એ પણ જોવામાં આવે છે કે એ મોટા વાડામાં પણ અમુક ઘરોનેજ ત્યાં નાનપણથી વિવાહ સંબંધ જોડાય છે અને ઘણા મધ્યમ વર્ગનાને પણ ઘાવું સહન કરવું પડયું છે. આશા છે કે ગુજરાતના દિગંબરોમાં મોટી વસ્તિવાળી વીસા મેવાડા ગામ પોતાની કોમમાં જમાનાને અનુસરીને વિવેક દ્રષ્ટિથી સમગ્ર કોમની ઉન્નતિ માટે આ વૈશાખ માસમાં આવતી લગ્નસરા વખતે વિચાર કરશે. મજકુર લેખમાં પંચના બંધારણ માટે પણ સૂચન છે. વાડા દૂર કરવાની ઇચ્છા બતાવનાર વાડાના પ્રતિનીધીઓ રાખવા સૂચન કરે છે તે હમોને વ્યાજબી લાગતું નથી.

"जैनविजय" प्रिन्टिंग प्रेस, खपाटिया चकला—सूरतमें मूलचन्द किसनदास कापड़ियाने मुद्रित किया और "दिगम्बर जैन" ऑफिस, चन्दावाड़ी—सूरतसे उन्होंने ही प्रकट किया।

ગુજરાત દિગંબર જૈન પ્રાન્તિક સભાનું માસિકપત્ર—

दिगंबर जैन.

— संपादक अने प्रकाशक —

मूलचन्द किसनदास कापडिया—सूरत.

वर्ष २७	वीर संवत २४६० वैशाख.	अंक ७

विषय सूची.

(१) उपहार ग्रन्थ-इस वर्षके ग्राहकोको, सं० जैन इतिहास भा० २, दूसरा खंड (पृ० २००) (२) बडा सामायिक पाठ व (३) जैनधर्मनो परिचय-ऐसे करीब १॥) के तीन ग्रन्थ उपहारमें देनेके लिये १०–१५ दिनमें तैयार होकर सब ग्राहकोंको २।≡)की वी० पी०से भेजे जायगे। जिन्हें तीन आनेका फायदा करना हो २।) मनिओर्डरसे भेज दें। सभासद २) ५) या १०१) भेजें।

सामायिकानन्द पाठ-इस अंकके साथ भेंट बांटा गया है।

बालबोध जैनधर्म-गुजराती पहेलो तथा चोथो भाग फरीथी तैयार थया छे. कि० अनुक्रमे पोणो आनो अने चार आना.

धर्म शिक्षावालि-चौथा भाग भी तैयार होगया। पृ० १७२ मू० ।≡) प्रथम-) दूसरा =) तीसरा ≡)॥। एक २ प्रति अवश्य मगाइये। मैनेजर-दिगम्बर जैन पुस्तकालय-सूरत।

उपहारोंके पोस्टेज सहित वार्षिक मूल्य २।) व समाज अंक मू० ॥।)

નૃસિંહપરાને ખુશ ખબર.

આ પત્રમાં બીજા લેખો છપાયા પછી મહા મંત્રીના પ્રયાસથી ભાઇ સરૈયા અને સુરત મુકામે નક્કી કરેલ બે ભાઇઓએ મહેનત લઇ કન્યા બાબતની ખાત્રી કરી તેઓ નીચે મુજબનું નિવેદન બહાર પાડે છે. એ નિવેદન ઝહેરના નૃસિંહપુરા પંચને પહોંચશે અને ટુંક સમયમાં છપાવી ગુજરાતના દરેક સંગ નૃસિંહપુરા પંચને શા. મગનલાલ હરજીવનનો વ્યવહાર ચલાવવા વિનંતિ કરશે. આથી ભ.રે ઝઘડાનો નિકાલ આવે છે તે ખુશ ખબર છે.

નિવેદનની નકલ.

અમો નીચે સહી કરનારા આથી ગુજરાતના શ્રી **સંઘ નૃસિંહપુરા કોમના પંચોને આથી** નિવેદન કરીએ છીએ કે સુરત મુકામે આપણી **ગુજરાત દિ. જૈન પ્રાંતિક સભા** તા. ૧-૧-૩૪ દીને મળેલી તે પ્રસંગે મળેલી આપણી કોમની પંચોએ હમારી અયોગ્યતા હોવા છતાં પણ હમોને આપેલા અધિકાર પ્રમાણે **સુણદાવાળા શા. મગનલાલ હરજીવન**ના ભાઇ નેમચંદ જે કન્યા લાવેલા તે કન્યા નૃસિંહ-પુરા જ્ઞાતિની ભાણે ખપતી છે કે કેમ? વીગેરે બાબતની તપાશ કરવા સુરતવાળા સરૈયા છગ-નલાલ ઉત્તમચંદ સાથે જવું તેવો ઠરાવ કરેલો તે પ્રમાણે અમો ભાઇ સરૈયા સાથે મોઢીના રહીશ તે હાલ નગરોલના વરદીચંદ રીખવચંદ જે એ કન્યાના બાપ છે તેને ત્યાં ગયા હતા. તે ગામના આગેવાનોને મળી ખુલાશો મેળવતાં સદર કન્યા નરસિંહપુરા જ્ઞાતિની કુંવારી ભાણે ખપતી હોવાની અમારી ખાત્રી થાય છે. પરંતુ તેની માએ પુનર્લગ્ન કર્યાનું તાત્રીક તપાસના અંગે નીકળી આવે છે પણ તેમાં વટાળ જેવું કશુંએ નથી. તેથી આપણા સમાજના ચાલતા આવેલા બંધારણની કંઇક વિરૂદ્ધ હોવાથી તેના માત પીતા ત્યાંના સમાજના વ્યવહાર બહાર છે. હાલના સમયે માત પીતાના દોષે તેના નિર્દોષ વારસોને સહન કરવું પડે એ અમોને બરોબર લાગતું નથી.

આપણી નૃસિંહપુરા જ્ઞાતિમાં સુણદાવાળા શા. મગનલાલ હરજીવનના આ કેશથી ઘણીજ **અશાંતિ થએલી** છે તેની શાંતિ થવા અર્થે ભાઇ સરૈયાએ પોતાને પસંદ પડે તે સ્થાને **શાંતિની પૂજા** ભણાવ્યાથી કોમમાં કાયમની શાંતિ થશેજ તો તે પ્રમાણે વ્યવસ્થા થવા શ્રી. સંઘ નરસિંહપુરા કોમને અમારી આગ્રહ ભરી વિનંતિ છે.

(સહી) **વખારીયા—અંબાલાલ અમથાભાઇ**
સહી દા. પોતે

(સહી) **શા. ચુનીલાલ ધરમચંદ સહી દા. પોતે**

ઉપર જણાવ્યા પ્રમાણેની શાંતિની પૂજા આમોદ મુકામે મેં ભણાવી છે.

(સહી) **છગનલાલ ઉત્તમચંદ સરૈયા**

શ્રી સંગ નૃસિંહપુરા જહેરના દિગંબર જૈન પંચ સમસ્તને હમો નીચે સહી કરનાર વિનંતિ કરીએ છીએ કે ઉપર પ્રમાણેની હમારી ખાત્રી થઇ છે અને હમોએ દર્શાવ્યા પ્રમાણે શાંતિની પૂજા પણ ભાઇ સરૈયાએ આમોદ મુકામે ભણાવી છે. માટે આપના પંચ તરફથી આપણી કોમના જે જે પંચને સુણદાવાળા શા. મગનલાલ હર-જીવનનો વ્યવહાર બંધ કરવાનું લખ્યું હોય ત્યાં ત્યાં એમનો વ્યવહાર ચાલુ કરવા લખવા વિનંતિ છે.

(સહી) **વખારીયા—અંબાલાલ અમથાભાઇ**
સહી દા. પોતે

(સહી) **શા. ચુનીલાલ ધરમચંદ સહી દા. પોતે**

સોજીત્રા આશ્રમ—નું નિરીક્ષણ કરી પં. ગુણભદ્રજી જણાવે છે કે આ સંસ્થા ઉત્તમ કામ કરી રહી છે. પં. પ્રભાવતીબ્હેન ને નાનીબ્હેન ખુબ પરિશ્રમ કરી રહ્યા છે.

वर्ष २७ वां
अंक
७

वीर सं० २४६०
वैशाख।
सं० १९९०.

प्रासंगिकैः सामयिकैः सुवृत्तैर्लेखैर्विनोदैः कविता-कलाभिः।
सद्धर्मसाहित्यसमाजवृद्धयै "दिगम्बरो जैन" उदेत्यपूर्वः॥

सम्पादकीय वक्तव्य।

श्रुतपंचमी।

पर्वराज श्रुतपंचमीका माहात्म्य अगम अपार है। यह वही दिन है जबकि जैनोंके आगमग्रन्थ लिपिबद्ध किये गये थे, यह वही दिन है जबकि जैनोंका भविष्य ज्ञानमय बनाये रखनेका प्रयत्न किया गया था, यह वही दिन है जबकि जैनोंके लिये एक महा विभूतिका निर्माण किया गया था। सच पूछा जाय तो यह श्रुत निर्माण मात्र जैनोंके लिये ही नहीं हुआ था किन्तु जगतके हितके लिये हुआ था। तभी तो समन्तभद्राचार्यने लिखा है कि "सार्वः शास्त्रोपलालयते" अर्थात जो सबके हितके लिये हो वह शास्त्र है। इसलिये यह कहना चाहिये कि आगमकी रचना सभीके लिये हुई थी। फिर भी उसका उत्तराधिकार जैनोंके हाथमें ही रहा है इसलिये और वह जैनागम कहा जाता है इसलिये भी यों कहना चाहिये कि वह आगमग्रंथ जैनोंके हैं या जैनोंके लिये हैं!

किन्तु महान् दुःखका विषय है कि हम अपने उत्तराधिकारको सम्हाल नहीं सके, अपने उत्तर-दायित्वको समझ नहीं सके तथा अपने कर्तव्या-कर्तव्यका ज्ञान नहीं कर सके। अकारणबन्धु पर-मोपकारी मुनिराज श्री पुष्पदन्त और भूतबलिने अकल्प्य परिश्रम करके हमारे लिये जिन शास्त्रोंकी रचना की थी, हम उनका पठनपाठन तो दूर रहा उन्हें सम्हाल तक नहीं सके! उन्हें अलमारियोंमें बन्द किया, सड़ाया, गलाया, दीमकोंसे खवाया और हवा नहीं लगने दी।

जिनवाणी माताकी स्तुति गानेवाले, आरती उतारनेवाले और पूजा करनेवाले जैनोंने जिनवा-णीकी जो दुर्दशा की है वह अकथनीय है। उसे चूहों-दीमकोंकी खुराक बनाकर भी हम उसके भक्त कहलाते हैं, उसे सड़ा गलाकर भी उसके पुजारी बने हैं और उसका विनाश करके भी उसके उत्त-राधिकारी बने हैं। यह कितने आश्चर्य और लज्जाकी बात है।

जिनके हाथमें भण्डारोंकी चावी है वे उसपर अपना मौरूसी हक समझे बैठे हैं, जिनके हाथमें मंदिरोंकी व्यवस्था है वे जिनवाणीकी अलमारियों-को खोलना नहीं चाहते और जिनके पास शास्त्रोंका संग्रह है वे उन्हें दूरसे ही देख दिखाकर जिनवाणी-का सन्मान हुआ मान रहे हैं। ऐसी दयनीय परिस्थितिमें जिनवाणी माताकी रक्षा कैसे होसक्ती है? उसका उद्धार और प्रचार कैसे होसक्ता है?

हमारा तो यह सिद्धान्त है कि "बीती ताहि बिसारिके, आगेकी सुधि लेहु" अथवा "भूतका-लकी अपेक्षा भविष्यका विशेष विचार करो" तदनुसार अब अपने कर्तव्यका निर्धार करना चाहिये। 'श्रुतपंचमी' पर्व निकट है। प्रत्येक पर्वके साथ कुछ गुप्त सन्देश रहता है। प्रत्येक पर्व हमें कुछ सिखाता है। और हरएक पर्वमें कोई

नवीन प्रेरणा रहती है। जड़ जीवोंपर उसका कोई असर नहीं होता। मगर हम देखते हैं कि आज जैन समाजमें अनेक कर्तव्यपरायण व्यक्ति मौजूद हैं, अनेक उत्साही विद्वान और युवक पाये जाते हैं। जो सच्ची श्रुतपंचमी मनानेकी योग्यता रखते हैं और जिनवाणीका वास्तविक उद्धार करना चाहते हैं।

उन्हीं श्रुतप्रेमियोंसे हमारा सानुरोध निवेदन है कि अब बनावटी पूजाको छोड़कर सच्ची पूजाका प्रचार करो। श्रुतपूजाका अर्थ शास्त्रोंपर या शास्त्रोंके सामने जल चन्दन चढ़ाना नहीं है किन्तु शास्त्रोंका उद्धार करना, जिनवाणीका प्रचार करना और उसे जगतभरमें फैलानेका प्रयत्न करना ही वास्तविक श्रुतपूजा है। आज संसार ज्ञानकी खोजमें है। वैज्ञानिक जगतके सामने अब बनावटका काम नहीं है, उसे तो जहां सत्यता मिलेगी वही शास्त्र कहलायगा, वही जगत हितैषी माना जायगा और उसीकी प्रतिष्ठा होगी।

जबकि हमारा विश्वास है कि जैन शास्त्र सर्वज्ञ भगवानके द्वारा कहे गये हैं, तब वे अवश्य ही सत्य होना चाहिये। और जबकि हमारे आगम ग्रंथ सत्य हैं तब क्यों न उनका जगतमें प्रचार किया जाय? शास्त्रोंको छिपा रखना, बंद कर रखना, दूसरोंके हाथमें नहीं देना, यह तो कायरोंका काम है। जिसके पास सच्चा जवाहिरात है वह जौहरी किसीको बतानेसे क्यों डरेगा? हमारा कर्तव्य है कि इस श्रुतपंचमी (जेठ सुदी ५) को अपने शास्त्रभण्डारोंकी सम्हाल करें, शास्त्रोंको स्वच्छ करें और धूप देवें, शुद्ध खादीके नवीन वेष्टनोंमें उन्हें बांधे और श्रुतपंचमी पूजन विधान करें तथा सबसे बड़ा काम यह है कि अप्रगट ग्रंथोंको मुद्रण करानेका प्रबंध करें। हमारी श्रुतपंचमी सफल होसकती है।

× × ×

जैनधर्मकी वैवाहिक उदारता।

[ले.—पं० परमेष्ठीदास जैन न्यायतीर्थ—सूरत।]

जैन धर्मकी सबसे अधिक प्रशंसनीय एवं अनुकूल उदारता विवाह सम्बंधी है। यहां वर्णादिका विचार न करके गुणवान वर-कन्यासे सम्बन्ध करनेकी स्पष्ट आज्ञा है। हरिवंशपुराण आदि ग्रंथोंकी स्वाध्याय करनेसे मालूम होगा कि पहले विजातीय विवाह होते थे, असवर्ण विवाह होते थे, स्वयंवर विवाह होते थे, यहांतककि व्यभिचार जात दस्साओं और म्लेच्छ कन्याओं तकसे विवाह होते थे। फिर भी ऐसा विवाह करनेवालोंका न तो मंदिर बंद हुआ, न जाति बिरादरीने एतराज किया और न उन्हें किसीने घृणाकी दृष्टिसे ही देखा। मगर खेद है कि आज कुछ दुराग्रही लोग कल्पित उपजातियों—खंडेलवाल, अग्रवाल, पद्मावतीपुरवाल, परवार, गोलालारे, गोलापूर्व, हूमड़, नरसिंहपुरा, रांकवाल, मेवाड़ा आदिमें भी परस्पर विवाह करनेसे डरते हैं। एक ही धर्मके धारण करनेवाले, एक ही सरीखा रहनसहन, खानपान और व्यवहार करनेवाले अपने जाति भाइयोंमें विवाह न करना जैन समाजके क्षयका कारण है।

मैं यह नहीं चाहता कि आज वर्णान्तर विवाह होने लगें, कारण कि इसके अनुकूल वातावरण नहीं है। फिर भी यह धर्म विरुद्ध तो नहीं है। आप शास्त्रोंको उठाकर देखिये, उसमें सैकड़ों उदाहरण ऐसे मिलेंगे जोकि जैन धर्मकी वैवाहिक उदारताको प्रगट करते हैं। जैसे १—श्रेणिकराजाने ब्राह्मणकी पुत्री नन्दश्रीसे विवाह किया था। २—अपनी पुत्री धन्यकुमार वैश्यको दी थी। ३—क्षत्रिय राजा जयसेनने अपनी पुत्री पृथ्वीसुन्दरी प्रीतिंकर वैश्यको दी थी। ४—राजा उपश्रेणिकने भीलकी लड़की तिलकावतीसे विवाह किया था। ५—सम्राट्

चन्द्रगुप्तने ग्रीस देशके (म्लेच्छ) राजा सेल्यूकसकी कन्यासे विवाह किया था। ६-म्लेच्छकी कन्या जरासे नेमिनाथ भगवानके काका वसुदेव (क्षत्रिय)ने विवाह किया था। ७-चारुदत्त (वैश्य) ने अपनी पुत्री गंधर्वसेना राजा वसुदेव (क्षत्रिय) को विवाही थी। ८-उपाध्याय (ब्राह्मण) सुग्रीव और यशोग्रीवने भी अपनी दो कन्यायें वसुदेवको विवाही थीं। ९-ब्राह्मण पिता और क्षत्रिय माातासे उत्पन्न हुई कन्या सोमश्रीको वसुदेवने विवाहा था। १०-सेठ कामदत्त (वैश्य)ने अपनी कन्या बंधुमतीका विवाह वसुदेवसे किया था। ११-जीवंधरकुमार (क्षत्रिय)ने वैश्य कन्यासे विवाह किया था। इस प्रकारसे ११ नहीं किन्तु ग्यारहसो उदाहरण उपस्थित किये जासकते हैं।

भगवज्जिनसेनाचार्यने स्पष्ट लिखा है कि—

शूद्रा शूद्रेण वोढव्या नान्या स्वां तां च नैगमः।
वहेत् स्वां ते च राजन्यः स्वां द्विजन्मा क्वचिच्च ताः॥
—आदिपुराण पर्व १६ श्लोक २४७।

अर्थात्-शूद्रको शूद्र कन्यासे विवाह करना चाहिये अन्यसे नहीं। वैश्य वैश्य तथा शूद्रकी कन्यासे विवाह करें, क्षत्रिय क्षत्रिय, वैश्य और शूद्रकी कन्यासे विवाह करें तथा ब्राह्मण अपने वर्णकी तथा शेष तीन वर्णकी कन्याओंसे भी विवाह कर सकते हैं।

जब इतना स्पष्ट वर्णन और इतने उदाहरण मिलते हैं तब यह सिद्ध है कि वर्णान्तर विवाह धर्म संगत है। मगर यहां तो अन्तर्जातीय विवाहके लिये भी आनाकानी और सोच विचार किया जाता है। यदि कोई अंतर्जातीय विवाह करता है तो पुराना अविचारी अदूरदर्शी या समाजके हिताहितका विचार न करनेवाला पक्ष उसकी निन्दा करने लगता है। यह उस पक्षका दयनीय अज्ञान है।

'जैन धर्मकी वैवाहिक उदारताको देखते हुये अंतर्जातीय विवाह तो मामूलीसी बात है। मैं तो यहां तक कह सकता हूं कि अपनी अपनी जातियोंमें विवाह करनेकी अपेक्षा दूसरी उपजातिमें विवाह करना विशेष हितकारी, लाभप्रद और सुख-शांतिका कारण हो सक्ता है।' जिस प्रकार अपने गोत्रमें अपने संबन्धियोंमें और अपने निकटवर्तियोंसे विवाह न करके दूसरोंसे विवाह करना ठीक माना जाता है उसी प्रकार दूसरी उपजातिमें विवाह करना तो और भी अधिक हितकर समझना चाहिये।

अपनी ही कल्पित जातियोंको पकड़कर उन्हींमें हठपूर्वक विवाह करनेकी प्रथाने समाजका विनाश किया है। इससे न तो योग्य संबंध मिल पाते हैं और न सामाजिक प्रेमका क्षेत्र ही बढ़ पाता है। २५-५० घरकी संकुचित जातियोंमें ही संबंध ढूंढ़नेसे चुनाव ठीक नहीं हो पाता है, आखिरकार संबंधियोंमें या योग्य अयोग्यमें ही विषम संबंध जोड़ दिया जाता है। जिससे दाम्पत्य जीवन बिगड़ जाता है। और गृहस्थाश्रम कहीं कहीं तो नरकवास बन जाता है।

जैनियो! अब जागृत होओ, संकोचको छोड़कर सत्यको पहिचानो और जमानेकी गतिको देखो। उसीके अनुसार आपको चलना होगा। अब भाषणों और सभाओंका समय नहीं है। अब तो जो कर दिखाये वही सच्चा सुधारक है, जो कहकर पालन करे वही वास्तविक वीर है, या जो अमली कार्य करनेवाला हो वही सच्चा समाजहितैषी है।

हर्षका विषय है कि गुजरात प्रान्तके जैनियोंके सामने अन्तर्जातीय विवाहके सम्बन्धमें धार्मिकता अधार्मिकताका प्रश्न नहीं है। उसने एक स्वरसे अन्तर्जातीय विवाहका प्रस्ताव पास किया है। किन्तु खेद है कि प्रस्तावका अमल करनेवाले अभीतक कम दिखाई देते हैं। हां, श्री० छगनलाल

उत्तमचंदजी सरैया जैनी सूरतने अभी अपने भतीजे साकेरचंद (नृसिंहपुरा) की सगाई अंकलेश्वरमें शाह नगीनदास भगवानदास (मेवाड़ा) की कन्याके साथ करके अवश्य आदर्श उपस्थित किया है। हालांकि उन्हें सजातीय कन्यायें मिलती थीं फिर भी आपने ऐसा न करके इरादापूर्वक अन्तर्जातीय संबन्ध ही किया है। इसके लिये वे धन्यवादके पात्र हैं। श्रीयुत सरैयाजीने अब मार्ग खोल दिया है। इसपर अन्य समझदार व्यक्तियोंको भी चलनेकी आवश्यक्ता है। बातें करनेकी अपेक्षा कामका कर दिखाना कठिन है। आशा है कि गुजरातकी दिगम्बर जैन समाज अपने प्रस्तावका अमल करनेमें अब विलम्ब नहीं करेगी। इस समय तो सच्चे सुधारकोंका या गुजरात दि० जैन सभाके अनुयाइयोंका यही कर्तव्य है कि वे अपनी जातिमें योग्य सम्बंध मिलनेपर भी उसे न करके दूसरी जातिमें ही विवाह करें। जैन धर्मकी वैवाहिक उदारताका क्षेत्र बहुत ही विशाल है।

पं० पन्नालाल बाकलीवालका स्वर्गवास—बम्बईमें ता० ८ अप्रेलको ६६ वर्षकी आयुमें होगया। आप बालब्रह्मचारी, जिनवाणी भक्त, जैन साहित्यकी सच्ची सेवा करनेवाले व अनेक जैन ग्रन्थोंके सम्पादक, अनुवादक व प्रकाशक व "जैनहितैषी" पत्रके प्रथम सम्पादक थे। जैन समाजकी आपकी सेवा बच्चा २ जानता है। रत्नकरण्ड, मोक्षशास्त्र, द्रव्यसंग्रह आदिकी आपकी टीकाएँ ही पाठशालाओंमें प्रचलित हैं। आपकी आत्माको शांतिलाभ हो यही हमारी भावना है।

कानपुर—में श्री० ला० रामस्वरूपजी रईसकी धर्मपत्नीका अतीव वृद्धावस्थामें ता० २९ अप्रेलको स्वर्गवास होगया। शवका अपूर्व सन्मान हुआ व गंगाजीके घाटपर प्रथम ही आपके दाहसंस्कार करनेकी आज्ञा कलेक्टरने देदी थी।

जैन समाचारावलि।

छःढाला—नामक नवीन पुस्तक (ब्र० भगवानसागरजी कृत) इस अंकके साथ भेंट बांटी गई है वह हरएक पाठक सम्हाल लें व पाठ करें।

ऋषभदेव (केशरियाजी)—तीर्थके विषयमें ता० ३० मईतक दि० व श्वे० दोनों फिरकोंको अपनेर प्रमाण पेश करनेका हुकुम हुआ है।

ओसवाल महासंमेलन—ता० २४ से २६ मईको अजमेरमें होगा, उसमें दि० ओसवालोंको भी भाग लेना चाहिये।

विद्यावारिधि बैरिस्टर चंपतरायजी—साहब ता० ९ मईको सूरत पधारे थे। यहां अपूर्व स्वागत हुआ था व आपने यहां नगीनचंद हॉलमें "विश्वधर्म" पर डॉ० दीक्षित एम० एल० सी० के सभापतित्वमें व्याख्यान दिया था। आप रात्रिको बम्बई रवाना होगये व ता० १० को बंबईसे इंग्लैंड रवाना होगये हैं। जहां खास करके जैन धर्मके प्रचारका कार्य करेंगे।

अंग्रेजी जैन गजट—मासिक मईसे मल्हीपुर (सहारनपुर) से प्रकट होने लगा है।

आ० शांतिसागरजी—के उपदेशसे धरियाबाद नरेश खुमानसिंहजीने अपने यहां प्रत्येक वदी ८ व सुदी १४ को किसीको भी शिकार न करनेका फर्मान निकाला है व खुदने तो आजन्म शिकार न खेलनेकी प्रतिज्ञा ली है।

दि० जैन शास्त्रार्थ संघ अंबाला—की प्रबंध० कमेटी देहलीमें हुई थी। जिसमें संघके विशेष प्रचारार्थ ७ प्रस्ताव पास हुए हैं। तथा संघका 'जैनदर्शन' पत्र अच्छे ढंगसे प्रकट होरहा है।

स्या० महाविद्यालय—काशीसे इस साल बनारस क्विन्स कालेजकी परीक्षामें २७ मेंसे १७ छात्र साहित्य, न्याय, मध्यमा आदिमें पास हुए हैं।

महावीरजी–पर एक्सप्रेस ट्रेन इस शर्तपर खड़ी करनेकी रेल्वेने मंजूरी दी है कि यदि २० यात्री ४८ घंटे पहिले कोटा डी० टी० एस० को सूचना देंगे। इसके लिये दर महिनेमें वीस२ यात्रियोंकी पार्टी ६ माह तक जावे तो यह हुकम चालू होसक्ता है।

बेरिस्टर जमनाप्रसादजी सबजज–सभापति भारत० दि० जैन परिषट छुट्टीके दिनोंमें बरार व सी० पी० में परिषदके प्रचारकार्यके लिये भ्रमणमें निकले हैं। धन्यवाद !

जैन वनिताविश्राम आगरा–की जांच कमेटीकी रिपोर्ट प्रकट होगई है। इससे मालूम होता है कि यह संस्था जाली है। अत: इसके संचालक फूलचन्द व इसकी विमलादेवीसे समाजको सावधान रहना चाहिये। गत सप्ताहमें तो आगरा पुलिसने इस विश्रामसे तीन दु:खी स्त्रियोंको मुक्त कराया है।

यात्री लापता–मेरठ सदर व तोपखानेसे मोटर लारीद्वारा एक यात्रासंघ ४॥ माह हुए गिरनार, मूडबिद्री आदिकी यात्रार्थ गया हुआ है उसका आजतक कुछ पता नहीं है। अत: जहां ये यात्री गये हों वहांके मुनीम आदि दिगंबर जैन या मित्रमें सूचना दें। सम्बन्धियोंको बड़ी फिकर लग रही है। भूमसिंह जैन–मेरठ।

केशरियाजीके इतिहासपर एक दृष्टि–नामक पुस्तक श्री लक्ष्मीसहायजी माथुर विशारद द्वारा तैयार होकर प्रकट होगई है। इसमें चँदनमलजी नागोरीकृत 'केशरियाजीका इतिहास' नामक जाली पुस्तकका ठीक २ उत्तर दिया गया है व केशरियाजी तीर्थपर दि० जैनोंका ही हक है ऐसा साबित किया गया है। मू० ।।।) व मिलनेका पता-गेंदमलजी जैन महावीर दि० जैन विद्यालय, धानमंडी, अजमेर।

झांसी–में आर्यसमाजियोंसे शास्त्रार्थ होगया। पं० राजेन्द्रकुमारजी, प्रॉ० धर्मचंदजी चौधरी, पं० अजितप्रसादजी, पं० बंशीधरजी न्यायतीर्थ आदि पधारे थे। जैनियोंकी ही विजय होकर जैन धर्मकी प्रभावना हुई थी।

महावीर जयंती–इस साल तो १२९–१९० स्थानोंपर अतीव समारोहके साथ मनाई गई थी व महावीर जयंतीकी आम छुट्टी होनेकी प्रार्थनारूप प्रस्ताव सब स्थानोंसे होकर उसकी नकल प्रांतीय सरकारको व वायसरोयको भेजी गई थी।

श्री केशरियाजी प्रकरणमें–उदयपुर स्टेटकी ओरसे न्यायकी घोषणा इस प्रकार हुई है कि–(१) ध्वजा दण्ड चढ़ानेका किसका हक है इसपर ४ अजैन ओफिसरोंकी जांच कमेटी नियुक्त की है। (२) मंदिरका इन्तजाम देवस्थान हाकीम करता रहेगा। व एडवाईझरी बोर्डमें ४ दिगम्बरी व ४ श्वेताम्बरी मेम्बर नियुक्त हों जिनमें २–२ मेवाड़ बहारके हों। (३) जिस रीतिसे पूजन होती है होती रहे, कुछ भी रद्दबदल न हो। (४) पंडोंको बोलीकी कुल आय न दीजाय परन्तु आयका अमुक सैंकड़ा देवस्थान हाकिमकी सम्मतिसे पंडोंको दिया जाय।

सर हुकमचन्दजी विद्यालय इन्दौर–में औद्योगिक कार्य चालू होगया है जिसमें सुगंधित तेल, पोमेड, दंतमंजन, डष्टिंग पाउडर, सिरदर्द बाम, अमृतबुन्द ये वस्तुयें लड़के बनाने लगे हैं जो विक्रीसे भी मिलती हैं। धन्यवाद !

भूकम्पसे तीर्थोंमें हानि–बिहारके प्रचंड भूकंपसे हमारे पावापुरी, राजगिरि, गुणावा, कुन्डलपुर, मंदारगिरि, कमलदह आदि क्षेत्र व बिहार तथा नवादाके मंदिर व धर्मशाला जर्जरित होगये हैं। अत: मरम्मतके लिये सहायताकी परम आवश्यका है अत: यथाशक्ति सहायता बा० निर्मलकुमारजी जैन रईस मंत्री, बिहारप्रांत तीर्थ-आराको शीघ्रही भेजिये।

નનાનપુરમાં ચોખલાનું પંચ.

કાંઠાના ૪૨ ગામના દશા હુમડ ભાઇયોનું ચોખલાનું પંચ નનાનપુર કે જ્યાં એ ભાઇઓનાં ૧૦–૧૨ ઘર છે ત્યાં તા. ૨૪ એપ્રીલથી ૮ દિવસ સુધી આખી રાત્રિ મળ્યા કર્યું હતું ને દિવસે ખાવું, પીવું, સુવું, બેસવું કે સગપણ ગોઠવવાનું કામ થતું હતું. ને આશરે ૭૦૦ ભાઇ એકત્ર થવા છતાં સંતોષજનક કામ થયેલું જણાયું નથી. અમે તથા મહામંત્રી ભાઇ છોટાલાલ ઘે. ગાંધી ખાસ આમંત્રણ મળવાથી આ પ્રસંગે તા. ૨૫ થી ૨૭ સુધી ગયા હતા (જતાં આવતાં અમદાવાદની આપણી દીવાળીબાઇ ધર્મશાળામાં ઉતર્યા હતા જ્યાં પાણીના નળ ને સંડાસની સગવડ નથી તે તાકીદે થવાની જરૂર છે) ને રાત દિવસ પ્રચાર કાર્ય કર્યું હતું. તા. ૨૫મી એ રાત્રે પંચ સમયે અમે બંને એ વિવેચન કરી જણાવ્યું હતું કે આપની પંચમાં કન્યાની સગાઇ ૧૧॥ વર્ષ પહેલાં કરીજ દેવાનો ને ન કરે તો ૧૦૧) દંડ લેવાનો તથા કોઇના ઘરમાં પુત્રની સગાઇ થઇ જાય ને તેના ઘરમાં પુત્રી ગમે તેટલી નાની હોય તોપણ તેની સગાઈ છ માસમાં ન કરે તો ૨૫) દંડ લેવાનો જે જહાંગીરી કાયદો છે તે અત્યંત અનુચિત છે. વરકન્યાની વચ્ચે ૪ વર્ષનો અંતર રાખવાનો કાયદો સારો છે પણ એવો અંતર રાખી ૧ માસની છોકરીની પણ સગાઇ કરી દેવાય છે તે અત્યંત અયોગ્ય છે માટે આવા જહાંગીરી કાયદા રદ કરી કન્યા ૧૦ વર્ષની થયા સિવાય તેની સગાઇ કરવીજ ન જોઇએ એવો કાયદો કરો તો આપની પંચને ઘણો ફાયદો થશે વગેરે. એ પછી અમે બંનેએ ગુજરાત પ્રાં૦ સભાના ઠરાવો પર વિવેચન કર્યા પછી સવારના ૫ વાગતા સુધી પંચ બેઠું હતું તેમાં વસ્તીપત્રકના ફાર્મ ભરાઇને આવવા ન આવવાની ચર્ચાજ ચાલ્યા કરી હતી! પંચની પુરાણી ગોકળ ગાયની પદ્ધતિથી જ્યાં અવ્યવસ્થિત કામ થાય ત્યાં શું આશા રાખી શકાય? પછી બીજે દિને અમે બંનેએ બે કલાક બેસી ૯ ઠરાવ તૈયાર કર્યા અને તે મંત્રી શા. ચુનીલાલ નાનચંદ (સાદરા) ને પંચમાં રજુ કરવા આપી આવ્યા ને આખો દિવસ એ ઠરાવો માટે પ્રચાર કામ કર્યું. રાત્રે ફરી પંચ મળ્યું તેમાં પ્રથમ પં. સિદ્ધસેનજી, પં. અક્ષયકુમારજી, પં. સુંદરલાલજી ને પં. ચુનીલાલજીનું (મહા મહેનતે રજા મળવાથી) પાંચ પાંચ મીનીટ વ્યાખ્યાન થયું હતું તે પછી અમે બંનેએ ૯ ઠરાવ રજુ કર્યા જે પર માંહોમાંહે કુંડાળામાં ચર્ચા કરી શ્રી. મોહનલાલ મગનલાલે ઉભા થઇ કહ્યું કે આ ૯ ઠરાવ છે તો સારા પણ પ્રથમના ૪ મુલતવી રાખીએ છિયે (!) ને બાકીના પાંચ પાસ કરીયે છિએ. જે ચાર ઠરાવ મુલતવી રાખ્યા તે નીચે પ્રમાણે હતા–

૧—શ્રી દશા હુમડ બેંતાલીસના ચોખલાનું પંચ સમસ્ત મળે છે તેનું કામ જલ્દી અને સુગમ થાય તે માટે નીચેના નિયમો મંજુર કરે છે. (૧) પંચમાં જેજે બાબતો રજુ કરવાની હોય તે સેક્રેટરીએ લેખીત રજુ કરવી (૨) પંચના બીજા ગ્રહસ્થોને જેજે બીજી બાબત રજુ કરવી હોય તે પંચ મળે તેના એક કલાક પહેલાં લેખીત સેક્રેટરીને રજુ કરવી, પણ પંચ ચાલતું હોય ત્યારે નવી બાબત રજુ કરવા દેવામાં આવશે નહીં (૩) સેક્રેટરીની રજા સીવાય કોઇથી બોલી શકાશે નહીં અને બોલનારે સેક્રેટરી તરફથી આપવામાં આવેલ સમય પ્રમાણે ઉભા થઇને બોલવું. (૪) જે કોઇ વિષયાંતર બોલે તો તેને સેક્રેટરી બોલતા અટકાવી શકશે. (૫) અમુક વિષયની ચર્ચા અમુક સમય સુધી ચાલે પછી સેક્રેટરી ચર્ચા બંધ કરશે, અને તે વિષયની ચોકસ દરખાસ્ત પંચ સમક્ષ મત માટે રજુ કરશે, (૬) મજકુર દરખાસ્તમાં સુધારો કે વધારો કરવાની ઇચ્છા હોય તેણે સુધારા વધારાની દરખાસ્ત લેખીત લાવવી (૭) આવેલી દરખાસ્ત કે સુધારા પર મત લેવા માટે નીચેની બે માંથી

ઠીક લાગે તે રીત સ્વીકારવી. (૧) ઘર દીઠ એક મત ગણવો અને તેવા મતદાર પંચમાં મત લેતી વખતે બેસે અને બીનમતદાર તેટલો વખત અલગ બેસે (૨) ગામના જે પ્રતિનીધિ મેંબર છે તે પોતાના ગામનો મત, પુછીને રજુ કરે. ૮—વધુ મતની દરખારત મંજુર ગણાશે સરખા મત પડે તો સેક્રેટરી પોતાનો એક વધુ મત આપી શકશે. (૯) આપણું પંચ ફરી મળે તે દરમ્યાનમાં પંચ સંબંધીની નજીવી બાબતોનો નિકાલ પંચ કમીટી અમુક બ.બતમાં કરી શકશે.

૨—દશા હુમડ બેંતાલીસના ચોખલાનું પંચ સમસ્ત ઠરાવ કરે છે કે:-આખા પંચમાં કોઇ પ્રકારનો હાલમાં ઝઘડો નથી પણ ઓરાણ ગામમા હજી પણ બે ત્રણ તડ છે તે પતાવવા ચોખલાના સેક્રેટરીએ જેમ બને તેમ જલ્દી એ ઝઘડાનો નિકાલ કરવા પ્રયાશ કરવો અને જરૂર પડે તો પ્રાંતિક સભાની જ્ઞાતિ ઝઘડા નિવારણ કમીટીના સભ્યામાંથી સભ્યોને સાથે લઇને પણ ઝઘડાનો નિકાલ લાવવા પ્રયાશ કરવો.

૩—દશાહુમડ બેંતાલીશનું ચોખલાનું પંચ ઠરાવ કરે છે કે:-આપણા પંચમાં દશ વર્ષની ઉમર પુરી થતા સુધીમા કન્યાની સગાઇ (વેવિશાળ) કરવી નહીં.

૪—દશાહુમડ બેંતાલીશનું ચોખલાનું પંચ ઠરાવે છે કે ગોલ બહાર કન્યા આપવી નહીં પણ જો કોઇ વ્યકિત કે પંચ આપણી સાથે મળવા ખુશી હોય તો તેમની સાથે મળવા આ પંચ પણ ખુશી છે.

હવે જે ૫ થી ૯ ઠરાવો પાસ થયા છે તે નીચે પ્રમાણે છે:—

૫—દશા હુમડ બેંતાલીશનું ચોખલાનું પંચ સમસ્ત ઠરાવ કરે છે કે:-(૧) શ્રી ગુજરાત દિ. જૈન પ્રાંતિક સભાની સ્થાપનાને વધાવી લઇએ છીએ. (૨) એ સભાના સભાસદ થવા દરેકને ભલામણ કરે છે. (૩) સભાના બંધારણ મુજબ તેની સાધારણ સભા મળે ત્યારે તે સભ્યો અને એ કમીટીના સભ્યોએ ત્યાં જઇ તેમાં ભાગ લેવો. (૪) પ્રાંતિક સભાની વ્યવસ્થાપક કમીટીમાં નીચે મુજબના શખશોના નામ. છે:-શા. ચુનીલાલ નાનચંદ, શા. માણેકચંદ છગનલાલ શા. મોહનલાલ મગનલાલ, શા. જીવરાજ ગુલાબચંદ ગાંધી બી. એ. પ્રાંતિક સભા અને વ્યવસ્થાપક કમીટી જે ઠરાવ કરે તે આ ભાઇઓએ આ પંચમાં વિચારવા રજુ કરવા.

૬—ગુજરાતના દિ. જૈનોને જીવન નિર્વાહનાં સાધનમાં પડતી મુશ્કેલી દૂર કરવા ગુ. દિ. જૈન પ્રાંતિક સભાએ ગુજરાત માધ્યમિક સંસ્થા સ્થાપન કરવા જે ઠરાવ કર્યો છે તેની આવશ્યક્તા આ પંચ સ્વીકારે છે.

૭—આ પંચ સર્વે સામાજીક તથા ધાર્મિક પ્રસંગોએ ખાદી તથા સ્વદેશી વસ્તુ વાપરવા વિનંતિ કરે છે.

૮—આ પંચ ઠરાવ કરે છે કે આપણામાં એક સરખી સંસ્કૃતિ લાવવાનો અને આપણી સામાજીક ઉન્નતિનો એકજ ઉપાય કેળવણી છે અને તેના સાધન શ્રાવિકાશ્રમો, બોર્ડીંગ અને કન્યા પાઠશાળાઓ છે. માટે કન્યાઓને પોતાની ગામની કન્યાશાળા અને જૈન પાઠશાળામાં મોકલવી તથા જ્યાં એવું સાધન નહિં હોય ત્યાંની કન્યા સધવા કે વિધવા બ્હેનોને જાંબુડીના શ્રાવિકાશ્રમમાં મોકલવી. અને છોકરાને બોર્ડીંગોમાં મોકલવા.

૯—આપણા વિભાગમાં જ્યાં જ્યાં પાઠશાળા છે તેનો લાભ છોકરા તથા છોકરીઓને પુરતો અપાવવો અને ઓછામાં ઓછા ૧૫ ઘર આપણી જ્ઞાતિના હોય ત્યા જો પાઠશાળા નહિં હોય તો ત્યાં તે સ્થાપન કરવા આગ્રહપૂર્વક વિનંતિ છે.

ઉપલા પાંચ ઠરાવ થયા પછી આખી રાત્રિ ૧૧ાા વર્ષની ઉપર જેમણે જેમણે કન્યાની સગાઇ કરી નહોતી તેમના ગુન્હા શોધવાનું કામ થયું તેમાં બેએ ગુન્હો (!) કબુલ કર્યો ને બાકી માટે બીજે દિવસે સીલબંધ પેટી જાહેર જગ્યાએ

મુકવા નક્કી થયું જેમાં વગર સહીએ ગુન્હાની ચીઠીઓ નંખાઇ હતી. હવે એ ચીઠીઓમાં જે નામ આવે તેમાંથી ખોટા કે ખરા કસમ ખાય તેને માફ થાય ને બાકીનાને દરેકને ૧૦૧) દંડ થવાનો હતો. બીજે દીવસે અમે બંનેએ પ્રાંતિક સભાના સભાસદો બનાવવા પ્રયાસ કર્યો તો શેઠ જીવરાજ ઉગરચંદ ગાંધી, શેઠ જીવરાજ વહાલચંદ ગાંધી, મણીલાલ ચુનીલાલ કોઠારી, નેમચંદ ઉગરચંદ ગાંધી, મોહનલાલ મગનલાલ, શ્રી. ચુનીલાલ નાનચંદ (મંત્રી), શેઠ માણેકચંદ છગનલાલ, શેઠ વેણીચંદ હાથીચંદ વગેરે ભાઇ ૫) કે ૨) ના મેમ્બર થયા હતા. અને અમે બંને તા. ૨૮ બપોરે નનાનપુરથી ઘોડા પર સોનાસણ સ્ટેશન જઇ તા. ૨૯ સવારે અંકલેશ્વર–સુરત આવ્યા હતા.

એ પછી પાંચ છ દિવસ સુધી ચાલ્યું હતું જેમાં બે જમણ નનાનપુર તરફથી ને ૨ બહારના તરફથી થયાં હતાં ને બાકી માટે છેવટે ફાળો પડતાં ઘર દીઠ ૩) ફાળો આવ્યો હતો. આ પંચના ભાઇઓનો આદર સત્કાર ને પ્રેમભાવ ઘણોજ ઉત્તમ છે. નનાનપુરના ભાઇઓએ પણ ચોખલાના પંચની ઉત્તમ સેવા ચાકરી બજાવી હતી.

પંચ વિખેરાયા પછી એક બે ભાઇના પત્ર અમને મળ્યા હતા તેથી જણાયું છે કે–પાછલા દિવસોમાં કંઇ વિશેષ કામ થયું નહોતું. માત્ર તારંગા માટે લગ્ન દીઠ ૫), સગપણ દીઠ ૫) લેવાનો, ને લગ્નમાં ગામના મંદિરને ૧૦) આપવાનો ઠરાવ થયો. યુવક મંડળનું કામ કંઇ સંતોષકારક જણાયું નહિ. ૧૧॥ વર્ષની કન્યાના ગુન્હા માટે ૧૫૦ ચિઠ્ઠી આવેલી તેમાં કેટલીક બિભત્સ હોવાથી રદ કરેલી, બાકીનામાંથી અમુકોએ કસમ ખાધા તેને માફ કર્યું ને કબુલ કર્યું તેવા ચાર પાંચ જણને દરેકને ૧૦૧) દંડ કર્યો તેમજ જે બે જણે પ્રથમ કબુલ કરેલું તેમને રાહત કરી ૮૧) દંડ કર્યો હતો. વળી અમરતલાલ છગનલાલને બીજા ગોળમાં કન્યા આપવા બાબત ૨૨૫) દંડ કર્યો. રા. હાથીભાઇ માણેકચંદ ને માસ્તર જીવરાજ ગાંધીએ ૧૧॥ વર્ષનો કાયદો, ને પુત્રની સગાઇ પછી તે ઘેર કન્યા હોય તો છ માસમાં ઉતારી દેવાનો કાયદો બંધ કરવા ઘણો પ્રયત્ન કર્યો પણ તે વાત ઉડાડી દેવામાં આવી હતી! આ પંચમાં કુલ્લે ૩૫ સગાઇઓ થઇ ગઇ હતી જેમાં માત્ર બે ત્રણજ મોટી ઉમરની સગાઇ હશે! સારાંશ કે આ પંચમાં ઘણોજ સુધારો થવાની જરૂર છે. ૧૧॥ ના કાયદાથી મોટી કન્યા તો મળેજ નહિ જેથી મોટી ઉમરનાને કે બીજવરને હજારો રૂ. આપીને બહારથી કન્યા લાવવી પડે છે. પાછા ફરતાં ટ્રેનમાં એ પંચના એક ભાઇ અમે બંનેને મળ્યા હતા તે કહેતા હતા અમારી કોમમાંથી ૮–૧૦ વર્ષમાં લાખ દોઢ લાખ રૂપયા કન્યા વિક્રયને ઉત્તેજનમાં ગયા હશે કેમકે મેવાડ, વાગડ વગેરેથી પાંચ પાંચ સાત સાત હજાર રૂ. આપી લોકો કન્યાઓ લાવ્યા છે. ગજબ!

પેથાપુર—શેઠ છગનલાલ સાકળચંદનો ૬૧ વર્ષની આયુમાં સ્વર્ગવાસ સમાધી મરણ પૂર્વક તા. ૧૬ એપ્રીલે થયો છે. અંત સમયે ૩૦૧) સંસ્થાઓને દાન કરી ગયા છે.

જાંબુડા—માં શ્રાવિકાશ્રમની પરીક્ષા થઇ ગઇ પરિણામ સારૂં આવ્યું છે. અત્રેના મંદિરને ૨૦)ના બે ચમરો શા૦ સાંકળચંદ તલકચંદે આપ્યાં છે

ગુજરાતમાં—પં. પીતાંબરદાસજી ઉપદેશક નીચે પ્રમાણે ભ્રમણ કરનાર છે–છાણી વડોદરા પાદરા, ડભોડા, બોરસદ, સોજીત્રા, ભરૂચ, અંકલેશ્વર, કરવાડા વગેરે.

તારંગાજી માટે બે પંચોનો ઠરાવ

તારંગાજી તીર્થમાં આવક કરતાં ખર્ચ વધુ થતો હોવાથી રાયદેશની દશાહુમડ પંચે દરેક લગ્ન દીઠ ૫) અને વીસ વર્ષ ઉપરના મરણ પાછળ ૮) તેમજ કાંઠાના ૪૨ ગામના ચોખલાની દશા હુમડ પંચે નનાનપુરમાં મળી દરેક લગ્ન દીઠ ૫) અને દરેક સગપણ દીઠ ૫) તારંગાજી ખાતે આપવાનો ઠરાવ કર્યો છે.

વીસા મેવાડા બંધુઓને.

આપણું વસ્તીપત્રક અને લગ્નમાળા પ્રસંગે આપણી ફરજ.

(લેખકઃ–સોજીત્રા સંભાનો એક જ્ઞાતિસેવક.)

સુજ્ઞ બંધુઓ,

આપણી કોમનું યુવક મંડળે તૈયાર કરેલું વસ્તી પત્રક જોતાં નીચેના આંકડા ખાસ ધ્યાન ખેંચે છે. અને તે ઉપરથી આપણે ઘણી માહીતી મેળવી શકીએ છીએ.

આપણી કોમની કુલ વસ્તી આશરે ૨૭૦૦ માણસની છે, તેમાં ૧૪૦૦ પુરૂષો અને ૧૩૦૦ સ્ત્રીઓ છે. અને કેળવણીનું પ્રમાણ પુરતું નથી. અવિવાહીત છોકરા તથા છોકરીઓની સંખ્યા ઉંમર પ્રમાણે નીચે મુજબ છેઃ—

અવિવાહિત છોકરાઓ.

૬ વર્ષની અંદરના	૨૧૮
૬ થી ૧૦ વર્ષ	૧૫૪
૧૦ થી ૧૫ વર્ષના	૯૫
૧૫ થી ૨૦ વર્ષના	૫૧
૨૦ થી ૨૫ વર્ષના	૨૩
૨૫ થી ઉપરના	૫૮
	૫૯૯

અવિવાહિત છોકરીઓ.

૬ વર્ષની અંદરના	૧૯૮
૬ થી ૧૫ વર્ષની	૭૬
	૨૭૪

ઉપરના આંકડાઓ જોતાં અવિવાહીત છોકરાઓ કરતાં અવિવાહીત છોકરીઓની સંખ્યા ઘણી ઓછી છે. અવિવાહીત છોકરાઓની સંખ્યામાંથી ૬ વર્ષની અંદરના ૨૧૮ અને ૨૫ વર્ષથી ઉપરના ૫૮ મળી ૨૭૬ ની સંખ્યા બાદ કરીએ તો ૩૨૩ ની સંખ્યા વિવાહ લાયક રહી, કારણકે ૬ વર્ષની અંદરનાને તો ભવિષ્યમાં જન્મનારી છોકરીઓ મળવાની કેમકે આપણે ઓછામાં ઓછું ૫ વર્ષનું અંતર રાખવાનો ઠરાવ કર્યો છે. અને ૨૫ વર્ષથી ઉપરનાને તો બહારથી લાવ્યેજ છુટકો છે. અવિવાહીત છોકરીઓની સંખ્યા ૨૭૪ ની છે. એટલે વિવાહ લાયક છોકરાઓની અને અવિવાહીત છોકરીઓની સંખ્યા ૪૯ કે તેથી વધુનો તફાવત છે. તે ઉપરાંત કેટલીક કન્યાઓ તો પૈસાદાર વર્ગમાં થનાર વિધુરોને મળવાની.

પૈસાદાર વર્ગને તો કન્યાઓની અછત છેજ નહી અને પડશે પણ નહી. ફકત બધી અછત મધ્યમ વર્ગનેજ છે અને ઘણાને શ્રીમંતાઇના અભાવે કુંવારી જીંદગી ગાળવી પડે છે.

આપણામાં એક એવો વર્ગ છે કે જેની સાથે આપણે તેમના વડવાઓની મનાએલી સાચી જુઠી નજીવી ભૂલને પરિણામે આપણે કન્યા સંબંધ રાખતા નથી, તે વર્ગનું વસ્તીપત્રક જોતાં વિવાહ લાયક છોકરાઓ તથા કન્યાઓની સંખ્યા જોતાં નજીવો તફાવત છે એટલે તે વર્ગને પણ કન્યાઓની અછત નથી. એટલે મધ્યમ વર્ગને વધારેમાં વધારે અછત છે, અને તેના પરિણામે કોમમાં **અસંતોષની** લાગણી ફેલાએલી છે. અને કેટલાકને **ફરજીઆત કુંવારી જીંદગી** ગાળવી પડતી હોય, સમાજમાં સડો પેસે તે સ્વાભાવીક છે. આ બધું અટકાવવાને આપણે **નીચે મુજબ સુધારા** કરવાની જરૂર છેઃ—

આપણામાં ખરાબમાં ખરાબ રૂઢી બાળ વિવાહ(સગપણ)ની છે. કારણ કે નાનપણમાં બાળકનો સ્વભાવ, હોશીયારી તથા કુદરતા ખામી વીગેરે માલુમ પડતાં નથી અને ભવિષ્યમાં કેટલીક વખત વિવાહ તૂટવાના પ્રસંગો આવે છે અને સગાસબંધીઓમાં વિખવાદ ઉભો થાય છે, અથવા વિવાહ ન તૂટે તો કેટલીક વખત બાળકો પોતાની જીંદગી દુઃખી કરનાર માબાપોને શ્રાપ આપે છે.

આ બધું અટકાવવા **કન્યાનો વિવાહ**

(સગપણ) દશ વર્ષ પછીજ કરવાનો ઠરાવ કરવો જોઇએ અને એ ઠરાવનું ઉલંઘન કરનારને માટે સખ્ત શિક્ષા રાખવી જોઇએ. અને વિવાહ કરતી વખતે છોકરા તથા છોકરીની ઉમ્મર વચ્ચે ઓછામાં ઓછો **છ વર્ષનો તફાવત** રાખવાનો ઠરાવ કરવો જોઇએ, પરંતુ અમૂક સંયોગોમાં તે તફાવત રહી શકે તેમ ન હોય તો પંચની સમ્મતી મેળવી વિવાહ થઇ શકે તેવી છુટ રાખવી જોઇએ. આ બધી સાવચેતી લીધા છતાં પણ **છોકરા તથા છોકરીમાં કંઇ ખામી આવી જાય તો** બાળકોનું હિત ધ્યાનમાં લઇ પંચની સમ્મતિથી **વિવાહ તોડવાની છુટ હોવી જોઇએ.** આ બધા સુધારા કરવાથી જો છોકરામાં સંસ્કાર કેળવણી ને વ્યાપાર ચાતુર્ય હશે તો આપોઆપજ તેને કન્યા મળી રહેશે, છતાં પણ આર્થિક સ્થિતિનો પ્રશ્ન તો ઉભોજ રહે છે કે જે મધ્યમ વર્ગને મુઝવી રહેલો છે.

પલ્લુ રૂા. ૧૮૧) હોવાથી કન્યાના માબાપ તવંગરને ત્યાં નાંખવા લોભાય છે. વળી પલ્લા ઉપરાંત હોંસની જણુસ કન્યાના માબાપ કરાવલા કહે તો તેનું કુળ નીચું ગણાય તે બ્હીકે બોલે નહીં અને તવંગરને ત્યાંથી હોંસની જણુસ થવાની એટલે તવંગરને ત્યાં કન્યાઓ જાય છે. મધ્યમ વર્ગ મૂંગે મોઢે બેસી રહે છે. તેનાથી પૂરેલી હોંશની જણુસ આપવાનું બોલાતું નથી. તેથી પલ્લામાં સુધારાની જરૂર છે. આપણામાં સ્ત્રી ધનને માટે જે રૂ. ૧૮૧) ની રકમ ઠરાવેલી છે તે વધારીને રૂ. ૧૦૦૦) કે તેથી કંઇક ઓછી કરવી અને હોંશની જણુસ આપવાનું બંધ કરવું. આપણી કોમ સીવાયની નરસીંહપુરા, વીસા હુમડ, દશા હુમડ વીગેરે તમામ કોમોમાં રૂ. ૧૦૦૦) અને તેથી વધુ પલ્લાંની રકમો છે. તેથી તે કોમોમાં મધ્યમ વર્ગનાના વિવાહ સંબંધ થાય છે. આપણામાં ખાસ મધ્યમ વર્ગમાં ભારે કન્યાની જરૂર છે. આથી આપણા મધ્યમ વર્ગમાં છોકરી આપતા કોઇ અચકાશે નહી કારણ સર્વની આંતરીક ઇચ્છા એ હોય છે કે પોતાની છોકરી સાધારણ સુખી જીવન ગાળી શકે કે જે સ્ત્રી ધનની રકમ વધારવાથી નબળી આર્થિક સ્થિતિમાં પણ પોતાના કુટુંબને તેમજ પોતાને સુખી અને સાદું જીવન ગાળવામાં મદદરૂપ થઇ પડે. આમાં એક પ્રશ્ન ઉભો થાય છે તે એ કે મધ્યમ સ્થિતિનો માણસ એકી સાથે રૂ. ૧૦૦૦) લાવે કયાંથી? આનાં ખુલાસામાં એટલું કહી શકાય કે તે રકમ એકી સાથે પુરી નહી કરતાં પોતાને અનુકુળ વખતમાં પુરી કરવાની બાંહેધરી આપી શકે. લગ્નની વિધિ પણ હવેએ ઘણીજ સાદાઇથી કરીને પણ થોડી રકમ બચાવી શકે અથવા તો છેવટના ઉપાય તરીકે પોતાનો વીમો રૂ. ૧૦૦૦)નો ઉતરાવી તે કન્યાના નામ ઉપર ચઢાવી, પોતે તેનું પ્રીમીયમ ભર્યા કરે. આમ થવાથી કન્યા આપતાં હાલ ખાસ કરીને જે કાંઈ શ્રીમંતાઇ જોવાય છે તે જોવાનું રહેશે નહી અને લાયકાત પ્રમાણે દરેકને કન્યા મળી રહેશે. અને એ કન્યા પણ અત્યારના જમાનાના સામાન્ય ઘરેણાં કપડાનો ઉપયોગ કરશે. ઉપરની બાબતોમાંથી એક પણ રીતે ચાલુ જમાનામાં જેની શકિત બાહેંધરી કે છેવટ વિમાથી પણ રૂ. ૧૦૦૦) બચાવી શકે તેવી ન હોય તે આપણા સમાજમાં પરણવા માટે લાયક કેમ કહી શકાય? એવાને ત્યાં રૂા. ૧૮૧) કે તેથી એ ઓછું પલ્લું રાખે તોએ કન્યા કોઇ નહીં આપે કારણ જીંદગીમાં રૂા. ૧૦૦૦) પણ તે બચાવી શકવાનો નથી.

દૈવયોગે અથવા કમનશીબે કદાચ જો સ્ત્રી **વિધવા** થાય તો અત્યારે જે કંગાળીઅત વૈધવ્ય ભોગવવું પડે છે તેનાં કરતાં આશ્રમમાં કે ઘેર મધ્યમ સ્થિતિમાં રહેશે અને તેને દુઃખી અને ગુલામી જીંદગી ગાળવાનું રહેશે નહી. તે ઉપરાંત સમાજમાં સડો પેસવાનો સંભવ પણ રહેશે નહી. અને વિધવા વિવાહનો પ્રશ્ન પણ આપોઆપ બંધ થશે.

આ બધું કરવા છતાં પણ કન્યાઓની અછતને લીધે કેટલાક લાયક છોકરાઓ અને વિવાહ કરવા યોગ્ય વિધુરો અવિવાહીત રહી જવાના. આને માટે એકજ ઉપાય છે તે એ કે અન્તરજાતીય વિવાહ માટેનો માર્ગ મોકળો કરવો. આમ કરવાથી આપણી આખી સમાજનું ભલું થશે અને એક બીજા વચ્ચે સંપ વધી સમાજનું બંધારણ સુવ્યવસ્થિત થશે, પરંતુ અન્તર જાતીય વિવાહમાં સમ્મતી આપતા પહેલાં આપણે એક કામ કરવાનું છે તે એ કે જ્યાંસુધી આપણી કોમના આપણાજ બંધુઓ જે એકડાવાળા કહેવાય છે ને જેઓએ હવે ઘણા સુધારા કરી લગભગ સાત વર્ષથી સુવ્યવસ્થિત બંધારણ કરેલું છે તેમને અપનાવી લઇએ નહી ત્યાંસુધી અંતરજાતીય વિવાહની વાત પણ કરવી તે શરમાવા જેવું છે.

માટે આપણાજ બંધુઓને પહેલાં અપનાવી લઇ, અન્તર જાતીય વિવાહની છુટ આપવાથી આપણી કોમની ઉન્નતિ થઇ ગુજરાતના જૈનોમાં ઐકયતા સધાશે. કેટલાકની માન્યતા એવી છે અન્તરજાતીય વિવાહની છુટથી શહેરનાને અને ભણેલાઓને કન્યા મળવાની અને ગામડાવાળા તથા ઓછું ભણેલા રહી જવાના, પણ આ માન્યતા ખોટી છે. કારણ કે ઘણા ખરા ગ્રેજ્યુએટો ગામડાના વતની છે. અને વળી હવે રેલ્વે તથા મોટરોનાં સાધનો વધવાથી શહેર ને ગામડામાં કંઇ ફેર રહ્યો નથી. ઉલટું શહેરના લોકો ગ્રામ્ય જીવન વધારે પસંદ કરે એ જમાનો આવે છે. શહેરની સંસ્કૃતિ ગામડામાં પણ મળી આવે છે. અને શહેરના વેપાર ધંધા પડી ભાગ્યા છે એટલે શહેરી જીવન કરતાં ગ્રામ્ય જીવન વધારે સુખી હોઇ, શહેરમાં વધારે કન્યાઓ જશે એ શંકા અસ્થાને છે.

બીજું કેળવણીની બાબતમાં એવું છે કે હવે યુનીવર્સીટીની કેળવણીનો મોહ રહ્યો નથી. કારણકે ભણેલાઓ પણ ઘણા બેકાર તરીકે ફરે છે, એટલે હવે કન્યા આપતા પહેલાં વ્યાપાર ચાતુર્ય અને સંસ્કાર ખાસ કરીને જોવાય છે. અને સંસ્કાર કેળવણીથીજ મેળવી શકાય છે, એટલે આ પ્રમાણે થવાથીં ઘણાને ફરજીઆત પણ ભણવાની જરૂર પડશે કે જે ખાસ જરૂરનું છે.

હાલ કન્યા આપતા પહેલાં પૈસા અને કેળવણી, વ્યાપાર ચાતુર્ય ને સંસ્કૃતીજ જોવાય છે, નહી કે શહેરી જીવન, તેના દાખલા તરીકે આપણા સંભાનાં ગામડાં–કાણીસા, વેડચ, કરમસદ, સોજીત્રા તથા વડોદરાનો વિચાર કરો. ઉપરનાંમાં શહેર કરતાં ગામડાઓમાં કન્યાઓ વધુ પ્રમાણમાં જાય છે તે બતાવી આપે છે કે હવે શહેરનો નહી પણ પૈસાનોજ મોહ રહ્યો છે. તે પૈસાનો મોહ પણ સ્ત્રી ધનનો આંકડો વધારવાથી જતો રહેશે એટલે ફક્ત સંસ્કાર, કેળવણી ને વેપાર ચાતુર્યનો મોહ રહેશે. સાધારણ રીતે તવંગર કરતાં ગરીબના છોકરાઓ વધુ ભણે છે, એટલે શ્રીમંતોને પણ પોતાના છોકરાઓને ભણાવવાની ફરજ પડશે અને કેળવણીનું પ્રમાણ પણ વધશે.

જુના જમાનામાં જે રિવાજો ઘડેલા તે તે વખતના જમાનાને અનુસરી સારા હતા, પરંતુ જેમ જમાનો બદલાતો જાય તેમતેમ રીવાજોમાં પણ યોગ્ય ફેરફાર કરવા જરૂરના છે. સુધારાના ઠરાવો કરી અમલમાં મુકવા માટે એક **સુવ્યવસ્થિત પંચની ખાસ આવશ્યકતા** છે અને જ્યાં સુધી આપણે સુવ્યવસ્થિત પંચ તૈયાર કરી તે દ્વારા સુધારા અમલમાં મુકીએ નહી ત્યાં સુધી બધું ધુળ ઉપર લીંપણ જેવું છે. તાર, ટપાલ, રેલ્વે સુધરાઇ આદિ બંધારણ વગરનાં આપણા પંચ જેવું મંડળ ચલાવી શકે કે? માટે સમાજ ઉન્નતિ માટે બંધારણ તો જરૂરીજ છે.

માટે આ **લગ્નગાળા પ્રસંગે** કોમના આગેવાનો ઉપરની બાબતો ધ્યાનમાં લઇ ઉત્સાહથી યોગ્ય સુધારા કરી અમલમાં મુકી જ્ઞાતિની તેમજ સમાજની ઉન્નતિમાં પોતાનો ફાળો આપશે એવી નમ્ર પ્રાર્થના કરી અત્રે વિરમીશ.

સામાજીક ઘાતકીપણું.

જમાનો જ્યારે સ્ત્રીના ઉચિત હકો, મનુષ્યોએ છીનવી લીધા છે, તેમનો યોગ્ય સત્કાર કરી તેમને ન્યાય આપવા તરફ વધુ ને વધુ પ્રમાણમાં વળતો જાય છે; ત્યારે આપણા ડાહ્યા વણીક બંધુઓ ત્રાજવાંનાં બન્ને પલ્લાંને સરખાં કરવાને બદલે ઉંચાનીચાં કરવામાં વધારે મહત્વ માનતા લાગે છે. કન્યા કેળવણી જો કે, જરૂર આપણામાં વધી છે, ભાગ્યેજ કોઇ કન્યા નિરક્ષર રહેતી હશે. બેચાર ચોપડી ભણ્યા પછી તે કન્યા જ્યારે પત્નિનું રૂપ ધારણ કરે છે, ત્યારે એ ચાર ચોપડીના ભણતરનો ઉપયોગ કરવાની તેને તક તો નથી મળતી; પરંતુ **પ્રચલીત ઝઘડાને લઇને કલેશ** પ્રગટ કરવાનું સાધન તેને બનાવવામાં આવે છે. માત્ર યુવાન સ્ત્રીઓ નહિ, પરંતુ ઠરેલ વૃદ્ધ અને આધેડ ઉમરની બ્હેનો પણ એજ દશા ભોગવે છે.

લગ્ન કે બારમાનો અવસર હોય, શાળો અને બનેવી, સસરો અને જમાઇ જુદા જુદા તડમાં હોય; ત્યારે વિવધ પ્રકારની વિચીત્ર ચાલબાજી એક બીજાની લાગણી વધારે તીક્ષણ, અને દુખાય એટલા માટે, સ્ત્રી મારફતે રચાય છે.

બનેવી, પોતાની પત્નિને તેના ભાઇને ત્યાં જતાં અટકાવે છે. જમાઇ, પિતા, પુત્રોને વિખુટાં પાડી વૈર વધારવાની યોજના કરે છે. સ્ત્રીઓનાં હ્દય કોમળ હોવાથી તેમનાં હ્દય આવે પ્રસંગે જરૂર દ્રવે છે. ચ્હાય તેવી પતિવ્રતા પત્નિ, સારા માઠે અવશરે પિતાનું ઘર ત્યાગ કરવાનું સાંખી શકતી નથી. પરાધીનતાના સંસ્કાર પામેલી અબળા ગણાતી અર્ધાંગના ચાર આંસુ પાડી મનમાં ને મનમાં સમી જાય છે. આવે પ્રસંગે કોઇપણ સહ્દય પુરૂષનું અંતઃકરણ દુભાયા શીવાય રહેતું નથી. ખોટો મમત અને ચડશ કેળવવા ખાતર, તેવે પ્રસંગે તેની સાથે દીલશોજીથી વર્તવાને બદલે ઘાતકી વર્તન ચલાવ્યાના અનેક દ્રષ્ટાંત આજ આપણે આપણા સમાજમાં સાંભળીએ છીએ. જીંદગીમાં આવા અનેક પ્રસંગો આવે છે અને તેથી અભ્યાસ પડી જવાથી અંતઃકરણ જડ થઇ જાય છે. **આ જડતા કોઈપણ પશુના વધ કરતાં વધારે ઘાતકી છે** એમ, ધર્મનો મર્મ જાણનાર સજ્જન પુરૂષને લાગ્યા સિવાઇ નહિ રહે.

શરૂઆતમાં સ્વાભાવીક રીતે નજીકના સબંધીઓ એક તડમાંજ હોય છે. તડને નિભાવનાર ઘણે ભાગે શ્રીમંત અને ધરખમ આસામી હોય છે. પોતાના તડ પૈકીના સંબંધીને જરૂર પડે નાણાંની મદદ કરવાની તેને જરૂર પડે છે. આમ મદદ રૂપે ધારેલી રકમ સ્હેજ ચુક પડતાં બન્ને સામ સામી તડથી થતાં દુશ્મન દાવો કેળવવાનું સાધન બની જાય છે. કોર્ટમા દાવા મંડાય છે. સમાધાન ને સ્થાન તો હોતુંજ નથી; એટલે સામા પક્ષનો ગરીબ માણસ ખુવાર થાય છે. મંકોડો ચબદાય ત્યારે બને તેટલા બળથી ચબદનારને બચકું ભરે, અને ન ચાલે ત્યારે પોતાની ગાંડ બચકું ભરે તેવી **પશુવૃત્તિ બન્ને બાજુ પ્રવર્તે છે.**

લાગવગ ધરાવનાર તડનો આગેવાન, પોતાના તડના કુંવારા મનુષ્યોને પોતાની લાગવગના બળે, ખોટા ખરા આગ્રહ કરવાની આવડતને લઇને કન્યા મેળવી આપે છે. મનમાન્યાં પક્ષાં, થાપણ વગેરેના પ્રપંચ રચી, તે રકમો પોતાને ત્યાં યુકિત પ્રયુકિત પૂર્વક જમા મંડાવે છે. જમાનું વ્યાજ નજીવું હોય છે. બધુંજ કાયદાસર, પણ જમાવાળા હિસાબ માંગે તો તે આપવાના અખાડા કરે છે. ને પ્રસંગ આવે અહેસાન નીચે આવેલો યુવાન પુરૂષ સ્વમાનની ખાતર સ્હેજ ડોકું ઉંચું કરે, કે તુરત તડના આગેવાન ગૃહસ્થ પોતાના હરેક કાયદેશરનાં હથીયારથી સુસજીત થઇ લડાઇ જાહેર કરી દે છે. કાયદો છુટ આપે તો, બિચારો ગરીબ યુવક મોંઘે મુલ્યે

મેળવેલી પતિ પણ ગુમાવી દે. નિર્દોષ પત્ની કાંતો પતિનો કે કાંતો પિતાનો પ્રેમ ગુમાવી બેસે છે.

છોકરો જુવાન થયો હોય, ભણ્યો હોય પણ સરટીફીકેટ મળ્યું ન હોય, તડના આગેવાન પોતાની લાગવગથી, તેની પુરી કસોટી કરી અથવા હાથપગ બાંધી લે એવાં લખાણ કરી, પોતાને ત્યાં અથવા બીજાને ત્યાં હલકા ભારે કામે વલગાડે છે. ઉપકાર નીચે દબાયેલ પિતાના ઠપકાના ડરથી ચ્હાય તેવી, યોગ્ય અયોગ્ય ચાકરી પણ જુવાન છોકરો ઉઠાવે છે. કોઈ પ્રસંગે ભુલેચુકે શેઠનો અથવા શેઠની પત્નિનો ઠપકો સામા તડના માણસો સાથે વાત કરવા બદલને પાત્ર તે થઈ જાય છે, તેને ખડતુશ મલી જાય છે. પાછળથી એવાં કવોલીફીકેશન (Quali-fication) જાહેરમા મુકવામાં આવે છે, જેથી કદાચ તેની જીંદગી પણ રદ થઈ જાય.

આવાં તો ઘણાં ચિત્રો રજુ કરી શકાય એમ છે, જેમાં તડ અને બીજા ઝઘડાના કારને લીધે આશ્રિત વ્યકિત સાથે **નિર્દય વર્તન** ચલાવવામાં આવ્યું હોય. અવસર પ્રસંગે તો ઘાતકી પણે વર્તવાનો તો પક્ષાપક્ષનો પ્રથમ કાયદો છે. આડે પ્રસંગે, પણ તેની છાયા, ભુંશાતી નથી. કેટલાએક પ્રસંગોમાં તો આખી જીંદગી વૈમનસ્યની ભાવનાઓ કાયમ રહે છે. બધું બળ આશ્રિતો ઉપર અજમાવવામાં આવે છે. આમા બધાજ નિર્દય હોય છે એમ મારૂં કહેવું નથી, કેટલાક સહૃદય પણ હોય છે, તેમની લાગણી જરૂર દુઃખાય છે; પરંતુ પક્ષકારના બળ આગલ અતઃકરણથી વિરૂદ્ધ જઈને પણ તેમને નિર્દયતાને સાંખવી પડે છે. આગળ પાછળ બડબડાટ કરીને બેસી રહે છે. સ્ત્રીઓના સ્વભાવની કોમલતા, આવા પ્રસંગોથી ઘડાઈને કુટીલતાનું રૂપ ધારણ કરે છે.

દક્ષ પ્રજાપતિએ યજ્ઞ આદર્યો હતો, આવા મહાન દબદબાવાળા સમારંભમાં, શીવ જેવો લંગોટીઓ જમાઈ શોભે નહિ તેથી દક્ષ પ્રજાપતિએ શીવને આમંત્રણ ન આપ્યું. પાર્વતિજીએ તે સાથે બંડ ઉઠાવ્યું. અપમાનના કારણથી શીવને થયેલા ક્રોધની અવગણના કરી, પાર્વતિજી પોતાના પિતાશ્રીને ત્યાં વણ બોલાવ્યાં આવ્યાં અને પિતાને સાફ સાફ જણાવી દીધું કે તમે મારા મહાન પતિનું અપમાન કર્યું છે, તેનું બુરૂં પરિણામ તમારે સહન કરવું પડશે. શીવને તે ઉત્સવમાં આમંત્રણ કરવામાં આવ્યું અને ઉત્સવ હજીપણ નિર્વિઘ્ને પાર ઉતર્યો.

પાર્વતિજીના પરાક્રમનું સ્મારક હરદ્વારમાં ગંગાજીના પવિત્ર તટ ઉપર આજપણ હયાત છે. પતિનું અપમાન કરનાર પિતાને તેની ભુલ માટે યોગ્ય સુચના કરવાનો પુત્રીનો ધર્મ હીમત-પુર્વક પાર્વતિજીએ બજાવ્યો; અને પોતાના પિતા અને પતિ બન્નેને પડતા બચાવ્યા.

આજપણ બ્હેનોમાં તેની તેજ શક્તિ જીવંત છે. તેને પ્રગટ થવા ન દેનાર **સામાજીક અયોગ્ય બંધારણો** છે. પોતાને ઘેર પિતાશ્રી આવ્યા હોય, પુત્રી બીચારી દોઢ હાથનો ઘુમટો તાણી ઘરમાં ગડમથલ કર્યા કરે. સસરો, પતિ વગેરે વડીલ વર્ગની આગળ, પોતાના ભાઈ ભાંડુઓની ખબર અતંર પણ ખુલ્લે મોઢે પુછી ન શકે. હું પુછું છું કે લાજ તે કોની હોય? પિતા સ્વરૂપ સસરાજીની કે, નઠોરવા છટાકીયા દીયર વગેરેની! સ્ત્રીઓના હૃદયબળ અને ચારિત્રના તેજ આગળ કયા મહાન પુરૂષને નમવું નથી પડયું? આપણે એને લાજ કાઢતાં શીખવીને નિર્લજ બનાવી છે. વડીલ આગળ મ્હોં છુપાવવાથી વડીલ તેની લાગણી સમજી શકતા નથી. પતિ એકાંતમાં મળે ત્યારે એની લાગણી સમજે; પરંતુ યુવાન હૃદય સમય જતાં, વિસરી જાય છે. આમ આપણે લડાઈ ટંટા, પક્ષાપક્ષ અને ટુંકા વાડાના બંધારણોના ભાર નીચે આપણી બ્હેનોની શક્તિને કચડી રહ્યા છિયે. ઝઘડામાં તેઓ પણ ઉલટી રીતે આગળ થતાં શીખી છે.

મારા સાંભળવામાં આવ્યું છે, કે, અમુક જગ્યાએ તો સ્ત્રીઓના હાથમાંજ ઝઘડો કરવાની ચાવીઓ છે, અને ત્યાં પંચ મળે તો સમાધાન થાયજ નહિ.

આ બધું આપણી આશ્રિત બહેનો અને યુવાન છોકરાઓ પ્રત્યે ગુજરતા ઘાતકીપણાનું પરિણામ છે. આપણી સંતતીમાં તેનું ઝેર વારશામાં મળતું જાય છે. હીંસક પશુઓ પણ પતિ પત્નિનું પ્રેમાળ જીવન જીવે છે ત્યારે આપણે મનુષ્ય હોઇને, તે પ્રેમના સ્વર્ગીય સુખનો હાથે કરીને નિરર્થક ચુરો કરી નાખીએ છીએ.

સામાજીક ઝઘડાઓને બળ, કળથી પતાવવાની અભિલાશા છોડી દઈ પ્રેમથી પતાવવાનું કામ આ શકિત પર છોડો. સાસરેથી પિયર છુટથી જવામાં અંતરાય ન નાખો. સાસરમાં અંતરાઇ રહેવાથી તેની તંદુરસ્તી બગડશે. એમની આંખની અમીદ્રષ્ટિથી સમી જતા નાના નાના ઉગતા સામાજીક ઝઘડાઓ મ્હોટા પહાડ જેવા થઈ જશે. તેમના અંતઃકરણનો બળાપો અને નિઃશાસાથી કૌટુંબીક સુખનો નાશ થયેલો છે; પરંતુ એથી પણ વધારે વિનાશ કયમ ન થાય?

॥ यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता ॥

સ્ત્રીઓની પૂજા એટલે તેમનો સત્કાર છે. તેમની યોગ્ય ભાવનાને બળ જબરીથી રોકવાથી તે ઉલટી દીશામાં જઇ આપણો અને એમનો એ વિનાશ સર્જશે. જે સમાજમાં તડા પડેથી સાથે જમવા બેસવાનો વાંધો આવે અને કન્યાઓને તો તડમાં પરસ્પર દેવાય છતાં તે કન્યાને પાછી પીએર જવા દેવામાં રોકાણ કરે તેવા કઠણ હૃદયના પુરૂષ જે સમાજમાં હોય તેનું ભલું શી રીતે થાય? પ્રભુ સામાજીક ઘાતકીપણું દૂર કરો! દૂર કરો!!!

—નાગરદાસ.

વીર ગોબિલજી.

(એક મહાન હિંદી શોધક)

મુંબાઇથી માર્સેલ્સ જતી એક સ્ટીમરમાં ૧ લા કલાસની એક કેબીનમાં પોતાની સાથે સફરે આવનાર નવયુવક હિન્દી વિદ્યાર્થિને પૂછયું. આપ કયાં જાવ છો?

વિદ્યાર્થિએ જવાબ આપ્યો કે મને ખબર નથી કે હું કયાં જઇશ પરંતુ એટલું તો ચોક્કસ છે કે માર્સેલ્સ ઉતરીશ. યાગીએ આશ્ચર્યથી પૂછયું; નવાઇ જેવી વાત છે કે આપ પરદેશ-ગમન કરી રહયા છો; અને આપ પોતેજ એટલું પણ કહી શકતા નથી કે આપ કયાં જશો.

વાત એમ છે કે અભ્યાસ કરવાને અમેરીકા જવાની મારી ઇચ્છા છે, પરંતુ મારી પાસે જેટલા પૈસા છે તેટલામાંથી મને માત્ર માર્સેલ્સની ટીકીટ પ્રાપ્ત થઈ છે. હવે જોઉં છું કે ફ્રાન્સ દેશમાં પહોંચ્યા પછી ભાગ્ય કયાં લઇ જાય છે.

આ સાંભળીને પેલા ગૃહસ્થને વધારે કુતુહલ ઉત્પન્ન થયું અને તેણે વિદ્યાર્થિને તેનું પૂર્ણ વૃત્તાન્ત પૂછયું. વિદ્યાર્થિએ ઉત્તર આપ્યો." મારૂં નામ હરગોવિન્દ ગોબિલ, મારા પિતાશ્રી અલીગઢના રહીશ છે પરંતુ મારો જન્મ બિકાનેરમાં છે. કાશી વિશ્વવિદ્યાલયમાં B Sc સુધીનો અભ્યાસ કરી પછી પરિત્યાગ કર્યો છે. હવે અમેરીકા જઇને વિજળીની એન્જીનીયરીંગ "Electrical Engineering" પસાર કરવાની મારી ઇચ્છા છે. મારી પાસે પૈસા નથી. જે તે રીતે રૂ. ૧૦૦૦) એકઠા કરીને હું મુંબાઇ આવી ગયો છું.

સને ૧૯૨૦ નો સમય હતો. મહા યુદ્ધ પુરૂં થયા પછી તમામ (હિન્દુસ્તાન) યુરોપીઅનો પોત પોતાને સ્વદેશ વિચરી રહયા હતા. તેમની ભીડને પરીણામે ૨ જા અને ત્રીજા વર્ગની

ટીકીટને માટે એટલા વખત સુધી રાહ જોઇ બેસી રહેવું, મને અસહ્ય લાગ્યું તેથી તે રૂ. ૯૯૦)ની માર્સેલ્સ સુધીની ટીકીટ લઇ લીધી. તેની આ રામકહાણીનો સદ્‌ગૃહસ્થ ઉપર ઘણો પ્રભાવ પડયો. તેઓ શ્રી મુંબઇના એક ધનીક વહેપારી હતા. તેમણે ગોબીલજીને લંડનની ટીકીટ ખરીદી આપી અને રસ્તા ખર્ચને માટે બે પાઉંડ જુદા આપ્યા

લંડન પહોંચ્યા પછી ગોબીલજીએ શેઠ અંબાલાલ સારાભાઇની કૃપાથી ન્યુયોર્કની (અમેરીકાની) ત્રીજા વર્ગની ટીકીટ પ્રાપ્ત કરી અને શેઠ અંબાલાલ સારાભાઇએ રસ્તાના ખર્ચને માટે કંઇક પૈસા આપવાની ઇચ્છા બતાવી પરંતુ તે વીર યુવકે કહ્યું કે માફ કરજો મહેરબાન, મારે હમણાં આવશ્યકતા નથી. જ્યારે શ્રી ગોબીલજી ન્યુયોર્ક જવા માટે સ્ટીમર પર પહોંચ્યા એટલે તેમની પાસે કુલ 'બેપેની' (બે આનાની) પુંજી હતી. સ્ટીમર ઉપર બીજા બે હિન્દી વિદ્યાર્થિઓ તેમને મળ્યા. તેઓ પણ વિદ્યાભ્યાસને માટે અમેરીકા જઇ રહયા હતા. જ્યારે તેમને માલમ પડયું કે ગોબીલજી પાસે એક કોડી પણ નથી, ત્યારે તેમણે તેમને કહયું " જો તમારી પાસે પચાશ ડોલર રોકડા નહિ હોય તો તમે અમેરીકાની ભૂમિપર પગ મુકવાને અશકિતમાન થશો. હવે ગોબિલજીને અમેરીકાનો એ નિયમ ધ્યાનમાં આવ્યો પરંતુ સ્ટીમર તો ચાલુ થઇ ગઇ હતી હવે શું કરવું? તેમણે એક વિદ્યાર્થિને કહયું. મને કૃપા કરી પચાશ ડોલર આપજો." હું ઇમીગ્રેશન ઓફીસમાં તે રકમ દેખાડીને બહાર નિકળીશ કે તુરતજ તે રકમ આપને પાછી પહોંચાડી દઇશ. તેણે જવાબ આપ્યો. હું તમને ઓળખતો નથી અને કદાચ તમે તે રકમ લઇને નાશી જાવ તો હું શું કરૂં? આ સાંભળીને ગોબીલજી ચૂપ થઇ ગયા. ચિંતાથી એમને શોષ પડવા લાગ્યા. શું આટલે દૂર આવ્યા પછી પણ નિરર્થક મને પાછો વાળવામાં આવશે? મારી બધી મહેનત નકામી જશે. આમ વિચારમાં ને વિચારમાં બે ત્રણ દિવસ પસાર થઇ ગયા. જહાજ ન્યુયોર્કના બંદર ઉપર જઈ પહોંચ્યું.

બધા યાત્રીઓ ઉતરીને ઇમીગ્રેશન ઓફીસની પાસે જવાને માટે એક હારમાં ઉભા રહયા. જ્યારે ગોબીલજીની વારી આવી તેજ વખતે પેલો હિન્દિ વિદ્યાર્થિ દોડતો આવ્યો અને હાથમાં એક પાકિટ આપતાં બોલ્યો "લ્યો એનાં પચાશ પાઉન્ડ" ઇમિગ્રેશન ઓફિસરને બતાવીને મને તુરત પાછા આપી દેજો.

ઓફીસરે એમનો પાસપોર્ટ વિગેરે જોઇને રૂપીઆ જોવા શિવાયજ જવાની રજા આપી દીધી. બહાર નીકળીને તે બંધનું બંધ પાકીટ તે વિદ્યાર્થીને તેમણે પાછું પહોંચાડી દીધું. ગોબિલજીનું કહેવું એવું છે કે એમને આજ સુધી માલમ પડયું નથી, કે એ પાકીટમાં ખરેખાત રૂપીઆ હતા કે નહિ તે હું જાણુતોજ નથી.

અમેરીકા પહોંચતાની સાથેજ ગોબિલજીનો સૌથી પહેલો પ્રશ્ન આજીવિકાનો હતો. એમણે બધા પ્રકારની મહેનત મજુરીનું કામ કર્યું. આખો દિવસ મહેનત કરતા હતા અને સાંજે કોલેજમાં જતા હતા. થોડા દિવસ પછી કોલેજ છોડી દીધી. અને બીજા કોઇ ધંધામાં વ્યવહારીક શિક્ષણ મેળવવાની ઇચ્છા ઉદ્‌ભવી, તે સમયે તેમને ઉત્તમ છાપખાનામાં કામ મળી ગયું. તે કામ તેમને ઘણું પસંદ આવ્યું બધા પ્રકારના છાપખાનાનું કામ તેમણે ઉમંગથી શીખી લીધું. છાપખાનામાં એ નવા શીખનાર તરીકે કામ કરતા હતા તેથી કરીને પગારના રૂપમાં જે કાંઇ મળતું હતું તેટલાથી તેમનું પુરૂં થતું નહોતું. આથી કરીને સાંઝના વખતે ખુલ્લી જગ્યાઓ અને પાર્કોમાં જઇને ભાષણ કરવાનું શરૂ કર્યું. તે દિવસોમાં મહાત્મા ગાંધીજીના અસહકારની ચર્ચા અમેરકામાં ચાલી

રહી હતી. ગોબીલજીએ પણ અમેરીકન શ્રોતા સમક્ષ એના વિષયમાં વ્યાખ્યાન આપવાનું શરૂ કર્યું. આ વ્યાખ્યાનોએ તેમને ઘણા અમેરીકન સજ્જનો સાથે પરીચય કરાવ્યો. એમને માલુમ પડયું કે ઘણા અમેરીકનો ભારતના સંબંધમાં જાણવાને ઇચ્છા રાખે છે. અમેરીકામાં એવું કોઇ પત્ર નથી કે જે તેમની જીજ્ઞાસા તૃપ્ત કરી શકે. ગોબિલજીએ ત્રીસ ડોલરની કિંમતનું એક ભાંગ્યું તુટયું છાપખાનું ખરીદ કર્યું. જાતે તેની મરામત કરી અને "Orient" ઓરીઅન્ટ નામનું એક માસીક પત્ર પ્રસિદ્ધ કરવા માંડયું. પત્રની કળાપૂર્ણ સફાઇ, સુંદર છપાઇ અને ઉત્તમ લેખોની બધાં અમેરીકન પત્રોએ પ્રશંસા કરી.

૧૯૨૪માં તેમણે ન્યુયોર્કમાં ઇન્ડીઆ સોસાયટી ઓફ અમેરીકાની સ્થાપના કરી જેનો ઉદ્દેશ અમેરીકા અને ભારતની વચ્ચે સદ્‌ભાવ ઉત્પન્ન કરવો અને ભારતની કળા વિદ્યા અને સંસ્કૃતિનો અમેરીકનોને પરિચય કરવવો એ હતો. કવિશ્વર રવિન્દ્રનાથ જ્યારે અમેરીકા ગયા ત્યારે એ સોસાયટીના પ્રયત્નથી કવિશ્વરના એ સ્વાગતમાં અમેરીકાના મોટામાં મોટાં ગૃહસ્થો સામેલ થયા હતા જેમાં હાલના રાષ્ટ્રપતિ શ્રી. રૂઝવેલ્ટ પણ હતા.

૧૯૨૬માં ગોબિલજી હિન્દુસ્તાન આવ્યા હતા, પરંતુ થોડા દિવસ રહીને ફરીથી અમેરીકા ગયા. બીજી રાઉન્ડટેબલ કોન્ફરન્સ વખતે મહાત્મા ગાંધીને અમેરીકા જવાનું આમંત્રણ આપવાને માટે એઓશ્રી લંડન ગયા હતા. પરંતુ મહાત્માજીએ તેમની આ વાતનો ઇન્કાર કરવાથી નિરાશા સાથે તેઓ અમેરીકા પાછા ફર્યા. અમેરીકા પાછા ફરતાં ૧ દીવસ અગાઉ લંડનની ઇન્ડીયા ઓફીસના સ્ટેશન વિભાગમાં એક પુસ્તક ખરીદવા ગયા હતા.

બહાર નિકળતી વખત વરસાદ વરસી રહ્યો હતો. વરસાદ બંધ થવાની રાહ જોતા રસ્તા ઉપર સડકની સામી બાજુએ ફુટપાથ ઉપર એક મોટી દુકાન હતી જેમાં મોટા અક્ષરોથી 'લાઇનો ટાઇપ' એમ લખેલું હતું.

ગોબિલજીએ દુકાનમાં પ્રવેશ કર્યો. યંત્રો જોવાં મેનેજરની સાથે મુલાકાત કરીને તેમને કહ્યું. આપ દેવનાગરીના 'લાઇનો ટાઇપ' કેમ બનાવતા નથી ? મેનેજરે જવાબ આપ્યો કે જો દેવનાગરીના 'લાઇનો ટાઇપ' બની શકે તો હું ઘણો પ્રસન્ન થઇશ. અમે એને માટે ઘણી કોશીશ કરી છે. અનેક વિદ્વાનોની સાથે એને માટે ચર્ચા કરી છે. બધાએજ એક મતથી કહ્યું છે કે દેવનાગરી લીપીનાં લાઇનો ટાઇપ બનવા અસંભવ છે ગોબિલજીએ જવાબ આપ્યો. કોણ કહે છે કે એ અસંભવીત છે. હું બનાવીને તમને દેખાડી શકું છું. મારી પાસે તેના પૂરા નકશા બનાવેલા તૈયાર છે. મેનેજરે આશ્ચર્યથી પૂછયું. શું આપ બનાવી શકો છો ? આપ આપના નકશા લાવીને મને બતાવજો. ગોબિલજીએ જવાબ આપ્યો. દિલગીર છું કે મને વખત નથી. હું આવતી કાલેજ અમેરીકા જવાનો છું. મેનેજરે કહ્યું તોતો એ એથીએ વધારે સારૂં છે કારણ કે અમેરીકામાં હમારી કંપનીની હેડ ઓફીસ છે તેને ત્યાં હમારા મેનેજરને તમારી યોજના બતાવજો. હું અહીંથી તેમનો પત્ર લખી દઉં છું.

અમેરીકા પહોંચ્યા પછી ગોબીલજીએ પોતાની યોજના અને નકશાઓ લાઇનો ટાઇપ કંપનીના મેનેજરને બતલાવ્યા. કંપનીએ એકદમ તો એમના ઉપર વિશ્વાસ ન મુકયો. તેમને પ્રિન્સ્ટન અને પેન્સલ વેનીઆ વિદ્યાલયોના બે પ્રોફેસરોના અભિપ્રાય માટે તે મોકલી આપ્યું. જ્યારે તે બન્નેએ ગોબિલજીની યોજના વ્યવહારીક છે એમ બતાવી આપ્યું ત્યારે કંપનીએ ગોબીલજીને યંત્ર બનાવવાનું કામ સોંપ્યું. તેમણે ૭ માસ દીન રાત પરિશ્રમ કરીને દેવનાગરી લાઇનો ટાઇપનું મશીન બનાવી તૈયાર કરી આપ્યું !

(વધુ માટે જુઓ પાનું ૨૭૭)

हमारी अवनतिके मुख्य कारण।

(लेखक—श्रीयुत् पं० लक्ष्मीचन्दजी जैन शास्त्री)

हमारी जातिकी आए दिनकी घटनाओंके अवलोकन करनेसे इस बातपर और विश्वास बढ़ता जाता है कि इस जैन समाजका हराभरा होना असंभव नहीं तो दुःसाध्य जरूर है। हरेक जातिके उन्नतिके मूल कारण दो होते हैं। शिक्षा और सम्बंध। जब हम इन दोनों बातोंको लेकर जैन जातिपर दृष्टि डालते हैं तो पता चलता है कि अभी हमारी दोनों बातें बहुत ही अव्यवस्थित हैं। हमारी शिक्षा जिसे हम अपनी शिक्षाके नामसे कह सकते हैं। विद्यालय या पाठशालीय पठन-पाठन शैली वह बहुत ही निराले ढंगकी है। उसमें व्यवहार ज्ञानका बिलकुल भी समावेश नहीं है। जिससे छात्र निकल कर प्रायः व्यवहार शून्य होते हैं। और जो कोई अच्छे और प्रभावशाली भी होगये तो वह अपने बुद्धिबल और परिश्रमसे।

विद्यालयोंके पठन-पाठनमें कहीं भी लौकिक ज्ञानकी प्रधानता नहीं रखी गई है। जिससे उन छात्रोंका जीवन समाजके ही अर्थ न होवे। बल्कि वह अपनी आजीविका कहींसे प्राप्त कर सकें। उनको लगभग बीस वर्ष पर्यन्त संस्कृतकी शिक्षा दी जाती है। उसमें भी खासकर जैन न्याय और धर्मशास्त्र। ऐसी हालतमें जब वे अपनी आजीविकाके हेतुपर विचार करते हैं तो उनको केवल सामाजिक नौकरी ही दृष्टि पड़ती है। यदि कदाचित समाजमें स्थान नहीं मिला तो वह उस शिक्षाके बलपर जिसमें उसने शिक्षा प्राप्त करने योग्य वय बिता दी है। कोई भी आजीविकाका हेतु सुलभ नहीं है। ऊपरकी पंक्तियोंसे मेरा अभिप्राय यह नहीं है कि धार्मिक शिक्षा दी ही न जाय। बल्कि यह है कि धार्मिकके साथ२ आजीविका उपार्जनका भी साधन जरूर होना चाहिये।

इसलिए सामाजिक शिक्षालयोंके संचालकोंसे यह निवेदन है कि वे शिक्षाकी उपयोगता पर भली भांति विचार करें तथा इस बातपर भी ध्यान रखें कि धर्मपुरुषार्थके साथ अर्थ भी होना चाहिये। कहनेकी गरज यह है कि छात्रोंका धार्मिक ज्ञान तो बढ जाता है पर अर्थोपायसे शून्य रहजाता है। यही शिक्षाका एकांगीपन है और यह उनका जीवन सुखी नहीं बनासक्ता है। इस लिये विद्यालयों या पाठशालाओंमें कुछ ऐसे साधन अनिवार्य रूपसे रखदेना चाहिये जिससे छात्र अपनी जीविका सुगमतासे संपादन करसकें। ऐसे समयमें छात्रोंको तथा उनके संरक्षकोंको इन बातोंका सुधार अवश्य करना चाहिये। तभी हमारी जातिके भावी कर्णधार सच्चे जैनी व सद्गृहस्थ बन सकेंगे।

दूसरा अवनतिका प्रबल कारण सम्बन्ध है अर्थात् अनमेल विवाह (वृद्ध विवाह, बाल विवाह) कन्याविक्रय आजकल भी जहां इसका प्रतिबंध नहीं है जोरोंके साथ होते हैं।

हमारी जातिमें विवाह शादियोंमें ऐसे बेजरूरती खर्चीले रीति रिवाज चले आरहे हैं। हम जबतक उनको दूर न करेंगे तबतक समाजकी हालत सुधर नहीं सक्ती है। ऐसे नाजुक समयमें जातीय पंचोंका यह कर्तव्य होना चाहिये कि वे रीतिरिवाजोंको इतना मामूली कर देवें जिससे

मामूली स्थितिका आदमी भी सुगमतासे उसका खर्च बर्दास्त कर सके। ऐसे समयमें यह विचार न करनां चाहिये कि हमारे बापदादोंका चलाया रीतिरिवाज हम कैसे तोड़ें?

उस समय भारत धनसम्पन्न था। आज उससे विपरीत परिस्थितिमें है। तथा कन्याविक्रयपर कड़ा प्रतिबंध रखना चाहिये। और साथमें इस बातका भी प्रबन्ध यथाशक्ति कर देना चाहिए जिससे वह व्यक्ति विवाहके आर्थिक दुःखसे दुखी नहीं होवे। ऐसी हालतमें जो नियम विरुद्ध चले उसको दण्डित करना चाहिए। जिस प्रकार गाड़ी छोटे बड़े चक्रसे नहीं चल सक्ती है उसी प्रकार गृहस्थ गाड़ी अनमेल पतिपत्नीसे नहीं चलती तथा हमेशा दुखमय जीवन ही बिताना पड़ता है। इसलिये पैसेकी तरफ ज्यादा ध्यान न रखकर वरके पुरुषार्थ, योग्य शिक्षा, तन्दुरुस्ती पर ही ध्यान रखना उचित है। उसी प्रकार कन्याके भी शिक्षा, गृहकार्य पटुता आदि बातोंपर ध्यान रखना चाहिए तथा दोनोंका जीवन सुखी होसकेगा या नहीं इसी बातपर ध्यान देना चाहिए।

जबतक विवाह शादियोंमें उचित सुधार न होंगे तबतक समाज भविष्यमें गिरता ही जायगा। अब नवयुवकोंका यह कर्तव्य है कि वे उचित सुधार करें। तथा पंचायतियोंमें ऐसे प्रस्ताव रखें और समझावें कि वर्तमान स्थितिके अनुसार नहीं चलोगे तो जैन जातिकी अवस्था सुधारना दुस्तर है। अब जगह जगह जैन नवयुवक सोसायटी कायम होनेकी सख्त जरूरत है। जिसका उद्देश्य जैन जातिमें एकता कायम रखना और उसकी संख्या घटने न देकर बढ़ानेका प्रयत्न करना। तथा जातिमें जो रीतिरिवाज बेजरूरती तथा खर्चीले हैं उनको पंचोंकी सम्मतिपूर्वक तोड़ना। यदि जरूरत पड़े तो अपने पासकी बड़ी पंचायतसे सहायता लेना। ऐक्य कायम करनेके लिये तथा समय २ पर सुधारकी जरूरत जाननेके लिये हर आठवें दिन बैठक रखना जिसमें बोलनेका अधिकार हरेक सोलह वर्ष या इससे ऊंची उम्रवालेको हो। इसके सिवाय इन सबको मिलाकर एक अखिल जैन नव युवक सभा हो। जिसकी सम्मतिसे समस्त सामाजिक सुधार किए जावें, इत्यादि।

जबतक हम लोग क्रमवार संगठित न होंगे तबतक केवल लिखने और भाषण देनेसे उचित सुधार होनेकी आशा नहीं है। समाजमें यों तो बहुतसे दीमक लग रहे हैं; लेकिन खासकर नीचे लिखे दीमक समाजकी जड़ खोखला कर रहे हैं। जैसे—मृत्युभोज, कन्याविक्रय, वृद्धविवाह, बालविवाह, शादियोंमें परम्परासे चले आए बेजरूरती खर्च, एक्यताका अभाव, इत्यादि इत्यादि।

जैन समाज और शिक्षा।

ले०—श्रीयुत बा० मुन्नालाल सिंघई बी. ए.

जैन समाज बिलकुल शिक्षाशून्य है, यदि यह कहनेका ही साहस कर लिया जाय तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। जब भारतवर्ष ही अशिक्षित कहा जाता है और फिर जब जैन समाज भारतवर्षकी अनेक समाजोंसे बहुत कम परिमाणमें शिक्षित है तो उसे इस अपेक्षासे शिक्षाशून्य कहना कहीं अधिक अनुचित न होगा।

इस निराशा जनक परिस्थितिका कारण सिर्फ हमारे विचारोंकी संकीर्णता ही है। हमने समयानुकूल अपनी शिक्षाका ढंग नहीं बदला, उसीका भीषण फल हम आज यह देखरहे हैं कि जैनसमाज व जैन धर्म हर जगह ठुकराया जारहा है। जो धर्म विश्वधर्म होनेका दावा रखता है उस धर्मके अन्तर्गत पाले हुए अनेक ग्रेजुएट महोदयतक हमारी जैन समाजकी अनेकों अन्ध विश्वास युक्त रूढ़ियोंको देखकर जैनधर्मके अकाट्य सिद्धांतोंपर भी शंका करने लगते हैं।

इन सब दुष्परिणामोंका कारण सिर्फ एक हमारी शिक्षाकी संकीर्णता ही है। जैन समाजमें जितने शिक्षाके साधन हैं उतने शायद ही इस भारत वर्षकी किसी समाजमें हों। और अन्तमें जैन समाजही शिक्षामें अधिक अवनति-पथ पर आरूढ है। गांव २ तकमें जैन महिला एवं बाल शालायें हैं और करीब २ हर जगह मंदिरोंमें रात्रि कक्षाओंके रूपमें शास्त्र सभायें शताब्दियोंसे प्रचलित हैं परन्तु तो भी इस भारी रकमका सदुपयोग नहीं किया जारहा है और हमारी शिक्षाका ढंग सुव्यवस्थित न होनेके कारण समय, शक्ति और धन नष्ट होता जा रहा है और हम पतनकी तरफ दौड़े जा रहे हैं।

मैंने जितनी पाठशालायें देखी हैं उनको देखकर सिवाय सांसें लेनेके और खेद करनेके कुछ भी संतोष हाथ न लगा। तो भी, यदि 'विजीटर बुक' उठाकर देखीगई तो बड़े २ विद्वानों एवं पंडितोंके लहलहाती हुई भाषामें प्रशंसायें नजर आई। क्षमा करेंगे, मैं किसीपर आक्षेप एवं द्वेष प्रगट नहीं कर रहा हूं परन्तु ये हृदयके उबलते हुए विचार हैं।

जैन समाजमें प्रचलित वर्तमान शिक्षा पद्धति चूं कि प्राचीन है पर समयानुकूल नहीं है। जो जैन परीक्षालय हैं वे अधिकतर ही क्यों, मुख्यतः जैनग्रंथों ही तक मर्यादित हैं। परन्तु यह भी स्मरण रखना बहुत अवश्यक है कि इस संसारमें व्यवहारिक जीवन व्यतीत करनेके लिये हमें सिर्फ धर्म--शास्त्र ही कदापि सहायक नहीं होसकता। राज्य नीति, अर्थ शास्त्र आदि विषयोंका ज्ञान अत्यन्त आवश्यक है। क्योंकि हमारी व्यवहारिक एवं सामाजिक उन्नति इसीपर निर्भर है और जबतक सामाजिक एवं व्यवहारिक उन्नति नहीं होगी तबतक हम स्थिरता पूर्वक धर्मानुरागी नहीं होसकते और न धर्म प्रचार कर सकते हैं।

वर्तमान धार्मिक परीक्षालय जैन सिद्धांतोंकी परीक्षाएं संस्कृत भाषामें ही लेते हैं। संस्कृत भाषा मध्यम न रहनेके कारण अनेक हानियां हो रही हैं, जिससे धर्म प्रचार रुक रहा है।

(१) संस्कृत माध्यम द्वारा शिक्षित पंडितगण तथा प्रायः व्यवहारिक ज्ञान रहित अपने विचारोंको रसमयी भाषामें प्रदर्शित करते हुए दूसरोंपर प्रभाव डालनेमें असमर्थ होते हैं। फलस्वरूप वे

किसी प्रकार भी शिक्षित नवयुवकोंको धर्म-शिक्षा देनेमें असमर्थ रहते हैं।

(२) तथा उक्त कारण हीसे वे प्रचलित व्यवहारिक भाषामें धार्मिक ग्रंथ लिखनेको भी असमर्थ रहते हैं।

(३) फलस्वरूप जैन समाजके नवयुवकोंका बहुभाग जैनधर्म शिक्षणसे पूर्ण रीतिसे वंचित रह रहा है। इसका परिणाम बहुत भयानक नजर आरहा है। अतएव यदि विद्वान् लोग हम सरीखे अंग्रेजी शिक्षासे पले हुए अभागोंको जैनधर्मका ज्ञान करानेका कर्तव्य समझते हैं तो उन्हें एकदम वर्तमान शिक्षण शैलीकी काया पलट कर देना पड़ेगी।

यदि वे चाहते हैं कि हमारी स्त्री समाज भी भारतवर्षकी दूसरी स्त्री समाजोंसे शिक्षामें न्यून न रहे तो उनकी शिक्षाका भी विशेष प्रबन्ध करनेका समय आचुका है। मैं कुछ अपने नम्र विचार विद्वानोंके विचारार्थ प्रगट करनेका दुस्साहस कर रहा हूं। आशा है कि विद्वान् लोग उसमें सुधार कर इस योजनाको कार्यरूपमें परिणत करनेकी पूर्ण कोशिश करेंगे।

मैंने सुविधाके लिये पढ़ाई क्रमको तीन परीक्षाओंमें विभाजित किया है:—प्रथमा, मध्यमा और उत्तमा।

पुरुष छात्रोंके लिये—

प्रथमा	मध्यमा	विशारद
धर्मशास्त्र	धर्मशास्त्र	धर्मशास्त्र
साहित्य हिंदी	हिन्दी सा०	हिन्दी सा०
(मराठी गुज०)	(मराठी, गु०)	(मराठी गु०)
गणित	गणित	राज्यनीति
भूगोल	साधारण विज्ञान	वैकल्पिक—
इतिहास	संस्कृत	संस्कृत
साधारण ज्ञान	साधारण ज्ञान	वैद्यक
वैकल्पिक—	अर्थशास्त्र	अंग्रेजी
संस्कृत	वैकल्पिक—	कानून (Law)
वैद्यक	वैद्यक	साधारण ज्ञान
अंग्रेजी	अंग्रेजी	अर्थशास्त्र
सम्पादन कला	सम्पादन कला	
मुनीमी	मुनीमी	

धर्मशास्त्रका मध्यम "हिन्दी" रहना चाहिये। तथा जो वैकल्पिक विषयोंमेंसे संस्कृत लें उनके लिये माध्यम संस्कृत रहना चाहिये।

मेट्रिक पास छात्रको 'प्रथमा' परीक्षामें सम्मिलित होनेके लिये सिर्फ धर्मशास्त्रमें तथा एफ. ए. परीक्षोत्तीर्ण छात्रको 'विशारद' परीक्षामें सम्मिलित होनेके लिये और ग्रेजुएट परीक्षोत्तीर्ण छात्राको 'उत्तमा' परीक्षामें सम्मिलित होनेके लिये भी 'धर्म-शास्त्र' में सम्मिलित होना अनिवार्य ही समझा जाय।

हरएक महाविद्यालय, विद्यालय एवं पाठशालामें इस प्रकार पढ़ाईका समुचित प्रबंध किया जाना चाहिये। इनकी व्यवस्थाकी देखरेखके लिये जैन परीक्षालयकी ओरसे निरीक्षक रहना चाहिये।

कन्याओंके लिये—

प्रथमा	मध्यमा	उत्तमा
धर्मशास्त्र	धर्मशास्त्र	धर्मशास्त्र
साहित्य	साहित्य	साहित्य
भूगोल इतिहास	गणित	अर्थशास्त्र
गार्हस्थ्य शास्त्र	अर्थशास्त्र	वैद्यक
स्वास्थ्य शास्त्र	वैद्यक	संस्कृत
संस्कृत	संस्कृत	राज्यनैतिक
सीना पुरोना	राज्यनैतिक	सीना पुरोना
साधारण ज्ञान	सीना पुरोना	साधारण ज्ञान
	साधारण ज्ञान	

नोट—१ सीना पुरोनाकी परीक्षाके लिये स्त्रीलिंग निरीक्षक नियत किये जायें।

२-जो गृहस्थ स्त्रियां उक्त परीक्षाओंमें बैठना चाहें वे अपनी२ सुविधानुसार—

प्रथमा परीक्षामें-धर्मशास्त्र, स्वास्थ्य शास्त्र, साहित्य, गार्हस्थ्य शास्त्र और सीना पुरोनाके अतिरिक्त यदि और विषय लेना चाहें तोलें, अन्यथा अनिवार्य नहीं होना चाहिये।

इसी प्रकार मध्यमामें-साहित्य, धर्मशास्त्र, वैद्यकशास्त्र, अर्थ शास्त्र और सीना पुरोनामें। तथा—

उत्तमामें-साहित्य, धर्मशास्त्र, वैद्यकशास्त्र, अर्थशास्त्र और सीना पुरोनामें सम्मिलित होना अनिवार्य होना चाहिए।

इस शिक्षण पद्धतिके अनुसार गृहस्थीमें फंसी हुई महिलायें भी परीक्षाओंमें सम्मिलित होनेको उत्साहित रहेंगी।

इस योजनाको कार्यरूपमें परिणत करनेके लिये परिषद् परीक्षालय और सोलापुर परीक्षालयको सम्मिलित होकर हरएक महाविद्यालयके प्रतिनिधि तथा हरएक प्रांतके कुछ प्रांतीय प्रतिनिधिकी सम्मिलित समिति स्थापित करना चाहिये और फिर जिलासमिति, निरीक्षक आदि नियत किये जावें। ये सब पदाधिकारी अवैतनिक ही रखे जांय।

आशा है कि विद्वान गण इसपर दीर्घ विचार करेंगे और कमसे कम हरएक विचारोंके विद्वानोंका समागम कर इस विषयपर गंभीर वाद विवाद कर निर्णय पर पहुँचनेका प्रयत्न किया जायगा। क्योंकि विषय बहुत ही महत्वपूर्ण है। और शिक्षा पद्धतिमें एकदम सुधारकी आवश्यक्ता है।

निद्रा-विज्ञान।

क्यों-कहां-कैसे और कब सोना चाहिए?

(ले०-श्रीयुत प्रभुनारायण त्रिपाठी 'सुशील')

चारपाई।

जहांतक हो सके चारपाईपर सोना चाहिये; क्योंकि कच्चे, गीले फर्श या पृथ्वीपर सोनेसे एक तो सीतके कारणसे सिरदर्द आदि बीमारियोंका, दूसरे सांप-बिच्छू आदि कीड़े-मकोड़ोंके काट खानेका डर रहता है। कभी-कभी कीड़े कानमें भी घुस जाते हैं, जिससे बड़ी तकलीफ होती है। पलंगपर सोनेसे त्रिदोष नष्ट होता है, तथा बात और कफकी बीमारी नहीं होती। पृथ्वीपर सोनेसे पुष्टि तथा वीर्यकी वृद्धि होती है; पर मैं इससे सहमत नहीं, जो लोग इसे मानें वे चाहें तो पक्के सहन व ऊपरकी साफ छतपर सो सकते हैं; पर वर्षा-ऋतुमें उसपर भी कभी नहीं सोना चाहिए। बहुत छोटी, टूटी, ऊँची, नीची, बिछौनेसे खाली, तथा खटमल आदि जीवोंवाली चारपाईपर न सोना चाहिए। चारपाई ३॥ हाथ लम्बी, २॥ हाथ चौड़ी और एक हाथ ऊँची होनी चाहिए, इससे बड़ी दरिद्र और छोटी सुखक्षय करनेवाली होती है! चारपाई सिरकी ओर कुछ ऊँची तथा पैरकी ओर नीची होनी चाहिए। दीवारसे चारपाई हटाकर सोना चाहिए।

सोनेकी परिस्थिति

छाती या हृदयपर हाथ रखकर, दरवाजेके किवाड़ खोलकर (पर खिड़कियां आदि हवा आने-जाने वाले द्वारको सदैव खुला रखे), बड़े घरमें अकेले,

उल्टा, अर्थात् तकिया पर मुख रख और हाथोंको मस्तक पर रख, जूते, मोजे और साफा पहनकर, ज्यादा थके हुए, भरे पेट या बिलकुल भूखे पेट न सोना चाहिए। मुँह दरारकी तरह खोलकर न सोना चाहिए--जिससे मुँहसे श्वास चले और बिना छनी वायु फेफड़ोंमें चली जाय। लुहारकी भाथीकी तरह खर्राटें न भरो। स्त्रियोंकी अपेक्षा पुरुष अधिकतर खर्राटें भरते हैं। मुख बंद कर सोने या खर्राटेके समय जिस करवट सोए हो उससे विपरीत करवट कर लेने अथवा खर्राटा भरनेवालेके कानमें सीटी बजा देनेसे खर्राटा भरनेकी आदत छूट जाती है। दो या कई मनुष्योंके साथ एक बिस्तरपर न सोना चाहिए। यदि स्त्री या और लोगोंके साथ सोना बहुत ही आवश्यक हो तो एक वस्त्र ओढ़कर या आमने-सामने मुखकर कभी न सोना चाहिए।

तुम्हारा मन जबतक स्वस्थ न हो, तबतक न सोओ। खूब तड़के उठनेका दृढ़ संकल्प कर सोओ। चारपाईसे नीचे पैर लटका कर न सोओ। सोते समय दीवालके पास सिर न होना चाहिए; बल्कि दीवारके पास पैर और खिड़कीके पास सिर होना चाहिए। सोनेका समय अवश्य नियत होना चाहिए और उस समय दिनभरके विचार बिलकुल भुला देने चाहिए।

रातका भोजन।

रातके भोजनका भी निद्रापर बहुत अधिक असर पड़ता है। एकबार स्व० लालाजीको निद्रा नाशका रोग सताने लगा। प्रसिद्ध-प्रसिद्ध डाक्टरोंसे इलाज कराया गया; पर लाभ न हुआ। अन्तमें हकीम अजमलखां साहबसे जिक्र किया गया। हकीम साहबने लालाजीसे उनके भोजनका समय पूछा तो पता चला कि लालाजी दिनके १२ बजे और रातको ८ बजे भोजन करते हैं। यह सुनकर हकीम साहबने राय दी कि आप सुबह १० बजे और शामको ८ बजे भोजन किया करें। आपको यह सुनकर आश्चर्य होगा कि जिस रोगको प्रसिद्ध-प्रसिद्ध डाक्टरोंकी अनुभूत औषधियां न मिटा सकीं, उसे हकीम साहबकी भोजन संबन्धी इस छोटीसी युक्तिने नष्ट करदिया।

जहांतक होसके रातको भोजन करनेसे बचना चाहिए। क्योंकि एक तो उस समय भोजनके कच्चे-पक्केकी व शुद्ध अशुद्धकी परीक्षा नहीं होती, दूसरे उस समय कई छोटे बडे जंतु कीडे पतंगे इधर उधर उड़ते रहते हैं, जिनके भोजनमें गिर जानेसे भोजन अरुचिकर और अस्वास्थ्यकर होजाता है। तीसरे रातमें कर्मइंद्रियां प्रायः शिथिल रहती हैं, जिससे भोजन सरलतासे नहीं पच सक्ता इसलिये रातको देरसे हजम होनेवाला भोजन ही नहीं करना चाहिये। दिनमें तो कठिन भोजन भी सरलतासे पच सक्ता है। रातके भोजनमें भारीपन कम होना चाहिये। ताकि सुबह तबियत बहुत हल्की रहे। इसलिये रातमें हरे शाक, ताजे फल, हरे सिंगाड़े और दूध पर ही रहा जाय, तो अत्युत्तम है। प्रायः देखा जाता है कि दाल, चावल, रोटी आदि शीघ्र पचनेवाले भोजनको लोग दिनमें खाते हैं, और पूरी, परेठा आदि देरमें हजम होनेवाले भोजनको रातमें खाते हैं। यह उल्टी बात है। कितने ही लोग रातको सोते समय दूध पीते हैं। यदि इस समय अधिक दूध न पिया जाय, तो कुछ बुरा नहीं। गेहूंका दलिया, चावल मूंगकी खिचडी, साबूदानेकी खीर आदि यदि रातका भोजन रखा जाय तो उत्तम है। भोजनके अन्तमें किसमिश, दाख, सेव, नारंगी, अंगूर इत्यादि रसवाले फलोंका ही व्यवहार अच्छा है। सोनेसे

थोडी देर पहिले एक नींबू और एक नारंगीके रसमें एक गिलास जल मिलाकर पीना चाहिये। रातका भोजन सोनेसे ३ घण्टा पहले कर लेना चाहिये भरसक सूर्य डूबनेके पहले कर लेना चाहिए।

रातका भोजन–व्याळु, जितना अधिक खाया जाय, उतना अधिक सोनेके समयमें अन्तरे होना चाहिये। भोजनके बाद पान खा, कुछ इधर-उधर थोड़ासा कमसेकम सौ कदम टहलकर, सोनेके लिये चार पाईपर जाना चाहिये। रातके भोजनमें दही और विना घीके शक्कर न खावे। जो लोग रातमें भारी (गरिष्ठ), दिनसे अधिक या समान ही खूब भरपेट खाना खाकर एकदम सोजाते हैं, उन्हें गहरी नींद नहीं आती, रातको वारवार नींद खुल जाती हैं, अथवा शूलकी वेदना घेर लेती है या बुरे२ स्वप्नोंके कारण निद्रावस्थामें भी उनके मनको पूरा पूरा विश्राम नहीं मिलता। ऐसी अवस्थामें मस्तिष्क शक्ति हीन रहता है और आमाशयमें जिस मात शक्तिकी हाजमाके लिये आवश्यक्ता रहती है, वह स्थगित रहती है। इससे पाकाशयका खाद्य अपरिवर्तित अवस्थामें रहता है और इस कारण उसमें ज्वाला उत्पन्न होती है इसलिये भरपेट भोजनके बाद तुरत सोने मत जाओ सोनेके पहले चाय, काफी, शराब आदि उत्तेजक चीजें न पीनी चाहिये।

सिरहाना।

उत्तरकी ओर सिर करके न सोना चाहिए। बड़े बूढ़े इस ओर सिरहाना करना अशकुन मानते हैं–कहते हैं मृत्यु होती है; पर यथार्थ बात यह है, कि मनुष्यके मस्तिष्कमें विद्युत और चुम्बकका प्रमाण अधिक है और उत्तरकी ओर रहनेवाले पोलरादिकोंका विद्युत् तथा चुम्बकका अधिक प्रमाण दिमागके अल्प प्रमाणको हानि करता है। पूर्व और दक्षिणकी ओर सिरहाना करके सोना अच्छा होता है। कहते हैं पूर्वकी ओर सिर रखकर सोनेसे विद्या तथा जीवन-शक्ति, दक्षिणकी ओर आयुकी वृद्धि और पश्चिमकी ओर चिंता होती है! अपने घरमें पूर्वकी ओर, ससुरालमें दक्षिणकी ओर और यात्रामें पश्चिमकी ओर सिर करके सोना चाहिए!

सोनेका वेग।

जिस समय नींदका वेग आवे उसे रोकना नहीं चाहिए। जिनको जितनी नींद लेना आवश्यक है, उनको उतनी नींद न आनेसे, नींदका अभाव होनेसे अथवा नींदका वेग रोकनेसे, अंग-दर्द, शिरमें भारीपन, जड़ता, ग्लानि, भ्रम, मन्दाग्नि, तन्द्रा, सुस्ती, सिरदर्द और जम्हाई आदि आने लगती है। एवं अनेक वातज लक्षण दिखलाई पड़ते हैं। यदि कुछ दिनों तक बराबर न सोया जाय, जैसा कि प्राय: नाटक कंपनियोंमें होता है, तो स्वास्थ्य अवश्य खराब होजाता है। सोए विना दिमागमें गर्मी चढ़ जाती है और तबियत ठिकाने नहीं रहती। निद्राका वेग जब सवार होता है, तो काम करनेमें जी नहीं लगता। आँखें ढलमलाती हैं, पलकें बन्द होतीं और खुलती हैं, सिर आगे-पीछे झुकता है, श्वास-प्रश्वासकी गति सुस्त और हलकी होजाती है, नाड़ीकी गति एक मिनटमें दस बारके हिसाबसे घट जाती है, गर्मीकी उत्पत्ति कम होजाती है। सारांश यह कि शरीरके सारे अवयवोंकी क्रिया ढीली-सी होजाती है। जॉर्जियाके कुछ विद्यार्थी लगातार १०० घण्टे जागते रहे, फलस्वरूप उनकी ऊँचाई १-१ इंच घट गई। दो सप्ताह सोनेके बाद उनकी ऊँचाई फिर ज्योंकी त्यों ठीक होगई। "जागरण"।

जैनधर्मका परिचय।

(रचयिता श्री० ब्रह्मचारी प्रेमसागरजी पंचरत्न)

जिसको पाकर मनुज आत्महितकर सकता है।
पाप नाश, भण्डार पुण्यका भर सकता है॥
अपने बलसे आप, करमको हर सकता है।
निज पदको कर प्राप्त, मुक्ति तिय बर सक्ता है॥१॥
वही जैनका धर्म, प्राप्त जो कर पाता है।
वही मनुज संसार, समुद्रसे तिर जाता है॥
जन्म जरा अरु मरण, तीनसे जय पाता है।
पा अविनाशी धाम, नहीं फिर इत आता है॥२॥
परिचय उसका आज, आपके लिये बताऊं।
अनुभव जैसा किया, उसी अनुसार सुनाऊं॥
मान बड़ाई हेतु नहीं यह काव्य बनाऊं।
समझें इसको सभी, भावना ऐसी भाऊं॥३॥
वस्तु स्वभावो, धर्म, बताया सर्वज्ञोंने।
लेकिन इसको, समझ नहीं पाया अज्ञोंने॥
गुण अथवा पर्याय, वस्तुमें पाई जाती।
क्षय होती पर्याय, नहीं गुणसी रह पाती॥४॥
इसी तरहसे और, वस्तुओंको भी जानो।
निर्णय करलो खूब, तभी तुम उसको मानो॥
आत्म तत्व भी एक, वस्तु है सबकी मानी।
उसमें भी वह उभय रंग रहता लाशानी॥५॥
उसका दर्शन, ज्ञान, वीर्य, अरु बल स्वभाव है।
उसका हर्गिज, नहीं कभी होता अभाव है॥
नर, नारक, तिर्यंच, देव पर्याय नाश हो।
एक नाश हो तथा, दूसरीका विकाश हो॥६॥
सिद्ध हुआ वस्तुस्वभाव, अविनाशी रहता।
रहता हरदम साथ, कभी भी नहीं बिछुड़ता॥
गुण कहते हैं उसे, गुणीके पास रहे जो।
सोनेका पीतत्व स्वर्णको नहीं तजे जो॥७॥
जब पवित्रता पाय, आत्म अनुभव नर करता।
तजकर सकल विभूति, महातपको आदरता॥
तब कार्मिक मल धोय, आत्म गुण विमल बनावे।
पूर्ण ज्ञानको पाय, पूर्ण ज्ञायक बन जावे॥८॥
जाने सकल पदार्थ, तथा देखे वह स्वामी।
इसी लिये तो उसे, कहत हैं अन्तर्यामी॥
उसका सारा ज्ञान, जितेन्द्रिय ही होता है।
मानव उरके बीच, बीज वृषका बोता है॥९॥
जिसका हित उपदेश, सार्थक ही होता है।
क्यों की आत्म स्वभाव, प्रगट हो वृष बोता है॥
स्याद्वादको लिये, आप्त-ध्वनि प्रगटित होती।
मिथ्या मतको खण्ड, जैन वृषको है बोती॥१०॥
वही जैनका धर्म, स्याद्वादी कहलाता।
जो दुनियांमें, सत्य अहिंसा ध्वजा उड़ाता॥
अखिल विश्वका वही, हितकर होसकता है।
अथवा सबके लिये, एक ही होसकता है॥११॥
सच्चा आत्म स्वभाव, जैनका धर्म कहाता।
वही "सनातन तथा अनादी" है कहलाता॥
अध्यातमता सुधा, यही है एक पिलाता।
वही भवार्णवसे निकाल, शिवसदन पठाता॥१२॥
उसका यह सिद्धांत, अहिंसाका भारी है।
"जीने दो अरु जियो" यही तो हितकारी है॥
हमको जितनी जान, अहो, अपनी प्यारी है।
उनको उनकी जान कहो, उतनी प्यारी है॥१३॥
सत्य और वैराग, अहिंसाके नाते हैं।
जो रखते हैं उसे, वही इनको पाते हैं॥
निज हकोंको रखो, अहिंसाको अपनाके।
पर हकोंको नहीं, हड़पना लोभ कमाके॥१४॥
वृक्षादिक भी जीव, सताना व्यर्थ न उनको।
रखना मनमें दया, रुलाना व्यर्थ न उनको॥
यही एक सिद्धांत अहिंसाका है नीका।
इस विन सारा कार्य, धर्मका होता फीका॥१५॥

(પૃ. ૨૬૮ થી ચાલુ)

જ્યારે ગોબિલજી પહેલી વખત અમેરીકા જઇ રહ્યા હતા ત્યારે સ્ટીમરમાં એક દક્ષિણી ગૃહસ્થની સાથે લોકમાન્ય તિલકના સંબંધમાં વાતચીત થઇ હતી. તે ગૃહસ્થે બીજી વાતોની સાથે એ પણ કહ્યું હતું કે લોકમાન્યે પણ દેવનાગરી લાઇનો ટાઇપ બનાવવાનો પ્રયત્ન કર્યો હતો પરંતુ તેમને સફળતા મળી નહોતી. તે વખતે ગોબિલજીનાં મગજમાં દેવનાગરી ટાઇપ બનાવવાનો વિચાર ઉદ્‌ભવ્યો હતો. અમેરીકામાં પ્રેસમાં કામ કરતી વખતે પણ એ બરાબર એજ ઉદ્યોગમાં લાગી રહ્યા હતા. સતત પ્રયત્ન કરવાથી સને ૧૯૨૨માં તે એક મૂળ સિદ્ધાંતનો નિકાલ લાવી શકયા હતા જેની ઉપરથી એ યંત્ર તૈયાર થયું છે, પરંતુ તેને ચાલુ સ્થિતિમાં મુકવાનો અવસર ૧૦ વર્ષ પછી મળ્યો.

જે પાઠકોને છાપખાનાનો અનુભવ નથી તેમને ખબર નહિ હશે કે લાઇનો ટાઇપ શું ચીજ હોય છે. લાઇનો ટાઇપનો અર્થ એ છે કે 'ટાઇપની એક લાઇન." સાધારણ રીતે છાપવાનું કામ એવી રીત થાય છે કે કોમ્પોઝીટર પ્રત્યેક અક્ષરનો ટાઇપ હાથ વડે ઉઠાવીને એક એક કરીને જોડે છે. પછી તે ટાઇપ ફર્મામાં સજ્જ કરવામાં આવે છે. અને છાપવાનું કામ પુરૂં થયા પછી તે ટાઇપોને અલગ અલગ ફરીથી જુદા જુદા ખાનામા વહેંચણી કરીને ભરી દેવામાં આવે છે

લાઇનો ટાઇપ વિજળીથી ચાલનારૂં એક યંત્ર છે. એમાં એક બાજુએ રીસું ભરવામાં આવે છે અને બીજી બાજુએ ટાઇપ રાઇટરની માફક અક્ષરની ચાવીઓ રહે છે. કોમ્પોઝીટર એ ચાવીઓને દબાવે છે જેથી કરીને એક પૂરી લાઇન કોમ્પોઝ થઇ જાય છે. તે યંત્ર પોતાની મેળેજ લાઇનો બરોબર ગોઠવી દે છે. અને તે ચાવી દબાવવાની સાથેજ આખી લાઇન જે વિજળીના બળે પિગળી ગયેલી હોય છે તે તેનો રસ ઢળી જઇને લાઇનમાં જઈ અક્ષરનાં બીબાં તૈયાર થઇ જાય છે. છપાઈ ચૂકયા પછી એજ લાઇન ફરીથી પીગળી જઇને બીજી વખત બીબાં ઢાળવાના કામમાં આવે છે. આ યંત્રમાં એકજ કોમ્પોઝીટર આઠ દશ કોમ્પોઝીટરનું (હાથથી કામ કરનારા) કામ આપે છે. એમાં ટાઇપની અને તેના ખાનાની જરૂરીઆત રહેતી નથી, એમાં દરેક વખતે નવા ટાઇપ છાપવાથી તે હંમેશા નવા ને નવા રહે છે, તેથી કરીને છપાઇનું કામ ઘણું ઉત્તમ થાય છે. હાથથી ગોઠવાતા ટાઇપોમાં કદી કદી કોઇક ટાઇપ વત્તા ઓછા પડી જાય છે, તો મોટી મુસ્કેલી ઉભી થાય છે. આ યંત્રમાં તે પ્રકારની મુશકેલી અસંભવીત હોય છે. હાથથી ગોઠવાતા ટાઇપમાં કદી કદી ફર્મો બાંધતી વખતે હાથમાંથી ટાઇપ છૂટી જતાં ખંડીત થઇ જાય છે. અને મહેનત નકામી જાય છે. આ યંત્ર મારફતે કોમ્પોઝ કરવાથી તે મુસ્કેલીનો ભય નથી. કેમકે જો મેટર પડી પણ જાય તો ચઢાવેલી લાઇનોને ઉઠાવીને ફરીથી તેના યોગ્ય સ્થાનમાં રાખી દેવાય છે. તેમાં સ્પેઇસ વિગેરે અલગ રાખવા પડતાં નથી. તે બધાંજ લાઇનની સાથે સાથે ઢળી જાય છે. બીબાંને જુદા જુદાં અલગ કરવાનો ઝઘડો તો તેમાં છેજ નહિ. સૌથી મ્હોટી વાત તો એ છે કે દેવનાગરી લાઇનો ટાઇપ મશીનમાં અંગ્રેજીનું કામ પણ થઈ શકે છે. જો આપણી ઇચ્છા હોય તો એકજ લિટીમાં હિન્દી અને અંગ્રેજી ટાઇપ કોમ્પોઝ કરી શકાય છે.

એ યંત્ર તૈયાર કરતાં ગોબીલજીને કેટ કેટલી મુસ્કેલીઓની સામે થવું પડયું હશે, તેનું અનુમાન પણ કઠીન છે. હાથથી ગોઠવવાના ટાઇપથી અંગ્રેજી કંમ્પોઝ કરવામાં કુલ બસોથી વધારે ચિન્હ કામમાં આવે છે; જ્યારે હિંદી કમ્પોઝ કરવામાં

સાતસોથી વધારે ચિન્હ કામમાં આવે છે. અંગ્રેજીમાં પ્રત્યેક અક્ષર અલગ હોય છે; પરંતુ હિંદીમાં જોડાક્ષર અને વિભક્તિ મનમાની હોય છે, તેથી કરીને હિંદી છાપવાનું કામ બહુ કઠીન છે. કોઇ કોઇ જગ્યાએ એક અક્ષર ઉપર ત્રણ ત્રણ ચીન્હ લગાડવાં પડે છે. અંગ્રેજી લાઇનો ટાઇપની કી-બોક્ષમાં કુલ નવ કુંચીયો હોય છે. ગોબીલજી એ નવજ ખુંટીઓની સહાયતાથી સાતસો ચિન્હનું કામ કરવાની ગોઠવણ કરી શકયા છે!!!

મર્ગન્થાલર લાઇનોટાઇપ કુંપનીએ ગોબીલજી પાસે એ યંત્ર બનાવડાવ્યું છે. કુંપનીના એંજીનીઅર તથા કારીગરોએ ગોબીલજીને સર્વ પ્રકારની સહાયતા આપી; પરંતુ મોટી મુસીબતની વાત તો એ હતી કે, હિંદીના કાળા અક્ષરો તેમને ભેંશ આગળ ભાગવત મમાન હતા. એ બધી મુસ્કેલીઓની સામે થઇને ગોબીલજીએ જે શોધ કરી છે, એને માટે કેવળ હિંદીજ નહિ; પરંતુ ભારત વર્ષની પ્રત્યેક ભાષાની મુદ્રણ પ્રણાલીમાં યુગાન્તર જેટલો સુધારો દાખલ થશે. ભવિષ્યમાં થોડા માસની અંદર ગુજરાતી અને બંગાળી મશીન પણ તૈયાર કરવામાં આવશે.

એ મશીન ભારતમાં આવી ગઇ છે. કલકત્તામાં લાઇનો-ટાઇપ કુંપની ઓફીસમાં એ જોઇ શકાય છે. આવા સ્વાવલંબી વિદ્યાર્થિઓ અને મહાન શોધકોને હમારા કોટીશઃ ધન્યવાદ છે. આજના જમાનામાં જ્યારે આપણે ત્યાં નોકરી અને દલાલી શીવાય બીજો કોઈ ધંધો રહ્યો નથી; ત્યારે આવા વિરલા સ્વતંત્ર્ય શોધકો આપણે માટે હજી સ્વર્ગના દ્વાર ખુલ્લાં મુકવા યા-હોમ કરતાં પાછીપાની કરતા નથી, એજ આપણા મહાન દેશની વિભૂતિ છે; કે જેમાં આવાં રત્નો અવારનવાર ઉત્પન્ન થાય છે.

—નાગરદાસ.

મહામંત્રીનું નિવેદન.

ગુજરાતના દિ. જૈન ભાઇઓ ને બ્હેનો,

જય મહાવીર.

આ બીજું માસિક નિવેદન—ગુજરાત દિ. જૈન પ્રાંતિક સભાના ઉદ્દેશની અભિલાષાના બીને કંઇક અંકુર ફૂટેલા બતાવે છે તે જોઈ સૌ કોઇને આનંદ થશે, છતાં એ અંકુરને દરેક વ્યક્તિ કે પંચ પોતાથી બનતું પાણી આપી ઉછેરશે તોજ ફળની આશા રહે છે. જમીન હજુ જોઇએ તેવી ખેડાઇ નથી તેથી કંઇ બી જેમને તેમ પડયા છે. જ્ઞાતિના આગેવાન ગણાતા સ્ત્રી પુરૂષો રૂપી ખેડુત અને સેવક એ માટે જોખમદાર છે. હું કહેતોજ આવ્યો છું કે "સમાજની સુરતી આગેવાનોની સુરતી પર આધાર રાખે છે." પણ જમાનો એ આવે છે કે જો એઓ સમયને માન આપી જોઇતા સુધારા વધારા નહીં કરે તો તેઓને માનપૂર્વક, યુવાનોના સંઘબળ આગળ વધતાં, પાછા હઠવું પડશે. આગેવાની ખોવી પડશે, પંચો સુધારા કરી બીજા પંચો સાથે નહીં જોડાશે તો વ્યક્તિઓ તેમનો માનમુર્તબો છોડી આગળ ધપશે. પંચની દંડ કરવાની કે બહિષ્કાર કરવાની સત્તા તો અમુક રાજ્યમાં લોપાતી જાય છે, પછી ઉછળતા લોહી આગળ આવતાં પુરાણા પંચને સમાધ લીધે છુટકો છે, તો પહેલાંથી પંચો પોતાના બંધારણ સુધારી લે એ શું ઇચ્છવાજોગ નથી ?

વસ્તિપત્રકો—રાયદેશ સાઠના જીલ્લામાં, સોજીત્રા સંભામાં, અંકલેશ્વર સંભામાં યુવકો તરફથી થઇ ગયાં તેની તમામની સાર રૂપ નકલો આવી પહોચી છે. નરસિંહપુરા જ્ઞાતિનું વસ્તિપત્રક થઇ ગયું છે પણ આંકડા મળવા બાકી છે. સુરતના ઉત્સુક વીશા હુમડનું વસ્તિપત્રક કેમ બાકી રહ્યું છે તે સમજાતું નથી. વસ્તિપત્રક બાબતમાં ઓરાન પ્રાંતિજ વિભાગના ચોખલાના પંચની મુસ્કેલી જાણવા જેવી છે.

એ પંચમાંથી પોતાના ગોળ બહાર તો કોઇ કન્યા આપતું નહીં અને આપે તો તે આપનારના કુટુંબને વંશપરંપરા કન્યા મળે નહિં; એ ચાલુ રીવાજ છે. એટલે કન્યા મોટી થઇ જાય તો એ ગોળ બહાર જવાની ભીતિ નથી. પરંતુ કોઇ પૈસાદાર બીજવર કન્યાને પરણી જાય તો ન્યાતના ગરીબ નાના છોકરા અવિવાહિત રહી જાય એ ભયથી પંચે શોધ કરી બે ઠરાવ કર્યાં હતા.—(૧) સાડા અગીયાર વર્ષની કન્યા થાય ત્યાં સુધીમાં તે કન્યાનો વિવાહ તેના માતપિતા કે વડીલ નહિં કરી નાંખે તો તેનો દંડ રૂ. ૧૦૧) પંચ લે (૨) જે છોકરાનો વિવાહ થઇ ગયો હોય તે કુંટુંબમાં તેની બ્હેન ગમે તેટલી નાની (કહો કે બે વાસા કે એક માસની) હોય તો એ છ માસમાં બીજે ઉતારીજ દેવી પડે. આ બે ઠરાવોનો ભંગ કરનાર અનેક જણા નીકળે છે કારણ કંઇક અનિષ્ટ પરિણામની વડીલોને ભીતિ રહે છે. અને તેથી વસ્તિપત્રક ભરી આપે તો પંચ ઉંમર જાણે અને તેવા દરેકના દંડ કરે તે દંડ આપવો પડે. એટલે સુધારાની દ્રષ્ટિએ નહિં પણ દંડ કરવાના સાધન રૂપ વસ્તિ પત્રક ચોખલાનું પંચ કરવા ઇચ્છે છે, ફારમો છપાવ્યાં છતાં વધુ ગામો-કુટુંબો તે ભરી મોકલતા નથી એટલે ત્યાં વસ્તિ પત્રક કરવાનું કામ શરૂ કર્યું છે. ચોખલાના યુવક સંઘ સુધારની દૃષ્ટિ માટે હજુએ વસ્તિ પત્રક બનાવા નહિં મોકલે તો કંઇક ઢીલાપણાનું કલંક વ્હોરશે. રાંયકવાળ ભાઇઓ પણ વસ્તિ પત્રકમાં પાછળ છે. ઉત્સાહી પુરૂષ જરૂર એ કામ હાથ ધરે.

દિ. જૈન જ્ઞાતિના આગેવાનોને નિમંત્રણ—આપવામાં આવ્યું હતું તેમણે કરેલ ઠરાવો આ અંકમાં બીજે સ્થાને જોવામાં આવશે. આખા ગુજરાતમાં ફકત સોજીત્રા સભામાંજ પલ્લું ફકત રૂા. ૧૮૧) છે. જ્યારે બાકીની બધી કોમોમાં રૂા. ૮૦૦) થી લઇને લગભગ રૂા. ૧૫૦૦) સુધીનું છે. જમાનો મંદીનો હોવાંથી અનેક બાજુના વિચાર કરી પલ્લું રૂા. ૧૦૦૧) એક હજારથી વધુ નહિં રાખવા ભલામણ કરી છે. અને સોજીત્રા સંભાનું પલ્લું રૂા. ૧૮૧) છેક ઓછું છે, અને તેના પેટા જથાએ રૂા ૩૫૦) નું પલ્લું રાખેલું હોવાથી સોજીત્રા સંભાને પણ અડચણ નહિં આવે એ હેતુથી ઓછામાં ઓછી પલ્લાની રકમ રૂા. ૩૦૧) રાખી છે. દશા હુમડ ચોખલાનું પંચ નનાનપુર મળ્યું, ત્યાં સોનું-૩૦ તોલા અને ૨૦૦ તોલા ચાંદી આદિનું પલ્લું છે. તે ઘટાડવા માટે મંત્રી અને મહામંત્રીએ અમુક અમુક સ્થાને ચર્ચા કરી હતી પણ દરેક તરફથી, સ્ત્રીની પાછલી દશા અને સ્ત્રી ધન તેમજ તેના પહેરવેશ માટે એટલું પલ્લું વ્યાજબી ઠરાવ્યું હતું. અને અનેક સ્થાનેથી જવાબ મળ્યા કે જેની પાસે આ જમાનામાં લગભગ રૂા. ૧૦૦૦) ની સ્થિતિ કે તેટલી થાપણ કરી શકે એટલી શક્તિ નહિં હોય તેને પરણવાનો અધિકાર નહિં હોવો જોઇએ.

મહાત્મા ગાંધીજી તો ફરે છે. ત્યાં અનેક સ્ત્રી પાસે દાનમાં ઘરેણા ઉતરાવે છે. અને ફરી નવા નહિં લેવાની પ્રતિજ્ઞા અપાવે છે. એટલે જ્યાં પતિપત્નિ પ્રેમથી જોડાયલા હોય ત્યાં પલ્લાંની જરૂર શી રહે છે? એ દલીલ કોઇપણ વ્યક્તિ કરે. ત્યાગ માર્ગ તરફ વળેલ-મુનિ માર્ગ તરફ ઢળેલ વ્યકિત-પરિગ્રહ ઓછા કરે તેમ તેમ ધન્યવાદને પાત્ર છે, પૂજ્ય છે, પણ જે કામમાં વૈધવ્ય દશા સ્ત્રીને પ્રાપ્ત થતાં તેની સંસાર તરફની વાસના છોડવવાની હોય તેને બદલે સંસારમાં લીન રહેવાનીજ ભાવના કેળવાતી હોય, તેવે સ્થાને વિધવાને રાખે, પરિગ્રહ વધારતા જાય અને ત્યાગ માર્ગને બદલે સંસાર માર્ગ તરફ ઢળતા થવાય એવા વાતાવરણમાંજ રાખવામાં મોટાઇ મનાતી હોય ત્યાં ત્યાગ વૃત્તિ-પરિગ્રહ પ્રમાણની વૃત્તિને પોષણ કયાંથી મળે? જ્યાં ત્યાગ વૃત્તિને પોષણ નહિં હોય અને જીવનનું શોષણ થતું હોય ત્યાં પલ્લું

કેટલું જોઇએ એ આપ સમજી શકો છો. ફર-જીયાત ત્યાગ કદી સારૂં પરિણામ લાવતો નથી.

પંચ અને તેમનું કાર્ય—રીતરીવાજનો ખરડો હજી વ્યવસ્થાપક કમીટીમાં રજુ થયો નથી. અને વ્યવસ્થાપક કમીટી સોજીત્રા મુકામે બીજા વૈશાખ વદ ૨ ને દીને મળનાર છે. સોજીત્રા સંભાનું પંચ તે પહેલાં મળી જશે. અને ગુજ-રાતની પંચોના આગેવાનો વ્યવસ્થાપક કમીટીમાં હોવાથી એ ખરડા પર સારી રીતે વિચાર ચલા-વશે. સુરતના વિશા હુમડ ભાઇઓના પંચનું બંધારણ ફરી ઘડાય છે. અને તેઓ તરફથી બીજા પંચ સાથે જોડાવાની ખુશી આગેવાનોએ દર્શાવી દીધી છે. સુરતના નરસિંહપરા પંચે બીજી પંચો સાથે જોડાવાની ખુશી બતાવી છે. અને સાત ગામના મોટા પંચને પણ તેવી ભલા-મણ કરી છે. અંકલેશ્વરના વિશા મેવાડાના પંચે પણ બીજા પંચ સાથે જોડાવાની ખુશી બતાવી છે, અને એને સોજીત્રા પંચ સાથેનો સંબંધ હોવાથી એનું કામ તે પંચના ઠરાવપર આધાર રાખી સોજીત્રા સંભાના પંચના ઠરાવની રાહ જુએ છે. સોજીત્રા સંભાનું પંચ બીજા વૈશાખ સુદમાં લસગાળામાં મળનાર છે. અને આગે-વાનો દીર્ઘ દ્રષ્ટિવાળા હોવાથી પંચના બંધારણ તેમજ સુધારા યોગ્ય સ્વરૂપમાં દાખલ કરશે એવી આશા છે. દશા હુમડના ચોખલાનું પંચ મળ્યું હતું તેમના નિયંત્રણથી મંત્રી અને સેવક જાતે ગયા હતા. નનાનપુર ગામ ઘણું નાનું ફકત ૧૫–૧૭ ઘર દશા હુમડ દિ. જૈનના છે પણ દરેકને ત્યાં પંચમાં પધારેલ લગભગ ૭૦૦ માણુસોને સુવા બેસવાની નહાવાની આદિ દરેક રીતે સત્કારની પદ્ધતિ જોઈ બહુ આનંદ થયો હતો.

એ પંચના ડાહ્યા આગેવાનોએ પંચ મેળવવાના સ્થાન નક્કી કરવામાં એવો નિયમ રાખેલો છે કે ચોખલાના ૪૨ ગામો પૈકી સાત ઘરથી ઓછી સંખ્યાવાળા ગામો છોડી બાકીના ગામે વાના ફરતી પંચ મેળવે. એ ત્રણ વરસે કે કદાચ એક વર્ષે પંચ મળે છે. જે ગામે પંચ મળ્યું હોય તે ગામે ફરી વારો કયારે આવશે એ કહી શકાતું નથી. પંચ પંદરને ખર્ચે બોલાવાય છે એટલે રસોડું ખોલવામાં આવે છે. તેનો ખર્ચ માણુસની સંખ્યા પર ફાળવી નંખાય છે.

પંચે ઠગવથીજ નક્કી કર્યું છે કે તે ગામના રહેનારે કોઇને ખાટલા આપવા નહીં. ચા કે નાસ્તો આપવો નહીં. એ ઠરાવ સારા હોવા છતાં એનો અમલ બહુ ઓછો થાય છે. કમી-ટીનું બંધારણ થયું છે પણ તે નામનું જણાય છે, પંચ મળે ત્યારે "આવો ફલાણાભાઇ" "આવો..." એમ વચમાં બોલાવી બેસાડાય છે. તેમા અનેક પુરૂષોને પોતાને પાછળ ખસવું પડે છે તેથી અપમાન થયેલું જેવું મનાય છે. જે કમિટી નીમાય છે તે આગળ બેસી તે કમીટીના સભ્યો પાછળ જેને તે ગામના માણુસો બેસે તો પછી દરેક ગામ માટેના પ્રતિનીધી તે ગામની વાત ઠીક રૂપમાં રજુ કરી શકે અને પંચનું કામ શાંત રીતે ચાલે, એ વ્યવસ્થા કરી શકે છે પણ હજી તેવું કશું થયું નથી. કમીટીમાં નાના મોટા દરેક ગામનો એક સભ્ય (ઓરાણમા હજુએ તડ જેવું હોવાથી તેના બે પ્રતિનીધી) લીધેલા હોવાથી મોટી વસ્તિવાળા ગામના દશા હુમડ ભાઇઓને અસંતોષ છે. અને તેથી લગભગ બે દીવસ તેની ખાનગી ચર્ચામાં વ્યતીત થયા. દરેક ગામનું એક પંચ ગણાય તેથી તેનો પ્રતિનીધી એક હોવો જોઇએ એમ એક બાજુનું કહેવું અને બીજી બાજુના ગ્રહસ્થો વસ્તિનું પ્રમાણુ જોવાં માંગે છે તેથી પ્રતિનીધિ વધે તો કમીટીમાં મત ગણુત્રી વખતે શું કરવું એની વાટાઘાટમાં સમય ગયો. છતાં એ કોમના ડાહ્યા પુરૂષોએ એ વાત હાલ તુરત મુલ્તવી રાખી, છતાં એ દીલદાઝનો ધુંમાડો પંચ મળે છે તેમાં બહુ રીતે જણાય છે. ઓરાન-માંનો ઝગડો એ પંચ નીવેડવા હાથ લઇ શકતી નથી તેથી ઝગડા નિવારણ કમીટી હાથપર લેશે.

ઉપર જણાવેલ જાણીતા બે ઠરાવના ભંગ માટેના ગુના માટેજ છેલ્લા બે ત્રણ પંચ મળ્યા હતા અને તેના ચુકાદામાં ભારે અન્યાય થતો જોવામાં આવે છે છતાં એ બે ઠરાવ પડતા મુકાતા નથી. અને દશ વર્ષની ઉપરની કન્યાના વિવાહ થઇ શકે એવો મુદ્દાનો ઠરાવ મુલતવી રહ્યો પૈસાદાર વિધુર કરતાં ગરીબ વિધુર કેટલા એ ઘણા વધુ નથી હોતા ? પૈસાદાર વિધુર તો બહારથી કન્યા વિક્રયને મદદ દઇ કન્યા લાવે અને ગરીબ વિધુરો તો વાંઢાજ રહેને ? જો કન્યાની ઉમર કરતાં વરની ઉમરનો આંતરો કંઇક વધુ રખાય તો શું જન્મનાર કન્યા રહેલા છોકરાને આગળ ખપ નહીં આવે ? જરા ઉંડો વિચાર કરી ડાહ્યા પુરૂષો જરા જમાનાને વધુ ઓળખે તો ઠીક નહીં તો ચારસો ઘરની વસ્તિમાંથી આ નામિચા ઠરાવોના ભંગ કરનાર ૧૫૦ના નામ પેટીમાંથી નીકળ્યા, તે વધતા જશે. સાચું માની દેનાર એનો રૂ. ૮૧)નો દંડ થયો અને બે ત્રણ સીવાયના બીજાએ પ્રતિજ્ઞા ખોટી ખરી કરેલી તેઓ છુટી ગયા છે !

મંત્રી અને સેવકે નવ ઠરાવ રજુ કર્યા હતા તેમાંથી કેટલાક મંજુર રહ્યા અને બાકીના મુલતવી રહ્યા છતાં એમ તો કહેવુંજ પડશે કે પંચે ગુજરાત દિગમ્બર જૈન પ્રાંતિક સભાને અપનાવી છે. આશા છે કે કમીટીની સંખ્યા યોગ્ય ગોઠવાતાં પંચમાં વ્યવસ્થા માટે જોઇતા નિયમો પણ અમલમાં મુકાશે. પણ એક ઉત્સાહી યુવક મને લખે છે "પંચ મંગળવારે સવારે વેરાઇ ગયું છે. કંઇ કામ (ખાસ) થયું નથી. કેટલાક આગેવાનો પોતાની આગેવાની જતી ન રહે એ ધોરણે અંદરખાનેથી રમતો રમે છે. ગમે તેમ પણ હવે પછી પંચની બેઠક મળશે તેમાં કંઇક રાહ પર આવશે. આગેવાનોની રમતો ઉઘાડી પડી જશે." આ વાતો—અનેક યુવાનોના ઉદ્‌ગાર રૂબરૂ સાંભળ્યા છે, પણ યુવાનોને વિનંતિ કે બીલકુલ કડવાસ વગર આગળ વધો અને આગેવાન મુરબ્બીઓને વિનંતિ કે જમાનાને ઓળખવામાં સૌનું ભલું છે. સ્થાનિક સંસ્થા કે બીજા ખાતા ચલાવવા માટે છેજ તે પ્રમાણે સામાજીક કામ માટે પંચના બંધારણ જરૂરના છે—અને તે પ્રમાણે મોડા વહેલા સુધારવાજ પડવાના છે.

ઝઘડા નિવારણ—માટે ખાસ પ્રયાશ ચાલે છે. નરસિંહપુરા કોમમાં શહેર નરસિંહપુર ગામના મન ઊંચાજ રહેલા જણાય છે. કલોલ, આમોદ નજીકના ભવિષ્યમાં સારી મદદ દેશે. પણ ગયા નિવેદનમાં "પાંચ ગામ પૈકીના નરસિંહપરા ભાઇઓમાંથી સમાધાન કમીટીમાં સભ્ય નીમવા નહીં પણ પાંચ ગામ બ્હારના નરસિંહપુરા કે બીજા ગમે તે દિગંબર જૈનને નિમવા" એ અભિપ્રાય બદલવા નરસિંહપુરા ગામના ભાઇઓને વિનંતિ કરેલી તેનો જવાબ બીલકુલ નથી પણ એક બાબતમાં એ વાત આવી છે કે શા. મગન હરજીવનની બાબતમાં આમોદ ચોરાએ તો ઠરાવ કર્યો છે અને સુરતે જાહેરને પ્રશ્ન તો પુછ્યો છે પણ નિર્ણય કર્યો નથી એટલે એ બે ગામ પણ સાથે સમાધાનમાં હોવા જોઇએ. હજુએ વ્યવસ્થાપક કમીટી અને તે સાથે ઝઘડા નિવારણ કમીટી બી વૈશાખ વદ ૨ ને દીવસે સોજીત્રા મુકામે મળે તે પહેલાં એ વિષે એમનો જવાબ નહિં આવે તો સેવકને કમીટીના સભ્યોની સલાહ પ્રમાણે વર્તવાનું રહેશે.

સમાજમાં રહેવા માંગે તેણે સમાજની પરતંત્રતા સ્વીકારે છુટકો છે. પાંચ કે સાત ગામના પંચમાં રહેવું હોય તો તે નીમે તેવા માણસોને કબુલવાજ જોઇએ. ઝહેર વધુમતિ પર કુદે છે પણ મોટા તો તેજ કહેવાય કે જે નાના તરફ ઉદાર રહે છે. કંઇ ગોટાળા પંચ સમાવી દે છે તો આ બાબતમાં શા માટે ખેંચી પકડવું જોઇએ. ન્યાત તો પાણીનો પ્રવાહ છે. શ્વેતાંબર ભાઇઓમાં તો જે જૈન દીક્ષા લે તે બધાને સાથે

બેસાડવા ઠરાવે છે. જૈન દિક્ષા લેનારને વર્ણુ લાભ ક્રિયાને આધારે સાથેજ બેસાડી જમાડી શકાય છે. વળી સામાજીક સત્તા પરસ્પરના પ્રેમથી ચલાવાય. બળજોરીથી ચલાવવા જતાં પક્ષ પડયા છે તે ઉદાર દીલથી પ્રેમથી સમાવે અને બંન્ને પક્ષને વિનંતિ કે બી. વૈ. સુદની આખર પહેલાં નમ્રતા છે એમ બતાવો અને સંપ ત્યાં જંપ છે એવું સાબીત કરો.

જૈનધર્મ વિશ્વધર્મ—સુરતનો દિ.જૈન યુવક સંઘ ધાર્મિક આર્થિક અને સામાજીક ઉન્નતિ માટે ખૂબ પ્રયાશ કરે છે. પત્રિકા, ચોપાનીયા આદિ છપાવે છે. તેમજ કોઇ વિદ્વાન પંડિત આદિના ભાષણો કરાવી જૈનધર્મની સેવા કરે છે. આ માસમાં વિદ્યાવારિધી જૈનદર્શન દિવાકર પં. ચંપતરાયજી જૈન બાર–એટ–લો ઇંગલાંડ જવા મુંબઇ જતાં સુરતમાં તા. ૯–૫–૩૪ દીને ઉતર્યા હતા તેમની પાસે "વિશ્વધર્મ"પર ભાષણ કરાવ્યું હતું. ભાષણ તો ઉત્તમ હતું, પણ સાર એ કે જૈનધર્મજ વિશ્વધર્મને લાયક છે. જો જૈનધર્મને વિશ્વધર્મ બનાવવો હોય તો દરેક જૈન ફિરકાએ પહેલાં એકત્ર થવું જોઇએ. ષટ્ દર્શનનો સમાવેશ જૈન શાસ્ત્રમાં થાય છે, તો શ્વેતાંબર દિગંબર સ્થાનકવાસીના પેટા ધર્મના સિદ્ધાંતો–ખાસ બાહ્ય આચાર વિચારોનો સમાવેશ એકરૂપ જૈનધર્મમાં નહીં થવો જોઇએ ? અરે એ ફિરકાઓના પેટા ભાગોના ગુરૂ પંડિત બ્રહ્મચારીઓએ પેટા વિભાગ દુર કરવા પ્રયાશ નહિં કરવો જોઇએ ? મુંબઈમાં શ્રી. શ્વેતાંબર જૈન પરિષદે અને યુવક સંઘ પરિષદે ત્રણે ફિરકા એકત્ર કરવા, સર્વ જૈન એક પંક્તિએ બેસે તેમ કરવા, આદિ ઉત્તમ ઠરાવ કર્યા છે અને કાર્યકર્તા તેના અમલ માટે ઉત્સુક છે તે માટે તેઓને ધન્યવાદ ઘટે છે. અને આપણી ગુ. દિ. જૈન પ્રાંતિક સભાના ઉદ્દેશને ભારે મદદ મળે છે; પણ સુરતના દિ. જૈન યુવક સંઘના સભ્યો ખાસ ઘણે ભાગે દશા હુમડ ભાઇ છે, ગુજરાતમાં ઉત્તર ભાગમાં લગભગ ૩૦૦૦ દશા હુમડ ભાઇઓ છે, તેઓ સમસ્ત દિગંબર સાથે પંક્તિમાં સાથે બેસે છે. પણ સુરતના દશાહુમડ ભાઇ પોતાની જમણની ન્યાતમાં બીજા દિગંબર ભાઇઓને એક પંક્તિમાં બેસવા દેવા તૈયાર નથી ! વિશ્વધર્મ પર પહોંચતાં પહેલાં જૈનોએ અનેક સુધારા કરવા જોઇશે અને તેવા સુધારા કરવા દરેકને વિનંતિ છે. તા. ૧૨–૫–૩૪.

જાતિ સેવક.
છોટાલાલ ઘેલાભાઇ ગાંધી.
મહામંત્રી, ગુજરાત દિ. જૈન પ્રાંતિક સભા,
મેવાડાફળીયા, **અંકલેશ્વર.**

મિત્રોમાં વાર્તાલાપ.

(પડદો–૨.)

કાંતિલાલ—દોસ્ત, મહામંત્રીએ આપણી હકીકત સાંભળી તરતજ આગેવાનોને નિમંત્રણ આપી રીતરીવાજ સામાન્ય કરવાનો ખરડો તૈયાર કરાવ્યો–પણ યાર, એ બડો પાકો ખરો; સોજીત્રા સંભા સાથનું અંકલેશ્વરનું જોડાણ થયલું હોવાથી સોજીત્રામાં પંચ મળે છે તે વખતેજ વ્યવસ્થાપક કમીટીની બેટક રાખે છે. એની આંતરિક વૃત્તિ તો સોજીત્રા સાથ આપે તોજ બીજા પંચ સાથે ભળવાની છે.

સાહિત્યચંદ્ર—એની આડખીલી તો છેજ. પણ દરેક પંચના આગેવાનોને સાથ લઈ ધીમે ધીમે પ્રાંતિક સભાના ઉદ્દેશ બર લાવવા એઓ આગ્રહી તો છેજ.

ઉત્સુકદાસ—અરે, એ મેવાડા ભાઇઓ કંઇ કરવાના નથી. જોયુંને સબજેકટ કમીટીમાં ! પેલા કાકા નાની ઉમરની કન્યાના વિવાહ જોડવા માટે કેટલા આગ્રહી હતા ? તેવા આગેવાનો હોય ત્યાં સુધારા તો ગોકળ ગાય. માફકજ ચાલે તો !

ગંભીરમલ—ભાઇ, તમો એ કાકાને પુરા ઓળખતા નથી. કાકા જમાનો સારી રીતે જાણે છે. અમદાવાદ બોર્ડીંગના દરેક મેળાવડામાં આવતા અને સુધારામાં પણ આગળજ એને સમજવા. પણ આ ક્રાંતિલાલ જેવા ખોટી ક્રાંતિ કરે તે એમને પસંદ નથી તેથીજ સાવધાનીથી ડગલાં ભરે છે. સમજ્યા કેની?

ક્રાંતિલાલ—ગંભીરમલ તો રેતીમાંએ તેલ જુએ છે, પણ જુઓ, મુંબઇમાં પરિષદ, શ્વે. જૈન યુવક સંઘ અને શ્વેતાંબર જૈન કોન્ફરંસ મળી તે બન્નેમાં કેટલા આગળ પડતા સુધારા થયા? જુવાનોના જોર આગળ વૃદ્ધોને નમવું પડવાનું છે. એમ કહો કે દિ૦ જૈન યુવક ઢીલા છે એટલુંજ શરમાવાનું છે.

ગંભીરમલ—શ્વેતાંબર જૈન યુવક સંઘે તો ફરજયાત વૈધવ્યની વિરૂદ્ધમાં પણ ઠરાવ કર્યો છે. તેઓમાં મુનિ આર્જીકા થાય છે. આપણને દેશ અને ધર્મના સેવક જોઇએ છે તો વિધવા વિવાહના પ્રચારના કાર્ય કરવાના છેજ નહિં એટલે બાળ લગ્ન વૃદ્ધ વિવાહ અટકાવી વિધવા થતી અટકાવવી અને થાય તો તેને માટે આશ્રમો પાઠશાળા ખોલી વીતરાગ ભાવથી સેવક સેવિકા બનાવી તેઓ માટે સમાજની ઉન્નતિ માટેનો ઉદ્દેશ રાખી પ્રાંતિક સભા સ્થાપી છે. પછી શું આગેવાનો સાથ નહીં આપે? અરે જો જે આગેવાનો જરૂર સાથ આપશેજ અને સોજીત્રા સંભા તો બહુ ઉદાર અને સંપમાં જંપ માનનાર હોવાથી પરિષદના બધાએ ઠરાવને અનુમોદન આપશેજ.

સાહિત્યચંદ્ર—એઓમાં કેળવાયલા આગેવાન આગળ ધપશે અને તેઓ આંતરિક પ્રચાર સારો કરશે. એટલે મને પણ આશા તો રહે છે, પણ મને પેલા નાના પેટા ગોળ, કહેવાતા એકડીયા માટે શંકા છે. તેઓએ તો ઠરાવજ પાકો રાખ્યો છે કે પોતાના પેટા ગોળમાંથી બહાર કન્યા આપવીજ નહિં.

ગંભીરમલ—ના, ના; એમ નથી, એઓ પોતાનામાં કન્યા આપે તેને આપવી એવો ઠરાવ છે.

ક્રાંતિલાલ—જાઓ, જાઓ, પેલા અંકલેશ્વરવાળાએ એમનામાં કન્યા આપી તોએ ત્યાં કયાં કન્યા આપે છે? એઓ સ્વાર્થી તો છે?

ગંભીરમલ—એમ તો બીજા પણ કયાં આપે છે? કન્યાનીજ ખોટ હોય પછી બહાર તે કયાંથી આપે!

ક્રાંતિલાલ—કન્યાની ખોટ હોય તો તો જરૂર બીજા પંચો સાથે જોડાશે. કારણ બીજા પંચમાં જોડાવાથી તેમને લાભ થશે. જુઓની રાંયકવાળા ભાઇની કન્યા એઓમાં ગઇ કેની?

સાહિત્યચંદ્ર—અરે એ તો લેનેમેં લાલા છે. કોઇને એ દે એમ નથી. પેલા સરૈયા તે વગામાં ફર્યા હતા અને તેમના આંતરિક નિર્ણય જાણી લાવ્યા હતા.

ક્રાંતિલાલ—સરૈયાની વાત જવા દોને. યુવાનો તો કંઇક કરે એમ છે. એટલે જ્યારે ત્યારે બધું ઠેકાણે આવશે. જુઓને લગ્નગાળામાં પંચ મળી શું કરે છે?

ઉત્સુકદાસ—પંચમાં શું જોવાનું છે? નનાનપુરનું દશા હુમડ ભાઇઓનું પંચ નહોતું જોયું? અમુક આગેવાનોએ કુંડાળું વળી બેસી ખાનગી વિચાર કર્યો કે તે પંચના ઠરાવને નામે બહાર પડે. આજુબાજુનાંને સંભળાય પણ નહીં, એ પંચમાંથી પાછા ફરતાં એક દશા હુમડ ભાઇજ એમ બોલતા હતા કે પાંચેક વર્ષપર સોનાસણમાં ગોળ બહાર કન્યા આપવાની બંધીનો ઠરાવ કર્યો અને બીજી પંચો સાથે મળવાને અડધા ઉપરના દશા હુમડો તો આજે પણ તૈયાર છે, પણ આગેવાનોની રમતો આગળ સંભળાય છેજ કોનું?

કાંતિલાલ—એતો સંભળાશે. જરા જુવાનોનું જોર વધવા દ્યોને ? એ પંચ ફંચ કંઇ રહેવાના નથી.

ગંભીરમલ—શું પંચ રહેવાના નથી ? અરે પંચનું તેજ કેટલું છે તે જાણો છો ? સોજીત્રા સંભામાં કે જ્યાં જોઇએ ત્યાં પંચના ઠરાવ વગર કોઇ સામાજીક સુધારાની વાત પણ કરે છે ?

કાંતિલાલ—કરી વાત ! કંઇ જુવાનો ચઢીને બોલતા થયા છે. અને વખત એવો આવશે કે પંચની જરૂરજ નહિં પડે.

ગંભીરમલ—જરૂરજ નહિ પડે, એ તો સાવ મુર્ખાઈ છે. ચોરીચકારી, મારફાડ, આદિ ગુના અટકાવવા સરકાર જેવી સંસ્થાની જરૂર પડે છે. રસ્તા, નાળા, કુવા આદિ બંધાવવા લોકલ બોર્ડ કે મ્યુનીસીપાલીટી જેવી સંસ્થાની જરૂર પડે છે. આર્થિક સ્થિતિ સુધારવા ઉદ્યોગીક મંડળો, સહકારી મંડળીઓ વીગેરે સંસ્થાની જરૂર છે. કેળવણી માટે શાળા બોર્ડ જેવી સંસ્થાની જરૂર તેમજ પ્રજામાં ધર્મ, ઉચ્ચ ચારિત્ર, વર કન્યાની આપ લેની મર્યાદા આદિ સામાજીક ઉન્નતિ માટે પંચોની જરૂર પડવાનીજ.

કાંતિલાલ—અરે રશીયામાં આખી પ્રજામાં પંચ જેવી વ્યવસ્થા નથી ત્યાં શું વર કન્યાની આપ લે, ચારિત્ર ધર્મ આદિ પળાતાં નથી ?

ગંભીરમલ—રશીયા અને હિંદુસ્થાન એમાં આસ્માન જમીનનો ફેર છે. રશીયા આર્થિક ઉન્નતિજ માંગે છે; અને હિન્દુસ્થાન આત્માની ઉન્નતિ માંગે છે. રશીયામાં તો જે કોઇ સ્ત્રી પુરૂષને જ્યારે ફાવે ત્યારે રજીસ્ટ્રેશનથી જોડાવાનું અગર છુટાછેડા કરવાનું છે તેવું આપણામાં કરવું છે ? હિન્દુસ્થાનના દરેક ધર્મના સામાજીક બંધારણ એવા છે કે પાછળની સ્થિતિમાં સ્ત્રી પુરૂષ ત્યાગ ગ્રહણ કરી આત્મોન્નતિ કરી શકે—સેવા કરી શકે.

સાહિત્યચંદ્ર—ત્યાગમાર્ગ રશીયામાં શું નથી ? બધાએ કામ કરે અને પોતાના જીવ જેટલું મેળવે તે ઉપરાંતની કમાણી પોતાની સરકાર માટે રહે. એક સરકારના હાથ નીચે એક કુટુંબવત્ આખી પ્રજા એ શું ખોટું છે ?

ગંભીરમલ—એવી વ્યવસ્થામાં દરેક કેટલા પરતંત્ર છે તે જરા અનુભવથી જાણી શકો. અને આપણી સામાજીક વ્યવસ્થામાં વ્યકિતગત સ્વાતંત્ર્ય કેટલું બધું છે તે પણ તમે અનુભવથી જોઇ શકો એમ છે. હિન્દુસ્થાનમાં સંયોગો જુદા છે તે તો જુદું.

કાંતિલાલ—એ વાત ઠીક છે, પણ આપણા સામાજીક બંધારણમાં આ પંચ જેવા વાડાની શી જરૂર છે ?

ગંભીરમલ—સરકાર પ્રાંત, જીલ્લા, તાલુકા, ગામડા એમ વિભાગ પાડી વ્યવસ્થા કરી શકે છે. લોકલ બોર્ડ, મ્યુનીસિપાલીટી, સહકારી મંડળી આદિ દરેક સંસ્થાને હદ હોય છે. મર્યાદા સિવાય વ્યવસ્થા અનુકુળ ચાલીજ શકે નહિં. પંચની પણ મર્યાદા નહિં હોય તો ચાલેજ નહિં. બાર ગાઉએ બોલી બદલાય, સંસ્કાર બદલાય, રહેણી કરણી બદલાય તો આપણે ગુજરાત પ્રાંત જેટલી મર્યાદા રાખીએ છીએ તે કઇ ઓછી હદ નથી ! રેલ્વે ને તારના ઝડપી સાધનોના જમાનામાં ભાષા, સંસ્કાર, રહેણી, કરણી આદિ સરખા એટલા મોટા વિસ્તારમાં ઠીક થાય અને સમાજની ઉન્નતિ પણ ઠીક થાય.

કાંતિલાલ—ત્યારે શું આ પુરાણા પંચનીજ વ્યવસ્થા ચાલુ રાખવા માંગો છો ?

ગંભીરમલ—ના, ના. અત્યારે જે રીતે પંચ ચાલે છે તે રીતે તો ભારે વખત અને પૈસાનો ભોગ આપવો પડે છે અને તે છતાં એકાદ બે કામ થાય અગર નહિં થાય છતાં પંચ વીખરાઇ જાય છે. ધારાસભા, મ્યુનીસીપાલીટી, પોસ્ટ, સહકારી મંડળ કે વેપારી મંડળ આદિના સભ્ય હાલના પંચની માફક બેસીને કામ કરત તો એકે સંસ્થા ચાલી શકત નહિં. કાગળ પણ

વખતસર લોકોને પહોંચત નહિં અને આગગાડી પણ નિયમિત સ્ટેશને જોવામાં આવત નહીં. ખરી રીતે આપણું જીવન બધું અવ્યવસ્થિત હોત. પણ એ સંસ્થાના સભ્યની કમીટીમાં રજુ કરવા લાયક કામ વારાફરતી રજુ થાય છે હાથ પર લેવાયલાં કામપર વારાફરતી બોલાય છે. એક વાતમાં બીજી વાત કોઇ બોલે તેને પ્રમુખ બોલતાં અટકાવે છે. તે કામ પર ચર્ચા પુરી થાય એટલે દરખાસ્ત રજુ થાય છે. તે દરખાસ્ત શબ્દોની ફેરબદલી કરવી હોય અગર તો તે દરખાસ્તને બદલે નવીજ દરખાસ્ત બીજા કોઇને મુકવી હોય તો તે લેખી રજુ કરે છે. તે પર ટુંક ચર્ચા કરી મત લેવાય છે. અને જે દરખાસ્ત મંજુર થાય તેનો અમલ બધાને કરવાનો હોય છે. આમ થાય તો સમય અને પૈસાની બરબાદી થતી અટકે.

સાહિત્યચંદ્ર—અરે, નનાનપુરના ચોખલના પંચમાં તેનું બંધારણ બધુંએ કાયમ રાખીનેજ આવા સુધારા કરવાની દરખાસ્ત મહામંત્રી છોટાલાલે પંચમાં મુકી; ત્યારે એક આગેવાને જવાબ દીધો કે આ તો બધા સભાના નિયમ છે એમ કહી ઉડાવી દીધા. લોકો અજ્ઞાન અને આગેવાનો મોટાઇ જતી રહે તેની બ્હીકમાં ગમે તેમ ઉત્તર આપે છે.

શાંતિલાલ—અરે હું ત્યાં હોત તો તરતજ ના કહેત કે પંચ એ સભા છે કે મેળો ! અત્યારનું પંચ એ તો માછલીપીઠ જેવું નથી લાગતું ?

સાહિત્યચંદ્ર—અરે એક આગેવાન તો બોલ્યા હતા કે બધા પંચના માણસને ગમે ત્યારે બોલવાનો હક જતો રહે. લેખીત દરખાસ્ત લાવવી અને તે ઠરાવ પરજ બોલવું; એ બધી વાત કરવા જઇએ તો એક બીજાના ઉભરા ક્યારે નિકળે ?

ગંભીરમલ—ઉભરા કાઢવા હોય તે વિષયની પ્રાથમિક ચર્ચા વખતે કાઢી શકે છે, પણ ગમે તે ગમે ત્યારે ગમે તેવું બોલવાની સ્વતંત્રતા ઇચ્છે તેણે તો કોઇ સભા કે સમાજની વચમાં રહેવુંજ નહિં જોઇએ. સામાજીક પરતંત્રતા અને અંગત વ્યક્તિ સ્વાતંત્ર્ય એ સાચો નિયમ છે. જો કોઇને સમાજમાં રહેવું હોય તે તે સમાજના વધુમતે જે ઠરાવ થાય તે પ્રમાણે સર્વેએ વર્તન કરવું જોઇએ. અને અંગત પોતાના કામ માટે સ્વતંત્રતા હોઇ શકે છે. પંચમાં ગમે તેમ ગમે ત્યારે ગમે તે બોલે છે તેથીજ પંચમાં કંઇ કામ થતું નથી. નનાનપુરમાં સાતસો માણસો મલ્યા બે ત્રણ હજાર રૂપીયા બધાના મળીને ખર્ચાયા. કેટલાએ દીવસ ભાંગ્યા તોએ કામમાં જોઇએ તો બે પાંચના દંડ કરી ઉઠી ગયા. હા. તારંગા માટેનો ફાળો ઠીક આપ્યો. જો સભાના નિયમનનો ઠરાવ મંજુર થયો હોત તો અનેક ઠરાવો પોતાના સમાજના ઉન્નતિના કરી શકત.

સાહિત્યચંદ્ર—હજુ પ્રચારની બહુ જરૂર છે. જેમ પ્રચાર થશે તેમ લોક કેળવાશે અને પંચોએ સભાની માફકજ કામ કરવું પડશે. જુઓની પારસી કોમના પંચ ? કેટલાક કેળવાયલા હિંદુના પંચ બરોબર સભાના નિયમથી ચાલે છે. ને જલ્દીથી કામ આટોપી લે છે. આપણા પંચમાં તો મત લેવાની વાત કરવા જઇએ કે તડ પડવાની વાતની શંકા ઉભી કરે છે.

ગંભીરમલ—મત ગણત્રી વગર એકે સંસ્થા, સભા કે પંચ ચાલી શકે નહીં. સર્વાનુમતેજ કરવું એવું કહેનારનેજ ખ્યાલ નથી કે મગજે મગજે જુદી મતિ હોય છે. જો બધાને એકજ સરખી મતિ-બુદ્ધિ હોત તો આ સંસારી રેંટમાળજ ન હોત. એકસરખા મેંઢાને ઘણાએ ભરવાડ દોરી શકે છે, પણ જમાનો કેળવણીનો છે. કેળવાયલા કદીએ મેંઢા માફક ચાલવાના નથી. એટલે આજે નહીં તો આગળ ઉપર દરેક પંચે મતગણત્રીની પદ્ધતિ સ્વીકાર્યે છુટકો છે.

સાહિત્યચંદ્ર—ચોખલાના પંચમાં મતગણત્રીની પદ્ધતિ સ્વીકારાયલી છે. ત્યાં તો કમીટી પણ છે. બીજી કેટલીક પંચો પણ તે સ્વીકારે છે. આ સોજીત્રા સંભામાં તો મત

ગણત્રની વાત થાય એમ નથી. એઓ તો એમ સમજે છે કે કોઇ દરખાસ્તમાં જરા ગુંચવાડો પડ્યો કે પંચ વિખરાઇ જાય. પછી વર્ષે બે વર્ષે જ્યારે તે વાત હાથ પર લેવાય. અને મત ગણવાની વાત આવે તો તે વાત પડતી મુકાય. એ રીતે કરવામાં તડ પડે નહિં એમ તેઓ માને છે. તેઓ માને છે કે સમાજમાં કંઇ સત્તા નહિં અને લોક પક્ષાપક્ષી તો કરેજ એટલે મતભેદની વાતજ શું કરવા કરીએ ?

ગંભીરમલ—બંધારણ એજ સત્તા છે. સમાજનું બંધારણ જેમ વધુ સારૂ તેમ વધુ સત્તા તે સમાજને હોય. આગેવાન બંધારણ બરોબર નહિ ઘડે પછી સત્તા શી રહે ? સમાજના બધા માણસને પક્ષપાતી ગણવામાં મોટું અપમાન થાય છે કેળવાયલો વર્ગ—અરે કેટલાક જુના અનુભવિઓ પક્ષપાતિ કામ નહિં કરવા ઇન્તેજાર હોય છે. પંચના કેટલાક માણસમાં પક્ષપાત હોય તેઓ પણ બહારથી નિષ્પક્ષપાતિ પોતાને ઠરાવવા માંગે છે. કાળો ચાંલ્લો કોઇને ગમતો નથી. પકા બંધારણ વગર બધું એ ખોટું છે. કાચા મકાન તો પવન પાણીથી નાશ થાયજ. પણ પકા મકાન ગમે તેવા વાવાઝોડા સામે ટક્કર ઝીલે છે તેમ પાકા બંધારણ ગમે તેવા પક્ષપાત સામે ટકી શકે છે.

સાહિત્યચંદ્ર—ખરી હકીકત તો આગેવાનોને આગેવાની જતી રહેવાનો ભય છે.

ગંભીરમલ—એ ભય ખોટો છે. કામ કરંદો આગેવાન જરૂર આગળજ આવનાર છે. ભોગ દેનારને કોણ છોડે ? ભોગે ઉરકી આગે, મગે ઉસકે ભાગે જેવું છે.

કાંતિલાલ—હવે જોઇશું, સોજીત્રામાં લગ્નગાળો, પંચ, મુ. પ્રાં. સ. સ. વ્યવસ્થાપક કમીટીની બેઠક વીગેરે અગત્યના પ્રસંગ આવે છે, શું બને છે તે જોઇશું. ચાલો આજે તો જઇએ.

"જૈન હિતૈષી" ના જયજિનેંદ્ર.

લગ્નના સામાન્ય—
—રીતરિવાજનો ખરડો.

સં. ૧૯૯૦ ના પ્રથમ વૈશાખ સુદી ૨ને વાર રવી તા ૧૫-૪-૩૪ ને રોજ અંકલેશ્વરમાં ગુજરાતના દિગંબર જૈનોના પંચ કે વ્યક્તિ તરફથી આગેવાનોને બોલાવી જુદી જુદી પંચોની વ્યક્તિઓએ છોકરા છોકરીઓના વિવાહ સંબંધ જોડતાં સામાન્ય રીત રિવાજ શું રાખવો તેનો કાચો ખરડો તૈયાર કરી મહામંત્રીએ દિગંબર જૈનપત્રમાં જાહેર ખબર આપી હતી તે આધારે સુરત, આમોદ, અંકલેશ્વરના કેટલાક મેવાડા, વીસાહુમડ અને નરસિંહપરા જ્ઞાતિના પંચના પ્રતિનિધિઓ એકત્ર થયા હતા અને નીચે મુજબ કામકાજ થયું હતું:-

ઠરાવ ૧:—આજની સભાના પ્રમુખ રા. રા. છોટાલાલ ઘેલાભાઇ ગાંધીને નીમવા.

ઠરાવ ૨:—ગુજરાત દિગંબર જૈનોના તમામ પંચોના આગેવાન સદ્‌ગૃહસ્થો હાજર હોત એ ખુશી થવા જેવું હતું ભવિષ્યમાં તમામ પંચોના ગૃહસ્થો આ દીશામાં રસપૂર્વક ભાગ લે અને ઉન્નતીના માર્ગ મોકળા કરે. દરખાસ્ત:-છગનલાલ ઉત્તમચંદ સરૈયા ટેકો:-માસ્તર ભુરાભાઇ મુળચંદ.

ઠરાવ ૩:—ગુજરાતના દિગંબર જૈનોની પેટા જ્ઞાતિઓમા પરસ્પર વિવાહ સંબંધ જોડાય તેવે પ્રસંગે પલ્લાની રકમ ઓછામાં ઓછી રૂ. ૩૦૧) અને વધારેમાં વધારે રૂ. ૧૦૦૧) રાખવી. તેમજ કન્યના કપડાં ઓછામા ઓછા રૂ ૫૧,થી ૨૦૧) સુધીના કરવા.

દરખાસ્તઃ-રા. ખીમચંદ સવાઇચંદ ટેકો:-હીરાલાલ પ્રેમચંદ સંઘવી.

ઠરાવ ૪:—લગ્નની ક્રીયા જૈન વિધીથી કરવી. અને વિવાહથી તે લગ્નસુંધી સુધીના રીતરિવાજો વરકન્યાવાલાએ સમજીને કરવા.

દરખાસ્ત કરનારઃ—મી. ઇશ્વરભાઇ કસ્નદાસ કાપડિયા ટેકો:—મી. નાગરદાસ નરોતમદાસ

ઠરાવ ૫:—લગ્ન પ્રસંગે પહેરામણી કરવી, વરઘોડીઆ, પંચોલું, ફટાણાં ગીતો આદિ રિવાજોથી વરકન્યાના પક્ષો વચ્ચે તકરાર થઇ જાય છે. આવા રિવાજો એવી રીતથી કરવા કે ઉભય પક્ષોમાં તકરાર થાય નહિ આ રિવાજો શાસ્ત્રથી ન થતા હોય તો બહેતર છે કે આવા રિવાજો શાસ્ત્ર-પ્રમાણ ન હોવાથી તે દૂર કરવા દરખાસ્તઃ- છગનલાલ ઉત્તમચંદ સુરૈયા ટેકો-ખીમચંદ સવઇચંદ.

ઠરાવ નં. ૬:—આ ઠરાવોનો ખરડો મહામંત્રીએ યોગ્ય રચના વ્યવસ્થાપક કમીટી બોલાવી જેમ બને તેમ જલદી રજુ કરવો

દરખાસ્તઃ—મુળચંદ કશનદાસ કાપડિઆ ટેકોઃ— નાગરદાસ નરોતમદાસ સંઘવી.

બધા ઠરાવો સર્વાનુમતે મંજુર થયા હતા અને પ્રમુખશ્રીનો આભાર માનવામાં આવ્યો હતો.

ભારત (દાહોદ) પત્રના ૧૩–૫–૩૪ ના અંકમાં એક જૈન યુવકનું ચર્ચાપત્ર છપાયું છે કે એક ભાવનગરના જૈન શેઠ ૪૦ વર્ષ ઉપરની ઉમરે અમદાવાદના અમૃતલાલની ૧૨ ૧૩ વર્ષની પુત્રી સાથે લગ્ન કરનાર છે જેથી શારદા એકટનો તથા ગુજરાત પ્રાં. સભાના ઠરાવનો ભંગ થાય છે. તેનો ખુલાસો મહામંત્રીએ કરવો જોઇએ વગેરે' આથી મહામંત્રી છોટાલાલ ગાંધી ખુલાસો કરે છે કે ભાવનગરના શેઠની ઉમર નિશ્ચિત ૩૯ વર્ષની છે ને કન્યાની ઉમર ૧૬ વર્ષથી વધુ છે એટલે અંતર ૨૪ વર્ષની અંદર હોવાથી ઠરાવનો ભંગ કોઇ રીતે થતો નથી. ચર્ચાપત્રીએ દિગમ્બર જૈનમાંજ એ ચર્ચાપત્ર મોકલવું હતું વગેરે.

ચતુરમતીબાઇ—દાહોદવાલાને ખુલ્લો પત્ર દાહોદના 'ભારત' નામે પત્રમાં પ્રકટ થયો છે તેમાં જણાવ્યું છે કે એ બાઇએ પોતાના પાવાગઢ મંદિર માટે નકામી ટીપ નહીં કરવી જોઇએ પણ તેરાપંથી પંચ તરફથી મલતી ૪૦૫) વાર્ષિકની આવકમાંથી દાહોદની પાઠશાળાને મદદ કરવી જોઇએ

ખડકની ૧૦ પાઠશાળાઓની પરીક્ષા—ગયા માસમાં લેવાઇ હતી જેનો રિપોર્ટ મોડાસિયા ફતેચંદભાઇ તારાચંદ મહામંત્રી તરફથી મળ્યો છે જેનો સારાંશ નીચે મુજબ છે. તા. ૧૦–૪–૩૪ હરીચંદ વસ્તા કન્યાશાળા **વિજયનગર** માં ૨૩ માંથી ૨૩ પાસ ને રૂા. ૧૭ા ના પુસ્તકો ને કપડાંનું ઇનામ વેંચ્યું. તા, ૧૩ દોલાકા કસ્તુરચંદ અમથા **નવાગામ** પાઠશાળામાં ૩૬ માંથી ૩૪ પાસ ને રૂ. ૪૬ાા નું ઇનામ વેંચ્યું. તા. ૧૪ ગાંધી તલકચંદ મોતીચંદ કન્યાશાળા **નવાગામ** માં ૧૫ માંથી ૧૧ પાસ ને રૂા. ૧૭ાા નું ઇનામ વેંચ્યું. તા. ૧૬ તલકચંદ જેઠાભાઇ તાસવાલા પાઠશાળા **બાવલવાડામાં** ૩૮ માંથી ૩૪ પાસ ને રૂા ૪૬ાાનું ઇનામ વેંચ્યું. તા. ૧૯ ખેમચંદ લાલજી પાઠશાળા ભુધરમાં ૨૯ માંથી ૨૭ પાસ ને ૩૭) નું ઇનામ વેંચ્યુ. તા. ૨૧ કેવલદાસ રાવજી પાઠશાળા **ભાણદા** માં ૨૬ માંથી ૨૩ પાસ ને રૂ. ૨૪ાા નું ઇનામ વેંચ્યું તા. ૨૩ શાંતિસાગર પાઠશાળા **વીંછીવાડામાં** ૫૧ માંથી ૪૫ પાસ ને ૪૦)નું ઇનામ વેંચ્યું. તા. ૨૭ શેઠ લલ્લુભાઇ લક્ષ્મીચંદ પાઠશાળા **છાણીમાં** ૪૧ માંથી ૩૮ પાસ ને રૂા. ૫૮ા નું ઇનામ વેંચ્યું. તા. ૩૦ હરીચંદ વસ્તા પાઠશાળા **વિજયનગર** માં ૨૬ માંથી ૨૬ પાસ ને ૧૦) નું ઇનામ વેંચ્યું. આ સાલ પ્રથમ નંબરે છાણી પાઠશાળા ને છેલ્લે નંબરે નવાગામ કન્યાશાળા આવી છે. ઇનામમાં પુસ્તકો મુનિશ્રી શાંતિસાગરજીના ઉપદેશથી સ્થપાયેલ ઇનામ ફંડના વ્યાજમાંથી અપાય છે તેમજ કપડાં દરેક ગામના ઉત્સાહી ભાઇઓની સહાયતાથી અપાય છે. સંસ્થાઓ ને સ્થાપક તેમજ તીર્થ ક્ષેત્ર કમેટી તરફથી પણ મદદ મળે છે તેમજ શેઠ લલુભાઈ લક્ષ્મીચંદ ચોકસીની દેખરેખ સારી રહે છે, એ બધા ધન્યવાદને પાત્ર છે.

શ્રાવિકાશ્રમ સોજીત્રા નો વાર્ષિક મેળાવડો બીજા વૈશાખ વદ ૨ તા. ૩૦ મેની બપોરે થશે.

શ્રીઆમેવાડાના મોટી વાડી જે સોજીત્રામાં થાય છે તેમાં જે ભાઈઓએ નાણાં ભર્યાં હોય ને બાકી હોય તો તે નાણાં ભરવા વહીવટ કરનાર શેઠ ભગવાનદાસ ઝવેરદાસ જણાવે છે.

ઉંજેડિયા—ની પાઠશાળાની પરીક્ષા લઈને શા. ચુનીલાલ મુળચંદ પેથાપુરે સંતોષ પ્રકટ કર્યો છે. તથા શેઠ નેમચંદ ઉગરચંદે ૧૦) ખરચી જમણ આપ્યું હતું.

સ્વર્ગવાસ—ભીલોડા નિવાસી સરળ સ્વભાવી, ધર્મપ્રેમી, મંદકષાયી શેઠ તલકચંદ કુબેરદાસનો ૬૬ વર્ષની આયુમાં પ્ર. વૈશાખ સુદ ૩ ને દિને સ્વર્ગવાસ થયો છે. બ્ર. ફતેહસાગરજી પાસે હતા ને આપનું સમાધિ મરણ કરાવ્યું હતું. અંત સમયે સમાધિમરણ પુસ્તક વંચ્યું હતું ને ૧૦૦૧) દાન કરી ગયા છે જેનો ઉપયોગ આશા છે કે બ્ર. ફતેહસાગરજીની સુચના પ્રમાણે થશેજ.

મદદની જરૂર—વિજયનગરમાં પાઠશાળા ને કન્યાશાળા ત્રણ વર્ષથી ચાલે છે. ૬૦–૭૦ વિદ્યાર્થી લાભ લે છે પણ મકાનની અગવડ હોવાથી નવું મકાન બંધાય છે તેમાં ૧૦૦૧) ડુંગરજી નાનચંદ (કડિયાદરા) ના સ્મરણાર્થે મળ્યા છે. ને ૨૦૦૦) ની જરૂર છે જે માટે અત્રેથી દાદમચંદ ન્યાલચંદને ટીપ લઈને તા. ૯–૫–૩૮થી મોકલ્યા છે તેમને યથાશક્તિ રકમ ભરી આપવા વિનંતી છે. મોડાસિયા ફતેહચંદભાઈ મહામંત્રી.

ગુજરાત દિ. જૈન પ્રાં. સભાની વ્યવસ્થાપક કમેટી સોજીત્રામાં—મહામંત્રીને ઉતારે બીજા વૈશાખ વદ ૨ તા. ૩૦ મેની રાત્રે મળશે તેમાં નીચેના કામો વિચાર માટે રજુ થશે.

૧–પાચ માસનો રિપોર્ટ, ૨–ઝઘડા નિકાલ કમીટીનો રિપોર્ટ, ૩–પંચ બંધારણ કમીટીનો રિપોર્ટ, ૪–પેટા જ્ઞાતિઓમાં લગ્નના રીત રિવાજનો ખરડો, ૫–આવેલ વસ્તીપત્રકનું તારણ, ૬–શ્રાવિકાશ્રમને ઉત્તેજન કેવી રીતે આપવું, ૭–ચોખલાના દશાહુમડ પંચ તેમજ બીજા પંચે સભાને વધાવી લીધી તે માટે ઉપકાર, ૮–દિગંબર જૈન સંબંધી રિપોર્ટ, ૯–સભાની આવતી બેઠક કયાં ને કયારે કરવી, ૧૦–બજેટ, ૧૧–પ્રમુખશ્રી જે રજુ કરે તે. આણંદ પેટલાદ થઈ વસો લાઈનમાં સોજીત્રાનું ખાસ સ્ટેશન છે. કમીટીના દરેક સભાસદને અવશ્ય પધારવા વિનંતિ છે.

અંકલેશ્વર તથા સુરતનો અંતર્જાતીય વિવાહ માટે સહકાર.

ગત પ્ર. વૈશાખ સુદ ૨ ને રવીવારે અંકલેશ્વરની વીસા મેવાડા પંચે નીચે મુજબ ઠરાવ કર્યો છે—સુરત વીસા હુમડ જ્ઞાતિના ભાઈ મુળચંદ કશનદાસ કાપડિઆ તથા ઇશ્વરલાલ કશનદાસ કાપડિઆ તેમજ નરસિંગપુરા જ્ઞાતિના ભાઈ છગનલાલ ઉત્તમચંદ સરૈયા. તથા શ્રી ખીમચંદ સવાઈચંદ તથા આમોદવાસી શ્રી નાગરદાસ નરોતમદાસ એ ભાઈઓએ પરસ્પર સંબંધ જોડાવાના વિચાર જાણવાને માટે અંકલેશ્વર વીસા મેવાડા પંચ એકત્રીત કરાવ્યું તે પરથી આ પંચ એવો અભિપ્રાય ધરાવે છે કે એ ભાઈઓની પંચો આપણી સાથે પરસ્પર સંબંધ જોડવા રાજી હોય તો આ પંચ પણ સંબંધ જોડવા રાજી છે. એજ પ્રમાણે સુરતના સંઘ નરસિંહપુરાનું પંચ પ્ર૦ વૈશાખ સુદ ૮ ને દિને મળ્યું હતું જેમાં નીચે મુજબ ઠરાવ થયો છે:—

અંકલેશ્વરના વીસા મેવાડા, સુરતના વીસા હુમડ અને મહુવા વ્યારા વગેરેના રાયકવાળ ભાઈઓમાં પરસ્પર સંબંધ જોડવા સુરતના પંચને યોગ્ય લાગે છે અને આપણા ગુજરાતના તમામ નરસિંહપુરા પંચમાં ઉપર મુજબ પરસ્પર સંબંધ જોડાય એ સુરતનું પંચ યોગ્ય માને છે અને તે પ્રમાણે આપણે એકત્ર થઈને તેમ કરવા ભલામણ કરે છે જેથી અપણા તમામ નરસિંહપુરા પંચોનો એકત્ર ચાલતો આવેલો સંબંધ ચાલુજ રહે છે.

"जैनविजय" प्रिन्टिंग प्रेस, खपाटिया चकला–सूरतमें मूलचन्द किसनदास कापड़ियाने मुद्रित किया और "दिगम्बर जैन" ऑफिस, चंदावाड़ी–सूरतसे उन्होंने ही प्रकट किया।

ગુજરાત દિગંબર જૈન પ્રાન્તિક સભાનું માસિકપત્ર—

— संपादक अने प्रकाशक —
मूलचन्द किसनदास कापड़िया—सूरत.

वर्ष २७	वीर संवत २४६० श्रावण.	अंक १०

विषय सूची.

— खास निवेदन —

दिगम्बर जैनना ग्राहको अने गु० दि० जैन प्रां० सभाना जे मेम्बरोने आ वर्षनी बे अंको वी० पी० मोकलवामा आवी हती अने जेमणे वी० पी० पाछा फेरव्या छे तेमने दिगम्बर जैन बंध करवामां आव्युं छे. लाईफ (जिंदगी सुधीना) मेम्बरोमां १०–१५ मेम्बरोना रुपया आवी गया छे अने बाकीना मेम्बरोए १०१) नी रकम हवे तो ताकीदे मोकली आपवी जोइए. —प्रकाशक।

उपहारोंके पोस्टेज सहित वार्षिक मूल्य २।) व समाज अंक मू० ।।।)

वर्ष २७ वां
अंक १०

दिगम्बर जैन

वीर सं० २४६०
श्रावण
सं० १९९०.

प्रासंगिकैः सामयिकैः सुवृत्तैर्लेखैर्विनोदैः कविता-कलाभिः।
सद्धर्मसाहित्यसमाजवृद्ध्यै "दिगम्बरो जैन" उदेत्यपूर्वः॥

पर्यूषण पर्व।

(रचयिता-श्री० डालचन्द्जी जैन-हिंडोरी)

कहो कैसा यह पर्व मनावें ?

त्याग बाह्य आडम्बर सारा,
धर्म ध्यान चित लावें।
या वस्त्राभूषणसे सज्जित,
हो निज भडक दिखावें॥
पड़ दुविधामें हम पछतावें॥ कहो०

दशलक्षण जो धर्म भाव हैं,
उनका गुण मन ध्यावें।
या पूरवकी मन मलिन्यता,
एकसा राग मचावें॥
करें क्या सज्जन शीघ्र बतावें॥ कहो०

रूखा सूखा लेवें भोजन,
कर व्रत काम नसावें।
या व्रत नाम रामकर भाई,
हलुआ पुड़ी उडावें॥
कहो अब कौन राह हम जावें॥ कहो०

पहिने शुद्ध स्वदेशी खादी,
मनको शुद्ध बनावें।
या विदेशका पहिने मखमल,
अपने अपन दिखावें॥
नाथको कैसे हम अपनावें॥ कहो०

तजे दिखावा सारा भाई,
हित आतम का ध्यावें।
दशलक्षणका धर्म पर्व यह,
क्षमा आदि दिखलावें॥
दिखावेंसे हम क्या सुख पावें॥ कहो०

हे भगवन् ?

बार बार करते निराश आप दीनबन्धु,
होता है हृदयमें अपार दुख भारी है।
सेवामें तुम्हारी यह जानी कौनसी है भूल,
सत्वर बताओ यह सेवक दुखारी है॥
तारक उधारक सदैव एक आप ही हो,
तुम तक विश्वमें ये दौड़ हो हमारी है।
करते कृपा न क्यों कौनसी है कमी तुम्हें,
यहां रोम रोममें तो वेदना प्रचारी है॥१॥

अटल अचल एक तेरी ही प्रतीत मुझे,
हुई है हृदयमें मृदु मूरति निहारके।
मंत्र मुग्ध सा ही उसे सतत निहारता हूं,
आशा भरी दृष्टि द्वारा सबको विसारके॥
हटते न नैन ये हटाये नाथ एक क्षण,
करो मुझे भाग्यवान मनमें उतारके।
आप तो कहाते दीनबन्धु नित्य निराबाध,
सार्थक करोगे कब हमको निहारके॥२॥

हम तो सदा ही आपके ही दीन बालक हैं,
चाहे अपनाओ अथवा न अपनाओ अब।
जायेंगे कभी भी नहीं आश्रय तुम्हारा छोड़,
चाहे तो रखाओ अथवा तो ठुकराओ अब॥
तेरी ही कृपा है भवसिन्धुमें आधार मुझे,
आप या हंसाओ मुझे अथवा रुलाओ अब।
मैंने निज नाव पतवार तुम्हें सौंप दिया,
पार या लगाओ चाहे उसको डुबाओ अब॥३॥

गुणभद्र जैन, राजचन्द्र आश्रम-अगास।

सम्पादकीय वक्तव्य।

पर्यूषण पर्व। प्रतिवर्ष अनेक पर्व आते हैं और चले जाते हैं। ज्ञानी, चतुर, विवेकी, लोग इस शुभ अवसरोंसे लाभ उठा लेते हैं और प्रमादीजन आंख बन्द किये हुये योंही पड़े रहते हैं। कुछ लोग ऐसे होते हैं कि वे स्वयं आंतरिक भावोंसे तो पर्वकी धार्मिक क्रियायें नहीं करते हैं, किन्तु लोकदिखावाके लिये सबके साथ शामिल होजाते हैं। और कुछ लोग ऐसे भी होते हैं कि जो बाह्य दिखावा तो नहीं करते हैं किन्तु आंतरिक शुद्धि किया करते हैं। इस प्रकार अपनी २ श्रद्धा भक्ति और ज्ञानके अनुसार लोग पर्व दिनोंका उपयोग किया करते हैं। **पर्यूषण पर्व, पर्वोंका राजा है।** इन दिनोंमें जैनियोंके धार्मिक भाव सहज ही बढ़ जाते हैं। तमाम स्त्री, पुरुष, बालक, बालिकायें सामायिक करते हैं स्वाध्याय करते हैं, पूजा करते हैं, शास्त्रोपदेश सुनते हैं और यथाशक्ति व्रत उपवास किया करते हैं। यदि सर्वसाधारण जनता पर्वके रहस्यको समझने समझानेका भी प्रयत्न करे तो विशेष कल्याण होसक्ता है।

* * *

दश धर्म। पर्यूषण पर्वके १० दिन उत्तम क्षमादि दश धर्मोंके नामसे माने जाते हैं। उन्हींके अनुसार प्राय: सर्वत्र दश धर्मोंका प्रतिदिन क्रमश: विवेचन होता है और तत्वार्थसूत्रके १० अध्यायोंका क्रमश: उपदेश होता है। वे १० धर्म इस प्रकार हैं—

(१) **क्षमा**- क्रोध कषायको काबूमें करना। क्षमाभाव धारण करना और अपनी आत्मशक्तिका विकसित करना। क्षमाधारी महापुरुष बदला लेनेकी शक्ति होनेपर भी दयापात्र व्यक्तिपर क्षमाभाव रखता है। इसका यह अर्थ नहीं है कि वह शत्रुओंके आक्रमण और अत्याचारियोंके अत्याचारोंको चुपचाप सहता रहता है! नहीं, वह समय आनेपर न्यायकी रक्षाके लिये युद्ध भी करता है। किंतु क्रोधको काबूमें रखकर आत्माको मलिन नहीं होने देता।

(२) **मार्दव**—मानकषायको जीतकर यह धर्म प्रगट होता है। धन, कुल, जाति और सत्ता आदिके मदमें मस्त होकर यह अज्ञानी जीव अपना तो अहित करता ही है, साथमें मानवजातिकी भी अवगणना करता है। इसपर अंकुश रखनेवाला मनुष्य मार्दव धर्मका पालक है।

(३) **आर्जव**—माया कषायको वशमें करनेसे यह धर्म प्रगट होता है। मायाचारसे लोग आत्मवंचना तो करते ही हैं साथ ही अपने जालमें फंसे हुये व्यक्तिका भी विनाश कर देते हैं। मायावी मनुष्य सबसे बड़ा पापी है। मायाका त्याग करके आर्जव धर्मका पालन करना चाहिये।

(४) **सत्य**—इस सुप्रसिद्ध धर्मसे आबालवृद्ध परिचित हैं। लोगोंकी धारणा है कि सत्यकी रक्षा करते हुये व्यापारिक और व्यावहारिक कार्य नहीं चल सक्ते, यह भ्रम है। अभी भी देखा जाता है कि जितनी दूकानपर एक ही भाव होता है उनके यहांका व्यापार अच्छा चलता है। दगाबाजी और लोभको संवरण करनेसे सत्यका पालन होसक्ता है।

(५) **शौच**-लोभके त्यागसे यह धर्म उदित होता है। लोभी मनुष्य कभी भी पवित्र नहीं होता। शौचका दूसरा अर्थ बाह्य शुद्धिसे भी है। मगर 'जैनधर्मने बाह्य शुद्धिके साथ ही विवेकसे काम लेनेका भी उपदेश दिया है। स्नान करके शरीर शुद्धि करो, मगर गंगा यमुनादिको पूज्य मानकर उनमें स्नान मत करो। अन्तरंग—बहिरंग शुद्धिका नाम शौच धर्म है।

(६) संयम-इन्द्रियोंको वशमें करने और इंद्रिय विषयोंसे लालसा घटानेसे संयम धर्मका पालन होता है। विषयोंके वशीभू कर यह प्राणी धन, धर्म, शरीर और सज्जन... भी खो बैठता है। संयमके पालनमें ही सच्च मनुष्यता है।

(७) तप-बाह्य औ अन्तरंगके भेदसे तप दो प्रकारका है। और उसके भी ६-६ भेद हैं। एकाशन, उपवास, आदि भी तप हैं। यथाशक्ति व्रतोपवास करके तपका अभ्यास करना चाहिये।

(८) त्याग-यों तो त्यागका अर्थ बड़ा विशाल है। फिर भी गृहस्थोंके यथा समय चतुर्विध दान करनेको भी त्याग कहते हैं। त्यागमें विवेक, समयकी मांग, पात्रका विचार और द्रव्यका विशेष उपयोग इन बातोंकी जानकारी रखना आवश्यक है।

(९) आकिंचन-परिग्रह पापका कारण है। अपना कुछ भी नहीं है, और अपन भी किसीके नहीं है, इस प्रकार संपूर्ण ममत्वका त्याग करके आकिंचन धर्मका अभ्यास किया जाता है।

(१०) ब्रह्मचर्य-स्वपरस्त्रीका मन, वचन, कायसे त्याग करके आत्मरत होजाना मुनियोंका ब्रह्मचर्य है या महापुरुषोंका धर्म है। किन्तु गृहस्थोंका ब्रह्मचर्य स्वस्त्री संतोष करके अन्य स्त्री मात्रसे रागभावका त्याग करनेसे होता है। विषयोंकी लालसा घटाये विना ब्रह्मचर्यका पालन करना अशक्य है।

* * *

हमारा कर्तव्य। इन दश धर्मोंके पालन करनेका सदा अभ्यास करते रहना गृहस्थोंका कर्तव्य है। मात्र इन १० दिनोंके लिये ही यह धर्म नहीं होने हैं किंतु यावज्जीवन इनके पालनमें उत्तरोत्तर वृद्धि करते रहना चाहिये। इन धर्मोंका उत्कर्ष करनेके लिये पर्यूषणपर्व निमित्त होता है। इन दिनोंमें हमें अपनी क्रियायें और आचार वास्तविक बनाना चाहिये। दिखावटको काम करके अंतरंगसे व्रतोंका पालन करना चाहिये। प्रतिदिन सामायिक, स्वाध्याय, पूजा, व्रत, उपवास और दान आदि करना आवश्यक है। मगर इन सबके साथ विवेकका होना विशेष आवश्यक है। आचार्योंने '**शक्तितस्त्याग तपसी**' सूत्र द्वारा यह स्पष्ट कह दिया है कि अपनी२ शक्तिके अनुसार **त्याग** और **तप** करना चाहिये। आत्माको क्लेशित करके मात्र वाहवाहीके लिये उपवास दि करना शुभकारी नहीं है। जो धर्मके रहस्यको जानता है वही जैन है। इन दिनोंमें हमें इसका प्रयत्न करना चाहिये। तथा यथाशक्ति व्रत व दान करना चाहिये।

* * *

દશ લાક્ષણી પર્વ. આપણો દશ લાક્ષણી પર્વ-પર્યુષણ પર્વ એકવાર ફરીથી ભાદરવા સુદી ૫ થી ૧૪ સુધી આવી પહોચ્યો છે જેમાં દરેક દેહરે અભિષેક, પંચ પૂજા, તત્વાર્થ-સહસ્ર નામ સૂત્ર વાંચન, સોલહ કારણ, દશ લક્ષણ, રત્નત્રય વગેરે પૂજન તથા પ્રભાવના નિયમ મુજબ થાય છે ને થશેજ પણ તે સાથે હવે થોડો વધુ સુધારો ગુજરાતમાં દરેક દહેરે થવાની ખાસ જરૂર છે ને તે એ છે કે પોપટજી અચરે અચરે રામની માફક સંસ્કૃત સૂત્રો વંચાય છે ને સ્ત્રી પુરૂષો તે સાંભળે છે પણ તેનો અર્થ ૧૦૦ માં ૧ પણ ભાગ્યેજ સમજતા હશે તો તેમ ન થતા હવે આ દશ દિવસોમાં દરરોજ ઓછામાં ઓછું તત્વાર્થ સૂત્રના એક એક અધ્યાયનો અર્થ તેમજ ઉત્તમ ક્ષમાદિ દશ ધર્મમાંના એક એક ધર્મનો વિસ્તારથી અર્થ વાંચી સંભળાવવો જોઇએ તેમજ દરેક પૂજા પણ બને ત્યાં સુધી ધીરેથી શુદ્ધતાથી ભાષામાં ભણવી જોઇએ કે જેથી તેનો ભાવ પૂજા ભણનાર ને સાંભળનાર બંનેના સમજવામાં

આવે. વળી આ દશ દિવસોમાં દરરોજ રાત્રે મંદિરમાં શાસ્ત્ર સભા થવીજ જોઇએ ને તેમાં એક એક ધર્મનું વર્ણન થઇ કોઇ કથા ગ્રન્થ વંચાવવોજ જોઇએ તેમજ ઉત્તમ ત્યાગ ધર્મને દિવસે યથાશક્તિ દાનની ટીપ પણ કરવી જોઇએ ને તે પછી ભાગે પડતી રીતે આપણી દિ. જૈન સંસ્થાઓને મોકલવી જોઇએ. દાન પુણ્ય કરવાનો ખરો અવસર-નિમિત્ત કારણ આજ છે માટે વર્ષભર કમાયા કર્યા પછી તેનો અમુકનો ભાગ દાન પુણ્યમાં દર વર્ષે ખર્ચવાનો સંકલ્પ દરેકે કરવોજ જોઇએ. વળી દરેક મંદિરોના હિસાબ ચૌદસ પહેલાં તૈયાર થઇ મંદિરોમાં લખાને ચોંટી દેવા જોઇએ કે જેથી હિસાબો વગેરે માટે અનંત ચતુર્દશી કલહ ચતુર્દશી ન થાય ને શાંતિથી ઉત્તમ ક્ષમાવણી થઇ શકે. જે જે સ્થળોએ મંદિરોમા પણ બે પક્ષ પડેલા છે તેથી અનેક પ્રકારના ઝઘડાઓ છે તેનો નીકાલ હવે તો આ પર્વમાં લાવી નાંખી ખરી ઉત્તમ ક્ષમાનું દિગ્દર્શન કરવું જોઇએ. કેટલાક ભાઇ બ્હેનો ૧૦-૧૦ ઉપવાસ કરે છે તેમણે એ ઉપવાસના ઉદ્યાપનમા માત્ર પુજા, વરઘોડા ને જમણુજ કરીને બેસી રહેવું ન જોઇએ પણ એ વ્રત નિમિત્તે સારૂં જ્ઞાન દાન ને વિદ્યાદાન કરવું જોઇએ. આ પર્વ ઉજવાયાના વિગતવાર સમાચાર મોકલવાને અમે દરેક સ્થળના ભાઇઓને આગ્રહ કરીએ છિયે.

* * *

તીર્થ રક્ષા ફંડ. આપણી ભારત૦ દિ૦ જૈન તીર્થક્ષેત્ર કમીટી હીરાબાગ મુંબઇ લગભગ ૨૦ વર્ષથી આપણાં તીર્થોની રક્ષા ઉત્તમ રીતે કરી રહી છે, તેના નીભાવ માટે કંઇ મોટું સ્થાયી ફંડ નથી તેથી દર વર્ષે દરેક ઘર દીઠ માત્ર ૧) તીર્થ રક્ષા ફંડનો લેવાય છે તે આ અનંત ચૌદશને દિને દરેક સ્થળે મંદિરોમા કે ઘેરઘેર જઇ બધા ભાઇઓ પાસેથી ઉઘરાવી લઇ તીર્થક્ષેત્ર કમીટીને જરૂર મોકલી આપવો જોઇએ. આ એકજ રૂપૈયો હજારો રૂ. એકઠા કરશે ને ધાર્યું કામ થઇ શકશે.

* * *

નરસિંહપુરા ભાઇઓ પ્રત્યે. ગુજરાતમાં અમારા નૃસિંહપરા ભાઇયો ન્યાતી ઝઘડાને લીધે હાલ બહુ વગોવાઇ રહ્યા છે, પણ હવે એ ઝઘડો પતી જવાના ભણકારા વાગી રહ્યા છે. તથા આંતર્જાતીય વિવાહ માટે આ ભાઇયો તૈયાર થઇ ચુકયા છે જે આ અંકમાં છપાયલા કલોલના સમાચારથી વાંચકોને જણાશેજ. અમને ખબર મળી છે ત્યાંસુધી નૃસિંહપરા ને રાયકવાળ પરસ્પર વિવાહ સંબંધ કરવા એકત્ર થઇ ચુકયા છે તેમાં નૃસિંહપુરાના અમુક ઘરો જે નાના પક્ષના નરસિંહપુરના પક્ષના છે તેઓ પ્રયત્ન કરવા છતાં પણ મળ્યા નહોતા એથી મળેલા ભાઇયોએ અમુક ઠરાવ ને ધારા ધોરણનો ખરડો તૈયાર કરી દીધો છે, ને ફરીથી પંચ આસો માસમા તારંગે કે કોઇ આમંત્રણ આપે તો તે સ્થળે મેળવવા નક્કી કર્યું છે પણ તે પછી વધુ સમાચાર કંઇ જણાતા નથી તો હવે અમો નૃસિંહપુરા ભાઇઓના સાતે ગામના ભાઇઓને નમ્રપણે સૂચના કરીશું કે આપ આ પર્યુષણ પર્વમાં ભેગા મળી ૭ ગામનું પંચ એક સ્થળે મળવાનું નક્કી કરશો ને તેના સમાચાર વખારીયા ચંદુલાલ તારાચદને કલોલ પહોંચાડશો કે જેથી સાતે ગામનું આખું પંચ એકત્ર થઇ લાબા વખતના પડેલા ઝઘડાનો નીકાલ લાવી શકે. હવે જો ઝઘડાનો નીકાલ નહી આવશે તો તેનું સ્વરૂપ કંઇ જુદુંજ આવશે એ બંને પક્ષોએ નક્કી સમજી લેવું જોઇએ.

ખડકની પાઠશાળાઓ—ને કાદરલાલ વીરચંદ (ભેટડા) તરફથી ૯) લગ્નની ખુશાલીમાં મળ્યા છે. છાણી પાઠશાળા માટે અધ્યાપકની જરૂર છે. પગાર ૨૦) માસિક. લખો—મોડાસીયા ફતેચંદભાઇ તારાચંદ-વિજયનગર.

भ्रमण-

प० पीताम्बरदासजी, उपदेशक, सेठ माणिकचन्द जुबेलीबाग ट्रष्टफण्ड।

(बाबत माह अगस्त)

छाणी-में दो पुरुष सभा व दो स्त्री सभा हुई जिसमें विविध विषयोंपर विवेचन किया। ८ पुरुषोंने स्वाध्याय करना व दस स्त्रियोंने नवकार जाप जपनेके वचन दिये व कुछ कालकी मर्यादा रख खाद्य पदार्थ वर्तनेकी प्रतिज्ञायें कीं।

बड़ोदरा-में नवीपोलकी धर्मशालामें ठहरा, कुछ इन्दौरके परीक्षार्थी छात्र भी ठहरे थे किन्तु व्यवस्था व ठहरनेकी सुविधा कुछ भी ठीक नहीं है। वर्षाके कारण पानी प्रायः सभी धर्मशालामें चूता हुवा दीख पड़ा। सुनते हैं कि जबलपुर व कलकत्ताके लोगोंने पायखाने बनवानेका चन्दा करीब दो वर्ष हुए दिया था उसके बनवानेकी कुछ भी व्यवस्था अबतक नहीं की गई।

पश्चिमके सभी सुप्रसिद्ध तीर्थक्षेत्रोंके रास्तेपरकी यह धर्मशाला है। सम्भवतः आमदनी करीब चारसौ वार्षिककी यात्रियों व भाड़ेसे बतलाई जाती है किन्तु कोई रसीद नहीं दीजाती। प्रबन्धक महाशयको व बड़ोदराकी पंचायतको चाहिये कि प्रतिवर्षकी गत आमदनीका हिसाब पत्रोंमें प्रगट करावें व यात्रियोंको रसीद देनेकी व्यवस्था करें।

पादरा-में एक शास्त्रोपदेश व दुपहरको तीन स्त्री सभा हुई। कई पढ़ी स्त्रियोंने स्वाध्याय करना व नवकार जाप जपने तथा मर्यादा रख खाद्य पदार्थ वर्तनेके बचन दिये।

खेदके साथ लिखना पड़ता है कि ४० गृहके बन्धुओंमें सिर्फ एक भाई शास्त्र स्वाध्याय करते पाया। तीन रात्रि मंदिरके गोठी द्वारा बुलावा कराये गये व युवक संघके नेताओंसे प्रेरणा की किंतु सिर्फ एक रातको ६ पुरुष उपस्थित हुए।

कुछ उपस्थितिमें मंदिरके प्रबंधककी त्रुटि भी शोचनीय है अर्थात् ठीक ८ बजे सांझको वे मंदिरके अहाते तकका ताला लगवा देते थे। जिससे कई लोग यह शिकायत करते हुए पाये कि कहां बैठें? और यह है भी ठीक कि समय विशेष उपस्थित होनेपर बैठनेका स्थान खुला रहे। प्रबन्धक महाशयसे कईबार प्रेरणा और प्रार्थना उपदेशकजीने की कि गर्भालयका ताला भले ही बन्द रहे किंतु शास्त्र सभाका स्थान जो खुला है ९. बजे तक खुला रक्खो। हम और आप बैठकर जो लोग आवेंगे उन्हें बैठाल चर्चा करेंगे किंतु कुछ सुनाई नहीं हुई व निराशा जनक प्रमादभरी बातें कर टाल टूल कर दी। मंदिर सर्वोत्तम व कुशल घरके प्रायः सभी २ लोग हैं किंतु इस तरह धार्मिक शिथिलता कोई शोभा नहीं देती। यहांके भाइयोंको पूर्ण रूपसे सावधान होना चाहिये।

भोज-में दो शास्त्रोपदेश हुए। ३ भाइयोंने स्वाध्याय करना व ९ श्राविकाओंने बालबोध जैन धर्म सीखनेके भाव प्रदर्शित किये। यहां चैत्यालय नहीं है। शास्त्रोपदेश प्रति सांझको भाई अम्बालालजी द्वारा होना चाहिये।

वडू-में नव दिन शास्त्रोपदेश व व्याख्यान सभा व स्त्री सभा होती रही। ३० भाइयोंने व १० पढ़ी लड़कियों व श्राविकाओंने स्वाध्याय करना स्वीकार व रात्रि भोजन त्यागे व खाद्य पदार्थ कुछ मर्यादा रख वर्तनेकी प्रतिज्ञायें कीं। रक्षाबन्धन व्रत कथा व व्याख्यान, विष्णुकुमार मुनिके अर्चन सहित पर्वकी स्मृति यथा विधि सभी भाई बहिनोंने मनाई।

भाई मूलचन्द रायचन्दजी व सेठ जयचन्द देवचन्दजीके प्रयत्नसे प्रतिसांझ शास्त्रोपदेश होना निश्चय हुवा। पंचायत २०) माहवारका कोई धर्म शिक्षक चाहती है, किसी समीपवर्ती भाईको प्रार्थना

मेज नियत होना चाहिये। यहांके मंदिरमें निर्माल्य द्रव्य कई माहका पड़ा हुवा माल्लूम हुवा उसकी यथाविधि जलप्रवाह (बादाम, लोंग, सुपारी, श्रीफल आदिकी) से यदि जन्तु न हुए हों तो, अथवा हवन आदिकर होना चाहिये तथा आगेको प्रतिदिन भस्म कराने व व्यास, गोठी आदिके इन्तजामसे होना चाहिये। (नोट—अच्छा तो यही है कि मंदिर साफ करनेवाला माली आदि ही वह द्रव्य लेलिया करे।)

इक्का—में दो शास्त्रोपदेश व दुपहरके एक स्त्रीसभा हुई। ८ भाइयोंने स्वाध्याय करना स्वीकारा। ९ श्राविकाओंने नवकार जाप जपने व देवदर्शन, बालबोध सीखनेके भाव दर्शाये। सेठ सौभागचंद कालीदासजी धर्मोत्साही हैं। उन्हें प्रतिसांझको मंदिरमें बैठ शास्त्रोपदेश करना चाहिये।

वडूकी तरह—यहांके पड़े हुए निर्माल्य द्रव्यकी व्यवस्था यथाविधि होना चाहिये।

वेहच—में सेठ मंगलदास नाथाभाईके प्रयत्नसे तीन पुरुष व तीन स्त्रीसभा हुई। १२ भाइयों व ७ स्त्रियोंने स्वाध्याय करना स्वीकारा व नवकार जाप जपने तथा खाद्य पदार्थ कुछ कालकी मर्यादा रख वर्तनेके वचन दिये। पर्यूषण पर्वतक अष्टद्रव्यसे जिनपूजन व प्रति दुपहरको शास्त्रोपदेश होना स्वीकृत कराया।

जम्बूसर—में शा० तलकचंद गुलाबचंदजीके गृहपर धर्मचर्चाकी। १ पुरुष, १ स्त्रीने प्रतिदिन शास्त्र पढ़ना स्वीकारा व एक विधवा बाईने श्रवण करना मंजूर किया।

विशेष—उपर्युक्त भ्रमणके ग्रामोंमें मेवाड़ा संप्रदायके अधिकतर गृह हैं जो कि स्टेट वड़ोदरामें होनेसे अनिवार्य शिक्षणके कानून द्वारा प्राथमिक गुजराती शिक्षणसे शिक्षित सभी गृही, गृहिणी व लड़के लड़कियां पाये जाते हैं, किन्तु उनमें **धार्मिक शिक्षाकी बड़ी भारी कमी है।**

पुरुष वर्गोमें फीसदी (सैकड़ा) २९ पुरुष संभवत: ही निकल सकें जो कि शास्त्र स्वाध्यायके नामसे पाना पलटते हों? कितना ही क्यों न समझाया जावे पर ये लोग प्रचलित कुप्रथाओंसे मुख मोडनेमें मुनी अनमुनी कर सावधान नहीं होते। कुछ २ व्यक्ति प्राय: यही कहते हैं कि पूजा पढ़ने व स्वाध्याय करनेमें जरा गलती हुई कि हमारी दुर्गति होजायगी। इससे नियम लेनेसे डरते हैं और नियम नहीं लेते!

बन्धुओं! दुर्नीति पूर्वक व जानबूझकर गलती करनेमें पाप बंध व दुर्गति होती है, किंतु अभ्यास करनेमें क्रमश: भूल सुधरती व सुधारी जाती है। इसलिये आप स्वाध्याय कर २ प्रयोजनभूत बातोंका निर्णय करना अवश्य २ सीखें।

इसी तरह धार्मिक शिक्षा विना स्त्री शिक्षा व कन्या शिक्षाका कोई कल्याणकारी मार्ग प्रगट नहीं होता। इससे प्रत्येक माता पिताका कर्तव्य है कि प्रति सांझ लड़का लड़कियों सहित वह **बालबोध जैन शिक्षण** व कथा भागके शास्त्र व श्रावकाचारके विचार पढ़ २ मनन करें, जिससे कि प्रत्येक घरकी रीति, नीति सुधर सके।

मंत्री, **ठाकोरदास भगवानदास जोहरी,**
जुबेली बाग—ट्रस्ट फण्ड।

मूर्ति मिली—उज्जैनमें मोहनलाल मोदीवालोंके पुराने मकानकी दीवालमेंसे ३ वैष्णव व १ जैन मूर्ति १४ इंच ऊंची मिली थी। यह खड्गासन मूर्ति हमें मिल गई हैं व ता० ३१ अगस्तको माधवनगरके चंद्रप्रभ मंदिरमें विराजमान की गई है। इसपर सं० १९४९ व जीवराज पापड़ीवालका नाम खुदा है।

जैन समाचारावलि।

दमोह-में मुनिभेषी मुनींद्रसागरकी बड़ी दुर्दशा होरही है। इनकी परालकी चटाईमेंसे १८७०)के नोट व सोनेके जेवर निकले थे। भक्तानी मानेकबाईने वह अपना बताया था। दमोहमें दो पक्ष पड़ गये हैं व यह मामला पुलीसके सुपुर्द है। सच बात तो यह है कि अब तो हद होगई है। इस मुनिभेषीको तो ठिकाने लाकर जोर जुलमसे कपड़े पहना देना चाहिये।

तारेका टुकड़ा-चंदनकुटी (मुरादाबाद) गांवमें २३ अगस्तको एक तारा टूटा था उसका एक टुकड़ा ५ फुट गहराईसे खोदनेपर मिला है। वजन ११॥ शेर है जो मुरादाबाद कलेक्टरीमें रखा गया है। कोई विद्वान खुलासा करेंगे कि क्या ऐसा हो सकता है?

उत्तम जैन लेखक-पं० रामलालजी पंचरत्न रामपुरने पोस्टकार्डपर तत्वार्थ, महावीराष्टक व लघु सामायिक सुन्दर अक्षरोंमें लिखा है। इसपर लाहौर प्रदर्शनी व सहारनपुरसे आपको इनाम व सर्टीफिकेट मिला है।

विलायत गये-दमोहमें एक गोलालारीय दि० जैन भाई राजधरलाल बी० ए० एल० टी० विशेष अध्ययनार्थ ता० २२ अगस्तको विलायत गये हैं।

सागवाड़ा में आचार्य शांतिसागरजी (छाणी) के चातुर्मासमें अच्छा धर्मलाभ होरहा है। अभी वहां श्राविकाश्रमका उत्सव हुआ था। उदयपुरमें आचार्य शांतिसागरजी (दक्षिण) संघका चातुर्मास है। वहां मुनि सुधर्मसागरजीकी प्रवृत्ति ठीकर न होनेसे अनैक्य होरहा है।

ध्वजादंड कमीशन-के कागजात देखनेके लिये दि० जैनोंको उदयपुर स्टेटसे इजाजत मिल गई है।

पावागिर तीर्थ प्रकट होगया-ऊण गांव जो होल्कर स्टेटमें बड़वानी व सिद्धवरकूट क्षेत्रके बीचमें खरगोनसे ९ मील व जलवानियासे १७ मिल है वहां आषाड वदी ७ को जमीन खोदनेसे सं० १२५२ माघ सुदी ५ की प्रतिष्ठित महावीर स्वामीकी ढाई फुट ऊंची पद्मासन प्रतिमा तथा और ४ प्रतिमाएं प्राप्त हुई थीं। वहां चेतनलाल पूजारीको स्वप्न आनेपर ही उनको खोदनेसे ये मिली थीं। निर्वाणकांडमें पावागिर क्षेत्रका बड़ा महात्म्य है। यहां ९९ मंदिर ९९ बावड़ी व ९९ कुए थे। आज भी ६-७ मंदिर जीर्णदशामें लाखों रुपयेके पाषाणमें कटावके कामके हैं। यहां जगह२ जिन प्रतिमायें पाई जाती हैं। जांच करनेपर यही पावागिर सिद्धक्षेत्र निश्चित हुआ है। अतः इन्दौर, बड़वाह, बड़वानी, सुसारी आदिके २०-२५ भाई वहां गये थे जिन्होंने इस सिद्धक्षेत्रका उद्धार करना निश्चित किया था फिर इसीलिये इन्दौरमें ता० १६ अगस्तको श्री० सरसेठ हुकमचन्दजी साहबके सभापतित्वमें बड़ी भारी सभा हुई थी उसमें इस क्षेत्रका उद्धार करना व प्रसिद्ध करना निश्चित हो चुका है। यह लाखोंकी लागतका तीर्थ आज १००००) लागतसे जीर्णोद्धार होसक्ता है। अतः ३१५७) उसी समय वहां भरे गये हैं। तथा शेष रुपयोंकी आवश्यक्ता है। यहां धर्मशाला भी बन रही है। सहायता इस पतेपर पावागिर तीर्थके नामसे भेजे। सर सेठ हुकमचंदजी साहेब-इंदौर।

बड़ागांव (खेखड़ा)-में १८ अगस्तको मंदिरकी पास आमका वृक्ष लगानेको जमीन खोदतेर आदिनाथ स्वामीकी २। फीट ऊंची प्रतिमाजी प्राप्त हुई है। १२ वर्ष पहिले भी यहां जिनबिम्ब निकले थे।

ललितपुर-में सेठ भगवानदासजी जैन शर्राफ आनरेरी मजिस्ट्रेट हुए हैं।

तीनों फिरकोंके छात्रोंको छात्रवृत्ति-हिन्दू यूनिवर्सिटी बनारसमें एम० ए०के जैन विद्यार्थियोंको व संस्कृतके उच्च विद्यार्थियोंको जैन साहित्य, तत्वज्ञान, रिसर्च (खोज) आदिकी पढाईके लिये ९)से लेकर ४०) मासिक तककी स्कोलरशीप देनेकी व्यवस्था श्वे० जैन कोन्फरन्स बम्बईकी तरफसे हुई है। इस विषयमें पं० सुखलालजी, हिन्दू यूनीवर्सीटी-बनारसको लिखें।

भ० विशालकीर्तिका-चौमासा नागपुरमें है।

बजरंगगढ-में हीरालाल भूतकी कन्या एक वृद्धको देनेसे बचाई गई थी, उसी कन्याका विवाह पछारके एक १९ वर्षके सुयोग्य युवकसे हो गया है।

ऋषभदेव तीर्थ-में उदयपुर स्टेटने नई कमेटी नियुक्त करदी है। इसमें ४ दि०, ४ श्वे० व प्रमुख देवस्थान हाकिम इस प्रकार ९ सभासद नियुक्त हुए हैं। दि० मेम्बर-सेठ भागचन्दजी, भंवरलालजी हुमड, लक्ष्मीचंदजी हुमड व सुन्दरलालजी ठोलिया जयपुर तथा श्वेतांबरी मे०-सुरपतसिंहजी, साराभाई डाह्याभाई, लक्ष्मीलाल चतुर व नगरसेठ नंदनलालजी हैं।

आनरेरी मजिष्ट्रेट-की पदवी पं० मक्खनलालजी शास्त्रीको मोरेनामें प्राप्त हुई है। वधाई!

जांबुडी (गुजरात) श्राविकाश्रम-के लिये अध्यापिकाकी आवश्यक्ता है।

दाहोद-में जीतमल चुन्नीलालजी म्यू० मेंबर हुए हैं।

कुशलगढ-में वीसपंथी भाइयोंमें धर्म कलह हो रहा है। कोर्टमें केस चल रहा है। क्या इस पर्यूषण पर्वमें भी वे उत्तम क्षमा नहीं करलेंगे?

आगरा-के स्व० सेठ पदमचंद भूरामलजी १२०००)के दानका वसीहतनामा कर गये हैं जो सुरक्षित रहे हैं।

मुनि चंद्रसागरजी-आदिका कुचामन (मारवाड) में चातुर्मास है।

मुनि नेमीसागरजी-ने सावला (डुंगरपुर)में चातुर्मास किया है।

तीर्थरक्षा फंड-जो तीर्थक्षेत्र कमेटीसे फी घर १) प्रतिवर्ष लिया जाता है। उसमें गत वर्ष २६६१) आये थे जो अतीव कम है।

शेडबाल (बेलगाम)-में शांतिसागर जैन अनाथाश्रममें २५००), २५००)खर्च करके सेठ रावजी सखाराम दोशी व सांगलीवाले सेठने मकान व बड़ी वावडी बनवादी है, जिसका उद्घाटन अभी होगया है।

देहलीमें-पर्यूषणपर्वमें पं० देवकीनंदनजी शास्त्री व पं० कैलाशचंद्रजी शास्त्री पधारे हैं।

मुनि सूर्यसागरजी-ने मथुरासे आगरा जाकर चातुर्मास किया है।

ब्र० प्रेमसागरजी-ने हिसारमें चौमासा किया है।

ब्र० शीतलप्रसादजी-का स्वास्थ्य अब अमरावतीमें ठीक है।

भ० जशकीर्तिजी-ने परतापगढमें नहीं परन्तु कूण (मेवाड़) में चौमासा किया है।

પ્રાંતિજ દિ. જૈન બોર્ડીંગ—નો પાંચમો વાર્ષિક મેળાવડો શેઠ વ્રજલાલ કેવળદાસના પ્રમુખપણા નીચે આ માસમાં થયો હતો જેમાં વિદ્યાર્થીઓના સંવાદ અને ભાષણો સારાં થયાં હતાં. પ્રમુખે ૫૦) યુનીફોર્મ ડ્રેસ વિદ્યાર્થીઓ માટે આપવા ઇચ્છા જણાવી તથા આ સમયે મહાવીર દિ. જૈન પુસ્તકાલયની પણ સ્થાપના થઇ છે. ૫૦) મદદ મળી હતી ને નવા સેક્રેટરી મણીલાલ ચુનીલાલ નીમાયા છે. આસો માસમાં મેનેજીંગ કમેટી મળશે.

અક્ષયકુમાર. સુપ્રિં૦

વડોદરા—માં પં૦ ગીરધરલાલજી (સુરત ગાદી) ચોમાસામાં રહ્યા છે.

पर्यूषण-पर्व पदावलि।

ले०-श्री०ब्रह्मचारी प्रेमसागरजी-हिसार।

प्रार्थना-प्रथम जिनवरको शीश नमाऊँ ॥ टेक ॥
जिनका ध्यान धरत, अनुभव रस पीवत नाहि अघाऊँ।
दरश करत अघ झरत सुकृतका अक्षय कोश भराऊँ ॥प्र०
वीतराग मुद्राको निरखत, अति आनन्द कमाऊँ।
निरख निरख अपने उर अंतर, साम्यभाव उपजाऊँ ॥प्र०
मंगल मूरति अद्भुत सूरत, ऐसी और न पाऊँ।
दुरित निवारण भवदधि तारण-तरणिभक्ति ठहराऊँ ॥प्र०
विघन विनाशी सुख परकाशी, अविनाशी प्रभु ध्याऊँ।
'प्रेम' पदांबुज परस परस कर, परमानंद समाऊँ ॥प्र०

१-उत्तम क्षमा।

न-कर नर क्रोध, महा दुखदाई ॥ टेक ॥
क-लह करत न डरत अपने मन, मनकी करत लड़ाई।
र-त न होत अपने स्वभावमें, जो हितकर क्षमताई ॥न०
न-य निश्चयसे परख निजातम, क्षमा रूप वह भाई।
र-म जा उसके ही स्वभावमें, तज दे रोप रुषाई ॥न०
क्रो-ध कुगतिले जानेवाला, इसकी त्याग मिताई।
ध-रम मित्रकी बहिन 'क्षमा'से, करले पार सगाई॥
म-हा वही बन सकता है, जिसने सहिष्णुता पाई।
हा-नि लाभका पता लगाकर, तजे गहे-हित दाई॥
दु-र्मति त्याग सुमतिको गहले, करले धर्म कमाई।
ख-न मत कूप गैरके लाने, सहले सकल बुराई ॥न०
दा-म लगत नहिं धाम छुटत नहिं, क्षमा-तत्वमें भाई।
ई-र्षा त्याग उसीको गहले, 'प्रेम' वही सुखदाई ॥न०

२-उत्तम मार्दव।

अ-रे नर तज अभिमान गुमान ॥ टेक ॥
रे-त होत उत्पन्न कौन विधि, इसका करले ज्ञान।
न-रम नहीं था *उपल इसीसे, पीसा गया महान॥
र-तन ज्योतिमय जब होता है, जब चढ़ जाय ×मशान
त-ब फिर उसका नहिं रहता है, कीमतका अनुमान॥
ज-वकी छाल कड़ी होती है, जिससे उसे गुमान।
अ-ति ही कुटता इसी सबबसे, तब पाता सम्मान॥
भि-न्न जगतकी सकल वस्तुएं, आत्म-द्रव्यसे जान।
मा-न उन्हें अपनी अपनावे, करके अति अभिमान॥
न-हीं भूलकर भी अपनावे, वसुमदको रुचि ठान।
गु-रु भाषत मार्दवसे अपनी, करले प्रीति महान॥
मा-या महा अहितकी करता, उससे मद बलवान।
न-र भव सफल करो मार्दवधर, यही 'प्रेम'का ध्यान॥

३-उत्तम आर्जव।

अ-रे नर मनकी माया मार ॥ टेक ॥
रे-ख नहीं वह मिट सकती है, जो खेंची करतार।
न-यन उघार देखले जगमें, कर इसपर मत रार ॥अ०
र-ह पाता है नहीं बहुत दिन, मनका मायाचार।
म-रम अंतमें खुल जाता है, जैसे अम्ल अनार ॥अ०
न-हीं बिछा अब और, किसीके लिये कपटका जाल।
की-र्ति नष्ट सब होगी तेरी, हास्य करे संसार ॥अ०॥
मा-या मार आर्जव धरले, करले उससे प्यार।
या-र वही है सच्चा तेरा, करे भवार्णव पार ॥अ०
मा-याने भव-भ्रमण कराया, धार सरलता धार।
र--मजा निजस्वभावके भीतर, 'प्रेम' करे क्यों वार॥

४-सत्य।

की-जिये सत् वचनोंसे प्रीत ॥ टेक ॥
जि-तने वचन निकालो मुखसे, वे होवें मधु-गीत।
ये-शिक्षा श्री गुरुने दीन्ही, बोलो नहीं अलीक[१] ॥की०॥

---

*पत्थर। ×रत्न खरातनेकी मशीन। १-झूठ।

स-ब प्रिय थोड़े किन्तु अर्थ युत, हित मित द्योतक निति।
त-था प्रमाणिक गौरवताके, बोलो वचन पुनीत ॥की०॥
व-ह मानव ही मानव मंदिरकी, होता है मीत।
च-लो उसीकी चाल देखकर, फैले जगत प्रतीत ॥की०॥
नौं-क झोंकमें पड़कर तजना, नहीं सत्यसे प्रीति।
से-वक रहना सदा सत्यके, चलना नहीं अनीति ॥की०॥
प्री-ति झूठसे तनिक न करना, रहना सत्य-समीप।
ति-स कारणसे ही पावोगे, "प्रेम" मोक्षका दीप ॥की०॥

५—शौच।

अ-रे नर धोले आतम चीर ॥ टेक ॥
रे-वा यमुना गंग गोमती, का माने शुचि नीर।
न-क्षत्र पाकर खूब नहावे, माने शुद्ध शरीर ॥अरे०॥
र-त मत हो विपरीत बात पर, सुन शुभ-शिक्षा वीर।
धो-वत मैल देहका माने, पहुंचे आतम-तीर ॥अरे०॥
ले-सुन ले यह बात तनिकसी, तज स्वभाव ज्यों कीर[1]।
आ-त्म अमूर्ति पास क्यों पहुंचे, सरिताओंका नीर ॥अ०
त-ट समकितके बैठ नहाले, शौच सलिल है सीर[2]।
म-ल तृष्णाका शीघ्र धुलेगा, शुचि हो आतम चीर ॥अ०
ची-ता है यदि ऐसी तेरी, पाऊँ भवनिधि तीर।
र-ट निज आतमराम 'प्रेम' से, क्षय हो शीघ्र त्रिपीर ॥अ

६—संयम।

ज-गतमें संयम धरम प्रधान ॥ टेक ॥
ग-फलतकी तज नींद अरे नर! भर समकितकी तान।
त-ब तू पावे संयम निधिको, होजावे धनवान ॥ज०
में-ट सकल मिथ्यात्व हृदयसे, कर समकित रस पान।
स-गति पांच इन्द्रियोंकी तज, मान कही मतिवान ॥ज०
य-ह पांचों पक्की ठगनी हैं, इनने ठग्यो जहान।
म-नके साथ इन्हें वश करले, संयमकी पहिचान ॥ज०
अ-रम प्रेम है अगर वास्तविक, कर करुणाका दान।
र-क्षा कर स्थावर त्रसकी, षटकायक पहिचान ॥ज०
म-नके सकल विकार दूरकर, कर समता रस पान।
प्र-शम भाव पैदा कर अंतर, यह संयम परधान ॥ज०
धा-र्मिक भाव हृदय उद्भवकर, कर अपना कल्याण।
न-त मस्तक जिन चरणन पड़कर, प्रेम निजातम जान ॥ज

७—तप।

क-रो जिया तप द्वादश परकार ॥ टेक ॥
रो-को अभ्यंतर इच्छाएं, रत्नत्रयको धार।
जि-नसे अहित होत है तेरा, उनसे कैसा प्यार ॥क०
या-संसार असार जानकर, तज गये श्री जिनराज।
त-प कर अष्टकर्म-रिपु जीते, बैठ आतम जिहाज ॥क०
प-रिग्रह आरम्भ त्याग गये वन, आतम अनुभव गार।
द्वा-विंशति परीषहोंको सहकर, पहुंचे भवदधि पार ॥०
द-खल करो अपनी निधि ऊपर, कर करमोंकी हार।
श-क्ति छिपाओ नहीं विजयका, सुन्दर पहिनो हार ॥क०
प-रिचय पाकर आत्मशक्तिका, निर्भयताको धार।
र-णमें प्रस्तुत होकर चेतन, रहो मोहको मार ॥क०॥
का-या सफल जभी हो तेरी, करले तप स्वीकार।
र-त्नत्रयसे 'प्रेम' बढ़ाकर, वरले मुक्ति सुनारि ॥क०॥

८—त्याग।

क-हो कमला किसकी कब भई?
हो-ते हैं जो धनी कभी, उनको निर्धन कर गई ॥टेक
क-भी न करना, यकीन इसका, यह है कपट मई।
म-हा क्षुद्र गणिका सम समझो, स्थिर रहत नहीं ॥क०
ला-ज नहीं इसके मनमें कुछ, घर घर फिरत सही।
कि-सकी सगी भई कहिये तो, किसके पास रही? क०
स-बसे उत्तम बात यही हैं, दान करो नित ही।
की-रति तब पाओ इसके संग, और न बात नई ॥क०
क-रिये चार दानमें वितरन, अशन औषधी लई।
ब-रणों ज्ञान, अभय सुख कारण, इन बिन और नहीं ॥
भ-क्ति भावसे दया भावसे, हृदय कली खिल गई।
ई-षत् दान बड़ा फल देता, 'प्रेम' त्याग यह सही ॥क०

९—आकिंचन।

जि-या तू आकिंचन व्रत धार ॥ टेक ॥

१—तोता, २—ठण्डा, ३—इच्छा।

या-समान कोई नहिं तेरा, जगमें है हितकार।
तू-त्रिभुवनका ईश, अकिंचन-तेरा है सहकार ॥जि०॥
आ-किंचनके लिये न किंचित, राखे परिग्रह भार।
किं-च उदरमें होय तभी तो, होवे उदर विकार ॥जि०
च-ढ़ वैराग्य शैलके ऊपर, द्वय विधि संग परिहार।
न-टवत् स्वांग धरणका, फिर तो होजावे संहार ॥जि०
वृ-जबाला शिवसुन्दरि बाला, तुझे करेगी प्यार।
त-ब तो सचमुच होजावेगा, अविनाशी अविकार ॥जि०
धा-या इत उत खूब, न पाया तूने अपना द्वार।
र-म मत 'प्रेम' परिग्रह भीतर, जो चाहे उद्धार ॥जि०

१०-ब्रह्मचर्य।

क-रो नित शील सुधाका पान ॥ टेक ॥
रो-ग कुशील लगा है चिरसे, करदो उसकी हानि।
नि-रत रहो अपने स्वभावमें, यह औषधि परमाण ॥
त-निक नहीं उससे विरक्त हो, करना परका ध्यान।
शी-ल समान जगतमें कोई, वैद्य नहीं गुणवान ॥
ल-क्षण मध्यम शील धर्मका, तज परत्रियकी बान।
सु-न निजत्रियमें भी संतोष धर, आतमसे हित ठान ॥
धा-र शीलव्रत सार सयाने, तज कुशील दुख खान।
का-म कथा मत करे सुने मत, तज शृङ्गार सुजान ॥
पा-[१]रावार पार पावोगे-'प्रेम, मोक्ष स्थान।
न-कल सुदर्शनकी कर, कर हो नौक-शील परधान ॥

१ समुद्र।

पर्यूषणपर्वका प्रस्ताव।

(लेखक-श्री० ब्र० प्रेमसागरजी-हिसार)

(१)

देवदत्तके दरवाजेके सामने एक "जैन धर्मशाला" के ऊपरके कमरेमें "श्री महावीर पुस्तकालय" स्थापित है। उसकी आज मासिक बैठक थी। देवदत्त उसका महामंत्री था इसलिये वह अपने दर्वाजेके एक चबूतरेपर बैठा मेम्बरोंकी राह देख रहा था। उसे वहां बैठे करीब पौन घण्टा होगया, परन्तु कोई भी मेम्बर अबतक न आया। तब देवदत्तने कैलाशके द्वारा घड़ी मंगाकर देखी, उसमें ८॥ बजनेको थे। देवदत्त नियत समयसे घण्टा अधिक होजानेके कारण, मन ही मन मेंबरोंकी नासमझीपर अफसोस करने लगा। और विचार किया कि-पुस्तकालयके नौकरको पुकार कर सब मेम्बरोंको बुलवा लिया जावे। परन्तु उसी समय विष्णु आते दिखाई दिया। विष्णु, देवदत्तका परम मित्र और पुस्तकालयका कोषाध्यक्ष था। जब विष्णु देवदत्तके पासमें आगया तब देवदत्तने उससे पूछा कि आप ही सिर्फ आये, और महाशय नहीं आवेंगे क्या?

विष्णु-आते होंगे।

देवदत्त-कब आते होंगे? ८॥ बज चुके।

विष्णु-आप जानते हैं कि व्यापारी लोग हैं, दूकान बन्द करके आवेंगे। आप तो आगामी बैठक ९ बजेकी रखना। क्योंकि ८ बजे उन लोगोंको फुरसत नहीं मिलती। वे लोग तो ८॥ बजे दूकाने बंद करते हैं।

देवदत्त-अब ऐसा ही किया जावेगा। और यह तो बताओ कि आप भी आज देरीसे क्यों आए? आपसे तो एक बड़ा भारी काम था।

विष्णु-क्या?

देवदत्त–क्या भूल गए ? अरे वही दशलक्षण पर्वका था।

विष्णु–उसे तो अबतक ही ठीक करना था, क्योंकि अब उक्त पर्वके रहे ही कितने दिन हैं, केवल ८–१० दिन तो हैं।

देवदत्त–सो भी बातों बातोंमें जाते हैं।

विष्णु–अच्छा, तो जबतक मेम्बर लोग नहीं आए, तबतक पुस्तकालयमें बैठकर उसके ऊपर कुछ निश्चय विचार करलें।

देवदत्त–ठीक कहते हो, चलिये।

(२)

दोनों मित्र पुस्तकालयको चले गए। और बैठकर दशलाक्षणी पर्वके विषयमें विचार करने लगे। विचार-विवेचना करते २ करीब १५ मिनिट होगए स्थिर न कर पाए। इतनेमें श्री निर्मलकुमारजी पुस्तकालयके स्थायी अध्यक्ष आए और इन दोनोंको किसी विचार-धारामें लिप्त देख पीछेको लौटने लगे, यह देख देवदत्तने उन्हें यह कहते हुए बैठा लिया कि बैठिए, आपसे ही तो बड़ा काम था, अच्छा हुआ जो आप आगए।

निर्मलकुमार–कहिए क्या काम था ?

देवदत्त–इस वर्ष पर्यूषणपर्वकी एक ऐसी स्कीम तैयार करना है जो सदैवके लिए लागू हो और सर्वत्र उसका प्रचार किया जावे।

निर्मलकुमार–यह आपका तो विचार बड़ा ही उत्तम है। इसका मैं सच्चे हृदयसे समर्थक हूं। बताइये आपने क्या स्कीम सोची है ?

विष्णु–अजी भाईसाहिब ! हमने तो अभी कुछ भी नहीं सोचा, सोचते ही थे कि आप आगए, हमको एक बड़ाभारी सहारा मिल गया। अब आप ही कृपया इसको बनवा दें तो बहुत ही अच्छा हो।

निर्मल–अजी मैं क्या जानूं ? भैया देवदत्तसी प्रतिभा मेरी थोड़ी है। उनके तो ऐसी वैसी स्कीमें हृदयमें रक्खी रहती हैं।

देवदत्त–क्यों मजाक उड़ाते हो यार ? मैं सच कहता हूं कि जबसे आपको हमने पुस्तकालयका सभापति चुना है तबसे हमको बल सा आगया है। और हमारी वाक्यशक्ति बढ़ती गयी है। तथा बोलनेका तरीका भी मालूम होने लगा है। फिर भी आप मजाक उड़ाते हैं। ठीक है जितने बडे पुरुष होते हैं वे छोटोंकी प्रशंसात्मक मजाक ही किया करते हैं। चलो अच्छा हुआ, मुझे आपका आशीर्वाद लगे कि मैं एक अच्छा अनुभवी वक्ता एवम् लेखक बनजाऊं।

निर्मल–यह तो आपकी भावना ही इस बातका सबूत देती है कि आप कर्मशील हैं और अपनी तरक्कीमें सतत प्रयत्न कर रहे हैं अतएव आप भविष्यमें अवश्य ही अपने उद्देश्यमें सफल होंगे।

देवदत्त–तो अब देरी न कीजिए ! फिर पुस्तकालयकी बैठकका वक्त होता है।

निर्मल–अच्छा लिखिए।

देवदत्त–बोलिये।

निर्मलकुमारजीने इस प्रकार स्कीम लिखवाई–

१–एक अच्छे विद्वान पंडित व कोई त्यागी ब्रह्मचारीको बुलाया जावे जिसके द्वारा जनताको धर्मोपदेशका लाभ हो। यह भी समझना चाहिए कि जो सच्चे सुधारका हामी हो और जो ठोस काम करके जनताको जगा सके, उसीको बुलाना चाहिए।

२–पंचमीके दिन श्रीजिनेन्द्र भगवानका जुलूस निकाला जावे।

३–प्रातःकाल सभी लोग मंदिरजी जाकर श्रीजीकी पूजन करें।

४–पूजन १० बजे तक हो।

५–पूजनके बाद ११ या ११॥ बजेतक तत्वार्थसूत्रकी बचनका हो। उसका एक २ अध्याय अर्थ सहित हो, और वह इस प्रकारसे श्रोताओंको समझाया जावे जिससे कि समझाया हुआ विषय उनके गले उतर जावे।

६-भोजनके बाद यदि अवकाश हो तो पूजन-पाठ हो या व्याख्यानसभा हो जिसमें क्रमशः प्रत्येक धर्मका स्वरूप भलीभांति समझाया जासके। यदि पुरुषोंकी समान होसके तो स्त्रियोंकी सभा अवश्य ही भराई जावे। पूजनपाठ भी होसकता है। दिनका कार्य २ से ४॥ तक हो।

७-शामको शास्त्रसभाके बाद व्याख्यानसभा अवश्य ही भराई जावे। उसमें धर्मके अंगका लक्षण वर्णन करते हुए धर्मका सच्चा स्वरूप जनताको सुनाया जावे। जिसके द्वारा वह रूढ़ि धर्मको छोड़कर सच्चे धर्ममें आजावे।

८-जो लोग किसी कारणसे जातिच्युत हैं, उन्हें उठाया जावे और उनको मंदिरजी खुलाकर जिनेन्द्र दर्शन दिये जावें।

९-बहुतसी जगह लहुरीसेनों (दस्सों) को जिनेन्द्रदर्शन व पूजन नहीं करने दिया जाता तथा मंदिरमें नहीं आने दिया जाता सो खुलासा किया जावे। अर्थात् उनको मंदिरजीमें आनेका, दर्शन करनेका और पूजन करनेका अधिकार दिया जावे।

१०-मंदिरजीके कुल भण्डारका हिसाब पर्वके पहिले तैयार कर लिया जावे और उसकी रक्षाके लिये १ कमेटी स्थापित की जावे।

११-जिसके पास मंदिरजीका जो रुपया है उसे वसूल किया जावे। पंचायत इसपर सख्तीसे काम ले। रुपया चाहनेवालोंको पर्वमें सूचित कर दिया जावे कि वे कमसे कम कार्तिककी निर्वाण १४ तक रुपया अदा करदें।

१२-कटनीके श्री० सिं० पन्नीलाल तोतीलालजीके श्री मंदिरजीकी ट्रष्टियान कमेटी नियत होगई है जिसके नाम मंदिरजीका कुल सामान मय द्रव्य भण्डारके रजिष्ट्री करा दिया गया है। और कुल रक्षाका भार कमेटीके जिम्मे कर दिया गया है। उसमें सबसे अधिक हाथ सिं० कन्हैयालालजी सतनावालोंका रहा है। अर्थात् उन्होंने ही अपने दिमागसे यह नया उपाय सोचकर उसे कार्यरूपमें परिणत कराया है। उस उपायका अनुकरण किया जावे।

१३-शास्त्रभण्डारकी सम्हाल की जावे और जो न हो उनको भंडारके द्रव्यसे मंगाकर उसकी वृद्धि की जावे तथा बंद पड़े हुएको खोला जावे और बाहर रक्खा जावे।

१४-पर्वके अन्तमें खुले मैदानमें या धर्मशालाके विशाल स्थानमें आमसभा भराई जावे और उसमें आम लोगोंको बुलाया जावे। उसमें **दशलक्षण पर्वके स्वरूपपर भाषण** कराया जावे तथा जैनधर्मके सिद्धांत और उसके सार्थक पर्वोका स्वरूप समझाया जावे।

१५-क्षमावणीके दिन सच्ची क्षमा मनाई जावे और बिछुड़े हुए भाइयोंको खुले दिलसे सप्रेम मिलाया जावे।

देवदत्त-आपकी स्कीम मुझे तो पसंद आई, जब कमेटी पास कर ले तब तो ठीक है नहीं तो परिश्रम करना ही हाथ रहेगा।

निर्मल-पास क्यों नहीं करेगी? क्या कोई अनुचित बात है?

देवदत्त और निर्मलकी बात हो ही रही थी कि पुस्तकालय कमेटीके कुल मेम्बरान आपहुंचे! देवदत्तने कहा--आप महानुभावोंने तो आज बहुत वक्त ले लिया?

सबकी एक आवाज--अजी क्या किया जावे मंत्रीजी? देरी हो ही जाती है। और अपने लोगोंका तो हिंदुस्थानी टाईम है!

कमेटीका कोरम पूरा होगया इसलिये कार्य शुरू किया गया। मंगलाचरणके बाद मंत्री पुस्तकालयने एक माहकी रिपोर्ट सुनाई। और उनके बाद विमलप्रसादजीका "पुस्तकालयसे लाभ" इस विषयपर भाषण हुआ। सबको पसंद आया। इस

कार्रवाईके अनन्तर निम्नप्रस्ताव पास किये गये—

१—यह कमेटी प्रस्ताव करती है कि शहरके प्रत्येक मुहल्लेमें इस पुस्तकालयके शाखा पुस्तकालय खोले जावे। जिससे कि साधारणसे साधारण जनताको ज्ञान लाभ कराया जावे।

प्र०—पं०परमानंद, अध्या० स्थानीय पाठशाला।
समर्थक—बाबू विमलप्रसादजी वकील।
अनुमोदक—पुस्तकालय मंत्री।

२—यह कमेटी प्रस्ताव करती है कि इस वर्षके पर्यूषण पर्वको सफल बनानेके लिये निम्न स्कीम पास की जावे (स्कीम पहिले लिखी जाचुकी है)।

प्र०—देवदत्त, मंत्री पुस्तकालय।

दो प्रस्तावके समर्थनके पहिले ही कुछ व्यक्तियोंने कहा कि स्कीम तो ठीक है, परन्तु जब कामयाव होजावे तब ना?

इसके उत्तरमें सभापतिने १५ मिनिट भाषण देकर उन्हें अच्छी तरह समझा दिया। बादमें उक्त प्रस्तावका समर्थन और अनुमोदन होकर सर्व सम्मतिसे पास किया गया। समर्थक रहे—श्री रामचंद्रजी मेम्बर पुस्तकालय और अनुमोदक रहे पं० परमानन्द। तथा विष्णुने उसका जोरदार शब्दोंमें समर्थन किया। इस लिये उनके पास होनेमें कोई देरी नहीं लगी।

(४)

सुन्दरपुरके युवकमण्डलने उक्त स्कीमको भली भांति कामयाब बनाया। उसे स्थानीय ग्रामपंचायतमें पास कराया तथा उसकी नकल छपवाकरके प्रान्तके प्रायः सभी ग्रामोंको भिजवा दी। ठीक समयपर कंचननगरसे श्री पं० प्रेमचंदजीको भी बुलवा लिया। स्कीमको भलीभांति दशों दिन सफलीभूत बनाया। दशों दिन ही अच्छी प्रभावना रही। सोलहकारण और दश धर्मोंपर क्रमशः भाषण हुए तथा मोक्षशास्त्रका मौलिक विवेचन सुनाया गया। अन्तमें क्षमावाणी मनाई गई। उस दिन श्री०पण्डितजीका बड़ा ही सारगर्भित भाषण हुआ जिसका सार यह है कि—"दश दिन दशलक्षण धर्मके मनानेका फल आजके दिनको उत्तम क्षमाका अर्थात् क्षमावाणीका मनाना है। यदि हम आज अपने भाइयोंको गले लगाकर मिला रहे हैं तो उसका नमूना भविष्यके लिए भी रहना चाहिये। हमने जिनको अपना शत्रु मान रखा है उनको आज अपना मित्र बनालें और आगेके लिये भी उनसे मैत्री भाव रक्खें। आपसकी हानिकारक पार्टीबंदी जो समाजमें बाबू व पंडितके नामसे प्रख्यात है मिटादें, मिलकर रहें, मिलकर काम करें तभी सफलता होगी। इत्यादि बातें पं० जीके भाषणमें थीं, जिनको जनताने महसूस की।

पश्चात् पांच आदमी जो कि कारण विशेषसे जातिच्युत थे, (जिनको केवल पर्वके दिनोंमें मंदिर खुलासी किया गया था) वे खड़े होकर प्रार्थना करने लगे, हमको बहुत दिन इस हालतमें होगये अब हम माफी चाहते हुये प्रार्थी हैं कि हमको अब उठा लिया जावे। इन भाईयोंकी दर्दनाक प्रार्थनाको सुनकर मंडलके जोशीले युवकोंकी आंखोंसे आंसू बह पड़े और उसी समय मंडलके सुयोग मंत्रीने उनको उठानेका प्रस्ताव रख दिया जो कि वादविवादके बाद सर्व संमतिसे पास किया। उनको पंचायतीने निम्न प्रायश्चित्त देकर मिला लिया। प्रायश्चित्त १—आनेवाली अष्टमीको एकासना। २—आजसे अष्टमीतक निरसन ऊनोदर व्रत तथा एक णमोकार मंत्रकी मालाका फेरना और नियमसे ९ वर्षतक शास्त्र स्वाध्याय करना। यह उनको स्वीकार हुआ और वे लोग जातिमें मिला लिये गये।

इस प्रकारसे सुन्दरपुरमें दशलक्षण पर्व मनाया गया जो अनुकरणीय था।

भ्रमण–

पं० पीताम्बरदासजी, उपदेशक, सेठ माणिकचन्द जुबेलीबाग ट्रष्टफण्ड।

(बाबत माह जुलाई)

तलोद–में चार शास्त्रोपदेश व तीन व्याख्यान सभाएं हुईं। जिनमें विविध विषयोंपर विवेचन किया। श्रीमती चंचल बहिन द्वारा प्रति रातको चातुर्माससमें शास्त्र सभाका होना स्वीकार कराया। १९ भाई व ३० स्त्रियोंने स्वाध्याय करना व शास्त्र श्रवण करनेके नियम किये। तथा इन्हींके द्वारा दुपहरको कन्याशाला व श्राविकाशाला चालू कराई और खाद्य पदार्थोंकी मर्यादित क्रिया स्वीकृत कराई।

खाटाना मुवाडा–में दो विवेचन जैनधर्मकी उपासना पर हुए। ९ भाइयोंने स्वाध्याय करना स्वीकारा व ७ स्त्रियोंने रात्रिको अन्नके पदार्थ खाना त्यागे। तथा चातुर्मासके लिये प्रति सांझको शास्त्र सभा स्थापित कराई।

वाकीसणा–में दो शास्त्रोपदेश व एक व्याख्यान सभा हुई। १० भाइयोंने स्वाध्याय करना स्वीकारा व रात्रि भोजन त्यागा तथा चातुर्मासको सात भाइयोंका वारा कर शास्त्रोपदेश होना निश्चय कराया व खाद्य पदार्थोंकी जैसे दुग्ध, दही, पापड़, बड़ी, सेव, आटे आदिकी कुछ मर्यादापूर्वक प्रमाण रख वर्तना स्वीकृत कराया। मंदिर अव्यवस्थित है व मुखियोंमें प्रमाद होरहा है। यहांकी पंचायतको धार्मिक कार्योंके करने व करानेको सावधान होना चाहिये।

कनोल–में १४ भाइयोंने स्वाध्याय करना व १६ स्त्रियोंने शास्त्र श्रवणके नियम किये व रात्रिको चातुर्मासभरके लिये अन्नके पदार्थ खाना त्यागे। तथा प्रतिसांझको शास्त्रसभा करनेका निश्चय किया। यहांपर कन्याशाला चालू करानेको सेठ संवाभाई सखमलजी ओराणवालोंने १९) मासिक सहायता देना कबूल किया है। कोई गुजरात निवासिनी बाईको प्रार्थना भेज अध्यापिकाका पद लेना चाहिये।

बड़ौदा–में शा० तनसुखदास भोगीलालजी व सेठ साकलचंदजीके विशेष प्रयत्नसे अष्टाह्निका पर्वभर ठहरे। पं० गिरधारीलालजीके शास्त्रोपदेश बाद व्याख्यानसभायें होती रहीं जिनमें नित्य षट्कर्म, व्याहका विस्तीर्ण क्षेत्र, प्रभावना, कुरिवाज त्याग आदि उपयोगी विषयोंपर उपदेशकजीके विवेचन होते रहे। १९ भाइयोंने स्वाध्याय करना व १० स्त्रियोंने शास्त्र श्रवणकी प्रतिज्ञा की। पं० गिरधारीलालजी द्वारा चातुर्मासको शास्त्रसभा स्थापित हुई। अधिकतर स्त्रियोंने जिनपूजन श्रवण करनेके भाव दर्शाये व ३६ नरनारियों रात्रिको चातुर्मास (वर्षाभर) के लिये अन्नके पदार्थ खाना त्यागे। पढ़ने योग्य लड़के ५२ व ४० के लगभग कन्यायें हैं किंतु स्थानीय प्रतिष्ठित पुरुषोंके प्रमाद वश कोई भी प्रकारकी धार्मिक शिक्षण देनेवाली संस्था नहीं हैं। जब कि स्टेट **गायकवाड़**की ख्याति शिक्षावृद्धिसे जगप्रसिद्ध होरही हैं तब दि० जैन संप्रदायकी इस तरह लापरवाही खेदजनक एवम् निजगौरवको नष्ट करनेवाली दिखाई देरही है। आशा है कि बड़ौदाके मुखिया भाई इसपर ध्यान दें, जैन पाठशाला चालू करानेका स्थाई प्रयत्न करेंगे।

नवयुवक मुखिया महोदय दो सभामें कुछ २ उपस्थित हुए। किंतु कईवार प्रेरणा करनेपर किसी २ ने प्रति दिन देवदर्शन करने व स्वाध्याय करनेके भाव दर्शाये व अधिक वर्गने प्रमाद भरे शब्दोंमें कुछ अस्वीकृतसा कर विचित्र कहानी सुनाई कि यदि हमसे शास्त्र अशुद्ध पढा गया अथवा कोई दिन नहीं पढ़ा गया तो हमारे भद्दा-

रकजी कहा करते थे कि उल्टे नरकमें पड़ोगे इसीसे हम नियम नहीं करते।

बन्धुओ! बालक खड़ा हो क्रमशः चल२ कर गिरता है; इसी तरह उसके पग बलवान बन पाते हैं, इसी तरह आज संभवतः तुम अशुद्ध स्वाध्याय कर सके तो कुछ काल बाद अपनी भूलें जब२ शुद्ध पढ़ोगे और उसका सार्थक भाव भी ग्रहण कर सकोगे। इससे आपको स्वाध्यायका नियम करना चाहिये।

सिद्धक्षेत्र पावागढ-में गढ ऊपर श्री० चिंतामणी **पार्श्वनाथका** मंदिर बिल्कुल जीर्ण व वर्षाके पानीसे भर रहा है। इसका जीर्णोद्धार पावागढ क्षेत्र प्रबंध कमेटी व समाजके श्रीमानों द्वारा शीघ्र होना चाहिये।

विशेष-गुजरात प्रांतमें विवाह क्षेत्रकी बड़ी भारी संकीर्णता होरही है यही, कारण है कि यहांके लोगोंने जुदे २ जत्थे स्थापित कर रक्खे हैं। जैसे कांठा, साठ, रायदेश, खड़ग, सोजित्रा, भावनगर, कलोल, वांच, सूरत आदि। किसी२ जगह जत्थेमें इतनी न्यून संख्या है कि जिनकी जनसंख्या दो२ चार २ सौसे भी कम पाई जाती है। इन जत्थोंमें यह नियम प्रचलित है कि प्रति२ जत्थेके जैन अपने ही जत्थेके ग्रामोंमें सगाई व्याह कर सकते हैं अन्यत्र नहीं। और यदि कोई करे भी तो वह जाति च्युत किया जाता है तथा कई २ जत्थोंने ऐसे नियम किये हैं कि दूसरे जत्थेकी कन्या तो व्याह ले पर अपने जत्थेकी कन्या दूसरे जत्थेके वरको नहीं व्याहे! और यदि व्याहे तो वह जाति च्युत किया जाय! इत्यादि।

इस भावसे योग्य सन्तानका जनक न्यून अशुद्ध होरहा है। यही कारण है कि साम्प्रति सन्तान दिन प्रतिदिन बुद्धिविहीन निर्बल और अशक्त होरही है। प्रत्येक जननी, जनक व्याह कार्यके लिये ही शिशु, सुताको पढ़ाकर सुबोध और सशक्त बनाते हैं कि यदि हमारे शिशु, सुता अपढ और निर्बल रहेंगे तो उनके व्याह किस तरह होंगे? क्योंकि गुणविहीनका व्याह करनेसे सुखचैनसे वर, वधूका जीवन व्यतीत नहीं होता किन्तु जब यह नियम बन गया कि इतने ग्रामोंके शिशु, सुता इतने ग्राममें विवाहे जावेंगे अन्यत्रमें नहीं। तब फिर अपढ, सपढ, निर्बल, सबल वर, कन्याका क्या ठिकाना क्योंकि विवाह तो होना ही है, शिक्षा और सशक्त बनानेवाले परिश्रमको विना प्रलोभनके कौन करने बैठे?

इसलिये समाजको चाहिये कि इस संकुचित क्षेत्रसे मुख मोड़ चाहे किसी भी जत्थेके योग्य वर कन्या हो, विवाहका निश्चय करें।

ठाकोरदास भगवानदास झौहरी,

मंत्री, सेठ माणिकचंद जुबेलीबाग ट्रष्टफण्ड-बम्बई।

સુરતના પંચનું સ્તુત્ય પગલું.
મેવાડા ભાઇઓ કયારે ચેતશે ?

(લેખક-રતીલાલ કે. શાહ-ભરૂચ.)

ગત અષાડ માસના 'દિગંબર જૈન' ના અંકમાં સુરતના વીસાહુમડ પંચમાં નવું બંધારણ થયાના શુભ સમાચાર વાંચી ખરેખર અવર્ણનીય આનંદ થયો ! પરંતુ તે પંચે લીધેલ પગલાંનું અનુકરણ કરી બીજા પંચો પણ પોતપોતાનાં બંધારણોની રચના કરી દેશે તો તે ઘણું સ્તુત્ય ગણાશે, અને ગુજરાત દિ. જૈન પ્રાન્તિક સભામાં થયેલ ઠરાવોનો કાંઇક અમલ થયો ગણાશે.

પંચનાં બંધારણો સંબંધી આ અગાઉ મહામંત્રીજી તરફથી તથા બીજા શુભેચ્છકો તરફથી ઘણી સુચનાઓ થઇ ગઇ છે, અને ઘણું લખાયું છે, એટલે તે બાબત અત્રે વધુ લખવું નિરર્થક છે, પણ તે બધું ધ્યાનમાં લઇને સુરતના પંચના પગલે બીજાં પંચો પોતાનો માર્ગ લેશે તો આગળ ઉપર વધુ સુધારાની આશા રાખી શકાશે.

આપણા સમાજમાં સંગઠન કરવાની ખાસ આવશ્યકતા છે, અને સંગઠનના પાયા રૂપ-મૂળ આધાર તરીકે-**આપણાં પંચોજ** છે, અને જો દરેક પંચ વ્યવસ્થિત અને સમયાનુકુળ હોય તો સમાજ સુધારનાં કાર્યો ઘણીજ સહેલાઇથી આગળ ધપી શકશે.

આપણી ગુજરાત દિ૦ જૈન પ્રાંતિક સભાના ઠરાવોથી, અને કાર્યવાહકોની પ્રેરણાથી અમુક અમુક પંચોએ ધીમે ધીમે સુધારા કરવા માંડયા છે, પણ હજુ તે જોઇએ તેટલા પ્રમાણમાં પુરેપુરી રીતે થયા નથી. માટે દરેક કોમના ભાઇઓ બીજાની રાહ નહિ જોતા પોતપોતાનાં પંચોનાં બંધારણો ઘડી કાઢશે, અને અમલમાં મુકશે તો તેમણે પોતાની કોમની સેવા બજાવેલી ગણાશે.

મેવાડા ભાઇઓએ પણ પંચની કાર્ય પ્રણાલીમાં ધીમો ધીમો સુધારો કરવા માંડયો છે તે પ્રશંસનીય છે. પંચ મળે તેમાં વારાફરતી એક પછી એક જણે ઉભા થઇને બોલવાની પદ્ધતિ આ વર્ષના લગ્નગાળામાં દાખલ થઇ છે તે સુધારાના એક પગથીયા રૂપ છે, પણ ગયા લગ્નગાળા વખતે મળેલ પંચમાં મંદિરના વહીવટ સંબંધીની ચર્ચામાં ગેરસમજુત થઇને જે ખોટો ઉહાપોહ થયો હતો તે હવે ભવિષ્યમાં ન બનવા પામે, અને મોટું પંચ મળી સમજીને બંધારણના ખરડા ઉપર વિચાર કરીને પોતાને અનુકુળ બંધારણ નક્કી કરશે, અને તેજ મુજબ દરેક ગામનાં પંચો પણ સુરતના પંચની માફક પોતપોતાને અનુકુળ બંધારણો દાખલ કરશે તો મારૂં લખવું કૃતાર્થ થયેલું સમજીશ. **કાયમની શેઠની પ્રથા** હવે તો કાઢી નાંખીને નવા બંધારણપૂર્વક પંચ કમેટીની રચના કરવાની ખાસ આવશ્યક્તા છે. વર્તમાન સમય ક્રાન્તિનો છે, અને દરેક મનુષ્ય ક્રાન્તિને આરે એકત્ર થયેલ છે તેવે સમયે આપણે પણ કાંઇક સુધારા કરી સમાજનું હિત આદરવાની જરૂર છે.

નરસિંહપુરા અને રાયકવાલનું જોડાણ.

કલોલમાં થયેલો લેખિત ઠરાવ.

સંવત. ૧૯૯૧ના. ઝાલાવાડી અખાડ વદ ૩ રવીવાર તા. ૨૯-૭-૩૪ના દીને શ્રી શંઘ. નરસીંહપુરાના નીચે શહીઓ કરનાર ગામો પંચ સમસ્ત તથા શ્રી શંઘ રાંયકવાલના નીચે શહીઓ કરનાર ગામોના પંચ સમસ્ત બન્ને મળી આજરોજ ઠરાવ કરીએ છીએ કે:—

૧—આપણે નરસિંહપુરા તથા રાયકવાળ બન્ને અત્યાર સુધી રોટી વહેવાર હતો પરંતુ બેટી વહેવાર નહોતો તેથી આજરોજ આપણે નીચે શહીઓ કરનાર ગામના પંચો એકઠા થઇ ઠરાવ કરીએ છીએ કે—

આપણે આજરોજથી કન્યા આપ લેનો વહેવાર અરસ પરસ ચાલુ કરવાનો ઠરાવ કર્યો છે તે પ્રમાણે જેણે જેણે અનુકુળતા આવે તેણે તેણે અરસપરસ કન્યા આપ લે કરવાનો ઠરાવ કરવામાં આવે છે.

૨—આપણુ બધાને અનુકુળ આવે તેવા સમાજના ધારાધોરણના ઇલાયદા મુસદા મુજબ ઠરાવો સર્વાનુમતે પાસ કરવામાં આવ્યા છે, તે અને બાકીના ઠરાવો હવે પછી બીજી બેઠકમાં લાવવામાં આવશે તે બધા ઠરાવો પાસ કરી આખરના અમલમાં મુકવા સર્વાનુંમતે ઠરાવશે ત્યારથી તે અમલમાં આવશે ત્યારથી તે ઠરાવો મુજબ વર્તવાનું છે.

આપણે ચાલુ થએલો વહેવાર પરમાત્મા દીન પ્રતિદીને ઘણાજ ભાતૃભાવથી ચલાવે ને ઉત્તરોત્તર આપણી બધાની ઉન્નતિ થાય તેવા શુભ હેતુથી આપણે બધા એકત્ર થયા છીએ. આ લેખ કલોલ ગામમાં નીચે સહીઓ કરનાર ગામોના પંચો રૂબરૂ લખ્યો છે જેથી દરેક ગામના થડા પ્રમાણે મુખ્ય માણસોની સહીઓ કરવામાં આવી છે.

નોટ—સુરત તથા આમોદના પંચોને બોલાવવાને કાગળો લખવામાં આવેલા પરંતુ તેઓ આવી શકયા નથી તેથી તેઓની સહીઓ તેઓ આવેથી તેમની સહીઓ લેવી.

કલોલ.

વખારીઆ તારાચંદ ગુલાબચંદની શહીદા. વખારીઆ ચંદુલાલ તારાચંદ

વખારીઆ અમથાલાલ ભાઇચંદની શહી દા- છોટાલાલ અમથાલાલ

શા. વમળશી નાનચંદની શહી દા. કેશવલાલ

શા. દલીચંદ અમુલકની સહી દા. ખુશાખીદાસ દલીચંદ

શા. નરોતમદાસ પરભુદાસની સહી દ. પોતે જહેર

શા. જમનાદાસ પરભુદાસની સહી દા. પોતે

શા. હેમચંદ વમળદાસ સહી દા. પોતે

શા. બાલચંદ ગુલાબચંદની સહી દા. પોચાલાલ બાલચંદ

પરી. ઇશ્વરલાલ હરચંદની સહી દા. પોતે

શા. પરશોતમ હરચંદ સહી દા. પોતે

શા. ચીમનલાલ નરસીંહદાસ સહી અમદાવાદ

સંઘવી રીખવલાલ નરોતમદાશની સહી. દા. ગાંડાભાઇ રીખવલાલ નરોડા

શા. ઉગરચંદ નરોતમદાસની સહી. દા. પોતે

શા. ચુનીલાલ દેવચંદ સહી દા. પોતે

શા. ભીખાભાઇ બહેચરદાસ સહી દા. પો. વાંચ

શા. ફુલચંદ મગનલાલ સહી દા. પોતે વાંચ

શા. ત્રીભોવન વીરચંદ ,, ,, પાલડી

શા. ગોરધનભાઇ ગીરધર સહી દા. પોતે મહીજ

,, મુલચંદ ફુલચંદ ,, ,, અસલાલી

,, ફુલચંદ દ્વારકાદાસ ,, ,, ભાયલી

,, મુલચંદ ગુલાબચંદ ,, ,, સોજીત્રા

,, બેચરદાસ ખુશાલદાસ ,, ,, વ્યારા

,, અમૃતલાલ જગજીવનદાસ ,, મહુવા

,, તલકચંદ દલીચદ સહી દા. પોતે વ્યારા

પર્યુષણ અને આપણું કર્ત્તવ્ય.

(લે.:—મોહનલાલ મ. શાહ. કંપાલા, આફ્રીકા)

ભારત વર્ષનો એવો એક પણ મનુષ્ય નહિ હોય, કે—જે જૈનોના પર્યુષણ પર્વને ન જાણતો હોય! મહાવીૈ સ્વામીએ કેવળજ્ઞાન પ્રાપ્ત થયા પછી વિહાર કર્યો, તે વખતે તેમણે જગતને સિદ્ધ કરી બતાવ્યું છે, કે—**જૈન ધર્મ, એ એકજ ધર્મ શંકા રહિત છે.** તે અનેકાંત-વાદ (સ્યાદ્ વાદ)ના અમુલ્ય સિદ્ધાંતને માનનારો હોઇ, **મનુષ્ય માત્રને મુક્તિના રસ્તા તરફ લઈ જનારો છે.**

વર્તમાનમાં તેના ગમે તેટલા ફાંટા પડી ગયા હોય! જુદા જુદા માણસોએ તેમાં ગમે તે મિથ્યાત્વ ઘુસાડી દીધું હોય! ધર્મ એ શબ્દની નીચે અજ્ઞાન માણસોથી ગમે તે જાળ રચાઇ હોય! છતાં, એટલું તો માનવું પડશે, કે **જૈન ધર્મ હજી તેના મુળ સિદ્ધાંતથી જરા પણ ખસ્યો નથી.**

આચાર્યોએ ક્રિયાકાંડ અને આચારના, પૂજાના અને ભક્તિના ગ્રંથોમાં ગમે તેમ ફેરફાર કર્યા. ગમે તે તુત ઘુસાડી દીધું, મૂર્તિની માન્યતા અને અમાન્યતા ઉભી કરી, ટંટા ઉપસ્થિત કર્યા. વસ્ત્ર અને અવસ્ત્રનો ભેદ પાડી, વિખવાદ વધારી દીધો, છતાં જૈનધર્મ જે મહાવીર પિતાની દિવ્ય ધ્વનિ દ્વારા બહાર પડેલો છે, તેમાં **આત્મજ્ઞાનની સાથે તત્વજ્ઞાન** અને યોગનું જે વર્ણન આપેલું છે, કે—જે બીજા ધર્મમાંથી નાશ પામેલા તત્વજ્ઞાનની તુલનાએ, હજારો તો શું પણ, કરોડો દરજ્જે માનવા લાયક છે.

જગતના પૂર્વ અને પશ્ચિમ બે ભાગ પડી ગયા છે. તે વખતે પણ પૂર્વના દેશોમા જૈન ધર્મ પ્રચારક સિવાય પણ પૂજાય છે, એજ એના અમુલ્ય તત્વજ્ઞાનની સાબિતી છે.

આર્ય સમાજ અને વેદાંત ધર્મના હિસાબે જો જૈન ધર્મનો પ્રચાર યુરોપ અને અમેરિકામાં થાય, તો તો એવો એક પણ મનુષ્ય ન રહે, કે જે જૈન ધર્મથી વિમુખ હોય!

જૈનીઓએ પોતાની શક્તિ અને સ્થિતિનો વ્યય ચાલુ સમયમાં જે કલુષિત વાતાવરણમાં કરવા માંડ્યો છે, તે દેખી એક હાય! નો ધિક્કાર નાંખ્યા સિવાય રહી શકાતું નથી.

મહાવીર સ્વામીનાં પાંચે પાંચ કલ્યાણક માનનારા જૈનો માટે, જૈન તીર્થ-મંદિર અને આગળ પૂજા અને પાછળ પૂજા માટેની તકરાર માટે કોર્ટે જવું તે કેટલી નાદાનીયત છે, તેનો વિચાર પાઠકોએજ કરી લેવાનો છે.

તીર્થ અને મંદિર એક એવી સ્થાવર મિલ્કત છે, કે—જેના માલિક જૈન નહિ પણ મનુષ્ય માત્ર છે.

જ્યારે મંદિરોની પ્રતિષ્ઠા કરવામાં આવે છે, તેની પ્રશસ્તિ (દાનપટ) કે—ધર્મપટ ઘડાય છે. તેમાં ચોકખું કહેવામાં આવે છે. કે—આ મંદિર અમુક વર્ષે, અમુક શ્રાવક તરફથી, અમુક આચાર્યના ઉપદેશથી બનાવવામાં આવ્યું છે, અને તે, અમુક તિથિએ, મનુષ્ય માત્ર નહિ પણ, પ્રાણી માત્રને ધર્મ લાભ લેવા માટે ખુલ્લું મુકવામાં આવ્યું છે. તો હે, જગતના જીવો! તમો આવો! અને આ ધર્મ સ્થળનો લાભ લઇ પુણ્ય પ્રાપ્ત કરો!

ઉપર પ્રમાણેના દાનપટ, જે આચાર્યો લખાવે, તે આચાર્ય, અને જે શ્રાવક લખે, તે શ્રાવક, શું તે મંદિરના માલિક હોઇ શકે!

હા! જે મંદિરો ખાસ શ્રાવકના ઘરમાંજ હોય! જેની વંદના—પૂજા, અને તે નિમિત્તનો ખર્ચ, તે શ્રાવકજ ઉપાડી લેતો હોય! તો તે મંદિરનો તે માલિક ગણી શકાય! અગર તો, જે મંદિરો કોઇ પણ એક ગામની પંચાયતે બંધાવેલાં હોય! તે મંદિરો તે ગામની પંચાયતની મિલ્કત ગણી શકાય, બાકી, જે મંદિરો કે તીર્થો, અમુક ધર્માત્માઓએ, પોતાનાં દુષ્કર્મના ક્ષય નિમિત્તે-પોતાની સંપત્તિને સદ્‌માર્ગે ખર્ચ કરવાના નિમિત્તે બંધાવી, જગતને અર્પણ કરેલ છે, તે મંદિરો કોઇપણ એક ધર્મ-સમાજ-પંચ કે-મનુષ્યની મિલ્કત કેવી રીતે હોઇ શકે!

પૂર્વના સમયમાં ઉદાર ધર્માત્મા શ્રાવકોએ બંધાવેલાં જિનાલયો અને ધર્મસ્થાનકો, મુસલમાન રાજ્ય કાળમાં પણ રાજ્ય તરફથી રક્ષા મેળવી, સચવાઇ રહ્યાં છે, તે બતાવી આપે છે કે-રાજા ગમે તે ધર્મ પાળતો હોય, છતાં પ્રજાને પોતપોતાને મનપસંદ ધર્મ પાળી ધર્મસ્થાનોનો લાભ મનુષ્ય માત્ર લઇ શકે, એમ દરેક રાજ્યકર્તા ઇચ્છે છે.

મહાવીરસ્વામી અને બીજા તીર્થંકરોના **સમવશરણ પણ, એજ હિસાબે પ્રાણી માત્ર માટે ખુલ્લાં હતાં. દરેક પ્રાણી તેમાં વિના રોકટોક બેસી શકતા રાજા કે રંક, દેવ કે મનુષ્યનો ત્યાં ભેદભાવ હતો નહિ. તેવીજ રીતે આપણાં ધર્મસ્થાનો મનુષ્ય માત્ર માટે ખુલ્લાં હોવાંજ જોઇએ! એ સુવર્ણ વાક્ય સફલ કરવામાં જે કોઇ વિખવાદ નાંખે, આનાકાની કરે, તે મનુષ્યપણાથી રહિતજ હોય, એ નિઃશંસય છે.**

વર્તમાન કાલ ક્રાન્તિનો છે, યુવકો દ્વારા સમાજની ક્રાન્તિ થવા લાગી છે, ધર્મ ક્રાન્તિની પણ જરૂર છે, તે યુવાનો દ્વારા થશે, પણ તે પહેલાં વૃદ્ધોની ફરજ છે, કે-પોતાનાં હૃદય વિશાલ બનાવી, ધર્મનું ક્ષેત્ર કે જે તેમણે હાલ સંકુચિત બનાવી દીધું છે, તેને વિશાળ બનાવે.

હજારો વર્ષથી આપણે પર્યુષણ પાળ્યાં, વ્રત કર્યાં, પાખીઓ પાળી, વરઘોડા કાઢયા, પ્રભાવનાઓ કરી, અને ક્ષમાપના પણ કરી, તેવીજ રીતે શાસ્ત્ર વાંચ્યાં-સાંભળ્યાં અને ભૂલી પણ ગયા.

અત્યાર સુધી, ગમે તેટલા ભેદભાવ છતાં, સમાજ અને ધર્મ, બન્ને સંપીને રહેતાં, પણ છેલ્લાં પચાસ વર્ષમાં કેટલાક સ્વાર્થપટુ પણ, અજ્ઞાન શ્રાવકો અને સાધુઓ દ્વારા આપણા ધર્મનું નામ કીચડમા ઘુસી ગયું છે. તેમાં છિદ્રો રૂપી-ભાગ એટલા તીવ્ર બની ગયા છે તે છિદ્રો નાવને સાતમા પાતાળે (આપણે ચેતીશું નહિ તો) પહોંચાડશે, માટે આ પર્યુષણમાં આપણું કર્તવ્ય છે કે આપણે આપણા ધર્મને વ્યવસ્થિત બનાવવા માટે અને જૈન માત્રને એકત્ર થવાના ઉદ્દેશ્યને માટે નીચે પ્રમાણે ઉપાયો લેવા જોઇએ-

૧-પર્યુષણ પર્વ ત્રણ ફિરકાનાં ત્રણ ઉજવાય છે, તેને બદલે ત્રણે ફિરકાના સરખા વિદ્વાનો એકત્ર થઇ કોઇ એવા દિવસ મુકરર કરે કે જે ત્રણે ફિરકાવાળા સરખા સ્નેહથી પાળી શકે!

૨. દેવપૂજા અને ગુરૂપૂજા એમ પૂજાપાઠ વર્તમાનકાળે બે પ્રકારથી થતા જોવામાં આવે છે. તેને બદલે વિદ્વાનોએ તેનો તોડ એવી રીતે લાવવો કે પૂજા કોઇ પણ પ્રકારની કે કોઇ પણ ફિરકાવાળાની હોય, પણ તે પૂર્વે થઇ ગએલા તીર્થંકર, કેવલી કે-સિદ્ધ પુરૂષોની ગુણપૂજા હોઇ શકે.

૩. ધર્મ મંદિરો-પછી તે ગમે તે ફિરકા કે ગમે તે પ્રભુનાં હોય, પણ તે મનુષ્ય માત્રને ધર્મ ક્રિયા દ્વારા આત્મકલ્યાણ સાધવાની વાટિકાઓ છે, તેમાં એવી સગવડ હોવી જોઇએ, કે-મૂર્તિને માનનારો વર્ગ જેટલી સગવડથી ધર્મક્રિયા કરી શકે, એટલીજ સગવડથી મૂર્તિને નહિ માનનારો વર્ગ પણ ધર્મક્રિયા કરી શકે! એટલે કે-ગૃહસ્થનાં ષટ્કર્મ જેવાં કે—

દેવપૂજા ગુરૂભક્તિ, સ્વાધ્યાય-સંયમ-તપ;
દાન દેવું ગૃહસ્થોએ, ષટ્કર્મ પ્રતિ દિને.

ગૃહસ્થ પુરૂષ કે સ્ત્રી ઉપરનાં છ કર્મ કરવા પ્રતિદીન વાસ્તવિક રીતેજ બંધાએલા છે, એમાં કોઇપણ ધર્મ-સંપ્રદાય કે ફિરકાનો ભેદ નડી શકતો નથી, માટેજ ધર્મ મંદિર એવાં વિશાળ બનાવવાં જોઇએ, કે-જેથી ત્યાં જઇ દરેક ગૃહસ્થ પોતાને પ્રિય ધર્મ-કર્મ કરી શકે. અગાસ સ્ટેશન નજીક શ્રીમદ્ રાજચંદ્રના નામ નીચે તૈયાર થયેલું સનાતન જૈન મંદિર આ કોટીનું કંઇક અંશે ગણી શકાય ખરૂં, પણ તેમાંથી વધારે પડતી રાજચંદ્ર તરફની પક્ષપાત વૃત્તિનો નાશ થવો જોઇએ.

૪-ક્ષમા એ મોક્ષનો ભવ્ય દરવાજો છે. એ મહા સુત્ર આપણે જૈનોએ ભુલવું જોઇતું નથી. તીર્થંકરોએ દરેક વખતે જૈન એકલાં કે-મનુષ્ય એકલાને નહિ પણ જીવ માત્રને બોધ આપેલો

છે. પોતે એવા ગંભીર અને ક્ષમાદિ ગુણ યુક્ત બન્યા છે, કે—તેમની છાંયમાં, વાઘ અને બકરી. સાપ અને નોળીઓ, દેવ અને દાનવ, ઉંદર અને બિલ્લી એ સઘળા જીવ સ્વાભાવિક વેરને પણ ભુલી જઇ, ધર્મ-સભામાં સાથે બેસીનેજ ધર્મોપદેશ સાંભળતા. વર્તમાન કાળે આપણે જૈનોએ એ મહાપુરૂષના નામ પાછળ આપણે જે વિખવાદ અંદરો અંદર ઉભા કર્યા છે, તે ખરેખર પશુવૃત્તિનાજ ગણી શકાય! જૈન ધર્મસ્થાનોએ પ્રાણી માત્રની સંપત્તિ જાણવા છતાં, તેની પાછળ 'અહિંસા પરમો ધર્મ' માનનારા જૈનો અંદરો અંદર મારામારી કરી લોહી વહેવડાવે, પરદેશી સરકારની અદાલતોમાં લાખો રૂપિઆ સમાજના ખર્ચ કરે, એ કેટલી શરમની વાત છે, તેનો ખ્યાલ વાંચકોજ કરી લેવો, માટે આ પવિત્ર દિવસોમાં તે ઝગડાનો નિકાલ તટસ્થ વિદ્વાનો દ્વારા લાવી જૈન માત્રને એકત્ર કરવાની ભાવના સેવવી જોઇએ.

૫—ચોથ કે પાંચમના ભેદ કે-આંગી પુજાના ભેદ હવે ભુલી જવા જોઇએ.

કોઇ આપણાજ ગુરૂઓએ એ બધા મત ભેદ પાડયા હોય, તેથી તે કેવલી પ્રણિત છે, એમ માની લેવાનું નથી, પણ ખરી રીતે તો વીતરાગ પ્રભુ નિરંજન નિરાકાર છે એ સમજવા પછી વીતરાગતા ઉપજે તેવા મંદિરોમાં વીતરાગ ભાવ આવે તેવી રીતેજ ભક્તિ પુજા થવી જોઇએ,

વીતરાગ પ્રભુનાં ધામ વિલાસ મંદિર જેવાં થવા ન દેવાં એ વર્તમાન જૈન યુવકની પહેલામાં પહેલી ફરજ છે.

૬—બાર કે તેરવ્રત-ચોદ કે સોલ સ્વપ્ન-અમુક પ્રભુ પરણેલા અને અમુક કુંવારા, સ્ત્રીને મુક્તિ અને નહીં મુક્તિ એ અને બીજા કર્મ-કાંડોના ભેદો માટે જૈનો અંદરો અંદર જૈન શાસ્ત્રો ઉપર આક્ષેપ કરી, કેટલાંક ખરાં સૂત્રોના ખોટા અર્થ ન કરે, એજ જૈનો માટે જરૂરનું છે. અને તેથી એવું થવું જોઇએ, કે-આત્મજ્ઞાન કે આચાર શાસ્ત્ર ગમે તે ગ્રંથ પર, તે જૈન શાસ્ત્ર છે, એમ લખતાં પહેલાં તેને ત્રણે ફિરકાના વિદ્વાન પંડિતોની વગદાર કમીટીમાં પાસ કરાવવું જોઇએ.

૭—સગીર (બાળ) દીક્ષા સદંતર બંધ કરી, તેના પર શ્રી સંઘે અંકુશ મુકવો જોઇએ. વર્તમાન કાળે મુનિ દીક્ષા કરતાં બ્રહ્મચારી કે—ઐલક ક્ષુલ્લક કે—ઉદાસીન દીક્ષા સાધી શકાય તેવો છે, માટે મુનિ બનાવતા પહેલાં બધી રીતે તેની લાયકાત તપાસી પછીજ તેને મુનિપદ આપવા શ્રી સંઘે અનુમતિ આપવી.

૮—જૈન ધર્મી દરેક, જૈન સામાજીક બંધારણમાં જોડાય એજ જૈન ધર્મની ઉન્નતિમાં શ્રેયસ્કર છે. પરંતુ તેટલું બની શકે તેવી સ્થિતિ ઉત્પન્ન ન થાય ત્યાં સુધી દિગંબર જૈનોની પેટા જાતિઓમાં પરસ્પર રોટી-બેટી વહેવાર જોડવા આ પવિત્ર દિવસોમાં પ્રતિજ્ઞા લેવી જોઇએ.

ઉપર પ્રમાણે આ પર્યુષણ પર્વમાં જૈનોએ જૈન ધર્મના નાવને ઉપરની આઠ સુધારા રૂપી ગુણોથી સુધારી જૈન તંત્રને ઉજ્વલ બનાવવું જોઇએ.

પર્યુષણ પર્વનો અર્થજ ક્ષમાપન છે. પ્રથમ દિવસજ ઉત્તમ ક્ષમાના નામથી પુજાય છે. ક્ષમા ભાવ આવ્યા સિવાય બીજા ભાવ આવી શકતા નથી અને ક્ષમા સિવાયનાં ધર્મ કાર્ય પણ કંઇજ શ્રેય કરી શકતાં નથી, માટે વર્તમાન કાળે દરેક જૈને પોત પોતાના ગામમાં એકત્ર થઇ આ પર્યુષણના પવિત્ર દિવસોમાં ક્ષમા ગુણ ધારણ કરી જૈન માત્ર જગતમાં એકત્ર કેવી રીતે બને તેનો વિચાર કરી, તે પ્રમાણે વર્તન કરવા કટિબદ્ધ થવું જોઇએ, એજ ભાવના ભાવવા હૃદયને કેળવવું જોઇએ, જૈન માત્ર આ ભાવના ભાવે તો જૈન સમાજને ઉજ્વલ થતા જરાપણ વાર લાગે નહિ. પ્રભુ તે દિવસ જલ્દી લાવે કે ભારતવર્ષમાં જૈનો અંદરો અંદરનું વૈમનસ્ય ભુલી જઇ એકત્ર થાય અને મહાવીર સ્વામીની કીર્તિ ઉજ્વલ કરે.

એ કયારે ભુલશો ?

નૃસિંહપુરા ભાઇઓને નમ્ર વિનંતિ.

નૃસિંહપુરા ભાઇઓનું કલોલ, ઝેર વગેરે પાંચ ગામોનું પંચ ફરીથી કલોલ મુકામે રાયકવાલ ભાઇઓને અપનાવવા વગેરેના કામ માટે ખબર મળવા પ્રમાણે અષાઢ સુદ ૩ થી મળ્યું હતું, કહાનમ તથા સુરતના પંચોને પણ એ સંબંધી વિચાર કરવામાં સામેલ થવા એકદમ હાજર થવાનાં આમંત્રણ હતાં. એકજ ગામ કે શહેરમાં રહેતા ભાઇઓ તાત્કાલીક એકઠા કરી શકાય. આ તો જુદા જુદા ગામડાઓમાં રહેતા ભાઇઓને એકઠા મેળવી તેમની સમંતીથી પ્રતિનીધિઓ ચુંટીને મોકલવાના, એ બધું કરવાને કાંઇક પાંચ દીવસનો સમય તો જોઇએ. દેખાવ કરવા પુરતા આમંત્રણના વિનયને એ બે પંચો માન આપી શકયાં નથી, જ્યારે રાયકવાળ ભાઇઓ સાથે પંચના આગેવાનોને પ્રથમ મળવાનું થયું અને પાંચે ગામનું પંચ મેળવવાની મુદત નક્કી કરવામાં આવી ત્યારેજ રીતસરનું આમંત્રણ આ બન્ને પંચોને આપવામાં શું વાંધો હતો ? ભલે, પાંચ ગામનું પંચ મળ્યું, બધા એકમત થયા પછી બીજા બે પંચોને બોલાવવાનું સર્વાનુમતે ઠર્યું હશે. જરૂર હોય તેવી બાબતોમાં પણ બે જણને બોલાવી વિચાર કરવામાં માન અપમાનની લાગણીઓ ભારે વિઘ્ન નાંખી રહી છે, તેનું એ સિધ્ધું પરીણામ છે.

રાયકવાલ અથવા બીજા દિગંબર ભાઇઓ સાથે અમુક બંધારણ એકત્ર થવાની વાતમાં કાંઇ મુશ્કેલી નથી. ખાસ મુશ્કેલી તો સમાજમાં ઘર કરી બેઠેલા ઝઘડાઓની છે. ઝેર, નરસીંહપુરવાળા ભાઇઓ સંબંધી સુરત કોન્ફરન્સ વખતે નિમાયેલા બે ગૃહસ્થોનું નિવેદન બહાર પડી ચુક્યું છે, તે સંબંધી સાતે ગામનાં પંચો અંદરખાનેથી એક મત છે, આવી વાંધા ભરેલી વાતો પંચના ચોપડે સાચવી રાખવાની વિધ પુરતો હવે વાંધો રહ્યો છે. જ્યારે બધા પંચો કાંઇ ખાસ ખટપટ કરાવ્યા શીવાય લાંબા વખતનો વિરોધ ભૂલી જવા તૈયાર થાય ત્યારે નરસીપુર પક્ષના ભાઇઓ, એટલી વિધી અમલમાં મુકવા પુરતી ઉદારતા બતાવે એ જરૂર ઇચ્છવા જોગ છે. એક મીયાંભાઇ—જમાઇ સાસરે ગયા હતા. સામાન્ય મુસલમાન ભાઇઓમાં મ્હોટા ન્હાનાના ભેદ રાખ્યા શીવાય એકજ ભાણામાં જમવા બેસવાનો રીવાજ હોય છે. સસરો જમાઇ સાથે જમવા બેઠા. સાસુએ સન્માનની ખાતર જમાઇ તરફથી વધુ પીરસ્યુ, સસરાએ એક યુક્તિ કરી. દેખો ઉસ્માન મીયાં તમારા બાપે તમને આમ કર્યું, એમ કરી જમણા હાથની આંગલીથી ભાણામાં ઘી ભરેલા ભાગમાંથી એક ઉભી લીટી પોતાના તરફ ખેંચી. તમારી માએ હમને તે દિવસે બહુ ગાળો દીધી. આમ બે ચાર ગુન્હાઓની દલીલો કરતાં કરતાં જમાઇ તરફનું ઘી પોતાના તરફ ખેંચી લીધું. જમાઇ ડાહ્યો અને વિચક્ષણ હતો, તેણે જોયું કે ડોશાએ આબાદ યુક્તિ કરી છે. જમાઇએ જવાબ આપ્યો-હશે ભાઇસાબ હમ કયા કરે !" "આજસે સબ સફા ચટ" એમ કરીને આખા ભાણામાં ગોળ આંગળી બે ત્રણ વખત ફેરવી દીધી. સસરો જમાઇ એક બીજાને સમજી ગયા, અને ઝગડાનો નિકાલ કરી નાખ્યો, આપણા ભાઇઓ પણ આવી મીયાંભાઇની લડાઇ લડવા બેઠા છે, તેને સફાચટ કરેજ છુટકો છે. જેટલો વધારે પડતા પાઠ ભજવાય છે તેટલો બગ, બુદ્ધિનો નિરર્થક વ્યય છે.

કાયદો અને બંધારણ (Law & order) ના બ્હાના નીચે કલેશ કર્યા કરી, જેનાથી આખો સમાજ દુખી થાય એવી વાતોને અમલમાં ન મુકતાં લંબાવ્યા કરવી એ કઇ જાતનું ડાહાપણ ! વામજવાળા ભાઇ મુળચંદના સંબંધમાં પહેલાં એક વખત વામજ મુકામે એ ભાઇની અરજથી પંચ મળ્યું હતું. તે વખતે બીજું પંચ મેળવવાનો વાયદો કરી વાત ઉંચે મુકી. ફરીથી પંચ મળ્યું તો પણ એક વાતનો પણ નિકાલ નહિ. પંચોની આવી ખોખરી ન્યાય પદ્ધતિ કયારે સુધરશે ?

ખોટા માનપાન અને કુંપદભર્યા સ્વાર્થોને વેગળા મુકવામાં આવે નહિ ત્યાંસુધી પંચો કદી પણ ન્યાય પદ્ધતિ સ્વીકારી શકશે નહિ. પૈસે ટકે, અને વ્યાપાર રોજગારમાં આપણી કોમ સ્વાભાવિક રીતે હલકી છે, તેમાં વળી આવો વિખવાદ ઘર કરી બેઠો છે. અને તે વિખવાદ આપણા વહેપાર રોજગારમાં હવે વિઘ્નકારક થવા માંડયો છે. લાયક વર-કન્યાઓ મેળવવાની મુશ્કેલી વધતી જાય છે. ક્લેશથી પણ કેટલાંએક કુટુંબોના કેળવાયેલ છોકરાઓ જરૂર નાલાયક બનવાના છે. તેમનું માનસ ક્લેશમય બનવાનું. બી. એ. થાય કે વકીલ, શિક્ષક થાય, જ્યાં પેચની વાત આવી કે, જેમ એમના બાપદાદા લડતા આવ્યા છે તેમાં તેમની તીક્ષ્ણ બુદ્ધિનો ઉપયોગ કરી લડાઇને વધારે તીવ્ર બનાવવામાં મદદગાર થતા હાલ તો નજરે પડે છે. નહિ તો આજના કેળવાયેલ યુવાનો જો સમજે તો આવા નિરર્થક ઝગડાઓ એક પણ દિવસ ટકે એમ નથી. દેશદેશમાં જ્યારે યુવાન વર્ગ રાષ્ટ્રીય ભાવનાથી પ્રેરાઇને ઉન્નતિ તરફ પ્રયાણ કરી રહ્યો છે ત્યારે આપણા યુવાનો હજી સમાજના નાના વાડાના ઝઘડા દૂર કરી શકતા નથી એ કેટલી બેહુદી છે? જ્યારે ત્યારે જુની પદ્ધતિના ઝઘડા જમાવવાના કાવાદાવા અને ઝીણી ઝીણી સ્વાર્થ-હાનિની લાગણીઓને ભુલી ગયેજ છુટકો છે. લગભગ પંદર દીવસ નિરર્થક ખટપટ કરી, આસો માસમાં બધા નૃસિંહપુરા પંચોને તારંગા મુકામે મેળવવાનો ઠરાવ કરી કલોલ મુકામે મજેનું પંચ વેરાયું છે. આગળ દશ લક્ષણ ધર્મ સાધવાનો વખત આવે છે, તો તે દરમ્યાન બધા ભાઇઓ જુના કાવાદાવા વીસરી જઇ ઉત્તમ ક્ષમા વ્રતને શોભાવશે, એવી કાંઇક આશા બંધાય છે.

આખો દિગંબર જૈન સમાજ એકત્ર થવાનાં કાંઇક ચિન્હ નજરે પડે છે. તેમાં જો નૃસિંહપુરા ભાઇઓ પોતાની સ્વાર્થની ભાવનાઓથી પ્રેરાઇને ક્લેશ નહિ છોડે, તો તે શુભ કાર્યમાં વિઘ્ન નાખવાનો દોષ તેમને શીરે જરૂર પડશે.

—નાગરદાસ.

મધુવનનો મહિમા.

વૃક્ષો ઉંચાં ગગન ચુંબીત હોંશ ધારી,
ઉંચે ઉંચે ચઢી જતાં નજરે નિહાળી;
ઉંચે જવાનું અહિંઆં દિસતું વિધાન,
જ્યાં જ્ઞાન, વીર્ય, સુખ, સંપત્તિનાં વિધાન.—૧

પામ્યા પ્રભૂ સહજ જ્ઞાન, વિરાગ થાતાં,
આદર્શ મુક્તિ ભવ પંથ કપાઇ જાતાં;
જ્યાંથી સુબોધ પ્રદ જ્ઞાન સુધા પ્રસારી,
જ્યાંથી અમારી વ્રત ગર્જન કીધું ભારી—૨

ત્યાં ગીત ગાય મધુરાં, સૌ પક્ષી સાથે,
કુદરત તણા હૃદય વેધક દ્રષ્ય ઓથે;
વાયુ સુગંધીત વહે, શ્રમ હારી મીઠો,
સૌંદર્યવાન ગિરિ શિખરરાજ દીઠો.—૩

સૌ વર્તમાન તિર્થંકર દેવ સાખે,
આ પૂજ્ય ભુમી અર્વાનતળમાં વિરાજે;
એકાંત, શાંત, રમણીય, નિવાસમાં આ,
વિસરાય કયમ નહિ દુ:ખ સહુ જનોનાં.—૪

—નાગરદાસ.

દિ. જૈન વીસામેવાડા મદદ ફંડ.

આપણી વીસામેવાડા કોમમાં ઘણાં કુટુંબો એવા છે કે પોતાનાં સંતાનોની મેટ્રીક પછીની કેળવણીનું ખર્ચ પોતે ઉપાડી શકે નહિ. આપણી કોમ કેટલાંક એવાં ગામોમાં વસેલી છે કે જ્યાં અંગ્રેજી કેળવણીની બીલકુલ સગવડ નથી અને નજીકમાં વિદ્યાર્થીઓને રહેવા માટે બોર્ડીંગો પણ નથી. કેટલાંક કુટુંબો અને કેટલીક વિધવા બ્હેનો એવી નીરાધાર છે કે જેઓને નિર્વાહનાં કોઇપણ જાતનાં સાધનો નથી. આપણી અને ગુજરાતની અન્ય દિગંબર કોમોની કેળવણી સંબંધી અગવડો દુર કરવા મુંબઇના દાનવીર શેઠ માણેકચંદ પાનાચંદે અમદાવાદ તથા મુંબઇમાં બોર્ડીંગો ઉઘાડી કોમને ઉચ્ચમાં ઉચ્ચ એવા વિદ્યાનાં દાન દીધાં અને દાનની દીશા બદલવામાં પહેલ કરી અને દાનવીરોને અને ધર્મપ્રેમી પુન્યશાલી પૈસાવાલાઓને બતાવી આપ્યું કે સૌથી સારામાં સારૂ દાન વિદ્યાદાન છે, પરંતુ અફસોસની વાત છે કે તેમણે બોર્ડીંગો કાઢયાં ને આજકલ કરતાં ત્રીશ વર્ષ થયા છતાં આપણી કોમ તરફથી તે દીશામાં આજ સુધી કોઇપણ જાતનો પ્રયત્ન સુદ્ધાં પણ થયો નથી. તેમની બોર્ડીંગોનો સૌથી વધારે લાભ જો કોઇએ લીધો હોય અને અત્યારે લેતું હોય તો તે આપણીજ કોમ છે પરંતુ બોર્ડીંગો એ અને લાભ લેનાર વિશેષ એટલે આપણી કોમના દરેક વિદ્યાર્થીને તેનો લાભ મળવો હવે શક્ય નથી તેથી કરમસદના વતની અને મુંબઇમાં રહેતા રા. રા. શાહ ત્રીભોવનદાસ રણછોડદાસના પ્રયાસથી તેમના પુજ્ય કાકાશ્રી મોરડના મરહુમ શેઠ શીવલાલ તુળશીદાસે રૂપીઆ ૫૦૦૦) મેવાડા મદદ ફંડ માટે જુદા કાઢયા અને તેની વ્યવસ્થા તેમના ટ્રસ્ટીઓ લગભગ દશ વર્ષથી કરતા આવ્યા છે. રૂપીઆ પાંચ હજાર જેવી નજીવી રકમ આપણી કોમ માટે પુરતી નહિ હોવાથી આ વર્ષના લગનગાળામાં કોમના કેટલાક સમજુ અને શુભેચ્છકોની પુરતી મદદને લઇ આપણી કોમની ઉપર જણાવેલી અગવડો દુર કરવા મેવાડા મદદ ફંડ સ્થાપવાનું નક્કી કરવામાં આવ્યું અને તેમાં તરતજ રૂ. ૩૨૭૪) નીચે જણાવેલા ગૃહસ્થોએ ભર્યા—

૬૦૧)	શાહ મોહનલાલ કાલીદાસ	મુંબઈ
૨૫૧)	શેઠ ત્રીભોવનદાસ રણછોડદાસ	,,
૧૫૧)	,, હરગોવનદાસ જીવાભાઇ	કાણીસા
૧૫૧)	,, ત્રીભોવનદાસ વલ્લભદાસ	,,
૧૫૧)	,, અંબઇદાસ જીવાભાઇ	સાયમા
૧૫૧)	,, દેવચંદ જીવાભાઇ	,,
૧૦૧)	,, ચીમનલાલ લલ્લુભાઇ	બોરસદ
૧૦૧)	,, ચંદુલાલ માણેકલાલ	,,
૧૦૧)	,, મંગળદાસ નાથાભાઇ	વેડચ
૧૦૧)	,, મનસુખલાલ ભાઇજીભાઇ	,,
૧૦૧)	,, છોટાલાલ ઘેલાભાઇ	અંકલેશ્વર
૧૦૧)	,, કાલીદાસ જેશીંગભાઇ	,,
	બીન કીશોરદાસ	બોરસદ
૧૦૧)	,, છગનલાલ તળશીદાસ	દાવોલ
૧૦૧)	,, મોતીલાલ તળશીદાસ	,,
૧૦૧)	,, શંકરલાલ તાપીદાસ	આમોદ
૧૦૧)	,, શેવકલાલ કેવળદાસ	,,
૧૦૧)	,, કાલીદાસ હરગોવનદાસ	,,
૧૦૧)	,, જેશીંગભાઇ ભાઇજીભાઇ	બોરસદ
૧૦૧)	,, વનમાળીદાસ હરખચંદ	બોચાસણ
૧૦૧)	,, કેવળદાસ રણછોડદાસ	કરમસદ
૧૦૧)	,, મુલચંદ હરીલાલ	સોજીત્રા
૧૦૧)	,, ઝવેરદાસ રણછોડદાસ	,,
૧૦૧)	,, બાપુજી ઇશ્વરદાસ	,,
૧૦૧)	,, મનસુખલાલ બેચરદાસ ચોકશી	બોરસદ
૩૨૭૪) રૂ.		

આપણી કોમમા ઉપર જણાવ્યા સીવાયના ઘણા શ્રીમંત ગૃહસ્થો તથા સન્નારીઓ છે કે જેઓ દરેક આપણા આ ફંડમાં સારી રકમો ભરી આપશે એવી ખાત્રી આપવામાં આવી છે. પરંતુ લગ્ન ગાળાની આખરે આ ફંડ માટે

'દિગંબર જૈન'નો આ અંકનો વધારો.

॥ ॐ ॥

॥ श्री त्यागधर्मांगाय नमः ॥

શ્રી દિગંબર જૈન શ્રાવિકાશ્રમ સોજીત્રા

આવણ સુદી ૧૫ ના

રક્ષાબંધનના પવિત્ર દિવસે—

અમારી રક્ષાનું બંધન સ્વીકાર કરશો

આજે આખા હિંદુસ્થાનના લોકો શા માટે પ્રસન્ન દેખાય છે? આજે સધવાઓ અને કુમારી કન્યાઓ થાળીમાં મંગળસુત્ર અને મિઠાઇ લઇને પોતાના ભાઇઓ પાસે કેમ જાય છે?

કારણ કે આજે શુભ રક્ષાબંધનનો દિવસ-બળેવ છે. આજ દિને મુનિ શ્રી વિષ્ણુકુમારે અકંપનાચાર્યાદિ ૭૦૦ મુનિયો ઉપર બળીએ છલકપટ કરી ધર્મસંકટ નાખ્યું હતું, તે સંકટને દુર કરી ધર્મની રક્ષા કરી હતી. પછી ગામના સ્ત્રીપુરૂષોએ નવધાભક્તિ સાથે તે મુનિઓને આહારદાન આપ્યું હતું, તે દિવસે તે લોકોના મનમાં પરસ્પર રક્ષા કરવાની ભાવનાઓ ઉત્પન્ન થઇ હતી, તે પવિત્ર દિવસની સ્મૃતિ માટે રક્ષાબંધન એટલે બળેવના રીવાજ ચાલે છે, બ્હેન ભાઇના હાથમાં રાખ (રાખડી) બાંધીને તેમને ધર્મરક્ષાનું સ્મરણ કરાવે છે અને ભાઇઓ પણ બ્હેનોને તેના બદલામાં અમુક કંઇ ઉપહાર (ભેટ) આપી યોગ્ય સત્કાર કરે છે.

આ કથનાનુંસાર તમોને કર્તવ્યપરાયણ જોઇ અમે તમારી પાસે રાખડી મોકલીએ છીએ. આશા છે કે અમારી રક્ષાનું બંધન સ્વીકાર કરી આપણી જૈન સમાજની બ્હેનોને અને વિધવાઓને સુખી કરવા પ્રયત્ન કરી રહેલી સંસ્થાની યાદદાસ્તીમાં યથાશક્તિ તનમન અને ધનથી સહાયતા કરી આશ્રમવાસિની બ્હેનોના અને અમારા આશાર્વાદ લેશો. એના ઉદ્દેશ પાછળ આપ્યા છે.

આપની શુભેચ્છક ધર્મભગિનીઓ—

ઠે૦ મનોરબાગ,
સોજીત્રા.
(વાયા—આણંદ.)

શ્રી. નહાની બ્હેન સંઘવી.
શ્રી. પ્રભાવતી બ્હેન ના

ધર્મસ્નેહ વાંચશો.

જૈન વિજય પ્રેસ—સુરત.

॥ ॐ ॥

શ્રી દિગંબર જૈન શ્રાવિકાશ્રમ સોજીત્રા

ના

નિયમ અને ઉદ્દેશ.

---

(૧) **આ આશ્રમનો મુખ્ય ઉદ્દેશ જૈન** સ્ત્રી સમાજમાં ધાર્મિક અને વ્યવહારિક જ્ઞાનનો પ્રચાર કરવા માટે યોગ્ય શિક્ષિકાઓ ઉપદેશિકાઓ તથા યોગ્ય ગૃહિણીઓ તૈયાર કરવાનો અને શ્રાવિકાઓને દિગંબર જૈન ધર્મના માર્ગ ઉપર સ્થિર રાખવાનો છે.

(૨) રૂ. ૧૦૦૧) અને એથી વધારે દાન આપનાર દાતારોનું નામ દ્રવ્યદાતારોના પાટીયા ઉપર સોનેરી અક્ષરોએ કાયમ રહેશે; અને રૂ. ૫૦૧) અને એથી વધુ આપનાર દાતારોનું નામ બીજા પાટીયા ઉપર સોનેરી અક્ષરે લખીને આશ્રમમાં કાયમ રહેશે. તથા તે રકમ સ્થાઇ ફંડમાં જમા થશે.

(૩) આ આશ્રમમાં સાત વર્ષથી ઓછી ઉમરની શ્રાવિકાઓ દાખલ થઇ શકશે નહિં.

(૪) આ આશ્રમમાં ભોજન ફીના માસીક રૂ. ૩) ત્રણ લેખે લેવામા આવશે અને કોઇને વિના ફીથી દાખલ થવું હશે તો વ્યવસ્થાપક મંડળની મંજુરી મંત્રી મારફત મેળવશે તો બની શકશે.

(૫) જે શ્રાવિકા ઓછામા ઓછા રૂ. ૫૦૧) પાંચસોને એક આશ્રમના સ્થાઇ ફંડમાં એકી વખતે આપશે તેની આશ્રમ જીવનપર્યંત રક્ષા કરશે.

(૬) પોતાને ઘેર રહી આશ્રમમાં ધાર્મિક અને વ્યવહારિક અભ્યાસ માટે આવનાર સ્થાનિક સ્ત્રીઓ પાસેથી કંઈ પણ ફી લેવામા આવશે નહિ. પરંતુ હા, જો તે કોઇ પ્રકારની સહાયતા આશ્રમને આપવા માંગશે તો ધન્યવાદ સહિત સ્વીકારવામાં આવશે.

(૭) જે શ્રાવિકા પોતાને ખર્ચે ધાર્મિક પુસ્તકો લાવી શકે તેમ ન હોય તો આશ્રમ તરફથી આપવામાં આવશે, પરંતુ તે પુસ્તકો આશ્રમ છોડતી વખતે પાછાં લેવામાં આવશે.

(૮) જે શ્રાવિકાઓ કંઇપણ નિયમિત પગાર લીધા વિના પરોપકાર માટે આશ્રમમાં રહીને અન્ય શ્રાવિકાઓનું ધર્મનું જ્ઞાન કરાવશે તથા સુમતિપર ચલાવશે તેમને ધર્મપ્રચારિકાના નામથી સંબોધવામાં આવશે.

મંત્રી, શ્રી દિગંબર જૈન શ્રાવિકાશ્રમ.

ઠે૦ મનોરૂબાગ, **સોજીત્રા.** (વાયા આણંદ.)

યાત્રના કરવા જવાનો વખત મળી શક્યો નહિ અને આપણે સોજીત્રાથી પાછા વીખરાઇ ગયા. કેટલાક ગૃહસ્થો લગ્નગાળા પ્રસંગે સોજીત્રા મધ્યે રેલા નહિ હોવાથી તેમની પાસે પણ જઇ શકાયું નહિ અને ફંડનું કામ અધુરૂં નહિ મુકવું પરંતુ ચાલુ રાખવાનો કેટલાક ભાઇઓનો આગ્રહ હોવાથી ફંડમાં નાણા ભરનારાઓની એક મીટીંગ તા. ૨-૬-૩૪ને રોજ કરમસદના શેઠ કેવળદાસ રણછોડદાસના પ્રમુખપણા નીચે ભરવામાં આવી જેમાં નીચે પ્રમાણે ઠરાવ કરવામાં આવ્યો:—

ઠરાવ—૧ આવતા લગ્નગાળા સુધી આ ફંડની વ્યવસ્થા કરવા માટે નીચે જણાવેલા ગ્રહસ્થોની વ્યવસ્થાપક કમીટી નીમવામાં આવે છે.

પ્રમુખ—શેઠ કેવળદાસ રણછોડદાસ કરમસદ
ઉપપ્રમુખ—,, કાળીદાસ જેશીંગભાઇ
બીન કીસોરદાસ બોરસદ
શેઠ મુલચંદ હરીલાલ સોજીત્રા
,, ત્રીભોવનદાસ રણછોડદાસ મુંબઇ
,, મંગળદાસ નાથાભાઇ વેડચ
,, ત્રીભોવનદાસ વલ્લભદાસ કાણીસા
,, છોટાલાલ પેલાભાઇ ગાંધી અંકલેશ્વર
,, મનસુખલાલ બેચરદાસ ચોકસી મુંબઇ
સેક્રેટરી—શાહ મોહનલાલ કાલીદાસ મુંબઇ

આ ફંડના ટ્રસ્ટીઓ તરીકે (૧) શેઠ કેવલદાસ રણછોડદાસ (૨) ચોકસી મનસુખલાલ બેચરદાસ અને (૩) શાહ મોહનલાલ કાલીદાસને નીમવામાં આવે છે.

ઉપર જે રકમો ભરાયલી છે તે બુજ રકમો છે. તે તો ફક્ત ફંડની સ્થાપના કરવા પુરતીજ છે કારણ કે આપણી કોમની આગળ પડતી એક પ્રતિષ્ઠીત પેઢીના સમજુ ભાગીદારો તરફથી એવી ખાત્રી આપવામાં આવી છે કે આવા ફંડ માટે એક સારી રકમ તેમની પેઢી તરફથી ટુંક સમયમાં કાયદાસર ટ્રસ્ટ કરી જુદી કાઢવામાં આવશે.

આપણી કોમમાં એવી સખી દીલની સન્નારીઓ પણ છે કે જેઓની એક વખત એવી ઇચ્છા હતી કે આપણી કોમ માટે વડોદરા જેવા મધ્યસ્થ સ્થળે બોર્ડીંગ કાઢી પોતાનું તેમજ પોતાના સદ્ગત પતિનું નામ અમર કરવું પરંતુ કેટલાક સંજોગોને લઇ તેમના આવા શુભ મનોરથો મનમાંજ રહી ગયા છે છતાં હવે આપણે આવી દિશામાં શરૂઆત કરેલી છે એટલે એ સન્નારીઓ તરફથી આપણે સારી મદદની આશા રાખી શકીએ છીએ.

આપણી કોમમાં ઘણી એવી સખી અને પુન્યશાળી વ્યક્તિઓ છે કે જેઓને મોટી રકમો ધર્માદા કરવાની ઘણા લાંબા સમયથી ઇચ્છા છે. પરંતુ તે કેવાં કામો માટે ખર્ચવી તે નક્કી નહિ કરી શકવાથી આજસુધી તેઓ કંઇ કરી શક્યા નથી, હવે આપણું મેવાડા ફંડ સ્થાપન થએલું હોવાથી આવી વ્યક્તિઓને ખાસ ભલામણ કરવામાં આવે છે કે પોતાની ઇચ્છાનુસાર આ ફંડમાં રકમો મોકલી આપી પોતાની દાન કરવાની ઇચ્છા તાબડતોબ બર લાવવી. કારણ કે શુભ કામો કરવામાં જરા પણ ઢીલ થવી જોઇએ નહી, નહીતો મનની ઇચ્છાઓ કેટલીક વખત અણધારેલી અગવડો અથવા સંજોગો આવતાં મનમાંજ રહી જાય છે. આજે આપણી સ્થીતિ સારી હોય તો આપણે કંઇપણ સારા કામમાં પૈસા ખરચી શકીએ. કાલે કોણ જાણે શું થાય અને આપણી સ્થીતિ બગડે, આપણે નિર્ધન પણ થઇ જઇએ તો પછી આપણાથી કંઇપણ સારૂં કામ થઇ શકે નહિ. આવા ઘણા દાખલાઓ બનેલા છે અને આપણે જાણીએ છીએ એટલે તે બાબત વધારે લખવાનું યોગ્ય લાગતું નથી. કેટલાક દાખલાઓમાં એમ પણ બને છે કે પેઢીઓથી સાચવેલી મીલકત કોઇપણ સારા કામમાં નહિ ખર્ચતા આખરે સંતાનોના અભાવે કોર્ટોમાં અથવા પારકા લોકોમાં તેનો વ્યય થાય છે. જીવતાં જે માણસ એક પાઇપણ કંજુસ સ્વભાવને લઇ નથી ખર્ચતો તે માણસની મરવા બાદ

તેની આખી મીલકત પારકાઓ બરબાદ કરે છે. નથી તેનું નામ કે નીશાન. પરંતુ મરણ બાદ લોકો તેની હાંસી કરે છે. માટે ટુંકમાં લખવાનું કે આવા ફંડોમાં આપેલા નાણાંનો સારો ઉપયોગ થશે, આપણી કોમનાં બાળકો ભણશે, નીરાધારોને આજીવિકા મળશે. ફંડ પુરતું થશે તો કોમ માટે બોર્ડીંગ ઉઘાડવામાં આવશે. બોર્ડીંગ માટે જોઇતી રકમ મળશે તો પુરતી રકમ આપનારના નામે બોર્ડીંગ ખોલવામાં આવશે. માટે જે ભાઇ બ્હેનોથી બની શકે તેમ હોય તેમણે ઉપરની બાબતો ધ્યાનમાં લઇ કંઇ નહિ તો પોતાનું નામ અમર કરવા ખાતર પણ સારી રકમો આ ફંડમાં ભરી મોકલશો એવી આશા છે.

આ ફંડનું કાચું બંધારણ પણ સોજીત્રા મુકામે લગનગાળા પ્રસંગે મીટીંગમાં રજુ કરવામાં આવ્યું હતું અને તે પાસ કરવામાં આવ્યું હતું, પરંતુ તે ઉતાવળમાં ઘડેલું હોવાથી તેમાં કાંઇક સુધારો કરવાની જરૂર હતી તેથી સેક્રેટરીને આપેલી સત્તાની રૂએ તેમણે બનાવેલા પાકા બંધારણની નકલ પણ આ સાથે પ્રગટ કરવામાં આવે છે જે આપ બધા વાંચશો તો જણાશે કે આ ફંડની વ્યવસ્થા આપણે નીમેલી કમીટીદ્વારા કરવામાં આવશે અને આવી કમીટીઓ દર લગન ગાળા પ્રસંગે નવી ચુંટવામાં આવશે અને ફંડની રકમ કોઇપણ એક ઠેકાણે નહિ રાખતાં ફંડના ટ્રસ્ટીઓ ટ્રસ્ટના કાયદામાં લખ્યા પ્રમાણે રોકશે એટલે ફંડની ગેરવ્યવસ્થા થવાની અથવા ઉચાપત થવાની અથવા ડુબી જવાની જરાપણ ધાસ્તી આપણને રહેતી નથી.

વીસા મેવાડા મદદ ફંડના બંધારણ તથા નિયમો.

૧. સોજીત્રા સંભાના વીસા મેવાડા કોમની કેળવણી માટે તથા નિર્વાહનાં પુરતાં સાધન નહિ હોય તેમને યોગ્ય મદદ આપવા માટે તથા નાણાંની પુરતી અગવડ થતાં કોમનાં વિદ્યાર્થીઓને રહેવા જમવાની અગવડ થતાં વડોદરા જેવાં મધ્યસ્થ સ્થળે બોર્ડીંગ ઉઘાડવા માટે આ ફંડ કરવામાં આવ્યું છે.

૨. આ ફંડમા પૈસા આપનારાઓના વર્ગ તથા હક નીચે પ્રમાણે છે.

વર્ગ		લવાજમ
(અ) પેટ્રન	વંશ પરંપરાના સભ્ય	રૂ. ૨૫૦૧)
	જીંદગી પર્યંતના સભ્ય	રૂ. ૧૦૦૧)
(બ) વાઇસ–પેટ્રન		રૂ. ૫૦૧)
(ક) સાધારણ સભાસદ		રૂ. ૧૦૧)
(ખ) હિતેચ્છુ		રૂ. ૧) થી ૧૦૦) સુધીની કોઇપણ રકમ

૩. આ ફંડની વ્યવસ્થા પેટ્રનો ઉપરાંત બીજા નવ સભ્યોની બનેલી એક વ્યવસ્થાપક કમીટી દ્વારા કરવામાં આવશે. આવા નવ સભ્યો, વાઇસ–પેટ્રનો તથા સાધારણ સભાસદો વધુ મતે પોતામાંથી ચુંટી કાઢશે.

૪. વ્યવસ્થાપક કમીટીનું કામકાજ વધુ મતે કરવામાં આવશે.

૫. આ ફંડમાં જેણે ઓછામાં ઓછા રૂ. ૧૦૦૧) આપ્યા હશે તે વ્યવસ્થાપક કમીટીના જીંદગી પર્યંતના સભ્ય ગણાશે અને જેણે ઓછામાં ઓછા રૂ. ૨૫૦૧) આપ્યા હશે તેઓ વંશપરંપરાના સભ્ય ગણાશે.

૬. એક વર્ગમાંથી બીજા વર્ગમાં જવા ઇચ્છનાર સભ્ય પાસેથી બાકીનું લવાજમ લઇને તેમને ઉપલા વર્ગમાં લેવામાં આવશે.

૭. પેટ્રન સિવાયના કોઇપણ વર્ગના સભ્યની હયાતી બાદ તેમનાં વારસોએ નક્કી કરેલો એક વારસ રૂ. ૧૫) આ ફંડમાં આપશે તો તે મરનારના વર્ગના હક ભોગવી શકશે. જીંદગી પર્યંતના સભ્યની હયાતી બાદ તેમના વારસોએ નક્કી કરેલો એક વારસ રૂ. ૧૫) આ ફંડમાં આપશે તો તે સાધારણ સભ્યના હક ભોગવી શકશે.

૮. આ ફંડમાં રૂ. ૧૦૧) થી ઓછી રકમ આપનાર આ ફંડની કોઇપણ મીટીંગમાં મત આપી શકશે નહિ.

૯. આ ફંડમાં રકમ જો પેઢીના નામે ભર-

વામાં આવી હશે તો પેઢીના ભાગીદારોએ નક્કી કરેલા એકજ ભાગીદાર જે વર્ગનું લવાજમ પેઢી તરફથી ભરવામાં આવ્યું હશે તે વર્ગના હક ભોગવી શકશે અને રકમ જો સંયુક્ત કુટુંબના કોઇ સ્વર્ગસ્થ વડીલના નામે ભરવામાં આવી હશે તો આવા કુટુંબના એકવીસ વર્ષની ઉપરની વયના કુટુંબીઓએ નક્કી કરેલી એકજ વ્યક્તી જે વર્ગની રકમ વડીલના નામે ભરવામાં આવી હશે તે વર્ગના હક ભોગવી શકશે.

૧૦. દર લગનગાળા પ્રસંગે સોજીત્રા મુકામે નવી વ્યવસ્થાપક કમીટીની ચુંટણી કરવામાં આવશે અને તેને માટે એક સાધારણ સભા સેક્રેટરી બોલાવશે અને આવી મીટીંગની નોટીસ સોજીત્રાના દિ. જૈન મંદિરો તથા શાસન દેવી માતાના મંદિર ઉપર મીટીંગના ત્રણ દિવસ અગાઉ ચોંટાડવામાં આવશે. આવી મીટીંગમાં સેક્રેટરી ફંડના કામકાજનો રીપોર્ટ વાંચી સંભળાવશે અને ફંડ પુરતું હશે તો રીપોર્ટ છપાવી સભ્યોને વહેંચવામાં આવશે.

૧૧. વ્યવસ્થાપક કમીટીના સભ્યો પોતાનામાંથી એક પ્રમુખ, ઉપપ્રમુખ, અને સેક્રેટરી ચુંટી કાઢશે.

૧૨. ફંડના નાણા વ્યવસ્થાપક કમીટી તરફથી નીમાયલા ત્રણ ટ્રસ્ટીઓને સ્વાધીન રહેશે અને ટ્રસ્ટીઓ ફંડનાં નાણાં ટ્રસ્ટના કાયદા પ્રમાણે રોકશે.

નિવેદક—

મોહનલાલ કાળીદાસ શાહ, સેક્રેટરી

શાહી બંગલો, બારમો રસ્તો—ખાર (મુંબઇ).

નોટ—જે પ્રમાણે વીસ મેવાડા ભાઇઓએ જ્ઞાતિના ભાઇઓની ઉન્નતિ અર્થે મદદ ફંડ સ્થાપન કર્યું છે તેજ પ્રમાણે વીસા હુમડ, દશા હુમડ, નૃસિંહપુરા, રાયકવાળ વગેરે જ્ઞાતિઓએ પણ સ્થાપન કરવાની જરૂર છે. ઉપલા ફંડના સેક્રેટરી શ્રી. મોહનલાલ કાળીદાસ સોલીસીટર એક અગ્રગણ્ય, કેળવાયલા, ઉત્સાહી અને પરિશ્રમી ભાઇ નીમાયા છે જેથી પૂર્ણ આશા રહે છે કે એ ફંડ સારા પાયા ઉપર આવશેજ. વીશા મેવાડા ભાઇઓનું આ પગલું અભિનંદનીય અને અનુકરણીય છે.

ધંધાની પસંદગી.

લે—ચુનીભાઇ મ. શાહ, મેડીકલ કૉલેજ અમદાવાદ.

કોઇપણ વિદ્યાર્થી જ્યારે મેટ્રીકમાં પાસ થાય છે ત્યારે તેણે હવે કઈ લાઇન લેવી તથા કયો ધંધો પસંદ કરવો એ સવાલ તેને મુંઝવી દે છે, તો હું મારા અલ્પ અનુભવથી તથા અલ્પબુદ્ધીથી જે અભિપ્રાય આપું છું તેને વાંચક ધ્યાનમાં લે તેમ ઇચ્છું છું.

પ્રાચીન સમયમાં જ્યારે અમુક કોમને અમુક ધંધો કરવાનોજ હક હતો ત્યારે આ સવાલની જરૂર રહેતી નહિ ને બાપદાદાથી ઉતરી આવેલો ધંધો પુત્ર પણ રકતો ને તેમાં સંતોષ માનતો. પણ હવે તે વખત ગયો છે. પશ્ચિમના પવનના સુસવાટાઓએ તથા આવા વંશપરંપરાના ધંધા ભાંગતા જતા હોવાથી વિદ્યાર્થીએ ભણીને કયો ધંધો પસંદ કરવો એ સવાલ અગત્યતા ભોગવે છે. જમાનો બદલાયો છે, ખર્ચો વધ્યા છે, અને કમાવનારને એમજ માલુમ પડે છે કે મારી આવક ગઇ કયાં!

યુનીવર્સીટીઓમાંથી ઉપાધીઓ મેળવીને ઘણા વિદ્યાર્થીઓ બહાર પડે છે ને કેટલાક પોતાના અભ્યાસનું ગાડું ભવિષ્યની મોટી આશાઓનાં સ્વપ્ના સેવતાં હાંકે જાય છે. મા બાપો પણ પોતાનો પુત્ર સાહેબ થશે ને પોતાને ભવિષ્યમાં સુખ આપશે એ આશાથી દુઃખ વેઠીને પણ રાક્ષસી ખર્ચ પુરૂં કરે છે. બિચારા વિદ્યાર્થીઓ બેકારીની સુગંધી સેવ્યા કરે છે. વકીલ અને ડોકટરો પૂરતા થઇ પડયા છે. મેડીકલ લાઇનમાં તો એવી પડાપડી ચાલી છે કે તે લાઇનમાં કેવી રીતે દાખલ થવું એજ મુશ્કેલ થઇ પડયું છે. કેટલી લાગવગોને સીફારશો લગાવવા છતાં બીચારા નાસીપાસ થઈ વર્ષો ગુમાવે છે.

આવા વખતમાં દેશ, સમાજ, કે જ્ઞાતિ જો આવા પ્રશ્નને હાથમાં નહી લે તો આનું પરિણામ ખરેખર ગંભીર આવે તેમ છે. આજે એક

વિદ્યાર્થી મેટ્રીક પાસ થઇ કોઇને નવીન ધંધા માટે પૂછે છે તો સામા માણસને પણ જવાબ આપવો મુશ્કેલ થઇ પડે છે. આ બધાનું ખાસ કારણ એજ છે કે આપણા કેળવાયેલા વર્ગને જાત મહેનતનો તથા જોખમદારીનો સ્વતંત્ર ધંધાપર અણગમો છે. હવે આ અણગમો કેવી રીતે દૂર કરવો તે પણ એક અઘરો સવાલ છે. આપણને તો એવો ધંધો ગમે છે કે જેમાં મુડી રોકવાની ન હોય, ખુરશીમાં બેઠાં બેઠાં હુકમ કરવાનો હોય, કોઇ જાતની જોખમદારી ન હોય, ને મોજશોખ મારવાની હોય. હવે આપણે પણ વિચાર કરવો જોઇએ કે ખુરશીઓમાં જો બધા બેસશે તો હુકમ કોના પર કરશે માટે એ ખુરશીઓના મોહ છોડી હવે જાપાન તથા અમેરીકાનો દાખલો લ્યો. પરદેશ નીકળી પડી કળા, હુન્નર ઉદ્યોગો શીખો ને પૈસો દેશમાં ખેંચી લાવો. આપણામાંથી કેટલા વીર પુરૂષો નીકળ્યા કે જેઓએ મોટી કંપનીઓ ખોલી દુનીઆમાં ચાલતા મોટા વેપારો હાથ કર્યા? જૈન સમાજ પોતાને ભાગ્યશાળી ત્યારેજ ગણશે કે જ્યારે તેના પુત્રો પરદેશમાં જઇ સારા ઉદ્યોગ હુનરો શીખી ચાલી રહેલી પ્રગતિમાં મોખરે રહેશે. **આપણાં ફંડો શું કરવાનાં! પંચોની મીલ્કતો શું કરવાની!**

ટુંકામાં કહેવાનું કે હવે વિદ્યાર્થીઓએ ભણીને કળા તથા હુન્નર ઉદ્યોગ પરદેશથી શીખી લાવવાની ખાસ જરૂર છે અને જો તેમ નહિ કરે તો ભવિષ્યમાં શોષવાનો વખત આવશે. જેઓ પરદેશ ન જઇ શકે તેઓએ વડોદરાના **કળાભવન**માં દાખલ થઈ તેમાં શીખવાતા હુનર ઉદ્યોગો શીખવા જોઇએ.

સમાજનો પણ ધર્મ છે કે આવા ધંધાઓને પ્રથમ સ્થાન આપવું ને આવા ધંધાઓ કેળવાયેલા વર્ગને આકર્ષે તેમ કરવા પ્રયત્ન કરવો. પંચનાં ફંડો તેમાં કરી જે નાતો કરવાના કામમાં વાપરે છે તે કરતાં જો આવા કામમાં વપરાય તો તે પૈસો જરૂર ઉગી નીકળશે.

માસિક નિવેદન.

ગુજરાતના દિગંબર જૈનોમાં દિન પ્રતિદિન ઐક્યતાની ભાવના પ્રકટ થતી જાય છે. **વીશા હુમડ પંચ** સુરતની મળી ઐક્યતા કરી બંધારણ તૈયાર કરે છે. **રાયકવાળ ભાઇઓની** ભાવના તો જ્યાં ત્યાં મળવાની છે. શ્રીમંત ગાયકવાડ સરકારના કાયદાને આગળ કરી તેઓ તો માને છે કે જ્યાં ત્યાં બધા દિગંબરીઓ મળેલાજ છીએ. જે કોમ હવે અંતરાય રાખતી હોય તેણે તે અંતરાય છોડી દેવા જોઇએ. હાલમાં વીસાહુમડ ભાઇમાં રાયકવાળની કન્યા આવી, હવે વીશા હુમડ ભાઇઓનું પંચ મળી પોતાની એકમેક થવાની મનોવૃત્તિ જાહેર કરે એટલીજ વાર છે. તેમાં આગેવાનો તો સુરત પરિષદ ભરનારજ એટલે કાંઇ વાંધો આવે એમ જણાતું નથી. પણ હજી ંવસ્તિ પત્રક તૈયાર કરી મોકલવા જેટલી ફુરસદ આગેવાનને મળતી નથી એ ઠીક ન કહેવાય.

સરૈયાજીનો ફફડાટ ખૂબ થયો. ગયા અંકમાં પંચ તોડવાના વિચારો જાહેર કર્યા છે. આ ગામમાં વરસાદથી ટેકા પડયા તો નથી? એ ભાઇ જાણતા નહિ હોય કે સમાજ જુથ નહિં હોય તો છુટા દાણા ક્યાં વિખરાઇ જશે? **નરસિંહપુરાનું** અને દિગંબરોનું તો નામ નિશાને શોધ્યું નહિ જડે!! ભાઇ ગમે તેવા ભાંગા તુટા સમાજને આ જમાનાના રંગ ચઢાવી તેમાં વેજ આણે તો ઠીક પડે. કહેવાય છે કે **ખુહારી**, બ્યારાના નરસિંહપુરા તના વિચારના થતા નથી. પણ પંચ મેળવી પ્રયત્ન ક્યારે કર્યો? ખુહારીમાં બે ઘરને બાવીશ વર્ષથી અલગ રાખ્યા છે. તે પૈકી એક બાઇ દાકાં સાથે જુદી છે એ બ્હેનને જરા નમ્ર થવાય તો શું? અને એક ભાઇ ને આ માહ ચારામાં જતા રહ્યા. છે. આમ અલગ રાખવાના કે રખાવવામાં ખુહારી-

વાલાની શી બહાદુરી મનાતી હશે ? કંઇ દાદાના ડાપાના કે મંદીરનું ભેણું નિકળતું હોય તે પૈકી યથાશક્તિ આપે તેટલું લઇ લેવું જોઇએ. સરકારની મુદત ત્રણ વર્ષની, ન્યાતિ સરકારની કંઇ મુદતજ નહિ ? શક્તિ નહીં હોય તો માંગો તેટલા રૂપીયા કયાંથી લાવે ? તેનાં હાડકાં કંઇ પિલાય છે ? આટલો ઝઘડો બુહારીના શેઠીયા નહિં પતાવે તો કુસંપ વધવાના ભણકારા વાગી રહ્યા છે.

એક વિધવા બાઇને ન્યાતમાં સાથે જોડી લેય તેમાં આબરૂ શી નીચી પડે છે ? પર્યુષણના ઉત્તમ ક્ષમાના દિવસો આવે છે તે પહેલાં જ્યાં જ્યાં તકરારો હોવ તે મટાવી પરસ્પર ઉત્તમ ક્ષમાના ભાવથી ભેટીએ. તેમ નહીં કરીશું તો દશ અપવાસ, ત્રણ અપવાસ, તેની પૂજા પ્રભાવના જે કંઇ કર્યું હોય તે બધું એ વ્યર્થ સમજવાનું છે. અરે સામાજીક ઝઘડા—હું મોટાના અહંપદમાં ઝહેરના મંદિરમા પૂજા પણ થતી બંધ કરનાર એ પક્ષના નરસિંહપુરા ન—સિંહ—પુરા માણસમાં પુરા સિંહ સમાન થઇ સામાસામા બુરકી કરનાર અહિંસાવાદીઓ તમો પર્યુષણ કરશો કે ? ઉત્તમ ક્ષમાની પૂજા કરશો કે ? હૃદય શૌચ કરશો કે ? કે "ચોખા, બદામાદિ પૂજાપો ભગવાન લે અને ઘેર જવા દે" કરવું છે ? સમાજમાં પરસ્પર પ્રેમથી બીજા જીવને દુઃખ નહિં લાગે તેની સંભાળ રાખનારા જૈનોને ઝઘડા શોભે છે ?

કલોલના કુમળા હૃદયના નરસિંહપુરા ભાઇઓએ પંચ મેલવ્યું. કંઇ ખર્ચ કરી ન ખ્યો, રાયકવાળ ભાઇ જોડે એકત્ર થવા ઠરાવ કર્યો. એવા ઠરાવ કરવા તો ૧૯૪૨ની સાલમાં કલોલમાં કયાં નહોતા મલ્યા ? પણ તમે રાયકવાળ—સંઘ પરાની માફક નીચી મુડી કરી દસ્તાવેજ કરી આપો એવી માંગણી કરવાનો તે વખતના જમાનો તો ગયો—પછી બ્યારાવાળા પાનાચંદ શેઠ ને કલોલના ચંદુલાલ વખારીયાએ એકત્ર થવા પ્રયત્ન કર્યો. સરૈયાજી તો ઝઝુમતા રહ્યા છતાં ૪૮ વર્ષે પાછા કલોલમાંજ નરસિંહપુરા અને રાયકવાળના પંચોએ એકત્ર થવાના ઉમળકા માત્ર ઠરાવ કરીને દર્શાવ્યા છે, છતાં તે ઠરાવના શબ્દોની ગુંથણી કંઇક હાસ્ય ઉત્પન્ન કરે છે. પહેલા ઠરાવમાં લખાય છે કે—"પરસ્પર કન્યા આપ લે કરવાનો ઠરાવ કરવામાં આવે છે" પછી બીજા ઠરાવમાં લખાય છે કે "ધારા ધોરણ બાકી છે તે બીજી બેઠકમાં લાવવામાં આવશે તો બધા ઠરાવો પસાર કરી આખરના અમલમાં મુકવા સર્વાનુમતે ઠરાવશે ત્યારથી તે અમલમાં આવશે ત્યારથી તે ઠરાવ મુજબ વર્તવાનું છે."

રાયકવાળ ભાઇ તેમજ નરસિંહપુરા ભાઇઓ શ્રીમંત ગાયકવાડ સરકારનાજ ઘણા ગામોમાં રહે છે તેમને તો વગર ધારા ધોરણે એકત્ર થવાની છુટ છે. વિરોધ કરનારને દંડ થાય છતાં તે છુટ જતી કરી "સર્વાનુમતે ઠરાવશે ત્યારથી અમલમાં આવશે" ત્યારથી તે ઠરાવ મુજબ વર્તવાનું છે" એમ લખવાની શી જરૂર હતી ? નરસિંહપુરા કોમ પોતાની જ્ઞાતિના ઝઘડાનો નિકાલ નહિ લાવે તો બીજા ૪૮ વર્ષ બર્બાદ જાય એમ નહિં માને ? નરસિંહપુરા ગામના પક્ષની તો ડુંડાઇજ જબરી—જરા પેટનું પાણી હાલતુ નથી. વળી તેજ પક્ષના કલોલના એક સમજુ ભાઇ એ જ્ઞાતિ ત્રાસ નિવારણ કાયદાનો સહારો લઇ પોતાનું નોતરૂં કાપવા બદલ સામા પક્ષને નોટીશ આપ્યાનું જણાય છે એટલે એ લખવું હવે નકામું છે. જોઇએ છીએ. કાયદો કયાં ઉંટ બેસાડે છે ? નોટીશ મળી એટલે પંચ વિખરાઇ જઇ આશો માસમાં ફરી મળવાનું ઠેરવી સૌ કોઇ વિદાય થયા. સુરત, આમોદના નરસિંહપુરાને તો પાછળથી તાર મુકાયા હતા અને વળી પાંચ ગામના અન્ન પક્ષ સાથે નહિ મળેલા એટલે બીજા બે ગામના ચોરાવાળા કલોલ જાય પણ શેના ?

એ કોમનો ઝઘડો તો સાતે ગામની તમામ નરસિંહપરાની કોમની સમગ્ર પંચ

મેળવાય તો સ્હેજે પતે એમ છે. એ માટે કલોલજ કેંદ્ર બનવું જોઇએ. ૧૧ વર્ષે ઉચ્ચના સંસ્કારવાળો શુદ્ર જો જૈન થઇ શકે-શુદ્રની કન્યા પણ લઇ શકાય એમ આદિનાથ પુરાણ કહે છતાં જૈનનીજ પુત્રી ત્રણ ત્રણ પોતાને હોય એવા ધર્મ સંસ્કારી ભાઇ મૂળચંદ દામોદરને તો હજી અપનાવી લેવાતા નથી ? શ્રી મગન હંજીવનનો બહિષ્કાર એક પક્ષેજ કર્યો હતો તે પક્ષે બહિષ્કાર હજીએ ઉઠાવ્યો નહીં ? એ બહિષ્કાર તો પ્રત્યેક ગામના અમુક પક્ષનો હતો. એને કાંઇ સમગ્ર પંચે-કે સાત ગામે બહિષ્કૃત કર્યો નથી તો પછી શા માટે મનના મેલ મુકાતા નથી ? એ ન્યાતનાં કેટલીઓ બ્હેનોનાં અંતર બળે છે. કોઇના વિવાહીત પુત્રને વિવાહીત કન્યા પસંદ નથી. કોઇની કન્યા કંઇ ઉઠાવે વધી ગઇ છે. કોઇ કન્યા ને વર પસંદ નથી તો કોઇ વરને કન્યા પસંદ નથી એમ જુવાન હૃદયો કોઇ સૌદર્યના પર, કોઇક કહેવાતા પ્રેમપર મોહીત થઇ સમાજના કંઇ નિયમને તોડવા મથન કરી રહ્યાં છે. બાળ વિવાહના અનિષ્ઠ ફળ દર્શાવી રહ્યાં છે. ખૂદ મેવાડા કોમ વિવાહ નહિં તુટવા દેવામાં આગ્રહી હતા તે કોમમાં પણ બે વિવાહ તુટયા અને જમાનાને અનુસરીને તેમને કંઇએ દંડ થવાની આશાજ નથી, તો હવે જુદ્દે-આગેવાનો સમાજના સુધારા આ જમાનાને અનુસરતાં કેમ કરતા નથી ? હજીએ મોડું કરવું છે ? વધુ અનિષ્ટ ફળ નજરે જોવાં છે ?

સાંભળ્યું છે કે **પાલીતાણામાં** પુનઃ પ્રતિષ્ઠા માગસર માસમાં છે, ત્યાં જો ગુ. પ્રાંતિક સભાની બેઠક ભરવાની થાય તો તો ઉત્તર ગુજરાતના દશા હુમડ ભાઇઓનું સંગઠન પુરી રીતે ફત્તેહમંદ નીવડે. અને ઉત્તર વિભાગના દશા હુમડજ એકત્ર થાય તો ગુજરાતના અડધા દિગંબર જૈન એકત્ર થયા મનાય. છે કોઈ સભાને આમંત્રણ કરનાર ? આ માસમાં જો જવાબ નહિં આવે તો તો પ્રાંતિક સભાની બેઠક માટે આપણું પાવાગઢનું સ્થાન નક્કીજ છે.

વિશા મેવાડા ભાઇઓએ-યુવકોએ-સેવા દળે, સેવિકા દળે, કાંઇ તૈયારી કરવા માંડી કે ? વૈશાખ માસના લગનગાળામાં થાકી જઇ ઘેર સુતાજ કે ? યુવક સંઘની પત્રિકા કયાં છે ! સેવાદળના સેનાપતિના નામ કયાં છે ? તેમના ગામના કરેલા કામ કયાં છે ? પ્રારંભ શુરાજ ગણાઇશું કે ? અગર પાલીતાણા કે પાવાગઢ પર પાછા ભાષણ કરીને નાટકજ કરીશું કે ?

શાબાશ છે સોજીત્રાના ભગવાનદાસ શેઠને અને બીજાને કે અંકલેશ્વર, કરમસદ આદી સ્થાનોએ ફરી ફરીને મેવાડા ધર્મશાળાનો ફાળો પુરો કરે છે, ઝંપતા નથી, પણ ભાઇ પેલા લેણા ફંડ રૂપીયો લેવા મેવાડા પંચે ઠરાવ કર્યો તે તો ચોપડેજ રહ્યો કે ? ઉઘરાણી કરનાર જાગ્રત છે ? મેવાડા મદદ ફંડના ઉત્સાહી મંત્રીની પત્રિકા તો ગામેગામ ગઇ, પણ પત્રિકા નાણું નથી લાવતી. મોભાદાર માણસો જ્યાં જાય ત્યાંથી નાણું આવે. ફરે તે ચરે, તેમ હમારા મંત્રી પણ હવે બહાર ફરવાનો કાર્યક્રમ ઘડે તો ઠીક. એઓ કાંઇ નાણા એકઠા કરવા નહિં નીકળે પણ પ્રાંતિક સભાના પંચવાર પ્રતિનીધી-સભાસદ બનાવી પ્રાંતિક સભાને શોભાવશે તે માટે બનતું કરશે અને આવતી પરિષદમાં પંચો મારફતના ઠરાવો મેળવી-ઝગડા હોય ત્યાં નિકાલ કરતા જશે એવી આશા રાખી શકાય. સેવક તેમની સાથેજ હોય.

ગયા માસમાં સુરતમાં દિ. જૈ. યુ. સંઘના સેક્રેટરી ભાઇ ખીમચંદ ફક્ત ચાર દીવસની બેમારી સ્વર્ગવાસી થયા. એથી એ સંઘને તેમજ ગુજરાતના દિ. જૈનોને દીલગીરી ઉત્પન્ન થઇ છે. એઓ સ્વભાવે શાંત અને મુંગુ કામ કરનાર હતા. પાછળ કોઇ નથી, બ્હેનો સારે ઘેર છે. મીલ્કતનું વીલ કરી શકયા નહોતા. આ ભાઇનું સાચું અમર નામ રાખવું હોય તો પાઠશાળા માટે અગર

વિદ્યાર્થી માટે સ્કોલરશીપ કે દિ. જૈન લાયબ્રેરી તેમના નામની સુરતમાં કાઢવી જોઇએ. તેઓની ભાવનાજ તેવી હતી.

ગયા અંકના લેખો—જ્ઞાતિ પર આક્રમણ અને તે સાથે સમાજમાંજ વ્યક્તિ સ્વાતંત્ર્ય એ સમાજ બંધારણમાં મોટા ભય સમાન ભાસે છે. એ ગુ. દિ. જૈન પ્રાંતિક સભાના સમાજ બંધારણ પર રચાયલા ઉદ્દેશન પણ ઉચ્છેદન ર જણાય છે. પણ આપણે તે બે બાજુ જોવાની છે. યુવકો ધારે છે, ઉત્સાહ ધરાવે છે તેટલે દરજ્જે કર્તવ્ય પાલન કરવામાં તેઓ હોય તો તો ક્યારનું એ મોટનું કામ આગળ આવત અને જે ધડાયલા પંચના આગેવાનોને એમનું કર્તવ્ય ઠીક લાગતું નથી તેઓ જલ્દી જાગૃત થઇ કંઇ સુધારા પણ જલ્દી દાખલ કરત. હજીએ આગેવાનોને આ તકે વિનવું છે કે યુવકો વધુ આગળ ધપે તે પહેલાં જ્ઞાતિના ઝઘડા દૂર કરો. ગુ. દિ. જૈન પ્રાં. સભાના પાયા પાકા કરો. સુધારાના ઠરાવ કરો. જુદા જુદા પંચો મળી ગુજરાતનો એક વાડો કરો. ગયા અંકના બાજી ભાગમા ગુજરાતના ત્રણ વાડા કરવાનુ એક ભાઇ કહે છે. તે ખરી રીતે તો સંસ્કાર, રીત રીવાજ, પહેરવેશ આદિથી તો વ્યાજબી છે પરંતુ આ રેલ્વે ને તારના જમાનામા અને તેમાં વળી ખુશ રી, બ્યારા સાથે કલોલના મખીઆવના જોડાણ, તેમજ સુરત સાથે ભાવનગરના જોડાણ, અંકલેશ્વર સાથે સોજીત્રાના જોડાણ આ બધું સૂચવે છે કે આખરે ગુજરાત એક છે અને એકજ રહેવાનું છે.

લી૦ સેવક,

હીરાલાલ વી ગાંધી—મહામંત્રીના વંદન

ઉત્તમ ક્ષમાવણીના કાર્ડો ॥।) સો

" " ની ચિઠ્ઠીઓ ॥) સો

દીવાળીના કાર્ડ તથા ચિઠ્ઠીઓ પણ એજ પ્રમાણે મળશે

મેનેજર—દિ. જૈન પુસ્તકાલય-સુરત.

આદર્શ જ્ઞાતિ

યાને

જ્ઞાતિ સુધારણાના માર્ગો.

(લેખક—ડૉ૦ વીરચંદ છગનલાલ શાહ-વસો હાલ રતનપુર, કાઠીયાવાડ)

મનુષ્ય પ્રકૃતિજ એવી છે કે સંપૂર્ણ પરિપૂર્ણતા ભાગ્યેજ કોઇ સ્થળે માલુમ પડે છે, તેવીજ રીતે કોઇપણ જ્ઞાતિ એવી નથી કે જેની બધીજ રૂઢીઓ લોકોને તેમજ સમાજને સુખરૂપ હોય, છતાએ જો સંપૂર્ણ આદર્શનું ધ્યેય રાખી જ્ઞાતિના કાર્યવાહકો ઉત્સાહથી કાર્ય કરે તો આદર્શતાએ નહી તો આદર્શતાની સીમાએ તો જરૂર કોમને લઇ શકે. એ હેતુથી નીચે એક આદર્શ જ્ઞાતિ કેવી હોઇ શકે તેનું વર્ણન કરવામાં આવ્યું છેઃ—

પંચ—આદર્શ કોમનું પંચ એક સુવ્યવસ્થિત બંધારણ પૂર્વક તૈયાર થયેલું હોવું જોઇએ કે જેથી તેમા દરેકનું પ્રતિનિધિત્વ હોવાથી કોઇને અસંતોષ રહે નહી અને પંચના ઠરાવોનું સહેલાઇથી પાલન થઇ શકે. પંચના કાર્યવાહકો એવા હોવા જોઇએ કે જેઓ અંગત સ્વાર્થનો ભોગ આપીને પણ જ્ઞાતિનું હિત ધ્યાનમાં લઇ જ્ઞાતિના પ્રશ્નનો નિવેડો લાવી શકે તોજ તેમનો પ્રભાવ જ્ઞાતિ જનો પર પડી શકે.

કેળવણી—આદર્શ જ્ઞાતિનાં પુત્ર તથા પુત્રીને સમાન ગણીનેજ શારીરિક, માનસિક તેમજ ધાર્મિક કેળવણી આપવામાં આવે. જ્ઞાતિના દરેક બાળકની અભ્યાસની બધીજ જરૂરીયાતો જ્ઞાતિ તરફથીજ પુરી પાડવામાં આવે.

લગ્ન—આદર્શ જ્ઞાતિમાં-૧—એકવીશ વર્ષ પહેલાં. કમાવાની શક્તિ આવ્યા પહેલાં છોકરાનુ લગ્ન ન કરવામા આવે.

૨—લગ્ન પહેલાં થોડાજ વખતે વિવાહ (સગપણ) કરવામાં આવે.

૩—વર કન્યા વચ્ચે ઉંમરનું યોગ્ય અંતર તેઓની કેળવણી સંસ્કાર અને યોગ્યતા ધ્યાનમાં લઇ એક બીજાને સંસર્ગમાં લાવી, બન્નેની સમ્મતિ લઇનેજ વિવાહ તેમજ લગ્ન સંબંધ જોડવામાં આવે.

૪—લગ્નનું ક્ષેત્ર વિશાળ હોય કેમકે ટુંકા ક્ષેત્રમાં એ કજોડાં પેદા કરવાનું ભારે કામ કર્યું છે.

૫—લગ્નમાં ચાંલ્લું, પહેરામણું તેમજ રીત એ વગેરે રૂઢીઓ સદંતર બંધ હોય.

૬—લગ્નવિધી સાદાઇથી ઉદ્દેશો સમજાવી ધાર્મિક રીતથીજ ઉજવાતી હોય.

૭—લગ્ન વખતે જ્ઞાતિ સંસ્થાઓને યોગ્ય દાન અપાતું હોય.

જમણવાર—આદર્શ જ્ઞાતિમાં શ્રીમંત તેમજ મરણ પાછળનાં મોટાં જમણવાર સદંતર બંધ હોય.

મદદ—કોમનાં બેકાર તેમજ ગરીબ કુટું-બોને ગામેગામ ઉદ્યોગશાળાઓ ખોલી તેમાં જ્ઞાતિ બંધુઓનેજ રોકી યોગ્ય પગાર આપી કોમની આર્થિક સ્થિતિ સુધારવાની જવાબદારી આદર્શ કોમમાં જ્ઞાતિજ ઉપાડી લે અને અશક્ત કુટુંબોને પુરતી છુપી મદદ જ્ઞાતિ સંસ્થા તરફથી અપાય. ઉદ્યોગશાળાઓમાં ગૃહ ઉદ્યોગ વિભાગ ખોલી તેમા તયાર થતી વસ્તુઓને ઉત્તેજન આપવાથી જ્ઞાતિની બાઇઓ તેમજ વિધવાઓ પણ કમાણી કરી શકે.

વિધવા—કોમની દરેક વિધવાને જ્ઞાતિ તરફથી ખોલવામાં આવેલ શ્રાવિકાશ્રમ કે વિધ-વાશ્રમ જેવી સંસ્થામાં રહેવાની પૂરતી સગવડ જ્ઞાતિ તરફથી કરવામાં આવે અને જેમને સંસ્થામાં રહેવાને સંયોગો અનુકુળ ન હોય તેમને દરેકને માસિકથી નક્કી થાય તેટલી રકમ છુપી રીતે જ્ઞાતિ સંસ્થા તરફથીજ મોકલવામાં આવે. એવા સગવડ કરવામાં આવે તોજ પોકાંની પ્રથા સદંતર બંધ થાય એ આવશ્યક છે.

ફંડ—જે જ્ઞાતિમાં આવી વ્યવસ્થા હોય તે જરૂર આદર્શ કહી શકાય એમ મારૂં માનવું છે, પરંતુ કોમને ઉપરે પ્રમાણે વ્યવસ્થા કરવાને એક ઘણાજ મોટા ફંડની જરૂર પડે પણ તે ફંડને માટે લગ્ન વગેરે પ્રસંગોએ, તથા મરણા-ન્તે થતા દાન પ્રસંગે અને ધનવાન ગૃહસ્થો પસેથી વધારેમાં વધારે મદદ લઇ જોઇએ તેટલી રકમ થોડા વખતમાં મેળવી શકાય. જ્ઞાતિ બંધુ-ઓએ સમજવુંજ જોઇએ કે આ ફંડ આપણે માટેજ છે અને કોઇ પ્રસંગે આપણને નહી તો આપણી ભવિષ્યની પ્રજાને તો જરૂરજ કામ લાગશે.

જ્ઞાતિ સુધારણા—મૂળથી કોમનું બંધારણ તો સુખને માટેજ રચવામાં આવેલું હોય છે પણ મનુષ્ય જેમ એક બાબત વારંવાર કરે છે અને ટેવ પડી જાય છે અને એ ટેવ જ્યારે દૃઢ થાય છે ત્યારે તે એટલો ઉંડો પાયો નાખે છે કે તે ટેવ છોડવી અને પોતાનો વગર હાલતો દાંત પોતાને હાથે ખેંચી કાઢવો એ બન્ને સરખું લાગે છે. માટે 'પડી ટેવ તે તો ટળે કેમ ટાળ્યા' એ કહેવત અનુસાર પડેલી ટેવ સહેલાઇથી ટળી શકતી નથી. વ્યક્તિને માટે જેમ ટેવ છે તેમ સમાજને માટે રૂઢી છે. એક વ્યક્તિ અમુક વસ્તુ સારાસારનો વિચાર કર્યા વગર કરે, તેનું દેખાદેખી બીજાઓ વારંવાર કરે અને આવું લાંબો વખત ચાલવાથી રૂઢી સ્થાપિત થઇ જાય છે અને રૂઢીનું બળ પુરેપુરું જામી ગયા પછી તો તે બંધ કરવી, ફેરવવી, કે સુધારવી એ બહુજ મુશ્કેલ અને ઘણી વખત તો અશક્ય થઇ પડે છે અને જ્ઞાતીનું મુખ્ય હથીઆર બહિષ્કાર હોવાથી રૂડા ઉદ્દેશથી શરૂ થયેલી રૂઢી અથવા દેખાદેખી ચાલુ થયેલી રૂઢી કાયમને માટે ટકી રહે છે અને પછી મૂળ ઉદ્દેશથી તેનું પરિણામ વિપરીત આવતું હોય. છતા અનિષ્ટ રૂઢીઓમાંની કેટલીક પ્રયત્ન કરવાથી દૂરી શકે તેમ છે, પરંતુ આ પ્રયત્ન એક બે ચાર કે દશ વ્યક્તિઓ તરફથી નહીં પણ ઘણી

વ્યક્તિઓ તરફથી થવા જોઇએ. થોડી મુદત માટે નહી પણ વર્ષોનાં વર્ષો સુધી સતત ચાલ્યા રહેવા જોઇએ. એક ગામમાં કે જુથમાં નહીં પરંતુ બધાં ગામોમાં થવા જોઇએ. દેખાવ કે ડોળની ખાતર નહીં પણ ખરા અંતઃકરણથી કાર્ય થવું જોઇએ. પોતાના કુટુંબના, કે ગામના સ્વાર્થને ખાતર નહી પણ જ્ઞાતિ સમગ્રનું હિત લક્ષમાં રાખી પ્રયત્નો થવા જોઇએ. આ પ્રમાણે થાય તો જરૂર અનિષ્ટ રૂઢીઓ સુધરી શકે.

જ્ઞાતિ સુધારણાના માર્ગોને પાંચ વિભાગમાં વહેંચી શકાય

૧—**સરકાર પાસે કાયદા કરાવવો:**—અમુક અનિષ્ટ રૂઢીઓ જ્યારે સમાજ પોતે ન સુધારી શકે અથવા ઇષ્ટ રૂઢીઓ શરૂ ન કરી શકે ત્યારે સરકારને વચ્ચે પડવાની જરૂર પડે છે. તજ પ્રમાણે બ્રીટીશ સરકારે **સતી થવાનો રિવાજ બંધ કરવાનો** તથા **શારદા એક્ટ** કાઢ્યો છે. અને વડોદરા રાજ્યમાં તો **બાળ લગ્ન પ્રતિબંધક કાયદો** તથા **જ્ઞાતિ ત્રાસ નીવારણ કાયદો** એ બન્ને કાયદાઓ કાઢી શ્રીમંત મહારાજા સાહેબે સામાજિક ઉન્નતિ માટેની તેઓશ્રીની તીવ્ર ઇચ્છા પ્રગટ કરી છે અને તેમાં કેટલેક અંશે સફળતા પણ મળી છે.

૨—**જ્ઞાતિએ નિયમો કાઢવા ને સરકારી મદદથી અમલમાં મુકવા:**—બ્રિટીશમા તેમજ વડોદરા રાજ્યમાં એવો નિયમ છે કે જ્ઞાતિ પોતાને અનુકૂળ નિયમો તથા બંધારણ સરકારમા રજીસ્ટર કરાવે અને જ્યારે નિયમ ભંગનો પ્રશ્ન આવે ત્યારે સરકારની મદદથી દંડ વસુલ કરી શકે. અનિષ્ટ રૂઢીઓ દાખલ કરવા આ માર્ગ ઘણોજ સારો છે કેમકે આમા સત્તા જ્ઞાતીનાજ રહે છે અને દંડની રકમ જ્ઞાતી ફંડમાંજ જમા થાય છે.

૩—**જ્ઞાતિનાં પંચો મંડળો યા જ્ઞાતિની પરિષદો ઠરાવ કરે અને જ્ઞાતિ જનો અમલમાં મુકે—**

મંડળો અને પરિષદોમાં ઘણે ભાગે-વિચાર-શીલ, દીર્ઘ દ્રષ્ટિવાળા અને કેળવાયેલા લોકોજ આગળ પડતો ભાગ લે છે એટલે સુંદર ઠરાવો તો ત્યા સહેલાઇથી પસાર થઇ શકે છે. પરંતુ તે ઠરાવનો અમલ કરાવવાનું તો તે વ્યક્તિઓની ઇચ્છા પર અવલંબી રહેલું હોય છે એટલે જ્ઞાતીની પરિષદો યા મંડળો લોકમત કેળવવા ઉપરાંત બીજું કંઇ વ્યવહારીક સારૂં પરિણામ લાવી શકતાં નથી. પરિષદો અને મંડળો દેખીતી રીતે જ્યારે નિષ્ફળ નીવડે છે ત્યારે **જ્ઞાતિ પંચો ધારે તો પુરેપુરી રીતે સફળતા મેળવી શકે** એટલે પંચના આગેવાનો પણ લોકમત કેળવાય એની સાથે પોતાના વિચારો કેળવી જ્ઞાતિમાં યોગ્ય સુધારા દાખલ કરે તો પોતાની મહત્તા સાચવી તેમની મોટાઇ અને માન જાળવી શકે. માટે આપણી કોમો માટે લોકમત કેળવી જ્ઞાતિના આગેવાનો દ્વારા સુધારા દાખલ કરાવવા એજ ઉત્તમ માર્ગ છે. તો પંચમાં કેળવાયેલ સમજુ નિઃસ્વાર્થ વડીલો તેમજ પૂજ્ય મુરબ્બીઓ જ્ઞાતિ સુધારણાનું કાર્ય હાથમાં લે ત્યારેજ કોમમાં અનિષ્ટ રૂઢીયો બંધ પડેલી અને ઇષ્ટ રૂઢીયો દાખલ થયેલી જોવાને આપણે ભાગ્યશાળી થઇએ, દરમ્યાન લોકમત કેળવવાનું કામ તો જ્ઞાતી મંડળો અને પરિષદો વારંવાર ભરી ચાલુ રાખવું જોઇએ.

૪—**સભાઓ, ભાષણો, પત્રિકાઓ અને માસિકોદ્વારા લોકમત કેળવી જ્ઞાતિ હિતની યોજનાઓ રજુ કરી, જ્ઞાનનો તેમજ સદ્વિચારનો પ્રચાર કરવો:—**

પ્રથમ જણાવેલા ત્રણ માર્ગમાં કંઇ ને કંઇ મુશ્કેલી રહેલી છે, કારણ કે તેમાં ઘણા જ્ઞાતિ બંધુઓના સમ્મત હોય તોજ કંઇ કરી શકાય, પરંતુ તે માટે જ્ઞાનનો પ્રચાર કરવાનો માર્ગ તો હરકોઇ પુરુષ પોતે એકલો પણ લઇ શકે. આ માર્ગમાં તાત્કાલીક વ્યવહારીક પગલાં નહી લેવાના હોવાથી સફળતા નિષ્ફળ થવાનો પ્રશ્ન રહેતો નથી એટલે દર્શાવેલા વિચારોમાં સંમત થનારા ઘણા મળી

આવે છે. કેળવણી ઉત્તેજનની યોજનાઓમાં આર્થિક મદદ આપનારા પણ ઘણા મળી આવે છે એટલે પ્રમાણમાં આ માર્ગ સરળ, સહેલો અને શક્ય બને છે એટલે જેની ઇચ્છા થાય તે આમાંનો એક માર્ગ ઉપાડી લે છે, પરંતુ આ માર્ગ બહારથી દેખાય છે તેટલો ટુંકો નથી, ખરી રીતે બહુજ લાંબો છે. લાંબા વખત પછીજ ફળ આપે છે. તાત્કાલીક ફળની ઇચ્છાવાળાઓ સ્હેજ નિરૂત્સાહી બની જાય અને અને થોડા વખતમાં કંટાળી જાય તેવો આ માર્ગ છે. આ માર્ગમાં રહેલી સરળતાથી મંડળો જલદી સ્થપાય છે. શરૂઆતમાં ઉત્સાહથી કામ પણ થાય છે પણ પરિણામ ધીમું વા નહી જેવું જણાતાં સોબતીઓનો ઉત્સાહ મંદ પડે છે. આર્થિક મદદ પણ ઓછી થાય છે અને મંડળો પણ બંધ પડે છે. પરંતુ નિરાશ થનારાઓએ ધ્યાન રાખવું જોઇએ કે 'ઉતાવળે આંબા ન પાકે' અને કદાપિ પાકતા જણાય તો તે કુદરતી નહીં પણ મદારીના, દુરથી દેરી જોયાનો ભાસ થાય પણ ખાવાને તો તે નજ મળે માટે આપણી જ્ઞાતિની અનીષ્ટ રૂઢીઓ ફેરવવાની જેઓ ઇચ્છા ધરાવે છે, ને આ કાર્યમાં થોડી ઘણી પણ દીલસોજી રાખે છે તેઓ જો નિરાશ વ ઉદ્વિગ્ન ન બને અને ખંતથી પોત પોતાનું કાર્ય કર્યા કરે તો લાંબા કાળે ફળ મેળવવાની આશા રાખી શકેજ. આશા છે કે ઉત્સાહી જ્ઞાતિ બંધુઓ આ સરળ માર્ગનો કોઇ કાર્યક્રમ ઉપાડી લઇ જ્ઞાતિની યથાશક્તિ સેવા કરશે.

૫—સુધારાના હિમાયતી અને તેજ પ્રમાણે વર્તન કરવાની ઇચ્છા રાખનાર સ્ત્રી પુરૂષોનું એક મંડળ સ્થાપી પોતાને ત્યાં સારા માઠા પ્રસંગે પોતે શું કરવું ને શું ન કરવું એ સંબંધી નિયમો નક્કી કરવા અને મંડળના સભાસદોએ તે નિયમો પાળવા:—

લેખ લખનારાઓ, ભાષણ આપનારાઓ અને બાહેર પ્રવૃત્તિઓમાં ભાગ લેનારાઓના સબંધમાં ઘણી વખત એમ કહેવાય છે કે તેઓ લખે છે અને બોલે છે તે પ્રમાણે ચાલતા નથી તેથી **'પરોપદેશે પાંડિત્યં'** જેવો તેમના બોલવા લખવાનો અર્થ ગણાય છે અને તેથી તેમના બોલવા લખવાની જનસમુહ પર કંઇજ અસર થતી નથી. આમાં ઘણું સત્ય રહેલું છે, પરંતુ લેખકો અને ઉપદેશકોની પરિસ્થિતિનો પણ આપણે સાથે સાથે વિચાર કરવો જોઇએ. કારણ કે અમુક રૂઢી ખરાબ છે અને તે બંધ કરવી જોઇએ એમ તો હરકોઇ સ્ત્રી યા પુરૂષ ભાષણમાં યા લેખમાં સ્હેલાઇથી પ્રતિપાદન કરી શકે કારણકે લેખ લખવાનું કે ભાષણ આપવાનું કામ તો સર્વ કોઇ પોતાની એકલાની શક્તિથી કરી શકે છે પણ એ વિચારનો અમલ કરવાનો સમય જ્યારે આવે છે ત્યારે તેનાં માતાપિતાની તેમજ તેના કુટુંબના અન્ય સબંધીઓની સંમતીની ખાસ અપેક્ષા રહે છે. અને તેથી સંમતી ન મળે તો કોઇ વખત કુટુંબ ક્લેશ અને કોઇ વખત બહિષ્કારની શિક્ષા તેને ભોગવવી પડે છે. આ શિક્ષા સહન કરીને પણ પોતાના વિચારો અમલમાં મૂકે તેવાં સ્ત્રી પુરૂષો તો વિરલજ હોય છે, પણ સમજવા પ્રમાણે વા બોલવા પ્રમાણે આપણે બધું કરી શકતા નથીજ. ખાસ કરીને રૂઢીની બાબતમાં તો આપણે બીજાઓ કરતાં કશુંજ વિશેષ કરી શકતા નથી. જે સ્થિતિ આપણા બધાની છે તેવીજ ઉપદેશકની પણ છે. તો પછી લેખો લખનાર અને ભાષણો આપનારની સ્થિતિ તેમના ગૃહસંસારની પરિસ્થિતિનો વિચાર કર્યા સિવાય સામાન્ય રીતે જે ટીકાઓ કરવામાં આવે છે તેમાં ઘણે ભાગે તેમને અન્યાય થાય છે એમ હું માનું છું પરંતુ સાથે સાથે એમ પણ માનુ છું કે ભાષણ કર્તાઓ પોતાના એકલાથી પાળી શકાય તેટલું તો કરવાને બંધાયેલાજ છે.

વળી કેળવણી અને પ્રચારના પ્રતાપે લોકમત સારી રીતે કેળવાયો છે અને પહેલાં લોકો જે ન્હોતા સમજતા કે ન્હોતા સ્વીકારતા તે હવે સમજી શકે છે અને સ્વીકારી શકે છે. દાખલા તરીકે **બાળ વિવાહ નહી કરવાનું, લગ્ન મરણ પ્રસંગે ભારે ખર્ચ નહી કરવાનું અને મરણ પ્રસંગે રોવા કુટવાનું બંધ કરવાનું ઘણા સ્વીકારે છે** એટલે અમુક રૂઢીઓના ફેરફાર કરવામાં કોઇ મોળાપણું બતાવે તો તે લોકમત નહી કેળવાયાના કે કુટુંબના સમજુ મનુષ્યોની સંમતિ નહી મળવાના કારણે નહી, પરંતુ પોતાના સ્વાર્થના, લોભના વા અજ્ઞાનના કારણેજ એ સ્પષ્ટ છે. જો કોઇ થોડી પુરતા જરા હિંમત અને નિશ્ચયબળ બતાવે તો તે સુખેથી પોતાના નિશ્ચયો અમલમાં મુકી શકે. વળી કેટલીક અનિષ્ટ રૂઢીયો દૂર કરવાનું પોતાના એકલાના બળથીજ અમલમાં મુકી શકાય તેમ છે. તેમાં કુટુંબ કલેશ કે જ્ઞાતિ બહિષ્કાર જેવા પ્રસંગો નથી આવતા. ભાષણો અને લેખો કરતાં દૃષ્ટાંતની અસર વધારે થાય છે. **ચારિત્રની એક મુઠી વિદ્યાના એક મણની બરાબર છે.**

રૂઢીયો દેખાદેખી દાખલ થાય છે અને દેખાદેખીથી દૂર થઇ શકે છે. માટે નિશ્ચયબળવાળાઓ પુરૂષાર્થનું સંઘબળ જામે, તેઓ હિંમતથી અને જ્ઞાતિ હીતની લાગણીથી પ્રસંગ આવે શુભ દૃષ્ટાંત બેસાડે, અને ઉપર જણાવ્યા પ્રમાણે લોકમત કેળવવા લેખો, ભાષણો અને જ્ઞાન પ્રચારના પ્રયત્નો ચાલુ રાખે તો અશકય જણાતું કાર્ય શકય બને, અનિષ્ટ રૂઢીઓ કમી થાય ને ઇષ્ટ રૂઢીઓ શરૂ થાય. પરિણામે જ્ઞાતીની અંતર્ગત શક્તી વધે અને તે ઉન્નત માર્ગે પ્રયાણ કરે.

ગુજરાત દિગંબર જૈન પ્રાંતિક સભાનો ઉદેશ ઉપરના પાંચ માર્ગ પૈકી છેવટના ત્રણ માર્ગ સ્વિકારી, સભાસદોએ પોતાનું, પોતાના કુટુંબનું અને સમગ્ર જ્ઞાતિનું હિત લક્ષમાં રાખી કેવળ કર્તવ્યની લાગણીથી સંયોગો અને સ્થિતિ પ્રમાણે પોત પોતાના નિશ્ચયો અમલમાં મુકવા મુકાવવા એજ છે. માટે **સભાની પ્રથમ બેઠકમાં તા. ૧-૬-૩૪ ના રોજ સુરત મુકામે** જે ઠરાવો થયા છે તેમાં અનુભવ મળશે તેમ તેમ ફેરફારો પણ કરવામાં આવશે. અને મંડળના સભાસદો અને શુભેચ્છકો પ્રચાર કાર્યથી તેમજ પોતાના દૃષ્ટાંતથી સભાના સિદ્ધાંતો પોતે અમલમાં મુકશે અને બીજાઓ પાસે અમલમાં મુકાવવા પ્રયત્ન કરશે અને સભાની આગામી બેઠક પહેલાં કંઇક કાર્ય કરી બતાવશે એવી આશા છે.

ઇશ્વરને ઓળખવાના યા એક ગામથી બીજે ગામ જવાના માર્ગ અનેક હોય છે. દરેક માર્ગના ખાસ ખાસીયતીઓ પણ હોય છે, છતાં જેઓ અંતઃકરણના સાચા હોય છે અને ધ્યેય તરફ દૃષ્ટિ રાખી સ્વીકારેલા માર્ગે પ્રયાણ કર્યા કરે છે તેઓ માર્ગ લાંબો હોય વા ટુંકો હોય, સરળ હોય વા અઘરો હોય તો પણ મંડ્યા રહે તો લક્ષ બિંદુએ વહેલા મોડા પહોંચે છેજ. તેજ પ્રમાણે જેમને ઉપરના પાંચ વા તે સિવાયના જે માર્ગમાં શ્રદ્ધા હોય તે માર્ગે તેઓ વાતો અને ટીકાઓ કરવાનું છોડી દઇ, એક નિષ્ઠાથી અને હિંમતથી આગલ ચાલવા માંડશે તો ધારેલા ધામે જરૂર પહોંચી જશે.

સુજ્ઞ જ્ઞાતિ બંધુ ! હિંમત હોય અને સંયોગો અનુકુળ હોય તો '**ગુજરાત દિગંબર જૈન પ્રાંતિક સભા**' નો તેમજ તારી પેટા **જ્ઞાતિના યુવક મંડળનો** સભાસદ થા. હિંમત ન હોય વા મંડળના સિદ્ધાંતોમાં શ્રદ્ધા ન હોય તો સભાનો વા મંડળનો સભાસદ ભલે તું ન થા પણ જ્ઞાતિ ઉન્નતિના વિચારો ચર્ચતું '**ગુ. દિ. જૈન પ્રાં. સભા**' નું માસિક મુખપત્ર '**દિગંબર જૈન**' નો ગ્રાહક થઇ, જન સેવા અને દેશસેવા જ્ઞાતિ સેવા દ્વારા થઇ શકે છે, એમ માની મંડળના કોઇ કાર્યમાં યા જ્ઞાતિ-

હિતની કોઇપણ પ્રવૃત્તિમાં રસ લે તું સે ને લેજ. સ્ત્રીઓને સારા સંસ્કાર આપ્યા વિના આપણો ઉદ્ધાર નથીજ થવાનો. હાલની સ્ત્રીઓ અને કન્યાશાળાઓમાં જે બ્હેનો હાલ ભણે છે યા કન્યાશાળામાંથી ભણીને જેઓ ઉઠી ગઇ છે તે બ્હેનો આપણી ભવિષ્યની પ્રજાની માતાઓ છે. તે વાંચ્યું હશેજ કે 'એક માતા સો શિક્ષકની બરોબર છે' તથા 'જે હસ્ત ઝુલાવે પારણું તે જગત પર શાસન કરે.' આપણને તો નથી મળતી યોગ્ય માતાઓ અને નથી મળતા સારા શિક્ષકો જો તું બીજું કંઇ ન કરી શકે તો તારા કુટુંબની તેમજ ગામની સ્ત્રી કેળવણી કે કન્યા કેળવણીને આપવા અપાવવાને અને શ્રાવિકાશ્રમ જેવા સંસ્થાઓનો લાભ કન્યાઓ તેમજ વિધવાઓ લે તેનો પ્રચાર કરવાને કંઇ ને કંઇ સતત પ્રયત્ન કર્યા કર અને જ્ઞાતિ પ્રત્યેની તારી ફરજ અદા કર.

કોમના સુજ્ઞ કાર્યકર્તાઓ, પૂજ્ય વડિલો, ગુરુજીઓ તેમજ યુવક બંધુઓને જ્ઞાતિ પ્રત્યેની પોતાની ફરજ અદા કરી જ્ઞાતિને ઉન્નતિને માર્ગે લઇ જવા પ્રેરે એવી નમ્ર પ્રાર્થના પ્રભુ પ્રત્યે કરી અમે વિરમીએ. **વીરચંદ.**

સોજીત્રાનો લગ્નગાળો—નામે એક લેખ જેઠ માસના 'દિગંબર જૈન' માં એક ભાઇ તરફથી છપાયો છે જેમાં શ્રાવિકાશ્રમના કાર્યવાહકોની ચુંટણી વખતે "નામ ખાતર મોટી ઉહાપોહ કરવામાં આવી હતી." એ વાક્ય અસત્ય લખાયું છે કારણ કે એ પ્રસંગે અમો જાતે હાજર હતા ને તેમાં નામનો સવાલજ નહોતો. જે યાદી વંચાતી હતી તે નાણું ભરેલાં ગૃહસ્થોની હતી, કે જેનાં નાણાં બાકી હતાં તેની યાદી હતી આટલોજ ખુલાસો પૂછવામાં આવેલો તેમાં નામ ખાતર મોટી ઉહાપોહ જેવું હતુંજ નહિ. આવા લેખથી સમાજમાં ફેલાયલો રોગ દૂર કરવા આટલો ખુલાસો કરવો જરૂરનો છે. **રતીલાલ માણેકલાલ-વડોદરા.**

મેવાડા પાટનગરનું અવલોકન—નામે એક લેખ 'એક સમાજ સેવક' તરફથી મળ્યો છે જેમાં જણાવ્યું છે કે સોજીત્રામાં ૫૦૦૦૦) ને ખરચે જે વાડી બંધાઇ છે તેનો ઉપયોગ હવે નહીં જેવો છે. એને બદલે મુંબાઇ જેવે સ્થળે એટલી રકમની બીલ્ડીંગ લીધી હોત તો તેનું સારું ભાડું આવત અને તેમાંથી જ્ઞાતિના ભાઇઓ ને બાળકોને મદદ આપી શકાત વગેરે.

સુરતમાં શોકજનક વિયોગ—આ માસના પ્રારંભમાં સુરતના દિ૦ જૈન યુવક સંઘના એક ઉત્સાહી સેક્રેટરી તથા નવાપરા જૈન ક્લબના મંત્રી ભાઇ ખીમચંદ ચંદુલાલ ઝવેરીના માત્ર બે ચાર દિવસની માંદગીમાં ૨૧ વર્ષની ભર યુવાનીમાં સ્વર્ગવાસ થવાના સમાચાર આપતાં અત્યંત શોક થાય છે. આ ભાઇ મુંગું કામ કરનાર અને ઘણા ઉત્સાહી હતા. એમના શોકમાં નવાપરા જૈન ક્લબે મળી શોકનો ઠરાવ કર્યો કર્યો હતો. તેમજ સુરતના દિ૦ જૈનોની સભા ખપાટીઆમાં તા. ૧૭-૮-૩૪ ને દિને શા. ચમનલાલ સુતરવાલાના પ્રમુખપદે મળી હતી જેમાં પણ શોકદર્શક ઠરાવ થઇ તે પર વિવેચનો થયાં હતાં. આ ભાઇના આત્માને શાંતિ મળો એજ ભાવના છે.

સોજીત્રા શ્રાવિકાશ્રમને—આ વર્ષમાં ૩૦૧) હરગોવનદાસ ગણુજ તથા ૧૦૧) છોટાલાલ જેચંદ પેટલાદ તરફથી મળેલા અને ૩૫૦) લગ્ન માળા પ્રસંગે મદદ મેકલી હતી. તેમજ કેવલદાસ હીરાભાઇ તરફથી ચંડીની બે ચુડી મળી હતી. આ આશ્રમને ઘણું સારે મોટે અવસરે મદદ આપતા રહેવાની જરૂર છે.

"जैनविजय" प्रिंटिंग प्रेस, खपाटिया चकला-सूरतमें मूलचन्द किसनदास कापड़ियाने मुद्रित किया
और "दिगम्बर जैन" ऑफिस, चन्दावाड़ी-सूरतसे उन्होंने ही प्रकट किया।

ગુજરાત દિગંબર જૈન પ્રાન્તિક સભાનું માસિકપત્ર—

दिगंबर जैन.

— — संपादक अने प्रकाशक —

मूलचन्द किसनदास कापड़िया—सूरत.

वर्ष २७ | वीर संवत २४६० भाद्रपद | अंक ११.

विषय सूची.

दिगम्बर जैनका विशेषांक वीर सं० २४६१.

" दिगम्बर जैन " के २८ वें वर्षके प्रारम्भमें सचित्र विशेषांक "शिक्षा अंक" के रूपमें निकाला जायगा अतः उसके लिये हिन्दी, गुजराती, अंग्रेजी व संस्कृत भाषाके लेख व कविताएं (जैन शिक्षा संस्थाओं व पाठशालाओंके फोटो सहित) १५–२० दिनके भीतर २ भेजनेके लिये विद्वान् लेखकोंसे सादर निमन्त्रण है। लेख लम्बे न होने चाहिये इसपर हरएक लेखक ख्याल रक्खें। कुछ दि० जैन पाठशाला व विद्यालयोंके मंत्री अपना २ विवरण भी भेजें।

आगामी आश्विनके अंकके साथ नूतन " जैन तिथिदर्पण " भेजा जायगा। मैनेजर।

उपहारोंके पोस्टेज सहित वार्षिक मूल्य २) व समाज अंक मू० ।॥)

शिखरजी यात्रा स्पेशल ट्रेन-चित्तौडगढसे मगसिर सुद १ को निकलेगी इसमें सब सुभीता रहेगा। टिकट ९८) है व १॥। माहका प्रोग्राम है। ५) पेशगी सहित नाम लिखावें—संतलाल जैन, परताबगढ (मालवा)

जैन वनिता विश्राम-चलानेवाले फूलचंद जैन आगराको ६ माहकी सजा हुई है।

ફતેપુર—પં. પન્નાલાલજી ખાસ પધારવાથી ધર્મોપદેશ, તત્વ ચર્ચા, સામાયિક, પૂજા વગેરેનો આનંદ અપૂર્વ હતો. સંસ્થાઓ માટે ટીપ પણ થઈ હતી.

સુરત—બધા મંદિરોમાં પૂજન અભિષેક નિયમિત થયાં હતાં. નવાપરાના દહેરે પં. પર-મેષ્ઠીદાસજી શાસ્ત્ર વાંચતા હતા તેમાં દશ ધર્મ સાથે ચારૂદત્ત ચરિત્ર વંચાયું હતું. આશરે ૨૦૦) ચાર દાનની ટીપમાં તથા આશરે ૪૦)થી ૫૦) તીર્થરક્ષા ફંડમાં ભેગા થયા હતા. એક ભાઈ ખીમચંદ સવાઈચંદ ને એક બ્હેને પાંચ પાંચ ઉપવાસ કર્યા હતા. ભા. વદી ૧–૮મે શેઠ કસન-દાસ પુનેમચંદ કાપડિયા તરફથી ચોવીસ જિન પુજા ધામધુમથી શાંતિનાથનાથને દેહેરે ભણાવવમાં આવી હતી ને નોમને દિને પારનની ખુશાલીમાં જમણુ થયું હતું.

ઉજેડીયા—પં. રતનચંદજી ત્યાં હોવાથી અભિષેક પુજન શાસ્ત્રમાં આનંદ આવ્યો હતો. સંસ્થાઓ માટે ટીપ થઈ હતી. અત્રે ધર્મપ્રેમ સારો જોવ માં આવે છે.

થાંદલા—પં. મહેંદ્રકુમારજી શાસ્ત્ર વાચતાં હતા. ગેબીલાલજીની ધર્મપત્નીએ ૧૦ ઉપવાસ કર્યો હતા. પૂજનનો આનંદ અપૂર્વ હતો.

અંકલેશ્વર—બે બ્હેનોએ ૧૦–૧૦ ઉપવાસ કર્યા હતા. પૂજા પ્રભાવના અભિષેક વરઘોડા આદિનો આનંદ અપૂર્વ હતો.

સુદાસણા—પાંચ બહેનોએ પાંચ પાંચ ઉપવાસ કર્યા હતા. અનેક વ્રતો થયાં હતાં. વર-ઘોડો નીકલ્યો હતો. ૧૨૫)ની ઉપજ થઈ હતી.

સોજીત્રા—શ્રાવિકાશ્રમમાં અનેક વ્રતો થયાં હતાં. રોજ સામાયિક પુજન શાસ્ત્ર વગેરે નિયમીત થતાં. આશ્રમનો ૧૦ મો વાર્ષિક મેલાવડો હરી-લાલભાઈ હેડમાસ્તર અંગ્રેજી સ્કુલના પ્રમુખપણા નીચે થયો હતો. ૩૦૦ની સંખ્યા હાજર હતી. બાળાઓના ગાયન ગરબા ઉત્તમ થયા હતા. તેમજ આશ્રમની ઉન્નતિ માટે અસરકારક વ્યાખ્યાનો થઈ પતાંસાની પ્રભાવના થઈ હતી.

બાવલવાડા—૫ બહેનોએ દશ લક્ષણ તથા સોલહકારણ વ્રત કર્યાં હતાં. સુદ ૧૪ જનોઈ બદલાયાં હતાં. જલયાત્રા થઈ હતી. એજ દિને ફડિયા ખુમજીભાઈનો સ્વર્ગવાસ થયો હતો જેઓ પાઠશાળાને સારૂં દાન કરી ગયા છે.

નરોડા—પૂજા અભિષેક સંગીત ધર્મધ્યાન-પુર્વક થતાં હતાં.
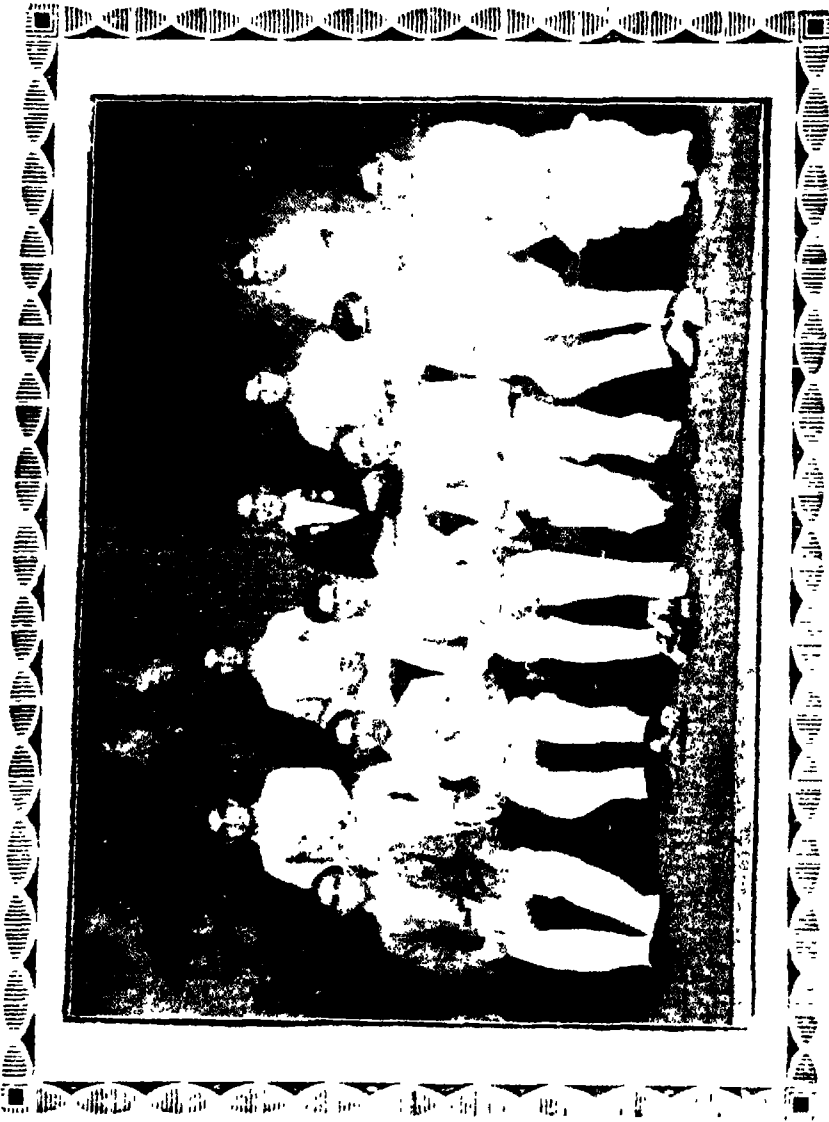
प्रेमचन्द मोतीचन्द दिगम्बर जैन बोर्डिंग—अमदावादना विद्यार्थियो द्वारा
धर्मप्रचारार्थ स्थापित महावीर मंडळनो ग्रुप.

आगली हारमां बेठेला: १ आर. एन शाह. २ डी. एम. शाह. ३ एम. बी. जैन. ४ एम. सी. शाह. ५- डी. जे. शाह.

पाछली हारमा बेठेला: १ एन. ए. गांधी. २ एम. एम. [illegible]. ३ - एम. के. महेता, ४ - सी. पी. शाह. ५ - बी. जे. शाह, ६ ए. झेड. शाह.

वर्ष २० वां
अंक
११

वीर सं० २४६०
भाद्रपद
सं० १९९०.

प्रासंगिकैः सामयिकैः सुवृत्तैर्लेखैर्विनोदैः कविता-कलाभिः।
सद्धर्मसाहित्यसमाजवृद्ध्यै "दिगम्बरो जैन" उदेत्यपूर्वः॥

शरद।

(द्रुतविलम्बित)

[लेखक-श्रीयुत पं० पन्नालालजी जैनकाव्यतीर्थ-सागर।]

सुजन मानससे घन लोकमें,
अब नहीं दिखते घन हैं कहीं।
विविध रंग शरासन शक्रका,
छिटकती नहिं कांति कभी कहीं॥

कमल काननसे सर हैं भरे,
भ्रमर गूँज रहे जिन पै खरे।
कनक केशर मण्डित नीर भी,
द्रव सुवर्ण समान विराजते॥

धवल वर्णयुता बक पंक्ति भी,
गगनमें उड़ती नहिं दीखती।
विशद शारद वारिदको कला,
व्यथित मानसके मनसी चला॥

शरदके सित कांतिकलापसे,
अखिल भूतल काश समूहसे।
भर रहा, नभ भी शुभचन्द्रकी,
धवल कांति कला भरपूर है॥

उड़ रही नभमें इस ओरसे,
शरद सूरतिकी सित केतुसी।
नद नदीश्वर कूप तड़ाग भी,
सुर नदी सम है दिखते सभी॥

जब निशाकरके शुभ योगमें,
सित विभा रजनी दिखती यहां।
तब कवीन्द्र नई निज कल्पना,
हृदयसे रस पूर्ण निकालते॥

गगन तारक मण्डलसे भरा,
अमल सागरमें तिरता अभी।
तब नहीं दिखता कुछ भेद है,
सलिलराशि तथा नभलोकमें॥

सम्पादकीय वक्तव्य।

दीपावली पर्व। समस्त भारतमें दीपावली मनानेकी तैयारियां होरही हैं। अपने अपने मकान महल और दुकाने साफ की जारही हैं। भूखे भाइयोंके पेटमें लात मारकर लाखों और करोड़ों रुपया फटाकों तथा गोला बारूदमें नाश किया जाता है, जुआके अड्डे जमाकर अपने अपने भाग्य अजमाये जाते हैं, और अनेक प्रकारके रागरंग मनाये जाते हैं। कहीं लक्ष्मीकी पूजा की जाती हैं, रुपयोंकी खनाखन होती हैं और अपने वैभवका प्रदर्शन किया जाता है। यह सब होता है धर्म समझ कर, कर्तव्य समझ कर, पावन पर्व समझ कर !

भाइयो ! अपनी अंतरंग स्थितिको देखो, अपनी हालतपर सच्चे दिलसे विचार करो, तनिक विवेक बुद्धिसे काम लो, अपने धर्म, देश और समाजकी हालतपर दृष्टिपात करो और सोचो कि आज क्या ऐसे रागरंग मनानेका समय है ? क्या इस प्रकार द्रव्यका दुरुपयोग करना ठीक है और क्या जो हम करते हैं वह धर्मानुकूल है ? उत्सव और हर्ष तो वहां मनाये जाना चाहिये जहां सब प्रकार अमन चैन हो, जहां देश सुखी हो, जहां समाज सानन्द हो, जहां ऐक्य और प्रेमका संचार हो, मगर यहां तो इन बातोंका नाम तक नहीं है. फिर उत्सव कैसा और रागरंग कैसा ?

दीपावली क्यों मनाना चाहिये. इसकी उत्पत्ति कब और कैसे हुई, इन बातोंका आज कितनोंको ज्ञान है। मात्र अन्ध परम्परासे पर्व मनानेकी रूढ़ि हमारे यहां चालू है। जिन्हें दीपावलीका इतिहास मालूम है और जो उसके रहस्यको जानते हैं वे उसपर चलते नहीं हैं। यही कारण है कि हमारा पवित्र एवं धार्मिक दीपावली उत्सव मिथ्यात्व (लक्ष्मी पैसा पूजा) पाप (जुआ) और अनर्थ (दारूगोला फोड़ने) के रूपमें परिवर्तित होगया है।

* * *

महावीर निर्वाण। जैन शास्त्रोंमें दीपावलीके सम्बन्धमें लिखा है कि इस दिन भगवान महावीरस्वामीने २४६० वर्षपर निर्वाणपद पाया था। इसलिये देवोंने उनकी रत्न-दीपकोंसे पूजा की थी। तथा सर्वसाधारण लोगोंने कृत्रिम दीपकोंके प्रकाशसे भगवानकी भक्ति की थी। इससे सिद्ध है कि दीपावलीका अर्थ वीर-पूजा है ! मगर आज हम लोगोंमें वीरपूजाका भाव ही कहां है ? वीर भगवानने मोक्ष-लक्ष्मी प्राप्त की थी इसलिये लोगोंने मोक्ष-लक्ष्मीकी पूजा की थी। मगर आज मूर्ख लोग लक्ष्मी (रुपया पैसा) की पूजा करनेमें धर्म मानते हैं। आश्चर्य तो यह है कि इस लक्ष्मीकी प्राप्तिके लिये जुआ खेलकर खूब प्रयत्न किये जाते हैं। जबकि इसका अर्थ यह था कि अनेक प्रयत्न करके मोक्षलक्ष्मीको प्राप्त किया जाय। धर्म और पर्वके नामपर हमारे यहां मिथ्यात्व खूब फल गया है। इस दिन कोई बहियोंको पूजता है तो कोई तराजूकी पूजा करता है। कोई सेर पसेरीकी पूजा करता है तो कोई दरवाजा और देहलीको पूजता है, यह सब क्या है ?

जिन जैनियोंको मात्र वीतराग भगवान-तीर्थंकरोंकी ही मूर्ति पूजनेका विधान किया गया है और इनके अतिरिक्त तमाम पूजाओंको मिथ्यात्व बताया गया है, वहां हम धर्मके नामपर, वीर प्रभूके नामपर अनेक प्रकारका मिथ्यात्व सेवन करते हैं, यह महान खेदकी बात है। विश्वास रखिये कि तराजु, बाट, बहीखाते और रुपया पैसेकी पूजा करनेसे न तो लक्ष्मी आपके यहां ठह

पड़ेगी और न पूजाके अभावमें वह भाग ही जायेगी । फिर यह मिथ्यात्व सेवन क्यों किया जाता है ?

* * *

हमारा कर्तव्य । दीपावलीके इस पवित्र अवसर पर हमारा कर्तव्य है कि हम उसके रहस्यको समझें, तथा इस बातको भी जाननेका प्रयत्न करें कि वर्तमान प्रचलित हुई रूढ़ियोंका असली रूप क्या था। इसे जानकर मिथ्यात्वको छोड़े और सत्यका प्रचार करें। दीपावलीके दिन प्रातःकाल भगवान महावीरस्वामीकी पूजा करनी चाहिये, निर्वाण उत्सव मनाना चाहिये, जुलूस निकालना चाहिये, वीरके गुणगान करना चाहिये और जगह जगह सार्वजनिक सभायें करके वीर भगवानके उपदेशसे जनताको परिचित कराना चाहिये इतना ही नहीं किन्तु लोगोंको बताना चाहिये कि भगवान महावीरस्वामीका धर्म कितना उदार है।

दीपावली वीरपूजाका स्मारक पर्व है। किसीकी पूजा उसके गुणगान करनेसे ही नहीं किन्तु उसके सिद्धान्तोंपर चलने और प्रचार करनेसे होती है। वीर भगवानका उपदेश सबके लिये है। वीर भगवानका शासन उदार है। उसमें प्रत्येक मनुष्यको हरहालतमें पूर्ण अधिकार मिलता है तब हम क्यों इस उदार दरवाजेको बन्द किये हुये हैं? आने दो जो भी आना चाहें वीरपूजा करनेके लिये, करने दो जो करना चाहें वीर धर्म धारण, लेने दो जो लेना चाहें जैन धर्मकी शरणको तथा पवित्र होने दो जो होना चाहे पवित्र अपने पापोंका प्रायश्चित करके, यही दीपावलीका कर्तव्य है। यदि आप इतनी उदारता नहीं दिखा सकते हैं तो महावीरका निर्वाणोत्सव मनाकर क्यों स्वपर वंचना करनेसे कोई लाभ नहीं है।

* * *

ઉત્તમ ક્ષમા. ઉત્તમક્ષમાવણીનો અપૂર્વ દિવસ ભાદરવા વદ ૧ દિને વ્યતીત થઇ ગયો છે તે પ્રસંગે આ "દિગંબર જૈન" પણ ઉત્તમ ક્ષમાની યાચના કરવા ઉપસ્થિત થાય છે. અમારાથી આ વર્ષમાં "દિગંબર જૈન" પત્ર દ્વારા નિષ્પક્ષપણે સત્ય સમાચાર આપવામાં કે સત્ય ટીકા કરવામાં જો કોઇ ભાઇનું મન દુખાયું હોય તો તે માટે અમે આ પત્ર દ્વારા તે સર્વે ભાઇયોની પાસે ઉત્તમ ક્ષમા માગીયે છિએ. આશા છે કે દરેક ભાઇ ઉત્તમ ક્ષમાનું આદર્શ સ્વરૂપ સમજી ક્ષમા ભાવ ધારણ કરવા બનતો પ્રયત્ન કરશેજ

* * *

નૃસિંહપરા રાયકવાળ સંમેલન. ગયા અંકના લેખ અને સમાચારોથી વાંચકોને જણાયું હશે કે ગુજરાતના આપણા નૃસિંહપરા અને રાયકવાળ ભાઇઓએ પરસ્પર કન્યા આપ લે કરવાનો ઠરાવ કલોલમાં ભેગા મળીને લેખિત રૂપે કરી દીધો છે અને ધારાધોરણનો ખરડો પણ તૈયાર કરી દીધો છે જે બીજી બેઠકમાં પાસ થનાર છે. એ બીજી બેઠક **તારંગાજી** સિદ્ધક્ષેત્ર પર **આસો સુદ ૩** ને દિને મળનાર છે અને તેના છાપેલાં નિમંત્રણો (ધારા ધોરણના ખરડા સાથે) બહાર પડી ચુકયા છે જેની નકલ પણ આ અંકમાં છાપવામા આવી છે એ પરથી જણાશે કે એ પ્રસંગે સમગ્ર નૃસિંહપરા અને રાયકવાળ ભાઇઓને એમા બોલાવવામાં આવ્યા છે. જ્યારે બીજી બાજુથી એવું પણ સંભળાય છે કે નૃસિંહપરા ભાઇઓમાં બે પક્ષ કેટલાંક વર્ષોથી પડેલા છે ને તેનાં ઝેરવેર એટલાં ફેલાયલાં છે કે સગાં સગાં પણ એક બીજાની સામું જોવા તૈયાર નથી એવા સંજોગોમાં નરસિંહપુરવાલા નાના પક્ષને ખાસ આમંત્રણ થયું નથી. જો એ પ્રમાણે હોય તો તે વ્યાજબી ન કહેવાય. બે નાના પક્ષને તો ખાસ આમંત્રણ આપી

બોલાવવો જોઇએ અને આ સાથે ઘરનો ઝઘડો પણ કોઇપણ સંજોગોએ પ્રથમ પતાવી નાખવો જોઇએ તોજ નરસિંહપરા ભાઇઓની શોભા છે. અને મોટા પક્ષને માનરૂપ છે.

અમારા માનવા મુજબ તો આમંત્રણ નાના પક્ષને ગયુંજ હશે છતાં જો નજ ગયું હોય તો હજી પણ થવાની જરૂર છે. તથા જો તે આમંત્રણ માનવા ન માનવા સંબંધમાં પણ નરસીંપુરના પક્ષના ભાઇઓને વાધો હોય (!) તોપણ એ નાના પક્ષે એજ સમયે તારંગાપર પોતાની બેઠક રાખવીજ જોઇએ કેમકે હવે તો નરસિંહપુરના પક્ષના નિરાંતે બેસી રહે તેમાં શોભા નથી. **એકયતા માટે બેદરકારી એ પણ એક પ્રકારનું પાપ છે.** અમારૂં તો એમ માનવું છે કે એક સિદ્ધક્ષેત્રના ઉપર બંને પક્ષના ભાઇઓ ઉદારભાવથી એકત્ર થશે તો ઘણા વર્ષોનો ઝઘડો પતી જશે અને રાયકવાળ ભાઇઓ સાથેનું જોડાણ પણ પાકું થઇ જશે. અમોને ખબર છે ત્યાં સુધી નરસિંહપરા જ્ઞાતિમાં બીજા પણ ૫-૭ ઝઘડાઓ છે જે તરફ પણ આંખઆડા કાન કરી માત્ર રાયકવાળ સાથે જોડાવું ને ધારધારણ પાસ કરી દેવા ને તે ન માને કે ને આવે તેની દરકાર ન કરવી એ પણ વ્યાજબી નથી (કેમકે ગૃહ કલહ કાયમ રહે તે ઇષ્ટ નથી) માટે અમો ફરીથી નૃસિંહપુરા ભાઇયો અને રાયકવાળ ભાઇયોનું સંગઠન કરવાનો પ્રયત્ન કરવાવાળા અગ્રેસર ભાઇયો કે જેમને તારંગાની બેઠકની વ્યવસ્થા સોંપાયલી છે, તેઓએ તાર તથા પત્રો દ્વારા કે બીજી રીતે નૃસિંહપુરાના બન્ને પક્ષોને તથા બધા રાયકવાળ ભાઇયોને તારંગા બોલાવવા તનતોડ પ્રયાસ કરવોજ જોઇએ. આમોદ તથા સુરત વિભાગના નરસિંગપરા ભાઇયો જે કલોલની બેઠકમાં જઇ શક્યા નહોતા તેમને સર્વેને તારંગાની બેઠકમા જરૂર જરૂર બોલાવવાજ જોઇએ. જો બધા ભાઇયો આગલી પાછલી વાતો ભૂલી જઇ જો ઉદારતા, નમ્રતા, અને ક્ષમાભાવ દર્શાવી એક દીલથી અને શાંત ભાવથી ને સરળ હૃદયથી તારંગાજીમાં મળશે તો જરૂર બધા ઝઘડાઓ પણ પતી જશે તેમજ નરસિંહપુરા અને રાયકવાળ ભાઇયોનું પાકુ જોડાણ થઇજ જશે. અને એ બેઠકની અંતે બે ચાર વિવાહ પણ નરસિંહપરા અને રાયકવાળ વચ્ચે થઇ જવાની જરૂર છે.

દિગંબર જૈનના ગ્રાહકોને ભેટ—આ અંક સાથે "**ભગવાન મહાવીર**" નામનું ગુજરાતી પુસ્તક શા. સુરજમલ તલોકચંદ ડેરીવાલા દાહોદ તરફથી તેમની સ્વર્ગીય પુત્રી શાંતાના સ્મરણાર્થે ભેટ વેચવામા આવ્યું છે. જે દરેકને વાંચવા, વિચારવા અને તેનો અજૈનોમા પણ પ્રચાર કરવા ભલામણ છે. ભાઇ સાગરમલ મૂલચંદ તલાટી દાહોદનો આ પ્રયાસ ઉત્તમ છે અને આ ભાઇ એજ મુજબ ભગવાન પાર્શ્વનાથ વગેરે ટ્રેકટો ગુજરાતીમા છપાવી ભેટ વેચવાનો પ્રયત્ન કરી રહ્યા છે એ જાણી અમારા વાંચકોને અત્યંત આનંદ થશેજ.

નવોવાસ—મહાવીર મંડળના અમદાવાદ ૧૨ સભ્યોનો ઉત્તમ સત્કાર થયો હતો ને તેમના અસરકારક વ્યાખ્યાનો થયા હતા.

વિજયનગર—મોડાસિયા ફતેચંદભાઇના પ્રયાસથી અનેક વ્રત થયાં હતાં. રોજ શાસ્ત્ર સભા થતી. વરઘોડો પણ નીકળ્યો હતો.

ગુજરાતમાં ધર્મપ્રચાર કાર્ય—કરવા માટે પ્રે. મો. દિ. જૈન બોર્ડિંગના વિદ્યાર્થીઓએ મહાવીર મંડળ સ્થાપન કર્યું છે ને એના ૧૧ વિદ્યાર્થી ગત માસમા તારંગાની યાત્રા ગયા હતા ત્યાંથી ભાટવાસ, નવોવાસ, દાંતા, તથા સુદાસણા જઇ ભાષણો આપી ધાર્મિક સામાજીક વિષયોપર સારો પ્રકાશ પાડયો હતો. એ મંડળનો ૧ ગ્રુપ ફોટો પણ આ અંકમાં આપવામા આવ્યો છે.

દાહોદ—પં. છોટેલાલ બરૈયા પધારવાથી શાસ્ત્ર સભા વગેરેમાં સારો આનંદ આવતો હતો. ત્રણે મંદિરોની રથયાત્રા આનંદથી નીકળી હતી, જમણ પણ મોટું થયુ હતું અનેક વર્ષોનો કુસંપ ઓછો થયેલો જણાતો હતો

जैन समाचारावलि ।

इस वर्ष पर्यूषण पर्व निम्नलिखित स्थानोंपर पूजन अभिषेक, शास्त्र सभा, जुलूस आदि द्वारा मनाये जानेके समाचार मिले हैं—सूरत, बम्बई, इन्दौर, खनियाधाना, तलवाड़ा, वांकानेर, खण्डवा, कुशलगढ़, विल्सी, गोगल, कलोल, मालावाड़ा, नवोवास, विजयनगर, अंकलेश्वर, वधेगांव, दाहोद, सोजित्रा, बावलवाड़ा, नरोड़ा, मुदासणा, हरदा, इटावा, झांसी, अमरावती, देहली, शिमला, मदरास, पाली, मण्डवल, पछार, मुरारिया, उजेड़िया, बहराईच, सहारनपुर, थांदला, लखनऊ, कलकत्ता, डिबरूगढ़, बड़वाहा, सोलापुर, खेकड़ा, चौरासी, पिड़ाई, मोमीनाबाद, बड़नगर, बारासिवनी, जाबुड़ी, बासौदा, बालाघाट, बारसलीगंज, अलाहाबाद, करांची, कासगंज, हिसार, फरुखाबाद, जयपुर, रानीपुर, जगदलपुर, अंगदपुर, उदयपुर, ग्वालियर, मनावर, मेरठ, छोटी सादड़ी, फतेपुर, सुजालपुर, धामपुर, धार, मुवारिकपुर, पावागिरी, बामौरा, डोंगरकल, नसीराबाद, कुन्थलगिरि, मेलसा, रामपुर, चन्देरी, खुरई, मोरेना, गलियाकोट, मंदसौर, ललितपुर, किशनगढ़, अमदावाद, तिलोकपुर, वागीदौरा आदि अनेक स्थानोंसे समाचार मिले हैं। उनमें खास विशेषता यह थी—

इंदौर—में सुदी १४ को सौ० मैनाबाईजी देवीचन्दजीका स्वर्गवास होगया। आपके स्मरणमें १५००२) दानमें निकाले गये हैं जिसमें १०००१) से वहां श्राविकाश्रम खुलेगा। तथा ५००१) अन्य संस्थाओंको दानमें दिये जायगे। **शिमला**—में कई आम व्याख्यान हुए थे। **गलियाकोट**—में तेरहद्वीप पूजन हुआ था। आर्यिका चन्द्रमतीके उपदेशसे प्यारीबाईने ब्रह्मचर्य प्रतिमा धारण की है। अनेकने जनेऊ लिये व अनेक प्रतिज्ञाएं ली थीं। **खण्डवा**—में तत्वार्थके उत्तम अर्थ करनेवाले विद्यार्थियोंको सुवर्ण व रौप्य-पदक दिये गये थे। सेठ चुन्नीलालजी झातरवालोंने १२०००) औषधालयको दान किये। **इटावा**—में युवक संघ व पं० चंद्रसेनजीके उद्योगसे अधिक आनन्द रहा था। **मद्रास**—में सेठ वैजनाथजीने बड़ा उत्सव कराया था। आपकी धर्मपत्नीने जैन नित्य पाठ संग्रह १२०० कॉपी भेट वितरण की हैं। **देहली**—में पं० देवकीनन्दनजी, कलाशचंदजी व पं० वंशीधरजी पधारे थे। तीनोंमें पं० देवकीनन्दनजीका व्याख्यान अतीव प्रभावक रहा था। **पछार**—में ३००) का चार दानका चंदा हुआ। **लखनऊ**—में सेठ जेठमल सदासुखजीने १००) संस्थाओंको दान किये। **दाहोदमें**—१००) मोरेना विद्यालयको मिले। **उदयपुरमें**—आचार्य संघ होनेसे अतीव धर्मप्रभावना हुई थी। ९ बाईयोंने १०, १० और १ ने ७ उपवास किये थे। **अमरावतीमें**—ब्र० सीतलप्रसादजी, प्रॉ० हीरालालजी व बेरिष्टर जमनाप्रसादजीके व्याख्यानोंसे अच्छी धर्मचर्चा हुई थी।

सेठ चुन्नीलालसा झातरवालों—ने दि० जैन पारमार्थिक औषधालय खण्डवाको पहिले ११०००) दिये थे तथा अभी १५०००) और दिये हैं।

मुनींद्रमंडलीका अंत—दमोहसे मुनींद्रमंडली मोटरमें जबलपुर गई थी, वहां तीनों मुनिने लगोटी लगाली, व इनकी अनेक पोलें प्रकट हुईं। तथा उनके पास करीब २०००) और १५ तोला सोना निकला। फिर मुनींद्रसागरका अधिक बीमार होनेपर ता० २७ सितंबरको विक्टोरिया होस्पिटल जबलपुरमें देहांत होगया। उसके बाद एक मुनिवेषी शायद देवेंद्रसागरने कुएमें गिरकर प्राण त्यागा व इस मंडलीकी एक बाई हनूमान ताल (तालाब) में डूब मरी है। पुलिस तपास चालू

है। अंत समयतक मुनींद्रसागरको कषाय नहीं गई थी।

उस्मानाबाद—में सेठ माणिकचंद बालचंदजीका ६८ वर्षकी आयुमें स्वर्गवास होगया। २०००) दान कर गये हैं।

बडवानी—स्टेटमें दशहरापर होनेवाली पशु हिंसा इस वर्षसे बंद हुई है।

ब्यावरके सेठजी—रा० सा० मोतीलालजी (चम्पालाल रामस्वरूपवालों) ने १४ वर्षके कम उम्रवाली सेठ राधाकिशनजीकी पुत्रीसे शादी की है। अतः आपपर शारदा-एक्ट अनुसार केस चलाया गया है।

बडौत—में दि० जैन हाईस्कूलका १८वां अधिवेशन १४-१५ अक्टूबरको होगा। तब सायंस विभाग भी खुलेगा। श्री० साहू जुगमंदिरदासजी नजीबाबाद सभापति होंगे।

चन्देरी—में १००० प्राचीन ग्रन्थोंका शास्त्र भण्डार है, जिसकी सूची सेठ पन्नालाल हाथीसावने अभी बनाई है। जिससे माल्लूम हुआ है कि ताड़पत्र व स्वर्णाक्षरोंके भी ग्रन्थ हैं। तथा २ शास्त्र संवत् १७३ का व संवत् १२५ के हैं। इसकी खोज होनी चाहिये।

ऋषभदेव—ध्वजादंड केसमें ध्वजादंड आरोहणके प्रमाण ता० २५ नवम्बरको पेश करनेके लिये दि० जैनोंको ध्वजादंड जांच कमीशनसे सूचना मिली है।

जीवदया सभा आगरा—के लिये निकाली गई सहायता आगरा अथवा सभापति साहु जुगमंदिरदासजी नजीबाबादको भेज सकते हैं। यह सभा जीवदयाका उत्तम कार्य कर रही है।

जैनी साहबके लाख रु०के फंडकी व्यवस्था—इन्दौरमें एक ट्रष्ट कमेटी (लालचंदजी, ब्र० सीतलप्रसादजी, विमलप्रसादजी व मित्तलसाहब) द्वारा उत्तमतया होती है। अभी ही सन १९३३ का हिसाब प्रकट हुआ है। इससे माल्लूम होता है कि जमा बाजू ९०८७१॥=)॥२ हैं जिनमें करीब ८५०००) स्थायी फंड सुरक्षित है। फंड द्वारा अंग्रेजी भाषामें जैनधर्मका साहित्य प्रकट करनेका व लंडनमें जैनधर्मके प्रचारका कार्य अच्छी तरह हो रहा है।

चरणगांव—में पाठशालाका अधिवेशन होगया। लड़कोंने अकलंक नाटक खेला था।

वर्णीजीका (४१६)का दान—पं० मोतीलालजी वर्णी पपौराने अपनी वृद्धावस्था जानकर निज संपत्ति (४१६)का दान सस्थाओंको कर दिया है।

पुत्रजन्ममें बड़ा दान-सेठ गुलाबचंदजी गंगवाल बाल्लूजवालोंने पुत्र जन्मके हर्षमें ४४२५)का दान किया है।

इन्दौरमें—ला० हजारीलालजीकी सौ० सुपुत्रीका स्वर्गवास धर्मध्यान पूर्वक होगया। २२५) संस्थाओंको दान किया गया था।

उत्तम लेखक—पं० रामलालजी रामपुर स्टेटने ३॥ इंच लंबी व २॥ इंच चौड़ी जगहमें भक्तामर स्तोत्र लिखा है। धन्यवाद!

इन्दौरमें नग्न साधुओंके विहारमें रुकावट डालनेका बिल—पेश हुआ है और वह जल्दी पास होनेकी संभावना है जिससे इन्दौरके जैनोंमें बड़ी भारी खलबल मच गई है और उसका विरोध करनेके लिये छहो गोटोंकी सभा मारवाड़ी मंदिरमें हुई थी जिसमें महाराज साहेबको यह बिल रोकनेके लिये तार किया गया और इस एक्टको रोकनेका प्रयत्न करनेके लिये १००-१५० मेम्बरोंकी कमेटी बनाई गई व उसके कार्यकर्ता चुने गये हैं तथा प्रथम मिनिस्टर व आवश्यकता पड़े तो महाराजा साहेबके पास डेपुटेशन ले जानेका भी प्रस्ताव हुआ है।

સમાજની સળગતી સમસ્યાઓ.

(લેખકઃ—વિનય દેશાઈ, અમદાવાદ.)

આપણા સમાજે ચોમેર ઉભાં કરેલાં એવા અનિષ્ટ બંધનોની ને અન્યાયના અદ્દે લગ્નો પ્રસરાવતી સંગઠનને નામે આપખુદીથી ઊભી થયેલી આપણી જ્ઞાતિ તેના સંતાનોનું અનેક પ્રકારે બલીદાન લીધે જાય છે. આને માટે કોણ જવાબદાર? ભારપૂર્વક જોતાં જણાશે કે સમાજના મુદ્દાનીઓ પટેલો પંચો બીજે નંબરે વડીલશાહી સમાજની આપખુદીથી જ્ઞાતિ આગેવાનો મુડીવાદીઓ અને તેના ખીદમતગારો સમાજની જુની રૂઢ બનેલી અયોગ્ય પ્રણાલીકાઓને પોષે જાય છે અને આ પ્રકારે સબળો ગણાતો વર્ગ નબળા ઉપર જોહુકમી ચલાવે જાય છે, પણ હવે તો એ શાસનચારીઓ જેમના અન્યાયી ને અંધાધુંધી વાતાવરણથી સામાજીક સીતમો હદ વટાવી ગયા છે, તેમને પદભ્રષ્ટ કર્યેજ છુટકો અને યુવાનો પોતાના એકત્ર બળથી જ્ઞાતિઓના ટુકડા સાંધવા તનતોડ મહેનત કરાવે તથા અનીષ્ટ બદીઓ દૂર કરે તથા જ્ઞાતિમાં દરેક વ્યક્તિને ન્યાય મળે, એ મુજબ કાર્ય પ્રણાલી ઉપાડવા સુકાન પોતાને હાથ ધરે તોજ જ્ઞાતીઓના સડા નષ્ટપ્રાય થાય, સમાજ બંધારણ મજબુત અને વિશાળ બને, આવું ક્ષેત્ર ઊભું કરવા દરેક યુવક યુવતી બંન્નેને શિક્ષણ, સ્વાશ્રય, સ્વતંત્રતાના ચુસ્ત ઉપાસક બનવું જોઈએ. સમાજની પુનર્રચના નવું ઘડતર ઘડવામાં નવ યુવાન વર્ગ પોતાનો યથાર્થ ફાળો પોતાની ફરજ સમજી આપે. ને ક્રાન્તીની ચીનગારી સળગાવે તોજ જ્ઞાતીઓના ભેદાભેદ નષ્ટ થાય. કારણ પ્રગતી પરિવર્તન સિવાય જીવન નથી. જુનું નવા સ્વરૂપમાં બદલાય તોજ ટકે, જગતમાં મોખરે આવે નહીંતો તેનો નક્કી નાશજ સમજવો.

સમાજ જીવનના મુખ્ય સ્તંભ ને ઉન્નતિ રૂપ લગ્ન જીવન કેટલું દુર્દૈવ ને દારૂણ છે એ જાણવું જરૂરનું છે. આપણાં લગ્નો પૈસો, કુલીનતા, રૂપ, મોહ ને વડીલોની મરજી ઉપર રચાયેલો છે. તેમાં પરસ્પરનું સામ્ય શિક્ષણ કે સદ્‌ગુણને સ્થાન નથી. પરીણામે અનમેલ સંમતી વિનાનાં પ્રેમહીન લગ્નોમાં કંઇ રસકારી કે દાંપત્ય જીવનની ઉચ્ચતા ભાસતી નથી અને સળગતો સંસાર બની રહે છે. વડીલો બાળકોને પરણાવવાના લ્હાવા લેવા બાલ્ય વયે લગ્નમાં હોમે છે. એટલું ધ્યાન પણ બાળકોના આધ્યાત્મીક કે માનસીક વિકાસ પરત્વે કે તેમને સંસ્કારી ને વીર બનાવવા આપતા નથી. આવી નિર્માલ્ય પ્રજાની સંતતિનો પાક તો કોઈ ઔર દુબળો ફાલ્યો જાય છે. ગુલામોનો સમુદાય વધતો જાય છે. સંતતી નીયમન કે સંયમનો બળાત્કાર ત્યાં લાગુ હોતો નથી.

આવા બાળલગ્નોના પરીણામે ઘેરઘેર બાળવિધવાઓના જુથ ભાસે છે અને તેમનાં ભાવી જીવન રડતાં નીવડે તેમાં શી નવાઈ? આથી આગળ લગ્ન જેવા જીવનના સુખ દુઃખના પ્રશ્નોમાં જીવન સાથીની પંસદગી વડીલશાહીના ઉપર રહે અને તેનો સ્વાર્થની ખાતર દૂર ઉપયોગ થાય એમાં શું કહેવાનું હોય? જાણે પોતાની જણેલી પ્રજાના તનમન ધનના માલિક બનવું તેમને રૂચે અને તેમના તમામ હક ખૂંચવી લેવાય. આવી પ્રજા પણ વડીલોની ગુલામીમાં સડતીજ હોય છે. વડીલશાહીની જોહુકમીમાં કેટલીય નીર્દોષ બાળાઓ હોમાય છે અને તેથી વધુ જ્ઞાતિની સંકુચિત જાળમાં કેટલાય યુવાન હૃદયો યોગ્ય જીવન સાથીના અભાવે જીવન કરુણાથી ગાળે છે. આથી એકજ ઉપાય રહે છે કે આપણા લગ્નો અમુક યોગ્ય બંધનથી સ્વ પસંદગીના સ્વીકાર તથા નિર્માલ્ય સમાજ રચના તેની આડે આવે એ ન પોસાય. તે ઉપરાંત લગ્ન જીવન રસાળ ને સુખપ્રદ અને તે ખાતર તથા ભાવી પ્રજા બળવાન ને પરાક્રમી નીવડે તે માટે સંતતિ નિયમન ને યોગ્ય ઉંમ-

રના લગ્નો ઉપર ખાસ ભાર મુકાય. અને આવા ધારા ધોરણો ન થાય, તો યુવાને નિર્માલ્ય પ્રજા તથા લગ્નપ્રણાલી પલટાવવા તથા ઘેરઘેર આદર્શ બાળકો નીપજાવવા અમુક વખત સુધી કોઇપણ સામાજીક કાર્યના બહીષ્કાર કરે (સીવાય ધાર્મિક) તોજ દેશનું સમાજનું ભાવી સુદ્દઢ ને ઉજળું બની રહેશે. ભાવી લગ્નપ્રથા સુધારવા સમાજ બંધારણ નવું ઘડવા તથા યુવકો પરસ્પર સહચાર સાધે તથા સમાજનું સંકુચિતપણું મીટાવવા પ્રયાસ કરે એ જરૂર ઇચ્છવા જોગ છે. આથી સમાજમાં નીતિનું ધ્યેય નહી સચવાય એવો નિર્માલ્ય ભય રાખવો યોગ્ય નથી. સમાજની પાંગળી નીતિ તથા ધર્મને નામે પોસાતી છુપી કલંક કથાઓ કરતાં આ નીતિ વધુ ઉજવળ નીવડી છે ને નીવડશે.

હવે સામાન્ય સ્ત્રીઓની સ્થિતિ તરફ નજર કરતાં જરૂર આદર્શ હૃદય દુઃખાય. સમાજના પુરૂષદેવે સ્ત્રીના નાનામાં નાના હકથી માંડીને દરેક હકો ઉપર પતિ વ્રતની સ્વામીત્વની બેડી કેટલાય વખતથી એવી સજ્જડ રીતે ઠોકી બેસાડી છે કે હજુ સુધી આપણો એ સ્ત્રી સમાજ એજ ગુલામીમાં સડતો રહયો છે અને એજ નિર્દય સત્તા ચાલુ રાખી તેણે સ્ત્રીને પાંગળી, નિરક્ષર તથા સ્વરક્ષણ કરવા બીરૂ બનાવી મુકી છે. પોતાને લાગુ પડતા સ્વમાન ને સ્વતંત્રતાના હકોથી અલગ રાખી છે. સમાજના પુરૂષોએ વિધવાને માટે લોખંડી સાંકળો ખડી કરી છે. વીધવા અપશુકનીયાળ ને ક્ષુદ્ર લેખવામાં આવે છે, તેમની ઉન્નતિના ક્ષેત્ર ઉભાં કરવા સ્વાર્થી સમાજ ભાગ્યે ધ્યાન આપે છે. સમાજની આ દાંભીક છળજાળને રૂઢી સંકલના નષ્ટપ્રાય કરી નવ સૃજન પ્રાપ્ત કરવા એકજ માર્ગ રહે છે અને તે એ કે જુનાં તત્વો કાઢી નાંખી તથા નવાં તત્વોનું તારતમ્ય કાઢી સમાજ અન્યની હરોળમાં ઉભા રહેવા નવ જોમ ને નવચેતન સાથે અવનવું પરીવર્તન કરી મુકે અને સમાજની પ્રત્યેક વ્યકિત યોગ્ય લાગતા નવીન સુધારા દાખલ કરી અપનાવી લે. કજીયા કુસંપનાં બમંડ દૂર કરે તોજ કાલનો અવ્યવસ્થીત સમાજ સંગઠીત વ્યવસ્થીત અને બળવાન પ્રગતીશાળી નીવડશે નહી તો આજે છે તેનાથી પણ વીપરીત દશા અનુભવશે અને એટલું તો ચોકસ છે કે સમાજના પાયા પ્રગતી પરીવર્તન શીવ્રય છિન્ન ભીન્ન થઇ જવાના.

આને માટે એકજ માર્ગ અને એકજ વાત સમાજ ને પંચ કે વડીલશાહીને માટે એકજ ઉપાય છે અને તે એ કે જેમ બને તેમ વહેલી તકે આપણા સમજના અનીષ્ટ વાતાવરણને તાકીદે દૂર કરી શાન્તીનું રાજ્ય સ્થાપે તેમાંજ તેમનું સાચુ ગૌરવ છે, અને સાથે એટલું તો ધ્યાન જરૂર રાખે કે આજનો યુવાન વર્ગ ક્રાન્તી માગે છે પ્રગતી માંગે છે, તે સારૂ પોતાનું જુનું બંધારણ સાપની કાંચળી માફક અલગ કરી સમાજનો યુવાન ભવીષ્યના સમાજના આ પ્રશ્નો અપનાવવા ઘુમી રહ્યો છે, તેનું રક્ત સમાજના દંભો દફનાવવા ઉકળી રહ્યું છે અને તે વાસ્તે તે હવે બાસ્વીર બની લોખંડી માનસથી ઝઝુમી માર્ગ કરવા માગે છે. બસ એકજ માર્ગ અને એકજ ધ્યેય.

ગોરેલ—બ્ર. ફતેહસાગરજીએ ૧૬ ઉપવાસ કર્યા હતા. પાનાચંદ ગુલાબચંદ શાસ્ત્ર વાંચતા હતા. બ્રહ્મચારીજીએ ૧૦૦) દાન ઉપવાસની ખુશાલીમાં કર્યું છે તેમાં ૫) દિ. જૈનને માટે પણ છે.

કલોલ—પૂજન અભિષેક નિયમિત થતા હતા. સેવામંડળની બે સભાઓ થઇ હતી. પૂનમે દિ. જૈન બાહુબલી વ્યાયામશાળાનો મેલાવડો થયો હતો, તેમાં વિદ્યાર્થીઓએ કસરતના અનેક ઉત્તમ ખેલો કર્યા હતા અંતમાં તેમને વાસણ, નાળિયેર રૂમાલ ને દુધ અપાયું હતું. વરઘોડો પણ નીકળ્યો હતો. સારી ધર્મ પ્રભાવના થઇ હતી.

માણાવાડા—પૂજન અભિષેક શાસ્ત્ર ઉપરાંત ચોવીસ જિન પૂજા કરવામાં આવી હતી.

श्री अजितनाथजीका ऐतिहासिक चरित्र।

(लेखकः—श्री० भैंरोदा- पद्मचंद सेठी, लाडनूं)

सदक्षराजराजित प्रभोदयस्व वर्द्धनः।
सतां तमो हरन् जयन् महो दयापराजितः॥
सदक्षराजराजित प्रभोदय स्ववर्द्धनः
सतान्तमोहरंजयन् महोदयापराजितः॥१७

अजित—(१) अजेय जो किसीसे जीता न जासके, नेत्ररोग निवारक एक तेल विशेष, एक प्रकारका ज़हरमुहरा, एक प्रकारका जहरीला चूहा, विष्णु, शिव, शुद्धात्मा, परमात्मा।

(२) द्वितीय तीर्थंकरका नाम। वर्त्तमान अवसर्पिणी कालके गत चतुर्थ विभाग 'दुःखम सुखम' नामक कालमें हुए २४ तीर्थंकरों (धर्मतीर्थप्रवर्तक महान पुरुषों) मेंसे द्वितीय तीर्थंकरका नाम 'अजित' या 'श्री अजितनाथ' है॥

१—इन्होंने इक्ष्वाकवंशी काश्यप गोत्र अयोध्या नरेश महाराज 'जितशत्रु' (त्रृजित) की पटरानी 'विजयादेवी' (विजयसेना) के गर्भमें शुभ मिती ज्येष्ठ कृष्ण ३० (अमावस्या) की रात्रिके पिछले प्रहर 'रोहिणी' नक्षत्रमें विजय नामक अनुत्तर विमानसे आकर और दश दिवस अधिक अष्टमास गर्भस्थ रहकर नवम मासमें शुभ मिती माघ शुक्ल १० को प्रातःकाल रोहिणी नक्षत्रमें जन्म धारण किया।

२—इनका जन्म प्रथम तीर्थंकर 'श्री ऋषभदेव' के निर्वाणगमनसे लगभग ७० लक्ष पूर्वकाल कम ५० लक्ष कोटि सागरोपमकाल पीछे और अन्तिम अर्थात् २४ वें तीर्थंकर 'श्री महावीर स्वामी' के निर्वाण कालसे लगभग ४२ सहस्र वर्ष कम ७२ लक्ष पूर्व अधिक ५० लक्ष कोटि सागरोपमकाल पहिले हुआ था।

नोट—८४ लाख वर्षका एक पूर्वाङ्गकाल और ८४ लक्ष पूर्वाङ्गका एक पूर्वकाल होता है। ४१३४५२६३०३०८२०३१७७७४९५१२१९-२०००००००००००००००००००० (२७ अंक और २० शून्य, सर्व सैंतालीस अङ्क प्रमाण) वर्षका एक व्यवहार पल्योपमकाल और १० कोड़ाकोड़ी अर्थात् १ पद्म (१००००००००००००००) व्यवहार पल्योपमकालका १ व्यवहार सागरोपमकाल होता है।

अतः ७०५६०००००००००० वर्षका एक पूर्वकाल और ४१३४५२६३०३०८२०३१७७-७४९५१२१९२००००००००००००००००००-०००००००००००००००००० (२७ अङ्क और ३५ शून्य, सर्व ६२ अङ्क प्रमाण) वर्षोंका एक व्यवहार सागरोपमकाल होता है।

(नोट—परन्तु अवसर्पिणी कालकी गणना अद्धा पल्य व सागरसे है जो व्यवहारसे असंख्यातगुणा है।)

३—जिस रात्रिको 'श्री अजितनाथ' अपनी माताके शिशुकुक्षि अर्थात् गर्भमें आये उस रात्रिके अन्तिम भागमें इनकी माताने निम्नलिखित १६ स्वप्न देखे:—

(१) श्वेत ऐरावत हस्ती, (२) गंभीर शब्द करता एक पुष्ट श्वेत वृषभ अर्थात् बैल, (३) निर्भय विचरता हुआ केहरि सिंह, (४) लक्ष्मीदेवी जिसे दो श्वेत हस्ती अपनी अपनी सूँड़में स्वच्छ जल

भरकर स्नान करा रहे थे, (५) आकाशमें लटकती दो सुगंधित पुष्पमालाएँ, (६) तारागण मंडित पूर्ण चन्द्रमंडल, (७) उदय होता हुआ सूर्य, (८) कमलपत्रोंसे ढके दो स्वर्ण कलश, (९) सरोवरमें कल्लोल करती मछलियोंका जोड़ा, (१०) स्वच्छ जलसे भरा एक विस्तीर्ण सरोवर, (११) जलचर जीवों सहित विशाल समुद्र, (१२) रत्नजड़ित एक उत्तुंग सिंहासन, (१३) आकाशमें गमन करता एक रत्नमय देवविमान, (१४) पृथ्वीसे निकलता एक नागेंद्रभवन, (१५) बहुमूल्य रत्नोंकी एक ऊँची राशि, (१६) निर्धूम्र प्रज्वलित अग्नि।

इन १६ स्वप्नोंके पश्चात् माताने अपने मुख मार्गसे एक श्वेत गन्ध सिन्धुर (गन्धयुक्त हस्ती) को सूक्ष्म रूपमें प्रवेश करते देखा और फिर तुरन्त ही निद्रा खुल गई।

४—गर्भमें इस महान पवित्र आत्माके अवतीर्ण होनेसे षट् मास पूर्वहीसे महाराजा 'जितशत्रु' के नगर व राजभवनमें दैवबलसे अनेक दिव्य शक्तियोंका प्रकाश दिव्य दृष्टि रखनेवालोंको दृष्टिगोचर होता रहा। इस दैवी चमत्कारसे माताके गर्भका समय पूर्ण आनन्द और भगवद्भक्ति व धर्मचर्चामें व्यतीत हुआ। प्रसवके समय भी माताको किसी प्रकारका कष्ट नहीं हुआ किन्तु उस महान आत्माके पूर्ण पुन्योदयसे क्षणभरके लिये संसारभरमें आनंद लहर विद्युत लहरके समान फैल गई।

५—अपने अपने 'मति-ज्ञानावरण' और 'श्रुत ज्ञानावरण' कर्मोंके क्षयोपशमानुसार मतिज्ञान और श्रुतज्ञान, यह दो प्रकारके ज्ञान तो अरहन्तों व सिद्धोंके अतिरिक्त त्रैलोक्यके प्राणी मात्रको हरसमय निरन्तर कुछ न कुछ प्राप्त हैं। पर इस पवित्र आत्माको अपने अवधिज्ञानावरण कर्मके क्षयोपशमसे सुमतिज्ञान और सुश्रुत-ज्ञानके अतिरिक्त तीसरा अनुगामी सुअवधिज्ञान भी गर्भावस्थासे ही प्राप्त था, जो साधारण मनुष्योंमेंसे किसी किसीको ही उग्र तपोबलसे प्राप्त होता है। अतः इस महान आत्माको विद्याध्ययन या किसी लौकिक या पारमार्थिक शिक्षाके लिये किसी विद्या-गुरुकी आवश्यक्ता न हुई।

६—इनका दिव्य पवित्र भोजन-पान इतना विशुद्ध, सूक्ष्म, अल्प और अगरु (हल्का) होता था जो पूर्ण रूपसे शरीराङ्ग बन जाता था जिससे साधारण प्राणियोंके समान इनके शरीरमें मलमूत्र और स्वेद (पसीना) न बनता था अर्थात् सम्पूर्ण भोज्य पदार्थ यथा आवश्यक शरीरकी सप्त धातुओंमें परिवर्तित होजाता था जिससे इन्हें मलमूत्र आदि किसी भी मल-त्यागकी आवश्यकता न पड़ती थी। (नोट—जब तक तीर्थंकर गृहस्थमें रहते हैं तब तक देवोपनीत भोजन वस्त्र पहनते हैं। यह अमृतमई भोजन शरीरमें शीघ्र शुद्ध होजाता है।)

नोट—आयु भर भोजनपान ग्रहण करते हुये मलमूत्र त्याग न करना यद्यपि एक आश्चर्यजनक और बड़ी ही अद्भुत बात है तथापि सर्वथा असम्भव नहीं है। जब कि हम यह देखते हैं कि आजकल भी कोई साधारण मनुष्य कभी कभी और कहीं कहीं ऐसे दृष्टिगोचर होजाते हैं जो दो चार आठ दिन, या पक्ष दो पक्ष ही नहीं, दो चार मास या केवल वर्ष दो वर्ष नहीं, किन्तु निम्नलिखित एक व्यक्ति तो पूरे बारह वर्ष तक नित्य प्रति भोजन पान ग्रहण करता हुआ भी मल-त्याग बिना पूर्ण निरोग और हृष्ट पुष्ट बना रहा:—

१—श्रीमान बाबू प्यारेलालजी जमींदार अगौठा, डाकखाना हर्दुआगंज, जि० अलीगढ़ जो एक प्रतिष्ठित और सुप्रसिद्ध पुरुष हैं और जो ज्योतिष, वैद्यक, गणित, इतिहास, भूगोल, कृषि, वाणिज्य, शिल्प, इत्यादि अनेक विद्याओं और कलाओं सम्बन्धी अनेकानेक ग्रंथोंके रचयिता व अनुवाद-

कर्ता हैं, निज रचित 'जोहरे हिकमत' नामक उर्दू ग्रन्थकी सन् १८९८ ई०की छपी द्वितीय आवृत्तिके सप्तम भाग 'इलाजुल अमराज'के पृष्ठ ७ पर संख्या (२)में निम्न समाचार लिखते हैं:—

"मौज़ा सासनी, तहसील इग्लास, जिला अलीगढ़में मेरे मामूका साला एक शख्स पटवारी है। उसकी बारात गई। रास्तेमें वह एक कब्रके पास पाखानेको बैठा। उसी रोजसे उसका पाखाने जाना बंद होगया। वह तन्दुरुस्त रहा। खूब खाता पीता जवान होगया। मगर 'बारह बरस' तक कभी उसको पाखानेकी हाजत न हुई न दस्त आया। डाक्टरी इलाज कराया मगर बे सूद। आखिर उसकी औरत मर गई। फिर दूसरी शादी हुई। उस वक्तसे खुद ब खुद वह पाखाने जाने लगा और दस्त आने लगा"।

२-उपर्युक्त व्यक्तिके अतिरिक्त चार चार, पांच पांच, आठ आठ, दश दश या ग्यारह दिवसके पश्चात् मल त्याग करनेवाले निरोग स्त्री या पुरुष तो कई एक सुनने और देखनेमें आये हैं।

चरक आदि वैद्यक ग्रन्थोंसे यह भी पता चलता है कि 'भस्मक व्याधि' नामक एक रोग भी ऐसा होता है जिसका रोगी चाहे जितना भोजन करे वह सर्व ही मल नहीं बनता किंतु उदरमें पहुंचते ही भस्म होकर अदृश्य होजाता है जिससे ऐसा रोगी क्षुधासे हरदम बेचैन रहता है। यह रोग कफके अत्यन्त कम होजाने और वातपित्तके बढ़ जानेसे जठराग्नि तीव्र होकर उत्पन्न होजाता है। इसे अंगरेजी भाषामें बूलीमुस (Bulimus), अरबी भाषामें 'जूउलबक्र' और उर्दू भाषामें 'भूखका होका' बोलते हैं।

उपर्युक्त कथनसे निःसंकोच यह तो प्रतीत हो ही जाता है कि ग्रहण किये हुए स्थूल भोजनका भी असार भाग स्थूल मल बनकर किसी न किसी अन्य सूक्ष्म और अदृश्य रूपमें परिवर्तित होकर शरीरसे निकल जासकता है। अतः जब साधारण व्यक्तियोंके सम्बन्धमें स्थूल और गरिष्ट आदि सर्व प्रकारका अधिक भोजन करते हुए भी किसी न किसी विशेष कारणसे उनके शरीरमें स्थूल मल न बननेकी सम्भावना है तो दिव्य शक्तियुक्त महा पुण्याधिकारी असाधारण पुरुषोंका विशुद्ध सूक्ष्म और अल्प आहार मलमूत्रादिक रूपमें न परिवर्तित होना कैसे असंभव होसकता है? यहां इतना विशेष है कि साधारण व्यक्तियोंके शरीरमें तो आहारका असार भाग (खल भाग) स्थूल या सूक्ष्म मलके रूपमें अवश्य परिवर्तित होता है और किसी न किसी मार्गसे शीघ्र या अशीघ्र कभी न कभी निकल जाता है परन्तु तीर्थंकर जैसे असाधारण व्यक्तियोंका प्रथम तो आहार ही ऐसा विशुद्ध होता है जिसमें असार भाग नहीं होता। द्वितीय उनके शरीरकी जठराग्नि तथा अग्न्याशय, पाकाशय आदि अङ्ग भी असाधारण होते हैं, जो आहारको सर्वाङ्गरसमें परिवर्तित करके खल भाग शेष नहीं छोड़ते।

७-इनके शरीरका रुधिर रक्तवर्ण न था किन्तु दुग्ध जैसा श्वेत वर्ण था। इनका शरीर अति सुन्दर, सुगंधित, समचतुरस्र और अष्टाधिक सहस्र (१००८) शुभ लक्षणयुक्त था। इनके शरीरका संहनन वज्रवृषभनाराच और अतुल्य बलवान था। सदैव हितमित प्रिय वचन बोलना उनका स्वभाव था।

८-इनके शरीरका वर्ण और कान्ति ताये स्वर्ण-समान देदीप्यमान और ऊँचाई ४९० धनुष अर्थात् ९०० गज थी। इनके शरीरके १००८ शुभ लक्षणोंमेंसे एक 'गज चिन्ह' मुख्य था जो इनके वाम चरणकी पगतलीमें था।

९-इनका सम्पूर्ण आयुकाल लगभग ७२ लक्ष पूर्वका था। जिसमेंसे चतुर्थ भाग अर्थात् लगभग

१८ लक्ष पूर्वकी वयतक यह कुमार अवस्थामें रहे; पिताके दीक्षित होनेके पश्चात् ५३ लक्ष पूर्व और एक पूर्वाङ्ग कालतक मंडलेश्वर राज्यवैभवका सुख भोगते रहनेपर भी यह भोगोंमें किसी समय लिप्त न हुए।

राज्य कार्यको जिस उत्तमसे उत्तम प्रबन्ध और पूर्ण योग्यताके साथ इन्होंने किया उसके विषयमें इतना ही बता देना पर्याप्त होगा कि इन सर्व कलापूर्ण और विद्यानिपुण महानुभावने प्रजाके उपकारमें अपनी शक्तिका कोई अंश बचा नहीं रखा था। इनके शासनकालमें प्रजा सर्व प्रकारसे सुखी धर्मज्ञ और षट्कर्मपरायण थी। धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष इन चारों पुरुषार्थोंका यथायोग्य रीतिसे निर्विघ्न साधन करती थी। सागार और अनागार धर्म अर्थात् गृहस्थ और मुनि धर्म दोनों ही सर्वांश सुव्यवस्थित नियमानुकूल पालन किये जाते थे।

१०-जब आयुमें एक पूर्वाङ्ग कम एक लक्ष पूर्व्व और एक मास २६ दिन शेष रहे तब माघ शु० ८ की रात्रिको 'उल्कापात' अवलोकन कर क्षणिक सांसारिक विभवसे एकदम विरक्त होगये।

अगले दिन माघ शु० ९ को प्रातःकाल ही अपने प्रिय पुत्र 'अजितसेन' को राज्यभार सौंपकर अपराह्न काल, रोहिणी नक्षत्रमें जब कि तिथि १० का प्रारम्भ होचुका था 'सुप्रभा' नामक दिव्य शिविका (पालकी) में आरूढ़ हो अयोध्यापुरी (विनीतापुरी वा साकेतानगरी) के बाहर सहेतुक (सहस्राम्र) नामक बनमें पहुँचकर और विषमच्छद अर्थात् सप्तछद या सप्तपर्ण वृक्ष (सतौनेका पेड़)के नीचे षष्ठोपवास (बेला, ढेला) का नियम लेकर दिगम्बरी दीक्षा धारण करली। इसी समय इन्हें चतुर्थ ज्ञान अर्थात् 'मनःपर्य्यय ज्ञान' का भी आविर्भाव होगया।

११-जिस समय इन्होंने दीक्षा धारण की उस समय इनके अनन्य भक्त एक सहस्र अन्य राजाओंने भी इनका साथ दिया।

१२-षष्ठोपवासके दो दिन बीतनेपर माघ शु० १२ को अरिष्टपुरी अर्थात् अयोध्या हीमें महाराज ब्रह्मदत्त (ब्रह्मभूत)ने इन्हें नवधा भक्तिपूर्वक गोदुग्ध पाकका शुद्ध और पवित्र आहार निरंतराय कराया।

१३-मुनि दीक्षा धारण करनेके पश्चात् ११ वर्ष, ११ मास और १ दिनतकके उग्रोग्र तपोबलसे इनके पवित्र आत्मामें अनेक ऋद्धियोंका प्रकाश हुआ और अन्तमें शुभ मिति पौष शु० ११ को अपराह्न काल (सायंकाल) रोहिणी नक्षत्रमें अयोध्यापुरीके समीप हीके बनमें षष्ठोपवासान्तर्गत ज्ञानावरणी आदि चारों घातिया कर्मोंका एकदम अभाव होकर अनन्त चतुष्ट अर्थात् अनन्त ज्ञान, अनन्त दर्शन, अनन्त सुख और अनन्त वीर्यका आविर्भाव होगया।

नोट ३-जब कभी किसी तपोनिष्ठ महानुभावके आत्मामें महान तपोबलसे 'अनंत ज्ञानादि चतुष्टय' का आविर्भाव और २८ मूलगुणों तथा ८४ लक्ष उत्तर गुणोंकी पूर्णता हो जानेपर जो परम पूज्य, पवित्र और परमोत्कृष्ट अवस्था प्राप्त होजाती है, उसी अवस्थाविशेषका नाम 'अर्हन्त' (अरहन्त) है। घातिया कर्मोंपर विजय पानेके कारण उसी अवस्था या पदवीका नाम 'जिन' है। कर्ममल दूर होने और परम उच्च बनकर त्रैलोक्य पूज्य अपूर्व अवस्थाकी नवीन उत्पत्ति हो जानेसे 'ब्रह्म' या 'ब्रह्मा' 'केवलज्ञान' (पूर्णज्ञान या अनन्त ज्ञान) प्रकाश होकर सर्वत्र उसकी व्यापकता होनेसे 'विष्णु' और अनन्त सुखसम्पत्तियुक्त पूर्णानन्दमय होनेसे तथा सब घातिया कर्मोंको जो संसारोत्पत्ति या जन्ममरणका मुख्य कारण हैं नष्ट कर देनेसे 'शिव', लोकालोकके सर्वचराचर पदार्थोंका निरावरण अनिन्द्रिय ज्ञान प्राप्त हो जानेसे 'सर्वज्ञ' तीन

काल सम्बन्धी पदार्थोंका ज्ञाता होनेसे 'त्रैकालज्ञ' इत्यादि अष्टाधिक सहस्र या असंख्य और अनन्त "यथागुण तथा नाम" इसी अवस्था युक्त पवित्र आत्माके है। आत्माकी इसी अवस्थायुक्त आत्माको "सकल परमात्मा" भी कहते हैं।

१४–कैवल्य ज्ञान प्राप्त होनेके पश्चात् 'श्री अजितनाथ' के द्वारा एक पूर्वाङ्ग ११ वर्ष, १० मास, ६ दिन कम एक लाख पूर्वकालतक अनेक भव्य प्राणियोंको धर्मोपदेशका महान लाभ प्राप्त हुआ। तत्पश्चात् बंग देशस्थ 'सम्मेदाचल' अर्थात् सम्मेदपर्वत जो बंगाल देशान्तर्गत 'हजारीबाग' जिलेमें आजकल 'पार्श्वनाथ हिल' या 'पार्श्वनाथ पर्वत' के नामसे लोकप्रसिद्ध है, उसके शिखर (चोटी) पर शुभ मिती फाल्गुन शुक्ल ५ को पहुंचकर आयुके शेष भाग अर्थात् एक मास पर्यन्त 'सिद्धकूट' नामक कूटपर ध्यानारूढ़ रहे जिससे शेष चारों अघातिया कर्मोंको भी नष्ट कर शुभ मिती चैत्र शु० ५के प्रातःकाल रोहिणी नक्षत्रमें कायोत्सर्ग आसनसे परमोत्कृष्ट निर्वाणपद प्राप्त किया।

१५–श्री अजितनाथके सम्बन्धमें अन्य ज्ञातव्य बातें निम्नलिखित हैं:—

(१) कैवल्यज्ञान प्राप्त होते ही धर्मोपदेशार्थ ४ प्राकार (गोलाकार कोटकी भीत या चारदीवारी), ५ वेदिका, ८ पृथ्वी, १२ सभाकोष्ठ, ३ पीठ और १ गन्धकुटी इत्यादि रचनायुक्त जो दिव्य गोलाकार समवशरण अर्थात् सर्व प्राणियोंको समभावसे अवशरण देनेवाले सभा मण्डपकी रचना की गई। उसका व्यास साढ़े ११ योजन (४६ कोस या लगभग १०४ मील) था।

(२) इनकी सभामें ९० गणधर, ३७५० पूर्वधारी, ९४०० अवधिज्ञानी, १२४०० अनुत्तरवादी, १२४५० विपुल मनःपर्यय ज्ञानी, २०००० केवलज्ञानी, २०४०० विक्रिया ऋद्धिधारी, २१६०० सूत्राभ्यासी शिक्षक एवं सर्व १ लाख और ९० यति थे; और यतियोंके अतिरिक्त प्रकुब्जा (फाल्गु) आदि ३ लाख २० सहस्र (३२००००) आर्यिका, ३ लक्ष प्रतिमाधारी (प्रतिज्ञाधारी) श्रावक, ५ लाख श्राविकायें, एवम् सर्व ११ लाख २० सहस्र देशसंयमी व्यक्ति थे।

(३) इनके मुख्य गणधर 'सिंहसेन' थे जो मति, श्रुत, अवधि और मनः पर्यय, इन चारों ज्ञानके धारक और द्वादशांग पाठी श्रुतकेवली थे।

(४) इनके मुख्य श्रोता जो समवशरणमें मुख्य गणधर द्वारा अपने प्रश्नोंके उत्तर श्रवण करते थे, 'सगर' चक्रवर्ती थे।

(५) उपर्युक्त १ लक्ष यतियोंमेंसे २० सहस्र ने तो श्री अजितनाथसे समवशरण ही में और ५७१०० ने अन्यान्य स्थानोंमें, एवम् सर्व ७७१०० ने कैवल्य ज्ञान यथा अवसर प्राप्त किया और श्री अजितनाथके कैवल्यज्ञान प्राप्तिके समयसे मोक्षगमन तकके समय तक इन सर्वने मुक्तिपद पाया। २० सहस्रने पंच अनुत्तर तथा नव अनुदिश विमानोंमें और शेष २९०० ने नव ग्रैवेयक तथा १६ स्वर्गोंमें जन्म धारण किया।

(६) इनका तीर्थकाल इनके जन्म समयसे तीसरे तीर्थङ्कर 'श्री संभवनाथ' के जन्म समय तक लगभग १२ लक्ष पूर्व अधिक ३० लाख कोटि सागरोपम काल रहा।

(७) इनके तीर्थकालमें हमारे भरतक्षेत्रके आर्यखंडमें यथार्थ धर्मकी प्रवृत्ति अखंड रूप रही और निरन्तर कैवल्यज्ञानियोंके उपदेशका लाभ मिलता रहा।

(८) यह तीर्थंकर अपने पूर्वभव अर्थात् पूर्वजन्ममें जम्बूद्वीपके 'पूर्व विदेहक्षेत्र' में 'सीतानदी'

दक्षिण तटपर बसे हुए 'वत्स' नामक देशकी 'सुसीमा' नामकी सुप्रसिद्ध नगरीके अधिपति 'विमलवाहन' नामक मांडलिक राजा थे जो सांसारिक भोगोंसे विरक्त हो, राज्यको त्याग, 'श्री अरिन्दम आचार्यसे मुनिदीक्षा ग्रहण कर, उग्र तपश्चरण करते हुए ११ अङ्गके पाठी हो, १६ कारण भावनाओंसे तीर्थंकर नामकर्मका बन्ध बांध, समाधिमरणपूर्वक शरीर त्याग 'विजय' नामक अनुत्तर विमानमें अहमिन्द्र पद प्राप्त किया और ३३ सागरोपमकी आयुको निरंतर अध्यात्म-चर्चा और आत्मानन्दमें व्यतीत कर अयोध्यापुरमें उपर्युक्त पवित्र राजवंशमें अवतार लेकर तीर्थंकर पद पाया।

(९) जब इन्होंने निर्वाण पद प्राप्त किया तब उसीके लगभग १००० अन्य महामुनियोंने भी निर्वाण पद पाया।

(१०) द्वितीय चक्रवर्ति 'सगर' जिसने लगभग ७२ लाख पूर्वकालकी वयमें निर्वाण पद पाया। और ११ अङ्ग १० पूर्वपाठी द्वितीय रुद्र 'जितशत्रु' जिसने लगभग ७१ लाख पूर्वकी वयमें परम कृष्णलेश्या युक्त शरीर त्याग सप्तम नरकमें जन्म लिया, यह दोनों 'श्री अजितनाथ' तीर्थंकरके समकालीन थे।

(११) श्री सम्मेदशिखरके जिस 'सिद्धकूट' नामक कूटसे इन्होंने निर्वाण पद पाया उससे वर्त्तमान अवसर्पिणी कालके गत चतुर्थ विभागमें एक अरब अस्सी करोड़ ५४ लाख (१८०५४०००००) अन्य मुनियोंने भी मुक्तिपद पाया था।

मुनिराजको आहार देनेकी विधि।

(ले०—उपदेशक पं० पीताम्बरदासजी)

(१)

आहार विधि निर्ग्रंथ मुनिकी मैं करूं वर्णन उसे.
सांप्रति समयके श्रावकोंको रीति कहते हैं जिसे।
प्रासुक सुजल मिष्टान्न तरकारी गृही खाते सभी,
बनते आहार विभाग करते हों खड़े देखें तभी॥

(२)

पीते न नीर गृही सचित्त कर अचित बर्तनमें भरें,
ले सब अचित्त अन्न, शाक, पके प्रासुक कर धरें।
निज उदर भरने फल सचित्त लेकर अचित रक्खे गृही,
निर्ग्रंथको आहार दें श्रावक यह सुप्रथा मही॥*

(३)

निज द्वारके पथमें भ्रमण करते प्रत्यक्ष लखें यती,
मिल जाय साधु महाव्रती हों सोचते पंचम गती।
बोलें गृही तिष्ठ प्रभो! तिष्ठ प्रभो! तिष्ठ प्रभो!
आहार, जल अति शुद्ध है पड़गाहता हूं मैं विभो!

(४)

देखे खड़े मुनिराजको बोले गृही पूजें चरण,
दूं उच्च आसन आइये मैं शीश धर करता नमन।
पूजन करूं विधि आठसे मन, तन, वचनको शुद्ध कर.
आहार दूं अति भक्तिसे दूंगा कमन्डल नीर भर।

(५)

दातार श्रावक, श्राविका लेकर कलश निज हाथमें,
ले अष्ट मंगल द्रव्य वर्ते लगे यत्नाचारमें।
मन, तन, वचनमें रख विनय धो दे प्रथम मुनिके चरण,
निज शीशपर यह न्होनका जल ले चढ़ा समझे तरण।

(६)

अर्चन किया दे अर्घ सविनय भोजनालयमें लखा,
रक्खा अहार विभाग यतिका यति मिले न गया भखा।

* संग्रहमुच्चस्थानं पादोदकमर्चनं प्रणामश्च।
वाक्कायमनःशुद्धिरेषणशुद्धिश्च विधिमाहुः॥

रक्खे कटोरे थालमें हों भोज पूर्ण जुदे ! जुदे !
रोटी, मठा, फल, दाल, शाक बने धरे वर्तन रुदे।

(७)

औषधि प्रासुक सहित व्यंजन धरे दीख सकें जुदे,
जिससे सुपात्र समझ सके आहार भक्ष्य [illegible]।
कर तल करें मुनिराज जब अंजुलि खुलावे नीर ले,
निर अन्तराय न भोज हो समझे यती [illegible]।

(८)

को प्रार्थना आहार लो मैं यत्नसे करूँ क्रिया,
मन, तन, वचन मेरे सदय शुभ भाव रक्खूं व्रत लिया।
कर तल लखूं उनपर रखूं आहार जब रे यत्नसे,
निर अन्तराय सफल क्रिया होजाए मेरे हस्तसे !

(९)

कर तल करें मुनिराज जब आहारदान करे शुरू,
प्रतिग्रासभक्षण कर चुकें दे नीर भर जावे चुरू।
लें खींच अंजुलिको मुनी भोजन न लेना जो उन्हें.
दातार समता सहित समझे डाचक जो देना इन्हें॥

(१०)

आहार पूरण कर चुकें जल भर प्रासुक [illegible] किया,
उसको कमंडलमें भर मुनिके [illegible] दिया।
वैयावृत्य श्रावक करें पग दावें तन [illegible],
पर्चे चरण कांटे लगे दे ऐंच चमड़ी [illegible] दे।

(११)

तनमें अनेको रोग हों हो [illegible], [illegible]
औषधि, मलम, शुचि तेल प्रासुक दे लगाकर शुद्ध [illegible]।
दे शास्त्रज्ञान अपूर्व समझे [illegible].
पीछी, कमन्डल जीर्ण हो दे बदल [illegible]॥

(१२)

बोले गृही उपदेश दो इच्छा हमारी [illegible],
समझें यती सम्बोध दें अथवा न दें स्वाधीन हो !
सम्बोध दें गार्हस्थधर्मी पालते निज शक्ति भर,
करते विहार यती, गृही देता बना पथ सुगम [illegible]॥

(१३)

बन [illegible] सदा गृहीतव भोगसे वैराग्य हो,
बोले अहो ! जब जब गुरु [illegible] कभी सौभाग्य हो।
लूँ [illegible] दिगम्बर भेषको ममता तजूँ समता भजूँ,
तन है [illegible] यतिपद व्रत सजूँ।

(१४)

करना [illegible] मन, वचनसे इच्छा टले,
रागादि भाव [illegible] दूर हों प्रति फल फले।
जबतक दिगम्बर भेष लेनेका उदय मेरे न हो,
तबतक मिले सत्सङ्ग औ तत्त्वार्थको चर्चा अहो॥

स्वभावकी दवा नहीं।

(ले०—ब्र० प्रेमसागर पंचरत्न।)

हिन्दीके किसी कविने कहा है कि—

" जाको जैसो स्वभाव, जाय नहिं जीसों।
नीम न मीठो होय, खायं गुड़ घी सों॥"

हर असल जिसका जो स्वभाव होता है वह नहीं जाता। नीमका स्वभाव मूलसे ही क्या बीज (बीये) से ही कडुआ है। उसका बीज कडुआ है, बीज बो दिया जाता है, पौधा उत्पन्न होता है, चतुर मानव उसे मिष्ट पानी देकर उसे बढ़ाता है। उसकी सेवा करता है तथा मेहका मिष्ट जल भी उसे मिलता है परन्तु नीमका स्वभाव इतना कडुआ है कि वह मिष्ट जलको प्राप्त करके भी जरा नहीं बदलता बल्कि उस मिष्ट जलको अपने रूप कर लेता है। इसी प्रकार जौंकके स्वभावका अनुभव [illegible] है। जौंक गायके स्तनमें [illegible] उसका दूध नहीं पीती बल्कि खून पीती है। [illegible] स्वभाव [illegible] भी विचित्र है। आप सर्पको दूध पिलाइए परन्तु वह जहर ही उगलेगा।

नीम जौंक और सर्पके अलावा और भी कई

जीव व तिर्यञ्च हैं कि जिनके स्वभाव कटुक और दुष्ट है। परन्तु उन सबका वर्णन करना पाठकोंके समयको लेना है अतः अब उन मनुष्योंके स्वभावका वर्णन किया जावेगा जो नीम, जौंक एवम् सर्प सरीखे स्वभाव रखनेवाले हैं, जिन्हें दूसरे शब्दोंमें दुर्जन कहना चाहिए।

दुर्जन मनुष्योंका स्वभाव बड़ा ही भयावना और दूसरोंके लिए अहितकर होता है। उससे सज्जन लोग बहुत ही डरते हैं क्योंकि उससे बुरा परिणाम होनेके अलावा और कुछ नहीं होता, इसीसे तो किसी दूरदर्शीने कहा है कि—

"भगवन्! दुर्जनसे बचाना।"

दुर्जनके वचन नीमसे भी अधिक कडुए होते हैं। वे कानोंको दुखदाई और इतने दुखदाई कि सुने भी नहीं जाते। दुर्जन वे मुखमें न मालूम कितना कडुआ जहर भरा है कि उसके वचनोंको सुनकर स्वाभाविक घृणा उत्पन्न होती है। नीमका स्वभाव यद्यपि कडुआ है परन्तु वह इतना असुहावना नहीं है जो कि मानव संसारके वास्ते उपयोगी न हो। लोग नीमकी दांतोन ही अधिकतर पसंद करते हैं, कहते हैं कि "नीमकी दातोन दांतोंको साफ और मजबूत करती है तथा मुखकी ग्लानिको दूर करती है. एक बात यह भी बताते हैं कि यदि कोई मनुष्य नियमसे १२ वर्ष नीमकी दांतोन करलेवें तो उसे सर्पका जहर नहीं चढ़ता। नीम कडुवा होकर भी मानवके लिए उपयोगी साबित हुआ, परन्तु दुर्जनके वचन इतने कडुवे हैं कि वे किसी प्रकार भी उपयोगी नहीं हुए।

दुर्जनके वचन बतौर बाणके हुआ करते हैं। जिस प्रकार बाणसे प्राण चले जाते हैं उसी प्रकार दुर्जनके कडुए वचन सुनकर मनुष्यका बड़ा अहित होजाया करता है। दुर्जनके वचन मनुष्यको व्यर्थकी कषाय उत्पन्न कराकर कलह करा देते हैं, विसंवाद बढ़ा देते हैं, फूट करा देते हैं, आपसके प्रेमका नाश करते हैं, धर्मसे च्युत करदेते हैं, धनकी हानि करा देते हैं और मुकदमा लड़वा देते हैं। इसलिए दुर्जनसे दूर ही रहना सज्जनोंका प्रथम कर्तव्य है।

दुर्जन मनुष्यके अन्दर इतना कषायका कडुआ जहर रहता है कि जिसका कुछ ठिकाना नहीं। वह उसे उगलनेके लिए-सज्जनोंकी गोष्ठी, राजाका दरबार इत्यादि न कुछ है। यहांतककि उसे परमात्माके मंदिर तकमें अपने उस जहरके उगलनेमें भय और शर्म नहीं होती।

दुर्जनका दूसरा स्वभाव जौंककी तरह बताया है। ठीक है। जौंक, दूधको छोड़कर खूनको पीती है यह उसका स्वाभाविक स्वभाव है परन्तु वह भी मनुष्य या पशुओंके लिए उपयोगी साबित हुई है। सुनिए, जब किसी गाय या बैल आदि पशुओंकी ऐसी बीमारी होजाया करती है कि जिससे उनके किसी अंगका खून एक ही जगह ठहर जाता है। अर्थात् उसकी गति रुक जाती है और वह बीमारीका खास कारण होजाता है तब मनुष्य कई या दो चार जौंकोंको पशुओंके उसी स्थानपर चिपटा देते हैं जिससे वे उस स्थानका विकारी खून चूंस लें। बादमें निकाल देते हैं। इसी प्रकार मनुष्योंको जब कोई ऐसी बीमारी होती है तब वे भी ऐसा किया करते हैं।

इसका मतलब यह है कि जो कहुंका स्वभाव दुष्ट होते हुए भी जीवको उपयोगी भी है परन्तु दुर्जनका स्वभाव इतना बुरा है कि वह जौंकसे भी अधिक नंबर पा चुका है। दुर्जन मनुष्य कभी भी अच्छी बातको ग्रहण नहीं करता, यदि करे भी तो उसका उल्टा अर्थ लगाकर लड़ाई कर बैठता है, विसंवाद बढ़ा देता है, धर्म एवम् सामाजिक कार्योंको सफल नहीं होने देता। उसका स्वभाव ही ऐसा है कि

उसे धर्मका काम तो सुहाता ही नहीं। कहांतक कहें, दुर्जन मनुष्य दुष्ट है और दूसरोंके अहितके लिए ही है।

सर्पका स्वभाव दरअसल ऐसा ही है कि आप चाहे उसे दूध पिलावे या अमृत परन्तु उसके मूमें जहरके सिवाय और कुछ उत्पन्न ही नहीं होता परन्तु पाठको! जरा सोचने और समझनेकी बात है कि कोई २ सर्प मणि (रत्न) भी दिया करते हैं परन्तु दुर्जन मनुष्यका स्वभाव इतना बुरा है कि वह सर्पसे भी बढ़कर है। दुर्जन मनुष्यको अच्छी एवम् हितकर बात नहीं सुहाती, वह सर्पके समान गुणमें औगुण ही प्रकट करता है।

दुर्जनका जहर सर्पके जहरसे अधिक तेज होता है, ऐसा मैं मानता हूं। क्योंकि सर्पका जहर तो एक ही भवको नष्ट करता है परन्तु दुर्जनका जहर मनुष्यके भव-भवको नष्ट करता है। यह विषय भगवान पार्श्वनाथके जीव मरुभूत और कमठके सम्बन्धकी कथासे पुष्ट होता है। याने जब कमठ अपमानित होकर कुलिङ्गी तपसी होगया था और हाथ जोड़कर अपने कसूरकी उससे क्षमा मांगी थी, तब आपको याद होगा ही कि उस समय कमठने क्या किया था? कमठने वही किया था, जो कि एक महादुर्जन कर सकता है अर्थात् मरुभूत क्षमा मागते हुए कमठके चरणोंमें सिर झुकाता है और कमठ उसके ऊपर पत्थरकी सिला पटक देता है। बस इस कथासे आप समझ सकते हैं कि दुर्जनका स्वभाव कितना निर्दय एवम् दुष्ट होता है। कवि भूधरदासजीने कितना अच्छा कहा है कि—

दुर्जन और सलेखमा,[1] ये समान जग माहिं।
ज्यों ज्यों मधुरी दीजिए, त्यों त्यों कोप कराहिं ॥
जा बजार दुर्जन बसे, सो बजार ऊजार।
जा उजार सज्जन बसे, सो उजार बजार ॥
दुर्जनको विश्वास जे, करि हैं नर अविचार।
ते मंत्री मरुभूतिसम, दुःख पावे निर्धार ॥
दुर्जन जनकी प्रीतिसों, कहु कैसे सुख होय।
विषधर पोषि पियूषकी, प्रापति सुनी न कोय ॥

१—खासी।

વડોદરા રાજ્યમાં નવા સામાજિક કાયદાઓ.

(વડોદરા રાજ્ય આજ્ઞાપત્રિકા પરથી અનુવાદક—મોતીલાલ ત્રીકમદાસ માલવી-બાકરોલ)

સ્ત્રીઓની મીલકતને લગતા તથા વારસાઇ હક્કો.

હિન્દુ કાયદાની બે મુખ્ય શાળાઓ છે, એક મીતાક્ષરા જે હિન્દમાં બધે લાગુ પડે છે, અને બીજી દાયભાગ જે બંગાળમાં માન્ય છે. મીતાક્ષરાની શાળા ચાર વિભાગમાં વહેંચાયલી હોઇ–જુદા જુદા પ્રાંતો તે જુદી જુદી ટીકાઓને માને છે, અને તે પ્રમાણે મુંબઇ ઇલાકામાં–ગુજરાતમાં મીતાક્ષરા કરતાં વ્યવહારને મુખ્ય અને વધારે પસંદગી આપે છે. વડોદરા રાજ્યમાં હિન્દુ ધર્મને લગતા નિબંધોનું એકીકરણ કરવામાં આવ્યું છે. અવિભક્ત કુટુંબ, વારસાઇ હક્ક, મીલકતની વ્યવસ્થા, દત્તક, માબાપ અને બાળકો, લગ્ન, છુટાછેડા, વગેરે બાબતોને લગતા જુદા જુદા કાયદાઓ કરેલા છે, તે મીતાક્ષરાને આધારે વ્યવહારને મુખ્ય પ્રાધ્યાન્ય આપીને કરેલા છે. તેથી અત્યાર સુધી વડોદરા રાજ્ય અને બ્રીટીશ રાજ્યના હિન્દુઓ માટેના કાયદાઓમાં કંઇ મહત્વનો મતભેદ ન હતો, આ કાયદાઓમાં સ્ત્રીઓને તેમના કાયદેસર હક્કોમાંથી અત્યાર સુધી બાતલ રાખવામાં આવી હતી.

સ્ત્રીઓના અધિકાર સંબંધમાં વિચાર કરવા શ્રીમંત સરકાર મહારાજા સાહેબે સન ૧૯૨૯માં રા. બા. ગોવિંદભાઇ હાથીભાઇના પ્રમુખપણા નીચે સમિતી નીમી હતી. તેણે સુધારા માટે

કરેલી ભલામણો ઈ. સ. ૧૯૩૩ ના જાન્યુઆરીની ધારાસભામાં રજુ થઇ હતી અને તે પછી સુધારાની દરખાસ્તોને શ્રી. મહારાજા સાહેબે મંજુરી આપતાં તે અનુસાર સુધારા વધારા સાથે કાયદો થઇ તેનો અમલ ઇ. સ. ૧૯૩૩ના નવેમ્બરથી થયો છે. એથી વડોદરા રાજ્યમાં સ્ત્રીઓની સ્થિતિમાં મુખ્ય ફેરફાર નીચે પ્રમાણે થાય છેઃ—

અવિભક્ત કુટુંબ-વિધવાનો હક્ક.

હિન્દુ અવિભક્ત કુટુંબ પુરૂષઅંગજુતોનુંજ બનેલું હોય છે. વિધવા માતા, વિધવા પુત્રવધૂ અથવા વિધવા ભાભીને સંયુક્ત કુટુંબમાં ભાગીદાર તરીકે સ્થાન નથી, તેને માત્ર—ભરણ પોષણ, ખોરાકી પોશાખી ફક્ત મળી શકે, તે સિવાય તેને મીલકતમાં બીજો હક્ક હિસ્સો હોતો નથી. આ રાજ્યમાં નવા કાયદાથી સ્થિતિ બદલાઇ છે. તે મુજબ-સંયુક્ત કુટુંબના ભાગીદારની વિધવા પોતે ભાગીદાર બનશે એટલે કે અવિભક્ત કુટુંબના પુરૂષઅંગજુતને મીલકતના હક્ક છે તે પ્રમાણે વિધવાને પણ મળશે, અને બીજા અંગજુતની સાથે સંયુક્ત મીલકત ઉપર તેની પણ હક્ક-માલકી થશે અને હાલ જેમ એક પુરૂષ મેંબર પોતાનો ભાગ સંયુક્ત મીલકતમાંથી જુદો નક્કી કરાવી અને માગી શકે છે, તેવી રીતે હવેથી નવા કાયદા પ્રમાણે સંયુક્ત કુટુંબની વિધવાને પણ તેનો ભાગ જુદો પડાવવા નક્કી કરવાના અને મેળવવાનો હક્ક પ્રાપ્ત થાય છે. અને તે મુજબ તે પોતાના છોકરાના જેટલો હિસ્સો—અને છોકરો ન હોય તો તેના મૃત ધણીને ભાગની વહેંચણ વખતે, તે જીવતો હોય અને જે હિસ્સો મળત, તે મેળવી શકશે.

ધણીની સ્વોપાર્જીત મીલકત.

સ્ત્રીનો ધણી મરી જાય ત્યારે તેની સ્વોપાર્જીત મીલકતના વારસ તેના પુત્રો, પૌત્રો, અને પ્રપૌત્રો થાય છે. અને પુત્ર પૌત્રાદિના અભાવે વિધવાને વારસો પ્રાપ્ત થઇ શકે છે, પરન્તુ નવા કાયદા પ્રમાણે હવેથી વિધવાને દીકરાના જેટલો હિસ્સો મળી શકશે. દીકરાની વિધવાને વારસાના ક્રમમાં બીલકુલ સ્થાન ન હતું તેને નવા કાયદામાં તેને માતાની પછીનું સ્થાન આપવામાં આવ્યું છે એટલે વિધવા પુત્રવધૂની સ્થિતિ પણ હવે સુધરી છે.

પુત્રીના હક્કો.

મરનારને પુત્ર-પૌત્ર-પ્રપૌત્ર અને વિધવા ન હોય તોજ તેની દીકરીને વારસો મળી શકતો. હાલ નવા કાયદાથી એ સ્થિતિમાં ફેરફાર કર્યો નથી, પણ દીકરીને તેના બાપના કુટુંબમાં વધારે હક્કો આપવામાં આવ્યા છે. સાસરાની તરફથી સાધન ન હોય તો પણ વિધવા દીકરીને બાપની મીલકતમાંથી કંઇપણ ભરણ-પોષણ મેળવવાનો હક્ક નહોતો; તેને બદલે હવે એવું ઠરાવ્યું કે-ધણી ગુજરી જાય ત્યારથી બાપની સાથે રહે, સાસરાનાં કુટુંબમાં ગુજરાનનું સાધન ન હોય, અને તેનું ગુજરાન કરવાની બાપની શક્તિ હોય તો તે વિધવા દીકરીને તેના બાપના કુટુંબમાં ભરણ પોષણનો હક્ક આપવામાં આવ્યો છે. અવિવાહિત છોકરીને બાપની મીલકતમાંથી ખોરાકી પોષાકી અને લગ્નનો ખર્ચ મેળવવાનો અધીકાર હતો અને જ્યારે ભાગ પાડવામાં આવે ત્યારે ખોરાકી પોષાકી અને લગ્ન ખર્ચને બદલે તેના ભાઇને જે મળે તેનો ચોથો ભાગ મેળવવાનો હક્ક હતો. હવે નવા કાયદાથી પોતાના ચોથા ભાગનો હિસ્સો જુદો કરાવવા, અને મેળવવાનો અધીકાર આપવામાં આવ્યો છે. આથી અવિવાહિત છોકરી વધારે સ્વતંત્ર દરજ્જે ભોગવી શકશે અને કુટુંબથી જુદી રહીને પોતાનું ભાવી જીવન ઇચ્છાનુરૂપ ઘડી શકશે.

મૈયત દીકરી અને બહેનના હક્ક.

પ્રથમ એવું હતું કે-બાપનો વારસો દીકરીઓને મળે ત્યારે જે દીકરી પહેલાં ગુજરી ગઇ હોય તેના દીકરાને કંઇપણ હિસ્સો મળતો નહિ. નવા કાયદામાં એ અન્યાય દુર કર્યો છે અને મૈયત દીકરીના છોકરાઓને હયાત દીકરીઓના

જેટલોજ હિસ્સો આપવા ઠરાવ્યું છે. મરનારની બહેનોને વારસો મળતો હોય ત્યારે પહેલાં ગુજરી ગયેલી બહેનના દીકરાને પણ બીજી હયાત બહેનોની સાથે વારસાનો હક્ક આપ્યો છે.

વારસાના કાયદામાં સુધારો.

જુના વારસાના કાયદામાં કેટલીક બાબતમાં ગુંચવાડો થતો હતો. જ્યારે છોકરીઓને વારસો મળતો ત્યારે અવિવાહિત છોકરીને વધારે લાભ મળતો અને વિવાહિત છોકરીઓ પૈકી ગરીબ સ્થિતિ હોય તેને વધારે મળતો. આ ભેદભાવ કાઢી નાંખી બધી છોકરીને સરખો હિસ્સો મળે એમ કરાવ્યું છે. સ્ત્રી ધનના વારસાનો કાયદામાં પણ સુધારો કરી–સ્ત્રી ધનના યૌતક, અયૌતક, અને શુલ્ક–એ ગુંચવાડા ભર્યા ભેદો કાઢી નાંખી, હવે વારસા માટે એક સરખું ધોરણ ઠરાવ્યું છે.

સ્ત્રીની મીલકત.

સ્ત્રી–ધન સિવાયની બીજી પ્રાપ્ત થયેલી બધી મીલકતમાં સ્ત્રીનો હિત સંબંધ મર્યાદિત હતો એટલે તેવી મીલકતનો ઉપયોગ કરી શકે પણ તેની વ્યવસ્થા કરી શકે નહિ. અને તેના મરણ બાદ એ મીલકત તેના વારસને નહિ પણ છેલ્લા પુરૂષ માલીકના વારસોને જતી તેમાં સુધારો કરી નવા કાયદાથી એવું ઠરાવેલું છે કે–સ્ત્રીને ભાગમાં અગર વારસામાં મીલકત મળી હોય તો રૂપીઆ બાર હજારની અંદર માટે તેને પૂર્ણ હક્ક રહેશે અને તે સિવાય–મીલકત ઉપર મર્યાદિત હક્ક રહેશે.

આ સુધારાનું પરિણામ.

હિન્દુ ધર્મશાસ્ત્રને લગતા કાયદામાં આ ફેરફારો ઉપરાંત લગ્ન વિચ્છેદનો કાયદો ઇ. સ. ૧૯૩૧ માં થયો છે. તેના પરિણામે ભવિષ્યમાં વડોદરા રાજ્યની સ્ત્રીઓની સ્થિતિ અને દરજ્જો હિન્દના બીજા ભાગોની બહેનો કરતા વધારે લાભકારક અને સ્પૃહણીય થશે (!) બ્રીટીશ હિંદમાં આ સુધારો જેમ વહેલો થાય તેમ સારૂં થશે (!)

હિન્દુ કાયદામાં બીજા સુધારા.

હિન્દુ લોમાં બીજા પણ કેટલાક સુધારા સમિતીની ભલામણ પ્રમાણે કરવામાં આવ્યા છે. શુદ્ર સિવાયની ત્રણ ઉચ્ચ વર્ણની કોમોમાં દાસીપુત્રોને માત્ર ભરણ પોષણ મેળવવાનો હક્ક છે. તેવુંજ ધોરણ નવા કાયદામાં શુદ્ર કોમ માટે પણ લાગુ કરવામાં આવ્યું છે. એટલે હવે એ કોમમાં પણ દાસીપુત્રોને વારસાઇ હક્ક મળશે નહિ.

મૈયતના કરજની જવાબદારી.

કુટુંબનો એક સહભાગી તેનો હિસ્સો નક્કી થયા પહેલાં અવિભક્ત સ્થિતિમાં ગુજરી જાય તો તેના કરજની જવાબદારી બીજા હયાત સહભાગીઓ ઉપર નહોતી, તે હવે નવા કાયદાથી રાખવામાં આવી છે. અવિભક્ત મીલકતમાંથી પોતાના હિસ્સાની વ્યવસ્થા વીલથી કરવા માટે હક્ક નહોતો તે પણ નવા કાયદાથી આપવામાં આવ્યો છે.

હિન્દુ હિન્દુમાં પરણી શકે.

લગનના કાયદામાં એક ઘણો ક્રાંતિકારક સુધારો કરેલો છે, અત્યાર સુધી **સવર્ણ** લગ્ન કાયદેસર સ્વીકારાતાં અને જ્યાં રીવાજ છૂટ આપતો હોય ત્યાં અનુલોમ અને પ્રતિલોમ લગ્ન પણ સ્વીકારાતાં હતા. અંતર્જાતીય અને વર્ણાંતર લગ્ન કરવાં હોય તો ઐચ્છિક લગનના કાયદાનો આશ્રય લેવો પડતો. નવા કાયદાથી વર્ણની સત્તા હવે કાઢી નાંખવામાં આવી છે. જેથી હવે **સવર્ણને બદલે અંતર્જાતીય** તેમજ પ્રસંગોપાત હિન્દુ અને હિન્દુ વચ્ચે કાયદેસર લગ્ન થઇ શકે તેવી છૂટ આપી છે ! નિષ્ણાત ડૉક્ટરો અને સુપ્રજનન શાસ્ત્રીઓના અભિપ્રાય મેળવી તે પ્રમાણે ત્રણ પેઢી ઉપર અને ત્રણ પેઢી નીચેનાં લગ્ન માટે પ્રતિબંધ રાખ્યો છે (!) સમાન ગોત્રમાં લગ્ન ન થાય તે પ્રતિબંધ પણ દુર કર્યો છે !!!

દત્તકનો કાયદો.

દત્તકના કાયદામાં પણ ફેરફાર કરી ઠરાવ્યું છે કે દત્તક લેનાર માતાપિતા એકજ વર્ણનાં હોય તો દત્તક એજ વર્ણમાંથી લઇ શકાશે, અને માબાપ જુદા જુદા વર્ણના હોય તો દત્તક લેનાર બાપ જે વર્ણનો હોય તે વર્ણમાંથી દત્તક લઇ શકાશે.

સંન્યાસ–દીક્ષા.

બીજા કાયદાઓમાં સંન્યાસ દીક્ષાનો કાયદો તા. ૯–૧૧–૩૩ થી અમલમાં આવ્યો છે. તે અન્વયે ૧૮ વર્ષની અંદરના સગીર બાળકોને દીક્ષા આપવાની મના કરી તેવી દીક્ષા રદ ઠરાવી છે. અને તેનો ભંગ કરનારને રૂપીઆ પાંચસો સુધીનો દંડની અને એક વર્ષ સુધીની કેદની સજા રાખી છે.

જ્ઞાતિ ત્રાસ નિવારણ.

સદર જ્ઞાતિ ત્રાસ નિવારણ નિબંધ શ્રીમંત સયાજીરાવ ગાયકવાડ, સેના ખાસ ખેલ શમશેર બહાદુર જી. સી. એસ. આય. જી સી. આય. ઇ. ફરજંદે ખાસ–ઇ–દૌલતે–ઇંગ્લિશિયા એમની મંજુરીથી સન ૧૯૩૩નો નિબંધ ૫૫ તા. ૧૪ માહે ડીસેંબર સન ૧૯૩૩ ની વડોદરા રાજ્ય તરફથી પ્રગટ થતી આજ્ઞા પત્રિકામાં જન હિતાર્થે પ્રસિદ્ધ થયેલો–તેમાં ત્રાસદાયક રિવાજ એટલે શું, તેની વ્યાખ્યા સ્પષ્ટ કરી ઠરાવ્યું છે કે–તેવા રિવાજના ભંગ માટે–કોઇપણ જ્ઞાતિ બહિષ્કાર, દંડ, કે બીજી શિક્ષા કરી શકાશે નહિ, છતા કોઇ તેવું કરશે તેવા જ્ઞાતિના શેઠ, મુખી, પટેલ, અગર આગેવાન સામે ફરીયાદ થઇ–છ મહીના સુધીની સાદી સજા, અને એક હજાર રૂપીઆ સુધીના દંડની સજાને પાત્ર થશે. આ કાયદો તા. ૧૪ માહે ડિસેમ્બર સન ૧૯૩૩થી અમલમાં આવ્યો છે.

નોટ–ઉપરોક્ત જણાવ્યા મુજબ–સામાજીક કાયદાઓ પ્રજાહિતેચ્છુના શ્રીમંત સરકાર ગાયકવાડ તરફથી પ્રજા હિતને માટે હજુર હુકમથી પ્રગટ કરવામાં આવ્યા છે.

હાલમાં હિન્દુ સમાજ અને તેમાં આપણા જૈન સમજમાં–વિધવાપત્નિ, વિધવા પુત્રવધુ, વિધવા બ્હેનો, વિધવા પુત્રીઓ, વગેરેને વૈધવ્ય દશામાં સાસરીયાં–(સસરા–સાસુ–જેઠ–દિયેર) આદિ કુટુંબીજનો, અને પિયેરીઆં–(માતાપિતાના અવશાન પછીથી)–કાકા, ભાઇ, ભત્રીજા આદિ અવિભક્ત કુટુંબીઓ–આવી રીતે ઉપરોક્ત વિધવા સ્ત્રીઓને ઉભય પક્ષ તેના સઘળા હકો છીનવી લઇ પોતે હકદાર બની તેમને અનહદ ત્રાસ અને જુલમ આપી જીંદગી નિભાવવાનાં સાધન–જેવાકે ખોરાકી પોષાકી અને તન્દુરસ્તી નિભાવવાને માટે પણ અસમર્થ બનાવે છે; જેથી આવી દુઃખી જીંદગીથી કંટાળી કેટલીક વિધવાઓ અકાળ મરણને સ્વાધીન થાય છે. ને કેટલીક યુવાન બાળ વિધવાએ જીવન નિર્વાહના–સાધનના અભાવે નીતિ પંથથી ઉતરી જઇ અનીતિનો માર્ગ ગ્રહણ કરી, ઉભય પક્ષ, માતાપિતા અને શ્વસુર પક્ષ બંનેને કલંકિત કરે છે.

ઉપર જણાવેલા વિધવા વર્ગના ઉભય પક્ષ–શ્વસુર પક્ષ, અને પિયેરીઆં પક્ષના–અવિભક્ત અને વિભક્ત વર્ગને આ કાયદાનું ભાન થઇ તે વિધવા વર્ગ પ્રત્યે પોતાની યથાયોગ્ય ફરજ બજાવવા સમર્થ થાય, એવા ઉચ્ચ આશયથી આ સામાજીક કાયદાને જન હિતાર્થે અત્રે પ્રગટ કરવામાં આવે છે.

જ્ઞાતિત્રાસ નિવારણ નિબંધ (કાયદો)– આપણા દિ. જૈન ભાઇઓના હિતાર્થે આજ વર્ષના ફાલ્ગુન માસના અંકમાં સાદ્યંત આપવામાં આવ્યો છે, તો તેનું પુરેપુરૂં નિરીક્ષણ કરી પંચના આગેવાન શેઠીઆઓ, અને પંચના કાર્યવાહકો જ્ઞાતિઓમાં પડેલા વાંધાઓનું સંતોષકારક સમાધાન કરશે, એવી શુભ આશા સહ વિરમતો— મો. ત્રી. માલવી.

દિવાળી કેમ ઉજવશો ???

(લે–મોહનલાલ મથુરાદાસ શાહ–કંપાલા)

મહાવીર સ્વામીના સમયને ધર્મની પુનઃ રચનાનો સમય માની લઇએ, તો પચ્ચીસો વર્ષ જૈન ધર્મની પુનઃ રચનાને થઇ ગયાં. તેની સ્થાપના કયારે થઇ ? અને કોણે કરી ! તે વાત પ્રજ્ઞ પુરૂષોને માટે જાણવાની છોડી દઇએ, તો પણ, આપણને શ્રી. મહાવીરસ્વામીને એક ધર્મ-પ્રવર્તક માનવા પડશે.

પાર્શ્વનાથ ભગવાનના મોક્ષ ગમનને કેટલોક કાળ વિતી ગયો હતો. પૃથ્વી પર જુદા જુદા મનુષ્યોથી–જુદા જુદા ધર્મોનો પ્રચાર થઇ રહયો હતો તે વખતે——

બ્રાહ્મણોએ વેદનો આશ્રય લઇ નરમેધ–અશ્વમેધ–અજામેધ અને એવા બીજા પણ હિંસા દ્વારા થતા યજ્ઞ યાગનો ઉપદેશ આપી, ભારતવર્ષની પ્રજાને પાપમાં પ્રવૃત્ત કરી હતી, બીજા કટલાય કહેવાતા ધર્મ પ્રચારથી જનતા ગભરાઇ ઉઠી હતી. કયું શ્રેષ્ટ અને કયું અશ્રેષ્ટ, એનો ઉકેલ લાવી શકતા નહોતા. ધર્મ શબ્દ પર કેટલાક પ્રજ્ઞ પુરૂષો પણ ધૃણાની નજરે નિહાળતા હતા, ધર્મોપદેશ સાંભળવામા પણ બીક માનતા હતા, એમ નહિ પણ પોતાની શંકાઓનું સમાધાન ન થવાથી, કેટલીક વ્યાખ્યાન પીઠ પર મારામારી પણ જામી પડતી હતી. સત્તાથી ધર્મની શ્રેષ્ટતા જાહેર થતી હતી. તે વખતે ભરત ક્ષેત્રમાં શ્રી ગીતાજીના મહાવાક્ય—

જ્યારે વધે અધર્મનું બળ, ગ્લાનિ ધર્મની થાય છે,
અવતાર મહારો સૃષ્ટિપર, તે કાળમાં તો થાય છે;
સૃજન કરૂં હું સજ્જનોનું, દુષ્ટનો સંહાર હું,
કરવા સુધર્મની સ્થાપના, યુગેયુગે અવતાર લઉં.

એ કૃષ્ણ નારાયણના મુખમાં ગીતા ગુંથનાર શ્રી વ્યાસ મુનિએ મુકેલા શબ્દો સત્ય પડવાનો સમય નજીક આવ્યો.

કુંડલપુર નગરમાં સિદ્ધાર્થ રાજાના આંગણામાં રત્નવૃષ્ટિ થવા લાગી. દેવ લોકોને ત્યાં દુંદુંભી નાદ થવા લાગ્યા. અને જગત આખું આલ્હાદકારક દેખાવા લાગ્યું. એ અવસરે—

એક રાત્રિના પાછલા પહોરમાં સિદ્ધાર્થ રાજાને ત્યાં ત્રિશલા દેવીએ ગજેંદ્ર, બળદ, સિંહ, લક્ષ્મી, બે પુષ્પમાલ, ચંદ્ર, સૂરજ, બે માછલી, બે રત્નમય કુંભ, સમુદ્ર, સરોવર, સિંહાસન, વિમાન, નાગભુવન, બે મણીમાળ, અને ધુંવાડા સિવાયનો આગ, એવી રીતે સોળ સ્વપ્નો અનુક્રમે જોયાં.

સ્વમ બાદ એક સફેદ બળદને મુખમા પ્રવેશ કરતાં જોયો. પ્રાતઃકાલે જાગૃત થઇ, સ્નાન કર્મથી પરવારી, અનેક વસ્ત્રાલંકાર ધારણ કરી, સિદ્ધાર્થ રાજા પાસે ત્રિશલા રાણીએ સ્વપ્નની વાત નિવેદન કરી. નિમીત્તકોએ ગણિતદ્વારા જાહેર કર્યું કે–આપની કુખે જગત ઉદ્ધારક મહાપુરૂષ તિર્થંકર આવી બિરાજેલા છે, જે પુરા મહિને જન્મ લઇ, જગતને પવિત્ર બનાવશે.

પોતાને મહાન પરાક્રમી મોક્ષગામી પુત્ર રત્નની પ્રાપ્તિ થશે, એ વાત જાણી રાજાએ અનેક વિધ દાન ધર્મ કરી, નગર મહોત્સવ કર્યો.

દેવ લોકોએ આવી અનેક પ્રકારે રાજા રાણીની સ્તુતિ કરી, જગત પતિના માતાપિતા થવા માટે ઘણી પ્રશંસા કરી. તેમને અનેક દિવ્ય વસ્ત્રાલંકર ભેટ કરી, મહોત્સવ કર્યો. રાણીની તહેનાતમાં દિકકુમારીઓને ગોઠવી, ત્રિશલા દેવીના દરેક ડહોળા પૂર્ણ કરવા સંપૂર્ણ ભલામણ કરી, દેવતાઓ સ્વસ્થાનકે ગયાં.

પુરા મહિને ત્રિશલા રાણીએ જગતપતિને જન્મ આપ્યો. પુત્ર રૂપ નિહાળી માતાના હર્ષનો પાર રહ્યો નહિ. રાજાને વધામણી દેવા દાસી દોડી ગઇ. રાજાએ મંગલકારક સમાચાર નગરમાં ફેલાવી નગર મહોત્સવ કર્યો. યાચકોને દાન આપી તૃપ્ત કર્યા. બંધીવાનોને બંધન મુક્ત કર્યા.

એમ જગત્ ઉદ્ધારક તિર્થંકર દેવનો જન્મ મહોત્સવ ચારે બાજુ થવા લાગ્યો.

દેવનાં વાજીંત્ર વાગવા લાગ્યાં. સ્વર્ગ અને પાતાળના દેવો એકત્ર થઈ, ભગવાનનો જન્મ મહોત્સવ કરવા આવ્યા.

ઇંદ્રાણીએ પ્રસુતિગૃહમાં જઈ, ત્રિશલા દેવીને મોહ નિંદ્રા મુકી, તેની બાજુમાં માયાવી બાળક ગોઠવી દઈ, ભગવાનને ઉપાડી લીધા. બહાર લાવી, ઈંદ્રને ભગવાનનું બાળક શરીર સોંપ્યું. ઈંદ્ર પોતાનાં હજાર નેત્ર કરવા છતાં પ્રભુ દર્શનથી તૃપ્ત થયો નહિ. સર્વે દેવો ભગવાનના દિવ્ય સ્વરૂપનું દર્શન કરી, નૃત્ય કરવા લાગ્યા. પછી ઐરાવત હાથી ઉપર ઇંદ્ર ભગવાનને ખોળામાં લઇ બેઠો. અને અનેક પ્રકારની ધામધુમથી મેરૂ પર્વત પર ગયો. ત્યાં જઇ, ભગવાનને પાંડૂક શિલા પર સ્થાપન કરી, ક્ષીર સમુદ્રમાંથી દેવતાઓએ હાથો-હાથ જળ લાવી ભગવાનનો અભિષેક કર્યો. અને તરેહવાર વસ્ત્રાભૂષણોથી ભગવાનના શરીરને શણગાર્યું. ખૂબી એ હતી કે ભગવાન તરતના જન્મેલા હોવા છતાં પાંડુક શિલા ઉપર અભિષેક વખતે સ્થિર બેઠા હતા.

દેવતાઓએ ભગવાનની અનેક ભક્તિભાવે પૂજા-વંદના કરી, તેમનું નામ **શ્રીવીર જિનેંદ્ર** પાડયું.

મેરૂ પર્વત પરથી અનેક તરહના વાજીંત્રના ઘોષ સાથે ભગવાનને ઐરાવત પર બેસાડી ત્રિશલા માતાને જાગૃત કરી, તેમને સુપ્રત કર્યા. અને રત્નવૃષ્ટિ કરી. સિદ્ધાર્થ રાજાની નગરી ઉજ્વલ કરી, દેવલોકો સ્વસ્થાનકે ગયા.

સિદ્ધાર્થ રાજાએ પણ નગર મહોત્સવ કરી, જોશીઓ સાથે મંત્રણા કરી, ભગવાનનું નામ **વર્ધમાન** પાડયું.

જેમ જેમ વીર જીનેંદ્ર મહોટા થવા લાગ્યા, તેમ તેમ તેમનાં નામ તેમના સાથીઓ દ્વારા, **મહાવીર** અને **અતીવીર** પડયાં. તેમની અથાગ બુદ્ધિ જોઇ, બુદ્ધ સિદ્ધાર્થ રાજાએ તેમનું નામ **સન્મતિ** પડયું.

એવી રીતે છેલ્લા તિર્થંકર જગતગુરૂ જગત ઉદ્ધારક મહાવીરસ્વામીનાં પાંચ નામ પડયાં.

દિનપ્રતિદિન મહાવીર સ્વામી વૃદ્ધિ પામવા લાગ્યા. અનેક દેવ કુમારો તેમની સાથે ભાત ભાતની રમતો કરી, ભગવાનને આનંદ આપવા લાગ્યા.

ભગવાન જ્યારે બાર વર્ષના થયા, ત્યારથી સિદ્ધાર્થ રાજા તેમની દરેક રાજકાર્યમાં સલાહ લેતા, એવી તેમની બુદ્ધિ અથાગ હતી.

મહાવીર સ્વામીને લગ્ન કરવા ઘણો વખત સમજાવવામાં આવ્યું, પણ જેને શિવ નારી સાથે લગ્ન કરવા તમન્ના હતી, તેણે સંસારીક બંધનમાં જકડાવા ચોકખી ના પાડી.

એક વખત મહાવીર સ્વામી પોતાના સાથીઓ સહિત વન ક્રીડામાંથી નગર તરફ આવી રહયા હતા. પાદરમાં આવતાં તેમણે એક ગાયોના ટોળાને જોયું, તે ટોળામાં એક ગાય ઠોકર ખાઇ નીચે પડી. ને બનાવ મહાવીર સ્વામીના જોવામાં આવ્યો. અને તેમને સંસારની અસારતાની સમજણ પડી.

તેમણે વિચાર કર્યો કે આ દેહ નાશવંત છે. તેનો કયારે નાશ થશે તે ખબર નથી, મહા મહેનતે પ્રાપ્ત થએલો આ મનુષ્ય દેહ આમજ કાંઇ પણ સત્કર્મ કર્યા સિવાય ચાલ્યો જશે, માટે આ ક્ષણિક સુખ જેવા સંસારમાંથી મુક્ત થવાનો રસ્તો શોધવો જોઇએ.

ભગવાનનો વિચાર વૈરાગ્ય તરફ વળવાથી લોકાંતિક દેવોને ત્યાં દુદુંભી નાદ થવા લાગ્યો. તેથી તેઓ ભગવાનને તપ કલ્યાણકનો ટાઇમ નજીક સમજી ભગવાનની પાસે આવ્યા. અને ભગવાનને આ સંસારની અસારતા પૂર્ણપણે સમજાવી, તેમને ધન્યવાદ આપી કહેવા લાગ્યા, કે-હે ભગવાન ! તમને ધન્ય છે તમે ઠીક

વિચાર કર્યો છે. જગત બધું અત્યારે અંધાધુંધીમાં ગરક થઇ ગયું છે. ધર્મ માત્રનો જગતપરથી લોપ થઇ ગયો છે, કર્મકાંડનો પત્તો નથી. દાનધર્મ નજર આવતાં નથી, હિંસાનું સામ્રાજ્ય જગતપર જામી ગયું છે, તે અવસરે હે, પ્રભુ? આપનો વિચાર સ્તુત્ય છે.

એવી રીતે સ્તુતિ કરી દેવો આનંદ માનવા લાગ્યા, અને વિદાય થયા.

ભગવાને ઘર પર આવી માતપિતાને સંસારની અસારતા સમજાવી, પોતાનો વિચાર દીક્ષા લેવા તરફ છે, એમ જણાવી મુનિ થવા રજા માગી. સિદ્ધાર્થ રાજાએ તેમની બાળવય તરફ નજર નાંખી, હાલ સંસાર ત્યાગ ન કરવા સમજાવ્યા. પણ મહાવીર સ્વામીએ સચોટ સિદ્ધાંત સમજાવી, માતાપિતાની રજા મેળવી લીધી. એટલામાંજ તપકલ્યાણક મહોત્સવ કરવા દેવલોકો રત્નમયી પાલખી લઇ ત્યાં આવ્યા, અને ભગવાનને ધન્યવાદ આપી, સિદ્ધાર્થ રાજાની સ્તુતિ કરી, ભગવાનને પાલખીમાં બેસાડી પાલખી ઉપાડી, વિપુલાચલ પર્વત પર લઇ ગયા.

ભગવાને પ્રથમ ૐ નમઃ સિદ્ધેભ્યઃનો મંત્રોચ્ચાર કરી, પોતાનાં વસ્ત્રોનો ત્યાગ કર્યો. પછી ૐકારના ઉચ્ચારપૂર્વક પોતાના વાળ પોતાને હાથે ખેંચી ફેંકી દીધા. અને ભગવતી દીક્ષા ધારણ કરી, મુનિધર્મ અંગિકાર કર્યો.

ભગવાને બાર વર્ષ સુધી સતત તપ કર્યો કર્યું: અને ચાર ઘાતીયા અને અઘાતીયા કર્મોનો નાશ કર્યો

તેમના તપ સમયે તેમને ઘણા ઉપસર્ગો નડયા. પણ તે બધા તેમણે શાંતિપૂર્વક સહન કરી, તપ કલ્યાણકને ઉજવલ કર્યું.

ઘાતીયા અને અઘાતીયા કર્મોનો નાશ થવાથી તેમને કેવળજ્ઞાન ઉપજ્યું. દેવતાઓએ સમવશરણ તૈયાર કર્યું, અને તેમાં મહાવીરસ્વામી ધર્મોપદેશ કરતા જગત પર વિહાર કરવા લાગ્યા.

ભગવાનની દિવ્ય વાણીને લીપીમાં ગોઠવવા દેવોએ ગૌતમ બ્રાહ્મણને સમવશરણમાં આણ્યા, જે ભગવાનનાં દર્શન માત્રથી તેમના ખાસ શિષ્ય બની ગણધરની પદવી પામ્યા.

ભગવાનનું સમવશરણ જ્યાં જ્યાં વિહાર કરતું. ત્યાં ત્યાં ચારે બાજુ સુકાળ, સુકાં વૃક્ષ લીલાં થતાં અને કોરી નદીઓ પાણીથી ઉભરાઇ જતી એ અતિશય હતા.

દેશ દેશ ફરી તેમણે ધર્મનો પ્રચાર કર્યો. હિંસાનું ખંડન કરી જગત પર **અહિંસા પરમો ધર્મ**ની ઉજ્વલ ઘોષણા ફેલાવી દીધી. તેમણે વિહાર વખતે ઘણા આચાર્યો અને વિદ્વાનો સાથે વાદ કરી જીત મેળવી તેથી તેઓ **વાદીગજકેશરી કહેવાયા.**

ત્રણ કાળ, ત્રણ લોક અને જગતપરની દરેક ચીજનું જ્ઞાન થવાથી તે **સર્વજ્ઞ** કહેવાયા.

જગત પર ધર્મનો ઉદ્યોત કરી, હજારો રાજાને મુનિદીક્ષા આપી મોક્ષનો રસ્તો બતાવ્યો.

એમ મહાવીર સ્વામી જગત પર ધર્મ પ્રચાર કરી. બોત્તેર વર્ષની ઉમરે આસો વદી ૧૪ની રાત્રે પાવાપુરીમાં આવ્યા. રાત્રે ધ્યાનમાં લીન થયા. પોતાના દેહ પતનનો સમય સમજી જવાથી સમાધિ મરણ સાથે ધ્યાનમાં બેસી ગયા. પાછલી રાત્રે તેમના આયુનામ કર્મનો નાશ થયે તેમણે દેહ છોડયો. અને મોક્ષના પવિત્ર રસ્તા તરફ પ્રયાણ કર્યું.

મહાવીર સ્વામીના દેહ પતનનો સમય દેવોએ જાણી ત્યાં આવી ઓચ્છવ કર્યો. અગ્નિકુમાર દેવોએ વંદના કરવા જમીન પર આરોહણ કર્યું. જેના મુકુટની અગ્નિદ્વારા ભગવાનનો મૃતદેહ ભસ્મ થયો, પણ નખ અને કેશ આબાદ રહ્યા, જેને દેવતાઓએ રત્નની ડબીમાં ભરી ક્ષાર સમુદ્રમાં પધરાવ્યા.

ભગવાનના શરીરને સળગતું જોઇ નગરના લોકોએ પણ ભગવાનના મોક્ષગમનનો મહોત્સવ

કર્યો. અને અનેક જ્યોત જણાયાથી પ્રજાએ પણ દિવા સળગાવી રાત્રી જગમગાટ કરી મુકી તે દિનથી આજ સુધી દિવા સળગાવવાની પ્રથા ચાલુ છે. અને તે દિવા મહોત્સવને લઇ દિવાળી નામ પણ પ્રચલિત થયું.

મહાવીર સ્વામીનો નિર્વાણ મહોત્સવ કરી, દેવતાઓ સ્વસ્થાનકે ગયા, લોકોએ ત્યારથી વીર સંવત લખવા માંડયો. અને વર્ષની ગણતરી કરવા લાગ્યા.

મહાવીર સ્વામીના નિર્વાણ ગમનના પવિત્ર દિવસેજ ગૌતમ ગણધરને કેવળ જ્ઞાન પ્રાપ્ત થયું.

એમ બે રીતે દિવાળી પર્વ પવિત્ર ગણાવા લાગ્યું.

દિવાળીના પવિત્ર દિવસે આપણે શું કરવું જોઇએ, અને તે પર્વ કેવી રીતે ઉજવવો જોઇએ, તેનો હવે વિચાર કરીએ—

૧—પ્રાતઃકાળે સ્નાન કરી, પવિત્ર થઇ શ્રી મંદિરજીમાં મહાવીર સ્વામી અને ગૌતમ ગણધરના ગુણાનુવાદપૂર્વક પૂજન-ભજન કરી, મહાવીર સ્વામીના જીવન પરથી લેવા જોઇતા બોધનો વિચાર કરવો.

૨—દરેક જણે પોતાનાં ઘર દુકાન અને મંદિરોને શણગારી, કેળના થંભ રોપી મંગળ વાજીના ધ્વનિ સહિત મંગળ સુચક બનાવવાં.

૩—સાધર્મી ભાઇઓનો ભોજનાદિથી સત્કાર કરવો.

૪—સાયંકાળે આરતી ઓચ્છવ કરી, દીપમાળા પ્રગટાવી, મહાવીર સ્વામીનાં ગુણ કીર્તન કરવાં.

૫—રાત્રે ધર્મ સરઘસ કાઢી, મંદિર, ઉપાશ્રય, ધર્મશાળા કે ખુલ્લા મેદાનમાં જાહેર સભા કરી, મહાવીરસ્વામીના જીવન પર વિચાર કરી, ધર્મલાભ મેળવવો.

૬—ધર્મ-ધ્યાન પૂર્વક જાગરણ કરવું.

૭—પાછલી રાત્રે નિર્વાણ ગમનના સમયે, દિવાઓ ઝગમગાટ કરી, એ મહાવીર સ્વામીના નિર્વાણનો પવિત્ર દિવસ છે, એમ જગતપર જાહેર થાય તેમ કરવું.

૮—અમાસની પ્રભાતે અભિષેક કરી, નિર્વાણ પૂજા કરવી, અને મહાવીર સ્વામીના નિર્વાણ દિવસના ઉપલક્ષમાં યથાશક્તિ દાન કરવું.

૯—નવિન વર્ષમાં સ્વદેશી વસ્ત્ર વાપરવા પ્રતિજ્ઞા કરવી.

૧૦—સ્વામી વાત્સલ્ય કરવું. પાખી કરવી. સંઘ જમાડવો, પણ તે ધર્મના આધારે રહીનેજ. ખાલી વિતંડાવાદમાં ઉતરવા કાંઇપણ કરતા પહેલાં શક્તિનો વિચાર કરવો.

૧૧—સાયંકાળે ચોપડા પૂજન (સરસ્વતિ પૂજન) ધામધુમથી કરવું. ગતવર્ષનો હિસાબ મેળવવો. નવાવર્ષ માટે ગોઠવણ કરવી.

૧૨—જૈન માત્ર એકજ પિતાનાં સંતાનો છે, એવી ભાવના ભાવવી, અને તે કેમ પળાય, તેવા ઉપાયો લેવા.

ઉપર પ્રમાણે દિવાળી પર્વ ઉજવવો. પણ દારૂખાનું, જુગાર આદિ વ્યસનોનો જરાપણ સત્કાર દિવાળીના પવિત્ર દિવસે કરવો નહિ.

વ્યર્થ વ્યય-જરાપણ થવા દેવો નહિ ઉપરાંત કલેશનું વાતાવરણ ઉત્પન્ન થાય, તેવી કોઇ પણ ક્રિયા દિવાળીના પવિત્ર દિવસે થવા દેવી નહિ.

ભારતવર્ષમાં જ્યારે ઉપર પ્રમાણે દિવાળી પર્વ ઉજવાશે, ત્યારે ઘર ઘર જૈનધર્મનો પ્રચાર થશે. જૈન માત્ર એકજ છત્ર નીચે એકત્ર થશે ત્યારેજ જૈનેતર સમાજ જૈનધર્મ તરફ લાગણી ધરાવી તે તરફ ઝુકાશે!

પ્રભુ તે દિવસ જલદી લાવો કે-જૈન માત્ર એકજ રીત રિવાજથી મહાવીર જયંતિ અને મહાવીર નિર્વાણ દિન એકત્ર થઇ ઉજવે.

ૐ શાંતિ : શાંતિ : શાંતિ :

સંઘ નૃસિંહપુરા અને રાયકવાળ પંચોએ—

કલોલમાં મળીને કરેલો બંધારણનો ખરડો.
(જે પ્રથમ બેઠકમાં પસાર થયો છે)

સંવત ૧૯૯૦ ના ઝાલાવાડી અસાડ વદી ૧ શુક્રવાર તા. ૨૭-૭-૧૯૩૪ દીને શ્રી સંઘ નરસીંહપુરાના કલોલ, ઝહેર, નરોડા, મખીયાવ, અમદાવાદ, આમોદ, સુરતના પંચ સમસ્ત તથા શ્રી સંઘ રાયકવાળના ગામ વાંચ, અસલાલી, પાલડી, મહુવા, વ્યારાના ચોગના બધા ભાઇઓ મલી આપણો અંદર અંદર પ્રથમથી ભાણા વહેવાર ચાલતો આવેલો છે, તેમજ આપણો ધર્મ જૈન દીગમ્બર સંપ્રદાયનો એકજ છે, પરંતુ આપણો કન્યા અરસપરસ આપ લેતો વહેવાર નથી તેથી તેવો વહેવાર ચાલુ કરવા આપણા બધા ગામોના ભાઇઓનો વિચાર થવાથી તે સંબંધમાં નીચે મુજબના ઠરાવો કરીએ છીએ.

૧—આપણામાં કાષ્ટાસંઘી તથા મુલસંઘી એ બે ગચ્છ ચાલે છે. તેમાં જે જે ગચ્છમાં જે જે ધર્મગુરૂઓની માન્યતા ચાલતી આવેલી છે, તે તે પ્રમાણે વર્તવાનું છે.

૨—આપણે અરસપરસ એકમેકમાં કન્યા આપવા લેવાનો વહેવાર ચાલુ કર્યો છે.

૩—કન્યાના પલ્લા તરીકે (સ્ત્રીધન તરીકે) વર કન્યાના લગ્ન વખતે વર પક્ષે રૂપીઆ ૭૦૧) અંકે સાતસો ને એકના કિંમતના દાગીના લગ્ન વખતે ચાલતા ભાવના હીસાબે સોના ચાંદી વિગેરેના આપવાં, આ ઉપરાંત કન્યાને કપડાં રૂ. ૧૦૧) અંકે એકસો ને એકની કીંમતનાં આપવાં, તે કરતાં વરનાં બાપે વધારે કીંમતનું પલ્લું તથા લુગડાં આપવાં નહી ને કન્યાના બાપે વધારે લેવાં નહી, પરંતુ કન્યા પક્ષ એથી ઓછી કીંમતના દાગીના અગર કપડાં લે અગર બીલકુલ ન લે તો તેને ઉપરનો ઠરાવ બંધનકર્તા નથી.

૪—વર કન્યાના વેવીશાળ પછી કન્યાને નાનું વસન ચડાવવાનો રીવાજ છે તેમાં કપડાં રૂપીઆ ૨૫) અંકે પચીસનાં તથા દાગીના ૨૦૧) અંકે બસો ને એકની કીંમતના આપવા.

૫—કલમ ચારમાં લખ્યા પ્રમાણે નાના વસનમાં જે દાગીના ચડાવેલા હોય તે દાગીના લગ્ન પહેલાં એક માસ અગાઉ વરના બાપને પાછા પહોંચાડવા કે જેથી કરીને કલમ ત્રણ પ્રમાણે પલ્લાના દાગીનામાં તેનો સમાવેશ કરવામાં આવે.

૬—વરકન્યાના લગ્ન પ્રસંગે કન્યાના બાપ અગર પક્ષની મરજી મુજબ જાનમાં સાજન વરના બાપે લઇ જવું. વરના બાપે પોતાની મરજી મુજબ લઇ જવાનું નથી પરંતુ કન્યાના બાપની ઇચ્છા કરતાં વરના બાપની ઇચ્છા ઓછું સાજન લઇ જવાની હોય તો તેવા પ્રસંગે કન્યાનો બાપ વધારે સાજન લઇ જવાની ફરજ પાડી શકશે નહી.

૭—વરકન્યાના લગ્ન બાદ અરસપરસ કન્યાને વરપક્ષમાં અને વરને કન્યાપક્ષમાં હાથ ઝાલવાનું અર્થાત ખાંડ બોટામણીનો રીવાજ છે તે કાયમ છે. કન્યા વરપક્ષઓના સગાઓનો અને વર કન્યાપક્ષઓના સગાઓનો હાથ (ખાંડબોટામણી) બાબત જે તે પક્ષ કહે તે પ્રમાણે વર્તવું અર્થાત્ કન્યાપક્ષ કહે તેનો હાથ વરે ઝાલવો. અને વરપક્ષ કહે તેનો હાથ કન્યાએ ઝાલવો. હાથ ઝલામણ એટલે ખાંડબોટામણી સમજવી.

૮—વરપક્ષની જાન જે દીવસે આવે તે દીવસે કન્યા પક્ષે કુંવારા જમણની ન્યાત કરવાની છે અને લગ્નના બીજા દીવસે વરોઠીની ન્યાત વરપક્ષે કરવાની છે, પરંતુ વરપક્ષને બહાર ગામથી આવેલા હોવાથી વધુ તસ્દી ન પડે તે કારણને લઇ વરપક્ષની મરજી મુજબ જમણની સંપુર્ણ વ્યવસ્થા કન્યા પક્ષે કરવી અને તેના ખરચના રૂપીઆનો આંકડો વરપક્ષે ચુકાવી આપવો. ગામમાં ને ગામમાં લગ્ન હોય તો જેણે તેણે પોતપોતાની

न्यातो करी लेवानी छे. अने बहारगामनी जान आवेली होयतो त्रीजा दीवसे जाननी वीदायगीरी कन्यापक्षे फक्त वरपक्षनी जानने जमाडी करवी परंतु कारण परत्वे बहारगामनी जानने कन्या-पक्ष एकाद दीवस वधु राखे तो आ ठरावथी बाध आवतो नथी.

९-छोकरा छोकरीना वेवीशाळ थया पछी बंने पैकी कोईने शारीरीक या मानसीक अयोग्यता प्राप्त थाय तो ते प्रसंगे कन्या तरफथी बे सभ्यो ने वर तरफथी बे सभ्यो पोतानीज ज्ञातीना तथा एक सरपंच बन्ने पक्षने सगा संबंधी ना होय तेओ उपरना चार सभ्यो वधु मते पसंद करे ते मळी पांच सभ्योनी कमीटी वधु मते जे ठराव करे ते बन्ने पक्षने कबुल करवो पडशे.

१०-वरकन्यानुं वेवीशाळ थाय ते वखते कन्याना बापना देरासरना चोपडे रा. १। अंके सवा रुपीओ आपी वरपक्षे विवाह नोंधाववो विवाह थया पछी अडवाडीया अंदर नोंधाववो जोइओ.

११-कन्याविक्रय कोइ प्रसंगे कोइपण व्यक्तीओ करवो नही. तेथी विरुद्ध वर्तन करनारे समाजना बंधारण विरुद्ध वर्तन कर्याथी समाज ते संबंधी विचार करी शके छे.

१२-मरण प्रसंगे फरजीयात कोइपण जमणवार करवानुं नथी. मरजीआत करवाने हरकत नथी. मरनारनी उंमर चालीस वरस उपरांत होय तो मरजीआत छे पण चालीस वरस अंदर होय तो कांइपण करवानुं नथी.

१३-आ ठरावो पोताने बंधनकर्ता ने कबुल छे ते बदल उपरना गामोना जे जे सभ्यो सहीओ करे नही तेवा प्रसंगे आ ठरावो कबुल राखनार कन्यानो पक्ष अगर वरनो पक्ष आ पहेलां थयेलो वेवीशाळ छुटो करी शके छे, ते उपरांत कन्यानो पिता अगर वाली कन्यानी उंमर वरस सोळनी थया छतां वरनो पिता या वाली (कन्याना वाली तरफथी लग्ननुं कहेण मोकल्या छतां) लग्न करे नहि तेवा प्रसंगे पण कन्यानो बाप विवाह छुटो करी शके छे.

१४-आ समाजनी उन्नति अर्थे समाजनी अंदर अंदर संबंध जोडवा भलामण करे छे.

१५-आ समाज समाजनी उन्नति अर्थे कन्यानी १६ वर्षनी उंमर थाय त्यां सुधीमां सगाइ करवा भलामण करे छे.

वखारीया चंदुलाल ताराचंद सही दा. पोते
पांच गामना पंचोओ कहेवाथी गाम कसोलना

शा. भीखाभाइ बहेचरदास
सही दा. पोते गाम वांचना.

टीपः—आ ठरावो बीजी बेठक तारंगा मुकामे संवत १९९१ ना झालावाडी आसो सुदी ३ ने गुरुवार तारीख ११ अकटोम्बर १९३४ ना रोज भरवामां आवशे तेमां पसार करवामां आवशे.

दरमियान पंदर दीवस अगाउ कोइ गृहस्थनी योग्य मांगणी पोताना खर्चे पोतानी अनुकुळ जग्याओ कसोलना पंचमां करवामां आवशे तो कसोलना पंच तरफथी दरेक ठेकाणे ते बदल खबर आपवामां आवशे.

उपर हेडींगमां जणाव्या मुजब उपर प्रमाणेना ठरावो तेमज समाज संबंधी हालना समयने अनुकुळ बंधारण तथा जे जे नवीन सुचनाओ या ठरावो आवे ते सर्वनो विचार पंचोना ठराव मुजब पांच गामोना पंचना खरचे पंचोनी बीजी बेठक करवामां आवशे.

उपरनी हकीकत लागता वळगता सर्वभाइओना जाणवा माटे प्रसिद्ध करवामां आवी छे.

ता. १६-९-३४
चंदुलाल ताराचंद वखारीया.

यदि योगः चित्तवृत्तिः निरोधः । અથવા योगः कर्मसु कोशलम् । નો સિદ્ધાંત મિથ્યા ન હોય તો એ નિશ્ચયપૂર્વક એ એક પહોંચેલા યોગી પુરૂષ હતા. હરેક પરિચયમાં આવતા પુરૂષો અને પાડોશી એમને હરેક વખતે અર્ધ મિંચેલાં નેત્રો સહીત ધ્યાનમાં પડેલા, પરાર્થ ચિન્તામાં લીન થયેલા જોતા. લોક અભિપ્રાય પ્રમાણે એ સાધારણ યોગી ન હતા, પરન્તુ યોગિરાજ હતા. દુનિયાની ગાઢ માટી નીચે દબાએલા ખાણમાં સંતાયેલ છુપા રત્ન સમાન એ હતા. નિર્જન જંગલમાં ખીલેલા પારિજાત સમાન હોવા છતાં એમનામાં રહેલા ઉજ્વલ આત્માને કાંઇ જોઇ શક્યું નહતું એમનો ઉચ્ચ આદર્શ, એમના રોમેરોમ પુષ્પમા સુગંધની માફક રહેલો સેવા ભાવ અને એમના હરેક સામાન્ય વર્તનમાં નજરે પડની એમના હૃદયની વિશાળતા વિશાળ જનસમુહ જાણી ન શક્યો, એનું કારણ એ પોતેજ હતા. એ જાણી જોઇને કોઇના ખાસ પરિચયમાં આવવાનું ચ્હાતા ન હતા.

હા, એમને જાણનાર ઓળખનાર પણ હતાં ! કોણ ? દુઃખી મનુષ્યોના દીલ, જરૂરીઆતવાળાની આંખો, સહાય વિનાની વિધવાઓનાં આંસુ, સંતાપ પામેલા મનુષ્યોનો આત્મા, રોગી અને આંધળાં, લુલાં, અપંગ જનોની વેદનાથી ભરેલા અંગ પ્રત્યંગ, બસ જ્યાં, કોઇ જતું નહિ ત્યાં, દુઃખી દુઃખનિવારકની શક્તિ રૂપ એ હાજર રહેતા.

આજ વરસાદમા કિલીયાની ઝુંપડી ભાંગી ગઇ, સવારમાં તે સમારવાના કામમાં એ મદદ કરી રહ્યા છે. ઝુંપડી જુની હતી, વાંસ ભાંગીને ચુરા થઇ ગયા છે, તાપ અને વરસાદથી છાજ કોહી ગયું છે તેથી નવા વાસ અને છાજ મંગાવવાની જરૂર છે. કેટલાએ વખતથી કીલીયાએ પૈસાનું મ્હોંપણ દીઠું ન હતું, ખેતરમાં મજુરી કરવા જાય તેના બદલામાં ઘઉં, ચણા વગેરે જે કાંઇ ધાન મળે તેમાં ગુજારો કરી લેતો હતો. યોગીથી આ કાંઇ અજાણ્યું નહતું. એમણે જલદીથી હિસાબ કરીને કીલીયાના ગજવામાં રૂપીઆ નાખ્યા અને કહ્યું. 'જાઓ, જલદીથી વાંસ અને છાજ ખરીદ કરી લાવો.' જમના દુઃખી હતી. એને કોઇનો આશ્રય ન હતો. ભીખ માગીને જ્યાં ત્યાં પેટની જ્વાળા શાંત કરતી હતી. ગામના સુતારને એને માટે રેંટીઓ તૈયાર કરવા કહ્યું. જમીનદારને ત્યાંથી રૂ વેચાતું લીધું, પોતાને હાથે પિંજી પુણી તૈયાર કરી જમનાને આપી આવ્યા. 'બસ આજથી કોઇ જગ્યાએ ભીખ માગવા જવું નહિ. જલ્દી સુતર તૈયાર કરો અને લે, આ તો તારે ખાવાને માટે છે. જ્યારે સુતર તૈયાર થશે ત્યારે તેનું કંતામણ તો જુદું ચુકવવામાં આવશે, એમ કહી અને બુઢ્ઢી સ્રીના હાથમાં રૂ. પાંચ ચુપકીથી આપ્યા.

દુઃખી જમના નિહાલ થઇ ગઇ, તેના હાથે પાંચ તોલા ચાંદીનો ભાર ક્યારે ઉંચક્યો હતો ? તેના વજનથી એટલી ઝુકી ગઇ કે, એ એમના ચરણોમાં લોટી જવાની હતી. એકદમ યોગીરાજ દૂર ઉછળીને ઉભા. "હાં હાં મા, એ શું કરો છો ? એમ કહી ઝટ ઝુંપડીની બહાર ચાલ્યા ગયા. એક અઠવાડીઆની અંદર બુઢ્ઢી માથા ઉપર સુતરની પોટલી લઇ આવી પહોંચી. એને કંતામણ આપી, બદલામાં અસંખ્ય મુક આશીર્વાદ લઇને, એને એમણે વિદાય કરી. વણકરને તે સુતરનું કપડું જલદી વણી આપવાનું કહેવામાં આવ્યું. તૈયાર થતાંની સાથે ખાદી લઇ ડહીના દ્વાર આગળ આવી કહેવા લાગ્યા—લ્યો મા, તમારો ચણીઓ અને ચાદર. એટલાથી ઠીક ચાલશે ના ? આખો વખત એ એવી રીતે મચ્યા રહેતા હતા. ગરીબની દાદ એમની આગળ પુરી થયા શિવાય રહેતી ન હતી. તે એમના કોમળ હૃદયમાં ઘુસતી જતી

અને અંદર હા, હાકારની સૃષ્ટિ રચતી. બસ, એ તેને શાંત કરવા કાંઇપણ કરવાનું બાકી રાખતા નહિ. તુરત કર્તવ્ય પરાયણ થઇને તે કાર્ય આટોપવા લાગી જતા. નાના મ્હોટા, ઉંચ નીચ, વૃદ્ધ બાળક, સ્ત્રી પુરૂષ, બ્રાહ્મણ ચમાર, બધાંજ સમાન ભાવથી લાભ ઉઠાવી શકતાં હતાં. હરીજન છોકરાને પણ એ એટલાજ પ્રેમથી પાસે બેસાડી તેને ભણાવતા, જેટલા પ્રેમથી બ્રાહ્મણના છોકરાને. એમના એ પ્રકારના સમાન ભાવને ઉંચ્ચ જાતિના લોક સહન કરી શકતા ન હતા, તેથી કરીને શરૂઆતમાં તો તે લાલ પીળા થઇ જતા અને ખીજાતા; આખરે બધાની એવી ધારણા થતી કે એ સાધુ મહાત્મા છે, એમને પુણ્ય, પાપ, ધર્મ, અધર્મ, ઉંચ–નીચ, છુત–અછુતનો ભેદભાવ હોતો નથી. એ એક એવા મહાત્મા છે, કે જેમની થાળી ખુદ ભગવાનને ત્યાંથી પીરશાઇને આવે છે. ભોળા ગામડીયાનો એ નિશ્ચય હતો, કે ભગવાન પાસેથી લઇને એમને સહાય કર્યા કરે છે, અસ્તુ એવા સાથે રહેનારા અને સેવકોને લઇને એમની જીવન યાત્રા સફલ હતી.

એ સિવાય એમને એક સહચરી પણ હતી તેની સાથે પણ એમનો પ્રેમ એટલોજ હતો કે જેટલો કોઇ પુરા પ્રેમીનો પ્રેમ પોતાની જીવન સર્વસ્વ માશુક ઉપર હોઇ શકે. યુવાન અવસ્થાના પ્રથમ પ્રભાતમાં, જ્યારે એ સાધનાના કઠીન દુર્ગમ પ્રદેશમાં વિહાર કરી રહ્યા હતા. એનો એમના સાથે અને એમનો એ સુંદરી સાથે સાક્ષાતકાર થયો હતો. બસ પ્રથમ દર્શનમાંજ એક બીજાને ઓળખી ગયાં હતાં. તેજ દીવસથી એ એક બીજા સાથે ચિર પ્રેમ સૂત્રથી બંધાઇ ગયાં હતાં.

એને પ્રાપ્ત કરીને એ પોતાની સાધનામાં કાંઇપણ દીવસ સ્હેજ પણ સ્ખલીત થયા ન હતા. એનું કારણ એ હતું કે એ પોતાને સાધ્ય કરવાની વસ્તુ નહતી પણ તે એક સાધન તરીકે હમેશ ઉપયોગી નિવડે એજ માત્ર ભાવના હતી. એમના સ્પર્શ માત્રથી એ વિણા રૂપી સુંદરી મગ્ન કરી દેતી, અને એ રીતે એમની સાધનામાં મદદગાર થતી અને એ પોતાની જીવીતેશ્વરી પ્રિયતમાની સમાન સમજી, બધું ખોઇ નાખી પોતાની જાતને પણ ભૂલી જઇ એ સિતાર મય થઇને પ્રભુ ભજનની ધુનમાં મસ્ત થઇ જતાં. એ તેમનું પૃથ્વી ઉપરનું સ્વર્ગ હતું.

બસ એજ એમની દિનચર્યા હતી, એજ એમની સાધના. એજ ત્યાગ અને સેવા ભાવની દિક્ષા લેવાનો પ્રકાર હતો. એજ એમનો યોગ. એ કાર્ય ક્રમમાં પરિવર્તન કરવાની એમને ન તો આવશ્યકતા કે અભિલાષા કદી ઉત્પન્ન થતી.

એક દિવસ એ પ્રમાણે એ જ્યારે પોતાના નિત્ય નિયમ પ્રમાણે સિતાર લઇ તન્મય થઇ બેઠા હતાં, ત્યારે કોઇક અવ્યક્ત અવાજે એમને સુતેલા જગાડીને કહ્યું.—"ઉઠો વત્સ ! તપસ્યા પૂર્ણ થઇ છે, હવે પરિક્ષાને માટે તૈયાર થઇ જાઓ, જાઓ, ઘર, ઘરના હાહાકાર, ચીત્કાર અને રૂદનને આ વીણાના ઝંકારે મૃદુલ ધ્વનિ અને હર્ષમાં સમાવી દે; પરંતુ પદભ્રષ્ટ ન થશો, ધનવાન અને સુખી મનુષ્યોનો પરિચય કરવામાં એનો ઉપયોગ ન કરતાં દુઃખી, રીબાતાં અને ત્યજાયેલાંની સેવામાં તેમની જાણ પિછાણ કરવામાં એનો ઉપયોગ કરો. બસ એજ મારો આદેશ છે, એજ ઉપદેશ અને આશીર્વાદ." ત્યારપછી એ ધ્વનિ સંભળાયો નહિ. ધ્યાન છુટ્યા પછી યોગીએ જોયું કે એમની વીણા હાથથી છુટી ગઇ હતી. એમની આંખ સ્થિર ભાવથી આકાશ તરફ નિહાળી રહી હતી, એમનું હૃદય જોરથી ધડકતું હતું. એજ સ્થિતિમાં ક્ષણભર એમણે વિચાર્યું—'મેં શું સ્વપ્ન તો નથી જોયું.' એને સ્વપ્ન કલ્પનામાં એ સફળ ન થયા, છેવટે એને દૈવી પ્રેરણા સમજીને વસ્તિવાળા પ્રદેશમાં એ વિચરવા લાગ્યા, સાથે એમની સહચરી પ્યારી સેવિકા વીણા પણ હતી. જે જે માણસો એમના પરિચયમાં આવતા, તે એમને દીવ્ય પુરૂષ માનતા. એમના ચહેરા ઉપર સદા સાત્વિક શાન્તિ રમ્યા કરતી, અને હૃદયમાં જીવમાત્ર ઉપર દયા ભાવ.

એમના કેટલાએ શિષ્ય હતા. બાળક એમની સાથે રમતાં, યુવાન એમની પાસે ભણતા અથવાં કાંતતાં શીખતા, અને વૃદ્ધ પુરૂષો યોગ અને સિતાર શીખતા. જ્યારે એ ભણાવતા ત્યારે ચંચળ સ્વભાવનાં નાનાં નાનાં બાળક એમના ખોળામાં અથવા ખભા ઉપર બેસીને એમની દાઢીની સાથે રમતાં રમતાં પુછતાં–" બાબુ (ઘણે ભાગે બધાં એમને એ નામથી બોલાવતાં) તમે રાત્રે ક્યાં જતા રહ્યા હતા ? દરરોજ તમે એમ કેમ જતા રહો છો! એવી રીતે હમે નહિ ભણીએ, પહેલો સિતાર સાંભળાવો." તેના ઉત્તરમાં તેમની માફક સફળતાથી હસતાં હસતાં એ કહેતા, " ભલે ઠીક પહેલાં સિતાર સાંભળી લ્યો, પછી ભણજો." એમ કરી એ સિતાર હાથમાં લેતા, ક્ષણભરમાં બધા તન્મય થઇ જતા, પછીથી જલદી ઉંઘમાંથી જાગીને તે કહેવા લાગતાં. ' ચાલો હવે ભણીએ, " બચ્ચાં પોતપોતાની ચોપડીઓ અને સ્લેટ પર ભણવા લાગતાં. ગામડાંના યુવક કાંતતાં, પીંજતાં તો જલ્દી શીખી જતાં, પરંતુ સિતારના ઝીણા તાર ઉપર તેમનું કામ ઠીક ચાલતું નહિ ત્યારે એ તેમને ઉત્સાહથી આગળ વધારવા પ્રયત્ન કરે જતા. વૃદ્ધ જનોને એ કહેતા કે તમારે જરૂર સિતાર શીખવો. એનાથી તન્મય થવાય છે. તન્મય થવાથી ચિત્તની વૃત્તિયો રોકાઇ જાય છે, એજ 'યોગ' કહેવાય છે. સંગીતમાં એમને એટલો પ્રેમ હતો કે તેને એ ઠામ ઠામ, ગામગામ, ઘેર ઘેર દરેક વ્યક્તિ સુધી પહોચાડી દેતા. દીવસના કઠોર કામકાજની કર્કશતા પછી મનને આનંદમગ્ન કરવાને સંગીતથી તાજગી આવે છે. તેથી એ તેને કદી ન ભુલતા. આ કાર્યક્રમમાં, એ સ્ત્રીઓને પણ સામેલ કરતા, તેમને એ જુદી રીતે ઉપયોગી શિક્ષણ આપતા.

બસ, પોતાના એ પ્રોગ્રામની સાથે એક સ્થાન ઉપર એ છ માસ કે વર્ષથી વધારે ન રહેતા. ગામની આગળ પાછળની સફાઇ, એક નાની સ્કુલ, ઘર ઘરમાં ચાલતા રેંટીયાનો મધુર ધ્વનિ અને કાઇ પણ રોકટોક કે ભેદભાવ સિવાય સ્વચ્છંદ વિચારના હરિજનોને જોઇને જણાઇ જતું કે એ સ્થાન ઉપર યોગીરાજની વીણા વાગી ચુકી છે. જોનારાઓને આશ્ચર્ય થતું કે આમ થોડા વખતમાં એ એટલું બધું કામ કેવી રીતે કરી શકે છે. દીવસ રાતના ચોવીશે કલાકને એ એવી રીતે વ્યતિત કરતા કે, મોટાં મોટાં કામ એમના સંકલ્પ માત્રથી સિદ્ધ થયેલાં માલુમ પડતાં.

એમને કાંઇ એકલી ગંધેલી રસોઇ જમતા જોયા ન હતા. કમંડળુમાં ભિંજાવેલા કાચા ઘઉં અને ચણાં એમનો સ્વાદીષ્ટ ખોરાક હતો, કપડામાં એક નાની ચાદર, જેને ઓઢી રહેતા અને ટુવાલ જેને એ પહેરી લેતા, એજ માત્ર એમના અંગરક્ષક હતાં. ગરીબોને મદદ કરવામાં જે નાણું એ બધું ક્યાંથી આવે છે! તે સંબંધી ભક્તો એમને વારંવાર પુછતા. તેના જવાબમાં એ માત્ર મંદ હાસ્ય કરતા. એ પ્રમાણે કેટલાએ વખત સુધી એમનું રહસ્ય યોગી જીવન છુપું રહ્યું તે એક દીવસની ઘટનાથી અચાનક જાહેરમાં આવ્યું.

વાત એમ બની કે, એ તો લોક જોયા કરતા હતા કે, ઘણે ભાગે મહીનામાં એકવાર એમની પાસે એમના જેવા વેશવાળો એક સુંદર યુવક આવ્યા કરતો. બંને ઘણા વખત સુધી ચુપકીથી વાર્તાલાપ કર્યા કરતા. યોગી પોતે તો બહુ ઓછું બોલતા પણ સાંભળતા હતા વિશેષ. એ પ્રમાણે એક બે દિવસ રહીને ચાલ્યો જતો. એક વખત મહીનો વિતિ ગયા છતાયે ન આવ્યો. લગભગ દોઢ મહિનો થઇ ગયો હતો. એકસો રૂપીઆનો મનીઓર્ડર લઇને પોષ્ટમેન સુધીન્દ્ર બાબુને ખોળતો આવ્યો. સુધીન્દ્રબાબુ નામની કોઇ વ્યક્તિ છે, તે કોઇની જાણમાં ન હતું. એ પહેલાં એ શીરનામાથી કંઇ પત્ર પણ આવ્યો ન હતો. શોધતો, શોધતો પોષ્ટમેન પોળની પાસે ગયો. પરંતુ પોષ્ટમેનના હાથમાંથી મનીઓર્ડરનું ફાર્મ લઇ ઝીણા ઝીણા અક્ષરોમાં લખેલી બાબત વાંચી જોઇ. તેમાં લખ્યું હતું:—

"પ્રિય સુધીન્દ્રબાબુ,

તમારો પત્ર મળ્યો. માતાજીની બિમારીના કારણથી હું આવી ન શક્યો. હાલ રૂ. સો મોકલું છું. જલ્દી આવી જવાનો પ્રયત્ન કરીશ. તમને માલુમ હશે કે અહિંઆ આ વર્ષે દુકાળ છે, તેથી કરીને હરવખત રોકાઇ રહેવું પડે છે. આજ આ ગામમાં, તો કાલ બીજામાં. બેન્કમાં રૂપીઆ પણ હવે વધુ નથી. યોગ્ય અભિપ્રાય લખશો. એજ.

સ્નેહાધીન—"દ્વારીકા."

હવે પટેલની ઉત્સુકતા ઘણી વધી. થોડું થોડું અંગ્રેજી એ જાણતા હતા. તેથી એ પણ જાણી લીધું કે રૂપીઆ કયાંથી આવ્યા છે. મોકલનારના શીરનામામાં લખ્યું હતુ. "દ્વારીકાનાથ C/o પોષ્ટ માસ્તર, હિસાર."

એ પ્રમાણે કરીને પોષ્ટમેનને મનીઑર્ડર ફોર્મ પાછું આપતા કહ્યું "માલુમ પડે છે કે એ યોગીજ સુધીન્દ્રબાબુ છે," જા, આગલા ભાગમાં ભણાવતા હશે. એમને જઇને પુછ તો ખરો કે સુધીન્દ્રબાબૂ કોણ છે? પોષ્ટમેને એ પ્રમાણે કર્યું. પટેલનું અનુમાન ઠીક હતું.

"સુધીન્દ્ર બાબૂ', પોષ્ટમેને બુમ પાડી, તે સાંભળી યોગીએ મોં ઉંચું કરી પુછયું-કોણ શું કામ છે? બાળકો ચિત્રવત્ ચુપચાપ જોઇ રહ્યાં હતાં. આપનો મનીઓર્ડર છે. ઠીક કહી પોતે આગલી પરશાળમાં આવ્યા, અને રૂપીઆ લઇને ચુપચાપ કાંઇ વીચાર કરતા ફરીથી સ્થાન ઉપર આવી બેઠા. હવે તો પાસેનાં બાળકો બોલી ઉઠયાં—"સુધીન્દ્ર બાબૂ"—"સુધીન્દ્ર બાબૂ" યોગીએ બહુ રીતે બાળકોને કાંકરા લઇ બે અને બે ચાર, ચાર અને ચાર આઠ એમ ગણતરી કરતાં સમજાવવાનો પ્રયત્ન કર્યો; પરંતુ એકપણ બાળકનું લક્ષ તે તરફ વળ્યું નહિ. આ પરે હારીને સુધીન્દ્ર બાબૂએ હારીને કહ્યું—"શું કહો છો બોલો!"

"આપનું નામ સુધીન્દ્ર બાબૂ છે!"

"હાં."

"આપે પહેલાં કયમ ન બતાવ્યું ?"

"હવે તો બતલાવી દીધું ના."

બીજે બીજે ગામના એકેએક માણસ જાણી ગયું કે યોગીજી સુધીન્દ્ર બાબૂ છે.

ગામનો પટેલ ઘીનો વેપાર કરતો હતો. તે કામકાજને માટે એ હીસાર ગયા આવ્યા કરતો. એમ જાણીને કે ત્યાં દુકાળ પડયો છે; માટે ઘી સસ્તુ મળશે. તે હીસાર ગયો, ત્યાં એની ઉત્કંઠા એને પોષ્ટ માસ્તર પાસે લઇ ગઇ. અચાનક ત્યાં એને પેલો યુવક ઉભેલો જણાયો, કે જે, યોગીની પાસે વારેવારે આવ્યા કરતો હતો ને ઘણે ભાગે મનીઓર્ડરની રશીદ પેટે પુછતો હતો. અહિંઆં પટેલ આવતાની સાથે પુછવા લાગ્યા—અહિં કોઇ દ્વારકાનાથજી છે? યુવકઃ—કહો શું કામ છે! પોષ્ટ માસ્તરને હવે કાંઇ કહેવાની જરૂરજ ન હતી.

પટેલ—આપજ દ્વારકાનાથજી છો?

યુવકઃ—એમજ સમજી લ્યો.

હવે તો પટેલ તેમના પગે પડયો—"હમારાં ધન્યભાગ્ય કે આપ લોકોએ આટલું બધું કષ્ટ ઉઠાવી અમારા ગરીબોનો ઉદ્ધાર કરવાનો પ્રયત્ન કર્યો છે, કે. જે સ્વયં ભગવાનને છોડી બીજું કોણ કરી શકે એમ છે. દ્વારકાનાથજીએ પટેલને પ્રેમથી ભેટતાં કહ્યું.

"ભાઇ-કાંઇ આપને જોઇએ તે કહો."

"આપનાં દર્શન શિવાય મારે બીજું શું જોઇએ? એ શું કમ સુભાગ્યની વાત છે!" વાતચીત કરતા, કરતા, પોષ્ટ ઓફીસમાંથી નિકળી પટેલ, યુવકની સાથે સાથે ચાલતા થયા. વાતમાં ને વાતમા પટેલે કહ્યું. "તમે મોકલેલા રૂપીઆ ત્રણ દિવસ ઉપર સુધીન્દ્રબાબૂને પહોંચી ગયા છે, ત્યારથી હું આપનેે ઓળખવા ઇચ્છા રાખતો હતો ભાગ્યવશાત્ આપનાં દર્શન થઇ ગયાં.

સુધીન્દ્રબાબૂ બહુજ ભલા માણસ છે. એટલું કામ કોઇ કરી ન શકે; જેટલું એ કરે છે. સંતોષી પણ એટલા કે, એમને ભુખ, તરસ, પણ લાગતી હમે જાણી નથી." અંતમાં તેમનો પરીચય જાણવાની તેમણે ઇચ્છા બતાવી. પહેલાં તો દ્વારકાનાથજીએ વાત પડતી મુકવા પ્રયત્ન કર્યો; પરંતુ પટેલની પુછવાની રીત એવી દીલશોજી ભરેલી હતી, કે, તેનાથી તેમના દીલ ઉપર ખાસ અસર થઇ, અને તેમને નિરાશ કરી શકયો નહિ, તેમણે કહ્યું—"સુધીન્દ્રબાબૂ પૂર્વ બંગાળના રહેવાશી છે. એમના પિતા મ્હોટા ધનવાન હતા; પરંતુ એથી પણ વધારે કંજુશ હતા. અહિઆં સુધીન્દ્રના એ હાલ હતા કે, જે કાંઇ એમને મળતું તે એ ગરીબોને આપી દેતા, તેમની સાથે મિત્રતા કરતા, તેમની સાથેજ ઉઠતા બેસતા, તે ઉપરથી તેમના પિતાશ્રી તેમની ઉપર હંમેશ કોપીત રહેતા. તેથી કરીને પિતા, પુત્રનું મન એક થતું નહિ. એક દીવસ વર્તમાનપત્રમાં સુધીન્દ્રબાબૂએ વાંચ્યું કે ઉત્તર હિંદુસ્થાનમાં ઘોર દુકાળ છે. વરસાદ નહિ પડતા ત્રાશ, ત્રાશ ફેલાઇ રહ્યો છે. ઝાડપાન સુકાઇ ગયાં છે. કુવા પણ ખાલી થઇ ગયા છે. હજારો આદમી, ભુખ, તરસથી આકુળ વ્યાકુળ થઇને તરફડે છે. આથી સુધીન્દ્રનું હૃદય કરૂણાથી ભરાઇ આવ્યું. એ રડતા રડતા મારી પાસે આવ્યા અને કહેવા લાગ્યા, "હમે તો અપાર ધનના ઢગલા કરીને તેના ચોકીદાર થઇને બેઠા છીએ, અને હમારા ભાઇ અને દુધમળ બચ્ચાં, તડપી, તડપીને એ મુઠી અન્ન વિના જાન છાંડી દે છે. એ કેવી વિડંબના?" મારો અને એમનો કોલેજમાંથી સાથ હતો. હમે એક બીજાના દર્દથી પુરેપુરા વાકેફ હતા. તે દીવસ એક ગુપ્ત સલાહ કરવામાં આવી. એક દીવસ રાત્રે બધાના સુઇ ગયા પછી, પિતાના માથાની નિચેના ઉસીકાના તળેથી કુંચીઓ સરકાવી લઇ, ત્રિજોરીમાંથી ચુપચાપ પચાશ હજાર રૂપીયા નગદ કાઢી લીધા. અને રાતોરાત એક વિશ્વાસપાત્ર મિત્ર સાથે તે રૂપીઆ મને પહોંચાડી દીધા.

સવારમાંજ, ઘરમાં કોળાહળ મચી રહ્યો. પચાસ હજાર રૂપીઆ ત્રિજોરીમાંથી ગુમ થઇ ગયા હતા. તાળું બંધ હતું. કુંચી ઉસીકા નીચેજ હતી. કોઇને કોઇ પત્તોજ ન લાગ્યો. મોટાં મોટાં ઇનામ જાહેર કરવામાં આવ્યાં. કેટલાયે દીવસ સુધી શહેરમાં એ વાતની ચર્ચા થયા કરી. પોલીસે બહુ જાતની મુત્સદી દેખાડી, પરંતુ લેનાર ન પકડાયો. ધીરે ધીરે વાત જુની થંઇ ગઇ, ઘરવાળાંને સહન કરવું પડયું, સુધીન્દ્રબાબુના હૃદયમાં પોતાના પિતાશ્રીને કમળાથી મ્હોટું દુઃખ થતું હતું તેથી પરંતુ ગરીબોના ભુખમરાથી એથી પણ ભારે દુઃખ થતું હતું, હવે એનું મન ઘરમાં લાગતું ન હતું. એક દીવસ એ ચુપચાપ, કોઇપણ સરસામાન ઘરમાંથી લીધા સિવાય ઘરમાંથી ચાલ્યા પડયા. એક પત્ર લખીને તાકામાં રાખતા ગયા. તેમાં લખ્યું હતું કેઃ—

પૂજ્ય પિતાશ્રી.

રૂપીઆ મેં ચોર્યા હતા. તે અપરાધને માટે ક્ષમા ચહું છું. મારા ત્રણ ભાઇઓ છે. દરેકને હિસ્સે લગભગ બે લાખ રૂપીઆની સંપત્તિ હીસ્સામાં આવે છે. હું મારા હીસ્સાના રૂપીઆ પચાસ હજાર લઇ ચુકયો છું. બાકી તો હું છોડી દઉં છું. મારે માટે ખેદ ન કરશો. મારી ખોળ પણ કરશો નહિ. કદાચ હું મલી પણ જાઉં; તોપણ કોઈપણ રીતે હું પાછો ફરવાનો નથી. જ્યારે આપણા દેશનાં નાનાં નાનાં બચ્ચાં ભૂખની જવાળામાં ભસ્મ થઇ રહયાં છે; ત્યારે ઘરમાં રહી આરામની જીંદગી વીતાડવી, મને ચિતા સમાન જવાળા કરે છે.

લી૦ આપનો—સુધીન્દ્ર.

આ પ્રમાણે એમના ચાલ્યા જવાથી પિતાજીની આંખો ઉઘડી. જ્યારે એમને પોતાના પુત્રની હાર્દિક વેદનાનો હેવાલ માલુમ પડયો,

ત્યારે એ શોધ કરતા એમની પાસે આવી પહોંચ્યા. જ્યાં એણે દુષ્કાળ પીડીતોને સહાય કરવાના કામમાં દિન રાત એક કરી નાખી હતી દુષ્કાળ પીડિત જનતાને આંખોથી જોઇને સુધીન્દ્રના પિતાનું હૃદય પણ પિગળ્યું. એમણે પોતાની અર્ધિ દોલત, દેશ હીતના કાર્યોમાં જેવી રીતે એ ઇચ્છે તેવી રીતે ઉપયોગ કરવા માટે સુધીન્દ્રને સોંપી દેવા ઇચ્છા બતાવી; પરંતુ એમની માતા એમના વિયોગથી રડી રડીને આંખો ખોઇ રહ્યાં હતાં. તેમને, ઘેર આવી એક વખત મળી જઇ શાન્ત્વના આપી જવા માટે ખુબ આગ્રહ કર્યો. એથી કરીને સુધીન્દ્ર ઘેર પણ ગયા; પરંતુ હવે એનું મન ત્યાં કેવી રીતે લાગે? સર્વેને સમજાવી કરીને ફરીથી પોતાના કામમાં લાગી ગયા. ત્યાં દુષ્કાળ મટી ગયો, કે તુરત એ ત્યાંથી અદ્રશ્ય થઇ ગયા. એક વર્ષ સુધી એમનો પત્તો ન લાગ્યો કે એ ક્યાં છે? એક સાલ પછી કેટલાએક રૂપીઆ લઇ હૃષિકેશ આવવા એમણે મને લખ્યું. હું તુરત ત્યાં પહોંચ્યો. એમની આજ્ઞા પ્રમાણે રૂપીઆ ત્યાં જમા કરાવી દીધા. ફરી બે વર્ષ છુપા રહ્યા. હવે અહિંઆં એવો નિયમ કરી રાખ્યો છે, કે જેટલા રૂપીઆ એમને જોઇએ તેટલા મારે જાતે જઇને તેમને પહોંચાડી આવવા. વાત વાતમાં એ પણ માલુમ પડ્યું કે દ્વારકાનાથ પણ એક મ્હોટી મીલકતના માલીક હતા. ઘરમાં એ એકલાજ હતા. એમણે પણ પોતાની પૂરી સંપત્તિ સાર્વજનીક કામોમાં ભેટ આપી દીધી હતી.

હવે તો પટેલ, દ્વારીકાનાથને વારંવાર પ્રણામ કરતા, ત્રણ દીવસ સુધી એ હિસારમાં રહ્યા; દરરોજ બે વખત એમને ઘેર જઇ એમનાં જરૂર દર્શન કરી આવતા.

હિસારથી પાછા આવી રાત્રે પોતાની પરસાળમાં બેસી પોતાના મિત્રોને સુધીન્દ્રબાબૂનો પૂરો ઇતિહાસ કહી રહ્યા હતા. બધી વાત સાંભળીને વૃદ્ધ પુરોહિત ઉભા થઇને બોલ્યા—"પટેલ! એક વાત કહું, જો તમે માનો તો આવતી કાલે સવારે એક સભા મેળવીએ, બધા લોકોને તેમાં બોલાવીએ, અને સુધીન્દ્ર બાબુના ચરણનો સ્પર્શ કરીએ. આવા મહાત્માનાં દર્શન મહાપૂણ્ય કરવાથી મળે છે. આપણું મ્હોટું ભાગ્ય છે." બધાએ પુરોહિતની આ વાતનું જોરથી સમર્થન કર્યું.

અકસ્માત એજ વખતે, સુધીન્દ્રબાબૂ પાસેની ખેડુતની ઝુંપડીમાં બેસીને ગામની સફાઇના વિષયમાં કંઇક મ્હોટી મ્હોટી વાતો સમજાવી રહ્યા હતા, એટલામાં પુરોહિતની વાતની ભણક એમના કાને પડી. એ ચોંકી ઉઠ્યા, પરંતુ મ્હોંડેથી કાંઇ બોલ્યા નહિ.

બીજે દીવસે યોગી સવારે ત્રણ વાગે ઉઠ્યા, વીણા ઉપર એમણે કબીરનું એક સુંદર પદ શરૂ કર્યું, અને ધીરેધીરે મધુર સ્વરમાં ગણગણ્યા.

माया त्यागे क्या भया, मान तजा नहीं जाय।
जो हि माने मुनिजन ठगे, मान सबनको खाय॥

બસ આગલે દીવશેથી એ સિતારવાળા બાબુને એ ગામમાં કોઇએ જોયા નહિ, હાં એમણે ચાલુ કરેલી હરિજન પાઠશાળા, બાળીકા વિદ્યાલય, ખેડુત સભા, સંગીત સમિતિ, વગેરે નાની ન્હાની સંસ્થાઓથી એમનું સ્મરણ હજી પણ સુરક્ષિત રાખ્યું છે. ગામના લોકો હાલ વિહ્વલ થઇને સિતારવાળા બાબૂની નેકી કર્યા કરે છે, કદી, કદી ન્હાના ન્હાના બાળકો પોતાના બાપના ખોળામાં બેસીને કહ્યા કરેછ "નહિ હમે તો બાબૂ પાસેથી સિતાર સાંભળીશું, પછી ભણીશું," વૃદ્ધ બાપ બાળકોને આશ્વાસન આપ્યા કરે છેઃ— 'બેટા હમણાં ભણો, પછીથી આવતી કાલે બાબૂને આપણે બોલાવીશું. એ કાલ આજ સુધી નથી થઇ.

—નાગરદાસ—

("વિશાલ ભારત,"માં શ્રીમતી સરસ્વતી દેવી, કાવ્ય તીર્થ, સાહિત્યાચાર્યની કહાનીનું ભાષાન્તર.)

આપણી અવનતિનાં કારણો

(લે—જીવણલાલ સોમચંદ-કલોલ.)

પ્યારા બંધુઓ! આપ સર્વેને વિદિત છે કે આજકાલ આપણી સમાજની અંદર અનેક પ્રકારના કલેશ યા ઝઘડા વધી ગયા છે તેના પરિણામે આપણી સમાજ સમયચક્રના વહેવાની સાથે અધોગતિના માર્ગે જાય છે. પ્રતિવર્ષ આપણી દિગંબર જૈન સમાજની સંખ્યામા મોટો ઘટાડો થયે જાય છે, અને જો આજ પ્રમાણે પ્રતિવર્ષ આપણી સંખ્યા ઘટતી જાય તો આજથી સો યા દોઢસો વર્ષમા વીર પ્રભુનુ પવિત્ર નામ લેનાર કોઇ રહેશે કે કેમ એ મોટો સવાલ ઉપસ્થિત થાય છે. પણ એ સંજોગોથી આપણને દૂર રાખે [illegible] બચાનુ ઉત્પત્તિ સ્થાન માત્ર કુલપરંપરાથી ચાલ્યા આવતા કેટલાક કુરિવાજોનેજ આભારી છે. આ બાબતમા કેટલાક માણસોને એવો સવાલ ઉપસ્થિત થાય છે કે શુ આપણા વડીલો કંઇ ઘેલા હતા કે જેમણે આવા નાશના બીજરૂપ કુરિવાજોને અમલમા મૂક્યા? માટે તેમને જણાવવું જોઇએ કે જે વસ્તુ આજે આપણને હિતકર હોય છે તેજ વસ્તુ સંજોગ વશાત ભવિષ્યમા દુઃખમય બની જાય છે. કેટલાક વખત ડાક્ટરો દરદીને અનેક જમાતના અમુક જાતનું (પોઇઝન) ઝેર આપે છે અને તે દરદીને હિતકર પણ થાય છે પરંતુ તેજ પોઇઝન જો તંદુરસ્ત માણસને આપવામા આવે તો કેટલીક વખત માણસનો નાશ કરે છે. કુદરતમા પણ આપણને જણાય છે કે જે ગરમી ઉનાળામા આપણને અસહ્ય લાગે છે તેજ ગરમી શિયાળામા સુખકર લાગે છે. એટલે જે વસ્તુ એક વખત સુખદાયી હોય તેજ વસ્તુ હમેશાને માટે સુખ દાયી હોય તેવો કંઇ એકાન્ત નિયમ નથી. આપણે પ્રત્યક્ષ અનુભવીએ છીએ. આપણા વડીલોને કંઇ એવી ખબર નહોતી કે તેમના સ્થાપિત રિવાજોનું આવું વિપરીત પરિણામ આવશે.

વીર પ્રભુની આજ્ઞાઓનુ પાલન કરનાર એવો હરકોઇ માણસ જૈન થઇ શકે છે, પછી તે ગમે તે જાતિનો હોય પણ તેને વિધિપુર્વક પવિત્ર બનાવી શકાય છે. પહેલાં પણ જેને જૈન ધર્મ પાળવાની ઇચ્છા હોય તેને પવિત્ર બનાવી જૈન ધર્મની દીક્ષા આપવામા આવતી હતી, તે આપણા પ્રાચીન ઇતિહાસ ઉપરથી પુરવાર થાય છે. હેમચંદ્રાચાર્યે દોઢ લાખ માણસોને જૈન બનાવ્યા [illegible] કુળપરંપરાથી આવતા [illegible] હતા? તેમા કેટલાક આર્યો અને કેટલાક અનાર્યો પણ હતા.

ભાઇઓ, જમાનો બદલાય છે તેની સાથે આપણા જુના વિચારો પણ બદલાવવાની જરૂર છે. એક નજીવી યા ફીજુલ બાબતને મોટું સ્વરૂપ આપી પરસ્પર કલેશના બીજ રોપી અવનતિના માર્ગે પ્રયાણ કરવું તે શુ વીર પ્રભુના શિષ્યોને યોગ્ય છે? માટે અંદર અંદરના ઝઘડાઓને તિલાંજલી આપી પરસ્પર પ્રેમ ભાવના પ્રગટ કરી વાત્સલ્ય ભાવ સાથે મહાવીરના આદેશોને વધાવી લઇ તેના ઉપદેશેલા ધર્મને દીપાવવો એજ આપણુ ધ્યેય બનાવવુ ઘટીત છે. એજ નમ્ર પ્રાથના.

નરોડાની પંચને ખુલ્લો પત્ર.

હમો નીચે સહી કરનાર શ્રી. દિગમ્બર જૈન નરસીંગપુરા ગામ નરોડાના પંચ સમસ્તને ખબર આપીએ છીએ. કે, નરોડાના શ્રી દિગમ્બર દેહેરાસરનો વહીવટ, જે હમો છેલા ૨૫—૨૦ વરસોથી કરીએ છીએ તે વહીવટ પ્રતીકુલ સંજોગોને લઇને, શ્રી પંચને પાછો સોપી દેવા આ વતવણીથી ખબર આપીએ છીએ. હમોએ અનેકવાર પંચ ભેગુ કર્યું, પણ પંચવાળાઓને નવરાશ નહી હોવાથી આ જાહેર પત્ર લખવાની ફરજ પડી છે. છેવટના પંચોના કહ્યા મુજબ હમોએ [illegible] સુધી વહીવટ કરી શ્રી પંચને જણાવીને લોપડા વગેરે ભાદરવા સુદી ૧થી બંધ કર્યા છે તો પંચો તે પછીનો વહીવટ સંભાળી લેશે. ને હીસાબ વીગેરે શ્રી પંચ મુકરર કરશે તે દહાડે હમો બતાવીશું.

દા. શા. નગીનદાસ રાયચંદ-નરોડા.

अमदावादमां पर्यूषण पर्व.

नृसिंहपुरा भाईयोनी उदासीनता.

अमदावादमां वसता दिगम्बर जैनोनी वस्ती दीवसे दीवसे वधती जाय छे अने ए सह साथे मळी पर्युषण पर्वनी उजवणी करी अनेक व्रतो जेवां के, दशलक्षणी व्रत, अनंत व्रत, सोलहकारण व्रत वगेरे अनेक विधि सहीत दरेक सहधर्मप्रेमी भाई बहेनोना सहकार सहीत धामधुम साथे उजववामां आव्या हता. तथा सुद १४ ना दीवसे आखो दीवस पूजा महा अभिषेक साथे भणाववामां आवी हती. सघळा भाई बहिनोए ते दीवसे पोतानो रोजींदो कार्यक्रम त्याग करी आखो दीवस प्रभु भक्तिमां गाळ्यो हतो. तथा पुनमना दीवसे अनंतव्रत करनार भाइयो तेवीसमां तीर्थङ्कर श्री १००८ भगवान पार्श्वनाथना दर्शनार्थे वांचनी यात्राए गया हता त्यां अभिषेक साथे पुजन वीगेरे विधि करवामां आवी हती. वळी त्यांना आपणी ज्ञातिना दरेक सद्‌गृहस्थोए आवनार भाइओनो भव्य आदरसत्कार कर्यो हतो तेनुं वर्णन मारी आ लेखनीथी थई शके तेम नथी. वळी भादरवा वदी ०)) दीवसे अमदावादमां जलयात्रानो वरघोडो पूर्ण उत्साह ने धामधुमथी काढवामां आव्यो हतो तेनी अन्दर अमदावादमां वसता अनेक दिगंबर जैन भाईओए साथ आपी पूर्ण आनंदथी ए जळजात्रानो भव्य वरघोडो चढाव्यो हतो अने तेने मांडवीनी पोळना देहरासरमां उतारी त्यां पूजा अभिषेक विगेरे आनंदथी करी सहु भाईओए तेनी पूर्णाहुति करी हती.

खेदनी वात ए छे के नृसींहपुरा भाईओ समाजनी दीवालोमां [illegible] ही धर्मने नामे खोटी छाप अनेक [illegible] युवानोना हृदयमां पाडे छे, तेओनो साथ कंईक ओछो जणातो हतो कारण चाहे ते हो परन्तु पर्युषण पर्वना पवित्र दीवसोमां आपणी आ प्रणाली आजे [illegible] तीना कारणोमां आ एक आपणे वधु उमेरो [illegible] छीए, परन्तु तेथी आपणे जरापण निराश थवानुं नथी. आपणा प्रभुनी एवी जयंती हंमेश आपणे उजववानी भाग्येज मळे छे तेनो सदुपयोग करवो ए दरेक जैननो परम धर्म छे.

आपणी ऐक्यतानी धगस दिन प्रतिदिन वधती जाय तेमज आपणने जो आपणा धर्ममां पूर्ण श्रद्धा हशे तो गमे तेवी आकरी कसोटीमांथी पसार थवा छतां आपणे आपणुं धर्माचरण छोडीशुं नहीं. कदाच धर्म मार्गमांथी चलीत थयेल वर्ग आपणा ऊपर अनेक जातना आक्षेप मुकी आपणा [illegible] कसोटी करी रह्यो छे, आपणा सारामां [illegible] कार्यने उतारी पाडी आपणी सहनशीलता मापी रह्यो छे. आपणे आवा प्रसंगोथी जराए पाछा न हठतां आपणा कार्यने आगळ धपाव्युं छे अने धपाव्ये राखवुं जोइए. असत्यनो प्रचार करनार अने अणछाजता आक्षेपो मुकनार पोतानी खोटी जवाबदारी वहोरी ले छे. आथी दरेक धर्मप्रेमीए पोताना कार्यनी कसोटी तेओना खराब थवाना भोगे पण करवामां आवे छे एथी एमनी ए उपकारी वृत्तिनी कदर करी आपणे आवां अनेक भविष्यमां आवती कसोटीओमांथी सांगोपांग पार उतरवुंज जोईए. अस्तु.

—विनय देशाई—अमदावाद.

"जैनविजय" प्रिन्टिंग प्रेस, खपाटिया चकला—सूरतमें मूलचन्द किसनदास कापड़ियाने मुद्रित किया और "दिगम्बर जैन" ऑफिस, चन्दावाड़ी—सूरतसे उन्होंने ही प्रकट किया।

ગુજરાત દિગંબર જૈન પ્રાન્તિક સભાનું માસિકપત્ર—

— संपादक अने प्रकाशक —
मूलचन्द किसनदास कापड़िया—सूरत.

वर्ष २७	वीर संवत २४६० आश्विन	अंक १२

विषय सूची.

पुराने व नये ग्राहकोंसे-

" दिगम्बर जैन " का २७ वर्ष पूर्ण हुआ है व आगामी विशेषांक–शिक्षांकसे नया २८ वां वर्ष प्रारम्भ होगा। अतः पुराने व नवीन ग्राहक उपहारी पोस्टेज सहित पेशगी वार्षिक मूल्य २।) मनिऑर्डरसे शीघ्र ही भेजें।

मैनेजर।

उपहारोंके पोस्टेज सहित वार्षिक मूल्य २।) व समाज अंक मू० ।।।)

दिगम्बर जैनका शिक्षांक।

दिगम्बर जैनका २७वां वर्ष पूर्ण होगया और आगामी २८ वें वर्षका सचित्र विशेषांक इसवार "शिक्षांक" के रूपमें प्रगट होगा। उसके लिये कुछ विषयोंके नाम नीचे दिये जाते हैं। इनमेंसे किसी एक विषयपर एक लेख या कविता दिगंबर जैनके विद्वान लेखक व कविगण ८ दिनके भीतर ही भेजनेकी अवश्य २ कृपा करें, जो ४-५ पेजसे अधिक न हो।

१–दि० जैन गुरुकुलकी आवश्यक्ता।
२–दि० जैन विद्यालयोंकी स्थिति।
३–दि० जैन पाठशालाओंकी हालत।
४–दि० जैन श्राविकाश्रमोंकी स्थिति।
५–जैन कालेजकी आवश्यक्ता।
६–दि० जैन बोर्डिंगोंकी स्थिति।
७–दि० जैन शिक्षासंस्थाओंपर दृष्टिपात।
८–शिक्षापद्धतिमें सुधारकी आवश्यक्ता।
९–स्त्री शिक्षाकी आवश्यक्ता।
१०–दि० जैन कन्या विद्यालय।
११–आदर्श छात्रालय।
१२–हमारे परीक्षालय।
१३–प्राचीन और अर्वाचीन शिक्षापद्धति।
१४–शिक्षाक्रममें सुधारकी आवश्यक्ता।
१५–बालशिक्षाका प्रचार कैसे हो?
१६–धार्मिक शिक्षामें सुधार।
१७–लौकिक शिक्षाकी आवश्यक्ता।
१८–विद्यालयोंमें औद्योगिक शिक्षा।
१९–दि० जैन समाजके विद्वानोंका परिचय।
२०–दि० जैन समाजकी विदुषियोंका परिचय।
२१–दि०जैन समाजमें २५ वर्षमें शिक्षाकी प्रगति।
२२–पठनक्रममें अजैन ग्रंथोंकी आवश्यक्ता।
२३–शिक्षा संस्थाओंका एकीकरण कैसे हो?
२४–ગુજરાતમાં કન્યાભવનની જરૂર.
२५–ગુજરાતમાં ધાર્મિક કેળવણીની જરૂર.
२६–ગુજરાતના દિ૦જૈનોની ધાર્મિક શિથિલતા.
२७ ગુજરાતમાં પંડિતો કેવી રીતે તૈયાર થાય?
२८–ગુજરાતમાં બ્રહ્મચર્યાશ્રમની જરૂર.
२९–ગુજરાતમાં દિ૦ જૈન વિદ્યાલયની જરૂર.
३०–ગુજરાતની પાઠશાળાઓ અને તેની સ્થિતિ.

इनके अतिरिक्त अपने यहांकी दिगम्बर जैन शिक्षासंस्थाओं (विद्यालय, पाठशाला, कन्याशाला, बोर्डिंग, ब्रह्मचर्याश्रम, जैन स्कूल, जैन हाईस्कूल, गुरुकुल आदि) के चित्र, विशेष विद्वानोंके फोटो, ग्रुप फोटो तथा शिक्षांकके लिये अन्य उपयोगी चित्र भी अवश्य २ भेजियेगा। आपको जितने दिगम्बर जैन विद्वानोंके नाम और परिचय ज्ञात हों वह भी अवश्य सूचित करनेकी कृपा करें।

वीरोंकी कहानियां।

कहां गये वीर जिन धर्मका प्रकाश किया,
कहां श्री गौतम जिन लोकालोक जानियां।
कहां गये आचारज श्रीयुत समंतभद्र,
रात दिन बांचत हैं जिनकी कहानियां।
कहां गये मानतुंग धर्म उद्धारक अरु,
कहां अकलंक निकलंक धर्म ठानियां।
हाय आज जाता है भारतसे जैन धर्म,
आज याद आती वह वीरोंकी कहानियां॥

घासीराम जैन "चन्द्र"–कोलारस।

प्रासंगिकैः सामयिकैः सुचुर्लेखैर्विनोदैः कविता-कलाभिः।
सद्धर्मसाहित्यसमाजहृद्ये "दिगम्बरो जैन" उदेत्यपूर्वः॥

वीर स्तवन

(रचयिता–पं० परमानंदजी जैन शास्त्री)

वहती अहिंसाकी धारा न विमल भीषणकालमें।
तो महिमा ऐसी न होती भव्य भारत भालमें॥
वधते नहीं तो धर्म अंकुर आप यदि नहिं जन्मते।
मिटता नहीं भयताप जगका हे विजिष्णु सन्मते॥
थे प्रलय सम दृश्य भीषण जन्म जब तुमने लिया।
दुःख दावानल बुझी प्रमुदित हुआ सबका हिया॥
विगत दूषण हे प्रभो ! हितपथ दिखाया आपने।
हे ब्रह्म पथकी थी विरागी ! भय भगाया आपने॥
हिंसक जनोंको सीख हितकर दे सुधारा आपने।
समता दयाका पाठ भी जगको पढ़ाया आपने॥
यज्ञकुण्डोंके निकट थे वध रहे हा पशु जहां।
करते प्रतीक्षा थे यही अवतार हो तेरा यहां॥
हे महात्मे ! तुम आगये रक्षार्थ कीनी गर्जना।
तेरी दयामय देशना भी होगई खल तर्जना॥
तेरे अलौकिक धामसे पापी अहो नम्रित हुए।
गौतम सरीखे विज्ञ भी तव ज्ञानसे चकित हुए॥
वीर हिमगिरिसे वही मन्दाकिनी सुखदायनी।
द्वेष, ईर्षा, क्रोध, माया, मान, लालच हारनी॥
एकांतवाद विभाव दुर्नय सुभट मार विनाशनी।
तबसे बनी वसुधा विमल यह भव्य और सनाथिनी॥
तेरी सुखदवाणी मनोहर हे विभो ! ऐसी हुई।
जग ताप शाप कलापको क्षणमात्रमें हरती हुई॥
तेरी स्वपर हितसाधना औ आत्मत्याग अपूर्व था।
अवलम्ब दुःखियोंके विभो! तेरा हुआ सुखपूर्ण था॥
तेरी सुखद वह देशना हम भूलकर दुःखित हुए।
हितपथ विमुख हो स्वार्थवश हा! पापपंक सने हुए॥
सन्तान अब तेरी विभो ! निजधर्म कर्म विहीन है।
कषाय विषयाधीन है अरु आत्मत्याग विहीन है॥
है प्रार्थना मेरी विभो ! सद्बुद्धिका सुविकाश हो।
धर्म घातक रूढ़ियोंका हे प्रभो ! अब नाश हो॥
सद्धर्मका जग हो पुजारी धर्म हित बलिदान हो।
'आनंद' हो जब लीन आतमरास भव अवसान हो॥

वीर भगवानसे !

महावीर स्वामी फिर एक बार आओ।
अहिंसाका उपदेश जगको सुनाओ॥
हुये हैं जो गुमराह अज्ञान बनकर।
उन्हें ज्ञानका रास्ता फिर दिखाओ॥
भुला करके जो धर्म कर्तव्य अपना।
पड़े सो रहे हैं उन्हें फिर उठाओ॥
हैं आपसमें जो एकके एक दुश्मन।
उन्हें प्रेमका पाठ फिरसे पढ़ाओ॥
समर्थक जो मिथ्यात्वके बन गये हैं।
उन्हें वीर सन्देश फिरसे सुनाओ॥
× × ×
किया उसने उपकार सारे जहांका।
महावीर भगवानको सिर झुकाओ॥

–कल्याणकुमार जैन 'शशि'।

सम्पादकीय वक्तव्य।

जगदुद्धारक, पतितपावन, सर्व हितकर्ता भगवान महावीर स्वामीका निर्वाण

महावीर निर्वाण। आजसे २४६० वर्ष पूर्व पावापुरसे हुआ था। निर्वाणके समय वीर भगवानकी आयु मात्र ७२ वर्षकी ही थी। फिर भी उनने इस छोटीसी आयुमें जगतका जो उपकार किया था वह अवर्णनीय है। उनके ७२ वर्षमें भी ३० वर्ष तो गृह जीवनमें ही वीत गये थे और १२ वर्ष तपस्यामें समाप्त हुये थे। बाकी ३० वर्षमें ही महावीर भगवानने भारतवर्षकी कायापलट कर दी थी। उनका गृहजीवन भी परोपकारमें व्यतीत हुआ था। यदि सच पूछा जाय तो उनका गृहजीवन गृहजीवन ही नहीं था। कारण कि उनने विवाह भी किया नहीं था, संसारकी मोहमायामें वे फँसे नहीं थे। और इस जंजालसे बचकर वे सदा परहितकी चिंता निमग्न रहा करते थे। बाल्य-कालमें उनने जो पराक्रम किये थे वे जगतको आश्चर्यचकित करनेवाले हैं।

इस प्रकार ३० वर्ष वीत जानेपर वीर भगवानको एकदम वैराग्य उत्पन्न हुआ और वे विचारने लगे कि–"मैं मति, श्रुत, अवधि इन तीन ज्ञानरूपी नेत्रोंवाला होकर भी मूढ पुरुषोंकी भांति अपने संयमका नाश कर रहा हूं। तथा आत्मज्ञ होकर भी इतना काल गृहस्थावस्थामें व्यर्थ ही विता दिया है। यह खेद तथा आश्चर्यकी बात है।" इस प्रकार विचार करके राज्यलक्ष्मी और घरको कारागार समझकर सर्व त्याग कर दिया। तथा वनको जानेके लिये उद्यत होगये।

यदि महावीरस्वामी चाहते तो उन्हें राज्यासन मिल जाता, वे जनतापर हुकूमत कर सकते थे, देवदुर्लभ भौतिक भोग प्राप्त कर सकते थे। और अपने जीवनमें तरह तरहके आनन्द लूट सके थे। मगर उन्हें यह सब जंजाल मालूम होती थी, बनावट दिखाई देती थी और वे सत्यको पहिचानते थे। इसीलिये इन तमाम भौतिक विभूतियोंको लात मारकर सच्चा सुख प्राप्त करनेके लिये घोर तपस्या करने लगे थे।

हमारे युवकोंको भगवान महावीरस्वामीके इस युवक जीवनसे कुछ सीखना चाहिये। जो युवक अपने भविष्यका विचार किये विना ही अनेक प्रकारके जंजालोंमें फँस जाते हैं, अपने जीवनको विषयी, पापमय एवं घातक बना लेते हैं उन्हें सोचना चाहिये कि हमारा क्या कर्तव्य है। यदि कोई युवक अपने आत्मबलपर विश्वास रखता हो, अपना जीवन पवित्रता पूर्वक विता सकता हो और धर्म, समाज तथा देशसेवाकी उत्कट भावना रखता हो तो यही अच्छा है कि वह महावीरस्वामीकी भांति बाल ब्रह्मचारी रहकर आत्मविकाश करे। याद रहे कि यह मार्ग बहुत ही विकट, कठिन, दुःसाध्य और कंटकाकीर्ण है। जो इसे प्राप्त कर सकते हैं वे धन्य हैं।

वीर भगवानने १२ वर्ष तक घोर तपश्चरण किया और अपने साध्यकी सिद्धि प्राप्त की तथा केवलज्ञानी होगये। सम्पूर्ण ज्ञान प्राप्त करके जगतके उद्धारका प्रयत्न किया। संपूर्ण ज्ञानी होकर वे जो कुछ भी करते थे वह जनताको मान्य होता था। उनने अपने उपदेशसे फैली हुई घोर हिंसाको नष्ट किया, हत्यारे पापी और अधर्मी याज्ञिकोंको शुद्ध करके धर्मके मार्गपर लगाया तथा सर्वत्र अहिंसाका साम्राज्य स्थापित कर दिया।

वीर भगवानने अपने उपदेश द्वारा सबसे महत्वका कार्य यह किया था कि मनुष्योंमें परस्पर प्रेम और समभावका संचार होगया था। वर्ण-

व्यवस्थाकी कट्टरता, जन्मगत ऊंच नीचता और साम्प्रदायिकताका विनाश भगवानके उपदेशसे ही हुआ था। यही मानवसमाजमें प्रेम, ऐक्य और सहानुभूति वर्धक होगया था। यही कारण था कि वीर भगवानके समवशरणमें ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र सभी एकत्रित होकर एक साथ बैठते थे और धर्मोपदेश सुनते थे।

बड़े ही खेदका विषय है कि वीर भगवानके उस उदार धर्मको आज हम फिर भूल गये हैं। अन्य धर्मों तथा अन्य धर्मधारियोंको सुधार कर सत्य मार्गपर लाना तो दूर रहा मगर हम आज अपने ही साधर्मी बंधुओंसे सद्भाव नहीं रख सकते हैं। साम्प्रदायिकताका जहर इतना गहरा होता जाता है कि हम सत्यके निकट तक न तो स्वयं पहुंच पाते हैं और न दूसरोंको ही वहां तक लासकते हैं। अब हमें इसे छोड़कर वीर भगवानके उदार धर्मपर चलना चाहिये।

भगवान महावीरस्वामीने ३० वर्ष तक समस्त भारतमें विहार करके भारतवर्षकी काया पलट कर दी थी, लाखों और करोड़ों पापियोंको जैन धर्मानुयायी बनाकर समस्त भारतको अहिंसामय बना दिया था और आजसे २४६० वर्ष पूर्व ७२ वर्षकी आयुमें निर्वाण पद प्राप्त किया था।

* * *

दीपावली पर्व। भगवान महावीरके निर्वाण प्राप्त करनेपर देवोंने आकर रत्नत्रय दीपोंसे वीर भगवानकी पूजा की थी और अपनेको कृतकृत्य माना था। उसी समयसे दीपावली पर्वकी उत्पत्ति हुई थी। उसी समय नगरवासियोंने भी दीपावलीका उत्सव बड़े ही आनंदके साथ मनाया था। ईसासे पूर्व संवत ५२७ में भारतवासियों द्वारा मनाया गया यह दीपावली पर्व आज तक कायम है। किन्तु उसकी असलियत विकृत होगई है। दीपावलीके संबन्धमें हरिवंशपुराणमें इसप्रकार लिखा है कि:---

ज्वलत्प्रदीपालिकया प्रवृद्धया, सुरासुरैर्दीपितया प्रदीप्तया। तदास्म पावानगरी समंततः, प्रदीपिताकाशतला प्रकाशते ॥ १९--३३ ॥ ततश्च लोकः प्रतिवर्षमादरात्, प्रसिद्धदीपालिकयात्र भारते। समुद्यतः पूजयितुं जिनेश्वरं, जिनेन्द्रनिर्वाणविभूतिभक्तिभाक् ॥ २१-६६ ॥

अर्थात्-उस समय भगवान महावीरके निर्वाण कल्याणकके उत्सवके समय सुर असुरोंने महा देदीप्यमान दीपक जहां तहां जलाये, जिससे पावानगरी अत्यन्त सुहावनी लगने लगी थी, तथा दीपकोंके प्रकाशसे समस्त आकाश जगमगा उठा था। भगवानके निर्वाण दिनसे आज तक लोग जिनेन्द्र महावीरकी भक्तिसे प्रेरित होकर प्रतिवर्ष भरतक्षेत्रमें दीपावलीके नामसे दीपोंकी पंक्तिसे उनकी पूजा करते हैं।

इस प्रकार दीपावली पर्वकी उत्पत्ति पवित्र उद्देश्यसे पवित्र आदेशसे और पवित्र कार्यके लिये हुई थी। मगर आज हम अपने कर्तव्यको भूल बैठे हैं, ध्येयको खो बैठे हैं और मात्र रूढ़िका पालन कर रहे हैं। इस परम पवित्र निर्वाण दिवसमें जुआका खेलना, मादक वस्तुओंका सेवन और दुर्व्यसनोंका प्रचार किस धर्मात्माका हृदय दुःखी नहीं करेगा? युवकोंका कर्तव्य है, समाजका धर्म है और धर्मात्माओंका फर्ज है कि वह दीपावलीका रहस्य जनताको समझावें और जुआ आदि पापाचारोंको मिटानेका पूरा प्रयत्न करें।

सुशिक्षित और समझदार समाजमें भी जब हम दीपावलीके नामपर मिथ्यात्व पूजा देखते हैं तब अत्यन्त दुःख होता है। इस दिन कोई बही खातोंकी पूजा करता है तो कोई कलम दवातको पूजता है, कोई तराजू बांटोंको पूजता

है तो कोई देहली दरवाजेकी पूजा करता है। यह सब मिथ्यात्व नहीं तो क्या है? जैन धर्मानुसार तो मात्र वीतरागी जिनेन्द्र भगवान, जैनमुनि और जैन शास्त्रोंके सिवाय किसीकी भी पूजा नहीं होसकती है, तब फिर यह मिथ्या पूजन क्यों की जाती है? अन्य धर्मधारियोंके संस्कार जैनियोंमें बुरी तरह प्रविष्ट होगये हैं। इन्हें शीघ्र ही दूर करना चाहिये। दीपावलीके दिन तो मात्र महावीरस्वामी आदि तीर्थङ्करोंकी और निर्वाणक्षेत्रोंकी पूजा करना चाहिये। तथा दीपकोंसे अपने स्थानको तथा मंदिरको सुसज्जित करना चाहिये। आशा है कि जैन समाज इस ओर ध्यान देगी।

* * *

वीर निर्वाण सम्वत। भारतवर्षमें तथा वर्तमान जगतमें जितने भी संवत् प्रचलित हैं उनमें वीर निर्वाण सम्वत सबसे पुराना है। विक्रम संवत, ईस्वी संवत, हिजरी संवत, शाके सम्वत, पारसी संवत, मुस्लिम संवत, दयानंद संवत तथा और नये तथा पुराने जितने भी संवत हैं, वे २४६१ वर्षसे अधिक पुराने नहीं हैं। एक वीर निर्वाण संवत ही है जिसे प्रचलित हुए आज २४६० वर्ष व्यतीत होगये हैं और **दीपावलीसे २४६१ वीर निर्वाण सम्वत चालू होगा।** जैनियोंको अपने इस संवतके महत्वको समझना चाहिये। प्रत्येक जैनका कर्तव्य है कि वह अपने वहीखातोंमें, चिट्ठी पत्रीमें तथा तमाम व्यवहारमें वीर संवत लिखना नहीं भूलें। हम अपने कार्यमें अन्य संवतोंसे तो काम लें और वीर संवतको भूल जावें यह कितने लज्जाकी बात है! जहांतक हो हमें वीर संवत ही लिखना चाहिये और जहांपर मात्र वीर संवतसे कार्य न चले वहां अन्य संवतके साथ वीर संवत भी अवश्य लिखना चाहिये, जिससे वीर संवतका प्रचार सर्व साधारणमें होजाय।

सिद्धचक्र विधान। पर्यूषणपर्व गया और दीपावली पर्व आगया व अब शीघ्रही कार्तिक सुदी ८से नंदीश्वर व्रत अष्टाह्निका पर्व आनेवाला है। अष्टाह्निका पर्वका महात्म्य तो जगजाहिर है। इस नंदीश्वर व्रतके करनेसे मैनासुन्दरीका संकट दूर होकर उसके कोढ़ी पति श्रीपाल महाराजका भयंकर कुष्ट रोग बिलकुल अच्छा होगया था। ऐसे नंदीश्वर व्रतको बहुत भाई व बहिन करते हैं तथा इन ८ दिनोंमें ही सिद्धचक्र विधान किया जाता है, जो आजतक नहीं छपा था। इसलिये इसकी पूजन करनेमें बड़ी दिक्कत होती थी। इसलिये दि० जैन पुस्तकालय-सूरतने अभी ही सिद्धचक्र विधान भाषा कवि संतलालजी नकुडकृत शास्त्राकार छपाया है जिसको हरएक मंदिरके लिये मंगा लेना चाहिये। तथा गुजरात आदि प्रान्तोंमें इस सिद्धचक्र विधानके करनेका रिवाज नहीं है उसको प्रचलित करना चाहिये। इस भाषा विधानके करनेसे इसके २०४० अर्घ व जयमालोंके वर्णनसे जैन धर्मके अनेक सिद्धान्तोंका मनन होजाता है। मूल्य २) अधिक नहीं है।

* * *

जैन तिथिदर्पण। "दि० जैन" २६ वर्षसे प्रतिवर्ष सचित्र जैन तिथिदर्पण निकालकर अपने ग्राहकोंको भेंट देता है। उसी प्रकार आगामी २८ वें वर्षका अर्थात् वीर सं० २४६१ का तिथिदर्पण भी सुप्रसिद्ध जैन ज्योतिषी पं० जियालालजी राजवैद्यकृत असली जैन पंचांगके आधारसे तैयार करके इस अंकके साथ भेंट भेजा गया है, वह हरएक पाठक सम्हाल लें व फ्रेम्‌पर लगाकर वर्षभर संग्रहीत रखें। इसबार इसमें स्वर्गीय कविवर पं० न्यामतसिंहजी हिसारका अप्रकाशित फोटो रखा गया है। इन कविकृत

मैनासुंदरी नाटक, कमलश्री नाटक, चिदानन्द शिवसुंदरी नाटक, कुंती नाटक आदि नाटक तथा अनेक भजनोंकी पुस्तकें जैन समाजमें प्रचलित हैं, उन्हें अपने यहां न हों तो मंगाकर लाभ लेना चाहिये। आपके नाटक व भजनोंका तो हिन्दुस्तानमें घर२ में प्रचार है।

* * *

ગુજરાત પ્રાંતિક સભા ક્યારે?

આપણી ગુજરાત દિ. જૈન પ્રાંતિક સભાની સ્થાપના ગત પોષ માસમાં સુરતમાં થયા પછી એણે ૯ માસમાં ગુજરાતના દિ. જૈનોમાં ઘણી જાગૃતિ ઉત્પન્ન કરી છે. એ દરમ્યાન હુમડ, મેવાડા, રાયકવાળ ને નૃસિંહપુરા ભાઇઓની પચો મળી ગઇ છે ને તેમા પ્રાંતિક સભાના પ્રસ્તાવોનું સમર્થન થયું છે. તેમજ કેટલાક ઠરાવો કાર્યરૂપે અમલમાં આવવા લાગ્યા છે. અંતર્જાતીય વિવાહનો પ્રશ્ન તો ગુજરાતમાં ઘેરઘેર ચર્ચાઇ રહ્યા છે ને એવા પરસ્પર જ્ઞાતિઓમાં રોટી વ્યવહાર ત્યાં બેટી વ્યવહાર ચાલુ કરી દેવાનો પ્રયાસ વધુ ને વધુ પ્રમાણમાં થઇ રહ્યા છે, છતાં પણ સભાએ હજુ વિશેષ પ્રગતિ કરવાની જરૂર છે. ગુજરાતમાં આજે ગણી ગાંઠીજ બોર્ડિંગ, પાઠશાળાઓ કે શ્રાવિકાશ્રમ છે તથા આખા ગુજરાતમાં એક પણ શાસ્ત્રી કે ન્યાયતીર્થ તો શું પણ પ્રવેશિકા કે વિશારદ પરીક્ષા પાસ એક પણ દિ૦ જૈન ભાઇ જણાતો નથી એટલે એ દિશામાં મોટો પ્રયાસ થવાની જરૂર છે એટલે કે ગામેગામ પાઠશાળાઓ ખોલવાની તેમજ એક બ્રહ્મચર્યાશ્રમ અને સંસ્કૃત વિદ્યાલયની ગુજરાતમાં જરૂર છે. વળી હુમડ ને નરસીંહપુરામાં અનેક ઝઘડાઓ છે ને જ્યાં ત્યાં પક્ષો પડેલા છે તે તે સાંધવાની ને સંપ થવાની જરૂર છે. ઔદ્યોગિક દીશામાં તથા મેટ્રીક થયા પછીના વીદ્યાર્થીઓની કફોડી સ્થિતિનો વિચાર કરવાનો છે, વગેરે કાર્યોની વિચારણા માટે પ્રાંતિક સભાની વાર્ષિક બેઠક થવાની જરૂર છે. સોજીત્રાની મેનેજીંગ કમીટીની મીટીંગમાં ઠરાવ્યા મુજબ હજી સુધી કશેથી આમંત્રણ મળ્યું નથી, એટલે હવે માહા સુદ ૧૩ના મેળા ઉપર સિદ્ધક્ષેત્ર **શ્રી પાવાગઢમાં** આપણી પ્રાંતિક સભાની બેઠક કરવાની છે તે માટે પ્રચાર કાર્ય થવાની હવે જરૂર છે, જે માટે આશા છે કે મહામંત્રી શેઠ છોટાલાલ ઘેલાભાઇ ગાંધી–અંકલેશ્વર ઘટતા પ્રયત્નો કરશેજ.

હવે પાવાગઢની બેઠક કેવી રીતે કરવી, કોને પ્રમુખ ચુંટવા, ત્યાં શું શું વ્યવસ્થા કરવી, શું શું ઠરાવો કરવા એ બાબત ગુજરાતના દિ૦ જૈન ભાઇઓએ મહામંત્રીને પત્રદ્વારા પોત પોતાના વિચારો જણાવવા જોઇએ. મુંબાઇ દિ૦ જૈન પ્રાંતિક સભાના આગલા પાવાગઢ, તારંગા ને પાલીતાણાના અધિવેશનો ગુજરાતના ભાઇયો હજુ પણ ભુલી નહીંજ ગયા હોય તો ૧૦–૧૫ વર્ષ પછી આવો સુયોગ્ય પ્રાપ્ત થવાનો છે તો તે પ્રસંગે પાવાગઢમાં આખા ગુજરાતના દિ૦ જૈનોનો મોટો સમુહ એકત્ર મળે ને ગુજરાતમાં ધર્મ જાગ્રતિ થઇ સમાજના સડાઓનો નાશ થાય તે માટે હમણાંથી યોગ્ય પ્રચાર થવાની જરૂર છે. આશા છે કે પાવાગઢ ક્ષેત્રની મેનેજીંગ કમેટી પણ પ્રાંતીક સભાના એ કાર્યમાં પુરો સાથ આપશેજ.

* * *

નૃસિંહપુરામાં ઝેર સમતું નથી.

ગયા અંકમાં પ્રકટ કર્યા મુજબ નરસિંહપરા ને રાયકવાળ પંચના ભાઇયોએ કલોલ મુકામે મળી પરસ્પર કન્યા આપ લે કરવાનો ઠરાવ કરી દીધો છે ને ધારા ધોરણ નક્કી કરવાને ફરીથી તારંગામાં આશો સુદી ૩ ઉપર મળવાનાજ હતા, તે માટે રાયકવાળ અગ્રેસર ભાઇયો નીમેલે સમયે તારંગે પહોંચી ગયા હતા પણ અત્યંત દિલગીરી સાથે જણાવવું પડે છે કે ત્યાં નૃસિંહપરા ભાઇયો બીલકુલ ગયાજ નહિ ને કલોલમાં ને ઝહેરમાં માંહોમાંહે કાના ફુંસી થવા પછી

તારંગે જવાનુંજ મુલતવી રખાયું એ શું ઓછા દુઃખની વાત છે? એમ હતું, તો પછી શા માટે રાંયકવાળ ભાઇઓને ખબર ન આપી? આ કંઇ ઠીક ન કહેવાયું. એ પછી ફરી ખાનગી વિચારણાઓ ઝહેર ને કલોલમાં થઇ ને અંતે કાર્તક સુદી ૮ ને દિને ડેમઇ (ઝેર) મુકામે નરસિંહપરા અને રાંયકવાળોનું પંચ ભેગું કરવાનો ઠરાવ થઇ ગયો ને તેના આમંત્રણ પણ નીકળી ચુકયાં છે એમ ખબર મળી છે. એ સમયે નરસિંહપુરાના સાતે ગામનું પંચ મેળવવામાં આવનાર છે, છતાં સુરત વિભાગમાં એ બાબતનું આમંત્રણ હજુ સુધી આવ્યુંજ નથી, એમ પાકે પાયે ખબર મળે છે. (આમોદ વિભાગમાં તો આમંત્રણ ગયું છે) એથી ભારે અજાયબી થાય છે, કે ઝેર કલોલના નૃસિંહપુરા ભાઇઓ આ કયા પ્રકારની નીતિ લઇ રહ્યા છે? એકઠા મળવાના બ્હાના નીચે શું જુદાજ પ્રકારના દાવપેચ શું નથી રમાતા? ખરી રીતે તો ૭ ગામના પંચોને દરેકને આમંત્રણ થઇ સર્વેને બોલાવવાજ જોઇએ ને પ્રથમ સાતે ગામમાં જે જે ઝઘડાને વેરઝેર પડેલા છે તે ઉદાર ભાવે પતાવી દેવા જોઇએ ને તે પછીજ રાંયકવાળ ભાઇઓને સાથે મેળવી લેવા જોઇએ. જો માંહોમાંહેના ઝઘડા નહી પતશે તો અમુકને મૂકી કે તેનો વ્યવહાર સમૂળગો બંધ કરી રાંયકવાળ સાથે મળવાનો કંઇ અર્થજ નથી, ને એથી કંઇ ખરો સુધારો થવાનો નથી નૃસિંહપરામાં નરસિંહપુરના અમુક ભાઇઓને લીધે બે પક્ષ પડેલા છે ને તેનાં ઝેરવેર ગામેગામ વેરાયલા છે. જોકે એક પક્ષ ઘણો નાનો છે છતાં પણ મમતી વધારે છે ને પકડેલી હઠ છોડવા જરા પણ તૈયાર નથી એ પક્ષ તો પોતાને પંચ માને છે એ પણ અજબ જેવું છે. નરસિંહપુરમાંજ ઝહેરના મોટા પક્ષના ૩–૪ ધર છે તો પછી નરસિંગપુરના ૫–૬ ઘરનું નરસિંગપુરનું પંચ કેવી રીતે કહી શકાય? જો એ લોકો પક્ષ કબુલ કરે તો જુદી વાત છે. ગમે તેમ હો પણ મોટા પક્ષે આ નાના પક્ષની દરકાર ન કરી તેને તદન જુદુજ પાડી નાંખવાની જે વેતરણ ચાલી રહેલી છે તે તો ઇચ્છવા યોગ્ય નથી. સુરત વિભાગના નરસિંહપુરા ભાઇઓ જે આજ સુધી તટસ્થ મનાય છે, તેને આ પંચનું આમંત્રણ સરખું ન મોકલાય ને તેઓ ન જાય ને પછી ત્યાં રાંયકવાળ સાથે જોડાણું થવા પછી ઠરાવો પ્રમાણે અમુકનો બધો વ્યવહાર બંધ કરાય તો તે સ્થિતિમાં સુરત વિભાગના નૃસિંહપરા ને રાયકવાળ વચ્ચે સંબંધ જોડાશે કે કેમ અને જોડાય ને તેઓ નાના પક્ષને પણ માન્ય રાખશે તો પછી નરસિંગપુરામાં તો પક્ષો છેજ ને વળી રાંયકવાળોમાં પણ પક્ષ પડશે તે વાત પણ વિચારવા જેવી છે માટે જો એકયતા કરવી હોય તો પ્રથમ નરસિંહપરાના માંહો માંહેના ઝઘડાએ સરળતા ને ઉદાર ભાવથી પતાવી દઇ તે પછીજ રાંયકવાળ ભાઇઓ સાથે મળી જવું જોઇયે. હજી સમય છે, માટે દેમઇનું આમંત્રણ કરનાર કાર્ય કર્તાઓ ઉદાર ભાવ બતાવે અને ગુજરાતના નરસિંહપરા અને રાંયકવાળની વસ્તીવાળા ગામેગામ આમંત્રણ મોકલી સર્વેને એકત્ર બોલાવીનેજ એકતાની વિચારણ કરે તોજ તે યોગ્ય કહેવાશે. પણ મોટા પક્ષના એક ભાઇ હમણાં અમને મુંબાઇમાં મળ્યા હતા, તેમના જણાવવા મુજબ મોટા પક્ષ નાના પક્ષને જુદોજ પાડી નાંખવા માંગે છે ને તે માટેનાજ આ પ્રયાસ છે. જો તેમજ હોયતો તે શરમાવનારૂં છે. મોટા પક્ષે તો મોટું દીલ બતાવવું જોઇએ ને સગાં સગાંનો વર્ષોનો વિખવાદ દૂર કરવો જોઇએ. રાંયકવાળ ભાઇયોને અમે સુચના કરીશું કે આપ દેમઇ જરૂર જશો પણ ત્યાં જઇ આપ પ્રથમ તટસ્થ રીતે એજ પ્રયાસ કરશો કે પ્રથમ નરસિંહપુરાનો માંહો માંહેનો ઝઘડો પતાવવો તે પછીજ પરસ્પર મળવાનો ઠરાવો કરવા. જો નરસિંહપુરનો નાનો પક્ષ ન આવે તો તેને ખાસ માણુસ મોકલાવી બોલાવીને પણ પડેલા ઝઘડાઓ પતાવી દેવા પ્રયત્ન કરશો તો આપ રાંયકવાળ ભાઇ મોટું માન ખાટી શકશો.

जैन समाचारावलि।

सम्मेदशिखर मेवाड़ स्पेशल ट्रेन—श्री शिखरजी तरफकी तथा गुजरातकी यात्रायें करनेके लिये मगसिर सुदी १ ता० ७ दिस०को चितोड जंकसनसे एक मेवाड़ स्पेशल ट्रेन निकलनेवाली है, जिसका ६० दिनका प्रोग्राम है। यह स्पेशल चितोड़से अजमेर, जयपुर, आगरा, मथुरा, सोनागिरि, झांसी, कानपुर, लखनऊ, अयोध्या, बनारस, सिंहपुरी, चन्द्रपुरी, आरा, पटना, गया, ईसरी-शिखरजी, कलकत्ता, भागलपुर, चंपापुरी, मंदारगिर, वखतारपुर, बिहार, पावापुरी, कानपुर, गुनावा, राजगिरि, इलाहाबाद, मक्सीजी, उज्जैन, रतलाम, पावागढ़, अहमदाबाद, भावनगर, पालीताना, जूनागढ़, गिरनार, तारंगा, आबू, व अजमेर जायगी। इसमें हरएक प्रकारका सुभीता रहेगा। कुल किराया ६४) है तथा भोजन खर्च १४) मासिक है। कमबद लेना देना है। अतः सुलभतया सभी यात्रा करनेके लिये शीघ्रही १०) पेशगी भेजकर इस ट्रेनमें जानेके लिये अपना नाम इस पतेपर रिझर्व कराईये। संतलाल जैन,

हिन्दू सोडा फेक्टरी—प्रतापगढ़ (राजपूताना)।

इन्दौर स्टेटमें मुनि विहारकी रुकावट—का कानून पास हुआ है, उससे सारे दि०जैनसमाजमें तीव्र विरोध खड़ा हुआ है व स्थान २ से यह कानून उठा देनेके लिये इन्दौर नरेशको तार भेजे जारहे हैं और इन्दौरमें इस कार्यकेलिये खास कमेटी बनी है, जिसने प्रधान व महाराजाके पास डेप्युटेशनके रूपमें जाकर विनती की थी। उसका शीघ्र ही संतोषजनक खुलासा मिलनेकी संभावना है।

हस्तिनापुरका मेला—कार्तिक सुदी ८से १५ तक होगा उस समय वहां भारत० दि० जैन परिषदका जल्सा भी होगा।

पावापुरी—में कार्तिक वदी ०)) को महावीर निर्वाणका वार्षिक मेला व रथोत्सव होगा।

प्रतापगढ नरेशने—अपने राज्यमें दशहरापर होनेवाली बलिहिंसा हमेशहके लिये कानूनन बंद कर दी है। धन्यवाद!

"वीर" पत्र—मासिकसे अब साप्ताहिक होनेवाला है। मल्हीपुर (सहारनपुर) से प्रगट होता है।

जैन युवक मंडल—के प्रयत्नसे नारायणगंज व आसपासमें दशहराकी पशुबलि बंद होगई है।

प्रेम संगठन गोहाना—का उत्सव १५-१६ अक्टूबरको हुआ था, उसमें अनेक विद्वान पधारे थे तब मरणभोज, अनमेल विवाह, कन्या-वरविक्रय आदि निषेध तथा अंतर्जातीय विवाह आदिपर १० प्रस्ताव पास हुए थे।

दि० जैन मेम्बर—सूरतकी म्यूनिसिपालिटीके मेम्बरोंका चुनाव अभी हुआ है। उसमें छगनलाल उत्तमचन्द सरैया और सेठ गमनलाल सूतरवाले तीव्र प्रतिस्पर्धा होनेपर भी मेंबर चुनेगये हैं।

अल्मोडाके राजा सा०—से ता० २९ अक्टूबरको जीवदया सभा आगराके मंत्री पं० बाबूरामजी बजाजने मुलाकात ली थी व २॥ घंटा अहिंसा पर विवेचन किया। राजाजीने कहा कि हम बलिदानके विरुद्ध हैं। आप पूर्ण प्रयत्न करके हिंसा बंद कराईये।

७१०१)का एक महिलाका दान—हाटपीपल्याके शेठ गेंदालालजीकी स्व० ध०प० छोगाबाई अपने स्वर्गवास समय ७१०१) दान कर गई हैं।

अमरावती—में बरार दि० जैन परिषद बैरिष्टर जमनाप्रसादजी जजके सभापतित्वमें हुई थी। ब्र० सीतलप्रसादजीके चातुर्माससे यहां अच्छी धर्म जागृति हुई है व पर्यूषण पर्वमें ४००) का चन्दा हुआ था।

दि० जैन वैद्यराजका वियोग–मुरादाबादके सुप्रसिद्ध दि० जैन वैद्यराज पं० शंकरलालजीका ता० १७ अक्टूबरको स्वर्गवास होगया। आप बड़े भारी लेखक व चिकित्सक थे। आपका 'वैद्य' पत्र १९ वर्षसे उत्तमतया चालू है। वैद्यक विषयक अनेक ग्रन्थ भी आपने प्रकट किये हैं। आपका औषधालय यू० पी०में प्रसिद्ध है।

चौरासी जम्बूस्वामी–का मेला कार्तिक वदी १३ से १९ तक होरहा है।

सीकर नरेश–ने भी दशहरापर होनेवाली पशु बलि जैन वीर सेवा मण्डलके प्रयत्नसे सदाके लिये बन्द करदी है।

जाबुआ–स्टेटमें इस प्रकार पशु बलि बन्द होगई है। प्रचारका फल !

महावीर ब्र०आश्रम कारंजा–में ता० ९-१० नवम्बरको वर्तमान व भूतपूर्व छात्रोंका वार्षिक सम्मेलन होगा।

बम्बई–में ४८ वीं राष्ट्रीय महासभा बा०राजेन्द्रप्रसाद पटनाके सभापतित्वमें अत्यन्त सफलता पूर्वक व महान् स्वदेशी प्रदर्शनी पूर्वक होगई। उस समय भारत० जीवदया परिषद भी साधु वसवानीजीके सभापतित्वमें हुई थी। जिसमें श्री० बसवानीजीका जीवदयाकी उपयोगितापर उत्तम व्याख्यान हुआ था।

कुचामनमें–मुनि चन्द्रसागरजीके उपदेशसे ब्र० गोरुलालजीने क्षुल्लककी दीक्षा भादों सुदी १३ को ली है। नाम सिद्धिसागर रक्खा गया है।

भिण्डर–में ब्र० चांदमलजीके चातुर्माससे असहाय सहायक फण्ड खोला गया है। जिसमें ९००) भरे गये हैं। **नागदा**–में बालकके मरणका भी नुक्ता होता था वह तथा विधवाका एक वर्ष तकका रोनेका शोक ब्रह्मचारीजीने बंद कराया।

सब जैनोंके प्रीति-भोज–अमरावतीमें ता० ८ अक्टूबरको प्रो० हीरालालजी एम० ए०ने दि०, श्वे० व स्थानकवासी सभी जैनोंको कची पक्की रसोईका प्रीति-भोज दिया था।

बा० ज्योतिप्रसादजी जैन–देवचन्दने अपने स्व०भ्रातासे स्मारकमें जयप्रकाश पारितोषिक फंड स्थापित किया है।

"जैन प्रभात"–पाक्षिकपत्र सागरसे प्रगट होनेवाला है।

करांची–में स्था० जैन मुनि चौथमलजी द्वारा बड़े जोरोंसे अहिंसा धर्मका प्रचार होरहा है।

जैन गुरुकुल ब्यावर–का वार्षिकोत्सव दशहरापर होगया उसमें करीब (१५०००) सहायता मिली है। दि० जैन गुरुकुलोंके ऐसे उत्सव कब होंगे ?

उत्तम लेखक–फत्तेलाल गोबीलालजी धारने ३॥×१॥ इंच लंबे चौडे स्थानमें भक्तामर व ३॥×२ इंच लम्बे चौडे स्थानमें तत्वार्थके ६ अध्याय लिखे हैं।

स० रु० श्राविकाश्रम बम्बई–को स्थापित हुए २५ वर्ष पूरे हुए हैं। अतः २५ वर्षका गौरव सिल्वर जुबिली महोत्सव मगसिर मासमें बम्बईमें करनेकी हलचल वर्तमान संचालिका श्रीमती ललिताबहन कररही है। उसके लिये २५ वर्षके भीतर इस आश्रमका लाभ लेनेवाली सभी श्राविकाएं अपना२ वर्तमान परिचय पतेसहित बम्बई शीघ्रही भेजें।

बड़ी धारासभा–का चुनाव १४ नवम्बरको होनेवाला है उसके लिये दिगम्बर जैनोंमेंसे श्रीमान् सेठ भागचन्दजी सोनी अजमेर व सेठ वालचन्द हीराचन्द सी० आई ई० सोलापुर खड़े हुये हैं।

કોંગ્રેસ સમાચાર—નામે અઠવાડીક પત્ર મુંબઈથી પ્રકટ થવા માંડ્યું છે.— વાર્ષિક ४) છે.

महावीरका निर्वाण दिवस।

(ले०-पं० आनंदकुमार मालिक न्यायतीर्थ-झालरापाटन ।)

सज्जनो ! आप लोगोंको विदित ही है कि इस भारत-वसुन्धरापर जब श्री महावीरस्वामी अवतीर्ण हुए थे उस समय समाजकी कैसी विकट एवं दयनीय परिस्थिति थी सो प्राय: समस्त जनसमुदायको विदित ही है।

संसारमें यों तो नित्य प्रति अनेक जीव उत्पन्न होते हैं, किस २ की मान्यता व पूज्यता की जाय। परन्तु मान्यता व पूज्यता उन्हीं आत्माओंकी हुआ करती है, जो जीवनको जीव मात्रकी रक्षा निमित्त अर्पण कर देते हैं। इसी तरह श्री वीर प्रभुने घोर अंधकारमय संसारमें जन्म लेकर, संसारी जीवोंके साथ जो किसी अंशमें उपकार किया है संसारी प्राणी उनके उपकारोंको कभी नहीं भूलते और न भूल जानेकी चेष्टा ही करते हैं। फलत: उन उपकारी आत्माओंकी आदर्श-जीवनकी साधन सामग्री स्मृतिरूपमें अपनी संतान दर संतानको लाभ उठानेको बनाते हैं।

आज समस्त भूमंडलवासी प्राणी जो दीपनिर्वाण मनानेको हर्षोन्मत्त होरहे हैं, इसका मुख्य कारण उन वीरप्रभुकी अंतिम तिथि है। तथा आजतक हम लोग उन महात्माके प्रभावक उपदेशोंसे अनुरंजित होकर अपना कल्याण करनेमें तत्पर हैं। उनके उदार उपदेशोंसे अनेक जीवोंका कल्याण हुवा व अब भी होरहा है! महावीरस्वामी आज हमारे मध्य संसारमें भले ही न हों परन्तु विचार कर देखा जाय तो उन पूज्य आत्माके दिव्य उपदेश व मूर्ति हमारी आत्मामें स्वत: विराजमान हैं। उनका गुणानुवाद करते हुए हम उस दिव्य आत्माका दर्शन अपनेर अन्तर्घटमें करते हैं।

हमलोग निमित्त कारणको अनावश्यक समझते हैं। यदि निष्पक्ष विचारकर देखा जाय तो हम सब उस निमित्तके ही पुजारी हैं जिसे लोग उपादान कारण कहते हैं। उसमें कोई शक्ति नहीं, जो भी कुछ है वह निमित्तमें ही है! मूर्तिपूजा और मूर्तिमानका स्तवनादिक सबमें निमित्त कारणका पूर्ण रहस्य भरा हुवा है। देखिये! एक वेश्यापर दृष्टि पड़ते ही विषयभाव उत्पन्न होते हैं। और वीतराग भगवानकी शांति मुद्रायुक्त प्रतिमाका दर्शन करनेसे वैराग्यभाव हृदयमें जग जाते हैं। बस ! इसी लिये हमको अपने निमित्तको सुधारनेकी आवश्यक्ता है। महावीर भगवानके आदर्श जीवनपर विचार करनेसे अपने भविष्यको सहजहीमें उच्च एवं गौरवपूर्ण बनानेकी अभिलाषा उत्पन्न होजाती है।

ये तो सर्वजन प्रसिद्ध है कि वीर प्रभुने इस धराधामको सिर्फ बहत्तर वर्ष तक ही सुशोभित किया था। हम लोग जो दीपावली पर्व मनाते हैं, वह उन्हींकी निर्वाण तिथिके ही उपलक्षका स्मृति दिवस है। इसका साक्षी जैन हरिवंशपुराण निम्न-प्रकार वर्णन करता है—

ततश्च लोक: प्रतिवर्षमादरात्।
प्रसिद्धदीपालिकयात्र भारते ॥
समुद्यत: पूजयितुं जिनेश्वरं।
जिनेन्द्रनिर्वाणविभूतिभक्तिभाक् ॥

इस श्लोकसे यह मालूम होता है कि महावीर निर्वाणके पूर्व दीपमालिका नामका कोई उत्सव नहीं मनाया जाता था! वीर भगवानका निर्वाण

होनेसे ही दीपावलीकी उत्पत्ति हुई, यह उपर्युक्त श्लोकसे जाना जाता है। महावीरस्वामी इतिहास-प्रसिद्ध महापुरुष हैं।

अब देखना यह है कि दीपावली मनाना सार्थक कैसे होसक्ता है? यों तो हजारों वर्षोंसे मनाते चले आरहे हैं, परन्तु हम सब उन महावीर प्रभुके अनुयायी होकर भी हमारा अधःपतन क्यों होता चला जारहा है, इसका प्रबल कारण यह है कि हम लोगोंमें प्रेम-वात्सल्यका सर्वथा अभाव हो गया है। जहां वीर भगवान पग२ पर वात्सल्यका उपदेश कर गये हैं उसके स्थानमें हम लोगोंके घट२ में कलह देवीने अपना स्थान पूर्ण रूपसे बना लिया है। तब यह कहावत अन्यथ नहीं होसक्ती कि एक मियानमें दो तलवारें नहीं रह सकतीं। तब एक आत्मामें परस्पर विरोधी शक्तियोंका संमिलन कैसे होसक्ता है।

इससे सिद्ध है कि पहलेकी अपेक्षा हम लोगोंमें कलह, ईर्षा, द्वेषने अपना पूर्ण रूपसे स्थान कर-लिया है। इसीसे जैन समाजकी दिन प्रति अधोगति होती जाती है। इन्हीं अवगुणोंके कारण इस पवित्र पर्वको लोगोंने अपने मनोविनोदका साधन समझ लिया है। इन दिनोंमें महा निंद्य व्यसन जुआको अपनाया है। जो व्यक्ति इस व्यसनमें भाग नहीं लेता उसको अंगुलियोंसे बताते हैं। अत्यंत खेदका विषय है कि जिस पवित्र दिनमें आपके परमपूज्य तीर्थंकर महावीर स्वामी मुक्तिकान्ताके भर्तार हो और पूज्य गौतम गणधरको केवलज्ञानकी उत्पत्ति हो, ऐसे अनुपम दिवसमें पूजन स्वाध्याय आदि धार्मिक कार्योंको तिलाञ्जलि देकर जूआ जैसे निंद्य कार्यको अंगीकार करें? बड़े ही दुःखका विषय है। जिस कार्यको आप साधारण दिनोंमें करना अपने कुल, जाति, धर्मके विरुद्ध समझते हो उसीको उत्तम दिवसमें अपनावें इससे और अधम कार्य क्या होगा!

आपका यह कर्तव्य होना चाहिए कि हमारे ग्राममें कोई अनाथ अपाहिज आजीविकासे मुहताज हों तो इस महान पर्वके उपलक्षमें सब समाजके लोग मिलकर उनकी देखरेख करके उचित प्रबन्ध करादें। क्योंकि यह दिन वर्षभरमें बड़ी ही कठिनतासे मिलता है! इस प्रकार निर्वाण दिवसको सार्थक बनावें क्योंकि वीरप्रभुकी छत्रछायामें आजके दिन जीवमात्र आल्हादित होरहे थे। उनके झंडेके नीचे पशु पक्षी, आर्य म्लेच्छ सबको एकरूपसे उपदेश मिला था। इसी तरह हमारा भी कर्तव्य है कि उनका उपदेश प्राणिमात्रके कानोंतक पहुंचा दें। तभी हमारा पर्व मनाना सार्थक होगा। वीर-प्रभुका उपदेश "सत्वेषु मैत्री" की भावनासे ओतप्रोत रहता था। इसी तरहकी भावना यदि आप लोगोंकी होगी तभी सच्ची दीपमालिका पर्व मनाना समझा जायगा।

पाठको! अधिक कहनेसे क्या लाभ होसक्ता है, इतना ही लिखना पर्याप्त होगा। आशा है आप लोग अपनी बुद्धिबलसे कार्य लेकर दीपावली दिनको सार्थक बनावेंगे।

वर्तमान युग और समाजके नवयुवक।

ले०-पं० कमलकुमार जैन शास्त्री-हरदा ।

प्रत्येक जाति और देशके इतिहासोंके अवलोकनसे पता चलता है, कि उनका अपने नवयुवकोंके साथ घनिष्ट संबंध रहा है, उनके नवयुवकोंने अपने देश और जातिके लिये बड़े २ त्याग तथा बलिदान किये हैं! दूसरोंका क्या कहना, अपने ही इतिहासके ऊपर दृष्टि डालनेसे हमको मालूम होता है कि जब २ जाति, समाज, देश एवं धर्मपर आफतें आई हैं तब २ हमारे पूर्वज नवयुवकोंने इनके रक्षणार्थ अपने जीवन तकको हंसतेर उत्सर्ग कर दिया है।

पंचमकालके शुरू होनेकी बात है कि सारा देश पापियोंके पापसे, अत्याचारियोंके मनमाने अत्याचारसे पीड़ित होरहा था, पृथ्वी अनाचारसे कांप उठी थी, धर्म और अधर्ममें भारी ऊहापोह होरहा था। अत्याचारियोंके कारण सारे जप तप धर्म कर्म बन्द थे। सारा वायुमण्डल दूषित होगया था। जिसके कारण सज्जन पुरुषोंको सांस लेना भी दुश्वार था। सब चुपचाप सारे दुःख और अपमानको सहा करते थे।

परन्तु देशकी यह दीनावस्था, धर्मका यह ह्रास अल्पवयस्क श्री महावीर स्वामीसे नहीं देखा गया। जाति, समाज और देशकी इस दुरावस्थाने उनकी हृदय तन्त्रीको आन्दोलित किया, वे क्षुब्ध हो उठे और देशोद्धारके कठोर व्रतकी उन्होंने प्रतिज्ञा की। अल्पायुमें ही उन्होंने जैनजातिके संगठनका कार्य शुरू कर उसमें पूर्ण सफलता प्राप्त की थी। उन्होंने पशुओं तकको सभ्यताका पाठ पढ़ा बड़े स्नेहसे अपनाया था। पापियोंको सुधारकर समाज देश और धर्मका उबारना ही उनके जीवनका प्रधान उद्देश्य था, जिसको उन्होंने अक्षरशः पालन कर दिखाया।

इसी तरहके सैकड़ो उदाहरण हमारे शास्त्रोंके अन्दर मौजूद हैं। प्रातः स्मरणीय अकलंकदेवने भी जिस प्रकार जाति, देश और धर्मकी रक्षा की थी वह हर किसीको मालूम है। उस समय भी दुष्टोंकी दुष्टतासे प्राचीन जैन संस्कृति डांवाडोल हो रही थी। किन्तु उस वीर युवकने दुष्टोंका दलन कर जैन जातिका मस्तक एकवार फिर ऊंचा किया था। तथा जाति, धर्म और देशकी रक्षा कर उस समयमें भी जैनधर्मकी निर्मल कीर्तिपताका फहराई थी। छोटेसे बालक निकलंकदेवने सत्य और धर्मकी रक्षाके लिये किस प्रकार हंसतेर अपने प्राणोंकी आहुति दी थी; वह सब किसीपर विदित है।

ऐसेर बहुतसे दृष्टान्त हैं, जिनसे पता चलता है कि आजसे २५०० वर्ष पूर्वमें जाति और धर्मके लिये तत्कालीन नवयुवकोंने बहुत कुछ किया है, पर आजके नवयुवक अपने धर्म और समाजके लिये क्या कर रहे हैं? आज भी तो वैसे ही बल्कि उनसे भी बढ़कर बुरे दिन आपहुंचे हैं। आज भी कितने ही नरपशुओंके अत्याचारोंसे सारा समाज दुःखित है। जाति और धर्मके ठेकेदारोंके विवेकशून्य कार्योंसे समाज रसातलको जारहा है। प्रति वर्ष महासभाके सम्मेलन होते हैं, चारों ओर अत्याचार नग्न मूर्ति धारण कर ताण्डव नृत्य करता दिखाई देरहा है!

पर, आज महावीर अकलंक और निःकलंककी तरह कितने नवयुवकोंका हृदय दयार्द्र हुआ है? धर्म और समाजकी वर्तमान अधोगतिपर कितने नवयुवकोंके प्राण स्पन्दन करने लगे हैं! कौन माईका लाल आज आजन्म जातिसेवाका व्रत लेनेका इच्छुक है!

कारण ढूंढनेपर तो यही मालूम होता है कि इस २०वीं सदीमें हमारी कुम्भकर्णी निद्रा भंग नहीं हुई है! अथवा हम जागे भी हैं, तो फिर सोनेका बहाना कर रहे हैं! किन्तु यह हमारे लिये और भी लज्जाकी बात है। जिस धर्म, देश, समाजको बचानेके लिये हमारे पूर्वजोंने अपने जीवन तकको तुच्छ समझा था आज हम उन्हींके उत्तराधिकारी अपने ही हाथों इनका सत्यानाश कर रहे हैं। जातिकी उन्नतिके मार्गपर अग्रसर होना तो दूर किनार रहा, आज हम उसे उल्टे अवनतिकी ओर लेजा रहे हैं। अपने पवित्र आचरण, विचार, भाषा तथा सभ्यताको त्याग-कर हम दूसरोंके आचार, विचार, भाषा तथा सभ्यताकी नकल कर रहे हैं। मजा तो यह है कि हम अपना भी रहे हैं तो दुर्गुणोंको—सद्गुणोंको नहीं! इसका नतीजा यह हुआ है कि सिर्फ इस व्यवसायी धनिक जातिसे करोड़ों रुपये हमारे विलासकी सामग्रीके मूल्य स्वरूप प्रतिवर्ष विदेशमें जारहे हैं। आज हमारे ही कारण कृषि वाणिज्य एवं गोवंशका धीरे२ ह्रास होरहा है। हाय! हाय!! महावीर और अकलंककी सन्तान तथा जातिके धन कहलानेवाले नवयुवकोंकी कैसी अधोगति है! भविष्य जातिके उत्तराधिकारियोंका कैसा भयानक पतन है!

इस अधःपतनका कारण भी स्पष्ट है। हमारे पूर्वजोंका आदर्श ऊँचा था। वे हमारी तरह शुष्क तथा नपुंसक अहिंसाका ढोंग करना नहीं जानते थे। उनको अकर्मण्यता नहीं भाती थी। वे कीर्ति और यश, मान और सन्मानके इच्छुक नहीं थे, जीवनके चार भागोंके अनुसार बंटे हुए कर्मोंको करने हीमें वे अपना गौरव जानते थे। सारांश यह है कि वे धर्मवीर थे, हमारी तरह झूठे वाक्य वीर नहीं।

किन्तु जमानेका ढंग कुछ ऐसा बिगड़ा कि हम दिनोंदिन गिरते ही चले गये और आज स्वार्थके अन्धकारमय गारसे सिर्फ बातोंकी बहादुरी बघारा करते हैं। हम कुछ ऐसे कायर आलसी और विलासी होगये हैं कि विना उद्योगके ही संसाररूपी समर क्षेत्रमें सफलता प्राप्त करना चाहते हैं। और जब हमें बारम्बार हार खानी पड़ती है तब हम उदासीन न होकर त्याग और वैराग्यका ढोंग करने लग जाते हैं! पर सफलता तो कायरों और हाथ-पर हाथ धरकर बैठनेवालोंकी नहीं, वह तो वीरों और कर्मिष्ठोंकी सम्पत्ति है।

हमारी दुर्दशाका अन्त इतनेमें ही नहीं है। आज हमारे ही कायर और कर्तव्य—विमुख होनेके कारण जाति और धर्मके ठेकेदार समाजके अन्दर मनमाना अत्याचार कर रहे हैं. अबोध बालिका-ओंका बूढ़ोंसे गठ-बन्धन कर नित्य प्रति बलिदान किया जारहा है! जिसके फल स्वरूप जातिमें अगणित विधवाएं वैधव्यके दारुण दुःखोंको भोग रही हैं। और हम? हम सब देखते-सुनते हुए भी चुप्पी साधे बैठे हैं और अपनी अधोगतिको प्रारब्धका दोष बताकर अपनी अन्तरात्माको शांत कर लेते हैं!

बन्धुओ! अब चुप्पी साधे रहनेसे काम नहीं चलेगा।

अच्छा काम कसाईका !

[लेखक—पं० हरिप्रसाद जैन, पानोंकीपाली, झांसी]

किस कामकी नदी वो, जिसमें नहीं रवानी।
जब जोश ही नहीं है, किस कामकी जवानी॥

* * *

हृदय खोलकर बोल रहा हूं भान नहीं कविताईका।
यशकी नहीं कामना कुछ भी भाव सदा लघुताईका॥
जिसके मनमें भाव नहीं है अपने प्यारे भाईका।
उससे तो बस मैं कहता हूं अच्छा काम कसाईका॥

* * *

अय समाज होगया तुझे क्या तुझको अपना ध्यान नहीं।
वीर प्रभुकी वीर पताकाका तुझको सन्मान नहीं॥
अरी स्वार्थिनी दशा याद कर आता तुझमें ज्ञान नहीं।
चीख मार दे एकवार अब अच्छी लगती तान नहीं॥
छीनो युवको परगड़ पक्षी बूंढ़ मुखियाशाईका।
करो न्याय अनुकूल उचित जो जिनवाणी अनुयायीका
आज निकाला हमने जिसको हाल देखिये भाईका॥
जिसको था कल शरण हमारा आज शरण ईसाईका॥
कलतक मेरे साथ हाय जो जिन मंदिरमें जाता था।
जैनाथ परमगुरुकी कर भक्ति भाव दरसाता था॥
आज उसीको क्रूर हृदय तू इन नयनोंसे देख रहा।
फिर भी तू अपने माथेको सबसे ऊँचा लेख रहा॥
डूबो चुल्लू भर पानीमें अगर ध्यान हो भाईका।
फेंको पट्टा दया कौल तुमको है राम दुहाईका॥
दाब अहिंसा बड़ी रकम फिर काम बना नहीं दाईका।
इससे तो बस मैं कहता हूं अच्छा काम कसाईका॥

* * *

जरा जरासी बातोंपर ही अपना बंधु नशा डालें।
उस गरीबको जरा बातपर इतना अधिक सता डालें॥
हाथ न धोयें निर्दयतासे उसका खून बहा डालें।
कौन दयाके नेत्र हाल लख नीर नहीं टपका डालें॥
उस बेचारेको आफत है हमको शौक मिठाईका।
ऐसे खानेपर लानत है ऐसा शौक मिठाईका॥
है अनुमान जिसे बीती हुई ऐसी आफत आईका।
जिसके पैर न फटी बिमाई जानैं पीर पराई का॥
लिखते दिल फट रहा किंतु दूजी हिलोर यह आती है।
लिख दे सच्चा हाल लेखनी क्यों विरथा सकुचाती है॥
एक तरफ बेचारी विधवा हाहाकार मचाती है।
उसी समय तेरईकी हलुआ पूड़ी मनमें भाती है॥
एक तरफ जब रोना होता अपनी प्यारी बाईका।
खाते हुये अन्न खूनी फटता न पेट अन्यायीका॥
टपकाई दो बूंद न जिसने सुनकर किस्सा जाईका।
उससे तो बस मैं कहता हूं अच्छा काम कसाईका॥

* * *

करें व्याह अनमेल बेटियां बहनें होवें अन्यायी।
फिर भी पत्थर हृदय न पिघले लखे हाल यह दुखदायी॥
रहें गरीब युवक अनव्याहे दया नहीं उनपर आई।
करते ऊँची नाक समझ मेरीमें लेकिन कटवाई॥
करें व्यर्थ व्यय खूब शौक हमको है खूब बड़ाईका।
दोदो सौ चुटकीमें जावें वेश्या नाच नचाईका॥
लगें हजार हजार रुपैया आरोनी चलवाईका।
पन्द्रहसौ लग जावें रेशमकी साड़ी जड़वाईका॥
लेकिन वह धन देकर ही नहिं वे गरीब व्याहे जावें।
निज समाजके प्यारे भाई हमसे नहिं चाहे जावें॥
नहीं विचारे धनी बना सन्मारगपर लाये जावें।
आज जिन्हें हम जुदे समझते वह नहिं अपनाये जावें॥

पर यह कब होगा हमको तो डर है नाम धराईका।
शोक शोक हा शोक मूल्य कुछ है न उक्त प्रभुताईका ॥
लेकिन फिर मन्तव्य नहीं है जिसा जाति भलाईका।
उससे तो बस मैं कहता हूं अच्छा काम कसाईका ॥

* * *

चाहे फिर वे बनें कुकर्मी इसकी कुछ परवाह नहीं।
धर्मभ्रष्ट कुलभ्रष्ट बनें हमको कुछ उनकी चाह नहीं।
लें ईशूकी शरण करेंगे लेकिन तनिक निगाह नहीं।
हा मेरे इस बेकस मुंहसे निकले ऐको आह नहीं ॥
करते हैं जब मोल पिता ही अपनी प्यारी जाईका।
अय जमीन तू क्यों नहिं फटती भार देख अन्यायीका ॥
नहीं टूटते ताराओ तुम दिल है क्या बेयायीका।
युवको आखें मूद रहे हो दूध लजाते माईका ॥
हाय तुम्हें यह दशा देखकर होता नहीं तनिक अफसोस
बतलाओ क्या तनका होगा भरा हुआ जो खूनी कोष ॥
आज अगर हम कन्या होते और उन्हें यह होता जोश।
तो दावेसे हम लिखते हैं होता हमें पूर्ण सन्तोष ॥
वे बेचारी करें हाय क्या तन है निर्धनताईका।
सीखा है सीधापन उनने सभी तरह गोमाईका ॥
लेकिन उनकी दशा देखकर हृदय न टूटे भाईका।
इससे तो बस मैं कहता हूं अच्छा काम कसाईका ॥

* * *

हाय प्रभू यह टूटी नैया पड़ी हमारी है मझधार।
कैसे होगी पार खिवैया बैठा गाता राग मल्हार ॥
युवको कूद पड़ो तुममें कुछ अगर खूनका हो संचार।
नहीं हमारे इस यौवनपर है लाखों लाखों धिक्कार ॥
तड़फूँ कबतक कहो देख मुह बूढ़े बना कसाईका।
टोलो वीरो समय यही है अपने नीर वहाईका ॥
झिल्की भरकर चीखमार दो समय नहीं निठुराईका।
नहीं पालकी बना जनाना कैसा शौक लुगाईका ॥
हे परमेश्वर! आज अगर जो यह बूढा ही मर जावे।
तो मेरी प्यारी पुत्रीपर छुरी नहीं चलने पावे ॥
हाय! हमारी बहिन हमारे जीते यों व्याही जावे।
उसकी दुखद अवस्थापर कुछ दया नहीं हमको आवे ॥
सास अगर चालीस वर्षकी बूढा साल सत्राईका।
फिर उससे सम्बंध भला हो आठ वरषकी बाईका ॥
वही न आंसू धार करैं फिरको सपूतनी माईका।
इससे तो बस मैं कहता हूं अच्छा काम कसाईका ॥

* * *

बतलाओ हे पंच तुम्हारा हृदय नहीं कुछ जलता है।
लड्डू वाल्लुशाई तुम्हारे कैसे गले उतरता है ॥
वह पगड़ीका पेंच नुकीला कैसे तुमपर डरता है।
वे दर्दी नयनोंसे कालो पानी नहीं निकलता है ॥
नहीं ठिकाना हाय तुम्हारी ऐसी निर्दयताईका।
रक्त मांससे भी बदतर वह खाना वाल्लुशाईका ॥
याद रखो देना होगा हिसाब सब पाई पाईका।
पता चलेगा नर्कोंमें ही खोटी खरी कमाईका ॥
बूढे बाबा कहो तुम्हें कुछ इनपर आती दया नहीं।
तुम कैसे मुह दिखलाते हो हाय तनिक भी हया नहीं॥
धर्म निहारो क्या कहता है अभी यहांसे गया नहीं।
कर्मोंकी मारें दुखनोंको जो तुम करते गया नहीं॥
समय तुम्हारा था मुनि होकर करना जीव भलाईका।
आज बनाते हो जो इसको इतनी बेशर्माईका ॥
होकर पिता जुल्म करते हो बना बेटियां दाईका।
इससे तो बस मैं कहता हूं अच्छा काम कसाईका ॥

* * *

तुम तो कल ही मर जाओगे याद न क्या तुमको आई।
याद दिला दी मैंने तुमको अब तज दो बेशर्माई ॥
करो गौर टे खड़े जैनियो अगली दशा याद आई।
अपनी ही मां बहनें बेटी मुसल्मानकी हों दायी ॥
अथवा हाय हाय चिल्लाना उनका उमर बितायीका।
एकबार दिल फट जाता है हिंसक क्रूर कसाईका ॥
याद रखो हमपर ही पाप है माकी कोख लजाईका।
भूल गये जो हम हां कर्तव्य अपनी कारगुजाईका ॥

कौन वज्रका हृदय तुम्हारा जिसमें होती पीर नहीं।
कैसे हैं ये नैन तुम्हारे जिनसे झरता नीर नहीं॥
दिखला देता मैं दिल अपना लेकिन सकता चीर नहीं।
ऐसा विकट समुद्र हाय जिसमें मिलनेका तीर नहीं॥
हाय हमारी विधवायें लख पतन होना राईका।
क्यों गुप्त भरपूर पाप यह फल है आज बड़ाईका॥
संतति हतन क्यों देखें चुपचाप उन्हींके भाईका।
इससे तो बस मैं कहता हूं अच्छा काम कमाईका॥

* * *

दशा याद जब आवे अपनी कैसे धीर बंधाऊं मैं।
बोलो इन प्यारी बहनोंको कौन शरण लेजाऊं मैं॥
भाई बोलो जगे नहीं क्यों कबतक खड़ा जगाऊं मैं।
नहीं सहायता दी तुमने तो किसे पुकार सुनाऊं मैं॥
उठो उठो झट करो सामना अपनी आफत आईका।
रहे बहुत चुपचाप वक्त आया है अब गरमाईका॥
देख चुके बुड्ढोंकी करतूतें सब हाल तवाईका।
आज नतीजा हुआ यही बैठक मुह ढांक सुलाईका॥
लिखूं कहांतक एक इशारा हमको तुम्हें बताना था।
किसका कितना बली न्यून है आज यही अजमाना था
हाल हमारी जैन जातिका करुणाजनक सुनाना था।
हृदय वेग जो उमड़ रहा था नीर हमें टपकाना था॥
एक सूत्रमें बंध जाओ अब समय नहीं निठुराईका।
कलह पिशाचनि दूर भगाओ झगड़ा भाई भाईका॥
जोश जवानीका दिखला 'हरि' अवसर यही सचाईका।
नहीं हुआ गर जोश हमें तो अच्छा काम कमाईका॥

वीरके चरणोंमें।

वीर प्रभुने वीर भूमिपर धर्म ध्वजा फहराया था।
जगके दुखित भुक्ति जीवोंको उत्तम मार्ग बताया था॥
बौद्धधर्मका जोर अहो इस भारत अन्दर छाया था।
जग जीवोंने क्षणिकवादको अपना धर्म मनाया था॥
विषय भोगकी लहर जहर इस भारत अंदर छाई थी।
ज्ञान सूर्यका अस्त हुआ जब पाप घटा जुड आई थी॥
ऐसे विकट समय सनमतिने धर्म मार्ग प्रगटाया था,
सम्यक्दर्शन ज्ञान चरण निज मोक्ष मार्ग बतलाया था॥
ऐसे सनमति वीर प्रभूके चरणों शीश नवाते हैं।
जगजीवोंका हित हो निश दिन यही भावना भाते हैं॥

सुंदरलाल जैन, अध्यापक।

जैन समाजके कर्णधारोंसे।

यह सिद्धान्त निर्विवाद अक्षरशः सिद्ध है कि प्रत्येक देश अथवा जातिका उत्थान और पतन उस देशके विद्यार्थी वर्ग वा नवयुवकोंके ऊपर ही निर्भर रहता है। वर्तमानमें जिन देशों वा जिन जातियोंने जो भी कुछ उन्नति प्राप्त की है, वह उस देशके नवयुवक अथवा विद्यार्थीगणके द्वारा प्राप्त हुई है।

वर्तमानमें विश्वकी सम्पूर्ण जातियां दिन प्रतिदिन उन्नति पथपर जारही हैं परन्तु यह जैनजाति उन्नति पथपर जाना तो दूर रहा परन्तु उस पथपर जानेका प्रयास तथा विचार भी करना आवश्यक नहीं समझती, यह तो अपने व्यापारसे ही जाति देश तथा सम्पूर्ण विश्वकी उन्नति समझती है।

देशके अनेक नवयुवक स्वतन्त्रतादेवीके चरणोंके प्रसाद बनकर आज विश्वके सन्मुख इस प्रकार आदर्श मार्ग बतला रहे हैं तथा जिनके सिद्धान्तोंके पत्रोंको उलटनेसे आज यह भलीभांति विदित होजाता है कि हम भी अपने जीवनमें अवनति पथ प्राप्त रूढ़िग्रस्त मृतप्राय जैन जातिको सन्मार्ग दिखला सकते हैं। आज हमारी आत्माओंमें वह प्रबल शक्ति विद्यमान है जो कि आज समस्त विश्वकी आत्माओंपर अपना प्रभाव डाल सकती है। क्या आज हम लोगोंकी आत्माएं इतनी बुजदिल होगई? क्या समस्त विश्वको एक तन्तुमें बांधकर उच्च कोटिकी पराकाष्ठाको प्राप्त करनेकी शिक्षाके स्थान अनेक विश्वविद्यालय स्थापित करनेकी शक्ति सिर्फ अन्य समाजके सुशिक्षित विद्वानोंमें ही है? क्या कोई वर्तमानमें जैन समाजमें ऐसा प्रौढ़ पराकाष्ठाको प्राप्त कर सकनेके योग्य जैन विश्वविद्यालय स्थापित नहीं होसकता है? क्या आज भी जैन जातिके नवयुवक अपनी निद्राको त्याग कर विश्वके सन्मुख आदर्श मार्ग दिखलानेमें असमर्थता प्रकाशित करेंगे?

"क्या आज जैन जातिके धनिकोंके पास अपव्ययको छोड़कर समुचित शिक्षाप्रदान करनेवाले एक भी विश्वविद्यालयको स्थापित करनेके लिये द्रव्यका सर्वथा ही अभाव है? मैं तो आज इस प्रकार कहनेको तैयार हूं कि वर्तमानमें प्रत्येक वर्ष इस जैन समाजका जितना धन बिम्ब प्रतिष्ठा, जलयात्रा, रथोत्सव अथवा तीर्थयात्रादिके उत्सवोंमें व्यय होता है उसका सहस्रवां भाग भी शिक्षा विभागमें व्यय नहीं होता। मैं इस बातको पुनः पुनः कहनेका दावा रखता हूं कि वर्तमानमें इन कार्योंकी कोई महती आवश्यक्ता नहीं है।

क्या आज बिम्ब प्रतिष्ठाकी इतनी आवश्यक्ता है कि उसके बिना पूजन करनेके लिये प्रतिबिंब मिलेगी ही नहीं। आज जहां पचास पचहत्तर वेदिकायें विद्यमान हैं उन बड़ेसे बड़े नगरोंमें भी पूजनकी तो बात ही क्या, यदि पुजारी न हो तो प्रक्षाल भी नहीं होपाता। तब जो प्रत्येक वर्ष नवीनसे नवीन मंदिर अपनी कीर्तिको चिरस्थाई करनेके लिये तैयार किये जारहे हैं, क्या इनकी भी भविष्यमें यह अवस्था नहीं होगी? अवश्य होगी। उस समय तुम्हारी ही संतान तुम्हारा स्मरण कर कर चिरकालतक कीर्ति गानके बदले तुम्हारे नामपर अश्रुधारा बिना बहाये नहीं रहेंगी। आज समाज जो इतनी पतित अवस्थाको प्राप्त होरही है उसका मुख्य कारण एक अविद्या है।

तथा जैनधर्मके धारकोंकी आज तो प्रत्येक वर्ष जन संख्या घटकर अन्य समाजकी वृद्धि होरही है उसमें एक अज्ञानता ही प्रधान कारण है।

अतः बन्धुओ! संसारकी हृदय विदारक परिस्थिति पुकार पुकारकर कह रही है कि अब भी सचेत हो आंख खोलकर कार्य करना सीखो और द्रव्यको सदुपयोगमें लगाओ। इसीमें देश और जाति दोनोंका हित है। —प्रेमचन्द्र शास्त्री।

પ્રગતિને પંથે.

નરસિંહપુરાને બે બોલ.

કલોલ મુકામે નૃસિંહપુરા ભાઇઓના પાંચે ગામનાં પંચ, રાયકવાળ ભાઇઓને અપનાવી લેવા માટે અશાડ સુદ ૩ જે મળ્યાં હતાં. ઠરાવોની રૂપરેખા સુંદર રીતે 'વિજય' ના નવીન અભિધાન નીચે છાપી ગામે ગામ પહોંચાડી દેવામાં આવી હતી. કહાનમ અને સુરતનાં પંચો તાત્કાળીક આમંત્રણ સ્વીકારી ન શક્યાં તેટલા માટે, તે પંચોની બેઠકનું દ્વિતીય અધીવેશન તારંગાજી તીર્થના પવિત્ર સ્થાન ઉપર રાખવાનો ઠરાવ પણ સર્વાનુમતે કરવામાં આવ્યો હતો.

આ બધી અમૃત તુલ્ય સુંદર વાનીઓનાં ઢગલા નીચે, ઝીણી ઝીણી જહેરની ચીણુગારીઓ છુપાઇને પડી હતી, તેનો ખ્યાલ રાખ્યા સિવાય સુધારા કરવાના હર્ષોન્માદમાં પંચોના આગેવાનો આ બધી ચાલબાજી કરી રહ્યા હતા. પરિણામે, તારંગાજીનું પવિત્ર સ્થાન અપવિત્ર ભાવનાઓને ન રૂચ્યું. કેટલાક ભોળા ભાઇઓ તારંગાજી સુધી નિરર્થક અથડાઇ નિરાશ થઇ પાછા વળ્યા, કેટલાએક ભાઇઓ, કોઇપણ રીતે રાયકવાળ ભાઇઓને અપનાવવાના સુધારાના બ્હાના નીચે, મથન કરવાથી પેઢીઓગતથી ચાલતો આવેલો ઝેર નરસીંપુરના ઝઘડાનો નાશ કરી શકાય, કે જેથી હનુમાનના પુંછડે રાવણે આગ લગાડી ત્યારે વીર હનુમાને છાપરે છાપરે કુદી આખી લંકા નગરી ભસ્મીભૂત કરી નાખી, તેવા રૂપક-વાળો એ ઝઘડો આખા દિગમ્બર જૈન સમાજને નડતર રૂપ ન થાય, તેવી લાગણીથી વગર તેડે નોતરે પણ તારંગાજી જવા પોટલાં બિસ્ત્રા બાંધી તૈયાર થઇ રહ્યા હતા. તારંગાજીની બેઠક બંધ રહ્યાના ખાનગી પત્રો મળ્યા, જેમાં જણાવવામાં આવ્યું હતું કે, પંચને વિખુડાનું નડતર થયું છે ' હવે કપડવંજ પાસે ડેમઇ મુકામે કારતક સુદ ૮મે પંચ મેળવવા માટે ઝહેરના ભાઇઓએ બધાને આમંત્રણ મોકલાવ્યું છે.

આ આમંત્રણને સફળ બનાવવા માટે, બધા પંચના ભાઇઓ દીલસોજી રાખે તોજ, જ્ઞાતિઓનાં સાંકડાં થઇ ગયેલાં બંધારણને વિશાળ બનાવવાનો સુધારો સારી રીતે અમલમાં મુકી શકાશે, નહિ તો જેવી રીતે અત્યારે ઝેર, નરસીપુરના મૂળમાં વારસાના ઝઘડાને લઇને પાંચે ગામના જેવોજ કલેશ કહાનમ, સુરત વગેરે સબંધ ધરાવતાં ગામનાં પંચમાં ક્રમે ક્રમે પ્રવેશ કરતો જાય છે, તેવીજ રીતે આપણી સાથે નવા સંબંધમાં આવતા રાયકવાળ વગેરે ભાઇઓને પણ એ કલેશના ભાગીદાર થયેજ છુટકો છે. સુરત વિભાગના રાયકવાળ ભાઇઓ ઉપર તે વિભાગમાં રહેતા અને વધુ સંબંધમાં આવતા નૃસિંહપુરા ભાઇઓની અસર થશે. અને વાંચ, અસલાલી વગેરે ગામમાં રહેતા ભાઇઓ ઉપર અમદાવાદ એટલે ઝેર, નરસીંપુર પક્ષના ભાઇઓ સીધી અસર પાડવાનો પ્રયત્ન કર્યા શીવાય રહેશે નહિ. પરિણામે કલેશ કરનારો પક્ષ વધશે. સરસ રસ્તો એજ છે કે પહેલેથી આખી ભૂમિકા સ્વચ્છ કરી તેની ઉપર નવું ચણતર કરવું, નહિ તો ડગમગતા પાયાવાળું ચણતર જરૂર ગબડી પડયા સિવાય રહેવાનું નથી.

સુરત મુકામે આપણી કોન્ફરન્સ પ્રસંગે, સમાધાન કરવાની જે વિધી અખત્યાર કરવામાં આવી હતી, તે લગભગ અમલમાં મુકાઇ ગઇ છે. માત્ર દીલશોજીના અભાવે બન્ને પક્ષનો મેળ ખાતો નથી. બન્ને પક્ષમાંથી માનની ભાવનાઓ ઓછી થઇ નથી. કલેશ-કુટીલ થઇ ગએલા વર્ગમાં કલેશ કરવાનો એટલો સરળ અભ્યાસ થઇ જાય છે કે, કલેશની પરાકાષ્ટા આવી જતાં છતાં બન્ને પક્ષમાંથી એક પણ પક્ષ થાકતો નથી. તેવીજ પરિસ્થિતિ હાલ પાંચે ગામનાં અને સાથે કહાનમમાં પણ ઉભી થઇ છે. લાંબા કાળનો સ્નેહ સબંધ અને હેત પ્રીતિનો તેમજ ન્હાના મ્હોટાની

આમન્યાનો સદંતર નાશ થતો જાય છે. જેમ પુરૂષ વર્ગમાં તેવીજ રીતે સ્ત્રી વર્ગમાં સ્વાભાવિક કોમળતા અને સૌંદર્યનો નાશ થતો જાય છે. હિસ્ટીરીયા, ગાંડપણુ જેવાં માનસિક દર્દો, અતિશય કલેશના પરિણામેજ થાય છે. આમ અધોગતિએ પહોંચતા જતા સમાજને બચાવવો હોય તો પહેલો, જે સડો છે, તેને પ્રથમ સાફ કરીનેજ નવાં કાર્યની શરૂઆત કરવી જોઇએ એક બાજુથી આપણા લાંબા કાળના સ્નેહી, સબંધી દૂર થાય અને બીજી બાજુએ નવો સ્નેહ બાંધવાનો આપણે પ્રયત્ન કરીએ, તે યુક્તિયુક્ત તો નહિજ ગણાય.

સામાધાન કરવાની વિધિ તો પુરી થઇ છે તો સામા પક્ષના ભાઇઓને આમંત્રણ શા માટે આપવામાં આવે નહિ ? જો, અમુક ભાઇઓને પક્ષ તરીકે આમંત્રણ ન અપાયું હોય તો સાતે ગામનાં પંચ મળી તેમને આમંત્રણ મોકલે; અથવા તો સામાપક્ષના ભાઇઓ પોતાની મેળેજ જુદા એકઠા મળી કેવી રીતે, એક બીજાનો સહકાર ફરીથી ચાલુ થાય તે સંબંધી વિચાર કરી, બન્ને પક્ષનું માન સચવાય એવી રીતે હૃદયનો ખટકો કાઢી નાખે. મુંબઇમાં આખા દેશની મહાસભા મળી ગઇ છે. પૂજ્ય માલવીયાજીનો આખો પક્ષ મહાસભાની પાર્લામેન્ટરી બોર્ડની વિરૂદ્ધ પ્રચાર કામ કરી રહ્યો હતો. બન્ને પક્ષમાં પુરેપુરી કડવાશ વ્યાપી ગએલી જણાતી હતી. મહાત્મા ગાંધીજીએ અનેક યુક્તિ પ્રયુક્તિથી સમજાવ્યા છતાં, જાતિય હીત (Communal award) રક્ષક કાયદાનો વિરોધ કરવાના પોતાના મંતવ્યને એમ છોડયું નહિ, છેવટ મહાસભા મળી છે, તેમાં એ બધાએ આવ્યા હતા ને વિષય વિચારીણી કમીટીમાં એમના પક્ષને સખત હાર મળી હતી. મહાસભાના ચાલુ અધિવેશનમાંએ પોતાની દલીલ રજુ કરી ચુકયા અને દેશહિતને માટે યા હોમ! કરવાની સંપૂર્ણ ધગશથી એ સામા પક્ષ સાથે પોતાની અંતઃકરણની માન્યતા મુકી હૃદયનો ખટખટો દૂર કર્યો છે, તો છેવટ એ મહાન પુરૂષ જરૂર દેશમાં બે ભાગલા કાયમ નહિ થવા દે, તેવીજ રીતે આપણા બન્ને પક્ષો સ્વમાન પુર્વક એક સ્થાને મળે એવો આ પ્રસંગ છે.

ત્યાં બધા સમાધાન લાવવાની ભાવનાથી એકઠા મળે, અને જે તે રીતે, પુરી થઇ ગએલ વિધીમાં વધારે ચુંથાચુંથ કર્યા શિવાઇ, બીજા જે કોઇ અગત્યના મતભેદ અને વાંધાઓ હોય તેનો નિકાલ આણી દે. સાતે ગામ ટાળે થવાનો અને સાથે સાથે રાયકવાળ વગેરે ભાઇઓનો સમાગમ મળવો દુર્લભ છે. એ ભાઇઓ પણ, એવા નિશ્ચય પૂર્વક ઉમઇ આવે, કે, નૃસિંહપુરા ભાઇઓના બંન્ને પક્ષ સંધાય તોજ તેમાં જોડાવું શ્રેયકર છે. આ નિશ્ચયમાં અડગ રહેવાથી કોઇનું અહિત થાય એમ નથી. સંપની ભાવનામાં મદદ કરવાનું શ્રેય એમને પ્રાપ્ત થશે અને એમના જોડાણના આરંભ મહુર્તમાંજ આ શુભ કાર્ય સધાશે, તેનું પૂણ્ય જરૂર તેમને પ્રામ થશે.

આમ પ્રગતિને પંથે, પ્રયાણ કરવાનું ચૈતન્ય પ્રેરનાર આપણી ગુજરાત પ્રાન્તીક સભાનું ગૌરવ પણ ત્યારેજ વધશે, કે, જ્યારે આપણા સામાજમાંથી કલેશ નિર્મૂળ થશે, બંધારણ મ્હોટા કરવાનો હેતુ પણ તેજ છે, કે ભવિષ્યમાં અણુઘટતાં ઝઘડા ઉભા કરવાનાં બીજનો નાશ થાય ક્રમે ક્રમે આખો દિગમ્બર સમાજ એકમેકમાં કન્યા લેવા આપવાનો વ્યવહાર સરલતાથી ચાલુ કરી શકે, એવા ઉદાર ભાવનાથી આપણાં જોડાણ થાય તે ઇચ્છવા યોગ્ય છે, જ્યાં જ્યાં કિંચિંત કલેશનાં બીજ પડેલાં હોય ત્યાં, ત્યાંથી તેનો નાશ કરવાનું બંધારણના ઠરાવોમાં નહિ પરંતુ તે ઠરાવોને અમલમાં મુકવાની રીતમાં રહેલું છે. ઠરાવો અમલમાં મુકવામાં ઉદારતા હોવી જોઇએ. ગંભીર નુકશાન થતું ન હોય તેવા પ્રસંગોમાં જોયું ન જોયું કરીને તેવી ભૂલો નભાવી લેવી. જોઇએ પંચોમાં જ્યારે એવી ઉદાર ભાવનાઓ દાખલ થશે,

ત્યારેજ બધે સંપ સચવાશે. ન્યાયનું ધોરણ કુટીલતા ભરેલું ન હોવું જોઇએ. ન્યાયના બ્હાના નીચે આપણાં બધાં પંચો અનેક પ્રકારનો કલેશ અને અવ્યવસ્થા નિભાવી રહ્યા છે, તે નીતિનો નાશ કરી ઉદાર નીતિ અખત્યાર કરે, ન્યાયનું ધોરણ સાચવે; પરંતુ વિનાશનો પ્રસંગ ન આવે તેટલો વિવેક રાખીને કામ લે. ગરીબ, તવંગરના ભેદ ભૂલી સૌને એક દૃષ્ટિથી જુવે એવાં લવાદ મંડળ, ન્યાયનું ધારણ સારી રીતે સાચવી શકે છે. આ બધું અમલમાં મુકવાનો શુભ અવસર નૃસિંહપુરા ભાઇઓને માટે નજીકમાં આવી ગયો છે તો તેનો લાભ લેવાને તે ભાઇઓ નહિ ચુકે. બધા ભાઇઓ દીલશોજીથી પંચના કામમાં ભાગ લેવા આવે. ખોટી ખેંચાતાણ પડતી મુકે, અને પ્રથમ, માર્ગમાં પડેલા મ્હોટા અવરોધ રૂપ ઝઘડાનો નાશ કરી નાખે. આખર કેટલાએક અજ્ઞાનતાથી માન મદમાં દોરાઇ પોતાની જીકર ન છોડે તો છેવટ તેમના તરફ " क्लिष्टेषु जीवेषु कृपा-परत्वम ॥ દયાભાવ રાખીને સત્ય ધર્મનો અંગીકાર કરે-'પ્રગતિના પંથે જવામાં સદ્ગુણોનો ઉપયોગજ શ્રેયસ્કર થાય છે, નવિન વર્ષ નિમીતે આ અભ્યર્થના સ્વીકારી સૌ ભાઇઓ શુભ કાર્યમાં જોડાય તેમાજ આપણા અહિંસા પ્રધાન ધર્મનો વિજય છે.

—નાગરદાસ.

વીર અભયકુમાર.

(લે:—મોહનલાલ મથુરાદાસ શાહ-કંપાલા)

આજથી પચીસસો વર્ષ પૂર્વે આપણા હિંદુસ્થાનમાં મગધ નામના દેશમાં, રાજગૃહી નામે એક નગર હતું. ત્યાં ગુણવાન અને વિદ્યાવાન વળી, પ્રજાનું પુત્રવત્ પાલન કરનાર શ્રેણિક નામે એક રાજા રાજ્ય કરતો હતો. તેને અભયકુમાર નામે એક પુત્ર હતો. જે જન્મથીજ તેના જ્ઞાનનો પ્રકાશ આપતો મોટો થયો. તેની પંદર વર્ષની ઉમરે તે ઉપાધ્યાય પાસે દરેક પ્રકારની વિદ્યા શીખી હોંશિઆર બન્યો હતો. તે એટલો વ્યવહારકુશળ હતો, કે જેની બરોબરીમાં વૃદ્ધો પણ પાછા પડતા. તે એટલું ખાસ સમજતો હતો. કે—આ દુનિઆમાં જેટલા પાપ છે, તે દુર્ગતિમાં લઇ જનારાં છે.

શ્રેણિક રાજાએ પોતાના પુત્રની આવી હોંશીઆરી જોઇ, તેને તેટલી નાની ઉમરે પણ રાજમંત્રી બનાવ્યો હતો. અને અભયકુમાર તે પદને સંપૂર્ણપણે લાયકજ હતો. તે બહુજ વિનયવાળો હોઇ, કૃતજ્ઞ, દયાળુ અને નીતિજ્ઞાનની સાથે સંપૂર્ણ પરાક્રમી હતો.

શ્રેણિક રાજાએ પુત્રની ચાતુર્યતા વધુ ને વધુ પીછાણી લઇ, તેને આખા રાજ્યની દેખરેખ રાખવાનું કામ સોંપ્યું, તે ઉપરાંત ન્યાયમંત્રી પણ તેનેજ બનાવ્યો. શ્રેણિક રાજા એવી રીતે પોતાના પરાક્રમી પુત્રને સંપૂર્ણ રાજ્ય વ્યવસ્થાનું કામ સોંપી દઇ, પોતે પોતાની પ્રાણપ્રિય ચેલના રાણીના મહેલે રહેવા લાગ્યો. અને રાજ્યકારભાર અભયકુમાર ચલાવવા લાગ્યો.

એક વખતે હેમંત ઋતુમાં ભગવાન મહાવીરસ્વામી રાજગૃહી નગરીમાં પધાર્યા. એક દિવસ સાંજના વખતે શ્રેણિક રાજા ચેલના રાણી સહિત, નગર બહાર વન પર્યટણ કરવા નિકળ્યો. જંગલમાં સારી રીતે પર્યટણ કરી, પાછા

ફરતાં તેમણે નદી કિનારે એક મુનિરાજને ધ્યાન કરતાં જોયા.

રાજા અને રાણી મુનિરાજને નિહાળતાંજ વાહન ઉપરથી નીચે ઉતરી ભક્તિપૂર્વક નમસ્કાર કરી ફરી વાહન ઉપર બેસી મહેલમાં ગયાં.

રાત્રે રાણીનું શરીર ઓઢયા સિવાય રહી જવાથી, તેને ઠંડી લાગવા લાગી. ને તેની ઉંઘ ઉડી ગઇ. રાણી વિચાર સાગરમાં પડી, અને તે વિચાર વમળમાં તે અર્ધ નિદ્રીત સ્થિતિમાં આવી ગઇ. વિચારોમાં તેના હૃદયમાં નદી કિનારે ધ્યાન કરતા, મુનિરાજના ધ્યાનની કલ્પના થઇ, અને તેનાથી એક હાય સહિત બોલી જવાયું, કે......તેમની શરદીમાં શી દશા થતી હશે?

ઉપર પ્રમાણે વાકય નિકળતાંજ રાજા પણ જાગી ગયો, અને રાણીનાં ઉપરનાં વાકય સાંભળી વિચાર કરવા લાગ્યો, કે—શું! આ ચેલના વ્યભિચારીણી થઇ ગઇ છે.! શું! અત્યારે તે તેના યારનો વિચાર કરે છે!

એવી રીતે વિચાર કરતાં રાજાને ઘણોજ ક્રોધ ચઢયો. ને તેને ત્યાર પછી બિલકુલ ઉંઘ આવી નહિ. સવાર થતાંજ તે બહાર નિકળ્યો, અને અભયકુમારને બોલાવી કહ્યું—પુત્ર! અંતઃપુરની નીતિનો નાશ થયો છે, માટે તેની ચારે તરફના દરવાજા બંધ કરી, આગ લગાડી દે!

ખબરદાર! માતાના સ્નેહમાં આવી જઇ, મારી આજ્ઞાનો ભંગ ન કરતો! રાજા એવું કહી, તરતજ મહાવીરસ્વામીને વંદના કરવા ચાલ્યો ગયો.

અભયકુમારે વિચાર કર્યો, કે, મારી બધી માતાઓ સતીઓમાં તિલક સમાન છે. વખતે પિતાજીને ભ્રમ થયો હશે! અને તેથીજ આવી નિષ્ઠુર આજ્ઞા કરી છે. પિતાજીના ક્રોધની જ્વાલામાં અનેક સતિ સ્ત્રીઓ ભસ્મ થાય, અને તેથી વગર વિચારે કરેલા કાર્યથી, પાછળથી પસ્તાવાનું થાય! કહ્યું, છે કે—

सगुणमपगुणं वा कुर्वता कार्यमादौ ।
परिणतिरवधार्या यत्नतः पंडितेन ॥
अतिरभसकृतानां कर्मणामाविपत्ते ।
भवति हृदयदाही शल्यतुल्यो विपाकः ॥

અર્થ—કાર્ય સારૂં હોય યા નઠારૂં પણ ડાહ્યા માણસની ફરજ છે, કે—તેણે પહેલાં તેના ફળનો પરિણામનો વિચાર કરવો જોઇએ! કામ કરવામાં ઉતાવળ ન કરવી. જે કામ ઉતાવળથી—વિચાર્યા વિના કરાય છે, તેનું પરિણામ મરણ પર્યંત દુઃખદાયકજ આવે છે.

માટે હું આ કાર્યને વિચાર કર્યા પછીજ કરીશ, પણ રાજા અને તેમાંય વળી મારા પિતાશ્રીની આજ્ઞાનું પાલન થાય, એ માટે મારે કાંઇ ને કાંઇ તો જરૂર કરવું જોઇએ!

એવો વિચાર કરી તેણે એક જુના—પુરાણા હાથીખાનાને આગ લગાડી, અને શહેરમાં ખબર ફેલાવી કે,—અંતઃપુરમાં આગ લાગી છે. એમ કરી તે પણ મહાવીર સ્વામીને વંદના કરવા ચાલી નીકળ્યો.

વ્યાખ્યાન સમાપ્ત થયું, એટલે શ્રેણિક રાજાએ ભગવાનને પુછ્યું હે, પ્રભુ! ચેલણા સતી છે કે કુલટા! ભગવાને કહ્યું, હે! શ્રેણિક રાજા! ચેલા રાજાની કન્યા ચેલના. શીલરૂપી અલંકારને ધારણ કરનારી શિરોમણી છે. તું તેના પર જરા પણ સંદેહ ન કર!

ભગવાનનું એવું વાકય સાંભળી, શ્રેણિક રાજા ઘણો ઉદાસ થયો. અને ભગવાનને નમસ્કાર કરી કરી, નગર તરફ રવાના થયો.

રસ્તામા અભયકુમાર સ્હામો મળ્યો, તેને રાજાએ પુછ્યું—કુંમાર! શું, અંતઃપુરને આગ લગાડી? અભયકુમાર હાથ જોડી બોલ્યો, હે! પિતાજી, આ પૃથ્વી ઉપર એવો કોણ આદમી છે, કે—જે તમારી આજ્ઞાનું ઉલંઘન કરે!

રાજા અભયકુમારનું બોલવું સાંભળી, અને ક્રોધથી વ્યાકુળ થઇ બોલ્યો—હે, દુષ્ટ! જે

આગમાં તારી માતાઓને સળગાવી તે આગમાં તું કેમ ન બળ્યો !

અભયકુમારે શાન્તી પૂર્વક કહ્યું, હે, તાત ! ધર્મ રથ પર આરૂઢ થએલા તમારા પુત્રનું મૃત્યુ એમ નથી થતું, છતાં તમે જો તે વખતે તેવો હુકમ આપ્યો હોત, તો તેમજ થાત !

રાજાના અંતઃકરણમાં વજ્રપાત સમાન ક્ષોભ ઉત્પન્ન થયો, ને બેભાન થઇ, જમીન પર ઢળી પડ્યો. અભયકુમારે શીત ઉપચાર કરી, રાજાને શુદ્ધિમાં આણ્યો, અને કહ્યું, હે, પ્રભુ ! અંતઃપુરમાં મેં આગ સળગાવી હતી, પણ તે મારી માતાઓના શીલ પ્રભાવથી બુઝાઇ ગઇ.

રાજા એ પ્રમાણે સાંભળવાથી ઘણોજ ખુશ થયો, અને મહેલ તરફ ચાલ્યો. રસ્તામાં અભયકુમારે હાથીખાનું સળગાવવાની, ને અંતઃપુર રક્ષિત રાખવાની બધી વાત કહી સંભળાવી.

બંન્ને જણુ એમ વાતો કરતા કરતા રાજ ભુવનમાં ગયા. રાણીને જીવિત જોઇ, રાજા ઘણો પ્રસન્ન થયો, અને અભયકુમારને વચન માગવા કહ્યું–હે પુત્ર, તને જે ઠીક લાગે, તે માગ ! હું તારા કર્તવ્યથી ઘણોજ પ્રસન્ન છું.

અભયકુમારે નમ્રતા પૂર્વક કહ્યું, હે, પિતાશ્રી, જે માણસ આપનો પુત્ર છે. અને મહાવીરસ્વામીનો સેવક છે, તેના માટે દુનિઆમાં કઇ, ચીજની કમીના હોય ! તો પણ, હે, પ્રભુ ! જો આપ છો, તો એક વચન આપો ! કે, જ્યારે હું સાધુ ધર્મ પાળવા ઇચ્છા કરૂં, ત્યારે આપ તરતજ આજ્ઞા આપો !

શ્રેણિક રાજાએ તથાસ્તુ કહી, ચેલના રાણીના મહેલ તરફ ગમન કર્યું. ત્યાં ચેલનાએ તેનો પ્રેમ પૂર્વક સત્કાર કર્યો. રાજાએ વિચાર્યું કે,–ચેલના મને પહેલેથી પ્રિય હતી, વળી તેના શીલની પ્રશંસા શ્રી વીર પ્રભુના મુખથી સાભળી મને તે વધુ પ્રિય થઇ છે, જેથી મારે તેની કંઇપણ યાદગીરી કરી, તેના પ્રેમનો બદલો વાળવો જોઇએ !

એવી રીતે વિચાર કરી શ્રેણિક રાજાએ અભયકુમારને બોલાવ્યો, અને કહ્યું.–હે ! કુમાર ! ચેલના માટે એક સુંદર અને એકજ સ્થંભવાળો મહેલ તૈયાર કરાવ ? કે–જેથી તેનું નામ અમર થવાની સાથે, તેમાં તે સુખ પૂર્વક રહી શકે.

અભયકુમારે કહ્યું–ઠીક, તે થોડાક ટાઇમમાં થઇ જશે ! એમ કહી તે દરબારમાં ગયો. ત્યાં તેણે એક હુશિયાર કારીગરને બોલાવ્યો, અને તેને મહેલ બાંધવા સંબંધી વાત કરી. કારીગરે અભયકુમારના કહેવા મુજબ એક સ્થંભવાળો મહેલ બાંધવા હા પાડી. અને તેને યોગ્ય.વૃક્ષની તપાસ કરવા જંગલમાં ગયો.

જંગલમા ઘણી શોધ કર્યા પછી એક વિશાળ વૃક્ષ કારીગરના જોવામાં આવ્યું. તે તેને સ્થંભ બનાવવા યોગ્ય લાગ્યું. અને તેને કાપવાનો વિચાર કર્યો, પણ જે વૃક્ષ કાપવામાં આવે, તે કાપતા પહેલાં તેમાં રહેતા વ્યંતરાદિ દેવોને પૂજન આદિથી સંતોષિત કરવા જોઇએ, એવી અભયકુમારની આજ્ઞા હતી, જેથી કારીગરે એક ઉપવાસ કર્યો, અને પ્રાતઃકાલે અષ્ટ દ્રવ્ય આદિ લઇ, વ્યંતર દેવની પૂજા કરી, અને આરતી કર્યા બાદ ઇષ્ટ પ્રાર્થના કરતાં કહ્યું, કે–હે, ગંધર્વદેવ' યક્ષ, રાક્ષસ, વ્યંતર આદિ આ ઝાડમાં નિવાસ કરતા દેવ ગણો, મારા ઉપર પ્રસન્ન થાઓ ? કેમકે રાજાની આજ્ઞાથી આવતી કાલે સવારે હું આ ઝાડ કાપવાનો છું.

એવી રીતે કારીગર યક્ષની પૂજા–અર્ચા કરી, રાત્રે તેજ ઝાડ નીચે સુઈ રહ્યો. રાત્રે વ્યંતરદેવે વિચાર કર્યો કે–અભયકુમાર કેટલો વિનયી અને દયામય છે. જો તેણે આ સુથારને મારી ઉપાસના કરવાનો હુકમ ન કર્યો હોત, તો મારા ક્રોધરૂપી અગ્નિમાં આ સુથાર, અભય કુમાર અને આખું રાજ્ય પતંગીઆની માફક હોમાઇ જાત.

ઉત્તમ પુરૂષો વગર વિચાર્યું કોઇપણ કામ કરતા નથી, એ નીતિ સુત્ર છે. અને તેથીજ

ઉત્તમ પુરૂષોનું કામ વિના ઇચ્છાએ બીજાંઓ દ્વારા થઇજ જાય છે. અભય કુમારે મને સારી રીતે સંતોષિત કર્યો છે, માટે મારે પણ તેનું કાર્ય કરવું જોઇએ !

આવો વિચાર કરી, વ્યંતર દેવે રાત્રે અભય-કુમારને સ્વપ્નમાં જઇ કહ્યું,–હે, વત્સ ! હું તારા વિનય અને નમ્રતા આદિ ઉત્તમ ગુણોથી સંતુષ્ટ છું. વળી તારા કારીગર દ્વારા થએલી અર્ચનાથી હું તારા ઉપર ઘણોજ પ્રસન્ન થયો છું માટે તારે જંગલમાં ઝાડ કાપી, કારીગરો રોકી મહેલ બાંધવાની જરૂર નથી, હુંજ તને એક સ્થંભવાળો મહેલ અને તેના ચારે બાજુ છએ રૂતુનાં ફળ–ફુળથી સુશોભિત બગીચો તૈયાર કરીશ, માટે તું માણસ મોકલી, કારીગરને જંગલમાંથી પાછો તેડાવી લે ! એમ કહી વ્યંતર દેવ અંતર્ધ્યાન થયો, ને અભયકુમારની આંખ ઉઘડી ગઇ.

અભયકુમાર જાગીને જુએ છે, તો કોઇ મળે નહિ, તેણે તરતજ સેવકને જંગલમાં મોકલ્યો. તેણે કારીગરને શોધી કાઢી અભય-કુમારનો હુકમ કહી સંભળાવ્યો જેથી કારીગર પાછો આવ્યો.

અભયકુમારને વચન આપ્યા મુજબ બીજે દિવસેજ વ્યંતર દેવે એક મહેલની યોજના કરી, ને થોડાકજ દિવસમાં મહેલ અને બગીચા તૈયાર કર્યાં. અભય કુમાર મહેલની બાંધણી જોઇ આશ્ચર્ય ચકિત થયો અને વ્યંતરની સત્ય ઘટ-નાથી પ્રસન્ન થયો. પછી શ્રેણિક પાસે જઇ કહ્યું, હે ! પિતાજી! મહેલ તૈયાર છે. આપ ચાલો, અને જુઓ !

શ્રેણિક રાજા અભયકુમાર સાથે એક સ્થંભી મહેલમાં ગયો. તે મહેલની બાંધણી અને તરેહ તરેહની રચના જોઇ, ઘણોજ પ્રસન્ન થયો. વળી તેને આશ્ચર્ય લાગ્યું કે–આટલી થોડી મુદતમાં આવો સરસ મહેલ કેમ કરી તૈયાર કર્યો, જેથી તેણે અભયકુમારને પુછ્યું, અભયકુમારે તેને બધી હકીકત નિવેદન કરી. જેથી શ્રેણિક રાજા ઘણોજ આનંદિત થયો.

શુભ મુહુર્તમાં શ્રેણિક રાજાએ તે મહેલ ચેલના રાણીને અર્પણ કર્યો, અને તેનું નામ ચેલના ભુવન પાડયું; અને કહ્યું કે–હે ! સુંદરી ! તમો અહીં રહી સુખ પૂર્વક ધર્મ અને અર્થનુ સાધન કરો !

અભયકુમારને એક વખત શ્રેણિક રાજાએ બોલાવીને કહ્યું, કે–હે કુમાર ? હવે હું વૃદ્ધ થયો છું, માટે તું આ રાજ્ય ગ્રહણ કર ! પરંતુ અભયકુમારે કહ્યું, હે ! પિતાજી ! હું અન્તિમ રાજર્ષિ થઇ શકીશ કે નહિ ? તે જાણ્યા વિના રાજ્ય ગ્રહણ કરી શકતો નથી. જો મારા ભાગ્યમાં અંતિમ રાજર્ષિ થવાનું હશે, તોજ હું રાજ્ય ગ્રહણ કરીશ ! માટે આપ હમણાં સ્થિર થાઓ ! જ્યારે ભગવાન મહાવીર સ્વામી આ બાજુ આવશે, ત્યારે પૂછીને ખાત્રી કરીશું !

અભયકુમારનો દ્રઢ નિશ્ચય જોઇ, શ્રેણિક રાજા ચુપ રહયો. ત્યારબાદ થોડા દિવસ પછી શ્રી મહાવીર સ્વામી રાજગૃહી પધાર્યા, વિપુલાચલ પર્વત પર દેવો દ્વારા સમોશરણની રચના થઇ. અને ભગવાન ધર્મોપદેશ કરવા લાગ્યા. અભય-કુમાર ટાઇમ જોઇ, પ્રભુની વંદના કરવા ગયો. ત્યાં તેણે સમય મેળવી, ભગવાનને પુછ્યું, હે, પ્રભુ ! આ ભરત ક્ષેત્રમાં અંતિમ રાજર્ષિ કોણ થશે ! ભગવાને દિવ્ય ધ્વનિમાં કહ્યું કે વિલક્ષણ પટ્ટણનો રાજા ઉદયન અંતિમ રાજર્ષિ થશે, તેની પછી તેના જેવો, કે–તેનાથી મોટો કોઇ રાજા, આ પંચમ કાળના પ્રભાવે કરી, સાધુ વ્રત લઇ શકશે નહિ.

એવું ભગવાનનું વચન સાંભળી, અભય-કુમારે ત્યાં ને ત્યાંજ શ્રેણિક રાજાને નમસ્કાર કરી કહ્યું, હે, પિતાજી ! આપે મને પહેલાં જે વચન આપ્યું છે. પાળવાનો પાળવાનો ટાઇમ આવી પુગ્યો છે. આજ સુધી હું અંતિમ રાજર્ષિ બનવાની ઇચ્છાથી, સાધુ વ્રત લેતો

. નહોતો, પણ આજે ભગવાનના મુખદ્વારા જાણી લીધું કે–તેમ થવાનું નથી. જેમાં મારો વિચાર શ્રી ભગવતી દિક્ષા લેવાનો છે, માટે હે, પિતાજી, મને આજ્ઞા આપો, કે–હું શ્રી પ્રભુજી પાસે દિક્ષા લઇ કૃતાર્થ થાઉં !

પુત્રનાં વચન સાંભળી શ્રેણિક રાજા પુત્ર વિયોગ અને મંત્રી વિયોગનું દુઃખ થશે, એમ જાણી દિલગીર થયો, પણ તેને પોતાના વચનની કિંમત હતી, તેથી ધીરજ રાખી કહ્યું, હે, વત્સ ' તારા જેવા ઉત્તમ પુરૂષોને માટે તેં કરવા ધારેલું કાર્યજ ઇષ્ટ છે. હું જાણું છું કે, તારા જવાથી મારો જમણો હાથ ભાંગ્યા જેવું થશે ? પણ તારા શુભ કાર્યમાં હું વિઘ્ન નાંખવા માંગતો નથી ! આજસુધી જેમ મેં તારી દરેક વાત માન્ય રાખી છે, તેવીજ રીતે આજપણ તારી વાત માન્ય રાખું છું.

જે રાજ્યના લોભથી અનેક રાજકુમારો, અનેક કુકર્મો કરી નાંખે છે, તે રાજ્ય તેં દ્રઢતા પૂર્વક ત્યાગ કરવા ઇચ્છા કરી છે. તે તારી દ્રઢતાને ધન્ય છે ! પુત્ર, જાઓ, દ્રઢ વ્રત પાળી હમારા મુખને ઉજવળ કરો !

એવી રીતે પિતાની આજ્ઞા મેળવી, અભયકુમારે પોતાની માતા પાસે પણ 'રજા મેળવી લીધી. પછી મહાવીર સ્વામી પાસે શ્રી જિનેશ્વરી દિક્ષા ગ્રહણ કરી, મુનિધર્મ અંગિકાર કર્યો પછી સ્થળ સ્થળ વિહાર કરી ધર્મનો ઉદ્યોત કર્યો.

એવી રીતે એક બળવાન રાજાના ભાગ્યશાળી સુત હોવા છતાં અભયકુમારે રાજ્યનો મોહ નહિ કરતાં આત્મ કલ્યાનને રસ્તે વળ્યો. શાબાશ છે, તેની દ્રઢ મનોવૃત્તિને '

અભયકુમાર જેટલો પ્રિય શ્રેણિક રાજાને હતો તેથી હજાર ઘણો પ્રિય રાજગૃહીની પ્રજાને હતો. તેના વિશાળ જ્ઞાન પાસે વૃદ્ધને પણ નમતું આપવું પડતું.

મનુષ્ય માત્ર તેનાં શુભ અને કર્મો પ્રરેજ રૂપ, ગુણ. કુળ, સંપદા, મેળવી શકે છે. માટે દરેક જણની ફરજ છે, કે–હમેશ શુભ કર્મનો બંધ કરવા કોશીશ કરવી. ૐ શાંતિઃ

શ્રી સંઘ નૃસિંહપુરા બંધુઓને વિનંતી.

કલોલની પત્રિકા પ્રમાણે આપણું સમસ્ત પંચ (દરેક ગામનું) શ્રી તારંગાજી મુકામે એકઠું થયું નહોતું પણ કાર્તક સુદી ૮ મેં ઝહેરની પાસે ડેમઇમાં એકઠું થનાર છે, તે માટે મારી નીચેની સુચનાઓ તરફ લક્ષ આપવા વિનંતિ છે.

કલોલ મુકામે કરેલા બંધારણના ખરડામાં જે ઠરાવો રજુ કરવામાં આવ્યા છે. તે એકલાજ સમાજની આપણે જેવી ઉન્નતિ કરવા માગીયે છીએ તેવી ઉન્નતિ કરવા મને પુરતા જણાયા નથી. અને એમાં કંઇક સુધારાઓ કરવાની તેમજ થોડાક નવા ઠરાવો પણ રજુ કરવાની મને જરૂર જણાઇ છે. એથી સમાજ સેવાની ભાવનાથી પ્રેરાઇને હું નીચેનું લખાણ તમારા સર્વેની સમક્ષ રજુ કરૂં છું:—

ઠરાવોની વિગતમાં ઉતર્યા પહેલાં હું એક નજીવી પણ ખાસ અગત્યની બીના ઉપર તમારા સર્વેનું ધ્યાન ખેંચવા માગું છું. કલોલની એ ઉપર્યુક્ત પત્રિકામાં શરૂઆત ઝાલાવાડી સંવતથી કરવામાં આવી છે. આપણે જૈન છીયે અને આપણને ઝાલાવાડી સંવત સાથે કઇ રીતે સંબંધ હોઇ શકે એ મને હજી લગી સમજાયું નથી. હું માનું છું કે આપણે આપણા ધર્મનું અભિમાન પણ આપણામાં જાગૃત રહે.

ઠરાવ નં. ૧, ૨, ૬, ૭, ૮, ૯, ૧૦, ૧૧, અને ૧૩ માં હું કંઇ વધારો કરવા ઇચ્છતો નથી. મને ને યોગ્ય, સારા અને હિતકર લાગ્યા છે.

ઠરાવ નં. ૧૪ નકામો છે. કારણ એની વિગત ઠરાવ નં. ૨ માં પુરેપુરી આવી જાય છે.

ઠરાવ નં. ૩ ને બદલે હું નીચેનો ઠરાવ રજુ કરવા માગું છું—" કન્યાના પક્ષ તરીકે

(સ્ત્રી ધન તરીકે) વરકન્યાના લગ્ન વખતે વરપક્ષે રૂ. ૭૫૧) અંકે સાતસો એકાવન આપવા અને તેની સ્ત્રીના નામ પર ગવર્નમેન્ટ સીક્યુરીટી લેવી અથવા તો તે રૂપીઆ બેંકમાં યા પોસ્ટ સેવીંગ ખાતામાં સ્ત્રીના નામ ઉપર જમા મુકવા કે જેનો ઉપાડ સ્ત્રી પોતાની સહીથીજ કરી શકે. એ ઉપરાંત કપડાં તેમજ દાગીના વરપક્ષ પોતાની મરજી મુજબ પોતાની શક્તિ અનુસાર આપી શકે છે.''

આને માટે હું ટુંકમાં કારણો જણાવવા માંગું છું. (ક) અત્યારના જમાનામાં એ અનુભવસિદ્ધ બીના છે કે દાગીના સ્ત્રી ધન તરીકે રહી શકતાજ નથી. લગ્ન પછી ધારે તો, વર સ્ત્રી પાસેથી દાગીના લઇને તેનો ગમે તેમ ઉપયોગ કરી શકે છે અને સ્ત્રી એ વિષે કશુંજ બોલી શકતી નથી. (ખ) પત્રીકામાં જે ઠરાવ રજુ કરવામાં આવ્યો છે તે ખરી રીતે જોવા જતાં પુરૂષના એકપક્ષી સ્વાર્થ સાચવવા માટેજ છે. ઉપરાંત ઘરડાઓ કહે છે તેમ એવા એકજ પહ્યાથી ઘણુંએ લગ્નો કરી અને કરાવી શકાય છે. અમુકજ સ્ત્રીનું એ સ્ત્રી ધન રહી શકતુંજ નથી (ગ) શક્તિ મુજબના દાગીના તથા કપડાંમાં કોઇએ કોઇની ખોટી આબરૂમાં કે હરીફાઇમાં તણાઇ જવાની જરૂર નથી. અમુકે આમ કર્યું માટે આપણે પણ એમજ કરવું જોઇએ અને નહી કરીએ તો નાક કપાઇ જાય એ ભાવના અને વિચારો આપણે હવે છોડી દેવા જોઇએ કારણ કે એથી થયેલી આપણી અધોગતિ આપણે અત્યારે જોઇ શકીયે છીયે.

ઠરાવ નં. ૪ અને નં. ૫ તદ્દન નિરર્થક છે. કોઇ જમાએ એવા રિવાજો જોવામાં આવતા નથી, અને એ રિવાજોને આપણે શાથી વળગી રહેવું જોઇએ એનાં પણ સચોટ કારણો આપણે જણાવી શકતા નથી. એને છોડી દઇએ તો આપણને સ્હેજ પણ નુકશાન નથી.

ઠરાવ ૧૨ ને બદલે હું નીચેનો ઠરાવ રજુ કરૂં છું—"મરણ પ્રસંગે કોઇપણ જમણવાર કરવાનો નથી પછી મરનાર બાળક હોય, યુવાન હોય કે વૃદ્ધ હોય."

અત્યારે મરણ પછીના બારમાઓને આગળ પડતા વિચારો કરનાર ભણેલા અને કેળવાયેલા ગૃહસ્થો 'પ્રેત ભોજન' કે કોઇ પ્રસંગે તો 'શોકીના લાડુ' પણ કહે છે. કોઇના મૃત્યુ પછી આપણને એવો કયો આનંદ હોઇ શકે કે જેથી આપણે બધા એકઠા મળી મિષ્ટાન જમી શકીએ એ બુદ્ધિમાં ઉતરતું નથી. ચાલીસ વર્ષ પછીનાં બધાંજ જમણો નિર્દય અને જંગલી છે.

ઠરાવ નં. ૧૫ ના બદલામાં નીચે મુજબઃ—
"કન્યાની ઉંમર ઓછામાં ઓછી પુરાં બાર વર્ષની થયા વગર સગાઇ (વેવીશાળ) કરવી નહિ તેમજ તેને સોળ વર્ષ પુરાં થયાં પછીજ તેનાં લગ્ન કરવાં."

ઉપર જણાવ્યા છે એ સિવાય બીજા કેટલાક ઠરાવો હું હવે રજુ કરૂં છુંઃ—

૧. 'પુરૂષની ઉંમર ચાલીસ વર્ષની થાય પછી તે લગ્ન કરી શકે નહી.''

શું 'વિધવા લગ્ન' થાય એવું ઇચ્છો છો? વિધવાઓની સંખ્યા દિન પ્રતીદિન વૃદ્ધ લગ્નોને લીધે વધતી જાય છે એ વસ્તુ હવે તો દીવા જેવી સ્પષ્ટ થઇ ગઇ છે. ચાલીસ વર્ષ પછીનો પ્રૌઢ માણસ એક સોળ વર્ષની કુમારી છોકરીને પરણે એ કેટલું ખરાબ કજોડું કહેવાય? મનના વિચારોનું સરખાપણું તો કયાં રહ્યું પણ શારીરિક સરખાપણું એમાં કયાં છે એ કોઇ બતાવશો?

૨. "કોઇપણ પુરૂષ એક સ્ત્રીની હયાતિ પર બીજી સ્ત્રી સાથે લગ્ન કરી શકે નહિ. પણ જો સ્ત્રીની શારિરીક તેમજ માનસીક અયોગ્યતાના કારણે તેને લગ્ન કરવાં હોય તો એ માટે તે પોતાના ગામના પંચને પોતાના સગાં નહિ એવા પાંચ માણસોની વધુ મતે કમિટિ નીમવાનું કહે. તે કમિટિની આગળ પોતાનાં તેવાં કારણો

રજુ કરે અને ત્યાર બાદ એ કાર્યકારી [illegible] મતે જે ઠરાવ કરે એ પ્રમાણે [illegible]."

આપણા સમાજમાં એક સ્ત્રી ઉપર બીજી સ્ત્રી કરવાનો પુરુષને હક છે. [illegible] બીજો પુરૂષ કરવાનો હક નથી [illegible] આવતો. પુરૂષ, સંતાન નથી [illegible] બહાનું કહાડે છે, સ્ત્રી એ બહાનું કહાડે [illegible] રીતથી લગ્ન કરવાની છુટ નથી [illegible] આવતી. માટે જો સમાજનું [illegible] આ વર્તમાન યુગમાં હવે પુરુ[illegible] સ્વાર્થમાં તણાઇ જતાં અટક[illegible].

૩. "દરેક મામલે [illegible] ગુજરાતી પાંચ ધોરણ લાગી [illegible] અને એ ઉપરાંત શીવણ, ગું[illegible] અને ધાર્મિક જ્ઞાન માટે પણ બનતી કોશીશ [illegible]."

૪. "બીન વારસદાર [illegible] ભરણ પોષણ કરવા તેના સસરા પક્ષના [illegible] (નજીકના ન હોય તો પિત્રાઇ વગેરે [illegible] બંધાયેલા છે, કારણ કે તે એકલા [illegible] પક્ષ ઉપર પોતાનો [illegible]."

આર્થિક અડચણ [illegible] મુંઝવણને લીધે વ્યભિચાર [illegible] જવા લલચાતી વિધવાઓ [illegible] કરતાં અટકાવવી હોય ([illegible] ખાતર એમ આપણે [illegible] સારૂં છું કે ઉપરનો ઠરાવ [illegible].

૫. "[illegible] નાણાંથી ખાલી આવજાવ [illegible] કરવામાં આવે છે અને રાતના [illegible] આવે છે તેમ નહિ કરતાં [illegible] રાતના પ્રથમ સારા ચોઘડીયાં [illegible] કલાકની અંદર તેને સમાપ્ત [illegible]."

૬. "લગ્નની આગલી [illegible] વિધીને હવે તિલાંજલી આપી [illegible] વિધીસરજ લગ્ન કરવાં જોઇએ."

૭. "સીમંતનો જાહેર અવસર અત્યારના સમયને જરીએ અનુકુળ નથી. મરજીઆત કે ફરજીઆત જમણ એમાં હોઇ શકે નહિ. જેઓ એને આનંદની બીના ગણતા હોય એઓ પોતાના ઘરમેળે પોતાના સગાં સંબંધીઓ સાથે જે કંઇ આનંદ ભોગવે તેમાં સમાજ કશો વાંધો લેશે નહિ. આથી સીમંતના વરઘોડા તેમજ જમણો બંધ થવા જોઇએ."

ઉપરના ઠરાવો શિવાય હવે થોડું સમાજના પંચ વિષે કહેવાનુ બાકી રહે છે. તમે સૌ ઉન્નતિ માટે ભેગા થાઓ છો અને "પંચનું બંધારણ કેવું હોવું જોઇયે," એ વસ્તુ ઉપર ઓછું લક્ષ્ય નહિ આપો એમ હું માનું છું.

દરેક સમાજ સંગઠન અને વ્યવસ્થા શક્તિ ખીલવે તોજ ઉન્નતિ સાધી શકે છે. અને એમ કરવા માટે હંમેશાં એવા બંધારણની જરૂર હોય છે કે જે સમાજના મોટા ભાગને માન્ય હોય. આપણા પંચો અત્યારે દરેક જાતની સત્તા ચલાવે છે અને એથી એ સત્તાનો દુરૂપયોગ ન થાય એ આપણે જોવાની ચોકશ જરૂર છે. આપણા પંચોમાં સત્તાધારીઓ તરીકે જુના સત્તાધારીઓના વારસદારોજ કામ કરતા હોય છે, કહેવાતી આબરૂ અને મોભાનેજ વજન આપી તેઓ પંચોનો વ્યવહાર કુશળતા અને બુદ્ધિ પૂર્વક ચલાવવા અશક્ત તેમજ નાલાયક હોય છતાં આપણે તેમને શેઠ તરીકે ચલાવી લઇયે છીયે. પરીણામે પંચોની હાલમાં એવી વિચિત્ર સ્થિતિ થઇ છે કે જે કોઇપણ સમાજ સેવક સાંખી શકે નહી. બંધારણ જેવું કંઇ રહ્યું નથી અને આપ ખુદ સત્તા તેમજ વગવસીલાથીજ સમાજ હિત ધ્યાનમાં લેવાયા વગર પંચોનું કામ ચાલ્યે જાય છે.

આપણે આ સ્થિતિ હવે દૂર કરવી જોઇએ. આપણા સમાજની ઉન્નતિનું કામ એવા કેળવા-ળેલા, શિક્ષિત, અનુભવી તેમજ કાબેલ પુરૂષોના હાથમાં સોંપવું જોઇએ કે જેઓ આપણને આ

આધુનિક જમાનાને લગતી આપણી જરૂરીઆતો.

(લે:–મણિલાલ હીરાચંદ ગાંધી, ભાવનગર)

આપણી કોમમાં ખાસ કરીને ગુજરાત, કાઠીયાવાડ ઘણી બાબતોમાં પછાત છે તેમ સુધારકો માને છે, જ્યારે રૂઢી પુજકો તથા અશિક્ષિત મુડીવાદીઓ એમ માને છે કે જે રીત રીવાજો છે તે બરાબર છે અને તેને વળગી રહેવા મક્કમતા દાખવે છે. તેને અંગે જમાનાને અનુસરીને જ્યારે કોઇ સુધારક કોઇપણ રીવાજમાં સુધારો કરવા માંગે છે ત્યારે બન્ને પક્ષો વચ્ચે વૈમનસ્ય ઉત્પન્ન થાય છે. હવે, રૂઢી પુજકો ખોટા છે અને અશિક્ષીત મુડીવાદીઓ પણ તેમ છે અને સુધારકો સાચા છે એમ ખાસ મ્હારૂં કહેવું નથી પણ જમાનાને અનુસરીને જેમ દરેક પ્રજા તથા કોમો વિજ્ઞાન તથા બીજી બાબતોમાં આગળ વધતી જાય છે તેને અનુસરીને જે જે રીત રીવાજોમાં વ્યવહારીક તથા આર્થિક દ્રષ્ટિએ આપણી સાદી સમજ પ્રમાણે ફાયદો લાગતો હોય ત્યાં તો જરૂર ફેરફારો દાખલ કરવા જોઇએ.

દાખલા તરીકે:—આપણા વડીલો બળદ ગાડામાં અગર પગે મુસાફરી અથવા સમેદ-શિખરજીની યાત્રા શીખે કરતા હતા પણ હાલના જમાનામાં આપણે તેની જગ્યાએ રેલ્વેનો ઉપયોગ કરીએ છીએ અને આગળ વધીને ભવીષ્યમાં કદાચ વીમાનનો ઉપયોગ કરીએ તો પણ નવાઇ નહિં. આ બાબતમાં જેમ આપણે વગર ઉપદેશે સુધારાનો અમલ કરી રહ્યા છીએ તેમ બીજી ઘણી બાબતોમાં સુધારા વધારાઓની આપણી કોમને જરૂરીઆતો છે, તે નીચે મુજબઃ—

૧–અસલના વખતમાં નવું દેહેરાસર બંધાવવું તે પુન્યમાં લેખાતું હતું જ્યારે હાલના જમાનામાં જુના દેહેરાસર છે તે પણ સમારવા મુશીબત છે તો નવા દેરાસરો ન બંધાવતાં જ્યાં જ્યાં જીર્ણોદ્ધારની જરૂરીઆતો હોય ત્યાં જીર્ણોદ્ધાર કરાવી સંતોષ માનવો જોઇએ. વધારામાં માણસોને આજીવિકા કમાવાને પુરી પ્રવૃત્તિ કરતા પણ આજીવિકા મહા મુશીબતે મળે છે તેવા કારણોને લઇને તથા આધુનિક કેળવણીને અંગે પણ ધાર્મિક શ્રદ્ધા દીવસે દીવસે ઘટતી જાય તેવા સંજોગ ભાવષ્યમાં વધારે પ્રમાણમાં ઉપસ્થિત થાય તેમ ક્ષિતિજ ઉપર દેખાય છે તેવે વખતે આપણી કોમ દેહેરાસર તથા પ્રતિષ્ઠાઓ પાછળ પૈસાનો વ્યય કરવા કરતાં જો સહધર્મ ભાઇઓને ટકાવી રાખવામાં તેમજ પ્રત્યક્ષ નહીં તો પરોક્ષ મદદ કરવામાં દ્રવ્યનો ઉપયોગ થાય તો વધારે સારૂં છે. વળી રત્નકરંડ શ્રાવકાચારમાં એક ઠેકાણે કહે છે કે—

स्मयेन योन्यानत्येति, धर्मस्थानगर्विताशयः ।
सोत्येति धर्ममात्मीयं, न धर्मो धार्मिकैर्विना ॥

એટલે કે—જે ગર્વિષ્ઠ માણસ બીજા ધાર્મિક માણસોનો સર્વથી તિરસ્કાર કરે છે તે પોતાના ધર્મનો તિરસ્કાર કરે છે કેમકે ધાર્મિક સિવાય ધર્મ નથી." તાત્પર્ય–જે ધર્મના અનુયાયીઓ ન હોય તે ધર્મ નથી અર્થાત્ તે ધર્મ નામ માત્રનોજ રહે છે–માટે જો સહધર્મી ભાઇઓને ટકાવી રાખ્યા હોય તો આપણે ધર્મને ટકાવી રાખ્યો કહેવાય. હવે સહધર્મી ભાઇઓને ટકાવી રાખવા માટે શું જરૂરી છે તે ઉપર આપણે જોઇએ. પ્રથમ તો (૧) આપણી કોમમાં ધર્મ એક પાળવા છતાં કન્યા લેવડ દેવડ માટે ન્હાના ન્હાના વાડા જેવું છે જેને અંગે એક વાડામાં કન્યાની છત જેને વર મળે નહિં, જ્યારે બીજા

આધુનીક પ્રગતીના યુગમાં કંઇક આગળ લઇ જાય. કેળવણી તેમજ બીજા એવા કેટલાક ક્ષેત્રોમાં આપણે એટલા બધા પછાત છીયે કે કહેવાતા મોભાદાર પણ આ યુગનું જેને ભાન નથી એવા વૃદ્ધ શેઠીઆઓ આપણે સ્હેજ પણ પ્રગતિપંથે દોરી શકે એમ નથી.

હરીલાલ ત્રિભવનશી શાહ–મુંબઇ.

વાડામાં કન્યાની અછત જેમાં છતે પૈસે કન્યા વગર તે ઘરે તાળું દેવાય તેથી વસ્તી દીવસે દીવસે ઘટે પણ આપણા સુભાગ્યે આપણી ગુજરાત દિગંબર જૈન પ્રાંતીક સભાએ તેવા વાડાઓ તોડવાનું અને કન્યાનું અરસ પરસ લેવડ દેવડનું કાર્ય ઉપાડ્યું છે તેમાં પુરતી ફતેહ મળે તો આપણી પહેલી જરૂરીઆત પુરી પડી ગણાય, તો દરેક ભાઇઓને તેમાં નિઃસ્વાર્થ સહકાર આપવા વિનંતિ છે.

(૨) કેળવણી બાબતમાં જેમ મર્હુમ શેઠ માણેકચંદ હીરાચંદે જ્યુબીલી બાગ ટ્રસ્ટ ફંડ સ્થાપી આપણી અજ્ઞાન કોમને જાગતી કરી છે તેવી રીતે હજુ પણ દરેક કોમવાર, ગામવાર, પ્રાંતવાર કેળવણીની બાબતમાં પુરજોરથી ઉત્તેજનની જરૂર છે. તેમાં પછાત પડીશું તો બીજી કોમો કરતાં આપણે પછાડી રહીશું. વળી, ધાર્મિક કેળવણીની તેની સાથે ખાસ જરૂરીઆત છે. આપણી પાઠશાળાઓ-વિદ્યાલયો ચાલે છે. તેમાં સ્તોત્રો તથા કાવ્યો થોડા અપવાદ સિવાય શીખવાય છે અને તેમાંજ ધાર્મિક કેળવણીનો સમાવેશ થઇ ગયો તેમ માને છે, પણ હાલનો જમાનો તેનાથી આગળ વધે છે અને તે આપણી જુની રીતે નહિં પણ આર્ય સમાજીસ્ટની જેમ બીજા ધર્મથી આપણા ધર્મમાં શું વિશેષતા છે (Theoritically) કાર્ય કારણ આપી દલીલ સાથે સમજાવાય તો તેના હૃદય ઉપર જે છાપ જૈન ધર્મની ઉચ્ચતા વિશે પડે તે કદી ભવિષ્યમાં ભુંસાય નહીં. વિશેષમાં, જૈન ધર્મના સિદ્ધાંતો સાથે મેળવી દરેક ભાષામાં પ્રસિદ્ધ કરાવી સસ્તી કીંમતે દરેક બુક સ્ટોલ ઉપર વેચાય તેવી વ્યવસ્થા થાય તો અન્ય ધર્મીઓ પણ તેનો લાભ ઉઠાવી શકે અને આપણા ધાર્મિક સિદ્ધાંતોનો વધારે પ્રચાર થાય. આગળ વધીને ટુંકમાં કહીએ તો વ્યવહારિક કેળવણી સાથે ધાર્મિક કેળવણી અપાય તેવી જૈન કોલેજોની પ્રાંતવાર જરૂર છે, જેમાં દિગંબર, શ્વેતાંબર, સાથે સ્થાનકવાસી સાથે રહી અભ્યાસ કરી શકે અને ભ્રાતૃભાવ કેળવી શકે. સ્ત્રી કેળવણી બાબતમાં પણ સ્કુલ તથા કોલેજોની સ્ત્રી કેળવણી કરતાં ભરવાનું, શીવવાનું, ગુંથવાનું એવી કળા ગૃહોપયોગી તથા વિજ્ઞાન શીખવાય તો તેના ભવિષ્યની જીંદગીમાં તેને ઉપયોગી થઇ પડે તેમજ પોતાની આજીવિકા માટે બીજાને આશ્રિત થવા ઓછો સંભવ રહે.

(૩) મોટા શહેરમાં ટુંકા પગારદાર કે ટુંકા ધંધાદારી-થોડી આવકવાળા સામાન્ય વર્ગથી કુટુંબ સાથે બાળ બચ્ચા સાથે-તેમની સગવડતા-વાળા અને હવા પ્રકાશવાળા મકાનમાં રહી શકાતું નથી કારણ ઘર ભાડાં મોંઘાં હોય છે અને તેના પ્રમાણમાં આવક ઓછી હોય છે. તો તેવા વ્યાપારવાળા મોટા શહેરોમાં આપણે સસ્તા ભાડાની ચાલી કે મકાનો બંધાવીએ તો સહધર્મી ભાઇઓ તેની અંદર રહી પોતાની આબરૂ સહીત આપણો ધર્મ જાળવી શકે. તેમ કરીને પણ આપણે પરોક્ષ એક પ્રકારની મદદ આપી શકીએ છીએ. વિશેષમાં, જનસમુહમાં કહેવત છે કે-"જૈનોકા ચુનેમેં ઓર વૈષ્ણવકા દૂનેમેં" અર્થાત્ જૈન કોમ પાસે ધન વધે તો દેરાસરમાં માટીનું કામ હોય તે ઉખેડી તેથી વધારે શોભા માત્રની ખાતર તેને બદલે ચુનો કરાવે અને ચુનો હોય તે ઉખેડી લાદી જડાવે અને લાદી હોય તે ઉખેડી આરસ જડાવે એટલે દેહેરાસરને શણગારવામાં જેટલું દ્રવ્ય ખરચાય છે તેટલું દ્રવ્ય જાતિ ભાઇઓના ઉદ્ધાર અર્થે લક્ષ્ય આપવું પહેલું જરૂરનું છે.

તીર્થ યાત્રાને અંગે પણ જેટલું દ્રવ્ય રેલ ભાડા માટે તથા સુખ સાહબી માટે અપાય છે તેનો સોમો ભાગ પણ તીર્થના ઉદ્ધાર માટે ભાગ્યેજ અપાતો હશે.

જો કે તીર્થ યાત્રામાં પુન્ય ઉપાર્જનનો રસ્તો કેટલોક જોવાય છે છતાં પણ એટલું તો કહ્યા વગર રહી શકાતું નથી કે તીર્થયાત્રાને વધારે

મહત્વ આપીને આ જમાનામાં આપણે ખાસ કરીને રેલ્વે કંપનીનેજ રળાવીએ છીએ તો હાલનો જમાનો તેમાંથી બને તેટલો વધારે કેળવણી તેમજ આવા આર્થિક મુંઝવણના જમાનામાં સહધર્મી ભાઇઓને આજીવિકા મેળવી શકે તેવા ઉદ્યોગ કે ધંધા તરફ દ્રવ્યનો સદ્વ્યય થાય તો તે વધારે રૂચિકર છે. મેળાવડાઓ કે પ્રતિષ્ઠાઓ કરીને પણ સંઘપતિ જ્યારે લાખ પચાસ હજારનું પાણી કરે છે ત્યારે સામું મેળાવડામાં આવનાર ભાઇઓ પાસેથી તેટલીજ અગર તેથી વધારે રેલ ભાડા અગર તેવા ખર્ચામાં વ્યય કરાવે છે. જોકે ધાર્મિક દ્રષ્ટિએ આ પ્રભાવનાના અંગ તરીકે ગણાય છે, પણ વ્યવહારીક દ્રષ્ટિએ આપણા જૈન ભાઇઓના ખીસ્સાં ખાલી કરાવી અન્ય ધર્મીઓના ખીસ્સાં ભરીએ છીએ. દ્રવ્ય, ક્ષેત્ર, કાળ, અને ભાવને અનુસરીને એવા પ્રભાવનાના અંગમાં પણ ફેરફાર થવો જોઇએ. સાથે સાથે, આપણા સંઘ, વરાઓ તથા ન્નાતિ ભોજનો કરવાની પ્રથા પણ ફેરફાર માંગે છે જો કે સ્વામી વાત્સલ્ય એટલે સાધર્મી ભાઇઓ સાથે બેસી પ્રીતિ ભોજન લેવું જરૂરી છે પણ તેના બાહ્ય આડંબર-દેખાવ માટે—દુનીયામાં "વાહ વાહ" કહેવરાવવા માટે દોઢા બમણા ખરચા કરવામાં આવે છે તેમાં પણ કાપ મુકવાની જરૂર છે પણ પ્રીતીનું ખરેખરૂં ભોજન લેવાતું નથી. જ્યારે હૃદયમાં પ્રીતી હોય અને તેની ખાતર અથવા તેના અંગ સાથે ભોજન લેવાય તે પ્રીતી ભોજન ખરેખર રીતે કહી શકાય પણું બાહ્ય આડંબરો અને દેખાવો ખાતર થતા બમણા ખરચા થાય તે તો ઓછા થવાજ જોઇએ કેમકે તેઓ બીન જરૂરી છે. પ્રીતિ ભોજનો સાદગીથી પણ થઇ શકે છે.

(૫) દેરાસરની બાબતમાં પણ જોકે આપણે શ્વેતાંબરની જેમ વીતરાગ મૂર્તિને આંગી આભુષણ ચડાવતા નથી છતાં પણ ઉપકરણ જેવાં કે છત્ર ચમર, છત્રીઓ-સોના-રૂપાની, વીગેરે ચાંદી, સોનું કે [illegible] સુધી બનવાવવાની હદ સુધી [illegible] ઉપકરણોની જરૂરીઆત સંભવી [illegible] જરૂરઆતથી વધારે [illegible] ચોરી વીગેરે થવાનો [illegible] વિધર્મી ભાઇઓ કોઇ [illegible] નમાં ઉપરના દ્રવ્યના [illegible] ફોડી નાંખે છે, જે [illegible] થયાના ઘણા [illegible] નાસ્તિક જમાનાને [illegible] વીતરાગ પ્રભુની મૂર્તિને [illegible] છે, જ્યારે તેના અનુયાયીઓ [illegible] ઉપરની બાબ નમાં [illegible] કરીએ તો આ કહેવત [illegible]

[illegible] તે પણ જમાન [illegible] માગે છે. આ વિષય [illegible] છે. અને તે સહજ [illegible], પણ ટુંકમાં તે નીચે [illegible] છે.

(અ) [illegible] કન્યા બન્નેને એક [illegible] કરી અને તેમની [illegible] વિનિયોગ કરીએ તો તેમનો [illegible] તેમજ એક બીજા [illegible] કારણ મળે અને [illegible] નહાની ઉમરનો વાંધો [illegible] કારણ ઉમર લાયક થયા [illegible] અનુમતિ સંભવી શકે નહિં.

(બ) [illegible] તથા કપડાને અંગે [illegible] કરવામાં આપણે [illegible] કદાચ પહોંચી શકતા [illegible] સંતતિ પરણાવી [illegible] ખર્ચ વખતે મુંઝવણમાં [illegible] બાબતમાં જો આપણે કરકસર કરીએ અને શ્રીમંતોનો સહકાર મેળ-

વીએ તો આપણા ગરીબ ભાઇઓના ઘર આપણે ઉઘાડાં રાખી શકીએ નહિંતો સુરત તરફ આપણા કેટલાક દશામેવાડા બંધુઓ કન્યાના અંગે ધર્મ ફેરવી "કંઠી બંધ" થઇ ગયા છે, તેવો વખત ભવિષ્યમાં આવે તો નવાઇ નથી. ઉપરની બાબતમાં આપણા આગેવાનોએ ખાસ ધ્યાન પહોંચાડી સમયને અનુકુળ ફેરફારો કરવા ઘટે છે નહિંતો દર દશકે વસ્તીપત્રકમાં આપણી વસ્તીની સંખ્યા ઘટતી આવે છે તેમ વધારે ઘટતી જશે.

૭—**આપણી જીવદયા:**—આપણો જૈનધર્મ શાસ્ત્રોના સિદ્ધાંત અનુસાર જીવદયાની બાબતમાં પ્રધાનપદ ભોગવે છે. પણ આચારમાં આપણે પુરી જીવદયાનો અમલ કરી શકતા નથી. ફક્ત જૈનધર્મ અનુસાર સારામાં સારી રીતે જીવદયાના સિદ્ધાંતો જો કોઇપણ સમજી શકી પચાવી શક્યું હોય તો ફક્ત એકજ વ્યકિત ને તે મહાત્મા ગાંધીજી છે. અને જો તેનું આપણા જૈનો કરતાં સારામાં સારો અમલ પણ કરે છે જો કે આપણે પ્રત્યક્ષ હિંસાથી દૂર રહેવા પ્રયાસો કરીએ છીયે પણ પરોક્ષ હિંસાને પોષણ કરતા રહીએ છીએ.

કપડાંની બાબતમાં આપણે રેશમી લુગડાનો વપરાસ શ્રીમંત વર્ગમાં વધારે છે. રેશમની ઉત્પન્ન માટે અસંખ્ય જીવની હિંસા કરવી પડે છે. ગરમ ઉનના કપડામાં પણ આપણે મુલાયમ ઉનનું કાપડ વાપરવાનો મોહ રાખીએ છીએ તેમાં પણ મુલાયમ ઉન ઉતારવા માટે અસંખ્ય ઘેટાનાં ન્હાના બચ્ચાંની હિંસા કરવી પડે છે તેથી આગળ વધીને મુલાયમ ઉન માટે બચ્ચાંને ગર્ભમાંજ મારી નાખવામાં આવે છે. મીલનાં મુલાયમ વસ્ત્ર કે જેમાં લાખો મણ ચરબીનો ઉપયોગ થાય છે, તે બધાં હિંસાને પોષણકર્તા છે. હવે ઉપરની બધી બાબત જોતાં જો આપણે શુદ્ધ ખાદી વાપરવા તરફ આગળ વધીએ તો પરોક્ષ હિંસામાંથી બચી શકીએ. બૈરાંઓના પહેરવેશમાં પણ ખાસ કારી મોટા શહેરમાં કાચની કચકડાની બંગડી, માથાના ચીપીઓ તથા ફેન્સી પીનો વિગેરે પણ જીવ હિંસા પોષણકર્તા છે કારણ કે તે બધાની ઉત્પત્તિમાં જીવ હિંસા પ્રધાનપદ ભોગવે છે.

૮—**આપણા પર્વોમાં બાહ્ય આડંબર:**—આપણા અઠ્ઠાઇ પજુસણ જેવા મોટાં પર્વોમાં આપણું લક્ષ ધાર્મિક ભાવના તરફ આપવાને બદલે આપણા વસ્ત્રો તથા આભૂષણો તરફ આપીએ છીએ તેમાં ખાસ કરીને સ્ત્રી સમુહ પોતાના ભારેમાં ભારે કપડાં તથા દાગીનાઓના પ્રદર્શન માટેજ ધાર્મિક પર્વો હોય તેવી રીતે વર્તાવ રાખે છે. ભકિતભાવ, પૂજાપાઠ, વીગેરે વીતરાગ ભાવના કાર્યોમાં સ્વચ્છ તથા સાદાં વસ્ત્રો હોયતો મનને વીતરાગ ભાવ ઉતારવા માટે મનનું વધારે સરલપણું અને શાંતીપણું જાળવી શકાય છે જ્યારે કીંમતી કપડાંથી તે કપડું સાચવવાની ફીકરમાં અને સૌથી સારાં અને કીંમતી કપડાંઓ તથા દાગીનાઓની સ્પર્ધા કરવામાં તેમનું દીલ ખેંચાયા કરે છે. દિગંબર ધર્મમાં વીતરાગ ભાવ પેદા કરવાના મુખ્ય આશયો સચવાય તેવો સાદગી (ખાદી)નો પહેરવેશ વધારે અનુકુળ તથા અનુકરણીય હોઇ શકે તેનાથી આપણે સાદાઇ તરફ વળી શકીશું તેમજ આ આર્થીક મુંઝવણના જમાનામાં આપણે કરકસર કરવાની આપણી ફરજનો એક મુખ્ય પાઠ શીખીશું.

ઉન્નતિને આરે.

(રચનાર-શાહ ચંદુલાલ હાથીચંદ-સોનાસણ)

હરિગીત છંદ.

જગવિજયી જૈનોત્તર તણા સંતાન સૌ શાણા તમે,
તમ જ્ઞાતિનો સેવક વિનય ને સ્નેહથી તમને નમે;
દિન આજ રહમ એક છે દિલમાં ધરો જૈની વરો,
હું પ્રેમથી પૂછું તમોને કોનફરન્સો કાં ભરો-૧

* * *

હાંસી કરે સૌ હેતથી જગ જૈન ભેગા થાય છે,
આપણું નકામું બરડતા હો, હા કરી વેરાય છે;
ના ન્યાતનું ધોળે કશું ડાળાં ઘણાં જૈની ધરો,
હું પ્રેમથી પૂછું તમોને કોનફરન્સો કાં ભરો-૨

* * *

નવ બંધ થાતાં બાળ લગ્નો બહુ બુરૂં તે થાય છે,
બાળા વરસ દસ બારની તે સાસરે રૂંધાય છે;
નિપજે પ્રજા નીર્બળ અરે તન સુખ તેનું કાં હરો,
હું પ્રેમથી પૂછું તમોને બાળ લગ્નો કાં કરો-૩

* * *

કૈં તો બિચારી બાળ વિધવા અલ્પ વયમાં થાય છે,
સંસાર સુખ ચાખ્યા વિના ખુણા વિષે ખડકાય છે;
શું દંપતીનો ધર્મ તે જાણ્યા વિના આ શું કરો,
હું પ્રેમથી પૂછું તમોને કોનફરન્સો કાં ભરો-૪

* * *

રે દીકરીના દોકડા લેવાય છે આ જ્ઞાતિમાં,
વય ગુણ કૈં જોવાય ના નાણાં મળે જ્યાં હાથમાં;
બસ સુખ સૌ તનયા તણું હાથે કરીને કાં હરો,
હું પ્રેમથી પૂછું તમોને કોનફરન્સો કાં ભરો-૫

* * *

હા વિત્ત હરવા વૃદ્ધ રોગી આંધળો પણ ના જુવે,
હોયે અપંગ અનાથ નિર્બળ નાખતા કન્યા કુવે;
રંડાય છે ભંડાય છે દીલમાં દયા તો કંઇ ધરો,
હું પ્રેમથી પૂછું તમોને કોનફરન્સો કાં ભરો-૬

* * *

નવ બંધ થાતાં બારમાં લાડુ ઉડાવો લહેરમાં,
દેવું કરી દહાડો કરો, નવ ખાખ ખાવા ઘેરમાં;
ચગદાઇ પરના રણુ તળે, જીવતર અકારૂં કાં કરો,
હું પ્રેમથી પૂછું તમોને કોનફરન્સો કાં ભરો-૭

* * *

જે ઘેર મૃત્યુ હોય ત્યાં રોપીટ ઝાઝી થાય છે,
પણ બારણામાં પ્રેમથી ચુરમા મગજ પીરસાય છે;
મૃત્યુ ભલે હો યુવકનું પણ મુખમાં મોદક ધરો,
હું પ્રેમથી પૂછું તમોને કોનફરન્સો કાં ભરો-૮

* * *

જે છે લગનનાં ખર્ચ મોટાં તે કમી કે થાય ના,
ઘર બાળીને તીરથ કરો હા ? આંખથી જોવાય ના;
ઘરમાં મળે ના પાઇ ને પહેરી પીતાંબર શું ફરો,
હું પ્રેમથી પૂછું તમોને કોનફરન્સો કાં ભરો-૯

* * *

'ઉંચા અમે' કોઇ કહે કન્યા બીજે ના આપીએ,
પણ આપનારો હોય તો બે ઉપર ત્રીજી સ્થાપીએ;
કન્યા રડે રખડે ભલે પહેરામણી પહેલી ધરો,
હું પ્રેમથી પૂછું તમોને કોનફરન્સો કાં ભરો-૧૦

* * *

એવણુ બીજા બહુ દોષ છે જે કાં જરા જોવાય છે,
નિર્ધન અને નીસ્તેજ જ્ઞાતી બંધુ થાતા જાય છે,
દે શીખ કે ભય દંડથી અટકાવ બસ એનો કરો;
હું પ્રેમથી પૂછું તમોને બાળ લગ્નો કાં કરો-૧૧

* * *

ખોટાં ખરચ અટકાવીને પૈસા ભરાવો ફંડમાં,
તન કેળવો જ્ઞાતિ તણા લ્યો નામના નવ ખંડમાં;
થાએ ઉદય કે આપણો એવા ઇલાજો આદરો,
વીસમી સદી વેગે વહી મીંચ્યાં નયન ખુલ્લાં કરો-૧૨

કર્તવ્ય કર્મનું વિસ્મરણ.

(લે.—હીરાલાલ રાયચંદ શાહ-અંકલેશ્વર.)

તામસ ગુણનું કાર્ય આળસ, પ્રમાદ ને નિંદ્રા છે. તામસ ગુણની વૃદ્ધી થવામાં આ બધું મળી આવે છે, કર્મમાં આળસ થાય. પ્રમાદ એટલે કર્તવ્ય કર્મનું વિસ્મરણ થાય. નીદ્રા વધારે આવે. આમ જ્યાં થાય ત્યાં નક્કી માનવું કે તમોગુણ પ્રધાનપણે કાર્ય કરતો થયો છે, તમોગુણ એકંદરે બધાગુણોથી ઉતરતો છે.

પ્રમાદ અત્યારે જ્યાં ત્યાં જોવામાં આવશે. ઘણે ભાગે આ ગુણનો પ્રભાવ જામી ગયો હોય તેમ બધેજ જોતાં જણાશે. આ ગુણ પ્રકૃતીવાળા પણ સમાન છે. અસુર કેવાય રાક્ષસ આવી જેવા-જોવા જાતા નથી, એ બધું અત્યારે જોવાશે અસુર બનવામાં સુખ નથીજ, ક્લેશ છે, દ્વેષ છે. માંહે માંહે વીખવાદ છે. આનંદ નામે નથી. જેમાં સુખ નહી, તેમાં રહેવું કામનું-લાભનું શું ?

સત્વગુણમાં રહેવું એ વિશેષ ઉત્તમ છે, કર્તવ્ય છે. જેમાં સત્વગુણની વૃદ્ધિ થાય; તેમાં પ્રવૃત્ત રહેવું એ સુંદર તક સાધી કહેવાય. મનુષ્યપણું આવ્યું, તેને વ્યર્થ ગુમાવી દેવું એ ઠીક નથી. આળસ પ્રમાદ છોડી દઇ પોતાની ફરજ વિચારી સુંદરતામાં જવું એજ ભાવી સુધારણા છે. આગળ વધો. પોતે પોતાને જાણવો એ ખરૂં કામ છે, પોતે પોતાને ન જાણે ત્યાં તે અપૂર્ણ છે. પૂર્ણ તત્વ સમજી વિચારી જાણી વર્તનમાં રહેતા થવું એજ ભાગ્ય છે. સુંદર ફળ છે.

પદાર્થ મેળવવામાં અથાગ મહેનત કરતા જોઇએ, પણ આત્મતત્વ વિચારવામાં જરાપણ સમય આપતા જોવામાં આવે છે. ક્યાંક ચોવીસ કલાકમાં નામે પ્રભુ તરફનો વિચાર આવતો હોય છે ? આ વિચારી લઇએ એટલે આ પ્રથમ કર્તવ્ય કર્મ વિસ્મરણ; સીંહપણું છોડી બકરા પણું લાવવું-આવવું આ શું અધોગતિ નથી ? જાગ્રત બનવું જોઇએ, ચેતવું, પંચ ત્યાં પરમેશ્વર આ કહેતી અત્યારે છે ? આ પ્રમાણે જ્ઞાતિના અગ્રેસરો પંચમાં બેસી ન્યાય બરોબર તોળે છે ? પક્ષાપક્ષીનું સબળ કાર્ય એ શું વ્યાજબી છે ? આમ જ્ઞાતિના અગ્રેસરો કર્તવ્ય કર્મ ચૂકેલા અંધારામાં બાચકા ભરાવા બીજાને પોતા તરફ દોરે છે. કાવા દાવા પોતે કરે છે. સ્વાર્થ સાધુ બને છે ? કન્યા આપવા લેવામાં સ્વાર્થી વલણ પકડી પોતાનું ધાર્યું કરે છે. આ બધું કર્તવ્ય વિસ્મરણ નહી તો બીજું શું ? પંચ વિચારે, ચેતે વિસ્મરણ વહેલું ન લાવે.

જ્ઞાતિના અગ્રેસરો જ્ઞાતિ સુધારણાનું કાર્ય જે કરવાનું તેને બદલે પક્ષાપક્ષી ઉભી કરે, તાગલા પાડે, વિખવાદ કરાવે, માંહે માંહે લડાવે, આ બધું કાર્ય જે ન કરવાનું તે કરવા ચુકતા નથી, એટલે એમ નક્કી થાય છે કે અગ્રેસરો પટલાઇ કરવામાં કર્તવ્ય કર્મ ભૂલી સ્વાર્થી વલણમાં અહંમય કરે છે. માતાપિતાની જે ફરજ છે, તે પોતે ચૂકે છે. બાળક પ્રાંત સુંદર દ્રષ્ટી ન રાખતાં જેમ તેમ વલણ પકડી માત્ર પદાર્થ મેળવવામાં સમય ગુમાવે છે. તેમાં , ન તો, બાલકની ફરજ વીચારે કે ન તો પોતાની ફરજ વિચારે. આ બધું કર્તવ્ય કર્મ વિસ્મરણ નહી તો બીજું શું ! માતા પીતાએ ફરજ વીચારવી જોઇએ. સંસ.રમાં સુંદરતા મેળવવી જોઇએ.

પતી પત્નીનો વીચાર કરીએ. આમાં પણ કર્તવ્ય કર્મ વિસ્મરણ જોવામાં આવશે. એક બીજા પ્રતી સુંદર પ્રેમ જોઇએ, તે જણાશે નહી. ધન્યવાદ ગૃહસ્થાશ્રમ તે ક્યાંથી હોય ? સ્ત્રી પ્રતીમાનની દ્રષ્ટીથી જોવામાં આવે નહી, કેળવણીનો અભાવ હોય, આનંદ ત્યાં શાનો હોય ? આ બધું કર્તવ્ય કર્મ વીસ્મરણ નહી કે ? સુખી સંસાર બનવામાં કર્તવ્ય કર્મ વીચારવું જોઇએ. સમજી ચાલવું જોઇએ. સંસારમાં યોગી બનવું સારૂં છે.

આ જીવ સેવા માટે છે. ભક્તિ પ્રધાન શરીર છે. સેવામાં મેવા છે. પણ સેવા છે ક્યાં? અત્યારે તો સેવા માત્ર કલેશી વાતાવરણ રચું કરવામાં રહેલી છે, વિખવાદ કરી ધાર્યું કરવાનું વલણ હોય છે. આ પણ કર્તવ્ય કર્મ વિસ્મરણ છે ને?

યુવાન વર્ગ પોતાની ફરજ વિચારે નહીં; ગુલામી સમજે નહી, તે સ્વતંત્રતા શી રીતે મેળવે? મોજ શોખી જીવન એ સુંદરતા શી રીતે પ્રાપ્ત કરી શકે? એ સમજવું જરૂર છે.

આમ ઘણી રીતે કર્તવ્ય કર્મ વિસ્મરણ જોવામાં આવશે. વિચાર કરી આગળ વધે છે. આગળ વધે છે. સેવા રૂપ જીવન ગુજારી બીજાનું ભલું કરવામાંજ સમય વ્યતિત કરે છે એ આત્માને ધન્ય છે?

નરસિંહપુરા સમાજને.

મોટા ખેદની વાત તો એ છે કે જ્યારે અન્ય કોમો અને ધર્મો પ્રગતિને પંથે જાય છે, અને પોતાના વિકાશને માટે તનતોડ પ્રયત્ન કરી રહી છે, ત્યારે આપણી દોઢસો બસો ઘરોની નરસીંહપુરા કોમ અવનતીને પંથે પ્રયાણ કરી રહી છે. જ્યારે સાબરતીનો સંત (ગાંધીજી) ઐક્યતા માટે આખા દેશમાં પડકાર કરી રહ્યો છે, અને તેના માટે આખા દેશમાં ભ્રમણ કરી અથાગ પ્રયત્નો કરી રહ્યો છે, ત્યારે આપણી એક નાનીશી કોમની અંદર નાત બહારના નિમિતે ભયંકર અગ્નિ જ્વાળાઓ વર્ષોથી પ્રસરી રહેલ છે. જ્યારે અન્ય દેશો માંહોમાંહેના કલેશ યા કુસંપને બાજુપર મુકી સ્વદેશ ઉન્નતિ અર્થે દૂર દરિયાપારના દેશોમાં પોતાનો વિકાશ કરી રહ્યા છે, ત્યારે ભારત માતાની કુખે જન્મેલા એ દેશબંધુ ધર્મબંધુ અને જ્ઞાતિ બંધુને વર્ષોથી અલગ રાખવા એ ઠીક નથી. સમાજના આગેવાનો અને અગ્રગણ્ય પુરૂષોએ તો હંમેશાં ઉદાર મન રાખવું જોઇએ. એક સમયે કોઇ વ્યક્તીની ખુલ્લે ખુલ્લી ભુલ થઇ હોય તો પણ પોતાની જ્ઞાતી અને ધર્મની આબરૂ ખાતર તેને પેપરો દ્વારા ખુલ્લી ન કરતાં પોતાની મેળે તેનો નીકાલ લાવવો તેનેજ હું તો શ્રેય માનું છું.

કેટલાક કુરીવાજ અને પોતાની જરૂરીઆત પુરી પાડવાના અભાવે કોઇ જ્ઞાતી બંધુ પોતાના ધર્મનો ત્યાગ કરી પરધર્મનો આશ્રય લે તે શું આપણે માટે શરમ ભરેલું નથી? આવા બનાવો મોટી સંખ્યામાં બનેલા હોવા છતાં આપણે હજુ ઘરનિદ્રામાં ઘોરીએ છીએ, અને ગુજરાત દિ. જૈન કોનફરન્સ જેવી એક સુધારક અને કુરીવાજોનો વિનાશ કરનારી એક આદર્શ સભાને ટેકો આપી તેને ચીરસ્થાયી બનાવવાની જરૂર છે.

જેમ કોઇ નવી ઇમારત બાંધવી હોય તો જુની ઇમારતને તોડી તેને છિન્નભિન્ન કરી નાંખી પાયામાંથીજ તેનો ઉચ્છેદ કરવામાં આવે છે, અને તેના ઉપર નવા પાયા નાંખી નવી ઇમારત સારી રીતે બાંધી શકાય છે, તેવીજ રીતે જમાનાને માન આપી, સારા રિવાજો ઘડવા માટે કુરિવાજોનો મૂળમાંથી ઉચ્છેદ કરવો ઘટીત છે,

ભાઇઓ! જમાનો બદલાય છે, તેને માન આપીને ઉદાર મન રાખીને, પોતાની સંસ્થાઓને મજબુત પાયા પર મૂકીને સ્વોન્નતિને પંથે પ્રયાણ કરવું એજ યોગ્ય છે. કુસંપ એ અનેક આપત્તિનું મૂળ છે, માટે જેમ બને તેમ તેનાથી આપણે સર્વે દૂર રહેવાનો પ્રયત્ન કરીશું તેવી આશા સાથે હું વિરમું છું.

જીવણલાલ સોમચંદ, કલોલ.

નરસીંગપુર પક્ષનો વિરોધ—ડેમઇ (ઝહેર) માં કાર્તિક સુદ ૮ મે નરસિંહપુરા અને રાંધકવાળાઓનું સમસ્ત પંચ મળવાનું છે તેની વિરૂદ્ધમાં નરસીંગપુરા પક્ષના શા. ડુંગરચંદ અમથાલાલ, કેશવલાલ લલુભાઇ, મગનલાલ હરજીવન વગેરે ૭ સહીથી હેંડબીલ નીકળ્યાં છે કે—"પંચ બારેનો કાગળો સમસ્ત પંચ તરફથી લખાયા નથી તેમ સમસ્ત પંચ કદિ મળ્યુંજ નથી તેથી પંચને નામે લખાયેલ કાગળ સમસ્ત પંચના નથી ને તેને અમે સમ્મત નથી !

"આ પ્રમાણે નરસીંગપુરનો નાનો પક્ષ અલગ રહેવા માંગે છે, એટલે હવે ડેમઇ મુકામે શું થાય છે તે હવે પછી જણાશે.

સુરતથી સારૂં દાન—સુરતમાં પર્યુષણ પર્વમાં ૪૭) તીર્થ રક્ષા ફંડમાં ભેગા થયા હતા તેમજ ચાર દાનની ટીપમાં ૨૧૯) આવ્યા હતા જેની નીચે મુજબ વ્યવસ્થા થઇ છે. ૮૩) સુરતમાં નીચે મુજબ.—૧૦) શ્રાવિકા પાઠશાળા, ૧૦) ફુલકોર કન્યાશાળા, ૧૦) જીવદયા ખાતું, ૧૩) સાધર્મીને ટીકીટ માટે, ૧૩) દિ. જૈન યુવક સંઘ કેળવણી ફંડ, ૧૦) દિ. જૈન પાઠશાળા, ૧૨) ટ્રેક્ટ પ્રચાર માટે, ૫) અશક્તાશ્રમ. બહારગામ ૧૩૬) નીચે મુજબ—૧૦) સ્યાદાદ વિ. કાશી, ૧૦) ઋષભ બ્ર. આશ્રમ મથુરા, ૧૦) કુંથલગિર બ્ર. આશ્રમ, ૧૦) ઋષભદેવ વિદ્યાલય, ૧૦) સાગવાડા વિદ્યાલય, ૧૦) વડનગર ઔષધાલય–અનાથાલય, ૧૦) જીવદયા સભા આગરા, ૧૦) અનાથ વિધવા ફંડ આગરા, ૧૦) સેંવારી વિદ્યાલય, ૧૦) સોનાગિરી વિદ્યાલય, ને ૨૫) તાર્થોને. આજ પ્રમાણે દરેક સ્થળેથી ટીપ કરી સહાયતા મોકલવી જોઇએ.

ઇંદરમાં—સભા થઇ–ઇદોરમાં મુનીવિહાર પ્રતીબંધ એક્ટના વીરોધમાં તાર કરવામાં આવ્યો હતો.

ચિતોડથી—શિખરજીની યાત્રાની સ્પેશ્યલ ટ્રેન માગશર સુદ ૧ ને દીને નીકળવાની છે. ૬૦ દીવસનો પ્રોગ્રામ છે. ૬૪) ભાડું ને ૧૪) માસીક ભોજન ખર્ચ છે. ને દરેક પ્રકારની સગવડ છે. માટે ગુજરાતના દિ૦ જૈનોએ એ ટ્રેનમાં સામેલ થવું હોય તો ૧૦) મોકલી સંતલાલ જૈન પરતાબગઢ (રાજપૂતાના) ને નામ લખાવવાં. ને એ ટ્રેનમાં વડોદરાથી રતલામ થઇ ચીતોડ જઇ સામેલ થઇ શકાશે.

સ્વ. જૈન મહિલારત્ન મગનબ્હેન—ની ચી૦ સૌ૦ કેશરબ્હેન ચંદુલાલની ૧૭ વર્ષની પુત્રી જયવંતી બ્હેને પેરીસ (ફ્રાન્સ) માં ફ્રેન્ચ ભાષામાં બાકાલોરીયા પરીક્ષા (જેમાં અંડર ગ્રેજ્યુએટ જેટલું જ્ઞાન મળે છે તે) પાસ કરી છે.

શાન્તિમાંજ સુખ છે.

હરીગીત.

જ્યાંજ્યાં નજર મ્હારી ફરે, ત્યાં ત્યાં સદા એ ભાસતું,
આવેલ સુખ જે અલ્પ તે, પળવારમાં ચાલી જતું.
જેની હશે જેવી નજર, તેઓજ તેવું પામશે,
સાકર તણો ઇચ્છનાર કહો ? સુવર્ણ ક્યાંથી કાઢશે ?
મહેનત કરી મહીતળપરે, તગદીર વીણ પસ્તાય છે,
આશા ધરે જો ઇશથી, તેના થકી સુખ થાય છે.
જેને હશે જેવી જરૂર, તેનેજ તેવું લાદશે,
ઇશ્વર સદા એ નીતિનો, અંતર મહીં ઉતારશે.
આવેલ જે જે જન્મીને, પ્રાણી બધા સંસારમાં,
તેઓ તણું છે ચક્ર સૌ, આનંદના આધારમાં.
શાંતિ હશે સા સુખ થશે, પૈસે કશું નવ થાય છે,
પૈસા થકી પામર બની, જન અંધ થઇ અથડાય છે.
એવી નીતિ સંસારની માની બધા શ્રમ આદરો,
નીતિ અને શક્તિજ સૌ શાંતિજ માટે પાથરો;
શાંતી હશે જે ગૃહ વીષે તે સ્વર્ગસમ સોહાય છે,
મોહન કહે શાંતિ વિના જન મૂર્ખ સમ લેખાય છે.

મોહનલાલ મથુરાદાસ શાહ–કમ્પાલા.